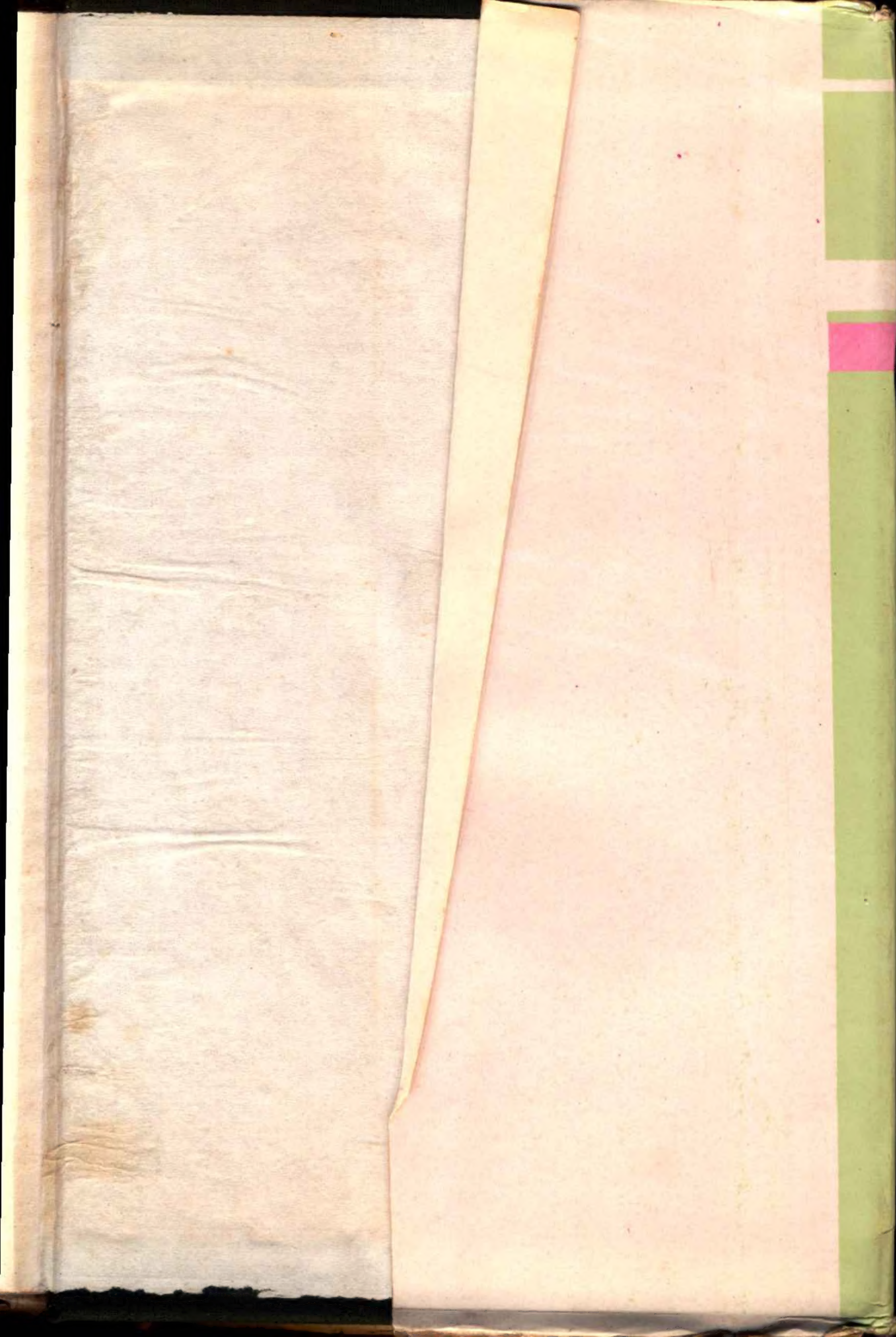
संस्कृत-हिन्दी कोश

SANSKRIT-HINDI DICTIONARY

DR. B. K. UPADHYAYA



स्टूडेन्ट्स

संस्कृत-हिन्दी कोश

Students

SANSKRIT-HINDI DICTIONARY

सम्पादक

डॉ. भुवनेश उपाध्याय

एवं

डॉ. सुभाष चन्द्र वात्स्य

प्रकाशक

भारतीय विद्या संस्थान

वाराणसी

[illegible]

संस्कृत-हिन्दी कोश

Students

SANSKRIT-HINDI DICTIONARY

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रकाशक

भारतीय विद्या संस्थान

वाराणसी

स्टूडेन्ट्स

संस्कृत-हिन्दी कोश

Students

SANSKRIT-HINDI DICTIONARY

सम्पादक
डॉ. भुवनेश्वर उपाध्याय
एवं
डॉ. सुभाष चन्द्र बरुआ

प्रकाशक
भारतीय विद्या संस्थान
वाराणसी

प्रकाशक :
भारतीय विद्या संस्थान
प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
सी. 27/59 जगतगंज,
वाराणसी - 221 002 (भारत)

Publisher :
Bharatiya Vidya Sansthan
Publishers & Bookseller
C. 27/59 Jagat Ganj,
VARANASI - 221 002 (INDIA)

संस्करण - 2000

ISBN - 81 - 87415 - 10 - X

मूल्य - रु 125-00

अक्षर संरचना :
आर० के० मल्टीग्राफिक्स
लक्सा रोड, गिरजाघर, वाराणसी
दूरभाष : 372701; 302195

मुद्रक :
कमला इम्प्रेशन्स
वाराणसी

भूमिका

प्रस्तुत संस्कृत-हिन्दी कोश जनसाधारण की आवश्यकता को ध्यान में रखकर संयोजित किया गया है। यद्यपि आज अनेक कोश पाठकों के समक्ष सुलभ हैं किन्तु जिज्ञासु छात्र वर्ग कोशों की ऊँची कीमत के कारण पूर्ण लाभ से वंचित रहते हैं। इस कोश के निर्माण में छात्रों की पहुँच का विशेष ध्यान रखा गया है। इस कोश द्वारा यह भी प्रयास है कि सामान्य से लेकर उच्च कक्षा के छात्रों की आकांक्षाओं की पूर्ति हो सके। इसीलिये ऐसे शब्दों का संग्रह भी इसमें है जो अन्यत्र अप्राप्य हैं। व्याकरण, अलंकार, काव्य, रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदान्त, ज्योतिष आदि अनेक विषयों के समावेश के साथ इसमें सामान्योपयोगी शब्दों का भी समन्वय किया गया है।

छात्रों की सुगमता एवं संस्कृत शब्दों को उन्हीं के स्वरूप में समझने के लिये शब्दों के साथ लिङ्ग ज्ञान को प्रकाशित किया गया है जिससे प्रयोगकर्त्ता शब्दों के समुचित तथा शुद्ध प्रयोग में समर्थ हो सके। अन्य कोशों की भाँति इस कोश को भी सामान्य विधि से देखा जा सकेगा, तथापि पाठकों के सुविधार्थ यहाँ यह बताना उचित समझता हूँ कि कोश में शब्दों को अक्षरादि क्रम से संदिष्ट किया गया है साथ ही शब्दों की संस्कृत निष्ठता पर भी यथासम्भव ध्यान रखा गया है।

इस कोश के निर्माण में विविध संस्कृत ग्रन्थों, अनेक भाषा के शब्द-कोशों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसके अतिरिक्त हम अपने मित्रों डॉ० रमेश कुमार पाण्डेय रीडर, श्री लालबहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय सं. विद्यापीठ दिल्ली, डॉ. आर. देवनाथन्, रीडर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति, डॉ० ए. पी. सच्चिदानन्द रीडर केन्द्रीय विद्यापीठ शृंङ्गेरी, डॉ० एस० वी० आर० मूर्ती, रीडर, डॉ० खगेश्वर मिश्र, रीडर, के० सं० विद्यापीठ पुरी, डॉ० देवीप्रसाद त्रिपाठी प्रवक्ता श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय सं० विद्यापीठ नई दिल्ली, डॉ० शिवशंकर पाण्डेय प्राचार्य प० सं० पा० वाराणसी के भी आभारी हैं जिन्होंने इसकी पूर्णता में हमें अपना अमूल्य योगदान दिया है।

इस कोश के निर्माण में कम्प्यूटर कम्जोजिंग **आर. के. मल्टीग्राफिक्स** के संचालक श्री नवीन कुमार सिन्हा तथा **प्रकाशक भारतीय विद्या संस्थान,** वाराणसी के संचालक श्री कुलदीप जैन के सहयोग का हम सभी हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

अन्त में यह निवेदन है कि यह छात्र संस्करण होते हुये भी सबके लिये उपयोगी हो सकेगा। कोई भी कृति जितनी ही जागरुकता से सम्पादित या प्रकाशित की जाय उसमें कदाचित त्रुटि की सम्भावना निहित रहती है, हमारी यह कृति कोश भी इसका अपवाद नहीं है। अतः हम अपने जिज्ञासु पाठकों से निवेदन करना चाहेंगे कि यदि कोई त्रुटि हो और उसमें सुधार चाहें तो उनका सुझाव हमें पथदर्शन देगा जिसे अग्रिम संस्करण में उचित रूप दिया जा सकेगा।

डॉ० भुवनेश उपाध्याय
एवं
डॉ० सुभास चन्द्र वरुआ

अनुक्रम

सङ्केत-सूची

पुं	=	पुँल्लिङ्ग
धा. उभ.	=	धातु उभयपदी
त्रि.	=	त्रिलिङ्गी
न.	=	नपुंसकलिङ्ग
स्त्री.	=	स्त्रीलिङ्ग
अ.	=	अव्यय
सं.	=	संकेतवाचक
गु.	=	गुणवाचक
सर्व.	=	सर्वनाम
क्रि.	=	क्रियापद

संस्कृत - हिन्दी कोष

अ नागरी वर्णमाला का पहला अक्षर। इसका उच्चारणस्थान कण्ठ है। जिन शब्दों के आदि अक्षर व्यंजन हों, उन शब्दों से नञ् समास करने पर नञ् का केवल "अ" ही शेष रहता है उसके अर्थ–अभाव, सादृश्य, भेद, अल्पता, अप्राशस्त्य और विरोध ये छः हैं।

अः (पु.) विष्णु। रक्षक। विष्णु चिरस्थायी और सब के रक्षक हैं इस कारण उनको "अ" कहते हैं।

अंघ्रि (पु.) चलने का साधन। जिससे चला जाय। पैर। पांव। श्लोक का चतुर्थ चरण। वृक्षमूल। वृक्षों की जड़।

अङ्घ्रिस्कन्ध (पु.) वृक्षों की मोटी शाखाएँ। वृक्षों का एक भाग।

अंश् (धा. उभ.) विभाग करना है। बाँटना है। हिस्सा देना। बँटवारा करना। प्रेरणार्थक। णिच्, "अंशापयति" विभाग करवाता है। विभाग करने के लिये प्रेरणा करता है।

अंश (पु.) भाग। हिस्सा। बाँट। प्राणधन। पिता के धन का भाग। समूह का एक भाग। राशि का एक भाग। स्कन्ध। काँध। दो पक्षों में से एक पक्ष। काल का सूक्ष्म परिमाण-विशेष। साठ कला का एक अंश होता है। अंश कल्पना। (स्त्री) अंशकरण। भाग करना। प्राप्य धन का निर्णय करना।

अंशकः (पु.) अंश का अधिकारी। अंश का भागी, २ अंश। भाग। राशि का तीसवां हिस्सा। अंशिनम्, (न.) विभाग करने का नियम। पितृधन का भाग करने के लिए धर्मशास्त्र की आज्ञा। बटवारे का कानून।

अंशभाज् (त्रि.) भाग पाने का अधिकारी। हिस्सादार। दायी।

अंशभूत (त्रि.) अंशस्वरूप। अंश बना हुआ। समूह का भाग।

अंशल(त्रि.) बली। बलवान्। मोटे कन्धेवाला। दृढ़काय।

अंशविवर्तिन् (त्रि.) भाग का उलट-पलट होना। कन्धे की ओट।

अंशसवर्णन (न.) विषम संख्या की राशि का तुल्य भाग करना।

अंशहर (पु. स्त्री.) भाग का अधिकारी। हिस्सेदार। दायाद।

अंशावतार (पु.) भगवान् का एक अवतार विशेष। एक भाग से उत्पन्न।

अंशांशी (क्रि, वि.) अवयव और अवयवी। भाग और भागी। हिस्सा और हिस्सेवाला।

अंशिन् (त्रि.) भागी। हिस्सेदार। भाग पाने का अधिकारी। अपना भाग प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करनेवाला।

अंशु (पु.) किरण। प्रभा। प्रकाश। चमक। तेज। द्युति। सूत। महीन सूत।

अंशुकम् (न.) महीन सूत का कपड़ा। अंशुपट्ट। रेशमी वस्त्र।

अंशुजालम् (न.) अंशु का समूह। किरणराशि।

अंशुधर (त्रि.) अंशुधारी। प्रकाशशील। सूर्य चन्द्रमा आदि।

अंशुपट्ट (न.) महीन सूत का बना कपड़ा। उत्तम रेशमी वस्त्र।

अंशुमत् (त्रि.) प्रकाशशील। चमकीला। द्युतिमान्।

अंशुमत्फला (स्त्री.) एक पौधे का नाम। कदलीवृक्ष। केले का पेड़।

अंशुमती (स्त्री.) सालपर्णीवृक्ष। यमुनानदी का एक नाम।

अंशुमाला (स्त्री.) किरणों की माला। किरण समूह।

अंशुमाली (पु.) सूर्य, चन्द्रमा। बारह की संख्या।

अंशुहस्त (पुं.) सूर्य। चन्द्रमा। सूर्य अपनी किरणों से पृथिवी का जल खींचता हैं, इस कारण उनकी १००० किरणें हाथ के समान समझी जाती हैं और वे "अंशु हस्त" कहे जाते हैं।

अंस (न.) कन्धा। हिस्सा। भाग। अंश।
अंसकूट (पु.) बृहत्स्कन्ध। बड़े कन्धेवाला।
अंसत्र (न.) कन्धे की रक्षा करनेवाली वस्तु। कवच।
अंसफलक (पु.) विशाल स्कन्ध। पटरे के समान कन्धा। कन्धे का एक भाग।
अंसभारः (अलु. स.) कन्धे का भार। कन्धे का रखा हुआ भार।
अंसभारिक (पु.) कन्धे पर भार रखने वाला। मजदूर। कुली।
अंसल (त्रि.) बलवान् दृढ़काय। बली।
अंह् (धा. आत्म.) गमन। गति। जाना। चलना।
अंहतिः-ती (स्त्री.) पापनाशक। दुरितघ्न। पापों को दूर करने वाली क्रिया। पापनाशक दान।
अंहस् (न.) पाप। दुरित। प्रायश्चित्त के द्वारा नष्ट होने वाला पाप। इसी को अंघस् भी कहते हैं।
अक् (धा. पर.) जाना। गमन। गति। चलना।
अकम् (न.) सुख का अभाव। दुःख।
अकच (त्रि.) (न.ब.) बिना बाल का। जिसके बाल न हों। खल्वाट।
अकचः (पुं.) केतु ग्रह का एक नाम। ज़ो लोक को दुःख पहुँचाने के लिए बढ़े। केतु ग्रह का उदय लोकपीड़ा के लिए प्रसिद्ध है।
अकडमचक्रम् (न.) शुभाशुभ विचार का एक चक्र। तान्त्रिक दीक्षा का एक विधान चक्र, जिससे मन्त्रों के शुभाशुभ का विचार किया जाता है।
अकथित (त्रि.) नहीं कहा हुआ। अनुक्त।
अकथितकर्म (न.) व्याकरण की एक संज्ञा का नाम। गौणकर्म। अपादान आदि कारकों की अविवक्षा करके कर्मसंज्ञक विभक्तियाँ जहाँ होती हैं वह अकथित कर्म है।
अकनिष्ठ (न.) छोटा नहीं। बड़ा। (पुं.) वेदनिन्दक। वेदों की निन्दा में प्रसत्र होने वाला। बौद्ध।
अकनिष्ठपः (पु.) बौद्धों का पालन करनेवाला। बुद्ध भगवान् का एक नाम। बौद्ध-सम्प्रदाय का आचार्य।
अकम्पन (त्रि.) नहीं कम्पने वाला। निर्भय। निडर। (पु.) एक राक्षस का नाम। यह रावण की सेना का सेनापति था।
अकम्पित (त्रि.) (न.त.) अचञ्चल। धीर। निर्भय (पुं.) जैन और बौद्ध-सम्प्रदाय के एक महात्मा का नाम। जैन-सम्प्रदाय के अन्तिम तीर्थङ्कर का नाम। यह उनका असली नाम नहीं था, किन्तु उनके धीर होने के कारण लोगों ने उन्हें "अकम्पित" की उपाधि दी थी।
अकर (त्रि.) बिना हाथ का। हाथरहित। अपने कर्तव्य से उदासीन। अपना कर्तव्य न करनेवाला।
अकरणम् (न.) कार्य का अभाव। काम नहीं करना। कर्मरहित। इन्द्रियरहित। इन्द्रियशून्य।
अकरणिः (स्त्री.) कार्य शक्तिका नाश। इस शब्द का प्रयोग शाप देने के अर्थ में किया जाता है।
अकरा (स्त्री.) बिना हाथ की स्त्री। आमल की वृक्ष। आँवले का पेड। आँवले का सेवन करने से लोगों के दुःख दूर होते हैं इसी कारण इसका "अकरा" नाम पड़ा है।
अकरुण (त्रि.) करुणारहित। निर्दय। दयाशून्य।
अकर्ण (त्रि.) जिसके कान न हो। कर्णरहित। बहरा। बधिर। कर्ण नामक वीर का अभाव या उसका सादृश्य यहाँ "कर्ण" शब्द का अर्थ कान और सुनने की शक्ति दोनों है।
अकर्तनः (त्रि.) काटने के अयोग्य। जो काटा न जाय।
अकर्तृ (पु.) काम नहीं करनेवाला। निकम्मा, किये हुए कर्मों का जो फल भोग न करे।
अकर्मक (त्रि.) जिसके कर्म न हों। धातु का एक भेद। अकर्मक धातु वे कहे जाते हैं, जिनका फल और व्यापार एक आश्रय में रहता हो और जिस धातु के कर्म बहुत प्रसिद्ध होने के कारण अविवक्षित हों, वे धातु भी अकर्मक हो जाते हैं।
अकर्मण्य (त्रि.) जो काम न कर सके। काम करने के अयोग्य। नहीं काम करने वाला।

अकर्मन् (त्रि.) बिना काम का। निकम्मा। काम करने के अयोग्य। निष्काम कर्म करने वाला।

अकल (त्रि.) कलारहित। अखण्ड। सम्पूर्ण। समस्त।

अकल्क (त्रि.) दम्भरहित। अदाम्भिक।

अकल्का (स्त्री.) चन्द्रमा का प्रकाश। चाँदनी। अदाम्भिक स्त्री। पाखण्डरहित।

अकल्कन (त्रि.) जिसमें दम्भ न हो। दम्भ-रहित। अदाम्भिक।

अकल्पित (त्रि.) अचित्रित। बिना बनाया हुआ। अनिर्मित। प्राकृतिक। स्वाभाविक। कल्पनाहीन। कल्पना से परे।

अकल्य (त्रि.) रोगी। व्याधित। व्याधियुक्त।

अकल्याण (त्रि.) अमगंल। कल्याण का अभाव।

अकव (त्रि.) अवर्णनीय। जिसका वर्णन न किया जाय। न अच्छा न बुरा।

अकवि (त्रि.) निर्बुद्धि, मूर्ख।

अकस्मात् (अ.) सहसा। अचानक। अतर्कित।

अकाण्ड (त्रि.) बिना अवसर। बेमौके। अनुचित काल। अनवसर।

अकाण्डजात (त्रि.) अकस्मात् उत्पन्न। अनवसरजात। अनुचितकाल में उत्पन्न।

अकाण्डपात (पु.) अतर्कित पात। सहसा गिरना।

अकाण्डे (क्रि.वि.) अकस्मात्। अचानक, सहसा।

अकाम (त्रि.) कामरहित। वासनारहित। क्षीणशक्ति। प्रेमरहित। निष्प्रेम।

अकामता (स्त्री.) कामशून्यता। निष्कामता। इच्छाराहित्य।

अकामतः (अ.) अनिच्छा से। इच्छापूर्वक नहीं।

अकामहत (त्रि.) अनिच्छापूर्वक नष्ट। बिना इच्छा किये ही मरा हुआ।

अकाय (त्रि.) शरीर-रहित। अमूर्त। निराकार। शरीरहीन। राहु ग्रह।

अकार (त्रि.) काम का अभाव। क्रियारहित।

अकार (पु.) अक्षर।

अकारण (न.) कारणशून्य। बिना कारण। निष्कारण। प्रयोजनशून्य। बे मतलब।

अकार्णवेष्टिकक (नं.) कान का एक गहना। कर्णभूषण।

अकार्पण्य (त्रि.) जिसमें कृपणता न हो। कृपणता का अभाव। उदारता। औदार्य।

अकार्य (न.) अनुचित कार्य। निन्दित कर्म। बुरा काम।

अकाल (पु.) अनुचित काल। अनवसर। अधम समय। महँगी का समय। अयोग्य समय।

अकाल-कुसुम (न.) बिना काल का पुष्प। जिस पुष्प के उत्पन्न होने का जो समय नहीं है उस समय में उत्पन्न हुआ पुष्प। दुःसमय का चिह्नविशेष।

अकाल-कूष्माण्ड (पु.) अकाल में उत्पन्न हुआ कोहड़ा।

अकालज (त्रि.) अकाल में उत्पन्न। बिना समय के उत्पन्न हुआ।

अकाल-जलद (पु.) अकाल का मघ, वर्षा ऋतु को छोडकर अन्य ऋतु का मेघ।

अकाल-जलदोदयः (पु.) अकाल में मेघों की उत्पत्ति। विना समय मेघों का होना। कश्मीरी कवि राजशेखर के प्रपितामह का नाम। सम्भव है यह उनका नाम न रहा हो। किन्तु उपाधि। सुभाषितावली में उद्धृत एक श्लोक से इस बात की कुछ झलक पाई जाती है।

अकालवेला (स्त्री.) अकालिक समय। ज्योतिष् शास्त्र में "कालवेला" एक योग का नाम है, उसका अभाव।

अकिञ्चन (त्रि.) जिसे पास कुछ न हो। अत्यन्त दरिद्र । महानिर्धन।

अकिञ्चनता (स्त्री.) सब प्रकार के धन का अभाव। निर्वेद। संसार के पदार्थो से विराग होने पर जो एक प्रकार का निर्वेद उत्पन्न होता है।

अकिञ्चिज्ज्ञ (त्रि.) कुछ भी न जानने वाला। महामूर्ख।

अकिञ्चित्कर (त्रि.) अनावश्क। अनर्थक। वृथा। व्यर्थ।

अकीर्ति (स्त्री) अप्रशस्त कीर्ति। अनुचित कीर्तै। अनुचित कार्यों से प्राप्त कीर्ति।

अकुण्ठ (त्रि.) अकुण्ठित। अप्रतिहतगति। किसी काम में न रुकनेवाला। सब काम में चतुर।

अकुण्ठित (त्रि.) कुण्ठित नहीं। अप्रतिहत। चारों ओर फैलनेवाला।

अकुतोभय (त्रि.) जिसको किसी का भय न हो। निर्भय। निडर। नहीं डरने वाला।

अकुप्य (न.) धन। सोना। चाँदी। सोना और चाँदी से भिन्न धन को कुप्य कहते हैं। उससे भिन्न अर्थात् सोना, चांदी को अकुप्य कहते हैं।

अकुल (त्रि.) कुलच्युत। कुलटूट। उत्तम कुल का नहीं। शिव का एक नाम।

अकुला (स्त्री.) सती। पार्वती का नाम।

अकुलीन (त्रि.) उत्तम कुल का नहीं। जिसका कुल उत्तम न हो। २ मर्त्यलोकवासी नहीं। "कु" का अर्थ है पृथिवी।

अकुशल (त्रि.) अमगंल। अकल्याण। अचतुर। अनिपुण,अनभिज्ञ।

अकूपार (पु.) समुद्र। सागर। सिन्धु। उदधि। कच्छप। कछुवा। सूर्य।

अकूर्च (त्रि.) बिना दाढ़ी का। गंजा। खल्वाट। (पु.) बुद्ध भगवान्।

अकृच्छ्र (त्रि.) अकठोर। कठिनताशून्य। सहज। सरल।

अकृत (त्रि.) अकर्म। कर्मशून्य। कर्म का अभाव।

अकृतार्थ (त्रि.) असफलमनोरथ। अपूर्णमनोरथ। मनोरथ की असिद्धि।

अकृतास्त्र (त्रि.) अस्त्रविद्या में अशिक्षित। अस्त्रविद्या से अनभिज्ञ।

अकृतात्मन् (त्रि.) जिसकी आत्मा अपने वश में न हो। निर्बुद्धि। मूर्ख, जिसने ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान नहीं प्राप्त किया है।

अकृतोद्वाह (त्रि.) बिना ब्याहा, कुंवारा।

अकृतैनस (त्रि.) जिसने पाप नहीं किया है। पापरहित। निष्पाप।

अकृतज्ञ (त्रि.) अपने पर किये गये उपकार को भूल जाने वाला । कृतघ्न।

अकृतबुद्धि (त्रि.) मूर्ख। अज्ञानी। अचतुर। अपटु, अनिपुण, असमीक्ष्यकारी।

अकृतिन् (त्रि.) अनिपुण। अनभिज्ञ। कार्याक्षम।

अकृत्य (न.) अकार्य। अकर्तव्य कर्म। न करने योग्य कर्म। निन्दित कर्म। बुरा काम। काम का अभाव। बिना काम।

अकृश (त्रि.) कृश नहीं। दुबलापतला नहीं। हृष्टपुष्ट। स्वस्थ। न दुबला न मोटा।

अकृशाश्व (पु.) अयोध्या के एक राजा का नाम। जिसके दुबले घोड़े न हों।

अकृष्ट (त्रि.) नहीं खींचा हुआ। बिना जोता खेत।

अकृष्टपच्य (त्रि.) धान्यविशेष। वह धान्य जो बिना जोते हुए खेत में पके। फसही धान। तिन्नी धान।

अकृष्टरोहिन् (त्रि.) बिना जोते खेत में उत्पन्न होने वाला अन्न।

अकृष्ण (त्रि.) काला नहीं। श्वेत। स्वच्छ।

अकेतु (त्रि.) चिह्नरहित। पताकाहीन। अज्ञान।

अकोट (पु.) वृक्षविशेष। गुवाक नामक वृक्ष।

अक्का (स्त्री.) माता। जननी।

अक्तः (त्रि.) व्याप्ति। युक्ति। योग। परिच्छेद। जुड़ा हुआ, घिरा हुआ।

अक्रतुः (त्रि.) यज्ञ का अभाव। निष्काम। कर्माभाव। दृष्ट और अदृष्ट विषयों से विरक्तबुद्धि।

अक्रम (त्रि.) गमनशक्तिशून्य। पादहीन। विपर्यय। वैपरीत्य। क्रमहीनता। उलट-पलट।

अक्रिय (त्रि.) श्रौत स्मार्त क्रिया का त्याग करनेवाला। निन्दित कर्म। निषिद्ध व्यापार। अकर्ता। निकम्मा। निन्दित कर्म करने वाला।

अक्रूरः (पु.) एक यादव का नाम। इनके पिता का नाम श्वफल्क, और माता का नाम गान्दिनी था। (त्रि.) अकठोर, अनिष्ठुर, क्रूर नहीं, क्रोधहीन।

अक्रोधः (पु.) क्रोध का अभाव। क्रोधशून्य अकोप, क्रोध के कारण होने पर भी क्रोध न करना।

अक्रोधन (त्रि.) क्रोधरहित। क्रोधहीन।

अक्लमः (त्रि.) क्लमरहित। थकावट से रहित। सदा परिश्रम करनेवाला। थका नहीं। सदा व्यापार में लगा हुआ।

अक्लिष्ट (त्रि.) क्लेशित नहीं। क्लेशरहित। अमर्दित।

अक्षः (पु.) रथ का अवयव विशेष। चक्र। चक्का। पहिया। वह लकड़ी जिसमें पहिये लगाये जाते हैं। व्यवहार। आय-व्यय का हिसाब। पाशा। जिससे जूआ खेला जाता है। रुद्राक्ष। बहेड़ा का वृक्ष। ज्ञान। आत्मा इन्द्रिय। रावण। सर्प। शकट। रथ। सोलह मासे। कर्ष। जन्मान्ध। गरुड़। बाण और जोतिष में इससे ५ की संज्ञा जानी जाती है।

अक्षकः (पुं.) वृक्षविशेष। तिनिश नामक वृक्ष। रावण कें पुत्र का नाम। इसे अक्षकुमार भी कहते हैं।

अक्षगण (पु.) इन्द्रियों का समूह।

अक्षचरण (पु.) अक्षपाद। आचार्य गौतम का एक नाम।

अक्षत (न.) चावल। जौ। (पु.) बिना टूटे चावल, जो देवताओं को चढ़ाये जाते हैं।

अक्षत (स्त्री.) ककड़ासींगी वृक्ष। पुरुषसंसर्ग रहित स्त्री।

अक्षदर्शक (पु.) प्राड्विवाक। धर्माध्यक्ष। व्यवहारों का देखनेवाला। जज। मुंसिफ। जुआरी। पासा का देखने वाला।

अक्षदेविन् (त्रि.) जुआड़ी। जुआ खेलने वाला। धूर्त।

अक्षद्युः (पु.) जुआड़ी। जुआ खेलने वाला।

अक्षधुरा (स्त्री.) पहिये के आगे का भाग।

अक्षधूर्तः (पु.) जुआड़ी। जुआ खेलने वाला। धूर्त। कितव।

अक्षपाद (पु.) गौतम। नैयायिकाचार्य।

अक्षपीड़ा (स्त्री.) यवतिक्ता नाम की लता।

अक्षमः (त्रि.) क्षमताशून्य। योग्यताहीन। अयोग्य। क्षमाहीन। क्षमारहित।

अक्षमा (स्त्री.) ईर्ष्या। क्षमा का अभाव।

अक्षमाला (स्त्री.) जपमाला। रुद्राक्ष की माला।

अक्षयः (पु.) अनन्त। क्षयरहित। अविनाशी। जिसका नाश न हो। अव्यय। ब्रह्मनिष्ठ।

अक्षयकाल (पु.) अनन्तकाल। अक्षयकाल के अभिमानी देवता।

अक्षयतृतीया (स्त्री.) वैशाखशुक्ल तृतीया। इसी तिथि को सतयुग की उत्पत्ति हुई है।

अक्षयनवमी (स्त्री.) कार्तिक शुक्लपक्ष की नवमी।

अक्षयवट (पुं.) अविनाशी वटवृक्ष, प्रयाग का वटवृक्ष, जो देवता समझा जाता है।

अक्षया (स्त्री.) तिथिविशेष। सोमवार की अमावास्या। रविवार की सप्तमी और मगंलवार की चतुर्थी ये अक्षया कही जाती हैं।

अक्षर (पु.) अकारादि वर्ण। नाशशून्य। ब्रह्म। अविनाशी। विशेषरहित। प्रणव। कूटस्थ नित्य।

अक्षरचण (पु.) उत्तम लिखने वाला। लेखक।

अक्षरजीविकः (पु.) कायस्थजाति। लेख से जीनेवाला। लेखक।

अक्षरतूलिका (स्त्री.) लेखनी। लिखने का साधन।

अक्षरपङ्क्ति (स्त्री.) छन्दविशेष। इस छन्द में एक भगण और दो गुरू होते हैं।

अक्षरविन्यास (पु.) लेख। लेखन। अक्षरों का लिखना।

अक्षवती (स्त्री.) एक प्रकार के जुए का खेल। चौपड़।

अक्षवाट (पु.) युद्धभूमि। लड़ने का स्थान। अखाड़ा।

अक्षशौण्ड (पु.) पक्का जुआड़ी, जुआ खेलने में चतुर।

अक्षसूत्र (न.) जपमाला। जप करने की माला।

अक्षाग्रकीलक (पु.) रथ के पहिये को रोकने की कील।

अक्षान्तिः (स्त्री.) दूसरे का उत्कर्ष न सहना, ईर्ष्या। क्षमा न करना।

अक्षि (न.) नेत्र। आँख।

अक्षिगत (त्रि.) आँखों पर चढ़ा हुआ। द्वेष्य। शत्रु। विरोधी।

अक्षीण (त्रि.) पूर्ण। अदीन। क्षीण नहीं। एक प्रकार का यति। जो किसी वस्तु की प्राप्ति से प्रसन्न न हो, और अप्राप्ति से खिन्न न हो वह अक्षीण कहा जाता है।

अक्षीब (पु.) समुद्र का लवण। (त्रि.) उन्मादरहित। जो उन्मत्त न हो।

अक्षेश (पु.) मन। इन्द्रियों का स्वामी।

अक्षोट (पुं.) अखरोट वृक्ष। पर्वत पर उत्पन्न हुआ पीपल का वृक्ष।

अक्षोपकरण (न.) द्यूतसाधन। जुआ खेलने की सामग्री।

अक्षोभः (पुं.) खम्भा । खूँटा । पशुओं को बाँधने का खूँटा।

अक्षोभ्यः (पुं.) शिव। दृढ़। अचल। जो राग, द्वेष आदि से विचलित न हो।

अक्षौहिणी (स्त्री) सेनाविशेष। दस अनीकिनी सेना। अक्षौहिणी में २१८७० हाथी २१८७० रथ। ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल होते हैं।

अखदः (पुं.) प्रियालवृक्ष। चिरौंजी का पेड़।

अखण्ड (त्रि.) खण्डरहित। पूर्ण। खण्डशून्य।

अखण्डपरशुः (पुं.) परशुराम। इन के परशु का कोई खण्डन नहीं कर सका था।

अखातम् (पुं.) देवखात, अकृत्रिम तालाब। झील।

अखाद्य (त्रि.) अभक्ष्य। जो खाने के योग्य न हो।

अखिल (त्रि.) समस्त। सम्पूर्ण। अखण्ड।

अखिलाधार (त्रि.) ब्रह्म। समस्त संसार का आधार।

अगः (पुं.) पर्वत। वृक्ष। सरीसृप। भानु।

अगजः (पुं.) पर्वत से उत्पन्न। (न.) शिलाजतु। शिलाजीत।

अगतिः (पुं.) अनवबोध। न जानना। उपाय- रहित। बिना उपाय का।

अगदः (पुं.) औषध। (त्रि.) नीरोग। रोग नहीं।

अगदङ्कार (त्रि.) चिकित्सक। वैद्य। रोग दूर करनेवाला।

अगदतन्त्रम (न.) आयुर्वेद का एक शाखा विशेष। इसमें सांप, बिच्छू आदि के काटने का औषध लिखा है।

अगम (पु.) वृक्ष। जाने के अयोग्य। जहाँ जा न सके।

अगम्य (त्रि.) अज्ञेय। जानने के अयोग्य। गमन के अयोग्य। जहाँ कोई पहुँच न सके।

अगस्ति (पुं.) मुनिविशेष। एक मुनि का नाम। जिसने समुद्र को गण्डूक में रखकर पान कर लिया था। जो दक्षिण दिशा में रहते हैं। वृक्षविशेष।

अगस्तिद्रुम (पुं.) एक वृक्षविशेष। अगस्त नामक वृक्ष। इस के रस के नास लेने से चौथिया ज्वर छूट जाता है।

अगस्त्य (पुं.) मुनिविशेष।

अगस्त्याश्रम (पुं.) अगस्त्य मुनि का आश्रम। काशी का अगस्तकुण्डा नामक स्थान। मलयाचल पर्वत पर वर्तमान अगस्त्य मुनि का आश्रम।

अगाध (त्रि.) बहुत गहरा। जिसका तल न छुआ जा सके। अत्यन्त गम्भीर । दुर्बोधाशय।

अगाधजल (पुं.) ह्रद। तालाब। (त्रि.) जिसमें अगाध जल हो।

अगार (न.) गृह। मकान।

अगुरु (न.) सुगन्धिकाष्ठविशेष। अगर। जो गरू न हो-हलका।

अगोचर (त्रि.) इन्द्रियों के प्रत्यक्ष का अविषय। जो इन्द्रियो के द्वारा न जाना जाय।

अग्नायी (स्त्री.) अग्नि की स्त्री। स्वाहा।

अग्नि (पुं.) पावक। वह्नि। वैश्वानर। अग्नि के अधिष्ठाता देवता।

अग्निकः (पुं.) कीट विशेष। इन्द्रगोप नामक कीट।

अग्निकरण (पुं.) स्फुलिङ्ग। अग्नि के छोटे-छोटे कण।

अग्निकार्य (न.) हवन। होम।

अग्निकाष्ठ (न.) अगुरु। सुगन्धद्रव्यविशेष।

अग्निकोण (न.) दिशा विशेष। पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा।

अग्निक्रीडा (स्त्री.) आतिशबाजी। आग का खेल।

अग्निगर्भ (पुं.) औषध विशेष। सूर्यकान्तमणि।

अग्निचित् (पुं.) अग्निहोत्री। अग्नि चयन करनेवाला।

अग्निज (पुं.) अग्नि से उत्पन्न द्रव्य। सुवर्ण। सोना।

अग्निपुराण (न.) एक पुराण का नाम। इसमें सोलह हजार श्लोक हैं।

अग्निप्रस्तर (पुं.) आग को उठाने वाला पत्थर। चकमक पत्थर।

अग्निबाहु (पुं.) धूम।

अग्निभ (न.) अग्नि के समान। आग की तरह चमकने वाला।
अग्निभू (पुं.) कार्त्तिकेय।
अग्निभूति (पुं.) एक प्रकार के बौद्ध।
अग्निमारुती (पुं.) अगस्त्य मुनि।
अग्निमुख (पुं.) ब्राह्मण। विप्र। देवता। चित्रक।
अग्निमुखी (स्त्री.) औषध विशेष। भल्लातक, भिलावाँ।
अग्नियन्त्र (न.) अग्न्यस्त्र विशेष। बन्दूक तोप आदि।
अग्निवित् (पुं.) अग्निहोत्री।
अग्निव्रत (न.) राजाओं का व्रत विशेष।
अग्निशरण (न.) अग्नि का वास स्थान। दक्षिणाग्नि। गार्हपत्य और आहवनीय नामक अग्नियों के रहने का स्थान। अग्निहोत्र शाला।
अग्निशाला (स्त्री.) अग्निगृह। अग्निशरण।
अग्निष्टोमः (पुं.) यज्ञविशेष। अग्निष्टोम नामक यज्ञ के ग्रन्थ।
अग्निष्वात्तः (पुं.) दिव्य पितर। नित्यपितर। क्रियाशक्ति के अधिष्ठाता।
अग्निहोत्रम् (न.) यज्ञविशेष। अग्न्याधान। सायंकाल और प्रातःकाल नियम से किये जाने वाले कर्म।
अग्निहोत्री (पुं.) अग्निहोत्रयुक्त। अग्निहोत्र करने वाला। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का एक भेद।
अग्नीध्रः (पु.) ऋत्विग्विशेष। जिसका वरण धन के द्वारा होता है उसका काम अग्नि की रक्षा करना है।
अग्नीषोमीय (न.) अग्निसोम नामक यज्ञ की हवि। यज्ञविशेष। जिसके देवता अग्नि और सोम हों।
अग्न्याधान (न.) श्रौताग्नि संस्कार। अग्निहोत्र। अग्निरक्षण। अग्निग्रहण।
अग्न्युत्पातः (पु.) उल्कापात आदि प्राकृतिक विकार, आग का लगना। मन्त्र आदि के द्वारा अग्नि की दाहक-शक्ति का नाश।
अग्न्युपस्थान (त्रि.) अग्नि का उपस्थान। मन्त्रविशेष, जिनसे अग्नि की स्तुति और स्थापन किया जाता है।
अग्र (न.) परिमाण विशेष। सोलह माशे का परिमाण। आलम्बन। समूह। वृक्ष का अग्रभाग। प्रान्त। भिक्षा विशेष। चारग्रास। प्रधान। अधिक। प्रथम।
अग्रकाय (न.पुं.) देह का पूर्व भाग।
अग्रः (त्रि.) सेवक। नौकर। भृत्य। आगे चलनेवाला।
अग्रगण्य (त्रि.) प्रधान। मुख्य। आगे गिनाया जानेवाला।
अग्रगामी (त्रि.) आगे चलने वाला। प्रधान।
अग्रज (पुं.) बड़ा भाई। ब्राह्मण।
अग्रजङ्घा (स्त्री.) जङ्घा का अग्रभाग। छोटी जाँघ।
अग्रजन्मा (पुं.) बड़ा भाई। ब्राह्मण। ज्येष्ठ।
अग्रजाति (पुं.) ब्राह्मण। श्रेष्ठ जाति।
अग्रजिह्व (स्त्री.) जीभ की नोक।
अग्रणीः (त्रि.) श्रेष्ठ। स्वामी। प्रधान। अगुआ। मुखिया।
अग्रतः (अ.) पूर्व भाग। आगे। आगे की ओर।
अग्रतःसर (त्रि.) अगुआ। मुखिया। आगे जानेवाला।
अग्रदानी (पुं.) प्रेतनिमित्तक दान लेने वाला। महापात्र। ब्राह्मण।
अग्रनख (पुं.न.) नख का अग्र भाग।
अग्रनासिका (स्त्री.) नाक का अग्र भाग, नाक की नोक।
अग्रपर्णी (स्त्री.) आलकुशी नामक वृक्ष।
अग्रभागः (पुं.) श्राद्ध आदि में पहले निकाला हुआ द्रव्य। आगे का भाग।
अग्रभुक् (त्रि.) देवता और पितर को विना दिये खाने वाला। पेटू। पेट पालने वाला।
अग्रमांसम् (न.) हृदय के मध्य का मांस। प्रधान मांस, रोगविशेष।
अग्रमुख (न.) मुख का अग्र भाग।
अग्रयाणम् (न.) अग्रगामी। आगे चलना। सेनाविशेष, नासीर।
अग्रयायी (त्रि.) अग्रेसर। आगे चलने वाला।
अग्रलोहिता (स्त्री.) जिसका अग्रभाग लाल वर्ण का होता है। चिल्ली नामक एक प्रकार का शाक।

अग्रसन्धानी (स्त्री.) कर्मविपाक। प्राणियों के पूर्वजन्म का शुभाशुभसूचक ग्रन्थ। (त्रि.) आगे ही से जान लेने वाला, यमपट्टिका, यम का पञ्चाङ्ग।

अग्रसन्ध्या (स्त्री.) सन्ध्या का पूर्व समय, पहली सन्ध्या, प्रातःसन्ध्या।

अग्रसरः (त्रि.) आगे चलने वाला। अग्रगामी।

अग्रहः (पुं.) अविवाहित। जिसकी स्त्री न हो। वानप्रस्थ। संन्यासी।

अग्रहर (पु.) सबसे प्रथम देने योग्य वस्तु उत्तम-वस्तु (त्रि.) प्रथम ग्रहण करने योग्य। सत्पात्र। ब्राह्मण।

अग्रहायणः-म् (पु.न.) अग्र+हायन। मार्गशीर्ष मास। अगहन का महीना।

अग्रहायणी (स्त्री.) अगहनमास की पूर्णिमा, जिसमें उत्तम धान्य उत्पन्न हो। मृगशिरा नक्षत्र के उदय के समय से धान्य उत्तम होते हैं यह बात प्रसिद्ध है।

अग्रहार (पु.) ब्रह्मचारी आदि को देने योग्य पदार्थ। दान की हुई या की जाने वाली वस्तु।

अग्राह्यः (त्रि.) ग्रहण करने के अयोग्य। शिवनिर्माल्य आदि। परमेश्वर। इन्द्रिय का अविषय।

अग्रियः (पु.) आगे होने वाला। बड़ा भाई। (त्रि.) प्रधान-श्रेष्ठ। उत्तम। ज्येष्ठ सहोदर।

अग्रीय (त्रि.) आगे होने वाला। अग्रिय। मुख्य।

अग्रेगूः (पु.) अग्रेसर। आगे चलने वाला। अग्रगामी। मुखिया।

अग्रेदिधिषु (पु.) पुनर्भू का पति, विधवा का पति, जेठी बहिन के ब्याह होने के पहले यदि छोटी बहिन ब्याह दी जाय तो वह अग्रेदिधिषु कही जाती है।

अग्रेसर (त्रि.) अग्रगामी, पुरोगामी, आगे चलनेवाला।

अग्रन्ध्य (त्रि.) आगे होने वाला। अग्रिम। प्रधान। (पु.) बड़ा भाई। प्रतिष्ठित।

अघ (न.) पाप । व्यसन । दुःख। दुरित। अपराध। (त्रि.) पापी। अपराधी।

अघमर्षण (त्रि.) पापनाशक मन्त्रविशेष।

अघायुः (त्रि.) पापपूर्ण। जिसका जीवन पापमय हो।

अघोरः (पुं.) शिव, महादेव, गिरिश, (त्रि.) अभयानक, भयानक नहीं।

अघोरा (स्त्री.) भाद्रमास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, इस तिथि को शिव की पूजा की जाती है इस कारण इसका नाम अघोरा पड़ा।

अघोः (अ.) सम्बोधनार्थक अव्यय।

अघ्न्य (पुं.) प्रजापति। पर्वत। मारने के अयोग्य।

अघ्न्या (स्त्री.) सौरभेयी, गौ, जो न मारी जाय और न मारे।

अघ्रेय (त्रि.) सूंघने के अयोग्य। मद्य। मदिरा।

अङ्कक (पुं.) दृश्य काव्य का एक भेद। चिन्ह। युद्ध। संग्राम। भूषण। रूपक। अंश। समीप। गोद। स्थान। प्रकरण। कटिप्रदेश। नाटक आदि का परिच्छेद। रेखा। नव की संख्या।

अङ्कति (पुं.) अग्निहोत्री। अग्निहोत्र करने वाला। अग्नि। ब्रह्मा। वायु।

अङ्कनम (न.) संख्या का लिखना। चिन्ह। आँकना। चिन्ह करने की सामग्री। मोहर।

अङ्कपालिका (स्त्री.) आलिङ्गन। गोद के समीप। धाय। धात्री।

अङ्कपाली (स्त्री.) गोद। अंङ्क। उत्सङ्ग। उपमाता। धात्री। धाय।

अङ्कस् (न.) चिन्ह। शरीर।

अङ्कित (त्रि.) चिन्हित। लाञ्छित। चिन्ह किया गया। चित्रित। चित्र किया हुआ। गिनाया गया।

अङ्कुर (पुं.) रुधिर। लोम। जल। भूमि को फाडकर निकलने वाला नवीन उद्भिद। तिनका।

अङ्कुरित (त्रि.) बीज की अवस्थाविशेष। जिस में अङ्कुर उत्पन्न हुआ हो। सञ्जात अङ्कुर।

अङ्कुश (न.पुं.) एक प्रकार का अस्त्रविशेष। जिस से हाथी वश में किये जाते हैं यह लोहे का बना हुआ होता है और आगे से टेढ़ा होता है।

अङ्कुरदुर्धर (पु.) दुर्दान्ध हस्ति, हस्तिपक को न माननेवाला हाथी। मतवाला हाथी। अङ्कुश को न माननेवाला हाथी।

अङ्कुशी (स्त्री.) फल आदि तोड़ने का एक प्रकार का साधन। बुद्ध की माता। जैन धर्म के चौबीस देवियों के अन्तर्गत एक देवी।

अङ्कोल (पु.) आकोड नामक वृक्ष। इसके फूल पीले और सुगन्धित होते हैं। इसके फूल में लम्बे-लम्बे काँटे भी होते हैं और इसके फल लाल रंग के होते हैं।

अङ्कोलसार (पुं.) स्थावरविषविशेष।

अङ्क्य (पुं.) वाद्यविशेष। जो अंक में रखकर बजाया जाय। मृदंग, ढोलक आदि।

अङ्ग (अ.) क्षिप्र। शीघ्र। पुनः। संगम। असूया। हर्ष। संबोधन।

अङ्ग (न.) काय। गात्र। अवयव। प्रतीक। उपाय। वेदों के छः अंग। मन। देशविशेष। बिहार का पूर्व और दक्षिण का प्रदेश। यथा "वैद्यनाथं समारभ्य भुवनेशान्तगं शिवे। तावदङ्गाभिधो देशो या त्रायां न हिदुष्यति।।" वैद्यनाथ देवघर-से लेकर ओडिसा के भुवनेश्वर तक अंग देश यात्रा के लिए निषिद्ध नहीं है।

अङ्गग्रह (पुं.) रोगीविशेष। अकड़वाई। शरीर की पीड़ा। अंगों का जकड़ना।

अङ्गज (पुं.) अनंग। कामदेव। बाल। पुत्र। व्याधि। (न.) रुधिर। व्याधि (त्रि.) शरीरोत्पत्र।

अङ्गणम (न.) आँगन। चौक।

अङ्गद (न.) बाहूभूषण। जोसन बाजू आदि। (पुं.) वानरराज बाली का पुत्र (त्रि.) अंगदान करनेवाली। (स्त्री.) दक्षिण दिशा के दिग्गज की हथिनी।

अङ्गन (न.) प्रांगण। आँगन। अँगना।

अङ्गना (स्त्री.) अच्छे अंगों वाली स्त्री। उत्तर दिशा के दिग्गज की हथिनी।

अङ्गनाप्रिय (पुं.) अशोक वृक्ष।

अङ्गपालि (पुं.) आलिङ्गन।

अङ्गमर्द (पुं.) शरीर दबानेवाला। नाई आदि।

अङ्गमर्दिन् (पुं.) शरीर दबानेवाला। नौकर।

अङ्गरक्षणी (स्त्री.) वस्त्रविशेष। अंगीठी अंगरखा।

अङ्गराग (पुं.) अंग लेप। चन्दन केशर आदि।

अङ्गलक्ष्मी (स्त्री.) देह की शोभा। शरीर की कान्ति।

अङ्गव (पुं.) जो अपने अगों में ही सिकुड जाय। सूखा हुआ फल।

अङ्गविकृति (पुं.) अपस्मार रोग। मिरगी रोग, अंगविकार।

अङ्गविक्षेप (पुं.) नृत्यविशेष। जिसमें अंगों के इशारे से भाव बतलाया जाता है।

अङ्गवैकृत (न.) अंगों की चेष्टा से हृदय का भाव बतलाना।

अङ्गसंस्कार (पु.) अङ्गों के संस्कार। शरीर की शोभा बढ़ाने वाले कर्म।

अङ्गहार (पुं.) नृत्य विशेष। अंगविक्षेप। अंगुलि आदि के विक्षेप के भेद से यह नृत्य तीस प्रकार का होता है।

अङ्गहीन (त्रि.) अपूर्णांग। व्यंग। काण। खंज आदि।

अङ्गाङ्गीभावः (पुं.) सम्बन्ध विशेष। अवयवावयी भाव सम्बन्ध। गौण और मुख्य।

अङ्गाधिपः (पुं.) अंगदेश का राजा। कर्ण।

अङ्गारः (न.पुं.) जलता हुआ कोयला। धूमरहित जली लकड़ी। मंगल ग्रह।

अङ्गारकः (पुं.) मंगल ग्रह। लाल रंग।

अंगारकतैलम् (न.) इस नाम से प्रसिद्ध पका हुआ तेल।

अङ्गारकमणिः (पुं.) लाल रंग की मणि। प्रवाल। मूंगा।

अङ्गारकर्कटी (स्त्री.) आग पर पकाई हुई बाटी।

अङ्गारधानिका (स्त्री.) अंगार रखने का पात्र। अँगीठी।

अङ्गारपर्ण (पुं.) चित्ररथ नामक गन्धर्व।

अङ्गारपुष्प (पुं.) जीवपुत्र नामक वृक्ष। जियापुत्ती वृक्ष। इंगुदी वृक्ष।

अङ्गारमञ्जरी (स्त्री.) करञ्जवृक्ष। करौंजा वृक्ष।

अङ्गारशकटी (स्त्री.) अँगीठी, जिसमें नीचे पहिये लगे हुए होते हैं।

अङ्गारि (स्त्री.) अँगीठी। अंगार रखने का पात्र।

अङ्गारिका (स्त्री.) ईख। पलाश के फूल। अँगीठी।

अङ्गारिणी (स्त्री.) अँगीठी। वह दिशा जिसको सूर्य ने छोड़ दिया हो।

अङ्गारितम् (त्रि.) जिस के अंगार उत्पन्न हुए हों। पलाशवृक्ष की कोंढ़ी।

अङ्गारिता (स्त्री.) अँगीठी। लता।

अङ्गिका (स्त्री.) कञ्चुकी, अँगिया, अँगरखा।

अङ्गिन् (त्रि.) प्रधान, मुख्य, शरीरी, देह।

अङ्गिरा (पुं.) मुनिविशेष। जो ब्रह्मा के मानसिक पुत्र थे।

अङ्गीकार (पुं.) स्वीकार। मान लेना। सम्मति देना।

अङ्गीकृत (त्रि.) स्वीकृत। स्वीकार किया गया। माना गया।

अङ्गुरि-री (स्त्री) अङ्गुली। हाथ पैर की अंगुली।

अङ्गुरीय (न.) अंगुली का भूषण। अंगूठी। मुंदरी।

अङ्गुरीयक (न.) अंगुली का भूषण। अंगूठी।

अङ्गुल (पुं.) वात्स्यायनमुनि। आठ जौ का परिमाण।

अंगुलिः (स्त्री.) अंगुली। हाथ पैर की अंगुलियां।

अङ्गुलितोरणम् (न.) अर्द्धचन्द्र। चन्दन आदि के द्वारा मस्तक पर अर्द्धचन्द्र का आकार बनाना। तिलकविशेष।

अङ्गुलित्रः (पुं.) अंगुलिकवच। अङ्गुलि की रक्षा करनेवाला। दस्ताना।

अङ्गुलिमुद्रा (स्त्री.) मोहर की अंगूठी। जिस अंगुठी में अंगुठी के मालिक के नामाक्षर खुदे हुए हों।

अङ्गुलिसन्देश (पुं.) अंगुलि का सन्देश। अंगुलि के शब्द से जानना।

अङ्गुली (स्त्री.) अंगुली। हाथ पैर की अंगुलियाँ।

अङ्गुलीकण्टक (पुं.) नख। नह।

अङ्गुलीय (न.पुं.) अंगूठी।

अङ्गुलीयकम् (न.पुं.) अंगूठी अंगुली के भूषण।

अङ्गुष्ठ (पुं.) बड़ी अगुंली।

अङ्गुष्ठमात्र(त्रि.)अङ्गुष्ठपरिमित वस्तु।अगुष्ठपरिमित हृदयकमल के मध्यवर्ती। आत्मा।

अङ्गुष्ठाना (स्त्री.) सूई से हाथ बचाने की टोपी, इसको दरजी कपड़े सीने के समय काम में लाते हैं, अंगलित्र भी इसी को कहते हैं।

अङ्गूषः (पुं.) नकुल। नेउला। बाण।

अङ्घारि (त्रि.) दीप्तिशील। चमकनेवाला।

अङ्घ्रिः (पुं.) चरण। पाद। वृक्ष की जड़।

अङ्घ्रिपः (पुं.) द्रुम। वृक्ष।

अङ्घ्रिपर्णिका (स्त्री) पृश्निपर्णी। पिठवन। इसके फूल सिंह की पूंछ जैसे होते हैं।

अङ्घ्रिस्कन्धः (पुं.) गुल्फ। एड़ी।

अचक्र (त्रि.) बिना पहिये का। व्यापार रहित। मन्त्री सेनापति आदि से हीन राजा।

अचक्षुस् (त्रि.) नेत्रहीन। अन्धा।

अचण्डी (स्त्री.) शान्त स्वभाव की स्त्री और गौ। क्रोधरहित।

अचरः (पुं.) गमनशक्तिहीन। स्थावर। ठहरा हुआ। पर्वत। पृथिवी।

अचलः (पुं.) स्थिर। दृढ़। पर्वत। कील। शिव।

अचलकीला (स्त्री.) पृथिवी। भूमि।

अचलज (पुं.) औषध-विशेष। पर्वत से उत्पन्न वस्तु।

अचलत्विष (पुं.) स्थिरकान्ति। जिसकी कान्ति का कभी नाश न हो। कोइल।

अचलद्विष (पुं.) पर्वतों का शत्रु। इन्द्र। इन्द्र ने पर्वतों के पक्ष काटे थे। इस कारण इन्द्र का नाम अचलद्विष् पड़ा।

अचलधृति (स्त्री.) छन्दविशेष जिसके चार पाद होते हैं और प्रत्येक पाद में सोलह अक्षर होते हैं।

अचलप्रतिष्ठ (त्रि.) अनतिक्रान्त मर्यादा। समुद्र।

अचलभ्राता (पुं.) एक बौद्धगणाधिप। वे अन्तिम जैनाचार्य के एकादश शिष्यों के अन्तर्गत हैं।

अचला (स्त्री.) पृथिवी।

अचलाधिप (पुं.) हिमवान् पर्वत। पर्वतों का स्वामी।

अचलासप्तमी (स्त्री.) आश्विन शुक्ल की सप्तमी। इस दिन के किए हुए पुण्य कर्म अचल होते हैं इसकारण इसको अचला सप्तमी कहते हैं।

अचापल (न.) चलपता का अभाव। अचाञ्चल्य।

अचिन्त्य (त्रि.) अविचारणीय वस्तु। अपरिच्छेद्य वस्तु। परब्रह्म। मन और बुद्धि के अगोचर वस्तु।

अचिन्त्यात्मा (पुं.) सब भूतों का निर्माता। परमेश्वर।
अचिर (न.) अल्प समय। थोड़ा काल। (त्रि) थोड़ी देर ठहरनेवाले पदार्थ।
अचिरद्युतेः (स्त्री.) विजुली। जिसकी चमक थोड़ी देर रहे।
अचिरप्रभा (स्त्री.) विद्युत्। विजुली।
अचिररोचिस् (स्त्री.) वह वस्तु जिसकी प्रभा थोड़ी देर रहे। विजुली।
अचिरा (स्त्री.) जैनियों की एक मातृका विशेष।
अचिरांशु (स्त्री.) विद्युत्। विजुली।
अचिरात् (अ.) शीघ्र। त्वरित। अविलम्ब।
अचिराभा (स्त्री.) विजुली।
अचेतनः (त्रि.) चेतनाहीन, जड़, व्यक्त। प्रधान। बेसमझ। ज्ञानहीन।
अचेतस (त्रि.) विचारहीन। दुष्टचित्त।
अचैतन्यम् (त्रि.) चैतन्यरहित। ज्ञानशून्य।
अच्छ (अ.) सम्मुख, सामने से।
अच्छ (त्रि.) स्वच्छ। साफ, सुथरा। निर्मल।
अच्छभल्लः (पुं.) रीछ। भालु।
अच्छत्र (पुं.) राजाहीनदेश। अराजकदेश।
अच्छावाक (पुं.) ऋत्विज् विशेष। सोमयज्ञ करानेवाला पुरोहित।
अच्छन्दस (त्रि.) वेदपाठ का अनधिकारी, जिसको वेद पढ़ने की आज्ञा न हो, शूद्र।
अच्छिद्रः (त्रि.) छिद्रशून्य। दोषरहित सम्पूर्ण वैदिक कर्म। वह वैदिककर्म जो अंगहीन न हो।
अच्छोदः (त्रि.) निर्मल जलवाला सरोवर, छोटा तालाब, इस नाम का एक सरोवर, जिसका वर्णन संस्कृत की कादम्बरी में किया गया है।
अच्युतः (पुं.) निर्विकार। विष्णु। कृष्ण। वासुदेव। जो सदा स्थिर रहे। अविचल। पीपल।
अच्युताग्रज (पुं.) बलदेव, इन्द्र।
अच्युतागज (पुं.) कामदेव। अनंग। कृष्ण। रुक्मिणीपुत्र।
अच्युतात्मज (पुं.) कामदेव। अनंग।
अच्युतावासः (पुं.) अश्वत्थवृक्ष। वटवृक्ष। कृष्ण के रहने का स्थान।
अजः (पुं.) विष्णु। शिव। जीवात्मा। ईश्वर। बकरा। मेषराशि। कामदेव। जिसका जन्म न हो।
अजकर्णः (पुं.) वृक्षविशेष। पिपसाल वृक्ष। इस के पत्ते बकरे के कान के समान लम्बे होते हैं।
अजकवम् (नु.पुं.) शिव का धनुष। जिस में ब्रह्मा और विष्णु बाण बने थे।
अजकावः (न.पुं.) शिव का धनुष। जो ब्रह्मा और विष्णु की रक्षा करता है।
अजक्षीर (न.) बकरी का दूध।
अजगः (पुं.) विष्णु, अग्नि।
अजगन्धा (स्त्री.) अजमोदा। औषधविशेष।
अजगन्धिका (स्त्री.) शाकविशेष। बाबुई शाक।
अजगन्धिनी (स्त्री.) अजश्रृंगी। गाडरसींगी।
अजगर (पुं.) सर्प विशेष। बड़ा साँप।
अजघन्य (त्रि.) उत्तम। श्रेष्ठ। जो नीच न हो।
अजजीविक (त्रि.) अजा से जीनेवाला, बकरी का चरवाहा, जो बकरियों को चरा कर जीता है।
अजटा (स्त्री.) आमलकी वृक्ष। कन्द रहित वृक्ष।
अजथ्या (स्त्री.) स्वर्णयूथिका। स्वर्ण पुष्पिका। बकरों का समूह।
अजन्त (पुं.) स्वरान्त। जिन शब्दों के अन्त में स्वर हो।
अजदण्डी (स्त्री.) ब्रह्मदण्डी वृक्ष।
अजननिः शाप के अर्थ में इसका प्रयोग होता है। जन्मरहित। अनुत्पत्ति अछेदन।
अजनयोनिः (पुं.) ब्रह्मा। प्रजापति।
अजनाभ (पुं.) भारतवर्ष का नाम। इस भारतवर्ष का नाम पहिले "अजनाभ" था। जब इस के राजा भरत हुए तब से इस का नाम भारत पड़ा।
अजन्य (न.) उत्पात। शुभाशुभसूचक। दैवकृत उत्पात। उपद्रव।
अजप (पुं.) अस्पष्ट पढ़नेवाला। जप न करनेवाला। (पुं.) छाग पालन करनेवाला। बकरे चरानेवाला।
अजपा (स्त्री.) देवताविशेष। गायत्री विशेष। जिसका जप श्वास-प्रश्वास के साथ स्वयं होता रहता है।

अजपात् (पुं.) पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र। ग्यारह रुद्रों में से एक रुद का नाम।

अजभक्ष (पुं.) बवुर वृक्ष की पत्तियाँ। इन पत्तियों को बकरे प्रसन्नतापूर्वक खाते हैं।

अजमीढ़ (पुं.) अमजेर नामक नगर। उस का राजा। युधिष्ठिर।

अजमोदा (स्त्री.) अजवाइन। उग्रगन्धा।

अजम्भः (पुं.) भेक। मेंढक। (त्रि.) दन्त रहित। जिसके दाँत न हों।

अजयः (पुं.) पराजय। भाँग। बगांल के वीरभूत के पास के एक नद का नाम।

अजय्यम् (त्रि.) अजेय शत्रु। जो जीता न जा सके।

अजर्य्यम् (न.) मित्रता। संग।

अजलोमन् (पुं.) वृक्षविशेष। इसकी मञ्जरी बकरी के लोम के समान होती है।

अजवीथी (स्त्री.) छायापथविशेष। जो आकाशगंगा के नाम से प्रसिद्ध है।

अजश्रृंगी (स्त्री.) वृक्षविशेष। गाडरसींग। इस के फल भेंड़े के सींग के समान होते हैं।

अजस्रम् (न.) निरन्तर। सन्तत। सदा। सर्वदा। त्रिकाल में स्थितिशील।

अजहत्स्वार्था (स्त्री.) शब्दशक्तिविशेष। लक्षणा का एक भेद। उपादान लक्षणा। जो अपने अर्थ को न छोड़कर दूसरे अर्थ का वोध करे।

अजहल्लक्षणा (स्त्री.) अजहत्स्वार्था नाम की लक्षणा। जो अपने वाच्य अर्थ को न छोड़े और वाच्यार्थसम्वन्धी दूसरे अर्थ का भी बोध न करे।

अजहल्लिंग (पुं.) वह शब्द जो अपने लिंग को न छोड़े। विशेषण का यह नियम है कि वह विशेष्य के लिंग के अनुसार हो जाता है, परन्तु कतिपय शब्द ऐसे हैं जिन का लिंग नियत है।

अजहा (स्त्री.) शूकशिम्वी नामक औषध। कवाछ। कपिकच्छुक।

अजा (स्त्री.) माया। त्रिगुण विशिष्ट प्रकृति। वकरी।

अजागरः (पुं.) भृंगराज नामकी औषधि। भंगरा। (त्रि.) जागरण शून्य।

अजाजी (स्त्री.) काला जीरा। सफेद जीरा।

अजाजीवः (पुं.) जिसकी जीविका बकरे बकरियों से हो।

अजातक्कुद (पुं.) वैलों की अवस्था विशेष। थोड़ी उमर का बैल। बच्छा। बछड़ा।

अजातशत्रु (पुं.) युधिष्ठिर। ये किसी से शत्रुता नहीं करते थे इस कारण इनका नाम अजातशत्रु पड़ा।

अजातिः (स्त्री.) अनुत्पत्ति। कार्य कारण की अनुपपत्ति। (त्रि.) जन्मरहित।

अजादनी (स्त्री.) वृक्षविशेष। जिसे बकरे खाते हैं। विचटी वृक्ष।

अजानिः (पुं.) जिसकी स्त्री न हो। स्त्रीरहित।

अजानेयः (पुं.) उत्तम घोड़ा। प्रभुभक्त घोड़ा। (त्रि.) निर्भय। निडर।

अजापालः (पुं.) बकरे पालने वाला भेड़िहर। मेषपाल।

अजाप्रिया (स्त्री.) बदरी। वैर।

अजिः (पुं.) तेज। प्रताप। प्रभुता।

अजिन (पुं.) चमड़ा। चर्म। मृगचर्म।

अजिनपत्रा (स्त्री.) जिसके पाँख चमड़े के हों। चमगीदड़। चमचिट्ट।

अजिनफला (स्त्री.) वृक्षविशेष। जिसके फल बहुत बड़े-वड़े होते हैं।

अजिनयोनि (स्त्री.) मृगचर्म के कारण। हरिण हरिणी आदि।

अजिर (न.) आँगन। चौक।

अजिह्म (त्रि.) अकुटिल। सरल। सीधा।

अजिह्मग (पुं.) वाण। सर्प (त्रि.) सीधा चलनेवाला। सदाचारी।

अजीगर्त (पुं.) शुनःशेप के पिता। इनकी कथा उपनिषदों में लिखी है। दरिद्रता और निर्घृणता में इनकी बराबरी करने वाला आज तक दूसरा नहीं हुआ।

अजीतः (पुं.) जैनियों का एक तीर्थंकरविशेष। भावी बुद्ध। (त्रि.) अनिर्जित। अपराजेय।

अजीर्ण (न.) उदररोगविशेष। मन्दाग्नि। अधिक भोजन दुर्बलता आदि के कारण यह रोग उत्पन्न होता है।

अजीवः (त्रि.) मृत। मरा हुआ। मृतक। अनेकान्तवादियों का दूसरा पदार्थ। वह चार प्रकार का है पुद्गल। आकाश। धर्मा-धर्म। और अस्तिकाय।

अजीवनिः (स्त्री.) जीवन का अभाव। शाप के अर्थ में इसका प्रयोग किया जाता है।

अजेय (त्रि.) जो जीता न जा सके। जीतने के अयोग्य।

अजैकपाद (पुं.) पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र। रुद्र-विशेष का नाम। क्योंकि इसका पैर बकरी के पैर के समान है।

अज्जुका (स्त्री.) नाटकोक्ति में वेश्या। बड़ी बहिन।

अज्ञ (त्रि.) जड़। वेदों के तात्पर्य न जानने वाला। अनपढ़। अविवेकी। मूर्ख।

अज्ञात (त्रि.) अज्ञान से युक्त। अविदित।

अज्ञानम् (न.) अविद्या। ज्ञान का अभाव। ज्ञान से नष्ट होनेवाला। वेदान्त-प्रसिद्ध पदार्थविशेष। भागवत में अज्ञान के पांच भेद बतलाये गये हैं। तम, मोह, महामोह, तामिस्र और अन्धतामिस्र। भागवत में यह लिखा है कि सृष्टि के आदि में ब्रह्मा ने इन्हें बनाया था।

अज्ञानप्रभवः (पुं.) अज्ञान से उत्पन्न। अपने स्वरूप के यथार्थ ज्ञान होने के कारण जिसकी उत्पत्ति हो।

अज्ञानी (त्रि.) मूर्ख। अविद्वान्।

अज्ञेय (त्रि.) ज्ञान का अविषय। जो जाना न जाय। (पुं.) वायु।

अञ्चलः (पुं.) वस्त्र का प्रान्त भाग। आंचर। पल्ला।

अञ्चितः (त्रि.) पूजित। पूजा गया। आदृत। जिसका आदर किया गया हो।

अञ्चितभ्रु (स्त्री.) सुन्दर भौंहवाली स्त्री।

अञ्ज् (धा. पर.) मिलना। जाना। प्रकाश करना। (पुं.) दिग्गजविशेष। अज्ञान। आवरण। उपाधि।

अञ्जनकेशी (स्त्री.) एक सुगन्धद्रव्यविशेष। जिसे स्त्रियां बालों में लगाती हैं। यह हट्टविलासिनी नाम से प्रसिद्ध है।

अञ्जना (स्त्री.) एक वानरी का नाम। जिसके गर्भ और वायु के औरस से हनुमान् उत्पन्न हुए थे।

अञ्जनाधिका (स्त्री.) कृष्णवर्ण होने के कारण अञ्जन से अधिक एक कीटविशेष। जो बहुत काले वर्ण का होता है।

अञ्जनावती (स्त्री.) सुप्रतीक नामक दिग्गज की हथिनी। क्योंकि यह बहुत काली है।

अञ्जनी (स्त्री.) गन्ध-द्रव्यों के लेपन करने योग्य। स्त्री। कटुक वक्ष। कालाञ्जन।

अञ्जलि (पुं.) हाथ जोड़ना। जुड़े हुए दोनों हाथ। परिमाणविशेष।

अञ्जलिका (स्त्री.) मूषिका। छोटा चूहा। अर्जुन के एक बाण का नाम।

अञ्जलिकारिका (स्त्री.) एक पौधा। जो लज्जावती या लजवन्ती नाम से प्रसिद्ध है। छूने से इसके पत्ते सिकुड़ जाते हैं। हाथों का जोड़ना। हाथ जोड़ने का काम।

अञ्जस् (त्रि.) प्राञ्जल। अवक्र। सीधा। सरल।

अञ्जसा (अ.) शीर्घ। जल्दी। ठीक-ठीक। त्वरित। आर्जव। अनायास।

अञ्जसाकृतम् (त्रि.) विनय से किया हुआ कर्म।

अञ्जीरम् (न.) वृक्षविशेष। स्वनाम-प्रसिद्ध वृक्ष विशेष और फल।

अट् (धा. पर.) गमन। गति। जाना।

अटनम् (न.) भ्रमण। गमन।

अटनिः-नी (स्त्री.) धनुष का अग्रभाग। जहाँ चिल्ला चढ़ाया जाता है। धनुष कोटि।

अटविः (स्त्री.) वन, अरण्य।

अटवी (स्त्री.) अरण्य। वन। वृद्धावस्था में जहाँ भ्रमण किया जाय।

अटा (स्त्री.) भ्रमण। पर्यटन।

अटाट्या (स्त्री.) भ्रमण। पर्यटन। घूमना। निरर्थक घूमना। विना काम के घूमना।

अट्ट (धा. आत्म.) लांघना। मारना। (उभ.) अनादर करना।

अट्टः (पुं.) महल के ऊपर का घर। अटारी। वाजार। दुकान। सूखा अनाज। अत्यन्त। अतिशय।

अट्टहासः (पुं.) अत्यन्त हँसी। अधिक हँसना। महादेव की हँसी।

अट्टहासक (पुं.) कुन्द पुष्प-विशेष।

अट्टालः (पुं.) अटारी। कोठे के ऊपर का घर।

अट्टालकः (पुं.) महल के ऊपर का घर।

अट्टालिका (स्त्री.) अटारी। महल। ऊँचा मकान। धनी राजा आदि का मकान। एक नगर का नाम।

अड् (धा. पर.) उद्यम करना।

अड्ड (धा. पर.) आक्रमण करना। अभियोग करना। समाधान करना। प्रमाणित करना। अनुमान करना।

अण् (धा. पर.) शब्द करना। सांस लेना।

अण (धा. आत्म.) जीना। प्राण धारण करना।

अण् (न.) नीच। निन्दित। बहुत छोटा।

अणक (त्रि.) कुत्सित। गर्हित। निन्दित।

अणव्य (न.) अणुओं का उत्पत्ति स्थान। खेत। जिसमें छोटे छोटे अन्न उत्पन्न हों।

अणिः (पुं. स्त्री.) कील। जो रथ के पहिये के आगे लगाया जाता है। सुई की नोक। शस्त्राग्र। सीमा। सूक्ष्म भाग। अल्प। अल्पार्थक।

अणिमा (पुं.) छोटा पन। लघुता। योगियों की अष्ट सिद्धियों में से एक सिद्धि।

अणीयस (त्रि.) बहुत थोड़ा। बहुत छोटा। लघुतर।

अणु (पुं.) चीना नामसे प्रसिद्ध व्रीहि-विशेष। लेश। सूक्ष्म। परमाणु। पदार्थों का मूल कारण। नैयायिक-स्वीकृत पदार्थ विशेष। (त्रि.) सूक्ष्म। छोटा।

अणुक (त्रि.) अल्पतर। बहुत छोटा। बड़ा सूक्ष्म।

अणुमा (स्त्री.) जिसकी प्रभा स्वल्प क्षणस्थायी हो। विद्युत्। बिजुली।

अणुमात्रिक (त्रि.) जिसका अणु परिमाण हो। अतिक्षुद्र। अत्यन्त छोटा। जीव की संज्ञा। क्योंकि जीव का परिमाण बहुत छोटा होता है।

अणुरेणुः (पुं.) त्रसरेणु। धूल-कण।

अण्ड (न.) अण्डकोश। पक्षीका अण्डा। कस्तूरी। पेशी।

अण्डज (पुं.) अण्डे से निकला पक्षी। साँप। कृकलास। अण्डे से उत्पन्नमात्र।

अण्डालु (पुं.) मत्स्य। मछली।

अण्डीरः (पुं.) पुरुष। समर्थ। शक्तिमान्।

अतट (पुं.) जिसका किनारा न हो, प्रपात, पर्वत का ऊपरी भाग, जहां से जल गिरता है।

अतद्गुणः (पुं.) अलकांर विशेष। यह अलंकार वहाँ होता है। जहाँ उसके (किसी वर्णनीय पदार्थ के) गुण ग्रहण करने की सम्भावना रहने पर भी गुण ग्रहण न हो सके। बहुव्रीहि समास का एक भेद।

अतन्द्रितः (त्रि.) निरालस। आलस्य रहित।

अतर्कितः (त्रि.) अविचारित। सहसा। अकस्मात्। विचाररहित।

अतर्क्यः (पुं.) अपने तर्क से जानने के अयोग्य। परमात्मा। अतीन्द्रिय। मन वचन के अगोचर।

अतलम् (न.) पृथ्वीतल। पाताल विशेष। (त्रि.) तलरहित। निस्तलप्रदेश।

अतलस्पर्शम् (त्रि.) अतिगभीर। अगाध। जिसका तल छुआ न जा सके। अथाह।

अतलादिः (पुं.) अतल आदि सात लोक। नीचे के सात लोक। अतल। वितल। सुतल। रसातल। तलातल। महातल और पाताल ये सात लोक हैं।

अतः (अ.) हेतु। कारण। अपदेश। निर्देश।

अतसः (पुं.) वायु। क्षौम। पटवस्त्र। प्रहरण। आत्मा।

अतसी (स्त्री.) क्षमा। अलसी नाम से प्रसिद्ध धान्य विशेष।

अतसीतैलम् (न.) अलसी का तेल।

अतस्कः (त्रि.) असंयतेन्द्रिय।

अति (अ.नि.) प्रशंसा। प्रकर्ष। उत्कर्ष। लांघना। अधिकता। अत्यन्त स्तुति। पूजा।

अतिकटुः (त्रि.) निम्बवृक्ष। अत्यन्त कड़ुआ।

अतिकष्टः (त्रि.) श्रद्धा के अयोग्य। नष्ट धर्म। अविश्वसनीय। विश्वास करने के अयोग्य।

अतिकन्दकः (पुं.) अधिक जड़वाला वृक्ष। हस्तिकन्दकनामक वृक्ष।

अतिकेशर (पुं.) वृक्ष विशेष। कुब्जक वृक्ष।

अतिकृतिः (स्त्री.) छन्दोविशेष। पच्चीस अक्षरों का यह छन्द होता है।

अतिकृच्छ्रम् (न.) व्रत विशेष। यह व्रत तीन दिन तक किया जाता है। एक एक कवल नित्य भोजन करने का इस व्रत में विधान है।

अतिक्रयः (पुं.) अतिपात। क्रमका उल्लघंन करना। नियम न मानना अपने कर्त्तव्य से विचलित होना।

अतिक्रमण्य (न.) उचित से अधिक अनुष्ठान करना। वस्तु की सिद्धि होने पर भी कर्म करते रहना।

अतिक्रमणीयः (त्रि.) अतिक्रमण के योग्य। डांकने के योग्य। उलंघन करने के अयोग्य।

अतिक्रान्त (त्रि.) अतिक्रम। किया गया। अतीत। अपने कर्त्तव्य से विचलित। अपने काम को भूला हुआ।

अतिगण्डः (पुं.) ज्योतिषशास्त्र का एक योग। छठवाँ योग। (त्रि.) बड़ी गलावाला।

अतिगन्धः (पुं.) अधिक गन्धवाला। भूतृण। चम्पक वृक्ष। बड़ी सुगन्धवाला।

अतिचर्ण (स्त्री.) स्थलपद्मिनी। इसका नाम पद्माभ है। यह उत्तर की ओर बहुत होता है।

अतिचारः (पुं.) बहुत चलनेवाला। मगंल आदि पाँच ग्रहों का एक राशि का भोग की समाप्ति के विना दूसरी राशि पर जाना। पूर्व राशि पर जाने का नाम वक्रातिचार है और आगे की राशियों पर जाने का नाम अतिचार है।

अतिचरित्र (पुं.) छत्रा। छाती नाम से प्रसिद्ध एक तृण विशेष। यह स्थल पर होता है। तालमखाना। सुल्फा।

अतिच्छत्रक (पुं.) भूतृण विशेष।

अतिजगती (स्त्री.) छन्द विशेष। यह छन्द तेरह अक्षरों का होता है (त्रि.) जगत् को डाकने वाला। ज्ञानी। जीवन्मुक्त।

अतिजवः (त्रि.) वेगवान् बड़े वेग से चलने वाला।

अतिजागरः (पुं.) नील बक पक्षी। यह सदा जागता रहता है, (त्रि.) जिसको नींद नहीं आती।

अतिडीनम् (न.) पक्षियों का गति विशेष।

अतितराम् (अ.) अधिक। अत्यन्त अधिक।

अतितीक्ष्ण (त्रि.) अत्यन्त कडुआ। मरिचा। आदि।

अतितीव्रा (स्त्री.) गांठ दूब।

अतिथिः (पुं.) सूर्यवंशी एक राजा। इनके पिता का नाम कुश था और इनकी माता का नाम कुमुद्वती था। यह रामचन्द्रजी का पौत्र था। आगन्तुक। पाहुन। जो एक रात रहे।

अतिथिपूजनम् (न.) नृयज्ञ। पञ्च यज्ञ के अन्तर्गत एक यज्ञ।

अतिथिसपर्या (स्त्री.) अतिथिसेवा। अतिथि का सत्कार। पञ्च महायज्ञों के अन्तर्गत एक यज्ञ। नृयज्ञ।

अतिदिष्ट (त्रि.) दूसरे के धर्म का दूसरे में आरोप करना। मीमांसा शास्त्र की एक परिभाषा।

अतिदीप्यः (पुं.) रक्तचित्रक वृक्ष। लाल चिता।

अतिदेशः (पुं.) दूसरे के धर्म का दूसरे में आरोप करना।

अतिधन्वा (पुं.) धानुष्क। अनुर्धारी। धनुर्विद्या में निपुण मरुभूमि को डांक जानेवाला।

अतिधृतिः (स्त्री.) छन्द विशेष। इसके प्रत्येक पद में उन्नीस अक्षर होते हैं।

अतिपतन (न.) अत्यन्त। नाश। अतिक्रमण।

अतिपत्तिः (स्त्री.) (सिद्ध न होना) असिद्धि।

अतिपत्र (त्रि.) बड़े-बड़े पत्तोंवाला वृक्ष। हस्तिकन्द वृक्ष। इसका उपयोग पशु- चिकित्सा में किया जाता है।

अतिपन्था (पुं.) सुन्दर मार्ग। अच्छा रास्ता। सदाचार।

अतिपातः (पुं.) पर्याय।

अतिपातक (न.) नव प्रकार के पापों में एक बड़ा पाप। वह तीन प्रकार का होता है। पुरुषों को माता कन्या और पुत्रवधू के संसर्ग से उत्पन्न होता है। स्त्रियों को पुत्र, पिता और श्वशुर के संसर्ग से उत्पन्न होता है।

अतिपातकी (पुं. स्त्री.) पापी विशेष। माता, भगिनी और कन्या के साथ दुराचार करने वाले। गुरुद्रोही। कुलधर्म को छोड़ देने वाले और विश्वासघाती ये अतिपातकी कहे जाते हैं।

अतिप्रसक्तिः (स्त्री.) अत्यन्त आसक्ति। अत्यन्त सेवन।

अतिप्रसंगः (पुं.) अत्यन्त आसक्ति। दूसरा उद्देश्य रहने पर भी उसके साथ ही दूसरे पदार्थ का सेवन। उद्देश्य के अतिरिक्त पदार्थ का सेवन।

अतिबल (त्रि.) एक पौधा विशेष। बल बढ़ाने वाला औषध। अस्त्र विद्या विशेष। इस विद्या को महर्षि विश्वामित्र ने महर्षि कृशाश्व से सीखी थी। श्रीरामचन्द्रजी ने इस विद्या को महर्षि विश्वामित्र से सीखी थी।

अतिभरः (पुं.) अधिक भार। अत्यन्त विस्तार।

अतिभूमिः (स्त्री.) अतिशय। अधिकता। अमर्यादा। सीमा को अतिक्रम किया हुआ।

अतिमंगल्य (पुं.) बिल्वफल। (त्रि.) मंगलालय। अतिशय मंगल उत्पन्न करनेवाला। बहुत शुभ उत्पन्न करने वाला।

अतिमर्याद (न.) अतिशय। निर्भय।

अतिमात्रम् (न.) मात्रा की अधिकता। परिमाण से अधिक। थोड़े को लांघने वाला।

अतिमानिता (स्त्री.) अहंकार। अपने को पूज्य समझना।

अतिमुक्तः (पुं.) निःसंग। निष्कल। योगियों की एक अवस्था विशेष। माधवीलता।

अतिमुक्तकः (पुं.) तिनिश। तिन्दुकवृक्ष। पुष्पवृक्ष विशेष।

अतिमैत्रः (पुं.) नवम तारा। (त्रि.) परम मित्र। अत्यन्त मित्र।

अतिमोदा (स्त्री.) नवमल्लिका लता (त्रि.) अतिशय हर्षित। बड़ी सुगन्धितवाला।

अतिरथ (पुं.) योधा विशेष। जो अनेक योधाओं के साथ एक ही साथ युद्ध करे।

अतिरसा (स्त्री.) अधिक रसवाली लता। रास्ना लता।

अतिरात्रः (पुं.) यागविशेष।

अतिरिक्त (त्रि.) अधिक। अच्छा। भिन्न। शून्य।

अतिरुक्षः (त्रि.) अत्यन्त रूखा। स्नेहशून्य। (पुं.) धान्य विशेष। कंगनी। कोदो आदि।

अतिरेक (पुं.) अतिशय। भेद। बड़ा। आधिक्य।

अतिरोग (पुं.) रोगविशेष। बड़ा रोग। क्षय व्याधि।

अतिरोमश (पुं.) बनैला बकरा। जिसके बहुत रोम होते हैं।

अतिवक्ता (त्रि.) बांवदूक। वक्ता। अधिक बोलनेवाला।

अतिवर्णाश्रमी (पुं.) वर्णाश्रम हीन। वर्ण और आश्रम के धर्मों का पालन न करने वाला। जीवनमुक्त। महात्मा। पञ्चमाश्रमी।

अतिवर्तिन् (त्रि.) अतिक्रम करनेवाला। नियम को तोड़ कर चलने वाला।

अतिवर्तुल (पुं.) धान्यविशेष जो बहुत गोल होता है।

अतिवाद (पुं.) किसी बात को बढ़ाकर कहना। कठोर वचन। अप्रिय वचन।

अतिवादी (त्री.) सबको चुप कराकर बोलने वाला। सबका मत खण्डन करके जो अपने मत को स्थापित करे।

अतिवाहित (त्रि.) चला गया। बीत गया। व्यतीत हुआ।

अतिविकट (पुं.) दुष्ट हाथी। मतवाला हाथी (त्रि.) अतिकराल। अत्यन्त विकट।

अतिविषा (स्त्री.) औषध विशेष। अतीस।

अतिवेल (न.) अतिशय। अधिक। भृश। मर्यादातिक्रान्त। अभिलाषा।

अतिव्यथा (स्त्री.) अत्यन्त पीड़ा। अतिशय कष्ट।

अतिव्याप्ति (स्त्री.) अधिक विस्तार। अत्यन्त विस्तृति। नैयायिकों के एक दोष का नाम। यदि किसी का लक्षण-अर्थात् एक प्रकार की परिभाषा किया जाय और वह लक्षण अपने मुख्य वाच्य को छोड़ कर दूसरे का वाचक हो जाय। जो वहां अतिव्याप्ति दोष माना जाता है।

अतिशक्ति (स्त्री.) अधिक शक्तिवाला। बलवान्। असीम बलशाली। जिसके समान शक्ति औरों की न हो।

अतिशय (पुं.) आधिक्य। अधिकता। बड़ाई।

अतिशयितः (त्रि.) अधिक। अतिक्रान्त। अधिकतायुक्त।

अतिशयोक्ति (स्त्री.) अर्थालंकारविशेष। वर्णनीय वस्तु की उत्कर्षता दिखाने के लिये उसे दूसरी वस्तु के रूप में प्रकट करना।

अतिशक्करी (स्त्री.) छन्दविशेष। जिसके प्रत्येक पाद में १५ अक्षर होते हैं।

अतिशायन (न.) अधिकता। प्रकर्ष।

अतिशीत (न.) अधिक शीत! अधिक ठण्ढा। (त्रि.) वह वस्तु जिसका स्पर्श बहुत ठण्ढा हो।

अतिशोभनम् (त्रि.) अत्यन्त शोभायुक्त। अतिशय शोभनीय। श्रेष्ठ। उत्तम। रमणीय।

अतिसन्ध्या (स्त्री.) प्रदोष-काल। सन्ध्या के समीप का समय।

अतिसर्गः (पुं.) स्वेच्छापूर्वक काम करने की आज्ञा।

अतिसर्ज्जन (न.) देना। मारना। ठगना। छोड़ना।

अतिसायम् (अ.) सायंकाल के समीप। प्रदोष का समय।

अतिसार (पुं.) रोग विशेष। अतिसार रोग।

अतिसारकिन् (त्रि.) अतिसार रोगी। अतिसार रोगवाला।

अतिसृष्टः (त्रि.) दत्त। दिया हुआ। नियुक्त किया गया। दिया गया। भेजा गया।

अतिसौरभः (पुं.) आम्र विशेष। बहुत सुगन्धिवाला।

अतिस्थूलः (त्रि.) अत्यन्त मोटा। आवश्यकता से अधिक मोटा।

अतिहसितम् (न.) अतिशय हास्ययुक्त। अधिक हँसने वाला।

अतीत (त्रि.) व्यतीत। बीता हुआ। बीत गया। भूतकाल।

अतीतकालः (पुं.) हेत्वाभासविशेष। अनुमान के द्वारा किसी पदार्थ के साधन समय बीत जाने पर उसके साधन के लिए जो हेतु कहा जाय वह अतीतकाल हेतु कहा जाता है और वह हेत्वाभास दोष है।

अतीन्द्रियम् (त्रि.) इन्द्रियों से न जानने योग्य वस्तु। अप्रत्यक्ष।

अतीव (अ.) बहुत ही। अत्यन्त। अधिक। अतिशय।

अतीसार (पुं.) रोग विशेष। उदर रोग। स्वनामख्यात रोग।

अतुलः (त्रि.) अनुपम। उपमान रहित।

अत्तिका (स्त्री.) बड़ी बहिन। इस शब्द का प्रयोग नाटकों में किया जाता है।

अत्यन्तम् (न.) अतिशय। अधिक। सीमा को अतिक्रमण करने वाला।

अत्यन्तकोपन (त्रि.) चण्ड। अधिक क्रोधशील। अधिक क्रोध करनेवाला।

अत्यन्तगामी (त्रि.) अधिक चलनेवाला। सततगामी। हरकारा।

अत्यन्तसंयोग (पुं.) समस्त सम्बन्ध। निरन्तर संबन्ध। आपस में मेल-मिलाप। जिस प्रकार धूम और अग्नि का सम्बन्ध है, दो पदार्थों का आपस में ऐसा मिल जाना कि दोनों के मेल से एक दूसरा पदार्थ उत्पन्न हो जाय।

अत्यन्ताभावः (पुं.) नैयायिकों के मत से अभाव का एक भेद। किसी वस्तु का त्रिकाल में अभाव न था, न है और न होगा। यथा-वायु में रूप का अत्यन्ताभाव है क्योंकि वायु में रूप न तो था, न है और न होगा।

अत्यन्तिक (त्रि.) अत्यन्त चलने वाला। अतिशय गमनकारी।

अत्यन्तीन (त्रि.) अत्यन्त चलने वाला। चिरस्थायी।

अत्यम्लः (पुं.) बहुत खट्टा फल। तेतुल। इमली।

अत्यम्लपर्णी (स्त्री.) जिसके पत्ते अधिक खट्टे होते हैं। वृक्ष विशेष। बनबीजपुर नामक वृक्ष, यह रावालेबु के नाम से प्रसिद्ध है।

अत्ययः (पुं.) अतिक्रम। दण्ड। अभाव। विनाश। दोष। कष्ट। अत्यन्त गमन। बल से व्यवहार करना। मृत्यु होनेवाले कार्मों की सिद्धि।

अत्यर्थम् (न.) अतिशय। अधिक। (त्रि.) अतिशययुक्त अर्थ का अभाव।

अत्यल्पम् (त्रि.) छोटा। बहुत छोटा। अत्यन्त लघु।

अत्यष्टिः (स्त्री.) छन्द विशेष। जिसके प्रत्येक पाद में सत्रह १७ अक्षर होते हैं।

अत्याकारः, (पुं.) तिरस्कार। निरादर। आदर का अभाव। (त्रि.) विशाल शरीर। बड़ा शरीरवाला।

अत्यागी (त्रि.) कर्म फल की इच्छा न कर काम करनेवाला। अज्ञ। अनभिज्ञ। वना हुआ सन्यासी।

अत्याचार (पुं.) उपद्रव। दुःखद काम। शास्त्रीय नियम का उल्लंघन।

अत्याधान (न.) अतिक्रम। उपश्लेष सम्बन्ध। नियम विरुद्ध अग्नि स्थापन।

अत्याल (पुं.) रक्तचित्रक वृक्ष। लालचिता।

अत्याश्रम (पुं.) परमहंस। ब्रह्मचर्य आदि आश्रमधर्मों को पालने करने वाला।

अत्याश्रमी (पुं.) उत्तमाश्रमी। परमहंस परिव्राजक।

अत्याहित (न.) अत्यन्त भय। महाविपद्। जिसमें प्राण जाने का भय हो।

अत्युक्ति (स्त्री.) वढ़ कर कहना अन्याय वचन। असमभव उक्ति। अर्थालंकारविशेष, जहाँ झूठ और अद्भुत का वर्णन हो।

अत्युकृथा (स्त्री.) छन्दविशेष। इस छन्दके प्रत्येक पाद में दो अक्षर होते हैं। सामवेद के उकृथ भाग को विगाड़ कर गानेवाला।

अत्युच्छ्रित (त्रि.) अधिक वढ़ा हुआ।

अत्यूह (पुं.) गरुड़। पक्षिविशेष। अत्यूह पक्षी। काल। कण्ठकं। (त्रि.) अधिक विर्तक। बहुत वितर्क करनेवाला।

अत्यूहा (स्त्री.) नील नाम का पौधा। नील सिन्दुवार।

अत्र (अ.) अधिकरणार्थक अव्यय। इसमें। यहाँ।

अत्रभवान् (त्रि.) श्लाघ्य। पूजनीय। प्रशंसा करने योग्य।

अत्रिः (पुं.) सप्तर्षियों में के एक ऋषि। (त्रि.) तीन से भिन्न। तीन नहीं।

अत्रिजातः (पुं.) चन्द्रमा, ब्राह्मण।

अत्रिनेत्रजः (पुं.) चन्द्रमा।

अथ (अ.) निरन्तर। मंगल। प्रश्न। संशय। आरम्भ। विकल्प। पक्षान्तर। इस शब्द का अर्थ मंगल नहीं है किन्तु इसका उच्चारण करना ही मंगल है।

अथ किम् (अ.) स्वीकार। अंगीकार।

अथर्वन् (पुं.) शिव। मुनिविशेष। इसी मुनि ने अथर्ववेद का संकलन किया है।

अथर्वा (पुं.) ब्राह्मण। अथर्ववेद। अथर्व मुनि का कहा हुआ धर्म।

अथर्ववित् (पुं.) अथर्ववेद का ज्ञाता वशिष्ठ आदि।

अथर्ववेद (पुं.) ऋग्वेद का वह भाग जिसमें मारण उच्चाटन आदि का भेद लिखा है।

अथर्वाधिपति (पुं.) चन्द्रमा के पुत्र बुध।

अथवा (अ.) पक्षान्तरबोधक अव्यय।

अथो (अ.) आरम्भ आदि। (देखो अथ)।

अद् (धा.पर.) खाना। भोजन करना।

अदत्ता (स्त्री.) विना व्याही स्त्री। कुमारी।

अदत्तादायी (त्रि.) बिना दी हुई वस्तु को ग्रहण करने वाला। चोर। डाकू।

अदनम् (न.) भक्षण। भोजन।

अदभ्रम् (त्रि.) बहुत। थोड़ा नहीं।

अदर्शनम् (त्रि.) दर्शन के अयोग्य। जो देखने में न आवे। जो न देखा जाय।

अदल (पुं.) हिज्जल नामक वृक्ष। (त्रि.) पत्ररहित वृक्ष। विना पत्तों का पेड़।

अदस् (त्रि.) दूसरा। अन्य। दूर की वस्तु।

अदाता (पुं.) कृपण। दानशक्तिहीन। जो दे न सके।

अदात्यः (पुं.) जलाने के अयोग्य। शरीर- रहित। परमात्मा। महारोगी।

अदिति (स्त्री.) देवमाता। ये दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की स्त्री थीं। पुनर्वसु नक्षत्र। क्योंकि इसकी देवता अदिति है। न काटने योग्य भूमि।

अदितिनन्दन (पुं.) अदिति के पुत्र। देवता।

अदीनः (त्रि.) उदार। दीन नहीं।

अदीनात्मा (त्रि.) अत्यन्त कष्ट होने पर भी जिसकी आत्मा विचलित न हो।

अदृश्यम् (न.) न देखे जाने योग्य रूप। (त्रि.) इन्द्रियों से नहीं देखे जाने योग्य।

अदृष्टम् (न.) भाग्य। नियति। शुभाशुभ रूप कर्म।

अदृष्टपूर्वः (त्रि.) पहले नहीं देखा गया।

अदृष्टि (स्त्री.) दृष्टि का अभाव। अन्धा। वक्रदृष्टि। क्रोध के साथ देखना।

अदेवमातृकः (पुं.) जिस देश में नदी या नहर आदि के जल से अन्न उत्पन्न होता है उस देश के वासी।

अद्धा (अ.) सत्यार्थक अव्यय। सामने। साफ।

अद्भुत (न.) उत्पात। विस्मय। चित्तका विस्मयनामक विकार। नवरसों में से एक रसविशेष।

अद्भुतस्वनः (पुं.) महादेव। आश्चर्यशब्द। आश्चर्यशब्दयुक्त।

अद्मरः (त्रि.) बहुत खाने वाला। भक्षणशील।

अद्य (अ.) आज का दिन। वर्त्तमान दिन।

अद्यतन (त्रि.) आज की उन्नत हुई वस्तु कालविशेष। बीती हुई रात का अन्तिम पहर और आने वाली रातका पहला पहर तथा समस्त दिन यह अद्यतन काल कहा जाता है।

अद्यत्वे (अ.) आज का। इस समय। संप्रति।

अद्यश्वीन (स्त्री.) आज कल में प्रसव करने वाली स्त्री। आसन्नप्रसवा।

अद्रिः (पुं.) पर्वत। पहाड़। वृक्ष। सूर्य। मान विशेष। सात की संख्या।

अद्रिकर्णी (स्त्री.) अपराजिता नाम की औषधि।

अद्रिकीला (स्त्री.) भूमि। पृथिवी।

अद्रिजम् (न.) शिलाजीत नामक औषध। (त्रि.) पर्वतपर उत्पन्न होनेवाले पदार्थ।

अद्रिजतुम् (न.) शिलाजतु।

अद्रिजा (स्त्री.) पार्वती। गिरिजा।

अद्रिजिन् (पुं.) वासव। इन्द्र।

अद्रितनया (स्त्री.) हिमालय पर्वत की कन्या। पार्वती।

अद्रिमित् (पुं.) इन्द्र। देवराज।

अद्रिभू (स्त्री.) अपराजिता नाम की लता।

अद्रिराज (पुं.) पर्वतों का राजा। हिमालय।

अद्रिसार (पुं.) लोहा।

अद्रीश (पुं.) हिमालय पर्वत।

अद्रोह (पुं.) द्रोह का अभाव।

अद्वय (न.) परब्रह्म। स्वजातीय, विजातीय और स्वगत भेद शून्य। अद्वितीय। (पुं.) बुद्ध।

अद्वयकारणम् (न.) परब्रह्म। जगत् के निमित्त और उपादान दोनों कारण।

अद्वयवादी (पुं.) वेदान्ती। बौद्ध। एक वस्तु की सता माननेवाला। अद्वैतवादी। बौद्ध विशेष।

अद्वितीय (त्रि.) केवल। एक। उसके समान दूसरा नहीं। परमात्मा। श्रेष्ठ। असमान।

अद्वेष्टा (त्रि.) अद्वेषी। द्वेष न करनेवाला। हितकारी।

अद्वैत (वि.) स्वजातीय विजातीय भेदशून्य। भेदविकल्परहित। सिद्धान्त विशेष। वेदान्त सिद्धान्त।

अद्वैतवादी (पुं.) बुद्ध। (त्रि.) विवेकी ब्रह्म और आत्मा की एकता कहने वाला।

अधःक्रिया (स्त्री.) अपमान। तिरस्कार।

अधःक्षिप्त (त्रि.) नीचे की ओर मुँह करके रखा गया द्रव्य।

अधःपुष्पी (स्त्री.) एक पौधे का नाम। जिसके फूल नीचे की ओर होते हैं।

अधनः (त्रि.) भार्या, पुत्र, भृत्य आदि।

अधम (त्रि.) कुत्सित। निन्दित। (पुं.) जार। उपपतिविशेष।

अधमर्ण (त्रि.) ऋणकर्ता। ऋण लेनेवाला। कर्जखोर।

अधमर्णिकः (त्रि.) अधमर्ण। ऋणकर्ता।

अधमा (स्त्री.) नायिकाभेद।

अधमांग (न.) चरण। पाँव। पैर। पाद।

अधरः (पुं.) ऊपर या नीचे का ओठ। (त्रि.) पृथिवी से जो न मिला हुआ हो। नीचे। तल।

अधरतः (अ.) नीचे की ओर।

अधरमधुम् (न.) अधररस। अधरामृत।

अधरान् (अ.) नीचे का भाग। अधोभाग।

अधरेण (अ.) नीचे की ओर। पश्चिम दिशा।

अधरेद्युः (अ.) पर दिन। दूसरा दिन। परसों। आनेवाला परसों।

अधर्म (त्रि.) ब्रह्महत्या आदि निषिद्ध कर्मों से उत्पन्न पाप। वेदनिषिद्ध कर्म। अनेक प्रकार के दुःख देनेवाले कर्म। धर्म का विरोधी।

अधर्मज्ञ (त्रि.) अधार्मिक। धर्म न जानने वाला। धर्म को तुच्छ समझने वाला।

अधर्ममित्र (पुं.) कलियुग। (त्रि.) अधार्मिक। मिथ्यावादी।

अधश्चर (पुं.) निन्दित कर्मों मे जिसकी रूचि हो। चोर आदि। नीचे की ओर जानेवाला।
अधस्तात् (अ.) नीचार्थक अव्यय।
अधि (अ.) अधिकार। ऐश्वर्य। भाग। हिस्सा।
अधिकम् (न.) बहुत। अनेक। ज्यादा। अर्थालंकारविशेष।
अधिकरणम् (न.) आधार कारक। कर्ता और कर्म क्रिया का आश्रय। मीमांसा।
अशय्या (स्त्री.) पृथिवीपर सोना। भूमिशयन।
अधिकरणविचाल (पुं.) द्रव्य की अवस्था के भेद से संख्या का भेद करना। एक राशि को अनेक बनाना अथवा अनेक राशि को एक बनाना।
अधिकरणसिद्धान्तः (पुं.) सिद्धांत विशेष। जहां एक की सिद्धि से दूसरे की सिद्धि होती है, वह अधिकरण-सिद्धान्त है अर्थात् जिस अर्थ के सिद्ध होते ही दूसरे प्रकरण की सिद्धि होती हो।
अधिकर्तव्यम् (न.) जो अधिकरण में उत्पन्न हो।
अधिकर्मिकः-म् (पुं.न.) हाट का मालिक। बाजार का चौधरी।
अधिकाङ्गम् (न.) कवच आदि बाँधने की पट्टी। कमरकस (त्रि.) अधिक अंग वाला। जिसके अंग बढ़े हुए हों।
अधिकार (पुं.) फलस्वामित्व। किसी काम करने की स्वाधीनता। पैतृकाधिकार। स्वत्व। नियुक्त किये गये पुरुष का सम्बन्ध, यथा- राजाओं को छत्र, चामर आदि धारण करने का अधिकार है। अधीनस्थ देश आदि। प्रकरण। व्याकरण के मत से पहले सूत्र के पद को दूसरे सूत्र में ले जाना।
अधिकारविधि (पुं.) मीमांसा शास्त्र की परिभाषा। कर्मों से उत्पन्न फल को बोधन करनेवाली विधि।
अधिकारी (पुं.) प्रमाता। फलस्वामी। अधिकार विशिष्ट।
अधिकार्यवचनः (न.) स्तुति और निन्दा को प्रकाशित करने वाली अधिक उक्ति।
अधिकृत (त्रि.) अध्यक्ष। नियुक्त। आयव्यय देखने वाला कर्मजन्य फलसंबन्धी अधिकार प्राप्त। जिसको कोई काम सौंपा गया है।
अधिक्रमः (पुं.) आक्रमण। अधिक्रमण।
अधिक्षिप्त (त्रि.) स्थापित। कुत्सित। भर्त्सित। तिरस्कृत।
अधिक्षेप (पुं.) निन्दा। तिरस्कार।
अधिगतः (त्रि.) प्राप्त। ज्ञात। जाना गया। पाया गया। स्वीकार किया गया।
अधिगम (पुं.) साक्षात्कार। प्राप्ति। स्वीकार।
अधित्यका (स्त्री.) पर्वत के ऊपर की भूमि।
अधिदेवता (स्त्री.) पदार्थों के अधिष्ठाता देवता।
अधिदैवतम्, (न.) हिरणयगर्भ। अन्तर्यामी पुरुष। चक्षु आदि इन्द्रियों के अधिष्ठाता देवता।
अधिपः (त्रि.) राजा। प्रभु। अधिपति।
अधिपतिः (पुं.) प्रभु। स्वामी।
अधिभूः (पुं.) प्रभु। नायक। स्वामी।
अधिमांसका (पुं.) दन्तरोगविशेष। दाँत का एक रोग।
अधिमासः (पुं.) मलमास। अधिक मास। संक्रान्ति रहित देश।
अधियज्ञः (पुं.) परमेश्वर। "अधियज्ञोहमेवात्र देहे देहभृतां वर" (गीता)।
अधिकयोग (पुं.) यात्रा का योगविशेष।
अधिरथ (पुं.) कर्ण के पिता का नाम।
अधिराज (पुं.) सम्राट्।
अधिरोहिणी (स्त्री.) बाँस या लकड़ी की बनी सीढ़ी। ऊपर चढ़ने या ऊपर से नीचे उतरने का साधन।
अधिवचनम् (न.) नाम। संज्ञा।
अधिवासः (पुं.) सुगन्धित करना। पांसना। निवास। रहना। ठहरना।
अधिवासनम् (न.) यज्ञ प्रारम्भ का पहना दिन। जिस दिन देवता आदि की स्थापना होती है। गन्ध माल्य आदि से पूजा करना।
अधिविन्ना (स्त्री.) प्रथम ब्याही स्त्री। जिसको सौति न आयी हो।
अधिश्रयणम् (न.) भात आदि बनाने के लिऐ बर्तन को चूल्हे पर रखना।

अधिश्रयणी (स्त्री.) चूल्हा।

अधिष्ठाता (त्रि.) अध्यक्ष। प्रवृत्ति और निवृत्ति करने वाला। स्वामी। प्रभु।

अधिष्ठानम् (न.) वेदान्तशास्त्र के प्रसिद्ध आरोप का अधिकरण। पहिया। नगर। प्रभाव। स्थान। अध्यासन।

अधीत (त्रि.) पठित। कृताध्ययन। पढ़ा हुआ।

अधीति (स्त्री.) अध्ययन। पठन। पढ़ना।

अधीन (त्रि.) आयत्त। वश में आया हुआ। अधिकार में वर्तमान।

अधीयान (त्रि.) पढ़ने वाला। वेदपाठी।

अधीर (त्रि.) चञ्चल। कातर। घबड़ाया हुआ।

अधीरा (स्त्री.) विद्युत्। बिजली। नायिकाविशेष।

अधीशः (त्रि.) प्रभु। स्वामी। ईश्वर।

अधीश्वरः (पुं.) बुद्ध भगवान् (पुं.स्त्री.) चक्रवर्ती सम्राट् जिसको सामन्तगण कर देते हों।

अधीष्टः (पुं.) सत्कारपूर्वक व्यापार। (त्रि.) सत्कार करके व्यापार में नियुक्त किया गया। आदर के साथ किसी काम के लिये किसी को आज्ञा देना।

अधुना (अ.) सम्प्रति। इस समय।

अधुनातन (त्रि.) इस समय का। इस काल में होने वाला।

अधृष्टः (त्रि.) लज्जाशील। विनयी।

अधृष्यः (त्रि.) तिरस्कार करने के अयोग्य। प्रगल्भ। धृष्ट। जो किसी से न दवे।

अधृष्या (स्त्रीं.) एक नदी का नाम।

अधोंशुकम् (न.) पहनने का कपड़ा। नीचे पहनने का कपड़ा। धोती आदि।

अधोक्षज (पुं.) विष्णु। जो इन्द्रियसम्बन्धी ज्ञान का विषय न हो। परब्रह्म। जिसने इन्द्रिय जन्य ज्ञान को तिरस्कृत कर दिया है। कृष्ण भगवान्। ज्ञानी। जीवन्मुक्त।

अधोगतिः (स्त्री.) नरक। अवनति। नीचे की ओर गति।

अधोजिह्विका (स्त्री.) छोटी जीभ। जो तालु के मूल में रहती है।

अधोदृष्टिः (त्रि.) अपना विनय जनाने के लिये सदा नीचे की ओर देखने वाला। विनीत। विनयी।

अधोभुवन (न.) पाताललोक। नागलोक।

अधोमुख (त्रि.) नीचे की ओर मुखवाला। नक्षत्रविशेष। मूल, अश्लेषा, कृत्तिका, विशाखा, भरणी, मघा और तीनों पूर्वा ये अधोमुख नक्षत्र कहे जाते हैं।

अधोमुखा (स्त्री.) गोजिह्वा नामक पौधा।

अधोलोकः (पुं.) पाताल। अधःस्थित सप्तलोक।

अधोवायुः (पुं.) अपान वायु। हवा खुलना।

अध्यक्ष (पुं.) क्षीरिका वृक्ष (त्रि.) किसी विषय का अधिकारी। किसी काम की देख-रेख करने के लिये नियत। आयव्यय-निरीक्षक। व्यापक। विस्तृत। चारो ओर फैला हुआ। (ग.स.) प्रत्यक्ष ज्ञान। इन्द्रियों के द्वारा जानने योग्य।

अध्यग्नि (न.) स्त्रीधन। जो विवाह के समय अग्नि को साक्षी करके पिता आदि देते हैं।

अध्यधीनम् (न.) अधिक अधीन। जन्म का दास। बिका हुआ दास।

अध्ययनम् (न.) पढ़ना। गुरु के मुख से उपदेश ग्रहण करना। गुरु की कही हुई बातों को दुहराना। अर्थ सहित अक्षरों का ग्रहण करना।

अध्यर्द्धम् (त्रि.) आधे के साथ। एक और आधा। डेढ़।

अध्यवसाय (पुं.) निश्चय। निर्द्धारण। युक्तियों के द्वारा किसी बात को निश्चित करना। उत्साह। बुद्धिसम्बन्धी व्यापार। किसी पदार्थ के ज्ञान होने के समय रजोगुण और तमोगुण की न्यूनता होने के कारण जो सत्त्वगुण का प्रादुर्भाव होता है वह अध्यवसाय है। बुद्धि। बुद्धि का प्रधान व्यापार।

अध्यशनम् (न.) अधिक भोजन करना। अजीर्ण पर खाना।

अध्यस्तः (त्रि.) कृताध्यास।

अध्यात्म (अ.) आत्मा। देह। मन। "स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते" इस गीता के श्लोक में स्वभाव को अध्यात्म कहा गया है। "स्वभाव" का अर्थ

टीकाकारों ने इस प्रकार किया है। कार्य कारण के समूह रूप देह का अवलम्बन कर के आत्मा विषय-भोग करता है, उसी को "अध्यात्म" कहते हैं। (मधुसूदनसरस्वती) प्रत्येक देह में परब्रह्म का जो अंश वर्तमान है, वह अध्यात्म कहा जाता है। (श्रीधर)।

अध्यात्मज्ञानम् (न.) आत्मा और अनात्मा का विवेक।

अध्यात्मयोगः (पुं.) चित्त को विषयों से हटा कर आत्मा में लगाना।

अध्यात्मविद्या (स्त्री.) अध्यात्मतत्त्व। न्याय और वैशेषिक के मत से देह भिन्न आत्मा के स्वरूप को बतलाने वाली विद्या अध्यात्मविद्या कही जाती है। सांख्य मत से प्रकृति से भिन्न आत्मा के रूप को बतलाने वाली विद्या अध्यात्मविद्या कही जाती है और वेदान्तियों के मत से आत्मा और ब्रह्म में अभेद बतलाने वाली विद्या अध्यात्मविद्या है।

अध्यापक (त्रि.) अध्यापन कराने वाला। उपाध्याय। पढ़ाने वाला।

अध्यापन (न.) ब्राह्मण का मुख्य कर्म। ब्रह्मयज्ञ। पढ़ाना। विद्यादान करना।

अध्यायः (पुं.) अध्ययन। प्रकरण। ग्रन्थों का भागविशेष। जो एक विषय की समाप्ति बतलाता है। सर्ग। वर्ग परिच्छेद। काण्ड।

अध्यारूढ़ (त्रि.) समारूढ़। चढ़ा हुआ।

अध्यारोप (पुं.) दूसरी वस्तु के धर्म को दूसरी वस्तु में लगाना। मिथ्या ज्ञान। भ्रम वश दूसरी वस्तु को दूसरी वस्तु समझना, यथा-रस्सी को साँप समझ लेना।

अध्यावाहनिक (न.) पिता के घर से पति के घर जाने के समय स्त्री को मिला हुआ धन। स्त्रीधन।

अध्याशन (न.) भोजन पर भोजन। एक बार भोजन करने पर भोजन करना।

अध्यास (पुं.) अन्य वस्तु में दूसरी वस्तु के धर्म का आरोप करना। अध्यारोप। मिथ्या ज्ञान। बैठने का स्थान। आसन।

अध्यासित (त्रि.) अधिष्ठित। आश्रित। सहारा दिया गया। भरोसा दिया गया। निवेशित। स्थापन किया गया।

अध्याहार (पुं.) तर्क। ऊह। साकांक्ष वाक्य को पूर्ण करने के लिए दूसरे शब्दों का अनुसन्धान करना। अपूर्व उत्प्रेक्षा।

अध्युषितः (त्रि.) ठहरा हुआ। स्थित।

अध्युष्ट्रः (पुं.) उष्ट्रयुक्त रथ। ऊँटगाड़ी।

अध्यूढ़ः (पुं.) ईश्वर। प्रभु। धनी। चढ़ने वाला।

अध्यूढ़ा (स्त्री.) अनेक ब्याह करने वाले की पहली स्त्री।

अध्येषणम् (न.) प्रार्थना। याचना के लिये प्रार्थना।

अध्येष्यमाणः (त्रि.) वह मनुष्य, जो अध्ययन करने वाला है।

अध्रुवः (त्रि.) चञ्चल। विकारवाला। अनित्य। अस्थिर। विनाशी।

अध्वग (पुं.) पथिक। मार्ग चलने वाला। (त्रि.) सूर्य। ऊँट। मार्गगामी।

अध्वगभोग्य (पुं.) पथिकों को सरलता से प्राप्त होने योग्य वृक्षविशेष। अमड़ा नामक वृक्ष।

अध्वजा (स्त्री.) मार्ग में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का पौधा। स्वर्णपुष्पी।

अध्वन् (पुं.) मार्ग। रास्ता। राह।

अध्वनीन (त्रि.) पथिक। मार्ग चलने वाला। चलने का काम करने वाला।

अध्वन्य (त्रि.) पथिक। अधिक मार्ग चलने वाला।

अध्वर (पुं.) यज्ञ। क्रतु। सावधान। वसुविशेष।

अध्वरथ (पुं.) मार्ग चलने वाला। दूत। हरकारा। मार्ग में जाने के उपयोगी रथ।

अध्वर्युः (पुं.) यजुर्वेद को जानने वाला। यज्ञ कराने वाला। ऋत्विक्। पुरोहित।

अध्वर्युः (स्त्री.) अध्वर्यु शाखा पढ़ने वाली। अध्वर्युशाखाध्यायी के वंश में उत्पन्न स्त्री।

अध्वशल्यः (पुं.) अपामार्ग।

अध्वात्रशात्रव (पुं.) वृक्षविशेष। स्योनाक नामक वृक्ष।

अन् (धा. पर.) प्राण धारण करना। जीना।

अनंशुमत्फला (स्त्री.) कदली वृक्ष।

अनक्षम् (त्रि.) चक्ररहित। विना पहिये की गाड़ी। अन्धा।

अनक्षरम् (न.) दुर्वचन। गुण छिपाकर दोष प्रकाश करना। अवाच्य। निन्दावचन। गाली।

अनक्षिम् (न.) मन्द नेत्र। (त्रि.) मन्द नेत्र-वाला। अन्धा।

अनगारः (पुं.) श्रौत-स्मार्त कर्महीन अग्निहोत्र-रहित। सन्यासी।

अनग्निका (स्त्री.) रजोवती कन्या। जिसको मासिक धर्म हुआ हो।

अनघः (त्रि.) निर्मल। पापरहित। रमणीय। दुःखरहित।

अनङ्गम् (न.) आकाश। मन। (पुं.) मदन। कामदेव।

अनङ्गशेखरः (पुं.) दण्डक नामक एक प्रकार का छन्द। इसमें क्रमशः लघु और गुरु अक्षर रखे जाते हैं।

अनङ्गसुहृद् (पुं.) शिव। महादेव।

अनच्छः (त्रि.) कलुश। अप्रसन्न, मैला।

अनञ्जनम् (न.) व्योम। आकाश। तत्त्व। (पुं.) नारायण।

अनडुहः (पुं.) साँड़। वृषभ। बैल।

अनडुही (स्त्री.) गौ।

अनतिरेकः (पुं.) अभेद।

अनद्यः (पुं.) सफेद सरसों।

अनध्यक्षः (त्रि.) अध्यक्षभिन्न। अप्रत्यक्ष।

अनध्यायः (पुं.) अध्ययन के अनुपयुक्त समय। पढ़ने के लिए निषिद्ध काल।

अननुगतम् (न.) आत्मतत्त्व। (त्रि.) अनिश्चित। अपरिभाषित। जिसकी कोई परिभाषा न हो।

अनन्तः (पुं.) केशव । विष्णु। नारयण। देवता। मनुष्य आदि उसके अन्त को नहीं पा सकते। इस कारण विष्णु को "अनन्त" कहते हैं। शेषनाग। बलभद्र।

अनन्तजित् (पुं.) बुद्धविशेष। जैनियों के चौबीसवें जिन। विष्णु।

अनन्तमात्रः (त्रि.) अपरिच्छिन्न। जिसकी इयत्ता न हो।

अनन्तमूर्तिः (पुं.) सर्वात्मा। परमात्मा।

अनन्तमूलः (पुं.) कराला नाम की औषधि। बच का एक भेद।

अनन्तरम् (न.) आनेवाला काल। पश्चात्। पश्चात् का काल। (त्रि.) परमात्मा। छिद्रशून्य। सन्निहित। अव्यवहित। सटा हुआ।

अनन्तरूपः (पुं.) भगवान्। विश्वरूप। (त्रि.) अनन्तरूप युक्त। जिसके अनन्त रूप हों।

अनन्तलोकः (पुं.) अविनाशी लोक। स्वर्गलोक।

अनन्तविजयः (पुं.) राजा युधिष्ठिर के शंख का नाम।

अनन्तवीर्यः (पुं.) आर्हतविशेष। आने वाले कल्प में होने वाले जैनियों का तेईसवाँ तीर्थंकर।

अनन्तव्रत (न.) व्रतविशेष। इस व्रत में अनन्त की उपासना की जाती है। यह व्रत भादों की शुल्क चतुर्दशी को होता है।

अनन्तशीर्षा (स्त्री.) वासुकी नाग की पत्नी।

अनन्ता (स्त्री.) विशल्या नाम की औषधि। एक प्रकार की जड़। जिसका नाम "अनन्त मूल" है। पार्वती। पृथिवी। कुश। हरीतकी। आमलकी। गुडूची। अग्निमन्थ वृक्ष।

अनन्तात्मा (पुं.) परब्रह्म। विष्णु। देश। काल और वस्तु से अपरिच्छिन्न।

अनन्यः (त्रि.) सर्वभोगनिःस्पृह। सब को अद्वैत दृष्टि से देखनेवाला। आत्मा और ब्रह्म को अभिन्न दृष्टि से देखने वाला। एक तान। किसी एक विषय में लगा हुआ।

अनन्यगतिक (त्रि.) एकाश्रय। गत्यन्तर रहित।

अनन्यचेता (त्रि.) एक में जिसका चित्त लगा हो। एक में आसक्त।

अनन्यजः (पुं.) कामदेव। अन्य से उत्पन्न नहीं। केवल एक ही से उत्पन्न।

अनन्यभवः (त्रि.) किसी एक के द्वारा साधन होने योग्य कर्म। दूसरे के द्वारा असाध्य।

अनन्यभावः (त्रि.) एकान्त भक्त। जिसका भाव एक के अतिरिक्त दूसरे में न हो।

अनन्यवृत्ति (त्रि.) इष्टदेव के अतिरिक्त जो दूसरे का ध्यान न करे। एकाग्र। एक तान। एकान्तचित्त।

अनन्वक् (त्रि.) अननुगत। अधीन नहीं। जो वश में न हो।

अनन्वयः (पुं.) अर्थालंकारविशेष। जहाँ एक ही उपमान और उपमेय हो। वहाँ यह अलंकार होता है। (त्रि.) अन्वयशून्य। सम्बन्धरहित।

अनपायी (त्रि.) अपायशून्य। अनश्वर। अविनाशी। निश्चल।

अनपेक्षः (त्रि.) निरपेक्ष। निःस्पृह। अपेक्षा वर्जित। हेय।

अनभिज्ञः (त्रि.) अविद्वान्। मूर्ख। अभिज्ञ नहीं।

अनभियुक्तः (त्रि.) अनादृत। असत। तिरस्कृत।

अनभिलाषः (पुं.) अरुचि। अनिच्छा।

अनयः (पुं.) अशुभभाग्य। विपत्ति। व्यसन। अनीति।

अनर्गल (त्रि.) बेरोकटोक। प्रतिबन्धक शून्य। यथेच्छ।

अनर्घ्यः (त्रि.) अमूल्य। जिसका मोल न हो।

अनर्थः (पुं.) अप्रयोजन। प्रयोजन का अभाव। अनिष्ट। अनभीप्सित। नहीं चाहा गया। जिसका कुछ अर्थ या प्रयोजन न हो।

अनर्थक (न.) अर्थशून्य। प्रलाप। अर्थ के बिना। सम्बन्धरहित वाक्य।

अनर्थमूलम् (न.) आत्मज्ञान का अभाव। अपने बलाबल का न जानना।

अनर्थान्तरम् (न.) अभिन्न। समान। भेद नहीं।

अनलः (पुं.) जिसकी तृप्ति न हो। अनेक पदार्थों के जलाने पर भी जिसकी तृप्ति न हो। अग्नि। अष्ट वसु में से पञ्चम वसु। कृत्तिका नामक नक्षत्र। क्योंकि इसका देवता अग्नि है। वृक्षविशेष। जो चिता नाम से प्रसिद्ध है। (पुं.) भिलावा नामक वृक्ष। शरीरस्थ पित्त। नल नामक तृण से भिन्न। साठ वर्षों में पचासवाँ वर्ष।

अनलदः (पुं.) जल। सन्ताप को शान्त करनेवाला।

अनलप्रभा (स्त्री.) जिसकी प्रभा अग्नि के समान हो। जयोतिष्मती नामक लता।

अनलि (पुं.) वृक्षविशेष।

अनवः (त्रि.) प्राचीन। नवीन नहीं।

अनवधानम् (न.) प्रमाद। मन न लगाना।

अनवधानता (स्त्री.) प्रमाद। बिना विचार से किया गया कर्म। चित्तवृत्तिविशेष।

अनवनः (त्रि.) रक्षा नहीं करना। मारना।

अनवमः (त्रि.) समान। सदृश।

अनवरः (त्रि.) प्रधान। श्रेष्ठ। बड़ा। छोटा नहीं।

अनवरतम् (न.) अविरत। निरन्तर। उत्कृष्ट। अच्छा।

अनवलोभन (न.) संस्कारविशेष। सीमन्तोन्नयन के पश्चात् चौथे मास में बालक के किये जाने वाला संस्कार।

अनवसरः (त्रि.) जिसका ठीक समय न हो। बेमौका। निरवकाश।

अनवस्करम् (त्रि.) मलरहित। साफ। स्वच्छ। निर्मल। विमल।

अनवस्थः (त्रि.) अवस्थितिरहित। अप्रतिष्ठित। दरिद्र। निर्धन।

अनवस्था (त्रि.) तर्कविशेष। किसी विषय को युक्तियों के द्वारा सिद्ध करना तर्क है। जिस तर्क में प्रमाणित करने वाली युक्तियों का अन्त न हो वह अनवस्था कहा जाता है। स्थिति का अभाव।

अनवस्थानः (न.) अवस्थिति का अभाव। कहीं नहीं ठहरना। वायु चञ्चल।

अनवस्थितिः (स्त्री.) चपलता। मत्सरता। राग, द्वेष आदि से उत्पन्न चपलता।

अनशनम् (न.) भोजन का अभाव। उपवास। (त्रि.) उपवासी। नहीं भोजन करने वाला।

अनश्नन् (त्रि.) उपवासी। न खानेवाला।

अनश्वरः (त्रि.) शाश्वत। सनातन।

अनस् (न.) शकट। रथ। माता। भात।

अनसूया (स्त्री.) अत्रि मुनि की स्त्री। कर्दम प्रजापति की कन्या। ये बड़ी पतिव्रता थीं। असूया का अभाव।

अनसूयुः (त्रि.) अनिन्दक। निन्दा न करने वाला।

अनहंवादी (त्रि.) गर्वोक्तिहीन। जो अपना गर्व प्रकाशित न करे।

अनहङ्कार (त्रि.) अहंकारशून्य।

अनहङ्कृति (स्त्री.) गर्व का अभाव।
अनाकुल (त्रि.) अव्यग्रचित्त। एकाग्रचित्त। स्थिर। एकाग्र।
अनाक्रान्तः (त्रि.) अपराजित। अजेय।
अनाक्रान्ता (स्त्री.) कण्टकारी। भटकटैया।
अनागत (त्रि.) नहीं आया हुआ काल। भविष्यत् काल। अनुपस्थित। अज्ञात।
अनागतार्तवा (स्त्री.) मासिकधर्मशून्य।
अनाचार (पुं.) निन्दित आचार। आचारहीन।
अनातपः (पुं.) धूप का अभाव। छाया।
अनात्मा (पुं.) शरीर। निकृष्ट शरीर।
अनात्म्यम् (त्रि.) रागादिदोषरहित।
अनाथः (त्रि.) नाथरहित। दीन। स्वतन्त्र।
अनादरः (पुं.) तिरस्कार। परिभव।
अनादिः (पुं.) परमेश्वर। चतुर्मुख। ब्रह्मा। (त्रि.) आदिरहित।
अनादित्वम् (न.) जिसकी आदि किसी को मालूम न हो।
अनादिनिधनः (त्रि.) आद्यन्तशून्य। परमेश्वर। जन्ममरणरहित।
अनादृतम् (त्रि.) अवज्ञात। तिरस्कृत।
अनापन्नः (त्रि.) अप्राप्त।
अनामकम् (न.) अर्शरोग (पुं.) मलमास।
अनामय (न.) आरोग्य। मोक्ष नामक पुरुषार्थ षड्भाव विकाररहित परमात्मा। (त्रि.) नीरोग। रोगरहित।
अनामा (स्त्री.) छोटी अंगुली के पास की अंगुली। कहते हैं इस अंगुली ने ब्रह्मा के सिर काटे जाने में सहायता पहुँचायी थी इसी कारण इसका नाम नहीं लिया जाता।
अनामिका (स्त्री.) मध्यमा और कनिष्ठा के बीच की अंगुली।
अनायास (पुं.) अपरिश्रम। अक्लेश। कष्ट का अभाव। यत्न का अभाव। बिना परिश्रम।
अनायासकृतम् (त्रि.) बिना यत्न किया हुआ। अल्प परिश्रम से किया हुआ काम।
अनारतम् (न.) सतत। सदा सर्वदा। अविरत। लगातार।
अनारम्भ (पुं.) अननुष्ठान। आरम्भ का अभाव।
अनार्जव (पुं.) रोग। कुटिलता। सरलता का अभाव।
अनार्तवम् (न.) पौष आदि चार महीनों में होने वाली वृष्टि का जल।
अनार्यः (त्रि.) दुर्जन। दुःशील। अधम। दस्यु।
अनार्यकम् (न.) आर्यावर्त से भिन्न देश। अगुरु काठ। अनार्य देश में उत्पन्न।
अनार्यजुष्टम् (त्रि.) निन्दित आचार। अनार्यों का सेवित मार्ग।
अनार्यतिक्तः (पुं.) भूनिम्ब। चिरायता।
अनाविद्ध (त्रि.) अनभिभूत। अस्पृष्ट। न छुआ हुआ।
अनाविलः (त्रि.) निर्मल। विमल। मलरहित।
अनावृत (त्रि.) प्रथम। आवरणरहित। विना ढका हुआ।
अनावृत्ति (स्त्री.) नहीं लौटना।
अनावृष्टि (स्त्री.) वर्षा का अभाव। उपद्रव विशेष। खेती को नाश करने वाला। उपद्रव। ईतिविशेष।
अनाशकम् (न.) उपवासपरायण। उपवास करने वाला।
अनाशी (पुं.) अपरिच्छिन्न। आत्मा।
अनाश्रितः (त्रि.) फल की इच्छा न रखने वाला। जिसको आश्रय न हो।
अनाश्वान् (त्रि.) भोजन न करने वाला।
अनासिकः (त्रि.) नासिकारहित।
अनास्था (स्त्री.) अनादर। अश्रद्धा।
अनाहत (न.) नया कपड़ा। नहीं फटा हुआ कपड़ा। तन्त्रशास्त्र प्रसिद्ध हृदय स्थित द्वादश दल कमल। शब्दविशेष। मध्यमा वाक्। आघातरहित वस्तु।
अनिकेतः (त्रि.) नियत निवास शून्य। नियम से एक स्थान पर न रहने वाला। सन्यासी।
अनिगीर्णः (त्रि.) अनुक्त। अकथित।
अनित्यः (त्रि.) अध्रुव। विनाशी। नश्वर। व्यक्त।
अनिभृतः (त्रि.) चपल। अविनीत।
अनिमिष (पुं.) स्पन्दनशून्य नेत्र। जिसकी आँखें बन्द न हों। देवता। मछली। विष्णु।

अनिमिषक्षेत्र (न.) एक तीर्थ का नाम। नैमिषारण्य नामक क्षेत्र।

अनिमिषाचार्यः (पुं.) गुरु। बृहस्पति। देवताओं के आचार्य।

अनिमेष (पुं.) देवता। जिसके निमेष न हो। मछली।

अनियतः (त्रि.) अनैकान्तिक। अनित्य। विनाशी। अस्थायी।

अनियन्त्रितः (त्रि.) उच्छृंखल। अनियमित। नियमविरुद्ध।

अनिरुक्तः (त्रि.) वचनों के अगोचर। जो वचन से प्रकट न किया जाय।

अनिरुद्धः (पुं.) प्रद्युम्न का पुत्र। कृष्ण का पौत्र। ऊषा का पति। मन के अधिष्ठाता। पशु आदि को बाँधने की रस्सी। (त्रि.) अप्रतिरुद्ध। चर। नहीं रुका हुआ।

अनिरुद्धपथम् (न.) आकाश। गगन। (त्रि.) बिना रोक का मार्ग।

अनिरुद्धभामिनी (स्त्री.) स्वैरिणी। वाण की कन्या। ऊषा।

अनिरोधः (पुं.) अप्रतिबन्ध। स्वतन्त्र।

अनिर्देश्य (त्रि.) निर्देश करने के अयोग्य। जो शब्दों के द्वारा प्रकाशित न किया जाय। परमेश्वर।

अनिर्वचनीय (पुं.) जो शब्द द्वारा प्रकाशित न हो। जिस वस्तु का लक्षण न किया जा सके।

अनिर्विण्णः (त्रि.) विषादरहित। निर्वेद रहित।

अनिर्विण्णचेता (त्रि.) अविरक्तचित्त। धीर। कभी न कभी सिद्ध ही होगा, शीघ्रता से क्या लाभ, ऐसा समझने वाला।

अनिल (पुं.) वायु। जिससे मनुष्य प्राण धारण करते हैं। स्वाती नक्षत्र। इसका अधिष्ठाता देवता वायु है। वसुभेद।

अनिलघ्नक (पुं.) बहेड़ा का वृक्ष।

अनिलसखः (पुं.) अग्नि।

अनिलान्तक (पुं.) वायुरोग को दूर करने वाला औषध। इंगुदीवृक्ष।

अनिलामयः (पुं.) वातरोग।

अनिवार (त्रि.) जिसका निवारण न हो। सतत। निरन्तर। अनिवार्य। न टरने योग्य।

अनिशम् (न.) सदा। अविरत। सर्वदा।

अनिष्टम् (न.) दुःख। कष्ट। प्रतिकूल। पापफल, (त्रि.) अनभिलषित।

अनिष्टा (स्त्री.) नागवला नाम की औषधि।

अनीकः (पुं.न.) रण। सेना।

अनीकस्थ (पुं.) युद्ध में तत्पर। हस्तिशिक्षा में निपुण। रक्षक। राजाओं के अगंरक्षक। चिन्ह। वीरमर्दलनामक वाजा।

अनीकाधिकृतः (त्रि.) सेनापति।

अनीकिनी (स्त्री.) सेना। जिसका युद्ध करना प्रयोजन हो। इस सेना में २१८७ हाथी। २१८७ रथ ६५६१ घोड़े और १०९३५ पैदल होते हैं।

अनीचिदर्शी (पुं.) बुद्धविशेष।

अनीशः (पुं.) विष्णु। अनाथ। दीन। सहायकहीन।

अनीशा (स्त्री.) दीनभाव। दीना स्त्री।

अनीश्वरः (त्रि.) नास्तिक। शुभाशुभ कर्मों का फलदाता ईश्वर नहीं है ऐसा कहने वाला।

अनीहः (त्रि.) फलाशारहित। फल की इच्छा न रखनेवाला। निश्चेष्ट। अनिच्छुक।

अनु (अ.) उपसर्गविशेष। हीन। सहार्थक, पश्चादर्थक। सादृश्य। लक्षण। भाग। वीप्सा। इत्थंभूताख्यान।

अनुकः (त्रि.) कामी। कामना करने वाला। इच्छुक।

अनुकम् वितर्क। युक्ति।

अनुकम्पा (स्त्री.) दया। करुणा। नृशंसता का अभाव।

अनुकम्प्यः (त्रि.) कृपा करने के योग्य। दयनीय।

अनुकरणम् (न.) अनुकृती। समानता करण। नकल करना। चेष्टा शब्द आदि से किसी की समानता करना।

अनुकर्ष (पुं.) रथ के नीचे रहने वाली लकड़ी। जिसके बल पर पहिये रहते हैं।

अनुकर्षणम् (न.) आकर्षण। ऊपर खींचना।

अनुकल्पः (पुं.) गौणकल्प। मुख्य के अभाव में उसके प्रतिनिध का कल्पना करना। प्रतिनिधि।

अनुकामीनः (त्रि) इच्छापूर्वक चलने वाला। यथेष्टगमनशील।

अनुकारः (पुं.) समानताकरण। अनुकरण। समान काम करना।

अनुकूल (पुं.) नायकविशेष। जो एक नायिका में अनुरक्त रहे। (त्रि.) सहायक। साथी। साथ चलने वाला। सहचर।

अनुकूलता (स्त्री.) दक्षता।

अनुकूला (स्त्री.) छन्दविशेष। इस छन्द के प्रत्येक पाद में ११ ग्यारह अक्षर होते हैं।

अनुकृतिः (स्त्री.) अनुकरण।

अनुक्रमः (पुं.) परिपाटी। क्रम। यथाक्रम। सिलसिला।

अनुक्रमणिका (स्त्री.) भूमिका। ग्रन्थों का मुखबन्ध। परिपाटी बतलाने वाली। जिसमें किसी ग्रन्थ का विषय संक्षेप से दिखाया जाय।

अनुक्रमणी (स्त्री.) भूमिका। ग्रन्थों का मुखबन्ध।

अनुक्रान्त (त्रि.) अनुक्रम से कहा गया।

अनुक्रोश (पुं.) दया। कृपा।

अनुगः (त्रि.) अनुगत। पीछे जाने वाला। सहचर।

अनुगत (त्रि.) शरणागत। पीछे पीछे चलने वाला। अधीन। आयत्त।

अनुगमः (पुं.) पीछे चलना। सहायक होना। अधीन होना। सामान्य धर्म से समस्त विशेष धर्मों का संग्रह करना। नैयायिकों के मत से, जिस पदार्थ का जैसा रूप ज्ञान हुआ है वह रूपज्ञान ही उस पदार्थ का अनुगमक है।

अनुगमन (न.) पश्चाद्गमन। सहगमन। सहमरण। पति के साथ सती होना।

अनुगवीनः (पुं.) गोप। गोपाल। ग्वाला।

अनुगामी (त्रि.) अनुवर्ती। पश्चाद्गमनशील।

अनुगुण (त्रि.) अनुकूल। अनुगत। अपने मत के अनुकूल।

अनुग्रहः (पुं.) प्रसन्नता। प्रसन्न हो कर मनोरथ की पूर्ति करना। इष्टसम्पादन करने की इच्छा। दुःख दूर करके इष्टसाधन करना। तारा। नक्षत्र।

अनुग्राहकः (त्रि.) समर्थक। अनुग्रह करने वाला।

अनुचर (त्रि.) सहाय। दास। सेवक।

अनुचिन्तनम् (न.) अनुध्यान। उत्कण्ठापूर्वक स्मरण।

अनुजः (पुं.) पीछे उत्पन्न हुआ सहोदर भाई। छोटा भाई। प्रपौण्डरीक नामक सुगन्धिद्रव्य।

अनुजन्मा (पुं.) छोटा भाई।

अनुजा (स्त्री.) जिसकी रक्षा की गयी हो। छोटी बहिन।

अनुजिघृक्षा (स्त्री.) अनुग्रह करने की इच्छा।

अनुजीवी (पुं.) सेवक। आश्रित। भृत्य। नौकर।

अनुज्ञा (स्त्री.) अनुमति। आज्ञा देना।

अनुज्ञातः (त्रि.) अनुमत। आज्ञप्त।

अनुतर्षः (न.) मद्य पीने का पात्र। कटोरा या प्याला। मद्यपान। पीने की इच्छा। अभिलाष।

अनुपात (पुं.) पश्चाताप। कर्म करने के अनन्तर दुःख।

अनुत्तमः (न.) जिससे उत्तम और न हो। श्रेष्ठ। उत्तम। मुख्य। ईश्वर। उत्तम नहीं। अधम। नीच। निकृष्ट।

अनुत्तरः (त्रि.) श्रेष्ठ। निरुत्तर। उत्तर देने का अभाव। दक्षिण दिशा। अधम। स्थिर अनतिशय।

अनुदात्तः (पुं.) स्वरविशेष। उदात्तस्वर से भिन्नस्वर।

अनुदितः (पुं.) कालविशेष। सूर्योदय के पहले का काल। ब्राह्ममुहूर्त।

अनुद्घात (त्रि.) प्रतिबन्ध की निवृत्ति। प्रतिघातरहित।

अनुद्रुतः (त्रि.) धावित। दौड़ाया हुआ। अनुगत। अनुगामी। (न.) तालविशेष। मात्रा का चौथा भाग।

अनुद्विग्नमनाः (त्रि.) स्वस्थचित्त। जिसका मन उद्विग्न न हो।

अनुद्वेगकरः (त्रि.) किसी को दुःख न पहुँचाने वाला।

अनुधावन (न.) पीछे दौड़ना। अनुसन्धान करना। किसी की टोह लगाना।

अनुध्यानम् (न.) अनुचिन्तन। अनुग्रह। आसक्ति। बार-बार सोचना। कृपा करना। एक बात में लग जाना। किसी विषय में तत्पर रहना।

अनुनय (पुं.) विनय। प्रणिपात। सान्त्वन। प्रार्थना।

अनुनासिक (पुं.) मुख सहित नासिका से उच्चरित होने वाले वर्ण।

अनुनेय (त्रि.) अनुनय करने योग्य।

अनुन्नः (त्रि.) कआ हुआ नहीं। अविद्ध।

अनुपकारी (त्रि.) उपकार न करने वाला। अपकारी। प्रत्युपकार करने में असमर्थ।

अनुपद (न.) अनुगत। पश्चाद्गमन करने वाला।

अनुपदी (त्रि.) अन्वेष्टा। ढूँढ़ने वाला। पैरों के चिन्ह के सहारे ढूँढ़ने वाला।

अनुपदीना (स्त्री.) खड़ाऊँ विशेष।

अनुपपत्तिः (स्त्री.) अभाव। असंगति। युक्ति का अभाव।

अनुपम (त्रि.) उत्तम। अतुलनीय। जिसकी उपमा न हो।

अनुपमा (स्त्री.) कुमुदनामक दिग्गज की हथिनी।

अनुपरत (त्रि.) अविरत। सन्तत। लगा हुआ। जिसकी इच्छा निवृत्त न हो।

अनुपलब्धि (स्त्री.) प्राप्ति का अभाव। ज्ञानाभाव, इन्द्रियजन्य ज्ञान का अभाव।

अनुपसंहारी (पुं.) हेत्वाभास विशेष। दुष्टहेतु। जिसमें अन्वय या व्यतिरेक का कोई दृष्टान्त न मिले।

अनुपस्कृत (त्रि.) अविकृत। विकाररहित। अनिन्दित। अविगर्हित।

अनुपहित (त्रि.) अक्षर। चिद्ब्रह्म।

अनुपाकृत (पुं) असंस्कृत यज्ञीय पशु।

अनुपात (पुं.) त्रैराशिक गणित। पीछे गिरना।

अनुपातक (न.) पातकविशेष। महापातन के समान पाप।

अनुपानम् (न.) औषध का अंगविशेष। औषध के साथ पीने योग्य।

अनुपूर्व (पुं.) परिपाटी। यथाक्रम।

अनुपेत (त्रि.) अयुक्त। पृथक् पृथक्।

अनुप्रास (पुं.) शब्दालंकारविशेष। स्वरों की विषमता होने पर भी व्यञ्जनों की समानता से यह अलंकार होता है।

अनुप्लव (पुं.) सहायता करनेवाला। सहायक। अनुचर। अनुगामी।

अनुबन्ध (पुं.) इच्छा से अपराध करना। वात पित्त आदि दोषों की अप्रधानता। विनाशी। व्याकरण में प्रकृति, प्रत्यय आगम आदेश आदि में कार्य के लिये जो वर्ण लगा दिये जाते हैं वे भी अनुबन्ध कहे जाते हैं। पिता माता आदि का अनुवर्तन करनेवाला पुत्र। प्रारम्भ किये हुए किसी काम का अनुवर्तन करना। सम्बन्ध। भावी अशुभ परिणाम। फल साधन।

अनुबन्धी (त्रि.) सहचारी। सतत, व्यापकशील।

अनुबोध (पुं.) पुनः उद्दीप्त करना। उत्तेजित करना। पीछे से जानना।

अनुभव (पुं.) स्मरण भिन्न ज्ञान। प्राथमिक ज्ञान। वह दो प्रकार का होता है यथार्थ और अयथार्थ। यथार्थानुभव का ही नाम प्रमात्मक ज्ञान है।

अनुभाव (पुं.) राजाओं का तेज विशेष। कोप और दण्ड से उत्पन्न तेज। प्रभाव। सामर्थ्य। निश्चय। हृदय स्थित भाव को प्रकाशित करने वाली चेष्टा।

अनुभाव्य (त्रि.) अनुभव का विषय।

अनुभूत (त्रि.) परिचित। जाना हुआ।

अनुभूति (स्त्री.) ज्ञान विशेष। अनुभव।

अनुमत (त्रि.) अनुज्ञात। किसी काम के लिये आज्ञा पाया हुआ। सम्मत। स्वीकृत।

अनुमति (स्त्री.) अनुज्ञा। आज्ञा देना। श्रद्धा की कन्या का नाम। एक पूर्णिमा का नाम। जिस पूर्णिमा को उदय काल में प्रतिपद् होने के कारण चन्द्रमा कलाहीन हो।

अनुमन्ता (त्रि.) आज्ञा देने वाला। दूसरों को कार्य में उत्साहित करने वाला।

अनुमरण (न.) किसी के मरण के पश्चात् का मरण। सती होना। मृत पति का साथ देना।

अनुमा (स्त्री.) अनुमिति। अनुमान।

अनुमान (न.) कल्पना। सांख्य कथित प्रधान। न्याय के मत से प्रमाण विशेष।

अनुमितिः (स्त्री.) अनुभवविशेष। परामर्श से उत्पन्न ज्ञान। हेतु वा तर्क से किसी वस्तु को जानना।

अनुमेय (त्रि.) अनुमान करने के योग्य।

अनुमोद (पुं.) स्वीकार करना। एवमस्तु। तथास्तु।

अनुमोदित (त्रि.) अनुज्ञात। अनुमोदन किया हुआ। अनुमत।

अनुयाज (पुं.) यज्ञ का अंगविशेष। प्रयाज आदि पाँच यज्ञ।

अनुयायी (त्रि.) अनुचर। सदृश। पश्चात् गमन करनेवाला।

अनुयुक्तः (पुं.) वेतन लेकर पढ़ानेवाला।

अनुयोग (पुं.) प्रश्न पूछना।

अनुयोगकृत (पुं.) आचार्य।

अनुरक्तः (त्रि.) अनुरागी। अनुकूल।

अनुराग (पुं.) अत्यन्त प्रीति। परस्पर प्रेम।

अनुरागी (त्रि.) अनुरक्त। प्रीतियुक्त।

अनुराधा (स्त्री.) सत्रहवां नक्षत्र।

अनुरुद्धः (त्रि.) रोका गया। निबद्ध।

अनुरूपम् (अ.) समान। सदृश। योग्य। जैसे का तैसा।

अनुरोध (पुं.) अनुवृत्ति। अनुवर्तन। अनुसरण। पीछा करना। आराध्य का इष्ट सम्पादन करना।

अनुलाप (पुं.) बार-बार बात करना। बार बार बोलना।

अनुलिप्त (पुं.) कृतानुलेप। लेप लगाया हुआ।

अनुलेपः (पुं.) अंगलेप। चन्दन आदि।

अनुलेपनम् (न.) चन्दन आदि शरीर में गन्धद्रव्य आदि का लगाना।

अनुलोम (पुं.) क्रमिक। यथाक्रम। क्रमानुसार।

अनुलोमज (पुं.) ऊँचे वर्ण के औरस से निकृष्ट वर्ण की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

अनवर्तन (न.) स्वामी आदि बड़ों की इच्छा को पूर्ण करना। अनुकूलताचरण।

अनुवर्तित (त्रि.) सेवित। आराधित। पूजित।

अनुवर्ती (त्रि.) अनुकूल। अनुवर्तन करने वाला आज्ञाकारी।

अनुवाक (पुं.) नहीं गाने योग्य। ऋग्विशेष। ऋग्यजुः समूह।

अनुवाक्या (स्त्री.) देवता के आवाहन करने का मन्त्र विशेष। जिसका ज्ञान प्रशास्ता करना है।

अनुवातः (पुं.) वायुविशेष। जो शिष्य की ओर से गुरु की ओर वायु आता है वह "अनुवात" कहा जाता है।

अनुवादः (पुं.) जानी हुई बात को कहना। हुई बात को कहना। अन्य प्रमाणों से जानी हुई बात को शब्दों से प्रकाशित करना।

अनुवास (पुं.) सुगन्ध। सौरभ।

अनुवासन (न.) धूप आदि से सुगन्धित करना।

अनुविद्ध (त्रि.) खचित। जड़ा हुआ। पिरोया गया।

अनुवृत्त (त्रि.) प्रविष्ट। व्याप्त। पालित।

अनुवृत्ति (स्त्री.) लगातार पीछा करने वाला। अनुरोध। सेवा। दूसरे की इच्छा पर निर्भर रहना। अनुकूलता। व्याकरण में पहले सूत्र के पद को आगे के सूत्र में ले जाना।

अनुव्रजनम् (न.) घर आये हुए शिष्टों के जाने के समय कुछ दूर तक उनको पहुँचाने के लिए जाना। शिष्टाचार-विशेष।

अनुव्रज्या (स्त्री.) अनुगमन करना। अनुव्रजन।

अनुशयः (स्त्री.) द्वेष। पश्चात्ताप। शास्त्रोक्त कर्मविशेष। भारी वैर।

अनुशयी (त्रि.) पश्चात्तापी। पछतावा करनेवाला।

अनुशरः (पुं.) राक्षस।

अनुशायद् (पुं.) जीव।

अनुशासनम् (न.) शासन। आज्ञा। उपदेश। व्युत्पत्ति करना।

अनुशासित (त्रि.) अनुशिष्ट। अनुशिक्षित। सिखाया हुआ।

अुनशासिता (त्रि.) नियन्ता। नियमन करनेवाला।

अनुशिष्टः (त्रि.) ज्ञापित। अनुमत। शिक्षित।

अनुशिष्टिः (स्त्री.) विचारपूर्वक कर्तव्याकर्तव्य का निरूपण करना।

अनुशीलन (न.) आलोचन। बार बार देखना। विशेष रूप से अध्ययन।

अनुशोचन (न.) शोक।

अनुश्रवः (पुं.) गुरुपरम्परा से उच्चारण द्वारा जो केवल सुना जाय। वेद।

अनुषंगः (पुं.) दया। करुणा। एकत्र अन्वीत अर्थ का दूसरे अर्थ में अन्वय करना। आसक्त। न्याय। अनायास प्राप्त।

अनुष्टुप् (स्त्री.) सरस्वती। छन्द विशेष। इसके प्रत्येक पाद में आठ अक्षर होते हैं।

अनुष्ठानम् (न.) क्रिया का प्रारम्भ करना।

अनुष्ठितः (त्रि.) किया हुआ। सम्पादित।

अनुष्ठाः (त्रि.) अलस। मन्द। शीतल।

अनुष्ठावल्लिका (स्त्री.) नीली दूब।
अनुसंस्था (स्त्री.) अनुमरण।
अनुसञ्चरन् (त्रि.) आना जाना करनेवाला।
अनुसन्धानम् (न.) अन्वेषण। खोज। पता लगाना। ढूंढना।
अनुसमुद्रम् (अ.) समुद्र के समीप।
अनुसरण (न.) अनुवर्तन।
अनुसारः (पुं.) पहले के अनुरूप। अनुसरण। अनुक्रम।
अनुसारी (त्रि.) अनुसार चलने वाला।
अनुस्मृतः (त्रि.) सेवित। आराधित। उपासित।
अनुस्मृतिः (स्त्री.) ध्यान। अनुस्मरण।
अनुस्यूतम् (त्रि.) ग्रथित। मिला हुआ। निरन्तर संसक्त। खूब मिला हुआ।
अनुस्वारः (पुं.) स्वर के आश्रय से उच्चारण किया जानेवाला।
अनुहरण (न.) अनुकरण।
अनुहारः (पुं.) अनुकार। समानताकरण। दूसरे के समान रूप भाषा आदि का आविष्कार करना।
अनूकः (पुं.) पूर्वजन्म। वीता हुआ जन्म। (न.) कुल। शील।
अनूचानः (पुं.) सांगवेद पढ़ने वाला। वेदों का अर्थ करनेवाला। (त्रि.) विनय युक्त। सविनय।
अनूचानमानी (त्रि.) अपने को वेदार्थ का ज्ञाता समझने वाला।
अनूढः (त्रि.) अविविाहित। कुंवारा।
अनूद्यम् (त्रि.) न कहने योग्य। गुरु आदि का नाम।
अनूनः (त्रि.) अहीन। भरा।
अनूपः (पुं.) महिष। शूकर। (त्रि.) जलप्रायदेश। अधिक जलवाला देश। जिस देश के चारों ओर जल हो।
अनूपनम् (न.) अदरख। आदी। (त्रि.) जल में उत्पन्न होने वाला।
अनूरुः (पुं.) अरुण नामक सूर्य का सारथि। यह विनता का ज्येष्ठ पुत्र था। इसके ऊरु आदि अंग नहीं थे।
अनूरुसारथिः (पुं.) सूर्य।
अनृचः (पुं.) बालक। जिसने वेदों का अभ्यास नहीं किया है।
अनृजुः (त्रि.) शठ। कुटिल। दुष्टाशय।
अनृणी (त्रि.) ऋणमुक्त। ऋणरहित।
अनृतम् (न.) असत्य। विना देखे हुए झूठ कहना। असत्य कथन।
अनेक (त्रि.) एक से अधिक। बहुत।
अनेकधा (अ.) अनेक प्रकार। बहुत तरह।
अनेकप (पुं.) हाथी। वृक्ष।
अनेकरूपम् (त्रि.) जिसके अनेक रूप हों।
अनेकान्तः (त्रि.) अनियत। अनिश्चित। जो एकरूप न हो। जिसके विषय में कुछ निश्चित नहीं कहा जा सके।
अनेकान्तवादी (त्रि.) है या नहीं। जो यह निश्चित नहीं बतला सके। बौद्ध। जैन विशेष। सात पदार्थों को माननेवाले नास्तिक विशेष।
अनेडमूकः (त्रि.) शठ। मूक। बधिर। गूंगा। बहरा। बोलने और सुनने की शक्ति से रहित।
अनेनस् (त्रि.) निर्दोष। दोषरहित।
अनेहा (पुं.) काल। समय।
अनैकान्तिक (पुं.) व्यभिचारी हेतु। हेतु का एक प्रकार का अभाव। इसके तीन भेद हैं। साधारण। असाधारण और अनुपसंहारी।
अनैक्यम् (त्रि.) एकता का अभाव। विरोध।
अनैपुण्यम् (न.) अनिपुणता। दक्षता का अभाव।
अनैश्वर्यम् (न.) असामर्थ्य। अशक्ति।
अनोकह (पुं.) वृक्ष। पेड़।
अनौचिती (स्त्री.) उचित नहीं। मर्यादा को अतिक्रम करना। लौकिक मर्यादा का उल्लंघन करना।
अन्तम् (न.) स्वरूप। स्वभाव। (पुं.) नाश। (न. पुं.) अवसान। समाप्ति। (त्रि.) समीप। प्रदेश। अत्यन्त मनोहर। रुचिर। अवयव। निर्णय। अवधि। सीमा।
अन्तःकरणम् (न.) मन। बुद्धि। अहंकार और चित्त। हृदयस्थित ज्ञान का साधन।
अन्तःकुटिलः (पुं.) शंख। (त्रि.) कुटिल हृदय। वक्रान्तःकरण।
अन्तःपुरम् (न.) राजाओं का रनिवास। राजमहल। शुद्धान्त।

अन्तःपुराध्यक्ष (पुं.) राजाओं के अन्तःपुर का अध्यक्ष। रनिवास का कारबारी।
अन्तःसत्त्वा (स्त्री.) गर्भिणी। जिसके पेट में प्राणी हो।
अन्तःस्वेदः (पुं.स्त्री.) गज। हाथी।
अन्तकः (पुं.) नाश करनेवाला। यमराज। भरणी नक्षत्र।
अन्तकरः (त्रि.) नाशक। नाश करने वाला।
अन्तकर्म (न.) नाशन। मरण। मृत्यु।
अन्तकाल (पुं.) अन्तसमय। मरणकाल।
अन्तगः (त्रि.) पर जानेवाला। पारग। कार्य की सिद्धि तक जानेवाला। अन्तगत।
अन्तगतः (त्रि.) समाप्त हुआ। अवसान प्राप्त।
अन्ततः (अ.) सम्भावना। अवयव।
अन्तः (अ.) मध्य। बीच। प्रान्त। अभ्युपगम। चित्त।
अन्तरम् (न.) अवकाश। अवधि। पहनने का कपड़ा। छिपना। भेद। विशेष। अवसर। आत्मीय। बिना। छोड़कर। मध्य। बीच। आत्मा। सदृश।
अन्तरंगः (त्रि.) अंग का मध्य। आत्मीय। अपना। व्याकरण में अन्तरंग उसको कहते हैं जिसका निमित्त दूसरे की अपेक्षा थोड़ा हो।
अन्तरज्ञः (त्रि.) छोटे बड़े का भेद जाननेवाला।
अन्तरप्रभवः (त्रि.) संकीर्ण जाति। अनुलोम प्रतिलोमज सकंर।
अन्तरा (अ.) निकट। मध्य। रहित। बिना।
अन्तरात्मा (पुं.) अन्तःकरण। हृदयस्थित आत्मा। सर्वान्तर्यामी परमात्मा। अन्तःकरण का अधिष्ठाता जीवात्मा।
अन्तरापत्या (स्त्री.) गर्भिणी।
अन्तराय (पुं.) विघ्न। बाधा। रुकावट। चित्तविक्षेप।
अन्तरारामः (त्रि.) योगी, जीवन्मुक्त। वासना नाश होने के कारण जिसने सांसारिक सुखों का त्याग किया है।
अन्तरालम् (न.) अभ्यन्तर। मध्य। बीच।
अन्तरिक्षम् (न.) अम्बर। आकाश। पक्षी और मेघों के घूमने का मार्ग। भूलोक और सूर्यलोक के मध्य का स्थान।
अन्तरित (त्रि.) तिरस्कृत। व्यवहित। व्यवधान किया गया। बाकी।
अन्तरिन्द्रियम् (न.) अन्तःकरण।
अन्तरीपः (न.पु.) वह स्थान जिसके बीच में जल हो। द्वीप। दो आब।
अन्तरीप (न.) पहिनने का कपड़ा। नीचे पहनने का वस्त्र। धोती।
अन्तरे (अ.) मध्य। बीच।
अन्तरेण (अ.) बिना। रहित। मध्य। बीच।
अन्तर्गडु (त्रि.) निरर्थक। गले की गिलटी जिस प्रकार निरर्थक होती है उसी प्रकार का निरर्थक। प्रहेलिका। पहेली।
अन्तर्गतम् (त्रि.) मध्य प्राप्त। अन्तर्भूत। विस्मृत।
अन्तर्गृहम् (न.) बीच का घर, घर के भीतर का घर।
अन्तर्घनः (पुं.) देशविशेष।
अन्तर्जठर (न.) कोठा। पेट के बीच का एक कोठा।
अन्तर्जलम् (न.) जल के मध्य में अघमर्षण मन्त्र का जप करना।
अन्तर्ज्योतिः (न.) भीतर ज्योति के समान प्रकाश करने वाला। अन्तरात्मा।
अन्तर्दाहः (पुं.) भीतर का सन्ताप। हृदय का दाह।
अन्तर्द्वार (पुं.) भीरत का द्वार। घर के भीतर का द्वारा। खिड़की। गुप्त दरवाजा।
अन्तर्द्धानम् (न.) छिपना। गुप्त होना। तिरोधान। अदृश्य होना। शरीर त्याग।
अन्तर्द्धि (पुं.) व्यवधान। छिपाव। लुकाव।
अन्तर्भूत (त्रि.) मध्यस्थित। अन्तर्गत। बीच में आया हुआ।
अन्तर्मना (त्रि.) व्याकुल चित्त। एकाग्र चित्त। खिन्न चित्त। योगी। जिसका मन बाह्य विषयों से विरक्त होकर भीतर अवस्थित रहता है।
अन्तर्यामी (पुं.) वायु। प्राणवायु। जो प्राणियों के हृदय में प्रविष्ट होकर इन्द्रियों को अपने-अपने काम में लगाता है। ईश्वर। (त्रि.) मनोगत बातों को जानने वाला। हृदयज्ञ।

अन्तर्वंशिकः (पुं.) राजाओं के अन्तःपुर के अधिकारी। वामन। कुब्ज। नपुंसक आदि।

अन्तर्वत्नी (स्त्री.) गर्भिणी। गर्भवती स्त्री।

अन्तर्वाणि (त्रि.) शास्त्रज्ञ। विद्वान्। पण्डित।

अन्तर्वेदी (स्त्री.) देशविशेष। हरिद्वार से लेकर प्रयाग तक का देश। ब्रह्मावर्त नाम से प्रसिद्ध देश।

अन्तर्हासः (पुं.) उद्वर्धन। गूढ़ हास्य। मुसकाना।

अन्तर्हितम् (पुं.) संवीत। तिरोभूत। छिपा हुआ।

अन्तवत् (त्रि.) विनाशी। नाशवान्।

अन्तवासी (पुं.) समीप रहने वाला। जो स्वभाव से ही समीप रहे। शिष्य।

अन्तशय्या (स्त्री.) मरण। भूमिशय्या। मरण के लिए भूमिशय्या।

अन्तसद् (पुं.) शिष्य। विद्यार्थी।

अन्तःस्थ (पुं.) स्पर्श और ऊष्मा के मध्य का वर्ण। य, व, र, ल, आदि।

अन्तावसायी (पुं.) य क च। नाई। नख केश आदि को काटनेवाला। एक मुनि, जिसने वृद्धावस्था में तत्त्व-ज्ञान प्राप्त किया था। हिंसक। चाण्डाल।

अन्तिक (त्रि.) निकट। समीप। पास।

अन्तिका (स्त्री.) औषधविशेष। नाटक में जेठी बहिन को कहते हैं।

अन्तिकाश्रयः (पुं.) पास रहने वाला। विद्यार्थी।

अन्तिमः (त्रि.) चरम। अन्त में होने वाला।

अन्तेवासी (पुं.) शिष्य। विद्यार्थी।

अन्त्य (पुं.) सब से पीछे का। चाण्डाल। (त्रि.) अधम। अन्त में होनेवाला चरमस्थ। (न.) रेवती नक्षत्र। मीन राशि। संख्या विशेष। १०००००००००००००००।

अन्त्यजः (पुं.) नीच जाति विशेष।

अन्त्यजन्मा (पुं.) जिस का जन्म अन्त में हुआ हो। शूद्र।

अन्त्यजाति (पुं.) चाण्डाल आदि सात जाति।

अन्त्यवर्णः (पुं.) शूद्र। अन्तिम वर्ण। अन्त का अक्षर।

अन्त्यावसायी (पुं.) चाण्डाल के औरस और निषाद जाति की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

अन्त्येष्टिः (स्त्री.) मृतक का अन्तिम संस्कार। श्राद्ध। पिण्ड दानादि क्रिया।

अन्त्रम् (नुं.) शरीर के अवयवों को बाँधने वाली शिरा अंतड़ी। पुरीतत नाम की नाड़ी।

अन्त्रवृद्धिः (स्त्री. पुं.) रोगविशेष। अण्डकोश की वृद्धि।

अन्दुक (पुं.) हाथी के पैर की बेड़ी। सिक्कड़। जिस से हाथी बांधे जाते हैं।

अन्दूः (स्त्री.) निगड़। बेड़ी। पैर का भूषणविशेष।

अन्ध् (धा. प.) न दिखना। दर्शन का अभाव।

अन्धः (पुं. न.) तिमिर। अन्धकार। अदर्शनात्मक। अज्ञान। (त्रि.) अक्षि रहित। नेत्रहीन। (पुं.) भिक्षुक।

अन्धक (पुं.) देश विशेष। एक मुनि का नाम। यदुवंशी एक राजा का नाम। एक दैत्य का नाम। हिरण्याक्ष पुत्र।

अन्धकरिपुः (पुं.) अन्धक नामक दैत्य का शत्रु। शिव। महादेव।

अन्धकारः (पुं.) प्रकाश का अभाव। तम। अँधेरा।

अन्धकूपः (पुं.) अँधेरा कुँआ। एक नरक का नाम।

अन्धतमस् (न.) बड़ा अँधेरा।

अन्धतामिस्र (पुं.) नरक विशेष।

अन्धमूषिका (स्त्री.) औषध विशेष। देवताड़ का वृक्ष। वैद्यकशास्त्र में लिखा है कि इस के उपयोग से अन्धों की आँखें अच्छी हो जाती हैं।

अन्धस (न.) भात। ओदन। चावल।

अन्धिका (स्त्री.) द्युति विशेष। सिद्धा नाम की औषधि। नेत्ररोग विशेष।

अन्धुः (पुं.) कूप। कूँआ।

अन्धुल (पुं.) शिरीष का वृक्ष।

अन्ध्र (पुं.) चाण्डाल विशेष। देश विशेष। तैलंग देश।

अन्न (न.) भात। ओदन। पके हुए चावल। कच्चा धान्य। जौ, चना आदि। पृथिवी। अन्न उत्पन्न करने के सम्बन्ध में पृथिवी भी अन्न कही जाती है।

अन्नकोष्ठक (पुं.) अन्न रखने का छोटा कोठा। कोठी। गोला। मण्डी जहाँ अन्न बिकता है।

अन्नगन्धिः (पुं.) रोगविशेष। उदररोग। अतिसार।

अन्नदः (त्रि.) अन्नदाता। अन्न देनेवाला।

अन्नदा (स्त्री.) काशी की अन्नपूर्णा देवी।

अन्नदाता (स्त्री.) स्वामी। प्रभु।

अन्नपूर्णा (स्त्री.) अपने नाम से प्रसिद्ध देवी; ये काशी में हैं।

अन्नप्राशनम् (न.) संस्कार विशेष। प्रथम अन्न भक्षण। छठवें या आठवें महीने बालक को पांचवें या सातवें महीने बालक को जो पहले अन्न दिया जाता है।

अन्नमयः (पुं.) स्थूल शरीर। मन्चकोशों में का पहला कोश।

अन्नविकारः (पुं.) अन्न के विकार से उत्पन्न। रेत। शुक्र। वीर्य।

अन्नादः (त्रि.) अन्न के भोक्ता। प्रदीप्त अग्नि। नीरोग। (पुं.) विष्णु।

अन्नाशनम् (न.) विधि पूर्वक अन्न का खाना। अन्नप्राशन।

अन्यः (त्रि. स.) असदृश। भिन्न। दूसरा।

अन्यतम (त्रि.) समूह से एक को निश्चित करना। बहुतों में का एक।

अन्यतर (त्रि.) दो में से एक का निर्द्धारण करना।

अन्यतः (अ.) अन्यत्र। दूसरी ओर।

अन्यत्र (अ.) व्यतिरेक। दूसरा। बिना। अन्यस्थान।

अन्यथा (अ.) असत्य। प्रकारान्तर। दूसरा प्रकार। पक्षान्तर।

अन्यथासिद्धि (स्त्री.) कार्य की उत्पत्ति के पहले वर्त्तमान रहने पर भी जो कारण न हो।

अन्यदा (अ.) कालान्तर। अन्य काल में। दूसरे समय में। अन्य समय। पश्चात्। फिर।

अन्यपूर्वा (स्त्री.) एक वार व्याह के पश्चात् दूसरी वार व्याही गयी स्त्री।

अन्यभृत् (पुं.) काक। यह कोइल को पोसता है।

अन्यवादी (पुं.) असत्यवादी। उलट पलट वोलने वाला।

अन्यादृश (त्रि.) अन्य प्रकार। दूसरे के सदृश।

अन्याय (पुं.) अविचार। दूसरे का धन आदि हरण करना। अनुचित कार्य।

अन्याय्यम् (त्रि.) अयोग्य। अनुचित।

अन्येद्युः (अ.) दूसरे दिन।

अन्योदर्यः (त्रि.) वैमात्रेय। सौतेला भाई।

अन्योन्यम् (त्रि.) परस्पर। आपस में। अर्थालंकार विशेष। दो वस्तुओं को एक क्रिया के द्वारा परस्पर उपकार्य और उपकारक भाव का जहां वर्णन हो वहां यह अलंकार होता है।

अन्योन्याभावः (पुं.) आपस में एक दूसरे का अभाव। परस्पर अभाव। यथा घट का पट में और पट का घट में अभाव।

अन्योन्याश्रय (त्रि.) जो एक दूसरे के आश्रय से वर्त्तमान हो। तर्क विशेष। एक पदार्थ की सिद्धि दूसरे पदार्थ की सिद्धि के आपेक्षिक हो। जैसे- एक पदार्थ का ज्ञान होना दूसरे पदार्थ के अधीन है और उस दूसरे पदार्थ का ज्ञान पहले पदार्थ क अधीन है। इसी को अन्योन्याश्रय कहते हैं। यह एक दोष है।

अन्वक्षम् (त्रि.) अनुपद। पीछा करना। दौड़ना। प्रत्यक्ष। इन्द्रियजन्य ज्ञान।

अन्वक् (त्रि.) अनुक्। अनुपद। अनुगामी। पीछा करनेवाला।

अन्वय (पुं.) सन्तति। कुल। पदों का परस्पर सम्बन्ध। अनुगम। अनुवृत्ति। एक पदार्थ की सत्ता के अधीन दूसरे पदार्थ की सत्ता।

अन्वयबोधः (पुं.) पदों से उपस्थित अर्थों के सम्बन्ध का ज्ञान। नैयायिक मत से शाब्द प्रमाण। वैशेषिक मत से शब्द से उत्पन्न अनुमान।

अन्वयव्यतिरेकी (त्रि.) हेतुविशेष। सत् हेतु। जिस हेतु में अन्वय और व्यतिरेक वर्त्तमान हो।

अन्वयव्याप्तिः (स्त्री.) हेतु विशेष। अन्वय के साथ नियम से रहना। जहाँ धूम है वहाँ अग्नि इस प्रकार की व्याप्ति।

अन्ववसर्गः (पुं.) इच्छानुसार काम करने की आज्ञा देना।

अन्ववायः (पुं.) वंश। सन्तान। कुल।

अन्वष्टका (स्त्री.) अग्निहोत्रियों का श्राद्ध विशेष। पूस, माघ, फागुन और आश्विन के कृष्णपक्ष की नवमी को होने वाला श्राद्ध।

अन्वहम् (अ.) प्रत्यह। प्रतिदिन।

अन्वाचय (पुं.) मुख्य कार्य की सिद्धि के साथ-साथ जहां अप्रधान कार्य की भी सिद्धि हो। यथा किसी काम के लिये जाते हुए को दूसरा एक और काम बतला देना।

अन्वादेश (पुं.) एक काम के लिये कहने पर भी पुनः दूसरे काम के लिये कहना।

अन्वाधेय (न.) स्त्री धन विशेष। पिता के अनन्तर पति कुल से स्त्रियों को जो धन प्राप्त होता है वह अन्वाधेय है।

अन्वासनम् (न.) उपासना। सेवा करना। पश्चाताप। पछतावा। शुश्रूषा। आराधना।

अन्वाहार्य (न.) मासिक श्राद्ध। प्रतिमास किया जानेवाला श्राद्ध। दर्शश्राद्ध जो अमावास्या को होता है।

अन्वाहार्यपचन (पुं.) जिस से श्राद्ध का अन्न पकाया जाता है। दक्षिणाग्नि। ऋग्वेदोक्त विधि से स्थापित अग्नि।

अन्वितम् (त्रि.) मिलित। युक्त। संवंध प्राप्त।

अन्वीक्षा (स्त्री.) सुनी हुई वात का पुनः युक्तायुक्त विवेचन करना। तर्क के द्वारा यथार्थ अर्थ का निर्णय करना।

अन्वेषणम् (न.) अनुसन्धान। गवेषणा। छिपी हुई वात को प्रकट करने का प्रयत्न करना।

अन्वेषणा (स्त्री.) खोज। मार्गण। अनुसन्धान। तर्कादि द्वारा शास्त्रोक्त तत्वों का पता लगाना।

अन्वेष्टव्यः (त्रि.) ज्ञातव्य। जानने योग्य।

अन्वेष्टा (त्रि.) अन्वेषणा करने वाला। अनुसन्धानकारी। खोज करने वाला।

अप् (स्त्री.) जल। रसतन्मात्रा से उत्पन्न शीतस्पर्शवान् पदार्थ को अप् कहते हैं। व्यापनशील पदार्थ विशेष।

अप (उप. अ.) अपकृष्ट। वर्जन। वियोग। विपर्यय। विकार। चौर्य। निर्देश। हर्ष।

अपकर्म (न.) दुष्कर्म। दुराचार। दुष्टाचरण।

अपकर्षः (पुं.) विद्यमान धर्म की हानि।

अपकारः (पुं.) द्वेष। अनिष्ट। शत्रुता। वैर। विरोध।

अपकारक (त्रि.) अनिष्टकर्ता। अनिष्ट करने वाला।

अपकारगीः (स्त्री.) भर्त्सन वाक्य। तिरस्कार वचन। अपकारार्थक वचन।

अपकारी (त्रि.) धूर्त। शठ। अपकारक। अपकार करने वाला।

अपकुशः (पुं.) दन्तरोग विशेष।

अपकृतः (त्रि.) अपकार किया हुआ। अपकारी। (न.) अपकार।

अपकृष्टः (त्रि.) हीन। अधम। नीच।

अपक्रमः (पुं.) पलायन। भागना।

अपक्रिया (स्त्री.) द्रोह। अपकार। वैर। द्वेष।

अपक्रोश (पुं.) निन्दन। जुगुप्सन। तिरस्कार।

अपक्वम् (त्रि.) अपरिणत। नहीं बड़ा हुआ। कच्चा।

अपक्षेपणम् (न.) क्रिया विशेष। जिस से किसी वस्तु का संयोग अपने स्थान से अधोदेश से होता है।

अपगतः (त्रि.) मृत। पलायित। दूरीभूत। गया।

अपगमः (पुं.) अपगमन। निकल जाना। भाग जाना।

अपघन (त्रि.) देह। शरीर।

अपघात (पुं.) अपहनन। निर्दयतापूर्वक मारना।

अपचयः, (पुं.) हानि। व्यय। अवनति। अपहार। चौर्य। खर्च।

अपचायितम् (त्रि.) पूजित। आराधित। पूजागया।

अपचारः (पुं.) अहित। आचरण। दुराचार।

अपचारिणी (स्त्री.) व्यभिचारिणी। अपचार करनेवाली स्त्री।

अपचारी (त्रि.) अपचार करने वाला।

अपचितम् (त्रि.) अर्चित। पूजित। हीन। बढ़ा हुआ।

अपचितिः (स्त्री.) पूजा। आराधना। व्यय। निष्कृति। निस्तार। हानि। न्यूनता। घटाव।

अपटान्तरम् (त्रि.) आसक्त। अव्यवहित। बीच रहित। खुला हुआ। संसक्त। लगा हुआ। फँसा हुआ।

अपटी (स्त्री.) छोटा वस्त्र। काण्डपट। कनात। कपड़े का पड़दा।

अपटुः (त्रि.) अचतुर। कार्य के अयोग्य। रोगी। काम करने में असमर्थ।

अपतर्पणम् (न.) रोग आदि में भोजन न करना।

अपत्यम् (न.) पुत्र। कन्या।

अपत्यधदा (स्त्री.) गर्भ धारण करनेवाली औषधि। वह क्रिया जिससे गर्भ रहता है।

अपत्यशत्रुः (पुं.) कुलीर। कर्कट। केंकड़ा नामक एक जन्तु।

अपत्र (पुं.) जिसके पत्ते न हों। करीर वृक्ष। (त्रि.) अंकुर।

अपत्रप (त्रि.) लज्जाहीन। निर्लज।

अपत्रपिष्णुः (त्रि.) लज्जाशील। स्वभाव से लज्जा।

अपथम् (न.) अमार्ग। कुत्सित मार्ग। निन्दित पथ।

अपन्था (पुं.) अपथ। मार्ग का अभाव।

अपथ्यम् (त्रि.) अहितकर भोजन। रोगी के न खाने योग्य वस्तु।

अपदस्थः (त्रि.) स्वकर्मच्युत। पदच्युत।

अपदानम् (न.) शोधन करना। साफ करना।

अपदिशम् (न.) दो दिशाओं का मध्य। विदिक्। कोन।

अपदिष्टः (त्रि.) किया हुआ। प्रयुक्त।

अपदेशः (पुं.) लक्ष्य। निराशा। स्वरूप को आच्छादन करना। छल। बहाना। निमित्त। स्थान।

अपध्वंसज (पुं.) वर्णसंकर। भिन्न-भिन्न वर्णों के समागम से उत्पन्न संकीर्ण वर्ण।

अपध्वस्त (त्रि.) परित्यक्त। निन्दित। छोड़ा हुआ। विनष्ट।

अपनयनम् (न.) दूर करना। खण्डन करना। हटाना। अपहरण। स्थान परिवर्तन।

अपनीत (त्रि.) विनीत। हत। हटाया हुआ।

अपनेयः (त्रि.) अपनयन करने योग्य। हटाने योग्य। निरसनीय।

अपनोदन (न.) दूर ले जाना। हटाना। तोड़ देना। प्रतीकार करना।

अपभ्रंश (पुं.) अपशब्द। अशास्त्रीय शब्द। असंस्कृत शब्द। ग्राम्यभाषा।

अपमानम् (न.) अवज्ञा। निरादर। अनादर। तिरस्कार।

अपमित्यक (न.) ऋण। उधार। कर्ज।

अपमृत्यु (पुं.) अपकृष्टमृत्यु। रोग आदि के बिना मरना। अपघातजन्य मृत्यु।

अपयानम् (न.) निकलना। भागना। पलायन करना।

अपर (न.) हाथी का पिछला भाग। (त्रि.) दूसरा। अन्य। भिन्न। नवीन। निकृष्ट। कार्य। सन्निकृष्ट। पश्चिमदिशा।

अपरक्तः (त्रि.) विरक्त। जो अनुकूल न हो।

अपरितः (स्त्री.) विराग। हट जाना। विरुद्ध भाव।

अपरत्र (अ.) परलोक। पीछे। दूसरे समय।

अपरत्वम् (न.) छोटाई के व्यवहार का कारण। जिस के द्वारा वह छोटा और वह बड़ा ऐसा व्यवहार होता है। कालिक और दैशिक भेद से वह दो प्रकार का होता है।

अपरपक्षः (पुं.) दूसरा पक्ष। कृष्णपक्ष।

अपररात्र (पुं.) रात्रिविशेष। रात का पिछला भाग। रात का पिछला पहर।

अपरवक्त्रम् (न.) छन्दविशेष। वैतालीय नामक छन्द।

अपरवैराग्यम् (न.) वैराग्य विशेष।

अपरस्परः (त्रि.) क्रियासातत्य। काम का नैरन्तर्य्य। सतत काम करना।

अपरा (स्त्री.) जटायु। परिश्चम दिशा। विद्याविशेष।

अपरागः (पुं.) अप्रीति। द्वेष।

अपरांगः (पुं.) गुणीभूत व्यंग्य का भेद।

अपराजितः (पुं.) शिव। विष्णु। एक ऋषि का नाम। (त्रि.) दूर्वा। लता विशेष। जयन्तीवृक्ष।

अपराजिता (स्त्री.) जया। उमा। जूही नाम की लता।

अपराद्धः (त्रि.) अपराधी। अपराध करने वाला।

अपराद्धपृषत्क (त्रि.) वह धनुर्धारी जिसका बाण लक्ष्य से च्युत हो।

अपराधः (पुं.) पातक। पाप। गुनाह। भूल। न करने योग्य काम करना।

अपराधी (त्रि.) कृतापराध। जिस ने अपराध किया हो।

अपरान्तः (त्रि.) पाश्चात्त्य देश। पश्चिमी देश। समुद्र मध्यवर्ती देश।

अपराह्णः (पुं.) दिन के तीन भागों का अन्तिम भाग। दिन का तीसरा भाग। दिन का शेष भाग।

अपराह्णतनः (त्रि.) अपराह्ण में होने वाली वस्तु।

अपरिकलितः (त्रि.) अज्ञात। अदृष्ट।

अपरिग्रहः (पुं.) असंग्रह। पास कुछ न रखना। अस्वीकार। संन्यासी। (त्रि.) परिग्रहहीन।

अपरिच्छद (त्रि.) परिच्छदरहित। दरिद्र। निर्धन।

अपरिच्छिन्नः (त्रि.) परिच्छेदरहित। असीम। इयत्तारहित।

अपरिसंख्यानम् (न.) आनन्त्य। असीम।

अपरिहार्यम् (त्रि.) छोड़ने योग्य नहीं। अत्याज्य। जो रोका न जाय।

अपरेद्युः (अ.) दूसरा दिन। परसों।

अपरोक्षम् (त्रि.) प्रत्यक्ष। विषय और इन्द्रियों के संयोग से जो ज्ञान होता है।

अपर्णा (स्त्री.) पार्वती। हिमालय की कन्या। (त्रि.) पर्णरहित। पत्रशून्य।

अपर्याप्तम् (त्रि.) असमर्थ। असम्पूर्ण। शक्तिरहित। जो पूर्ण न हो।

अपलम् (न.) कीलक। (त्रि.) मांसहीन।

अपलाप (पुं.) प्रेम। अपह्नव। छिपाव। सच्ची बात को भी झूठ कहना।

अपवटक (न.) वासगृह। रहने का घर।

अपवर्गः (पुं.) त्याग। मोक्ष। कार्यों की सफलता। कर्म का फल। दुःखों का अत्यन्त नाश।

अपवर्गगुरु (पुं.) सदाशिव। हरि।

अपवर्जनम् (न.) दान। त्याग। मोक्ष। निर्जन।

अपवर्जितः (त्रि.) परिहृत। त्यक्त।

अपवर्तनम् (न.) परिवर्त। वक्र होना। लौटना। टेढ़ा करना। गणितशास्त्र में प्रसिद्ध भाज्य भाजक दोनों को किसी एक समान अंक से बाँटना संक्षिप्त करना। अल्प करना।

अपवादः (पुं.) निन्दा। आज्ञा। प्रेम। विश्वास। विशेष नियम। व्याकरण शास्त्रानुसार अपवाद शास्त्र।

अपवारण (न.) अन्तर्द्धान। छापना। व्यवधान।

अपविद्धः (त्रि.) त्यक्त। छोड़ दिया गया। प्रत्याख्यात। तिरस्कार किया हुआ। पुत्रविशेष-जो पिता माता के द्वारा परित्यक्त हो।

अपविषा (स्त्री.) ओषधिविशेष। जिस से दूर हो जाय।

अपवृत्त (पुं.) पराङ्मुख। किसी की न माननेवाला। दुराचारी।

अपशब्दः (पुं.) अपभ्रंश शब्द। असंस्कृत शब्द। बिगड़ा हुआ शब्द।

अपशुक् (पुं.) आत्मा।

अपशोक (पुं.) अशोक नामक वृक्ष।

अपष्ठु (पुं.) काल। (त्रि.) वाम। प्रतिकूल। विरोध।

अपसद (पुं.) अधम। नीच। अपकृष्ट। नीच जातिविशेष।

अपसरः (पुं.) अपसरण। हटना।

अपसरणम् (न.) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

अपसर्जन (न.) परिवर्तन। दान। छोड़ना। निर्जन। मोक्ष।

अपसर्पः (त्रि.) गुप्तचर। छिपा हुआ दूत। (पुं.) एक प्रकार का सर्प।

अपसव्य (त्रि.) शरीर का दक्षिण भाग। प्रतिकूल। विरुद्धार्थ। पितृतीर्थ।

अपसिद्धान्तः (पुं.) माने हुए सिद्धान्त से गिरना।

अपस्करः (पुं.) रथांग। पहिये को छोड़ कर रथ का अंग।

अपस्नात (त्रि.) निन्दित स्नान। मृतक के लिये स्नान करनेवाला।

अपस्नान (न.) मरणनिमित्तक स्नान।

अपस्मार (पुं.) रोगविशेष। भूतविकार। मिरगी रोग।

अपस्मारी (त्रि.) अपस्माररोगी।

अपहतः (त्रि.) अपनीत। नष्ट। ताड़ित। पीड़ित।

अपहतपाप्मा (पुं.) जिसके समस्त पाप दूर हो गये हों। वेदान्तवाक्यों द्वारा जानने योग्य आत्मा।

अपहतिः (स्त्री.) विनाश। उच्छेद।
अपहन्ता (पुं.) विनाशक। नाश करने वाला।
अपहर्ता (त्रि.) अपहरण करने वाला। विनाशक।
अपहस्तित (त्रि.) निरस्त। हटाया हुआ। गले में हाथ देकर निकाल दिया हुआ।
अपहारः (पुं.) हानि। चोरी। छिपाना। लुटाना। अपचय। हानि। अपहरण।
अपहारक (त्रि.) अपहरण करने वाला।
अपहारी (त्रि.) अपहरण शील। अपहरण करने वाला।
अपहासः (पुं.) अकारण हँसी। निरर्थक हास्य।
अपहृतः (त्रि.) अपनीत।
अपह्नवः (पुं.) स्नेह। अपलाप। सत्य को छिपाना।
अपह्नुतिः (स्त्री.) अपलाप अर्थालंकार विशेष। प्रकृत बात को छिपाकर उस को दूसरे रूप से वर्णन करने से यह अलंकार होता है।
अपांनाथः (पुं.) समुद्र। सागर। वरुण।
अपाक (पुं.) अजीर्ण होना। नहीं पकना। कच्चा।
अपाकरणम् (न.) निराकरण। दूर करना। हटाना।
अपाक्शाकम् (न.) अरदख।
अपाकृत (त्रि.) त्यक्त। दूरीकृत। हटाया हुआ।
अपाङ्क्तेयः (त्रि.) पङ्क्ति में भोजन करने के अयोग्य। पतित। अधम। जातिच्युत।
अपाङ्ग (पुं.) नेत्रका अन्तभाग। कटाक्ष।
अपाङ्गकः (पुं.) अपामार्ग नामक पौधा। कटाक्ष। (त्रि.) अंगहीन।
अपाङ्गदर्शनम् (न.) कटाक्ष। कटाक्ष से देखना।
अपाटवम् (न.) रोग। पटुता का अभाव। चतुराई के बिना। बेवकूफी।
अपात्रम् (न.) अयोग्य। योग्यताहीन। निन्दित। दुराचारी।
अपात्रीकरणम् (न.) नवविध पापों में से एक पाप का नाम। यह चार प्रकार का होता है। (१) निन्दित से धन लेना (२) व्यापार करना (३) शूद्रसेवा (४) असत्य बोलना।
अपादान (न.) छः कारकों में का पाँचवाँ कारक। जिस वस्तु से दूसरी वस्तु का विभाग होता है वह अपादान कहा जाता है
अपानः (पुं.) नीचे जाने वाली शरीर की वायु।
अपाप (त्रि.) पापरहित। निष्पाप।
अपापविद्धः (त्रि.) धर्माधर्मरहित।
अपामार्गः (पुं.) औषधविशेष। एक पौधे का नाम। चिचड़ा।
अपाम्पतिः (पुं.) समुद्र। वरुण।
अपायः (पुं.) वियोग। नाश। हटना। दुःख आपत्ति।
अपारः (पुं.) समुद्र। जिसका पार न हो। जिस की अवधि न हो। सागर।
अपार्थः (त्रि.) अर्थ शून्य। निरर्थक। अर्थ रहित।
अपावृतः (त्रि.) खुला हुआ। स्वतन्त्र। उद्घाटित।
अपाश्रयः (पुं.) आश्रयशून्य। आश्रय रहित। चन्दवा।
अपासनम् (न.) मारण।
अपास्तः (त्रि.) निरस्त। अवधीरित। तिरस्कृत। हटाया हुआ।
अपि (अ.) सम्भावना। प्रश्न। शंका। गर्हा। समुच्चय। अनुज्ञा। अवधारणा।
अपिगीर्णम् (न.) स्तुत। प्रशंसित। जिसकी स्तुति की गयी हो।
अपितु (अ.) किन्तु। यदि। यद्यपि। एक अव्यय है।
अपिधान (न.) आच्छादन। ढकना।
अपिनद्धः (त्रि.) पहना हुआ वस्त्र।
अपीच्यम् (त्रि.) अत्यन्त सुन्दर।
अपीनम् (त्रि.) पीनसरोगरहित। नासिका के एक रोग को पीनस कहते हैं उससे रहित। दुवला।
अपुच्छा (स्त्री.) शिखरहीन। शिंशपा वृक्ष। (त्रि.) पुच्छहीन।
अपुनरावृत्ति (स्त्री.) जहाँ से पुनः आवृत्ति न हो। मुक्ति। मोक्ष।
अपुनर्भवः (पुं.) पुनः जन्म का अभाव। मोक्ष। मुक्ति। संसारबन्धन का नाश।
अपुष्पफलदः (पुं.) वनस्पति। जो बिना फूल के भी फल दे।
अपूपः (पुं.) पिष्टक। पूआ। मालपूआ।
अपूप्यम् (न.) जिसके पूआ बनते हैं। आटा।
अपूरणी (स्त्री.) शाल्मलिवृक्ष। सेमल का पेड़।
अपूर्वः (त्रि.) पहले का नहीं देखा गया। अद्भुत।

अविदित। अज्ञात। आश्चर्य। (पुं.) आत्मा। कारणशून्य।

अपूर्वविधि (पुं.) अन्य प्रमाणों से अप्राप्त अर्थ का विधान करने वाला।

अपेक्षणीयः (त्रि.) अपेक्षा के योग्य।

अपेक्षा (स्त्री.) आकांक्षा कार्य और कारण का परस्पर संबन्ध।

अपेक्षाबुद्धि (स्त्री.) अनेक विषयक बुद्धि। जो बुद्धि अनेक विषय की हो।

अपेक्षितः (त्रि.) ईप्सित। अभीष्ट।

अपेतः (त्रि.) रहित।

अपेतकृत्यः (त्रि.) कार्यशून्य। कृतकृत्य। जिसके कोई काम न हो।

अपोगण्डः (त्रि.) अतिभीरु। डरने वाला। अवस्थाविशेष। बाल्यावस्था।

अपोढ (त्रि.) निरस्त। त्यक्त। निकाला गया।

अपोदका (स्त्री.) शाकविशेष। पूति नामक शाक।

अपोनपात् (पुं.) इस नाम से प्रसिद्ध एक देवता।

अपोह (पुं.) तर्क का निराकरण। जयी कल्पना। तर्क। त्याग। निषेध।

अप्पतिः (पुं.) जल का स्वामी। वरुण। समुद्र।

अप्रकाण्डः (पुं.) शाखाहीन वृक्ष। खुत्थ।

अप्रकाशः (त्रि.) प्रकाश का अभाव। न समझने योग्य। जनान्तिक। गोपन।

अप्रकृष्टगुण (त्रि.) जिसके उत्तमगुण न हों। व्याकुल। घवड़ाया हुआ।

अप्रखरः (त्रि.) प्रखरतारहित।

अप्रगुण (त्रि.) व्याकुल। प्रकृष्टगुणहीन।

अप्रणयः (पुं.) अप्रीतिः। प्रीति का अभाव।

अप्रतर्क्यः (त्रि.) तर्क के अयोग्य। मन के अगोचर।

अप्रतिकरः (त्रि.) विश्वस्त। विश्वासपात्र।

अप्रतिपक्षः (त्रि.) अप्रतियोगी। विपक्षशून्य। शत्रुरहित।

अप्रतिपत्तिः (स्त्री.) यथार्थ का अज्ञान।

अप्रतिभः (त्रि.) अधृष्ट। लज्जित। अप्रत्युत्पन्न भक्ति। अप्रगल्भ। प्रतिभाहीन।

अप्रतिमः (त्रि.) असदृश। असमान। जिस के तुल्य दूसरा न हो।

अप्रतिरथम् (न.) युद्धकी यात्रा। युद्धार्थ यात्रा के लिये किया गया मंगल। सामवेद का एक भाग। जिसके समान दूसरा योधा न हो। विष्णु।

अप्रतिरूपकथा (स्त्री.) वैसा वचन जिस का उत्तर न हो। उत्तरहीन वचन।

अप्रतिष्ठः (त्रि.) अप्रतिष्ठित। प्रतिष्ठारहित।

अप्रतिहतः (त्रि.) आघातशून्य। विघ्नों से अभिभूत नहीं। निर्विघ्न।

अप्रत्यक्षम् (न.) प्रत्यक्ष भिन्न। प्रत्यक्ष का अभाव। इन्द्रियों के अगोचर।

अप्रत्ययः (पुं.) अविश्वास।

अप्रधान (न.) प्रधान का अभाव। गौण।

अप्रधृष्यः (त्रि.) अविचलनीय। तिरस्कार करने के अयोग्य।

अप्रमत्तः (त्रि.) प्रमादरहित। सावधान।

अप्रमेय (त्रि.) अचिन्त्य प्रभाव। यह ऐसा ही है। इस प्रकार जिसका निश्चय न किया जा सके। प्रमेयरहित।

अप्रशस्तम् (त्रि.) अश्रेष्ठ। अविहित।

अप्रसङ्गः (पुं.) अव्यतिकर। प्रसंग का अभाव।

अप्रस्तुतः (त्रि.) अनुपस्थित। प्रकरण से अप्राप्त।

अप्रस्तुतप्रशंसा (स्त्री.) अर्थालंकारविशेष। अप्राकरणिक अर्थ के कहने से प्राकरणिक अर्थ का बोध होना।

अप्रहत (त्रि.) अनाहत। बिना जोती हुई भूमि।

अप्राकृतः (त्रि.) सामान्य। जनसाधारण।

अप्राग्न्यम् (त्रि.) अप्रधान। मुख्य नहीं।

अप्राप्तः (त्रि.) अलब्ध। नहीं पाया गया।

अप्राप्तकाल (न.) घवड़ा कर विपरीत कहना।

अप्राप्तव्यवहारः (त्रि.) व्यवहार से अनभिज्ञ। अवयस्क। नाबालिग।

अप्राप्तिः (स्त्री.) लाभ का अभाव। न मिलना। कुण्डली का द्वादश स्थान।

अप्रामाणिकः (त्रि.) प्रमाण न जानने वाला। वह वस्तु जो प्रमाणित न हो। अविश्वसनीय।

अप्रामाण्यम् (न.) प्रमाण का अभाव।

अप्रियम् (त्रि.) अनिष्ट। अहित। कटु।

अप्सरस् (स्त्री.) देवांगना। उर्वशी आदि स्वर्ग की वेश्या।

अफलः (पुं.) झावु। (त्रि.) फलरहित वृक्ष। निष्फल। व्यर्थ।

अफलप्रेप्सुः (त्रि.) फलाभिलाषरहित।

अफला (स्त्री.) घीकुआर। एक प्रकार की औषधी।

अफेनम् (न.) अहिफेन। अफयून। इसके चार भेद होते हैं। (१) श्वेत। (२) काला। (३) पीला। (४) मटमैला रंग।

अबद्धम् (न.) समुदायार्थशून्य वाक्य। निरर्थक वचन। परस्पर संबन्धहीन वाक्य।

अबद्धमुख (त्रि.) दुष्टवचन बोलने वाला। दुर्वचन वक्ता। वाचाल। मुहफट।

अवध्यम् (त्रि.) वध के अयोग्य। मारने के अयोग्य। दण्ड के अयोग्य।

अबन्ध्यम् (त्रि.) सफल। निष्फल नहीं। जिसके फल न रुके।

अबलः (पुं.) वरुण नामक वृक्ष। (त्रि.) दुर्बल। बलरहित। अबला। (स्त्री.) स्त्रीजाति।

अबाधः (त्रि.) पीडाशून्य। पीडारहित।

अबिन्धनः (पुं.) बड़वाग्नि। विद्युत्। बिजली।

अब्ज (न.) कमल। चन्द्र। संख्याविशेष। अरब। १०००००००००।

अब्जजः (पुं.) विष्णु के नाभिकमल से उत्पन्न। ब्रह्मा। प्रजापति।

अब्जभोगः (पुं.) कौड़ी। कमलकन्द।

अब्जवाहन (पुं.) शिव। महादेव।

अब्जहस्तः (पुं.) सूर्य। दिवाकर।

अब्जिनी (स्त्री.) नलिनी। कमलिनी। कमलकी लता। पद्मसमूह। कुहिरी।

अब्जिनीपतिः (स्त्री.) सूर्य।

अब्दः (पुं.) मेघ। बादल। मोथा। एक पर्वत का नाम। वर्ष। सरल।

अब्धिः (पुं.) समुद्र। सागर। सिन्धु।

अब्धिकफः (पुं.) समुद्र की झाग। समुद्रफेन। एक प्रकार की औषधी।

अब्धिद्वीपा (स्त्री.) पृथिवी।

अब्धिनवनीतम् (न.) समुद्र के नवनीत (मक्खन) समान। चन्द्रमा।

अब्धिफेन (पुं.) समुद्रफेन।

अब्धिमण्डूकी (स्त्री.) शुक्ति। सीप।

अब्धिशयनः (पुं.) विष्णु। नारायण। शेषशायी भगवान्।

अभ्रम् (न.) मेघ। बादल। जो जल धारण करता है।

अभ्रंलिह (पुं.) वायु। पवन। जो मेघों को उड़ा ले जाता है। ऊंचे पर्वत, महल, वृक्ष आदि।

अभ्रक (न.) जो मेघों के समान बढ़े। धातुविशेष। अबरक।

अभ्रपुष्प (पुं.) जल। वेतवृक्ष। वेतस का पेड़।

अभ्रमातंगः (पुं.) ऐरावत नाम का हाथी।

अभ्रमु (स्त्री.) इन्द्र के हाथी ऐरावत की स्त्री। पूर्व दिशा की हथिनी।

अभ्रमुवल्लभ (पुं.) ऐरावत हाथी।

अभ्ररोहस् (पुं.) वैदूर्य नामक मणि। प्रवाल। मूंगा।

अब्रह्मण्यम् (न.) अवध्योक्ति। "न मारो" इस अर्थ में इस का प्रयोग नाटकों में होता है। (पुं.) ब्राह्मण भक्तिहीन।

अब्राह्मणः (पुं.) नीच ब्राह्मण। अधम ब्राह्मण। गैर ब्राह्मण।

अभक्ष्यः (त्रि.) खाने के अयोग्य। न खाने योग्य।

अभद्रः (त्रि.) दुःख। दुष्ट। अशुभ।

अभयम् (न.) भय का न होना। भय रहित। परमात्मा। परमात्मा का ज्ञान। (अभयं वै जनकप्राप्तोऽसि) "श्रुतिः" शास्त्र में कही हुई विधियों को बिना सन्देह अनुष्ठान करनेवाला। यात्रा का योगविशेष।

अभयडिण्डिमः (पुं.) युद्धवाद्य। रणपटह।

अभया (स्त्री.) हरीतकी। हड़।

अभवः (पुं.) मोक्ष। मुक्ति।

अभव्यः (त्रि.) अविनीत। अभागी।

अभावः (पुं.) मरण। असत्ता। न होना। अदर्शन। यह चार प्रकार का होता है। प्रागभाव। प्रध्वंसाभाव। अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव।

अभि (अ.) निश्चित कथन। अभिमुख्य। अभिलाष। वीप्सा। लक्षण एक उपसर्ग।

अभिकः (त्रि.) कामुक। अभिलाषी।

अभिक्रमः (पुं.) आरम्भ। चढ़ना। लड़ाई। शत्रु का सामना करना।

अभिख्या (स्त्री.) नाम। शोभा। यश।

अभिग्रहः (पुं.) लूट। देखते-देखते ले लेना।

अभिघातः (पुं.) प्रहार। अभिहनन। आघात। चोट विशेष। क्रिया के द्वारा एक वस्तु का दूसरी वस्तु से सम्बन्ध।

अभिघाती (पुं.) शत्रु। प्रहार करने वाला। मारनेवाला।

अभिघारः (पुं.) होम। हवन। अग्नि में घी डालना।

अभिचारः (पुं.) अथर्ववेद और तन्त्र में प्रसिद्ध। मारण, उच्चाटन, स्तम्भन आदि क्रिया। नान्त्रिक क्रिया। शत्रु नाशकारी अनुष्ठान।

अभिजन (पुं.) कुल। वंश। प्रसिद्धि।

अभिजातः (त्रि.) कुलीन। प्रसिद्ध। कुलवाला। न्याय्य। पण्डित।

अभिजित् (न.) नक्षत्रविशेष। उत्तराषाढ़ का चौथा भाग और श्रवण का पहला पन्द्रहवां भाग अभिजित् कहा जाता है। यात्रा का मुहूर्त विशेष। विजयमुहूर्त। दिन का आठवाँ भाग। जो कुतुप नाम से प्रसिद्ध है।

अभिज्ञः (त्रि.) चतुर। पण्डित। विशारद।

अभिज्ञा (स्त्री.) प्राथमिक ज्ञान। पहला। ज्ञान।

अभिज्ञानम् (न.) ज्ञानविशेष। चिन्ह। किसी वस्तु के पहचानने का साधन।

अभितप्तः (त्रि.) पीड़ित। खूब तपाया हुआ।

अभितः (अ.) शीघ्र। समीप। सामना। दोनों ओर।

अभिद्रवणम् (न.) वेग से चलना। आक्रमण।

अभिद्रोहः (पुं.) आक्रोश। निन्दा। अनिष्टचिन्तन।

अभिधा (स्त्री.) शब्दों के अर्थ-बोधन करने वाली शक्ति। वाचक शब्द। मीमांसक भाट्ट के मत में शाब्दीभावना।

अभिधानम् (न.) नाम। संज्ञा। कथन। शब्दकोश।

अभिधायक (त्रि.) वाचक। अर्थबोधक।

अभिधेयम् (न.) अभिधा शक्ति द्वारा बोधित अर्थ। शब्दबोध्य अर्थ।

अभिध्या (स्त्री.) ग्रहणेच्छा। दूसरे का धन लेने की इच्छा।

अभिनन्दः (पुं.) सन्तोष। प्रशंसा।

अभिनन्दनः (पुं.) बुद्ध विशेष। जैनियों का चौथा तीर्थंकर। (न.) स्तुति। सब प्रकार के आनन्द देनेवाला। (-पत्र) एड्रेस।

अभिनयः (पुं.) हृदय के भाव को प्रकट करनेवाली क्रिया। नाटक। अनुकरण।

अभिनवः (पुं.) नव। नवीन।

अभिनवोद्भिद् (पुं.) अंकुर।

अभिनहनम् (न.)

अभिनिर्मुक्तः (पुं.) सूर्यास्त के समय सोनेवाला ब्राह्मण।

अभिनिर्याणम् (न.) जीतने की इच्छा से जाना। शत्रु के प्रति चढ़ाई करना।

अभिनिविष्ट (त्रि.) अभिनिवेश युक्त। दुराग्रही। प्रवेश करनेवाला।

अभिनिवेश (पुं.) अन्धतामिस्र। योगशास्त्र का प्रसिद्ध पाँचवाँ क्लेश। आग्रह।

अभिनिष्पत्तिः (स्त्री.) सिद्धि। समाप्ति। उत्पत्ति।

अभिनीतः (त्रि.) ताप्य। क्रोधन। अमर्षी। अभिनय किया हुआ।

अभिनेता (त्रि.) नाटक का अभिनय करनेवाला। नाटक खेलने वाला। नट।

अभिपन्नः (त्रि.) अपराधी। आपत्तियुक्त। स्वीकृत।

अभिप्रायः (पुं.) आशय। सम्मति। इच्छा।

अभिप्रेत (त्रि.) सम्मत। अभीष्ट। इच्छित। इरादा।

अभिभव (पुं.) पराजय। तिरस्कार। अनादर। अप्रतिष्ठा।

अभिभूत (त्रि.) कर्तव्यज्ञानशून्य। आक्रान्त। ज्ञानरहित। व्याकुल।

अभिमत (त्रि.) सम्मत। आदृत। अभीष्ट।

अभिमन्त्रणम् (न.) निमन्त्रण। आह्वान। मन्त्रद्वारा शुद्ध करना।

अभिमन्थः (पुं.) नेत्ररोग विशेष।

अभिमन्युः (पुं.) अर्जुन का पुत्र। यह सुभद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

अभिमरः (पुं.) युद्ध। लड़ाई।

अभिमर्दः (पुं.) मद्य। मदिरा। युद्ध। लड़ाई।

अभिमानः (पुं.) दर्प। अहंकार। धन आदि का अहंकार। अपने को बड़ा भारी प्रतिष्ठित समझना।

अभिमुखः (त्रि.) सम्मुख। सामना।

अभिमृष्टः (त्रि.) संसृष्टः। संबंधयुक्त। मिला हुआ।

अभियुक्तः (त्रि.) रोका हुआ। तत्पर। ज्ञानी। प्रतिवादी। मुद्दाअलेह। मुलाजिम।

अभियोक्ता (त्रि.) अर्थी। वादी। फरयादी। मुद्दई।

अभियोग (पुं.) नालिश करना। मुकदमा आग्रह। शपथ। उद्योग। किसी से विरोध होने पर अपना पक्ष न्ययालय में प्रकट करना।

अभिराम (त्रि.) सुन्दर। प्रिय। मनोहर।

अभिरूप (पुं.) शिव। विष्णु। कामदेव। (त्रि.) बुध। पंडित। सुन्दर। मनोहर। सदृश।

अभिलषित (त्रि.) अभीप्सित।

अभिलापः (पुं.) संकल्प। किसी काम के लिये निश्चय करण।

अभिलाषः (पुं.) इच्छा। लोभ। मनोरथ।

अभिलाषुकः (त्रि.) लुब्धालोभी। इच्छा करने वाला।

अभिवादः (पुं.) प्रणाम। अभिवादन।

अभिवादन (न.) शिष्टाचारविशेष। पैर छूकर प्रणाम करना।

अभिविधि (पुं.) व्याप्ति। मर्यादा। सीमा।

अभिव्यक्त (त्रि.) प्रत्यक्ष। प्रकाशित। प्रकटित।

अभिव्यक्ति (स्त्री.) प्रत्यक्ष। उद्भव। प्रकाश।

अभिव्याप्तिः (स्त्री.) विस्तार। सब प्रकार का संवन्ध। फैलाव।

अभिशयनम् (न.) अभिशाप। अनिष्टचिन्ता।

अभिशप्तः (त्रि.) शापप्राप्त। शापित। जिस के अनिष्ट की चिन्ता की गयी हो।

अभिशस्तः (पुं.) नृप। अति। प्रशंसित। (त्रि.) मिथ्या अपवाद युक्त।

अभिशाप (पुं.) मिथ्या अपवाद। अनिष्ट चिन्तन।

अभिषङ्गः (पुं.) तिरस्कार। निन्दा।

अभिषवः (पुं.) अवमृथ स्नान। यज्ञ सम्वन्धी स्नान। यज्ञ। नहवाना। पीडादेना। मद्य वनाना। वलि देना।

अभिषवण (न.) स्नान करना। यज्ञसंबन्धी स्नान करना। बलिदान। सोमलताका कूटना।

अभिषेक (पुं.) मन्त्रपूर्वक स्नान। मार्जन। (राज्य) राज्यतिलक होना।

अभिषिक्त (त्रि.) अभिषेक किया हुआ। मन्त्र द्वारा जिसका अभिषेक किया गया हो।

अभिषेणन (न.) सेना लेकर शत्रु पर चढ़ जाना। शत्रुपर आक्रमण करना। युद्ध यात्रा।

अभिष्टुत (त्रि.) स्तुत। प्रशंसित। स्तुति किया गया। वर्णित। जिसका वर्णन किया गया हो।

अभिस्पन्दः (पुं.) अतिवृद्धि। जल आदि तरल पदार्थों का बहना। अक्षिरोग विशेष।

अभिसन्ताप (पुं.) दुःख। क्लेश। अधिक क्लेश। चारों ओर से क्लेश।

अभिसन्धः (पुं.) सत्य का अभिमान।

अभिसन्धान (न.) वञ्चन। प्रतारण। ठगना। अपने मत में कर लेना।

अभिसम्पात (पुं.) युद्ध। शाप देना। विरुद्ध चिन्ता न करना।

अभिसरः (त्रि.) अनुचर। सहाय। भृत्य। नौकर।

अभिसर्जनम् (न.) दान। वध। मारण।

अभिसार (पुं.) बल युद्ध। सहाय। साधन। स्त्री पुरुषों के परस्पर किये हुए संकेत स्थान को जाना।

अभिसारिका (स्त्री.) नायिका विशेष। जो संकेतस्थान पर स्वयं आये अथवा नायक को बुलावे। वह शुक्ला और कृष्णा में से दो प्रकार की होती है।

अभिसारिणी (स्त्री.) अभिसारिका नायिका।

अभिसृष्टः (त्रि.) त्यक्त। छोड़ा हुआ। दिया हुआ।

अभिहत (त्रि.) तड़ित। मारा हुआ।

अभिहारः (पुं.) अभियोग। जाकर आक्रमण करना। चोरी। देखते-देखते चोरी करना।

अभिहितम् (त्रि.) कथित। प्रोक्त। कहा हुआ।

अभीकः (त्रि.) कामुक। चाहनेवाला। अभिलाषी। क्रूर। निर्भय। निडर।

अभीक्ष्णम् (अ.) नित्य। शश्वत्। पुनः-पुनः। बार-बार।

अभीप्सितम् (त्रि.) वाञ्छित। अभीष्ट।
अभीरुः (त्रि.) निर्भय। निडर। (स्त्री.) शतमूली।
अभीषङ्गः (पुं.) आक्रोश। शाप।
अभीषुः (पुं.) किरण। घोड़े की लगाम।
अभीष्टः (त्रि.) ईप्सित। प्रिय। वाञ्छित।
अभुक्त (त्रि.) उपवासी। अकृतभोजन। भूखा।
अभुक्तमूलः (पुं.) ज्येष्ठा के अन्त की चार घड़ियों के साथ मूल की पहली चार घड़ी। ज्येष्ठा की अन्तिम एक घड़ी और मूल की पहली दो घड़ी। ज्येठा की अन्तिम आधी घड़ी और मूल के आदि की आधी घड़ी। ज्येष्ठा की अन्तिम पाँच घड़ी और मूल की पहली नौ घड़ी। मूलकी अधिक दोषदायी घड़ियाँ।
अभूतः (त्रि.) अविद्यमान।
अभूताभिनिवेशः (पुं.) असत्य वस्तु में सत्य का ज्ञान।
अभेदः (पुं.) भेद का अभाव। एकरूप। एकता।
अभेद्यम् (न.) दृढ। भेदन करने अयोग्य। हीरा। जो छेदा न जा सके।
अभ्यंगः (पुं.) तैलमर्दन। तेल लगाना।
अभ्यञ्जनम् (न.) तैल। अभ्यंग। शरीर में लगाने की स्नेहयुक्त वस्तु। उपटन।
अभ्यधिकः (त्रि.) सर्वोत्कृष्ट। उत्तमोत्तम। सब से बड़ा।
अभ्यनुज्ञा (स्त्री.) अनुमति। प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा।
अभ्यन्तरम् (न.) मध्यभाग। बीच का भाग। अन्तर्गत।
अभ्यमित (त्रि.) रोगवाला। रोगी।
अभ्यमित्रीण (त्रि.) वीरविशेष। वीरतापूर्वक शत्रु का सामना करने वाला।
अभ्यर्णम् (त्रि.) समीप। निकट। पास।
अभ्यर्दित (त्रि.) पीड़ित।
अभ्यर्हणीय (त्रि.) पूजनीय। पूज्य। श्रेष्ठ माननीय।
अभ्यर्हित (त्रि.) पूजित। सेवित। श्रेष्ठ। उत्तम। उचित।
अभ्यवकर्षणम् (न.) शरीर में चुभे हुए वाण आदि का निकालना। भीतर गये हुए पदार्थ का निकालना।
अभ्यवस्कन्द (पुं.) शत्रु पर प्रहार करना।
अभ्यवहार (पुं.) भोजन। खाना।
अभ्यसनम् (न.) अभ्यास करना। बार-बार चिन्ता करना।
अभ्यसूया (स्त्री.) दुर्गुण विशेष। गुणों में दोष निकालना।
अभ्याकाङ्क्षितम् (न.) मिथ्या अभियोग। झूठा दावा। (त्रि.) ईप्सित।
अभ्यागत (त्रि.) अतिथि। पाहुना।
अभ्यागम (पुं.) विरोध। शत्रुता। समीप। अभिघात। भोग। स्वीकार।
अभ्यागारिक (पुं.) कुटुम्बपालन में तत्पर। घर का काम काज करने वाला।
अभ्यादानम् (न.) आरम्भ।
अभ्यामर्दः (पुं.) रण। समर। युद्ध।
अभ्याशः (पुं.) अवश्य। ऐकान्तिक। अतिप्रयोजनीय। निकट। समीप।
अभ्यासः (पुं.) अभ्यसन। आवृत्ति। विद्या का अर्जन करना। वह पाँच प्रकार का है। सुनना। विचार करना। आवृत्ति करना। शिष्यों को पढ़ाना और स्वयं अनुशीलन करना। निशाना लगाना। सीखना। बाण चलाना सीखना। मानसिक संस्कार। (त्रि.) समीप।
अभ्यासयोगः (पु.) योगविशेष। एक आलम्बन में चित्त को स्थापित करना अभ्यास कहा जाता है। अभ्यास सहित समाधि।
अभ्यासादन (न.) शस्त्र आदि से शत्रु को हीनवीर्य करना। शत्रु का सामना करना।
अभ्याहारः (पुं.) आहार। भोजन खाना। देखते देखते चुरा लेना।
अभ्याहितः (त्रि.) उपचित। वृद्ध। बढ़ा हुआ।
अभ्युच्चयः (पुं.) अभ्युदय। समूह। समूहालम्बन ज्ञान। लक्ष्मी।
अभ्युत्थानम् (न.) शिष्टाचार विशेष। गौरव दिखाने के लिये उठना। उठकर आगे से लेने जाना।
अभ्युदयः (पुं.) पराक्रम। वृद्धिश्राद्ध। उन्नति। वृद्धि।
अभ्युदितः (पुं.) सूर्योदय के समय सोने वाला वह ब्रह्मचारी जिसने सूर्योदय के समय सोने के कारण प्रातःकृत्य छोड़ दिया हो।

अभ्युद्यत (त्रि.) विना याचना के मिला हुआ अन्न आदि। प्रस्तुत। उद्यत।
अभ्युपगत (त्रि.) स्वीकृत। माना हुआ।
अभ्युपगमः (पुं.) स्वीकार। अंगीकार। समीप जाना।
अभ्युपगमसिद्धान्तः (पुं.) न्याय का एक सिद्धान्त-विशेष। नहीं कहे हुए को मान कर विशेष धर्म का कहना। विशेष धर्म के कहने से सूत्रकार के अभिप्राय को जानना।
अभ्युपपत्तिः (स्त्री.) अनुग्रह। हितसाधन और अहित का निवारण।
अभ्युपायः (पुं.) स्वीकार। उपाय।
अभ्युपायनम् (न.) उपहार। भेंट।
अभ्युपेतः (पुं.) उपगत। स्वीकृत।
अभ्यूहः (पुं.) तर्क। युक्ति।
अभ्यूहितः (त्रि.) ज्ञात। विदित।
अभ्रम् (न.) मेघ। बादल। जिससे जल न गिरे।
अभ्रिः (स्त्री.) काष्टकुद्दाल। जो लकड़ी का बनता है। जिस से जहाज आदि का मैल साफ किया जाता है।
अभ्रेषः (पुं.) औचित्य। न्याय्य। न्यायानुमोदित।
अम् (धा. उभ) पीड़ा। रोग।
अमः (पुं.) वृद्धि का अभाव। रोग। बिना पका फल।
अमंगलः (पुं.) एरण्डवृक्ष। (त्रि.) मंगलहीन। अशुभसूचक।
अमतः (पुं.) मृत्यु। काल। रोग। (त्रि.) असम्मत। अविज्ञात। अतर्कित। नहीं जाना हुआ।
अमत्रम् (न.) भोजन। भाण्ड। बर्तन। भोजन करने का पात्र।
अमनस्कः (त्रि.) जिसका मन वश में न हो (पुं.) योग के एक ग्रन्थ का नाम।
अमन्दः (त्रि.) धृष्ट। मन्द नहीं।
अममः (पुं.) होने वाले एक जैन तीर्थकर। (त्रि.) ममताहीन। ममतारहित।
अमरः (पुं.) देवता। सुर। एक वैयाकरण। स्नुहीवृक्ष। पारद। पारा। हड्डियों का समूह। कोशकार विशेष।
अमरदारु (पुं.) देवरारु वृक्ष।
अमरद्विजः (पुं.) देवपूजक ब्राह्मण। पुजारी।
अमरा (स्त्री.) गुरुच। अमरावती। इन्द्रपुरी। दूब। जरायु। इन्द्रवारुणी वृक्ष। गर्भ की नाड़ी। घिकुआर।
अमराद्रिः (पुं.) सुमेरु। देवताओं का पर्वत।
अमरालयः (पुं.) स्वर्ग। देवताओं का नगर।
अमरावती (स्त्री.) जिसमें देवता रहें। इन्द्रपुरी।
अमर्त्यः (पुं.) मरणहीन। देवता।
अमर्त्यनदी (स्त्री.) गंगा। देवताओं की नदी।
अमर्त्यभुवनम् (न.) देवताओं का लोक। स्वर्ग।
अमर्ष (पुं.) कोप। क्रोध। दूसरे का उत्कर्ष न सहना। किया हुआ अपराध। असमर्थ का द्वेष।
अमर्षण (त्रि.) क्रोधी। क्रोध करने वाला।
अमलम् (न.) अभ्रकम् (त्रि.) निर्मल। साफ। स्वच्छ।
अमला (स्त्री.) लक्ष्मी। भूम्यामलकी। नाभिनाल।
अमा (अ.) साथ। समीप। पास।
अमा (स्त्री.) अमावास्या तिथि। दर्श। साथ। समीप।
अमांसम् (त्रि.) दुर्बल। बलहीन।
अमांसाशी (त्रि.) मांस न खाने वाला।
अमात्य (पुं.) मन्त्री। सचिव। (त्रि.) बन्धु। साथ उत्पन्न होने वाला।
अमावास्या (स्त्री.) अमावास्या नाम की तिथि। इस तिथि को चन्द्रमा और सूर्य दोनों साथ रहते हैं। दर्श।
अमितौजाः (त्रि.) अतिवीर्यवान्। अत्यन्त शक्तिशाली।
अमित्रः (पुं.) शत्रु। मित्र नहीं।
अमी (त्रि.) रोगी। रोगयुक्त।
अमुत्र (अ.) दूसरा लोक। परलोक।
अमुष्यपुत्रः (पुं.स्त्री.) प्रसिद्ध वंश में उत्पन्न। कुलीन।
अमूर्तः (त्रि.) अवयवरहित। वायु। अन्तरिक्ष। मूर्तिहीन पदार्थ। आकाश। काल। दिक् और आत्मा।
अमूलकम् (त्रि.) मूलरहित। प्रमाण शून्य। जिस में प्रमाण न हो।
अमूला (स्त्री.) अग्निशिखावृक्ष। ओषधिविशेष।
अमृणालम् (न.) नलद। उशीर। खस।
अमृतम् (न.) मोक्ष। मुक्ति। हवन शेष द्रव्य।

सुधा। पीयूष। सलिल। जल। घृत। अन्न। काञ्चन। आनन्द। रसायन। मनोहर। पारद। धन। स्वादु द्रव्य (त्रि.) सुन्दर। मरणरहित। (स्त्री.) दूब। तुलसी। (न.) परब्रह्म।

अमृतजटा (स्त्री.) जटामासी।

अमृततिलका (स्त्री.) छन्दोविशेष। वर्ण वृत्त। इसके प्रत्येक पाद में दस अक्षर होते हैं।

अमृतत्वम् (न.) मरण का अभाव। मोक्ष। मुक्ति।

अमृतदीधिति (पुं.) चन्द्रमा।

अमृतफला (स्त्री.) जिसका फल अमृत के समान मीठा हो। दाख। आँवला।

अमृतयोगः (पुं.) ज्योतिषशास्त्र का योग विशेष। रविवार को मूल, सोमवार को श्रवण, मगंलवार को उत्तराभाद्रपद, बुधवार को कृत्तिका, गुरुवार को पुनर्वसु, शुक्रवार को पूर्वाफाल्गुनी और शनिवार को स्वाती नक्षत्र के होने से अमृतयोग होता है इसी को अमृत भी कहते हैं।

अमृतरसा (स्त्री.) पक्वान्नविशेष। अंदरसा।

अमृतवल्ली (स्त्री.) गुरुच।

अमृतसंयावः (पुं.) पक्वान्नविशेष।

अमृतसिद्धियोगः (पुं.) योगविशेष।

अमृतसूः (पुं.) विधु। चन्द्रमा। (स्त्री.) अदिति।

अमृतसोदरः (पुं.) घोड़ा उच्चैःश्रवा।

अमृता (स्त्री.) औषधविशेष। यह विरेचन में प्रशस्त है। गुरुच।

अमृतान्धा (पुं.) देवता। जिसका अमृत ही अन्न हो।

अमृष्यमाणः (त्रि.) नहीं सहन करने वाला।

अमेधाः (त्रि.) निर्बुद्धि। बुद्धिरहित। मूर्ख।

अमेध्य (न.) विष्ठा। मल। यज्ञ के अयोग्य। अशुद्ध। मांस आदि। (त्रि.) अपवित्र।

अमोघः (पुं.) नद विशेष। (त्रि.) सफल। अव्यर्थ। परमेश्वर। पूजा और स्तुति किये जाने पर जो समस्त फलों को दे। जिसकी कृपा निष्फल न हो।

अम्ब् (धा. पर.) जाना। पहुँचना।

अम्बक (न.) नेत्र। आँख। पिता। जनक।

अम्बरम् (न.) शब्द का आश्रय। आकाश। सिद्ध विद्याधर आदि के घूमने का स्थान स्वनामख्यात सुगन्धित द्रव्य विशेष। वस्त्र। कार्पास। केशर।

अम्बरीषः (पुं.) राजाविशेष। ये राजा मान्धाता के पुत्र थे। सूर्यवंशी राजा नाभाग के पुत्र। नरकविशेष। किशोर। भास्कर। सूर्य। महादेव। (न.) रण। युद्ध। भ्राष्ट। भंसार।

अम्बष्ठः (पुं.) देशविशेष। ब्राह्मण के औरस से और वैश्य कन्या के गर्भ से उत्पन्न पुत्र इस जाति के लोग चिकित्सा करते और वैद्य कहे जाते हैं। हस्तिपक। महावत। कायस्थ जाति का एक भेद।

अम्बा (स्त्री.) माता। दुर्गा। राजा पाण्डु की मौसी का नाम।

अम्बालिका (स्त्री.) माता। जननी। काशिराज की कन्या। राजा पाण्डु की माता का नाम।

अम्बिका (स्त्री.) माता। काशिराज की कन्या यह राजा विचित्रवीर्य की स्त्री थी और धृतराष्ट्र की माता। दुर्गा। भगवती।

अम्बु (न.) जल। कुण्डली का चौथा भवन। सस्ना नाम की लता।

अम्बुकणा (स्त्री.) जलबिन्दु। पानी की बूंद।

अम्बुचामरम् (न.) शैवाल।

अम्बुज (पुं.न.) कमल। चन्द्रमा। जल से पैदा होने वाला। शंख।

अम्बुदः (पुं.) मेघ। बादल। माथा।

अम्बुधरः (पुं.) मेघ। मुस्ता। मोथा।

अम्बुधिः (पुं.) समुद्र। सागर।

अम्बुपतिः (पुं.) वरुण। समुद्र।

अम्बुपत्रा (स्त्री.) उच्चटा नामक पौधा। यह जल में उत्पन्न होता है और सुगन्धित होता है।

अम्बुप्रसादनम् (न.) कतक। निर्मली नामक फल। जिससे जल साफ हो जाता है।

अम्बुप्रायम् (न.) अनूप। जल के समीप का देश।

अम्बुभृत् (पुं.) मेघ। समुद्र। सागर।

अम्बुरुह (न.) कमल। पद्म (त्रि.) जल में उत्पन्न होना वाला। जौंक।

अम्बुवाची (स्त्री.) रजस्वला भूमि। आर्द्रा नक्षत्र के पहले तीन दिन। इसी कारण ये तीन दिन अच्छे कामों के लिये और अन्न आदि बोने के लिये निषिद्ध हैं।

अम्बुवाह (पुं.) अम्बुद। मेघ। मोथा।

अम्बुसर्पिणी (स्त्री.) जलौका। जोंक। एक प्रकार का जलकृमि।

अम्बूकृत (त्रि.) थूक युक्त वचन। ऐसा बोलना जिसमें थूक निकले।

अम्भः (न.) जल। देवता। मनुष्य। पिता। असुर। लग्न से चौथी राशि।

अम्भःसार (न.) मुक्ता। मोती।

अम्भोज (न.) अम्बुज। कमल। (पुं.) चन्द्रमा। (त्रि.) जल से उत्पन्न पदार्थ।

अम्भोजखण्डम् (न.) कमलसमूह।

अम्भोजिनी (स्त्री.) कमलसमूह। कमल युक्त देश। पद्मलता।

अम्भोदः (पुं.) मेघ। बादल।

अम्भोधरः (पुं.) अम्बुधि। समुद्र। मेघ।

अम्भोधिः (पुं.) समुद्र। सिन्धु।

अम्भोनिधिः (पुं.) अब्धि। समुद्र।

अम्भोरुहम् (न.) अम्बुज। कमल।

अम्मयम् (न.) जल का विकार। झाग। फेन आदि।

अम्रः (पुं.) आम का वृक्ष। जिसकी गन्ध दूर दूर तक फैलती हो।

अम्लः (पुं.) रसविशेष। खट्टा रस। जल और अग्नि की अधिकता से यह गुण उत्पन्न होता है।

अम्लकः (पुं.) थोड़ा खट्टा। वृक्ष विशेष।

अम्लकेशरः (पुं.) बीजपूरक। चकोतरा।

अम्लफल (न.) तितिड़ीफल। इमली।

अम्लानः (पुं.) महासहा। कटसरैया वृक्ष। (त्रि.) निर्मल। ग्लानिरहित।

अय (धा.आत्म.) जाना। गमन करना। गति।

अय (पुं.) पूर्वजन्मकृत शुभभाग्य। सौभाग्य।

अयःपानम् (न.) नरकविशेष। जहाँ तपा लोहा पीना पड़ता है।

अयज्ञः (पुं.) दैवादि यज्ञ से भिन्न यज्ञ। (त्रि.) यज्ञरहित। यज्ञहीन।

अयज्ञियः (त्रि.) जो यज्ञ के लिये उपयुक्त न हो।

अयथा (अ.) अनुचित। अयोग्य।

अयथार्थानुभवः (पुं.) मिथ्या अनुभव। अन्य वस्तु में अन्य वस्तु का ज्ञान। वह संशय विपर्यय और तर्क भेद से तीन प्रकार का है।

अयनम् (न.) मार्ग। रास्ता। सूर्य की दक्षिणोत्तरगति। स्थान। आश्रय। मकर और कर्क की संक्रान्ति।

अयनांश (पुं.) सूर्य आदिकों के दृश्य बनाने का एक संस्कार-विशेष, जिसकी वार्षिक गति इस समय ५० पल है। गतिविशेष का भाग।

अयन्त्रितः (त्रि.) अनर्गल। अनियन्त्रित। अश्रृंखलित।

अयशः (न.) अधर्म से उत्पन्न लोकनिन्दा। अकीर्ति।

अयस् (न) लोहा।

अयस्कान्त (पुं.) लोह चुम्बक पत्थर।

अयस्कार (पुं.) लौहकार। लुहार।

अयाचितम् (न.) अयत नामक वृत्ति विशेष। (त्रि.) बिना माँगे मिली हुई वस्तु।

अयाचितव्रतम् (न.) बिना माँगे स्वयं मिले पदार्थ से जीविकानिर्वाह।

अयाज्यः (त्रि.) व्रात्य। पतित। नहीं यज्ञ कराने योग्य।

अयि (अ.) प्रश्न। अनुनय। सम्बोधन। अनुराग।

अयुग्मः (पुं.) विषम। असमान।

अयुग्मच्छदः (पुं.) सप्तपर्ण नामक वृक्ष। जिसके विषम पत्ते हों।

अयुत (त्रि.) असंयुक्त असंबद्ध। नहीं मिला हुआ। संख्याविशेष। दस हजार। १००००।

अयुतसिद्धि (पुं.) जिन दो पदार्थों में एक दूसरे के आश्रय से रहे। यथा अवयव अवयवी। गुण गुणी। क्रिया क्रियावान्। जाति और व्यक्ति।

अये (अ.) क्रोध। विषाद। सम्भ्रम। स्मरण। सम्बुद्धि।

अयोगः (पुं.) विधुर। दुःख। कूट। विश्लेष। कठिन उद्यम। वमन विरेचन आदि की प्रतिकूल वृत्ति।

अयोगवः (पुं.) वर्णसकंर। जातिविशेष। शूद के औरत ओर वैश्य कन्या के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

अयोगवाहः (पुं.) अनुस्वार और विसर्ग।

अयोघनः (पुं.) हथौड़ा। हथौड़ी जिससे लोहा पीटा जाता है।

अयोध्या (स्त्री.) इस नाम से प्रसिद्ध नगरी। साकेतपुर। उत्तरकोशला।

अयोनिज (पुं.) हरि। जो माता के गर्भ से उत्पन्न न हुआ हो। जिसकी उत्पत्ति न हो। (स्त्री.) सीता। जानकी।

अयोमुखः (पुं.) अस्त्रविशेष। असुर विशेष।

अरम् (न.) शीघ्र। चक्रांग। पहिये की नाभि और नेमि के बीच की लकड़ी।

अरग्वध (पुं.) वृक्ष विशेष। राजवृक्ष।

अरघट्टः (पुं.) बड़ा भारी कूप। पानी निकालने का यन्त्र।

अरजाः (स्त्री.) कन्या। जिसे मासिक धर्म न हुआ हो।

अरणिः (पुं.) सूर्य। गणियारी नाम का वृक्ष। यज्ञ के लिये आग निकालने की लकड़ी।

अरण्यम् (न.) वन। जंगल। तपोवन।

अरण्यानी (स्त्री.) बड़ा भारी वन।

अरतिः (स्त्री.) क्रोध। चित्त का स्थिर न होना। प्रेम का अभाव। घबराहट। २-ट वियोग से व्याकुलता।

अरत्निः (पुं.) फैलाया हुआ हाथ। मुट्ठी वँधा हुआ हाथ। निमूँठ हाथ। कौंहनी।

अरम् (अ.) पर्याप्त। वश।

अररम् (त्रि.) कपा.-। किवाड़।

अरविन्दम् (न.) कमल। पद्म। वगला। ताँवा। नील कमल।

अरसिक (त्रि.) अरसज्ञ। मूर्ख। अविदग्ध। रस का न जानने वाला।

अराजक (त्रि.) राजशून्य देश। जिस देश का कोई राजा न हो। उपद्रवयुक्त देश।

अरातिः (पुं.) शत्रु।

अरालम् (पुं.) सर्ज का रस। मतवारा हाथी। राल।

अराला (स्त्री.) वेश्या।

अरिः (पुं.) शत्रु। लग्न से छठा स्थान। पहिया। चक्र। खैरभेद।

अरित्रम् (न.) कान। हाली, जिससे नाव चलायी जाती है।

अरिन्दम (पुं.) शत्रु को जीतने वाला।

अरिमर्दः (पुं.) खाँसी को दूर करने वाला एक वृक्ष। शत्रु को जीतने वाला।

अरिभेद (पुं.) वृक्षविशेष। देशविशेष।

अरिषडष्टक (न.) ज्योतिषशास्त्र का एक योग। यह योग वर अथवा कन्या की राशि से छठा या आठवाँ घर शत्रु के होने पर होता है। यह योग विवाह में निषिद्ध माना जाता है।

अरिषड्वर्ग (पुं.) काम, क्रोध आदि छः शत्रुओं का समूह। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, ईर्ष्या ये छः अरिषड्वर्ग हैं।

अरिष्ट (पुं.) कन्दविशेष। लशुन। नीम। सौरघर। असुरविशेष। (न.) मद्य का एक भेद। कौवा। रीठा। अशुभ। अमंगल।

अरिष्टतातिं (पुं.) मंगल की कामना। आशीर्वाद के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग वेदों में अधिकता से किया गया है।

अरिष्टसूदन (पुं.) अरिष्ट नामक असुर को मारने वाला। विष्णु। (त्रि.) अशुभ को हटाने वाला। मंगलमय।

अरुचि (पुं.) जिसके कारण रुचि (इच्छा) न हो। रोग विशेष। अजीर्ण रोग। अतृप्ति। सन्तोष का अभाव।

अरुचिर (त्रि.) मनोहर नहीं। अशुभ। अमंगल।

अरुज (पु.) वृक्षविशेष। (त्रि.) नीरोग। रोगरहित।

अरुण (पुं.) सूर्य। सूर्य के सारथि का नाम। गुड। सन्ध्या समय की आकाश की लाली। शब्दरहित। दैत्यविशेष। रोगविशेष। कोढ़रोग का एक भेद। (न.) लाल रंग। केसर। सिन्दूर। (स्त्री.) मजीठ।

अरुणलोचन (पुं.) जिसके नेत्र लाल रंग के हों। कबूतर। कोइल।

अरुणित (त्रि.) लाल किया हुआ। लाल रंग से रंगा हुआ।

अरुणिमा (पु.) रक्तता। लालाई। लाल रंग। रक्तवर्ण।

अरुणोदय (पुं.) काल विशेष। सूर्य के उदय होने के चार घड़ी पहले का समय।

अरुन्तुद (त्रि.) मर्मपीड़क।

अरुन्धती (स्त्री.) महर्षि वसिष्ठ की स्त्री का नाम। यह प्रजापति कर्दम मुनि की कन्या थी। इस नाम की एक तारा जो सप्तर्षिमण्डल में सब से छोटी आठवीं तारा है और वसिष्ठ के समीप रहती है।

अरुन्धतीदर्शन (देखो "न्याय")।

अरुस् (पुं.) सूर्य। रक्तखदिर। वटखदिर। (न.) मर्म। शरीर का कोमल स्थान।

अरुष्क (पुं.) एक वृक्ष का नाम, (भल्लातक)। भेलावा।

अरुसिका एक प्रकार का रोग जिसमें खोपड़ी की खाल पर फुंसियाँ हो जाती हैं और उनमें बड़ी बुरी पीड़ा होती है।

अरुहा एक वृक्ष का नाम अर्थात् भूम्यामलकी।

अरूक्ष (गु.) जो कड़ा न हो। मुलायम। नरम।

अरूप (गु.) रूपरहित। आकारशून्य। कुरूप। भद्दा।

अरूषः सूर्य। एक प्रकार का सर्प।

अरे (अव्य) अपमानपूर्वक सम्बोधन अथवा क्रोध पूर्वक किसी को बुलाना हो तब अरे का प्रयोग किया जाता है।

अर्क तपना और स्तुति करना।

अर्कः (पुं.) सूर्य। इन्द्र। ताँबा। बिल्लौर। विष्णु। पण्डित। आकन्द वृक्ष। अकौआ। मदार।

अर्कचन्दन (पुं.) लालचन्दन।

अर्कतनय (पुं.) सुग्रीव। कर्ण। (स्त्री.) यमुना।

अर्कव्रत (पुं.) सूर्य का व्रत। यथा माघशुक्ला सप्तमी आदि।

अर्काश्मन् (पुं.) सूर्यकान्तमणि। आतशी शीशा। अरुणोपल।

अर्गलः (पुं.) बेड़ा, जो किवाड़ों में उन्हें बन्द करने समय अटकाया जाता है। दुर्गापाठ का एक स्तोत्रविशेष।

अर्घ (क्रि.) मोल लेना।

अर्घ (पुं.) पूजाविधि। मूल्य। दाम।

अर्घ्य (न.) अर्घ के लिये जल।

अर्घटम् (न.) राख।

अर्च (क्रि.) पूजा करना। (गु.) चमकदार।

अर्चा (स्त्री.) प्रतिमा। मूर्ति। चित्र।

अर्चि (स्त्री.) आग की लपट। किरण। चमक।

अर्चिष्मत् (पुं.) सूर्य। अग्नि।

अर्ज (क्रि.) उपार्जन करना। कमाना।

अर्जक (पुं.) वृक्षविशेष। बाबुई वृक्ष जिस के सूतों के रस्सी बनती है। उपार्जन करने वाला। एकत्र करने वाला।

अर्जुन (पुं.) वृक्षविशेष। राजा पाण्डु का तीसरा पुत्र। कार्त्तवीर्य राजा। तृण। नेत्र। रोग। मोर। चित्ता रंग। नेत्र का एक रोग।

अर्णव (पुं.) समुद्र। छन्दविशेष।

अर्णस् (न.) जल। पानी। नीर। समुद्र।

अर्तन (न.) निन्दा। तिरस्कार। जुगुप्सा।

अर्ति (स्त्री.) पीड़ा। धनुष की नोक या सिरा।

अर्तिका (स्त्री.) बड़ी बहिन।

अर्तुक (गु.) लड़ाकू। झगडालू। स्पर्धक।

अर्थ (क्रि.) माँगना।

अर्थ विषम। नाम। धन। वस्तु। निवृत्ति। हटाव। प्रकार। प्रयोजन। हेतु। अभिलाषा। उद्देश्य।

अर्थदूषण (न.) धन की चोरी। दुर्व्यसनों में जैसे जुआ वेश्यागमनादि में धन का व्यय करना।

अर्थना (स्त्री.) भिक्षा माँगना। प्रार्थना। विनती।

अर्थपति (पुं.) राजा। कुबेर।

अर्थप्रयोग (पुं.) वृद्धि के अर्थ धनप्रदान। सूद पर रुपये लगाना।

अर्थवाद (पुं.) प्रशंस्य गुणों का कहना। प्रशंसा।

अर्थव्ययज्ञ (त्रि.) कौन कैसे कहाँ कितना धन किसके लिये व्यय करना उचित है इन बातों को जाननेवाला।

अर्थशास्त्र (न.) सम्पत्तिशास्त्र। धनसम्बन्धी नीति को बताने वाला शास्त्र। अभिचार अर्थात् मारण आदि कर्म को प्रतिपादन करनेवाला शास्त्र। दण्डनीति। आन्वीक्षिकी। खेती की विद्या।

अर्थागम (पुं.) धन का आना। आय। आमदनी। धनागम।

अर्थान्तरन्यास (पुं.) प्रकृत अर्थ की सिद्धि के लिये अन्य अर्थ को लाना। अर्थालंकार का एक भेद।

अर्थापत्ति (स्त्री.) अनकहे अर्थ का समझना। मीमांसक इसे अनुमान से भिन्न बतलाते है और नैयायिक व्यतिरेक व्याप्त ज्ञान से उपजे हुए अनुमान ही को समझते हैं।

अर्थात् (अव्य.) या। अथवा। वस्तुतः।

अर्थिक (पुं.) सोये हुए बड़े धनी मनुष्यों को जगाने के लिए स्तुति करने वाला। वैतालिक। भिक्षुक। भाट। भिखारी। मँगता।

अर्थिन् (त्रि.) याचक। भिक्षुक। मँगता। भिखारी। सेवक। सहायक। धनी। वादी। धनरहित।

अर्थ्य (त्रि.) न्याय्य। उचित। उचित रीति से कमाया। पण्डित।

अर्द (क्रि.) मारना।

अर्दन (क्रि.) पीड़ा पहुँचाना। मारना। कष्ट देना।

अर्दनिः माँग। भिक्षा। बीमारी। अग्नि।

अर्द्ध (पुं.) खण्ड। टुकड़ा। आधा।

अर्द्धगंगा (स्त्री.) काबेरी नदी। अर्थात् वह नदी जिसमें स्नानादि करने से गंगा की अपेक्षा आधा फल हो।

अर्द्धचन्द्र (पुं.) चन्द्रार्द्ध। अष्टमी का चाँद। चाँद के आकार के नख का घाव। गलहस्त। गरदनिया। सानुनासिक चिन्ह (ँ)

अर्द्धनारीश्वर (पुं.) महादेव। शिव पार्वती की मूर्ति विशेष। हरगौरी रूप शिव।

अर्द्धपारावत (पुं.) जिसकी आधी देह कबूतर जैसी हो। चित्रकण्ठ। कपोत। तीतर।

अर्द्धरात्र (पुं.) आधी रात।

अर्द्धवीक्षण (न.) आधा देखना। पूरा न देखना।

अर्द्धासन (न.) आधा आसन। आसन का आधा भाग। स्नेह अथवा प्रेमप्रकाशक।

अर्द्धोदय (पुं.) माघ मास। अमावस तिथि। श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात होने पर एक योगविशेष।

अर्द्धोरुक (न.) पदों के नीचे तक शरीर को ढाकने वाला कपड़ा। श्रेष्ठ रमणियों के पहिनने का वस्त्र, जो अगिंया जैसा होता है। लहँगा। घाँघरा। साड़ी।

अर्पण (क्रि.) देना। भेंट करना। सौंपना।

अर्पित (त्रि.) दिया गया। सौपा हुआ। भेंट किया हुआ।

अर्पिस (पुं.) हृदय। हृदय का मांस।

अर्ब् (क्रि.) मारना। एक ओर जाना।

अर्बुद (न.) रोगविशेष। दस करोड़ की संख्या। (पुं.) पर्वतविशेष तो भारतवर्ष के पश्चिम में है।

अर्भक (पुं.) बालक। मूर्ख। दुबला। लटा। निर्बल। अशक्त। थोड़ा। यथा-

"श्रुतस्य यायादयमन्तमर्भकः।"

अर्भग (गु.) युवा। जवान। (इसका प्रयोग वैदिक साहित्य में होता है।)

अर्मः आँख का एक रोग।

अर्मक (गु.) संकीर्ण। पतला।

अर्मण तौलविशेष। द्रोण।

अर्य्य (त्रि.) स्वामी। सर्वोत्तम। प्रतिष्ठित। अनुरक्त। सत्य।

अर्य्यमन् (पुं.) सूर्य। पितरों के अधिपति। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के स्वामी देवता। अर्क नामक पौधा। द्वादश आदित्यों में से एक। परम प्रिय मित्र। साथ खेलने वाला।

अर्यम्य सूर्य। प्राणोपम मित्र।

अर्व (क्रि.) मारना।

अर्वटम् (न.) राख। रवे।

अर्वन् (पुं.) घोड़ा। इन्द्र (गु.) नीच। अयोग्य।

अर्वश (गु.) फुर्तीला। तेज।

अर्वाच् (अव्य.) पूर्व। पर। निकट। पहिले। पीछे। समीप।

अर्वाके (गु.) समीप। निकट।

अर्वाचीन (त्रि) प्रतिकूल। विरुद्ध। वर्तमान समय का उत्पन्न। नूतन। नया।

अर्वुक एक जाति के लोगों का नाम जिनके विषय में महाभारत में लिखा है कि सहदेव ने जीता था।

अर्शस् (न.) रोगविशेष। बवासीर। अश्लील। चोट।

अर्षण (गु.) जंगम। चलनेवाला।
अर्ह (गु.) योग्य। पूज्य। इन्द्र। ईश्वर।
अर्ह (क्रि.) पूजा करना।
अर्हण (पुं.) पूजा का साधन। पूज्य। बुद्ध।
अर्हत (पुं.) बौद्धों में सब से उच्च पद। जैनियों के एक पूज्य देवता।
अल् (क्रि.) सजाना। योग्य होना। रोकना।
अलम् (अव्य.) भूषण। पर्याप्ति। वारण। निवारण। शक्ति।
अलक (पुं.) कुन्तल। घुँघराले बाल। उन्मत्त कुत्ता।
अलका (स्त्री.) आठ से लेकर दस वर्ष की अवस्था वाली लड़की। कुबेर की राजधानी का नाम।
अलकम् व्यर्थ। निरर्थक।
अलक्त (पुं.) लाक्षारस। लाख का रंग। वृक्ष का रस विशेष।
अलक्षण (त्रि.) जिसका अनुमान न हो सके। अच्छे चिन्ह से शून्य।
अलंकार (पुं.) भूषण। साहित्य शास्त्र का एक अंग। काव्य के गुण दोष को बतलाने वाला शास्त्र। गहना।
अलंबुष (पुं.) वमन, छर्दि, हथेली। रावण का मंत्री प्रहस्त। एक राक्षस जिसे घटोत्कच ने मारा था।
अलंबुसा एक देश का नाम।
अलर्क (पुं.) पागल कुत्ता। श्वेतार्क। एक राजा का नाम।
अलपस् (सं.) गुण।
अलवालं (सं.) पेड़ की जड़ का खोडुआ जिसमें जल भरा जाता है।
अलस् (गु.) चमकरहित। मन्दा।
अलस (त्रि.) निरुद्योग। सुस्त। (स्त्री.) हंसपदी लता (पुं.) सुस्त। पैर का रोग।
अलाण्डुः (सं.) एक विषैले कीड़े अथवा जन्तु का नाम।
अलात (पु.न.) अधजली लकड़ी। अंगार। कोयला।
अलावु-बू (स्त्री.) तुम्बी। कद्दू। लता विशेष।
अलार (सं.) द्वार।
अलास (पुं.) जिह्वा के नीचे की सूजन या फुड़िया। रोगविशेष।
अलि (पुं.) भ्रमर। कौवा। कोइल। मदिरा। बिच्छू।
अलिन् (पुं.) बिच्छू।
अलिक (न.) मत्था। झूठ। भाषा में अलिक की जगह "अलीक" शब्द का प्रयोग होता है।
अलिक्लवः (पुं.) एक प्रकार का पक्षी।
अलिगर्दः (पुं.) एक प्रकार का साँप।
अलिञ्जर (पुं.) पानी का घड़ा।
अलिन (गु.) तपोभिरति वृद्ध।
अलिन्द (पुं.) घर के द्वार के सामने का चबूतरा।
अलिपकः (पुं.) कोइल। शहद की मक्खी। कुत्ता।
अलीक (गु.) अप्रसन्नकर। अरुचिकर। मिथ्या।
अलुः (पुं.) छोटा पानी का बरतन।
अलूक्ष (गु.) कोमल। नम्र।
अलौकिक (त्रि.) जिसे लोग न देख सकते हों। जिसका इस संसार से सम्बन्ध न हो। लोक से बाहिर। चमत्कारी। आश्चर्ययुत।
अल्कः (पुं.) एक वृक्ष। शरीर का एक अंग।
अल्प (त्रि.) थोड़ा। जरा सा।
अल्ला (स्त्री.) माता। माँ। देवी।
अव् (क्रि.) बचाना। जाना। चाहना। तृप्त होना। सुनना। फैलना। मिलना। माँगना। प्रवेश करना। होना। बढ़ना। लेना। मारना। करना।
अवकर (पुं.) झाडू से उड़ती हुई गर्द अथवा धूलि।
अवका (सं.) शैवाल। सिवार।
अवकाश (पुं.) भीतर का स्थान। अवसर। फुरसत।
अवकीर्ण (त्रि.) फैलाया हुआ। पीसा हुआ। विक्षिप्त।
अवकीर्णिन् (त्रि.) धर्मभ्रष्ट। अपने धर्म से च्युत।
अवक्षेप (पुं.) निन्दा।
अवगणित (त्रि.) तिरस्कृत। असम्मानित किया हुआ। जिसकी कुछ गिनती न हो।
अवगत (त्रि.) ज्ञात। जाना हुआ। नीचे गया।
अवगाद (सं.) काठ का बना एक छोटा बरतन जिससे नाव का पानी उलीचा जाता है।
अवगाढ़ (त्रि.) नहाया हुआ। गाढ़ा।
अवगाह (पुं.) स्नान। स्नानगृह। नहाना। नहाने का कमरा।

अवगीत (त्रि.) दुष्ट। कलंकित। निन्द्य। (सं.) जनापवाद। निन्दा। अभिशाप।

अवगुण्ठ (गु.) ढका हुआ। (सं.) कफन। मुर्दा लपेटने का कपड़ा। शवपरिधान।

अवगुण्डित (गु.) पिसा हुआ।

अवगुम्फित (गु.) बुना हुआ।

अवगुर् (क्रि.) धमकाना। मारने को अस्त्र उठाना।

अवगुण (पुं.) दोष।

अवगुण्ठन (क्रि.) घूँघट निकालना। मुँह ढापना। (सां.) घूँघट।

अवग्रा (पुं.) वर्षा का रुकना। बाधा। रोक। स्वभाव। आदत।

अवघट्ट (स.) पृथिवी का छेद। गुफा। गुहा। चक्की। गड़ारी।

अवघात (पुं.) अपमृत्यु। धान आदि का कूटना।

अवच (गु.) नीचे का।

अवचय (पुं.) सञ्चय। फल अथवा फूल का तोड़ना।

अवचनीय (गु.) न कहने योग्य। अश्लील अथवा अनुचित।

अवचि (क्रि.) पूजा करना। सम्मान करना।

अवचूड (सं.) झण्डे पर बँधा हुआ वस्त्र।

अवचूलक (न.) मयूरचामर। चवँर। चौरी। मोरछल।

अवच्छ्द (क्रि.) ढाँकना। बिछाना। छिपाना। अन्धकार में डाल देना।

अवच्छदः (पुं.) खोल। गिलाफ। ढक्कन।

अवच्छिद् (क्रि.) काटना। पृथक् करना। टुकड़े टुकड़े करना। पहचानना। परिभाषा करना। सीमावद्ध करना। काटना। बाधा डालना।

अवच्छिन्न (त्रि.) सकुंचित। सिकुड़ा हुआ। मिला हुआ। विशिष्ट। न्याय शास्त्र में "अवच्छेदकतानिरूपक" उसे कहते हैं जिससे किसी वस्तु में उसके विशेष गुणों के कारण अन्य समस्त वस्तुओं से भेद प्रकाश किया जाय। कटा हुआ। पृथक् किया हुआ।

अवच्छेदक (त्रि.) काटने वाला। विशेषण। औरों से पृथक् करने वाला। गुण। रूप। शब्द।

अवच्छुरित (गु.) मिला हुआ। मिश्रित।

अवजि (क्रि.) बिगाड़ना। जीतना। जीत कर ले लेना- "अवजित्य च तद्धनम्"।

अवजितिः (सं.) जय। वियज।

अवज्ञा (स्त्री.) अनादर।

अवट-टी (पुं.) गर्त। गढ़ा। कुहकजीवी। बाजीगर। इन्द्रजाल से जीविका करने वाला।

अवटीट (त्रि.) अवंनता नासिका। चपटी नाक वाला।

अवटु (सं.) पृथिवी का छेद। कूप। गरदन का पिछला भाग। एक प्रकार का वृक्ष।

अवडंग-कः (सं.) एक कुँआ। हौज। कुण्ड।

अवतंस (पुं.न.) कान का भूषण। मुकुट। ताज।

अवतमस (न.) घन अन्धकार।

अवतरणम् (न.) पानी में स्नान के लिये धसना।

अवतरिणका (स्त्री.) ग्रन्थारम्भ में संक्षिप्त। उपोद्घात। भूमिका।

अवतरणी (सं.) देखो अवतरणिका।

अवतार (पुं.) पार होना। भगवान् का शरीर धारण करना अवतार कहलाता है।

अवतीर्ण (क्रि.) उतरा हुआ।

अवदात (पुं.) सफेद। पीला। सुनदर। चितरंगा।

अवदान (न.) देवता को वलिदान। टुकड़े टुकड़े करना। अच्छा काम।

अवदारण (न.) कुदाल।

अवदोहः (पुं.) दुहना। दूध।

अवद्य (गु.) निन्दा के योग्य। दोषपूर्ण।

अवधान (न.) मनोयोग।

अवधारण (न.) निश्चयकरण। पक्काइत करना।

अवधि (पुं.) सीमा। हद। काल। गर्त। अवसान। अन्त।

अवधूत (त्रि.) त्याग किया। त्यक्त। तिरस्कार किया हुआ। वर्णाश्रम धर्म को त्यागने वाला। संन्यासी।

अवन (न.) प्रीणन। दमदिलासा। रक्षण। प्रीति।

अवनत (त्रि.) नम्र। झुका हुआ।

अवनद्ध (त्रि.) बँधा हुआ। मृदंगादि बाजा। (न.) कपड़े और गहनों का पहनना।

अवनि-नी (स्त्री.) भूमि। धरती। पृथिवी।
अवन्तिका (स्त्री.) उज्जैन। मालवा प्रान्त की राजधानी।
अवपात (पुं.) बिल। (क्रि.) नीचे गिरना।
अवप्लुत (त्रि.) चारों ओर से सींचा गया।
अवभास (पुं.) प्रकाश। माया।
अवभिद् (क्रि.) तोड़ डालना। हिला डालना।
अवभुज् (क्रि.) झुका देना। टेढ़ा कर डालना।
अवभृथ (पुं.) प्रधान यज्ञ की न्यूनाधिक शान्ति के लिये कर्त्तव्य होम। यज्ञान्त स्नान।
अवभ्रः (पुं.) उड़ान। लोपकरण।
अवभ्र (गु.) पापी। दुष्ट। नीच।
अवमत (त्रि.) असम्मानित किया हुआ।
अवमर्द (पुं.) पीड़न। कष्ट।
अवमृश (क्रि.) विचारना। सोचना।
अवमर्श (क्रि.) छूना। विचारना।
अवयज् (क्रि) पाप दूर करने के लिये प्रायश्चित्त करना। भागना। दूर करना।
अवयवः (पुं.) शरीर का एक अंग। एक टुकड़ा। एक भाग।
अवया (क्रि.) नीचे जाना। हट जाना। मुड़ जाना। जानना। समझना। रोकना। हटाना।
अवर (त्रि.) छोटा। चरम। अन्तिम। नीच। (पुं.) पिछले देश व समय में होने वाला। (न.) हाथी की जंघा का पिछला भाग। पिछला (समय व देश का)
अवरति (स्त्री.) ठहरना। विराम। अन्त। हटना।
अवरहस (गु.) बियावान। निर्जन। वीरान।
अवरूग्ण (गु.) टूटा। फटा। रोगी। बीमार।
अवरुद्ध (त्रि.) रुका हुआ। आच्छादित। ढाँका हुआ। बाँधा हुआ। (स्त्री.) अन्तःपुर में रहने वाली दासी रानी।
अवरूढ (त्रि.) अवतीर्ण। उतरा हुआ। अपने स्थान से उठा।
अवरोध (पुं.) निरोध। रोक। रनिवास। (स्त्री.) रानी।
अवरोपित (त्रि.) उत्पाटित। उखाड़ा हुआ।
अवरोह (पुं.) अवतरण। उतरना। आरोह। चढ़ना। लता जो वृक्ष की जड़ से ऊपर को चिपटती है। स्वर्ग।
अवलक्ष (त्रि.) सफेद रंग। चित्ता रंग। मूर्ख। इसी अर्थ में "वलक्ष" भी आता है।
अवलग्न (पुं.) देह का मध्य भाग। कमर। (त्रि.) लगा हुआ।
अवलम्बम (पुं.) आश्रय। शरण। पकड़ने का साधन। दण्ड आदि।
अवलिप (क्रि.) तेल लगाना। चिकनाना।
अवलिप्त (त्रि.) घमण्डी। अहंकारी। क्रोधी। लेपित।
अवलीढ (त्रि.) खाया हुआ। भक्षित। चाटा हुआ। चखा। हुआ।
अवलीला (स्त्री.) अनायास। अनादर। खेल। आसानी।
अवलेप (न.) अहंकार। लेपन। दूषण। सम्बन्ध।
अवलेपन (न.) मलना। संकल्प। चन्दन आदि।
अवलेहः (पु.) जीभ से चाटना। चटनी। रस।
अवलोकन (न.) दर्शन। देखना। ढूँढ़ना। आलोक। नेत्र।
अवल्गुली (सं.) एक विषैला कीड़ा।
अवश (त्रि.) पराधीन। परवश। बेबस। कामादि से पराधीन।
अवशिष्ट (त्रि.) अतिरिक्त। भिन्न पृथक्। परिशिष्ट। शेष। अधिक।
अवश्य (अव्य.) सर्वथा। जरूर।
अवश्याय (पुं.) शिशिर। पाला। धुन्द। अभिमान।
अवष्कयणी (स्त्री.) गौ जो बहुत दिनों बाद ब्याती है।
अवष्टब्ध (त्रि.) समीप। निकट। घिरा हुआ। रुका हुआ। बँधा हुआ।
अवष्टम्भ् (क्रि.) सहारा लेना। रोकना। (पुं.) सोना। खम्भा। प्रारम्भ।
अवस् (सं.) साहाय्य। रक्षा। यश। कीर्ति। भोजन। धन। गमन। सन्तोष। इच्छा। संकल्प। अभिलाषा।
अवसथ (पुं.) निलय। घर। कुटिया। ग्राम।
अवसर (पुं.) प्रस्ताव। प्रसंग। मौका।
अवसर्प (पुं.) दूत। राजप्रतिनिधि। एलची।

अवसव्य (गु.) अपसव्य। वायाँ नहीं।
अवसृज (क्रि.) फेंकना। डालना। खोलना। ढीला करना। भेजना। बनाना। रखना। छोड़ना। त्यागना।
अवसाद (पुं.) अवनाश। विषाद।
अवसान (न.) विराम। समाप्ति। अन्त। सीमा। मृत्यु।
अवसित (त्रि.) समाप्त। ज्ञात। जाना गया।
अवस्कन्द (पुं.) शिविर। छावनी। आक्रमण।
अवस्कन्दन (न.) तोड़ना। छीनना। जाना। उतरना।
अवस्कर (पुं.) बुहारी से उड़े हुए कंकर मिट्टी आदि। विष्टा। गू। गुह्य। लिंग।
अवस्कव (गु.) विषैला। हानिकारक।
अवस्तार (पुं.) जवनिका। परदा। कनात। दरी।
अवस्था (स्त्री.) दशा। आयु।
अवस्थान (न.) स्थित। रहायश। स्थान।
अवस्यन्दन (न.) मारना। हिंसा करना।
अवस्रंसन (न.) अधःपतन। नीचे गिरना।
अवहेल (न.स्त्री.) अनादर। असम्मान।
अवाक्शिरस् (त्रि.) अधोमुख। नीचा मुख।
अवाङ्मुख (त्रि.) अधोमुख।
अवाच् (त्रि.) नीचे की ओर छोटा देश (स्त्री.) दक्षिण दिशा। गूँगा। पिछला समय।
अवाच्य (न.) न कहने योग्य।
अवान् (क्रि.) सांस लेना।
अवान (क्रि.) सूखा।
अवान्तर (त्रि.) भीतरी। बीच का सम्मिलित। अधीन। अतिरिक्त।
अवारपार (पुं.) दोनों तटवाला। महोदधि। समुद्र।
अवारपारीण (त्रि.) दूसरे पार जाने वाला।
अवासस् (त्रि.) नंगा। (स्त्री.) रजस्वला। बुद्ध का नाम।
अवि (पुं.) सूर्य। बकरा। पर्वत। स्वामी। पति। कम्वल। दुशाला। (स्त्री.) रजस्वला स्त्री। भेड़।
अविकल (गु.) नितान्त। सम्पूर्ण। ज्यों का त्यों।
अविज्ञ (गु.) न जानने वाला। अशिक्षित।
अवितथ (न.) सत्य। सच्चा।
अवित्त (गु.) अप्रसिद्ध। अज्ञात। निर्धन।
अविदित (गु.) अज्ञात।
अविद्या (स्त्री.) विद्या का अभाव। अज्ञान, जो अहंकार का कारण है। माया।
अविनाभाव (पुं.) जो बिना व्यापक अर्थात् कारण के न रह सके। व्याप्ति।
अविरत (त्रि.) विराम। शून्य। लगातार।
अविरल (त्रि.) मिला हुआ। घन। निविड। सघन।
अविवेक (पुं.) अज्ञानता।
अविस्पष्ट (न.) जो स्पष्ट अर्थात् साफ-साफ न हो।
अवीचि (पुं.) नरकविशेष।
अवीर (त्रि.) पतिपुत्ररहित। बलहीन।
अवेक्षण (न.) देखना। मन लगाना। विचारना।
अव्यक्त (पुं.) विष्णु। कामदेव। शिव। मूर्ख। प्रधान। आत्मा। परमात्मा। सूक्ष्म शरीर।
अव्यक्तराग (पुं.) थोड़ा लाल। अरुणवर्ण।
अव्यञ्जन (पुं.) बिना सींग का पशु। शुभ लक्षण शून्य। चिह्न रहित।
अव्यथ (पुं.) साँप। पीड़ारहित।
अव्यथिन् (पुं.) घोड़ा। जो बहुत चलने पर भी व्यथित न हो।
अव्यभिचारिन् (त्रि.) कैसा भी प्रतिकूल कारण क्यों न हो पर जो हटे नहीं। न हटने वाला। न रुकने वाला। न्यायमतानुसार। शुद्ध हेतु।
अव्यय (पुं.) सब विभक्तियों और वचनों में एकसा रहने वाला। शिव। विष्णु। आदि अन्त रहित। विकारशून्य।
अव्ययीभाव (पुं.) व्याकरण का एक समास विशेष।
अव्यर्थ (गु.) जो व्यर्थ न जाय। अचूक। लाभकर। प्रभावोत्पादक।
अव्यवस्था (स्त्री.) अविधि। नियम के विरुद्ध व्यवस्था "किमव्यवस्थां चलितोऽपि केशवः।"
अव्यवस्थित (गु.) जो व्यवस्थित न हो। चञ्चल। अस्थिर। जो नियमानुकूल न चलता हो।
अव्यवहार्य (त्रि.) जो व्यवहार करने योग्य न हो। जो अपने धर्म से गिर गया हो।
अव्यवहित (त्रि.) साथ। लगा हुआ।
अव्याकृत (त्रि.) वेदान्त मत में बीजरूप जगत्

का कारण अर्थात् अज्ञान। सांख्य में प्रधान।

अव्याप्यवृत्ति (त्रि.) जो अपने आश्रम में न हो।

अशू (क्रि.) भीतर घुसना। व्याप्त होना। पहुँचना। पाना। अनुभव करना। खाना।

अशन (पुं.) पीला साल वृक्ष। पौधा। व्याप्ति। फैलना। भोजन। (न.) अन्न।

अशनाया (स्त्री.) अतिलोभ के वशवर्ती हो जो खोना चाहे।

अशनायित (त्रि.) भूखा। क्षुधातुर।

अशनि (पुं.) वज्र। बिजली।

अशास्त्र (न.) नास्तिक दर्शन।

अशितम् (त्रि.) खाया हुआ। भक्षित।

अतितंगवीन (त्रि.) गौओं के चरने का स्थान।

अशितम्भव (त्रि.) अन्न। खाने का पदार्थ। जिनसे तृप्ति हो।

अशिश्वी (स्त्री.) सन्तानहीन स्त्री।

अशीति (स्त्री.) अस्सी की संख्या = ८०।

अशुभ (न.) अमंगल।

अशेष (त्रि.) अन्तरहित। शेषहीन। सम्पूर्ण।

अशोक (पुं.) अशोक वृक्ष। वकुल वृक्ष। पारा। कडुकवृक्ष। एक राजा का नाम। (स्त्री.) शोकरहित।

अशोच्य (न.) जो शोक करने योग्य न हो।

अशौच (न.) अशुद्ध। शुचिरहित। सूतक।

अश्म (सं.) पहाड़। बादल। पत्थर।

अश्मगर्भ (पुं.) मरकतमणि। पन्ना।

अश्मघ्न (पुं.) पाषाण फोड़ने वाला वृक्ष।

अश्मन् (पुं.) पर्वत। मेघ। पत्थर। (न.) लोहा।

अश्मन्तक (पुं न.) चुल्ला। एक प्रकार का तृण विशेष। अम्लोट नामक वृक्ष।

अश्मभाल (न.) लोहे का इमामदस्ता। खल और लोढ़ा।

अश्मरी (स्त्री.) पथरी का रोग।

अश्मरीघ्न (पुं.) वरुण वृक्ष। पथरी रोग को हटाने वाला।

अश्मसार (पुं.न.) लोहा।

अश्रयास्र (न.) नेत्रजल। आँसू। लोहू।

अश्रान्त (त्रि.) सन्तत। सदैव। निरन्तर। लगातार।

अश्रि-श्री (स्त्री.) अस्त्रादि का अग्रभाग। धार। श्रीहीन। शोभारहित।

अश्रु-स्रु (पुं.) आँसू।

अश्रुत (त्रि.) अनसुना।

अश्लील (न.) लजाने वाली गँवारू बोली। घृणा। गाली-गलौज। अपशब्द।

अश्लेषा (स्त्री.) एक नक्षत्र का नाम। यह नवां नक्षत्र है। अनमिल।

अश्लोन (गु.) जो लंगड़ा न हो।

अश्व (पुं.) घोड़ा। तुरंग। घोटक।

अश्वकर्णः (पुं.) सालवृक्ष। घोड़े का कान अथवा जिसका कान घोड़े के कान जैसा हो।

अश्वखरज (पुं.) खच्चर।

अश्वखुर (पुं.) अपराजिता लता।

अश्वघ्न (पुं.) करवीर का पेड़। इसे यदि घोड़ा खाय तो वह मर जाय। कनैल।

अश्वतर (पुं.) टट्टू। छोआ घोड़ा। खच्चर। इस नाम का एक नाग भी हो गया है।

अश्वत्थ (पुं.) पीपल। गर्धभाण्डक वृक्ष।

अश्वत्थामन् (पुं) द्रोणाचार्य का पुत्र यह भी बड़ा वीर था और इसने भी युद्ध में बड़ी वीरता दिखलाई थी।

अश्वपाल (पुं.) साईस। घोड़ों का पालने वाला।

अश्वबाल (पुं.) घोड़े के केश।

अश्वमुख (पुं.) किन्नर। देवता विशेष।

अश्वमेध (पुं.) यज्ञ जिसमें घोड़े का बलिदान किया जाता है।

अश्वरोधक (पुं.) करवीर वृक्ष। घोड़े को रोकने वाला।

अश्ववार (पुं.) घोड़े को रोकने अथवा स्वीकार करने वाला। घुड़सवार। चाबुक। सवार।

अश्वस्तन (त्रि.) एक दिन के निर्वाह के लिये अन्नादि।

अश्वाभिधानि (स्त्री.) जिससे घोड़ा पकड़ा जाय। घोड़ा बाँधने की रस्सी। घोड़े की आगे पिछाड़ी की रस्सी।

अश्वारिः (पुं.) महिष। भैंसा। घोड़े का शत्रु।

अश्वारोह (पुं.) घुड़सवार। (अश्वगन्धा)।

अश्विन् (पुं.) जिनके घोड़े हों। स्वर्गवासी। वैद्य। अश्विनीकुमार।

अश्विनीकुमारः (पुं.) सूर्य की घोड़ी रूपिणी स्त्री। घोड़ेरूपी सूर्य से उत्पन्न हुए यमज पुत्रों का नाम अश्विनीकुमार है।

अश्वोरस (न.) अच्छा घोड़ा।

अव् (क्रि.) चमकना। लेना। जाना। हिलना।

अषट्क्षीण (त्रि.) छः आँखों से नहीं देखा गया अथवा केवल दो ही पुरुषों की मन्त्रणा या विचार।

अषाढ़ (पुं.) वर्षाऋतु का प्रथम मास।

अषा-शा-ढ़ा-ड़ा (स्त्री.) पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ दोनों नक्षत्र। मासविशेष।

अष्टक (न.) पाणिनिरचित अष्टाध्यायी व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ। आठ अध्यायों का ऋग्वेद का प्रत्येक भाग। ऋग्वेद में ऐसे आठ भाग हैं।

अष्टका (स्त्री.) पौष, माघ और फाल्गुन की कृष्णाष्टमी।

अष्टन् (त्रि.) आठ संख्या।

अष्टधा (अव्य.) आठ प्रकार से।

अष्टधातु (न.) आठ धातुवें; अर्थात् १ सोना। २ चाँदी। ३ ताँबा। ४ पीतल। ५ काँसा। ६ जस्ता। ७ राँगा और ८ लोहा।

अष्टपाद (पुं.) आठ पैर वाला। मृगविशेष। मकड़ी का जाला। शरभ।

अष्टमंगल (पुं.) आठ मांगलिक द्रव्यों का समूह। अर्थात् १ ब्राह्मण। २ गौ। ३ अग्नि। ४ सोना। ५ घी। ६ सूर्य। ७ जल। ८ राजा। मतान्तरे सिंह। बैल। हाथी। कलसा। पंखा। माला। नगाड़ा और दीपक। शुभ घोड़ा जिसके आठ अंग सफेद हों-अर्थात् चारों खुर। छाती। पूंछ। मुख और पीठ।

अष्टमान् (न.) तौलविशेष। आठ मुट्ठी भर। वत्तीस तोले भर।

अष्टमी (स्त्री.) आठों को पूर्ण करने वाली। पन्द्रह कलावाले चन्द्रमा की आठवीं कला की क्रिया। तिथि आठें।

अष्टमूर्ति (पुं.) पृथिवी आदि आठ मूर्ति वाले शिव।

अष्टलौहक (न.) आठ धातुओं का समुदाय।

अष्टाकपाल (पुं.) आठ मट्टी के पात्रों में शुद्ध किया गया चरु। इसी चरु के द्वारा यज्ञ किया जाता है। यज्ञ। सरयूपारी ब्राह्मणों का एक भेद।

अष्टांग (पुं.) आठ अंगवाला। योगविशेष। यम। नियम। आसन। प्राणायाम। प्रत्याहार। ध्यान। धारणा और समाधि-ये आठ योग के अंग हैं। जानु। पैर। हाथ। छाती। बुद्धि। शिर। वचन और दृष्टि से किया गया प्रणाम। जल। दूध। कुशाग्र। दही। घी। चाँवल। जौ और सिद्धार्थक से बनाया हुआ पूजन का अर्घ।

अष्टादशन् (त्रि.) अठारह। अठारहवां।

अष्टादशांग (पुं.) अठारह अंग वाला।

अष्टादश-पुराण (पुं.) अठारह पुराण। अर्थात् १. ब्राह्म। २. पद्म। ३. विष्णु। ४. शिव। ५. भागवत्। ६. नारदीय। ७. मार्कण्डेय ८. अग्नि। ९. भविष्य। १०. ब्रह्मवैवर्त्त। ११. लिंग। १२. वाराह। १३. स्कन्द। १४. वामन। १५. कौर्म। १६. मत्स्य। १७. गरुड। १८ ब्रह्माण्ड।

अष्टावक्र (पुं.) एक प्रसिद्ध पौराणिक ऋषि जो कहोड़ के पुत्र थे।

अष्टिः (स्त्री.) खेलने का पांसा। एक वर्णिक छन्द जिसमें चौंसठ वर्ण हों। सोलह। बीज।

अष्ट्रा (स.) गोरू हाँकने की कीलदार छड़ी। चाबुक। रथ के पहिये का एक भाग।

अष्ठिः (स्त्री.) पत्थर। बीज। गरी। गूदा।

अष्ठीला (स्त्री.) गोल पत्थर। एक प्रकार की बीमारी जिसमें नाभि के नीचे गोलाकार सूजन हो जाती है। मूत्र सम्बन्धी रोग। चोट का नीला चिह्न। बीज।

अष्ठीलिका (स्त्री.) एक प्रकार की फुड़िया। कंकड़ी।

अस् (क्रि.) लेना और जाना। होना।

असंस्कृत (त्रि.) गर्भाधान संस्कारों से रहित। व्याकरण के संस्कार से शून्य। अपशब्द। बिगड़ा हुआ। शब्द।

असकृत् (अव्य.) बार बार।

असक्त (त्रि.) फलाभिलाष से रहित। जो किसी में सक्त न हो।

असङ्कुल (त्रि.) जो परस्पर विरुद्ध न हो। ग्रामादि का प्रशस्त मार्ग। चौड़ा मार्ग।

असङ्क्रान्त (पुं.) जिस चान्द्र मास में सूर्य्य दूसरी राशि पर नहीं जाता। मलमास। लोंद का महीना।

असंख्य (त्रि.) जिसकी गिनती न हो सके। अनन्त संख्यावाला।

असंग (पुं.) परमात्मा। महादेव। पुत्र। धन। लोभवासनात्यक्त वैराग्य। संगविवर्जित।

असंगत (त्रि.) जो किसी से मिला जुला न हो। अयुक्त। विरुद्ध। अनुचित। गँवार। अशिष्ट।

असंगति (स्त्री.) संगतिविहीन। मेल का न होना।

असत् (त्रि.) असाधु। विश्वास छोड़ कर किया हुआ होमानुष्ठानादि। व्यभिचारिणी स्त्री जिसका अस्तित्व न हो। मिथ्या। अनुचित। अशुद्ध अवैष्णव।

असद्ग्रह (पुं.) न होने वाले काम में हठ। बालहठ। दुष्टग्रह।

असभ्य (त्रि.) जो सभ्य अर्थात् शिक्षित तथा शिष्ट न हो। जो किसी सभा में बैठने की योग्यता न रखता हो। खल। क्षुद्र। नीच। बर्बर।

असमञ्जस (न.) जो युक्तियुक्त न हो। जो ठीक न हो। असंगत। अनुचित। जो बोधगम्य न हो। वाहियात।

असमयः (पुं.) दुष्ट काल। अप्राप्त काल। कुअवसर। विपरीतकाल। प्रतिकूल समय।

असमर्थ (गु.) अशक्त। निर्बल। दुर्बल।

असमवायिन् (गु.) जो सम्बन्धयुक्त अथवा परम्परागत न हो। आकस्मिक पृथक् होने योग्य।

असमाति (गु.) बेजोड़। समानता रहित असमान।

असमाप्त (गु.) असम्पूर्ण। अपूर्ण। जो पूरा न किया गया हो। जो अधूरा छोड़ दिया गया हो।

असमावृत्तः-कः (पुं.) ब्रह्मचारी जिसका विद्याध्ययन काल पूर्ण नहीं हुआ है।

असमाहार (गु.) अनमिल। जो मिला हुआ नहीं है।

असमीक्ष्य बिना विचारा हुआ। असमीक्ष्यकारिन् (त्रि.) बिना विचारे काम करने वाला। मूर्ख।

असम्प्रज्ञात (गु.) अच्छे प्रकार न देखा हुआ या पहचाना हुआ। एक की समाधि। निर्विकल्प समाधि।

असम्बद्ध (गु.) जो परस्पर सम्बन्ध युक्त न हो। बेमेल। जो अर्थ को न बतलाता हो। सम्बन्ध-रहित वाक्य।

असम्बाध (गु.) जो संकीर्ण न हो। प्रशस्त लोगों की भीड़ भाड़ से रहित। एकान्त। खुला हुआ। पीड़ारहित।

असम्भवम (गु.) जो सम्भव न हो। जो न हो सके।

असम्मतम (गु.) अनभिमत। प्रतिकूल।

असहनः (पु.) शत्रु। (न.) क्षमाशून्य। न सहने वाला।

असहाय (गु.) सहायक रहित। जिसका कोई मित्र न हो।

असाधारण (गु.) जो साधारण न हो। अपूर्व। विलक्षण। न्याय में सपक्ष और विपक्ष। दोनों में न रहने वाला दुष्ट हेतु।

असाधु (गु.) बुरा। जो साधु न हो। असच्चरित्र। अपभ्रंश। अशुद्ध।

असाध्य (गु.) जो साध्य न हो। जिस पर वश न चले। सिद्ध न होने योग्य।

असामयिक (गु.) कुसमय का। बेअवसर का।

असामान्य (त्रि.) असाधारण। विलक्षण।

असाम्प्रतम् (अव्य.) अयुक्त। अनुचित। कालान्तर।

असार (त्रि.) सारहीन। रेड़ी का रूख।

असि (पुं.) खड्ग। तलवार।

असिक (सं.) नीचे के होठ और ठोड़ी के बीच का भाग।

असिक्नी (स्त्री.) अन्तःपुरचारिणी दासी। रात। पञ्जाब की एक नदी का नाम।

असिगण्ड (पुं.) जहाँ कपोल रखा जाय। गाल का सिहाना।

असित (त्रि.) काला। (सं.) शनिग्रह। कृष्णपक्ष मुनि विशेष।

असिद्धः (स्त्री.) असम्पूर्ण। असमाप्त। फलविवर्जित। न्याय शास्त्र में आश्रयसिद्धि प्रभृति हेतु के तीन दोष।

असिर (सं.) किरन। तीर। चटखनी।

असिधेनुका (स्त्री.) छुरी।

असिपत्रक (पुं.) इक्षु। गन्ना। तलवार की म्यान। एक नरक का नाम।

असी (स्त्री.) एक नदी का नाम।

असु (पुं.) स्वांस। आध्यात्मिक जीवन। जल। गर्म्मी। प्राणादि पाँच वायु।

असुख (न.) दुःख।

असुधारण (न.) जीवन।

असुर (पुं.) सूर्य। सूरज। देवों के विरोधी दैत्य। रात।

असुररिपुः (पुं.) विष्णु।

असूयक (त्रि.) गुणों में दोष बतलाने वाला।

असूया (स्त्री.) गुणों में दोष लगाना। ईर्ष्या। दूसरों को सुख में देख कर जलना।

असूर्यम्पश्या (स्त्री.) राजप्रासाद की स्त्रियाँ। रनवासे की नारियाँ, जिन्हें सूरज तक के दर्शन मिलने दुष्कर हैं।

असृज् (न.) जिसे नाड़ियां इधर उधर फेंकती हैं अर्थात् रक्त। लोहू। कुंकुम। केसर। मंगल ग्रह। सत्ताइस योगों में से सोलहवां योग।

असेचनक (त्रि.) अत्यन्त प्रिय। जिसे देखते देखते मन न भरे।

अस्खलित (त्रि.) स्थिर। जो न हिले। दृढ़। स्थायी।

अस्त (पुं.) पश्चिमाचल। अस्ताचल। (गु.) फेंका गया। समाप्त हुआ। (त्रि.) मृत्यु। लग्न का सातवां स्थान।

अस्तम् (अव्य.) अन्तर्द्धान। छिप जाना। नष्ट होना।

अस्तमन (न.) सूर्य आदि का न दिखना।

अस्ताघ (त्रि.) बहुत गहरा।

अस्ताचल (पुं.) पश्चिमाचल। वह पर्वत जिस पर सूर्य अस्त होते हैं।

अस्ति (अव्य.) है। स्थिति। विद्यमानता। रहना।

अस्तु (अव्य.) अनुज्ञा। ऐसा हो। ऐसा ही सही। पीड़ा। असूया। अकीर्त्ति।

अस्त्यान (न.) भर्त्सन करना। दोषी ठहराना। (त्रि.) एकत्र न हुआ।

अस्त्र (न.) फेंकने योग्य बाण आदि हथियार।

अस्त्र+आगारम् (न.) अस्त्र रखने का स्थान। अस्त्रभाण्डार।

अस्त्रचिकित्सा (स्त्री.) जर्राही।

अस्त्र-विद्या-शास्त्र (स्त्री.न.) अस्त्र चलाने की विद्या।

अस्त्रिन् (त्रि.) धनुष उठाने वाला। किसी प्रकार का अस्त्र उठाने वाला।

अस्थि (न.) हड्डी। हाड़।

अस्थिधन्वन् (पुं.) शिव। महादेव।

अस्थिपञ्जर (पुं.) हड्डियों का पिञ्जर। ठठरी।

अस्थिमालिन् (पुं.) शिव। महादेव।

अस्नाविर (त्रि.) शिरा रहित। बेनस वाला।

अस्निग्ध (पुं.) रूखा। जो चिकना न हो।

अस्मद् (सर्व.) आत्मवाची सर्वनाम अर्थात् मैं। हम। देहाभिमानी जीव।

अस्मदीय (त्रि.) हमारा।

अस्माकं (सर्व.) हमारा।

अस्मि (अव्य.) मैं।

अस्मिता (स्त्री.) अहंकार। दृष्टा और दर्शन को एक रूप समझना।

अस्र (न.) कोना। सिर के केश। आँसू। रक्त।

अस्रज् (न.) मांस।

अस्वैरिन् (पुं.) परतंत्र। पराधीन।

अह् (क्रि.) मिल कर गाना। बनाना। संकलन। करना। जाना। चमकना।

अह (अव्य.) प्रशंसा। फेंकना। रोकना।

अहंयु (त्रि.) अहंकारी।

अहंकार (पुं.) अभिमान। घमण्ड।

अहत (न.) नया वस्त्र। अनाहत। बिना चोट के।

अहन् (न.) जो सदा घूमता रहता है। दिन।

अहं (सर्व.) मैं। आत्मसम्बन्धी। अभिमान। अहंकार। घमण्ड।

अहमहमिका (स्त्री.) अन्योन्यात्मस्तुति। आत्मश्लाघा। आत्मप्रशंसा।

अहंपूर्विका (स्त्री.) आगे बढ़-बढ़ कर लड़ना अथवा पहले लड़ने के लिए परस्पर झगड़ना।

अहंम्मतिः (स्त्री.) अविद्या। अन्य में अन्य के धर्म को दिखाने वाला। अज्ञान।

अहर्गण (पुं.) दिनों का समूह। तीस दिन का मास।

अहर्दिव (न.) प्रतिदिन। नित्य।

अहर्मुख (पुं.) दिन का पहला भाग। प्रातः- काल। सबेरा। भोर।

अहस्कर अहस्पति (पुं.) सूर्य। दिवाकर। दिनमणि। मदार का पौधा।

अहह (अव्य) सम्बोधन। विस्मय। खेद।

अहार्य (पुं.) पर्वत। पहाड़। जो चुराया न जाय। जो तोड़ा न जाय। (त्रि.)

अहि (पुं.) साँप। वृत्र नामक दैत्य। सूर्य। सीसक। राहु। योगी। नीच। अश्लेषा नक्षत्र। दुष्ट मनुष्य। जल। पृथिवी। दुधारू गौ। नाभि। बादल।

अहिक (पुं.) ध्रुव। अन्धा सर्प। जो निर्दिष्ट संख्यक दिनों तक रहे।

अहिका (स्त्री.) शाल्मली वृक्ष।

अहित्रा (स्त्री.) चीनी। शक्कर। मेषश्रृंगी। पौधा।

अहिंसा (त्रि.) मन, वच, कर्म से प्राणि को पीड़ा न देना। शास्त्रविरुद्ध जीवों को पीड़ा न देना।

अहिजित (पुं.) विष्णु। इन्द्र।

अहित (पुं.) शत्रु। जो हितैषी न हो। अपथ्य। अमंगल।

अहितुण्डिक (पुं.) सर्प पकड़ने वाला।

अहिविद्विष (पुं.) गरुड़। इन्द्र। मोर। नेवला। विष्णु।

अहिफेन (न.पुं.) जो साँप के झाग के समान हो। अफीम।

अहिर्बुध्न्य (पुं.) शिव। चन्द्रमा रुद्र विशेष। उत्तराभाद्रपद नक्षत्र।

अहिभुज् (पुं.) साँप खाने वाला। गरुड़। मोर। नेवला।

अहिलता (स्त्री.) पान की बेल।

अहीर (पुं.) ग्वाला।

अहीरणि (सं.) कुचलेंड़। दुमुखा साँप, इसको देखकर और साँप भाग जाते हैं। पर इसमें विष नहीं होता।

अहीश्रुव (पुं.) शत्रु। वैरी।

अहु (पुं.) संकीर्ण। व्याप्त।

अहुत (पुं.) जहाँ हवन नहीं किया गया। धर्म का साधन होने पर भी होमरहित। वेदपाठ। ध्यानयोग। ब्रह्मयज्ञ। अनाहूत।

अहैतुक (त्रि.) बिना हेतु के। बिना किसी कारण के। फल की इच्छा से रहित। छल बिना।

अहो (अव्य.) शोक। करुणा। धिक्कार। विषाद। सम्बोधन। निन्दा। दया। विस्मय। प्रशंसा। असूया। वितर्क। तिरस्कार।

अहोबत (अव्य.) दया। श्रम। कृपा। थकावट। शोक-प्रकट करने वाला सम्बोधन।

अहोरात्र (न.) दिन रात।

अन्हाय (अव्य.) शीघ्र। तुरन्त।

अह्रय अह्रयाणः (गु.) निर्लज्ज। अभिमानी।

अह्नि (त्रि.) मोटा। विषयी। बुद्धिमान्। कवि।

अह्नीक (पुं.) एक बौद्ध सन्यासी।

आ

आ (अव्य.) (१) वर्णमाला का द्वितीय अक्षर तथा स्वर है।

(२) जब केवल "आ" का प्रयोग किया जाता है तब इसका अर्थ होता है-अनुमति। हाँ। सचमुच। यह अक्षर अनुकम्पा, दया, वाक्य, समुच्चय, घोड़ा, सीमा, व्याप्ति, अवधि से और तक के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है। किन्तु जब "आ" क्रिया अथवा संज्ञावाचक शब्दों के पूर्व लगाया जाता है, तब यह -समीप, सम्मुख। चारों ओर से आदि अर्थ को व्यक्त करता है। "आ" वैदिक साहित्य में सप्तम्यन्त शब्द के पहले-में और आदि अर्थव्यञ्जक होता है।

आ (पुं.) महादेव। लक्ष्मी।

आकत्थनं (क्रि.) बड़ाई बघारना। डींग हाँकना।

आकम्पित (त्रि.) कम्पयुक्त, काँपता हुआ। लोभ को प्राप्त। थोड़ा कम्प युक्त।

आकर्त्यं (क्रि.) किसी वस्तु को अपवित्र कर डालना।
आकर्ण (क्रि.) सुनना। कान देना।
आकरः (पुं.) समूह। श्रेष्ठ। अच्छा। रत्नादि के निकलने का स्थान। खान।
आकल् (क्रि.) पकड़ना। धरना। विचारना। देखना। बाँधना। रोकना। समर्पण करना। नापना। गिनना।
आकल्प (पुं.) भूषण। शृंगार। परिच्छद। बीमारी। वृद्धि। बढ़ती।
आकल्य (पुं.) बीमारी। रोग।
आकष (पुं.) कसौटी। चकमक पत्थर। पारस। जुआं। इन्द्रिय।
आकषक (पुं.) काटना। घिसना। कसौटी पर रखना।
आकर्षणी (स्त्री.) ऊँचाई पर स्थित फूल, फल, पत्ती तोड़ने की लकड़ी। डण्डी।
आकर्षिक (पुं.) चुम्बक नाम अयस्कान्त पत्थर। खींचने वाला।
आकस्मिक (अव्य.) अकस्मात्। सहसा हुआ। पहिले जो न सोचा विचारा अथवा देखा गया हो।
आकांक्षा (स्त्री.) अभिलाषा। चाह। सम्बन्ध। अभिलाष।
आकायः (पुं.) निवास। घर। श्मशान का अग्नि।
आकार (पुं.) मूर्ति। स्वरूप। मन का अभिप्राय।
आकारगुप्ती (स्त्री.) अपने मन के भाव को गुप्त रखना। स्वरूप को छिपाना।
आकारण (क्रि.) बुलाना।
आकाल ठीक समय। बेठीक समय।
आकालिक (त्रि.) बे फसल की वस्तु। शीघ्र नष्ट होने वाली। (स्त्री.) बिजली।
आकाश (पुं.न.) अकास। गगन। आसमान। पोला स्थान पञ्चभूतों अथवा तत्वों में से एक तत्व। सूर्य, चन्द्र ताराओं के देदीप्यमान होने का स्थान ब्रह्म। छिद्र। शून्य।
आकाशदीप (पुं.) आकाशदीपक अर्थात् वह दीपक जो विष्णु भगवान की प्रीति के लिए कार्त्तिक मास में एक बल्ली पर आकाश में रात के समय लटकाया जाता है।
आकाशवल्ली (स्त्री.) अमरबेल।
आकाशवाणी (स्त्री.) देवता की बोली। आकाशवाणी, वह वाणी जिसका बोलने वाला न दीख पड़े।
आकिञ्चनं आकिञ्चन्यं (न.) धनहीनता। गरीबी। निर्धनता।
आकीर्णः (त्रि.) व्याप्त। फैला हुआ।
आकुञ्चन (न.) सिकोड़ना। समेटना। फैले हुए को एकत्र करना।
आकुल (त्रि.) व्याकुल। घबड़ाया हुआ। व्यग्र।
आकूत (न.) अभिप्राय। आशय।
आकृ (क्रि.) समीप लाना। नीचे लाना। सम्पूर्ण प्रस्तुत करना। बुलाना। चिनौती देना। उत्पन्न करना। किसी से कोई वस्तु माँगना।
आकृति (स्त्री.) आकार। जाति। रूप। देह। बानगी।
आकृतिछत्रा (स्त्री.) घोषा नाम की एक लता।
आकेकरा (स्त्री.) दृष्टि विशेष। आधी खुली, आधी मुँदी।
आकेनिप (अव्य.) समीपवर्त्ती। बुद्धिमान्।
आक्रन्द (क्रि.) रोना। दहाड़ मार कर रोना। चीख मारना। चिल्लाना। गरजना। (सं.) शब्द। युद्ध का शब्दविशेष। मित्र। त्राता। भाई। घोर युद्ध। रोने का स्थान। राजा जो अपने मित्र राजा को दूसरे की सहायता देने से रोकता है।
आक्रम (पुं.) चढ़ाई करना। धावा करना। समीप जाना। अधिकृत कर लेना। ढक लेना।
आक्रमण (न.) धावा। चढ़ाई।
आक्रीड (पुं.) खेल की जगह या मैदान।
आक्रोश (पुं.) निन्दा। चीख। चिल्लाहट। हल्लागुल्ला। कोलाहल। शपथ। किरिया। गाली गलौज।
आक्षद्यूतिक (न.) पांसे के खेल में उत्पन्न विरोध या वैर।
आक्षपणं (न.) व्रत। उपवास। छोड़ा वारी।
आक्षपारिक (पुं.) पांसे का खेल देखने वाला। न्यायकर्त्ता। शासक।
आक्षपाद (पुं.) अक्षपाद या गौतम का सिखलाया हुआ। न्यायशास्त्र का अनुयायी।
आक्षर् (क्रि.) गाली देना। झूठा दोष लगाना।
आक्षार (पुं.) व्यभिचार अथवा लम्पटता

सम्बन्धी पुरुष वा स्त्री का दोष। पर पुरुष अथवा स्त्री के साथ सम्भोग करने का दोष।

आक्षि (क्रि.) रहना। ठहरना। वास करना। स्थितशील होना। अधिकार करना।

आक्षीव (पुं.) मत्त। मतवाला। मस्त।

आक्षेप (पुं.) धुड़कना। कलंक लगाना। खेंचना। धनादि की अमानत रखना। अर्थालंकारभेद।

आक्षोट-ड अखरोट का वृक्ष।

आखं (पुं.) कुदाली। फावड़ा।

आखण (न.) कड़ा। सख्त।

आखण्डल (पुं.) पर्वतों को तड़काने या फाड़ने वाला। इन्द्र।

आखनिक (पुं.) चोर। सुअर। मूँसा। चूहा। खोदने वाला।

आखर (पुं.) कुदाली। फावड़ा। कुल्हाड़ी। तबेला या किसी भी जानवर के रहने का घर।

आखतः (न.) अपने आप बना हुआ जलाशय। खाड़ी।

आखु (पुं.) मूँसा। चोर। सूम। सुअर।

आखुकर्णी (स्त्री.) मूँसे के कान जैसे पत्ते वाली उन्दरकारणी नामक एक बेल।

आखुगः (पुं.) चूहावाहन। गणपति। गणेश।

आखुभुज् (पुं.) बिल्ला। बिलौटा।

आखुविषहा (स्त्री.) देवताड़ वृक्ष जो मूँसे के विष को दूर करता है। देवताली लता। वनस्पति विशेष।

आखेटः (पुं.) मृगया। शिकार। अहेर।

आखेटिक (पुं.) शिकारी। आखेट करने वाला। भयानक। डराने वाला।

आखोट (पुं.) अखरोट का वृक्ष।

आख्या (स्त्री.) संज्ञा। नाम। जिससे प्रसिद्ध हो।

आख्यातृ (त्रि.) कहने वाला। पढ़ाने वाला। उपदेशक।

आख्यानम् (न.) उपाख्यान। कथा। सच्ची कहानी। प्रसिद्ध इतिहास। बोलना। समझना।

आख्यायिका (स्त्री.) प्रसिद्ध कहानी। गद्यपद्यमयी रचना। जैसे "हर्षचरित" या, "कादम्बरी।"

आगत (त्रि.) आया हुआ। उपस्थित। विद्यमान।

आगन्तु (त्रि.) अतिथि। आगमनशील। अनियमित रहने वाला। आया हुआ।

आगमः (न. पुं.) तन्त्रशास्त्र। वेदादि शास्त्र। आना। सन्दिग्ध अर्थ का सिद्ध करने वाला। व्यवहार। शिवजी के मुख से आया, पार्वती के कान में गया, और जिसे विष्णु ने माना अतः आगम हुआ। यथा

"आगतं शिववक्त्रेभ्यो गतञ्च गिरिजासुते।
मतञ्च वासुदेवस्य तस्मादागममुच्यते।।"

आगरः (पुं.) अमावास्या।

आगलित (त्रि.) सुस्त। उदास। दुःखी। मलिन।

आगवीन (त्रि.) वह मनुष्य जो गोधूलि के समय तक कार्य में संलग्न रहे।

आगस् (न.) अपराध। चूक। पाप। भूल। दण्ड।

आगस्ती (स्त्री.) दक्षिण दिशा।

आगाध (गु.) बहुत गहरा। अथाह।

आगार (न.) घर। छिपा हुआ स्थान।

आगुर् (क्रि.) स्वीकार गरना। सम्मत होना। प्रतिज्ञा करना।

आगू (स्त्री.) यह अवश्य कर्तव्य है-इसको अंगीकार करना। प्रतिज्ञा।

आगै (क्रि.) संगीत द्वारा पाना।

आग्नापौष्ण (गु.) अग्नि और पूषा सम्बन्धी।

आग्नीध्र (पुं.) होम करने वाले का ग्रह। मनु वंशोद्भव महाराज प्रियव्रत का ज्येष्ठ पुत्र।

आग्नेय (न.) अग्नि देवता वाला। जिसका अग्नि देवता हो। सुवर्ण। सोना। घी। लाल रंग। अग्नि पुराण। आग वाला। एक नगर। अगस्त्य मुनि।

आग्नेयी (स्त्री.) पूर्व और दक्षिण के बीच वाली विदिशा। अग्नि की पत्नी स्वाहा। प्रतिपदा तिथि। अग्निदेव का मंत्र।

आग्न्याधानिकी (स्त्री.) दक्षिणा विशेष। जो ब्राह्मण को दी जाती है।

आग्रयणः (न.) एक प्रकार का यज्ञ जो नया अन्न अथवा नये फल आदि खाने के पूर्व किया जाता है। अग्नि का स्वरूप। नया अन्न।

आग्रहायणिक (पुं.) मार्गशिर का मास। पूर्णमासी वाला महीना।

आग्रहायणी (स्त्री.) मृगशिर नक्षत्र वाली पूर्णिमा। मार्गशीर्ष महीने की पूर्णमासी।

आग्रहारिक (पुं.) नियम से पहला भाग पाने वाला। प्रथम भाग पाने योग्य ब्राह्मण। श्रेष्ठ ब्राह्मण। उत्तम ब्राह्मण।

आघट्ट (पुं.) लाल रंग। अपामार्ग अथवा अज्जाझारे का वृक्ष (क्रि.) मारना। छूना।

आघात (पुं.) आहनन। चोट। मारने का स्थान। वधस्थान। कसाईखाना।

आघार (पुं.) घी। मंत्र विशेष से किसी विशेष देव को घृत प्रदान।

आघूर्णित (त्रि.) हिलाया डुलाया हुआ।

आघृ (क्रि.) उड़ेलना। छिड़कना।

आघृणि (त्रि.) गर्मी से चमकने वाला। प्रकाशमान। अधिक धन वाला। सूर्य्य।

आघ्रा (क्रि.) सूँघना।

आघ्रातण (त्रि.) सूँघा हुआ। छुआ हुआ। दवाया हुआ। लाँघा हुआ।

आङ्गिक (त्रि.) भावों को प्रकाश करने वाला। भौं का चढ़ाव उतार। मृदंग वाजा। शरीर सम्वन्धी।

आङ्गिरस (पुं.) अंगिरा के पुत्र वृहस्पति।

आङ्गूष (पुं.) प्रशंसा। स्तव।

आचक्ष् (क्रि.) बोलना। कहना। शिक्षा देना।

आचमन (न.) अभिमंत्रित जल पान। मुख आदि का धोना। उपोषण। विहित कर्म के पूर्व देहशुद्धि के अर्थ तीन बार दक्षिण हथेली पर रख कर जल पीना।

आजमनक (न.) आचमन का जल। पीकदान। उगालदान।

आचमनीय (न.) मुँह धोने या कुल्ला करने योग्य जल।

आचायः (पुं.) एकत्र करना। (सं.) ढेर। राशि।

आचर (क्रि.) व्यवहार करना। आचरण करना। अभ्यास करना। समीप आना। घूमना। फिरना। व्यवहार रखना। भक्षण कर जाना।

आचार (पुं.) चरित्र। आवरण। मनु आदि महर्षियों द्वारा वतलाया हुआ स्नानादि व्यवहार। कर्त्तव्य कर्म।

आचार्य (पुं.) आचार्य संज्ञा उस पुरुष की है जो अपने शिष्य का यज्ञोपवीत संस्कार करके कल्प और उपनिषद सहित वेदाध्ययन करावे। जो किसी सम्प्रदाय को स्थापन करते हैं वे भी आचार्य कहलाते हैं जैसे शंकराचार्य। श्रीरामानुजाचार्य प्रभृति। आचार्य की स्त्री "आचार्य्यानी" कहलाती है।

आचार्यक (पुं.) आचार्य पना। आचार्य के करने योग्य काम।

आचि (क्रि.) एकत्र करना। बटोरना। ढेर लगाना। जमा करना। संग्रह करना। लादना। ढकना।

आचित (पुं.) संगृहीत। एकत्र किया हुआ। फैला हुआ। (सं.) वाक्य। वचन। एक रथ का वजन अर्थात् पच्चीस मन।

आच्छन्न (त्रि.) ढका हुआ। मुँदा हुआ। रखा हुआ।

आच्छाद (पुं.) वस्त्र। कपड़ा।

आच्छादन (न.) कपड़ा। परदा। गिलाफ। उढ़ोना। चोंगा।

आच्छिन्न (त्रि.) बलपूर्वक पकड़ा गया। काटा गया। खोया हुआ।

आच्छुरित (न.) जोर से हँसना। खिलखिला कर हँसना। नखों का घिसना।

आच्छोटन (क्रि.) उंगलियाँ चटकाना।

आच्छोदन (न.) आखेट। शिकार।

आजनिः (स्त्री.) हाँकने की लकड़ी।

आज (क्रि.) आना। बकरे से उत्पन्न या बकरे से सम्बन्ध युक्त। फेंकना।

आजकं (न.) बकरियों का गल्ला। झुण्ड।

आजकारः (पुं.) शिवजी का नाँदिया।

आजगवं (न.) शिवधनुष या शिवधनुष के समान सुदृढ़ धनुष।

आजन् (क्रि.) उत्पन्न होना। जन्म ग्रहण करना।

आजवनं (न.) हमला करना। आक्रमण करना।

आजानु (न.) घुटनों तक।

आजि (स्त्री.) समरभूमि। रणस्थली। लड़ाई। की जगह। गाली। झिड़की। (क्रि.) जीतना। पाना। अधिकृत करना।

आजिर (न.) आँगन के पास वाला।

आजीव (पुं.) आजीविका। जीने का साधन।
आजीविका (स्त्री.) (देखो आजीव ।)
आजू-आजुर (स्त्री.) बिना वेतन के काम करने वाला। नरकगामी।
आज्ञा (स्त्री.) अनुमति। हुक्म। निर्देश। आदेश। ज्योतिष। प्रसिद्ध लग्न से १० वां स्थान। (क्रि.) जानना। समझना। सीखना। बात किसी का ज्ञान प्राप्त करना। खोज करना। देखना।
आज्यं (न.) घी। घृत।
आज्यभाग (पुं.) आज्य का भाग। होम। आहुति के लिये घी।
आञ्जनेय (पुं.) अञ्जनीगर्भसम्भूत श्री हनुमानजी।
आटविक (न.) वनरखा। बनैला।
आटोप (पुं.) अहंकार। आडम्बर। वेग। वायु से उत्पन्न उदररोग।
आडम्बर (पुं.) घमण्ड। अहंकार। बाजे की आवाज। आरम्भ। दिखावट। क्रोध। हर्ष। हाथियों की चिग्घाड़। बालक की गरज। पलक। युद्ध भेरी। युद्ध चीत्कार।
आढक (पुं.न.) चारों ओर से दस अंगुल का नाप। चार प्रस्थ परिमाण। चार सेर। अनाज का पात्र।
आढ़की (स्त्री.) अहरनामी शमी का धान। अरहर की दाल। गन्धमय मिट्टी।
आढ्य (त्रि.) युक्त। मिश्रित। मिला हुआ। बड़ा धनी।
आणक (पुं.) नीच। छोटा। दुष्ट।
आणिः (पुं.) रथ के पहिये की आगे की कील। नोंक। सीमा। कोना।
आण्ड (त्रि.) अण्डे से उत्पन्न। अण्डकोष।
आत (त्रि.) फैला हुआ।
आतंक (पुं.) रोग। सन्ताप। सन्देह। ढोल का शब्द। भय। डर। ज्वर। पीड़ा।
आतञ्चन (न.) वेग भस्म करना। फेंकना। (सं.) नाश। उपद्रव। कठिनाई। संकट।
आततायिन् (पुं.) महापापी। शस्त्र उठाकर वध करने को उद्यत। आततायी छः प्रकार के पापी होते हैं:- १. आग लगाने वाला। २. विष खिलाने वाला ३. शस्त्र लिये हुए। ४. धन का चोर। ५. खेत का चोर और ६. स्त्री चोर।
आतप (पुं.) पीड़ा का कारण। सूर्य्य अथवा अग्नि की गर्मी। धूप। प्रकाश।
आतपत्र (न.) जो धूप से बचावे अर्थात् छाता।
आतर (पुं.) नदी आदि की उतराई या भाड़ा।
आतापि (पुं.) एक दैत्य जिसे अगस्त्य जी निगल गये थे।
आतापिन् (त्रि.) खच्चर। चील।
आतायिन (पुं.) चील पक्षी।
आतिथेय (न.) अतिथि का पूजन। चतुर। कुशल।
आतिथ्य (न.) अतिथिसेवा।
आतिवाहक (त्रि.) परलोक में पहुँचाने का काम करनेवाला। अर्चिरादि स्थान में रहने वाला।
आतुर (पुं.) पीड़ित। रोगी। दुखिया। विकल।
आतोद्य (न.) वीणा आदि चार प्रकार का बाजा। सब प्रकार के बाजे।
आत्तगन्ध (त्रि.) शत्रु ने जिसके अहंकार को दबा लिया। शत्रु से दबाया गया। काम।
आत्मगुप्ता (त्रि.) लता विशेष।
आत्मघातिन् (त्रि.) जो वृथा ही जल में डुब कर अथवा अग्नि में जल कर अपने प्राण गँवावे। आत्मघाती। अपनी हत्या करने वाला।
आत्मघोष (पुं.) स्वयं अपने को बुलाने वाला। कौवा। कुक्कुर।
आत्मज (पुं.) स्वयं उत्पन्न होने वाला अथवा अपने से उत्पन्न वाला अर्थात् पुत्र। यथा- "आत्मा वै जायते पुत्रः।" आत्मजन्मा का प्रयोग भी इसी अर्थ में होता है। लकड़ी। कन्या। मन से उत्पन्न हुई बुद्धि।
आत्मदर्श (पुं.) दर्पण। शीशा। आरसी। वट्टा।
आत्मन् (पुं.) आत्मा। प्राण। परमात्मा। मन। बुद्धि। मनन शक्ति। मूर्ति। पुत्र "आत्मा वै पुत्रनामासि"। स्वरूप। यत्न। देह। वृत्ति। सूर्य। अग्नि। वायु। जीव। ब्रह्म।

आत्मबान्धव (पुं.) अपने भाई बन्धु। मौसी के लड़के, बुआ के लड़के, ममेरे भाई-ये सब अपने बन्धु हैं।

आत्मभू (पुं.) जो मन से अथवा देह से उत्पन्न होता है। ब्रह्मा। कामदेव।

आत्मनीन (त्रि.) अपना। पुत्र। साला। विदूषक। अपना हित चाहने वाला। स्वहितकारी।

आत्मनेपद (न.) अपने लिये पद। संस्कृत व्याकरण में दो पद वाली धातुएँ होती हैं-एक आत्मनेपद की दूसरी परस्मैपद की।

आत्मम्भरि (त्रि.) पेटू। अपना ही पेट भरने वाला। स्वार्थी। लोभी। लालची। अपना ही पालन करने वाला।

आत्मयोनि (पुं.) विष्णु। शिव। ब्रह्मा। कामदेव।

आत्मरक्षा (स्त्री.) निज रक्षा। अपनी रक्षा।

आत्महन् (पुं.) अपने को मारने वाला। आत्मा न तो कर्त्ता है, न भोक्ता है और न स्वयं प्रभु है, किन्तु जो इसे कर्त्ता भोक्ता आदि माने। जिसे यथार्थ आत्मज्ञान नहीं हैं। मूर्ख। अज्ञानी। आत्मघाती। अपने को मारने वाला मनुष्य।

आत्माधीन (पुं.) अपने वश। अपने अधीन। पुत्र। साला। प्राणाश्रय।

आत्माश्रय (पुं.) अपना आश्रय लेने वाला। तर्क का एक दोष अर्थात् जिसे अपनी अपेक्षा आप ही हो।

आत्मसात् (अव्य.) अपने वश में। (क्रि.) हड़प जाना। दूसरे का धन विना धनी की अनुमति के अपने काम में ले आना।

आत्मीय (त्रि.) अपना अपना सम्वन्धी।

आत्म्द (त्रि.) अपना। व्यक्तिगत। निज का।

आत्यन्तिक (त्रि.) अनन्त। अविरत। स्थायी। अविनाशी। बहुत। अतिशय।

आत्ययिक (त्रि.) नाशकारी। उपद्रवी। अभागा। कष्टदायी। शीघ्र नाशशील। विलम्व न सहने वाला। असाधारण। विशेष।

आत्रेय (पुं.) अत्रि मुनि का सन्तान। शरीर सम्वन्धी रस धातु। अत्रि वंशोद्भव। शिव जी का नाम। एक नदी का नाम जो उत्तर में है।

आत्रेयी (स्त्री.) रजस्वला स्त्री। ऋतुमती स्त्री। तिष्टा नाम की एक नदी। अत्रि मुनि की भार्य्या।

आथवर्ण (पुं.) वेद जो अथर्व मुनि को मिला। जो अथर्ववेद को जानता हो। अथर्व- वेदविहित अभिचार आदि धर्म। अथर्ववेद के अनुसार क्रिया करने वाला पुरोहित।

आदर (पुं.) सम्मान। प्रतिष्ठा।

आदर्श (पुं.) दर्पण। वट्टा। टीका। प्रतिरूप। बानगी। पुस्तक।

आदानम् (न.) ग्रहण करना। लेना। घोड़े के गहने।

आदि (पुं.) प्रथम। कारण। निकट। प्रकार। भाग। प्रधान।

आदिकवि (पुं.) ब्रह्मा और वाल्मीकि मुनि।

आदितेय (पुं.) अदिति के सन्तान अर्थात् देवता।

आदित्य (पुं.) सूर्य्य। देवता। आक का वृक्ष। सूर्यमण्डल में रहने वाले सूर्य। आदित्य बारह हैं। पुनर्वसु नक्षत्र।

आदित्यसूनु (पुं.) सूर्य का पुत्र, सुग्रीव। यमराज। शनि। सावर्णिनामक मनु। वैवस्वत मनु। कर्ण नामक राजा।

आदिदेव (पुं.) प्रथम क्रीड़ा करने वाला। आप ही प्रकाशमान। नारायण।

आदिपुरुष (पुं.) पहले शरीर में रहने वाला। सारे जगत् को आप ही पूर्ण करने वाला। हिरण्यगर्भ। नारायण।

आदिम (त्रि.) पहले हुआ। आदि का। पहला।

आदिवाराह (पुं.) विष्णु। इन्होंने सब से पहले वाराहरूप में अवतार धारण किया था।

आदिष्ट (न.) आज्ञा। हुक्म। अनुमति।

आदीनव (पुं.) दोष। अवगुण। दुःख। दुर्दम। जिसे वश में लाना कठिन है।

आदृत (गु.) आदर किया हुआ। पूजा हुआ।

आदेश (पुं.) निर्देश। आज्ञा। हुक्म।

आदेष्ट्ट (पुं.) यजमान जो अपने पुरोहित से कहता है कि "मेरा इष्ट सम्पादन सम्बन्धी कर्म कीजिये।"

आद्य (त्रि.) पहले हुआ। प्रथम जात।

आद्यून (त्रि.) आदि शून्य। जिसका आरम्भ न हो। पेटू। मरभुखा। बुभुक्षित।

आद्योतः (पुं.) प्रकाश। चमक।

आद्रिसार (पुं.) लोहे का बना हुआ।

आधमन (न.) बन्धक। हुण्डी। धरोहर।

आधमर्ण्य ऋणी। कर्जदार।

आधर्मिक (त्रि.) अन्यायी। न्याय न करने वाला। धर्म न करने वाला।

आधर्षित (त्रि.) अन्याय से आक्रमण किया गया। जिसका अपराध देख लिया गया हो। अन्यायपूर्वक दवाया गया हो।

आधान (न.) धरोहर। मंत्र द्वारा अग्नि स्थापन। गर्भाधान।

आधार आश्रय। आसरा। अधिकरण। आड़। वृक्ष। का खोडुआ। पुल।

आधि (पुं.) मन की पीड़ा। बड़ी आशा। आश्रय धरोहर। व्यसन। एँड़ी। शाप।

आधिक्य (न.) बहुतायत। अधिक।

आधिज्ञ (त्रि.) वक्र। टेढ़ा। कष्ट दिया गया। पीड़ा अनुभव करने वाला।

आधिदैविक (त्रि.) अधिदैव सम्बन्धी। सुश्रुत के अनुसार कष्ट तीन प्रकार के होते हैं आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधि-दैविक। १. आध्यात्मिक पीड़ा अर्थात् ज्वरादि रोग। २. आधिभौतिक पीड़ा। अर्थात् सर्पादि दुष्ट जन्तुओं से क्लेश। ३. आधिदैविक पीड़ा अर्थात् मन आदि इन्द्रियों के क्लेश। प्रारब्ध से उत्पन्न।

आधिपत्य (न.) स्वामी होना। शक्ति। अधिकार प्राप्ति। राजा के कर्त्तव्य कर्म।

आधिभौतिक (त्रि.) क्लेश जो सर्पादिदुष्ट जन्तुओं से उत्पन्न हुए हों। प्राणि सम्बन्धी। तत्वों से उत्पन्न।

आधिराज्य (न.) राजकीय। आधिपत्य। सर्वश्रेष्ठ शासन।

आधिवेदनिक (न.) सम्पत्ति। वह धन जिसे पुरुष अपनी प्रथम स्त्री को, अपना दूसरा विवाह करते समय देता है।

आधु (क्रि.) हिलाना। आन्दोलन करना।

आधुनिक (त्रि.) अब का। नवीन। इदानीन्तन।

आधृ (क्रि.) धरना। पकड़ना। रखना। सहारा देना। लाना। देना।

आधेय (त्रि.) आश्रित। एक वस्तु में दूसरी वस्तु, जैसे लोटे में दूध। यहाँ दूध आधेय और लोटा आधार है।

आधोरण (पुं.) हाथी के चलाने की विद्या में पटु। महावत। हस्तिपक।

आध्मात (त्रि.) फूँकना। फूंक कर फुलाना। हवा या फूँक से मारना। शब्द।

आध्मान (पुं.) लुहार की धौंकनी। फूलना। बढ़ना। वायु की बीमारी।

आध्यात्मिक (त्रि.) मोह। ज्वरादि शारीरिक क्लेश। शोक। दुःख।

आध्यान (न.) चिन्ता। सोच। फिक्र। उत्कण्ठा। सोत्कण्ठ। स्मरण। बड़ी उत्कण्ठा। के साथ किसी को स्मरण करना।

आध्वनिक (त्रि.) यात्री। यात्रा करने वाला। यात्रा करने में चतुर।

आध्वनिक (त्रि.) यज्ञ कराना जानने वाला। पुरोहित। सोमयज्ञ का विधान बतलाने वाला ग्रन्थ।

आध्वर्यव यज्ञ में अध्वर्यु का करने वाला। यजुर्वेद जानने वाला।

आन (पुं.) मुख। मुँह। नाक। भीतर के वायु का नाक से होकर बाहिर निकलना। स्वांस लेना।

आनक (पुं.) मारू बाजा। लड़ाई का बाजा। बड़ा ढोल। मृदंग गरजने वाला बादल। उत्साही।

आनकदुन्दुभि (पुं.) वसुदेव का नाम। श्रीकृष्ण के पिता। बड़ा ढोल।

आनत् (त्रि.) प्रणाम करने वाला। निम्न मुख। विनम्र। टिढ़ाई।

आनति (स्त्री.) सन्तोष। नम्रता। (क्रि.) झुकना। नीचा होना। आतिथ्य करना। सम्मान करना।

आनद्ध (न.) चर्माच्छादित बाजा। चाम से मढ़ा हुआ बाजा। अर्थात् मृदंग। नगाड़ा। तवला। ढोलक। (क्रि.) केशों को सँवारना। गुँथा हुआ। फैला हुआ। बँधा हुआ। परिच्छद धारण करना। वस्त्रों पर गहनों का डालना।

आनन (न.) मुँह। मुख भाग। अध्याय। परिच्छेद ग्रन्थ।

आनन्तर्य्य (न.) बाहुल्य। बहुतायत। असंख्यत्व। अनगिनती। अनन्तत्व। असीमत्व। अमरत्व। परलोक। स्वर्ग। भावी सुख।

आनन्द (पुं.) प्रसन्नता। हर्ष। सुख। ब्रह्म। आनन्द वाला। शिव। विष्णु। बुद्धदेव के एक चचेरे भाई और उनके एक अनुयायी का नाम जिसने सूत्रों का संग्रह किया था।

आनन्दन (न.) आने जाने के समय कुशल पूंछ कर, आनन्द उत्पन्न करना। आते जाते समय मित्रों से मिलना। प्रसन्न करने वाला। आनन्द उपजाने वाला।

आनन्दमय (पुं.) वेदान्तानुसार सुषुप्ति का साक्षी प्राज्ञ जीव। सुख से पूर्ण। शरीर के पाँच कोषों में से एक कोष।

आनन्दार्णव (पुं.) आनन्द का समुद्र। अर्थात् परमात्मा। ज्योतिष में यात्रा समय का लग्न विशेष।

आनन्दिन् (पुं.) हर्ष, कौतुक, प्रसन्नता, आश्चर्य से युक्त।

आनपत्यं (सं.) असन्तानत्व। अपुत्रत्व।

आनम् (क्रि.) झुकना। प्रणाम करना। नवना।

आनर्त (पुं.) नाचघर। नृत्यशाला। रस। जल। द्वारका के समीप का प्रान्त अर्थात् काठियावाड़। युद्ध। लड़ाई। सूर्यवंशी। एक राजा का नाम।

आनाय (पुं.) जाल। यज्ञोपवीत। संस्कार। जनेऊ धारण करना।

आनव (पुं.) मानवी। दयालु। मानव। विदेशी जन।

आनस (पुं.) गाड़ी या छकड़े का। पिता सम्बन्धी।

आनाह (पुं.) अर्ज। कपड़े की चौड़ाई। मलमूत्र अवरोध रोग विशेष। दस्त पेशाब को रोकने वाली बीमारी। दस्त न होने की बीमारी। कोष्ठबद्धता।

आनिल (पुं.) वायु से उत्पन्न। वातल। जिस पर वायु का आधिपत्य हो। हनुमान जी अथवा भीम का नाम।

आनी (क्रि.) लाना। उत्पन्न करना। संमिश्रण करना। फेरना।

आनीति (स्त्री.) पास लाना। समीप लाना।

आनुकूल्य (न.) अनुकूलता। आपस में मिल कर रहना। आपस में दया दिखाना।

आनुगत्य (न.) जान-पहचान। हेलमेल।

आनुगण्य (न.) समानता। बराबरी। दयालु होना। कृपा करना।

आनुपूर्वी (स्त्री.) शैली। परिपाटी। क्रम। रीति। आदि से क्रम। यथार्थ जाति क्रम। मूल से लेकर क्रम।

आनुमानिक (न.) केवल अनुमान पर निर्भर। अटकलपच्चू। अनुमान प्रमाण से सिद्ध होने वाला। सांख्य शास्त्र में कहा गया प्रधान।

आनुयात्रिक (पुं.) अनुयायी। पिछलगा।

आनुरक्ति (स्त्री.) प्रीति। अनुराग।

आनुलोमिक (त्रि.) क्रमानुयायी। क्रम से और नियमपूर्वक काम करनेवाला। अनुकूल। उपयुक्त।

आनुविधित्सा (स्त्री.) कृतघ्नता।

आनुवेश्य (स्त्री.) पड़ोसी जो अपने घर के पास वाले पड़ोसी के घर के पास रहता हो।

आनुशासनिक (पुं.) निर्देश सम्बन्धी।

आनुश्रविक (पुं.) वेद में विधान किया हुआ। स्वर्गप्राप्ति का साधन होने से वैदिक कर्मानुष्ठान।

आनृत (पुं.) सदैव मिथ्या बोलने वाला। झूठा। झूठ बोलने वाला।

आनृशंस्य (न.) दयालु। कृपालु। नम्रता। दयालुता।

आन्तर (न.) मध्यवर्ती। भीतरी। छिपा हुआ।

आन्तरतम्य (न.) सादृश्य। समानता।

आन्तिका (स्त्री.) बड़ी बहिन।

आन्त्र (न.) नखसम्बन्धी। (सं.) कोष्ठ। आँत।

आन्दोलु (क्रि.) इधर उधर हिलना। हिलना। काँपना।

आन्दोलन (न.) बार बार हिलना। झूलना। ढूँढ़ना।

आन्धसिक (पुं.) रसोइया। पाचक। अन्न राँधने वाला।

आन्ध्य (न.) अन्धापन। अँधेरा।
आन्वयिक (त्रि.) कुलीन। अच्छे कुल में उत्पन्न।
आन्वाहिक (त्रि.) निम्य कर्म। नित्य होने वाले काम।
आन्वीक्षिकी (स्त्री.) तर्कविद्या। न्याय शास्त्र। अध्यात्मविद्या। आत्मविद्या।
आन्वीपिक (पुं.) अनूकुल।
आप् (क्रि.) पाना। प्राप्त करना। पहुँचना। पकड़ना। मिलना। भेंट करना। अधिकार करना। परवानगी देना। बराबर करना। अष्ट वस्तुओं में से एक। आकाश।
आपगा (स्त्री.) नदी।
आपणिक (पुं.) व्यापारी जो लेवे और वेचे।
आपन्न (त्रि.) प्राप्त। पाया हुआ। सकंट में फँसा हुआ।
आपन्नसत्वा (स्त्री.) गर्भवती स्त्री।
आपरान्हिक (त्रि.) अपरान्ह सम्बन्धी। दोपहर के वाद के कर्म श्राद्धादि।
आपस् (न.) जल। पाप। एक धर्म्मानुष्ठान।
आपस्कार (पुं.) वृक्ष या शरीर का धड़।
आपस्तम्भ (पुं.) धर्मशास्त्र सम्बन्धी सूत्रों के रचयिता एक मुनि।
आपस्तम्भिनी (स्त्री.) पानी को रोकने वाली। लिंगिनी नाम की एक लता।
आपात (पुं.) अवा। तन्दूर। रास्ता। (क्रि.) सहसा गिरना।
आपातत (अव्य,) अधुना। अभी। झट। बिना। शीघ्र।
आपान (न.) वह स्थान जहाँ लोग एकत्र हो मदिरा पान करें। चक्र। मद्यपों की मण्डली।
आपिञ्जर (न.) थोड़ा थोड़ा लाल सोना।
आपीड (न.) सीसफूल। सिर का भूषण। (क्रि.) दबाना। निचोड़ना। तंग करना।
आपीत (न.) कुछ-कुछ पीला। थोड़ा-थोड़ा पीया हुआ। सोनामक्खी।
आपीन (न.) कूप। कुआ। इनारा। थोड़ा। मोटा।
आपूपिक (पुं) पूआ या मीठी पूड़ी बनाने वाला। पूआ खाने का आदी। पूआ बेचने वाला। खमीर।
आपूप्य (पुं.) सत्त। भिगोया हुआ आटा। जिससे पुआ बनाये जायँ।
आपोक्लिम (न.) लग्न से तीसरी, छठवी, नवमी और बारहवीं राशि।
आपृच्छा (स्त्री.) आलाप। वातचीत। विदाई। विलक्षणता।
आप्त (त्रि.) विश्वस्त। विश्वास के योग्य। प्राप्त। सत्य। रोगद्वेषादिशून्य। सत्योपदेश करने वाला। भ्रमादिरहित। सत्य ज्ञाता।
आप्तकाम (त्रि.) अपनी इच्छा पूरी करने वाला। अपना मनोरथ सिद्ध करने वाला। सन्देहयुक्त विषय का निर्णय करने के अर्थ। किसी सिद्धान्ती का वचन। यथार्थ जानने वाले का वचन।
आप्यायन (न.) तृप्ति। प्रीति। तसल्ली। खुशी। प्रसन्न करना।
आप्रदिवं (अव्य.) सदैव।
आप्रपदं (अव्य.) पाँव तक। एक प्रकार की पोशाक जो पैर तक लम्वी हो। पाँव तक पहुँचने वाला।
आप्रपदीन (त्रि.) पाँवों तक लटकने वाला वस्त्र। "आप्रपदिन" भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है।
आप्ल (क्रि.) कूदना। नाचना। उछलना। नहाना। धोना। डुबकी मारना। पानी के डूबे में डूब जाना।
आप्लुत (त्रि.) स्नान किया हुआ। नहाया हुआ।
आप्लुव्रत (पुं.) वेद पढ़ा हुआ। ब्रह्मचारी भेद जो गृहस्थाश्रम में नहीं है। स्नातक व्रत को पूरा कर के घर में आया हुआ। ब्राह्मण।
आप्वन् (पुं.) पवन। वायु
आप्वा (स्त्री.) गरदन।
आफूकं (सं.) अफीम। अहिफेन।
आबंध (क्रि.) बाँधना। बनाना। चिपटाना। मजबूती से पकड़ना।
आबल्यं (सं.) निर्बलता। कमजोरी।
आबाध् (क्रि.) रोकना। बाधा डालना। चिढ़ाना।
आबाध (पुं.) दुःख। चोट। कष्ट। हानि।
आबिल (गु.) गँदीला। मैला।

आबुद्ध (न.) जानना। समझना। प्रेम। अनुराग। भूषण। बँधा हुआ। रुका हुआ।

आब्दिन (गु.) वार्षिक। सालाना।

आभरणम् (न.) भूषण। गहना।

आभा (स्त्री.) चमकना। दमकना। दिखलाई पड़ना। प्रकाश। चमक दमक। रंग। स्वरूप। सुन्दरता। समानता। कान्ति। दीप्ति। शोभा। उपमान। वायु-जन्य एक रोग विशेष।

आभासाक (सं.) एक प्रचलित कहावत या लोकोक्ति।

आभाष् (क्रि.) सम्बोधन करना। बातचीत करना। नाम लेना। जोर से बोलना।

आभाषण (न.) बातचीत। परस्पर कथोपकथन।

आभास् (पुं.) चमकना। दीखना। असत्य प्रतीत होना। (स्त्री.) चमक। दीप्ति। प्रभा। प्रतिबिम्ब। ग्रन्थारम्भ की प्रस्तावना। भूमिका। सादृश्य। समानता।

आभास्वर (पुं.) चौंसठ वा बारह देवगण।

आभिजन (पुं.) जन्म सम्बन्धी। जन्मकाल में किया गया सम्बन्धी। कुलीन।

आभिजात्य (न.) कौलीन्य। पाण्डित्य। चतुराई। अच्छी समझ।

आभिख्री (स्त्री.) शब्द। नाम। वर्ण।

आभीक्ष्ण्य (न.) बार बार होना। पुनः पुनः।

आभीर (पुं.) गोप। ग्वाला। देश भेद (स्त्री.) गोपी। अहीरिन। ब्राह्मण पिता और अम्बष्ठा जाति की स्त्री से उत्पन्न जाति।

आभीरपल्ली (स्त्री.) अहीरों के गाँव।

आभील (न.) भयानक। भयंकर। डरावना। चोट। शारीरिक क्लेश।

आभोग (पुं.) मोड़। टिढ़ाई। गोलाई। परिपूर्णता। गान की समाप्ति।

आभ्युदयिक (त्रि.) चूड़ा आदि। शुभ कर्मों की वृद्धि के लिय श्राद्ध। धन देने वाला। आनन्द का अवसर।

आम (त्रि.) कच्चा। अपक्क। दुर्वच नामक रोग।

आमगन्धि (न.) कच्चे मांस जैसी गन्धिवाला। चिता के धुएं की गन्धि।

आमनस्य (न.) बुरे मन वाला। दुःख। शोक। पीड़ा।

आमंत्रण (न.) अभिनन्दन। न्योता। बुलावा। आह्वान।

आमय (पुं.) रोग। जिससे रोग उत्पन्न हो।

आमयाविन् (पुं.) रोगयुक्त। रोगी।

आमर्शन (न.) छूना। स्पर्श करना। विचारना।

आमर्ष (पुं.) क्रोध। रोष।

आमलक -की (पुं.) वासक वृक्ष। आँवला। आँवले का पेड़। आँवले का फल।

आमाशय (पुं.) नाभि और स्तनों के मध्य का भाग। अपाक स्थान। न पकने का स्थान। कच्ची जगह।

आमिक्षा (स्त्री.) फटा हुआ दूध। छाना।

आमिष (न.पुं.) मांस। खाने। पीने और पहनने की वस्तु। घूंस। सुन्दरता। अति लोभ। लाभ। कामदेव का गुण। भोजन। विषय। निबन्ध। जम्बीर वृक्ष का फल।

आमुक्त (त्रि.) छोड़ा गया। पहिने हुए। सजा हुआ। कवच धारण किये हुए पुरुष।

आमुख (न.) प्रारम्भ। नाटकीय प्रस्तावना। नटी। सूत्रधार। विदूषक और पारिपार्श्वक की परस्पर वह बातचीत जिसमें संक्षिप्त नाटकीय कथा आ जाय।

आमुष्मिक (त्रि.) परलोक में होने वाली बात। अगले जन्म की घटना।

आमुष्यायण (त्रि.) अच्छे वंश के कारण अथवा अच्छे कर्मों द्वारा प्रसिद्धिप्राप्त पुरुष का सन्तान। सद्वंशोद्भव का पुत्र।

आमोद (पुं.) गन्धमात्र। हर्ष प्रसन्नता।

आमोदिन् (त्रि.) चित्त प्रसन्न करने वाले कर्पूरादि पदार्थ। सुगन्ध।

आम्नाय (पुं.) वेद। आगम। निगम। गुरुपरम्परा से प्राप्त उपदेश। कुल की रीति भाँति। जातीय चाल या व्यवहार।

आम्बिकेय (पुं.) धृतराष्ट्र और कार्तिकेय का नाम।

आम्भस (पुं.) पनीला। रसीला। पतला।

आम्भसिक (पुं.) मछली।

आम्र (पुं.) आम का पेड़। आम का वृक्ष।

आम्रकूटः (पुं.) एक पर्वत का नाम।

आम्रातक (पुं.) आमड़े का वृक्ष। आमडे का फल। मिलावा।

आम्रेड् (क्रि.) दुहराना।

आम्रेडित (त्रि.) उन्मत्त की तरह एक बात को बार-बार कहना। पुनः पुनः कहा गया। व्याकरण की एक संज्ञा।

आम्ला (स्त्री.) बड़े खट्टे रस वाला। फल। इमली का वृक्ष।

आय (पुं.) आमदनी। प्राप्ति। धनागम। कुण्डली का एकादश घर। स्त्रियों के घर की रखवाली करने वाला। पहरुआ।

आयत (त्रि.) लम्बा। खींचा हुआ। उद्योगी। चौड़ा।

आयतन (न.) देवालय। मन्दिर। आश्रम। बैठक। विश्रामस्थान। यज्ञस्थान।

आयतीगवम् (न.) गौओं के लौटने का समय। गोधूली।

आयति-ती (स्त्री.) आने वाला समय। भावी काल। उत्तरकाल। प्रभाव। फल देने का समय। मेल। लम्बाई। पहुँचना।

आयत्त (त्रि.) अधीन। पराधीन। अवलम्बित। वश में।

आयत्ति (स्त्री.) स्नेह। प्रीति। सामर्थ्य। बल। सीमा। मर्य्यादा। दिन। शयन। विस्तरा।

आयस् (न.) लोहे का बना पात्र। लोह। लोहे से बना।

आयस्त (त्रि.) फेंका गया। दुःख दिया गया। मारा गया। तेज किया गया।

आयाम (पुं.) लम्बाई। रोकना।

आयास (पुं.) मिहनत। बड़ा। यत्न दुःख। उद्यम। क्लेश। चिन्ता।

आयु (पुं. न.) उम्र। जीवनकाल। उमर। घी पवन। पुत्र। वंशज। सन्तान। पुरूरवा और उर्वशी के पुत्रगण।

आयुज् (क्रि.) जोड़ना। बाँधना। जुआँ रखना। नियुक्त करना। बनाना।

आयुत (त्रि.) मिला हुआ।

आयुध् (क्रि.) लड़ना। आक्रमण करना। सामना करना। (न.) हथियार। ढाल। आयुध तीन प्रकार के होते हैं। यथा १. प्रहरण, जैसे तलवार २. हस्तमुक्त, जैसे चक्र ३. यंत्रमुक्त, जैसे तीर बरतन।

आयुधधर्मिणी (स्त्री.) जयन्ती वृक्ष।

आयोधनम् (न.) लड़ाई। युद्ध। रणस्थल। वध करना। मारना।

आयुस् (सं.) जीवन। जीवनकाल। भोजन। दीर्घजीवी होने के लिये आयुष्टोम नामक अनुष्ठान।

आयुष्मत् (न.) दीर्घजीवी। बहुत दिनों तक जीनेवाला। (पुं.) विषकुम्भ आदि योगों में से तीसरा योग।

आयुष्य (त्रि.) बड़ी उम्र करने वाला। पथ्य। हितकारी। अच्छा।

आयोग (पुं.) गन्धमाल्योपहार। काम, फूल चन्दन आदि चढ़ाने की सामग्री। तट। किनारा।

आयोगव (पुं.) शूद्र का पुत्र जो वैश्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। बढ़ई प्रतिलोम वर्णसंकर से उत्पन्न एक जातिविशेष।

आयोजन (न.) उद्योग। आहरण। इकट्ठा करना या लेना। लगाना। जोड़ना।

आयोधन (न.) लड़ाई की जगह। युद्धस्थान। (क्र.) लड़ना। मारना। युद्ध। वध।

आर (पुं.) पीतल। मंगलग्रह। शनिग्रह। मधुराम्रफल। खटमिट्ठा फल। वृक्षभेद। अन्तर। फासला। प्रान्तभाग। सन्तरे का पेड़। चाकू। आरा।

आरकूट (पुं.न.) पीतल का बना भूषण। पीतल का गहना।

आरक्षक (पुं.) सन्तरी। चौकीदार।

आरट (पुं.) नट। नाटक का एक पात्र।

आरह (पुं.) एक देश का नाम जो पञ्जाब के उत्तर-पूर्व में है और जो घोड़ों के लिये प्रसिद्ध है। गुजरात के लोग अब भी इस प्रान्त को हैरात या ऐरात देश कहते हैं। इस देश के लोग या घोड़े।

आरणं (न.) गहराई। खाल।

आरणिः (पुं.) भँवर। चक्कर।

आरण्य (न.) जंगली, बनैला। वन। एक प्रकार का अनाज जो विना बोये अपने आप उत्पन्न होता है। राशि विशेष। गोबर। महाभारत के पर्वों में से एक का नाम।

आरण्यक (पुं.) बनैला या जगंली मार्ग। अध्याय। न्याय। विहारस्थान। हाथी। वेद का एक अंशविशेष।

आरतिः (स्त्री.) उपरम। हटना। निवृत्ति। ठहराव।

आरथ (पुं.) रथ जिसमें एक बैल अथवा एक घोड़ा जोता जाता है।

आरब्ध (त्रि.) आरम्भ किया गया।

आरभटी (स्त्री.) नटों की कलावाजी। एक प्रकार की रचना। खेल। नाच।

आरम्भ (पुं.) त्वरा। उद्यम। यत्न। वध। मारना। अहंकार प्रस्तावना।

आर-रा (पुं.) शब्दमात्र। हर प्रकार का शब्द।

आरा (स्त्री.) चमड़ा चीरने का लोखर। लोहे का एक औजार।

आरात् (अव्य.) दूर। समीप। पास। तुरन्त। सीधा।

आराति (पुं.) शत्रु। वैरी।

आरात्रिक (न.) प्रकाश दिखाना या आरती जो रात्रि के समय प्रतिमाविशेष के सन्मुख की जाती है। आरती। नीराजन कर्म।

आराधन (न.) उपासना। पूजन। प्रसन्न करना। प्राप्ति। सेवाकरना। पकाना।

आराम (पुं.) उपवन। वाटिका। क्रीड़ार्थ बनाया गया बगीचा।

आरालिक जो टेढ़ा बरताव करे। भातके गुण।

आरिच् (क्रि.) रीता करना। खाली करना।

आरू (पुं.) केकड़ा। सूअर। एक प्रकार का वृक्ष।

आरुच् (क्रि.) चुनना। पसन्द करना।

आरुध् (क्रि.) रोकना। बन्द करना।

आरुषी (स्त्री.) मनु की पुत्री और और्व की माता।

आराह (क्रि.) चढ़ना।

आरु (पुं.) साँवले अथवा धौरे रंग का। धौरा या साँवला रंग। सूअर। हिमालय पर उत्पन्न होने वाली एक वनस्पति का नाम।

आरूढ़ चढ़ा हुआ। बैठा हुआ। सवार।

आराद् दूर। अन्तर। पास। समीप।

आरेहण चाटना। चूमना।

आरोग्य (न.) रोग का अभाव। रोग से छुटकारा।

आरोपः (पुं.) अन्य धर्म में अन्य धर्म का प्रतीत होना (जैसे रस्सी में सर्प का)। संस्थापन। कल्पना। मान लेना। धुनष झुकाना।

आरोह (पुं.) चढ़ना। लम्बाई। उत्तम स्त्रियों का नितम्ब देश या चूतड़। ऊँचाई। परिमाण विशेष।

आर्जव (पुं.) सरलता। सीधापन।

आर्त्त (त्रि.) अस्वस्थ। पीड़ित। कष्ट प्राप्त।

आर्त्तव (न.) ऋतु वाला। स्त्रीधर्म या रज जो प्रतिमास स्त्रियों को होता है।

आर्त्तिज्य (न.) ऋत्विग के करने योग्य काम।

आर्थिक (त्रि.) अर्थग्राही। पण्डित। दाना। अर्थ से आया हुआ। निशान। धनी। धनवान्। सच्चा। यथार्थ।

आर्द्र (त्रि.) गीला (।) (स्त्री.) आर्द्रा नामक छठवां नक्षत्र।

आर्द्रक (न.) अरदक। आदी। आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न।

आर्य्य (त्रि.) स्वामी। गुरु। सुहृद। मित्र। श्रेष्ठ। वृद्ध। योग्य। कुलीन। पूज्य। मान्य। उदारचरित। शान्त चित्तवाला। नाटकों में यह सम्बोधन प्रायः श्रेष्ठ पुरुषों के प्रति प्रयुक्त होता है।

आर्यपुत्र (पुं.) ससुर का वेटा। पति। गुरु का पुत्र। भर्त्ता मालिक।

आर्यमिश्र (त्रि.) श्रेष्ठ। मानने के योग्य।

आर्यावर्त्त (पुं.) पवित्र भूमि। विन्ध्याचल और हिमालय के बीच की भूमि। आर्यों के बसने का स्थान। पूर्व सागर से आरम्भ कर पश्चिम सागर के मध्य का भूखण्ड।

आर्ष (त्रि.) ऋषिसम्बन्धी। ऋषिप्रणीत शास्त्र।

आर्षविवाह (सं.) विवाह विशेष। जिसमें दो गौ लेकर कन्या दी जाती है।

आर्हत (पुं.) जैन सम्प्रदाय का।

आल (न.) सजाना। (सं.) विश। फरफन्द। पीत संखिया।

अलगर्द (पुं.) पनिहा साँप।

आलम् (क्रि.) स्पर्श करना। छूना। पाना। मार डालना। पकड़ना। थामना। जीत लेना। आरम्भ करना।

आलम्ब (पुं.) अवलम्ब। आश्रय।

आलम्भ (न.) पकड़ना। स्पर्श करना। यज्ञ में बलि के लिये पशु का हनन करना। यथा "अश्वालम्भं गवालम्भम्।"

आलय (पुं.) घर। गृह। (अव्य.) मृत्यु तक। यथा "पिबत भागवतं रसमालयम्।"

आलयविज्ञान (न.) लय तक रहने वाला विज्ञान। बौद्ध दर्शनानुसार अहंकार का स्थान विज्ञान।

आलवाल (न.) जो चारों ओर से जल को ग्रहण करता है। खोडुआ। वृक्षमूल के चारों ओर जल भरने का स्थान।

आलस्य (न.) आलस। शक्ति होने पर भी अवश्य कर्तव्य में उत्साह न करना।

आलान (न.) हाथी के बाँधने का थम्भा। रस्सा। बंधन।

आलाप (पुं.) बातचीत। कथोपकथन। बोलचाल। सम्भाषण। संगीत के सप्तस्वर।

आलि-ली (स्त्री.) व्यर्थ, निरर्थक। सुस्त। अर्थशून्य। बिच्छू। मधुमक्खी। सखी। पंक्ति। अवली। पुल। भ्रमर। भौंरा।

आलिंगन (न.) प्रीतिपूर्वक परस्पर मिलना।

आलिञ्जर (पुं.) मटका। डहर। कूँड़ा। नाँद।

आलिम्पन (न.) मंगलार्थ लेपन। दीवालों को सफेदी से पोतना। अट्टा।

आलीढ चाटा। खाया। आहत किया। घायल किया। बन्द।

आलीनक (न.) ऐसा केमल जो आग देखते ही पिघल जाय।

आलेख्य (न.) चित्रपट। लेख। मूर्ति। शीशा। नक्शा। (क्रि.) लिखना।

आलुड् (क्रि.) आन्दोलन कराना। हिलवाना। भलीभाँति जांच पड़ताल करना।

आलुः (न.) उल्लू। घुग्घू। काली आबनूस की लकड़ी।

आलुल (पुं.) हिलने डुलने वाला। निर्वल।

आलोक (पुं.) देखना। पहचानना। विचारना। सोचना। वधाई देना।

आलोचन (क्रि.) किसी काम को कार्यरूप में परिणत करने का निश्चय करना। विचार। सोचना। सांख्य दर्शन के अनुसार निर्विकल्पक शुद्ध विषयक प्रथम उत्पन्न ज्ञान।

आलोल (पुं.) मन्द मन्द हिलता हुआ। हिला हुआ। आन्दोलित।

आवत् (अव्य.) सामीप्य। निकटत्व।

आवनेय (पुं.) पृथिवीपुत्र। मगंल का एक नाम।

आवपन (न.) धान रखने का पात्र। थाली। परात।

आवरक (न.) छिपाना। ढ़ाकना। ढ़ाकने वाला कपड़ा आदि।

आवरण (न.) ढाल। परदा। छिपाना। लुकाना। ज्ञान का परदा।

आवर्त्त (पुं.) चक्र का गोलाकार हो कर चक्कर खाना। भँवर। एक देश का नाम। आप्तचिह्न। चिन्ता। माक्षिक धातु।

आवर्त्तन (न.) दूध आदि का मथना। विलोना।

आवश्यक (त्रि.) नित्य कृत्य। जरूरी काम।

आवसथ (पुं.) रहने का स्थान। घर। कुटी। एक विशेष वृत्त।

आवाप (पुं.) खोडुआ। कियारी। बोना। फेंकना। अन्य के राज्य की चिन्ता। नीची ऊँची भूमि। ऊबड़ खाबड़ भूमि। प्रधान होना।

आवास (पुं.) वासस्थान। घर आदि।

आवाहन (न.) देवताओं को निकट बुलाना। पास लाना। बुलाना।

आविक (न.) भेड़ के बालों का बना। ऊनी। (सं.) कम्बल। लोई।

आविग्न (पुं.) उद्विग्न। घबराया हुआ। वृक्ष विशेष।

आविद् (क्रि.) जतलाना, बतलाना। प्रकट करना। घोषणा करना (पुं.) एक फलदार वृक्ष का नाम।

आविद्ध (त्रि.) वेधा गया। टेढ़ा। हराया गया। फेंका गया। दबाया गया। मूर्ख।

आविल (पुं.) गँदला। कुत्सित। मैला।

आविस् (अव्य.) प्रकाश। प्रकट।
आविश् (क्रि.) प्रवेश करना। घुसना। भीतर जाना। अधिकार जताना। समीप जाना।
आवी (स्त्री.) रजस्वला स्त्री। गर्भिणी स्त्री। प्रसवपीड़ा।
आवुक (पुं.) (नाट्योक्ति में) पिता। जनक।
आवुत्तः (पुं.) बहनोई। भगिनीपति।
आवृत (न.) ढकना। छिपाना। भरना। चुनना। पसन्द करना। घेरना। रोकना। बन्द करना।
आवृत्त (त्रि.) हटा हुआ। निवृत्त। लौटा हुआ। अभ्यस्त।
आवृत्ति (स्त्री.) बेर बेर पाठ करना या गुणन करना।
आवेश (पुं.) अहङ्कार। रोष। अभिनिवेश। हठ। प्रवेश होना। ग्रहपीड़ा। भूत प्रेतादि का डर।
आवेग (पुं.) घवड़ाहट। चिन्ता। अस्वस्थता। शोक। दुःख। भय। त्वरा। ी = वृद्धदारक का पेड़। जिसको "विधारा" कहते हैं।
आवेशिक (त्रि.) घर वाला। निज सम्बन्धी। अतिथि। मेहमान। पूज्य। आदरणीय।
आवेष्टक (पुं.) ढक्कन। ढाँपने वाला। वेड़ा।
आश (क्रि.) खाना। भोजन करना।
आशंसा (स्त्री.) अभिलाषा। आशा। (विशेष- कर ऐसी वस्तु के जो प्राप्त नहीं हो सकती।)
आशंसु (स्त्री.) इच्छा वाला। अभिलषित वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा। कहने वाला। आशावान्।
आशंका (स्त्री.) भय। त्रास। डर। सङ्कोच। सन्देह। संशय।
आशय (पुं.) अभिप्राय। अभिप्रेत। आसरा। ऐश्वर्य। धन। पनस का वृक्ष। अजीर्ण स्थान। कर्म से उत्पन्न वासनारूप संस्कार। धर्माधर्म रूप अदृष्ट। शयन। सोना। स्थान।
आशा (स्त्री.) आस। दिशा। आकांक्षा बड़ी इच्छा। लालसा। चाह।
आशित (त्रि.) भुक्त। खाया। भोजन द्वारा तृप्त।
आशीर्वाद (पुं.) भलाई की प्रार्थना। शुभेच्छा। आशीर्वाद।
आशीविष (पुं.) जहरीली दाढ़ वाला। सर्प। साँप।
आशुग (पुं.) वायु। हवा। पवन। वाण। सूर्य। शीघ्र चलने वाला।
आशुतोष (त्रि.) शीघ्र प्रसन्न होने वाला। महादेव। शिव।
आशुशुक्षणि (पुं.) अग्नि। आग। पवन। वायु।
आशु (अव्य.) तेज। शीघ्र।
आशेकुरिन् (पुं.) पहाड़। पर्वत।
आशौच (न.) वैदिक कर्म के अयोग्य दशा। अशुद्धि। सूतक। "दशाहं शावमाशौचं ब्राह्मणस्य विधीयते" मनु।
आश्यान (त्रि.) किञ्चित् एकत्र हुआ। सूखा हुआ।
आश्रम् (अव्य,)) आँसू।
आश्रम (पुं.) ब्रह्मचर्यादि चार आश्रम, अर्थात् अवस्था। मुनियों के रहने का स्थान। कुटी। मठ। विद्यार्थियों के रहने की जगह। तपोवन। विष्णु का नाम।
आश्रय (पुं.) आसरा। समीप। समीपी। आधार। घर। प्रवल। वलवान् शत्रु का सहारा लेना। सन्धि आदि छः में एक गुण।
आश्रयाश (पुं.) जो अपने आश्रय को खा डाले। अर्थात् अग्नि, आग।
आश्रव (पुं.) नदी। नाला। दोष। अपराध। आज्ञाकारी।
आश्रित (त्रि.) शरणागत। शरण में आ पड़ने वाला। अधीन। आसरे पर रहने वाला। चाकर। भृत्य। नौकर। अनुयायी रहने वाला।
आश्रिः (स्त्री.) तलवार की धार। खड्ग की बाढ़।
आश्रु (क्रि.) सुनना। प्रतिज्ञा करना। वचन देना। स्वीकार करना। खींचना। जपना।
आश्रुत (त्रि.) सुना। प्रतिज्ञात। स्वीकृत।
आश्लिष् (क्रि.) आलिङ्गन करना। गले लगाना। चिपकना।
आश्लेष (पुं.) एक ओर से जुड़ा हुआ। (ा) नवाँ नक्षत्र।
आश्व (न.) घोड़ों का समूह। घोड़ों का रथ या गाड़ी।
आश्वयुज (पुं.) महीना जिसमें अश्विनी नक्षत्रयुक्त पूर्णिमा हो, अर्थात् आश्विन या क्वार का मास।

आश्वलायन (पुं.) एक सूत्रकार। जिनका ग्रन्थ आश्वलायन सूत्रों के नाम से प्रसिद्ध है।
आश्वास (पुं.) आश्रयहीन। भयभीत का भय दूर करने के लिये ढाढ़स बँधाना।
आश्विन (पुं.) आसोज। क्वार का मास।
आश्विनेय (पुं.) देवताओं के चिकित्सक नकुल और सहदेव। घोडे की एक दिन की मञ्जिल। सूर्यपत्नी संज्ञा के पुत्र। अश्विनी कुमार।
आश्वीन (पुं.) घोड़े की एक दिन की मञ्जिल।
आषाढ़ (पुं.) वर्षा ऋतु का प्रथम मास। आषाढ़ मास। पलाश वृक्ष का दण्ड जो संन्यासियों के पास रहता है। ब्राह्मण को यज्ञोपवीत संस्कार में ब्रह्मचर्य का चिह्न दिया जाता है।
आस् (क्रि.) बैठना। लेटना। आराम करना।
अस् (अव्य.) स्मरण। दूर करना। कोप। सन्ताप। गर्व से घुड़कना।
आसक्त (त्रि.) फँसा हुआ। अनुरक्त। निरत। सब धन्धा छोड़कर एक में अनुरक्त होना। निरन्तर। नित्य।
आसङ्ग (न.) अभिनिवेश। एक बात का हठ। भोग की अभिलाषा। कोई काम करने का अभिमान। बचाना। सङ्ग।
आसत्ति (स्त्री.) संसर्ग। मेल। लाभ। समीप। न्यायशास्त्र में दो अन्वय योग्य। दोनों पदार्थों को बिना फरक बोलना।
आसन (न.) उपवेशन। बैठना। (सं.) चौकी। हाथी का स्कन्ध। राजाओं के छः गुणों में एक। शत्रु। आराम करना। जीरक का पेड़।
आसन्न (त्रि.) समीपस्थ। उपस्थित। निकट का।
आसव (पुं.) हर प्रकार की मदिरा। अपक्व इक्षु रस।
आसादन (न.) रख देना। आक्रमण करना। मिलना। सम्मुख जाना। पाना। पूर्ण करना।
आसार (पुं.) घमाघम बरसना। मूसलाधार वर्षा। फैलना। सेनाओं का चारों ओर फैलना। मित्र का बल।
आसुति (स्त्री.) मद्य निकालना। प्रसव। उत्तेजन।
आसुर (पुं.) असुर सम्बन्धी। दैत्य। यज्ञ न करने वाला। आठ प्रकार के विवाहों में से एक प्रकार का विवाह, जिसमें वर कन्या-पिता वा उसके सम्बन्धियों को धन देकर वधू लेता है।
आसुरिः (पुं.) कपिल के एक शिष्य का नाम।
आसेव (क्रि.) अभ्यास करना। प्रसन्नता में मग्न होना।
आसेचन (त्रि.) छिड़काव। सींचना। जहाँ मन न लगे। बहुत सुन्दर दर्शन।
आसेध (पुं.) राजाज्ञा से अन्यत्र जाने का निषेध। बन्दी।
आसेवा (स्त्री.) अभिलाषा सहित किसी कार्य को बारबार करने की प्रवृत्ति। किसी कार्य को बारबार करना। बारबार अच्छी प्रकार सेवा करना।
आस्कन्दन (न.) अनादर करना। आक्रमण करना। चढ़ना। गाली देना। घोड़े की चाल। युद्ध।
आस्तर (पुं.) बिछौना। हाथी की पीठ का झूल।
आस्तिक (त्रि.) जो परलोक को मानता हो। जो वेदशास्त्र और ईश्वर को माने। पवित्र। सच्चा। एक मुनि का नाम, देखो आस्तीक शब्द।
आस्तीक (पुं.) जरत्कारु ऋषि के पुत्र का नाम जिसने जनमेजय का सर्पयज्ञ बन्द करवा कर नागों की रक्षा की थी। आस्तिक ऋषि।
आस्तीर्ण (त्रि.) फैला हुआ। विस्तीर्ण।
आस्था (स्त्री.) ध्यान। आदर। आशा। सहारा। विश्वास। भरोसा। स्थिति। यत्न।
आस्थान (न.) जहाँ बैठते हैं। सभा। सहारा। चढ़ना। यत्न। विश्राम स्थान।
आस्थित (त्रि.) निवास किया। ठहरा। रहा। चढ़ा। पहुँचा। मान गया। बड़े यत्न से किसी काम में संलग्न होना। घिरा हुआ। फैला हुआ।
आस्पद (न.) स्थान। जगह। आधार। प्रतिष्ठा। पद। स्थान। कृत्य। काम। प्रभुत्व। बड़प्पन। कमरा। लग्न से दसवाँ स्थान।
आस्पर्धा (स्त्री.) प्रतिद्वन्द्विता। ईर्ष्या। बदाबदी। होड़ाहोड़ी।

आस्फालन (न.) रगड़ना। मलना। चलना। दबाना। पछाड़ना। गर्व। अभिमान।

आस्फुजित् (पुं.) शुक्र ग्रह का नाम।

आस्फोट (पुं.) मदार का पेड़। ताल मारना या ठोंकना। पहलवानों का भुजाओं पर ताल ठोंकना। ताल। कम्पन। नलमल्लिका का वृक्ष।

आस्य (न.) मुख सम्बन्धी।

आस्यपत्र (न.) पद्म। कमल। पङ्कज। जिसका मुख ही पत्र हो।

आस्था (स्त्री.) स्थिति। आसन। ठहरना। निवास।

आस्यासव (पुं.) थूक। खखार। लार।

आश्रव (पुं.) पीड़ा। दुःख। क्लेश। बहना। भागना। निकास। अपराध।

आस्वाद (पुं.) रस। स्वाद। चखना।

आह (अव्य.) यह कष्टसूचक अव्यय है।

आह्क (पुं.) एक विलक्षण नाक का रोग।

आहन् (क्रि.) मारना। पीटना।

आहत (त्रि.) ताड़न किया गया। चुटीला। ज्ञात। जाना हुआ। ढक्का। बाजा। (पुं.) पुराना या नया कपड़ा।

आहव (न.) स्थान जहाँ शत्रु बुलाये जायँ। लड़ाई। युद्ध। यज्ञ। होम।

आहवनीय (पुं.) गृहस्थी के अग्नि से लेकर होम के लिये संस्कार किया हुआ अग्नि। हवन के योग्य।

आहार (पुं.) लाना। हर लाना। किसी वस्तु को गले के नीचे करना। भोजन। अन्नादि।

आहार्य्य (त्रि.) आहरणीय। भोजन के योग्य। लाने योग्य। आगन्तुक। अतिथि। नेपथ्य। रङ्गभूमि। कृत्रिम। बनावटी। रसादि को प्रकाश करने वाले आभूषणादि।

आहाव (पुं.) कुयें की मेंड़ के पास गौ आदि के पानी के लिये पक्की चरी। हौद या छोटा कुण्ड। चोहबच्चा। लड़ाई। बुलाना। आह्वान।

आहित (त्रि.) रखा गया। स्थापित। टिकाया गया। डाला हुआ। किया हुआ। संस्कारित।

आहितुण्डिक (त्रि.) मदारी। सपेरा।

आहुति (स्त्री.) देवता के उद्देश्य से मंत्र पढ़ कर अग्नि में घी डालना। देवता के लिये होम में घी प्रदान करना।

आहुकः (पुं.) श्रीकृष्ण के बाबा का नाम।

आहुल्यं (न.) तगर। तरवट नामक वनस्पति।

आहेय (त्रि.) साँपं का विष। विष।

आहो (अव्य.) प्रश्न। विकल्प। विचार। सन्देह।

आहोपुरुषिका (स्त्री.) अहंकार से उत्पन्न अपने महत्व का विचार। दर्पजन्य आत्मोत्कर्ष। सम्भावना।

आहोस्वित् (अव्य.) विकल्प। सन्देह। प्रश्न। जानने की इच्छा। दैनिक।

आह्निक (त्रि.) नित्य का काम। स्नान, सन्ध्या तर्पणादि। भोजन। (न.) समूह। ग्रन्थ का भाग। सदैव करने का काम।

आह्लाद (पुं.) आनन्द। हर्ष। प्रसन्नता।

आह्वय (पुं.) नाम। जूआ।

आह्वान (न.) आहुति। बुलाना।

इ

इ देवनागरी वर्णमाला का तीसरा अक्षर। कामदेव का नाम। क्रोधावेश में कहा हुआ वचन। तिरस्कार। दया। खेद। विस्मय। निन्दा। कुत्सा। सम्बोधन। (क्रि.) जाना। गिरना। प्राप्त करना।

इक् (प्रत्य.) याद करना। स्मरण करना।

इकटा (स्त्री.) चटाई बुनने की एक प्रकार की घास।

इक्कवाल (पुं.) ज्योतिष में वर्षफल के सोलह योगों में से एक योग सौभाग्य। सम्पत्ति।

इक्षु (पुं.) गन्ना। ऊख। पौड़ा। कोकिला नामक दूसरा एक वृक्ष। इच्छा। अभिलाष।

इक्षुकाण्ड (पुं.) काँस और मूँज तृण। काही। गन्ना।

इक्षुदर्भा (स्त्री.) एक प्रकार की घास।

इक्षुपत्र (पुं.) घास जिसका पत्ता गन्ना जैसा हो। जुआर। अन्न भेद।

इक्षुमती (स्त्री.) गन्ने जैसे रसवाली। एक नदी का नाम।

इक्षुमेह (पुं.) मधुमेह रोग।

इक्षुर (पुं.) तालमखाना। कोकिल वृक्ष।

इक्षुसार (पुं.) गुड़। गन्ने का सत्व।
इक्ष्वाकु (पुं.) कटुतुम्बी। वैवस्तव मनु का बेटा सूर्यवंश का प्रथम राजा।
इक्ष्वालिका (स्त्री.) काँस। काही।
इख् (क्रि.) जाना। डोलना।
इगु (क्रि.) जाना। हिलना। डोलना।
इङ्ग (क्रि.) पढ़ना। अद्‌भुत।
इङ्गः (पुं.) सङ्केत। ज्ञान।
इङ्गित (न.) सङ्केत। मन के भाव को प्रकाश करने वाली शारीरिक क्रिया। मनोभिप्राय। आशय। इशारा।
इङ्गुः (पुं.) एक प्रकार का रोग।
इङ्गुद -दी (पुं.स्त्री.) इंङ्गुल हिंगोट। तापसतरु। तपस्वियों का वृक्ष, आहार में इसका फल काम आता है।
इचिकिल (पुं.) कच्चा तालाब। कीचड़।
इच्छा (स्त्री.) अभिलाष। सुख और उसका साधन। आत्मा का धर्म। चाह।
इच्छकः (पुं.) वृक्ष विशेष।
इच्छलः (पुं.) छोटा वृक्ष जो जल के समीप उगता है। हिज्जल।
इज्य (पुं.) वृहस्पति। सुरगुरु। नारायण। परमात्मा। पूज्य।
इज्या (स्त्री.) यज्ञ। दान। मिलन। प्रतिमा। गौ। कुटिनी। भेंट। पुरस्कार।
इज्वाक (पुं.) जलवृश्चिक। पनबीछी।
इट् (क्रि.) जाना।
इटः (पुं.) एक प्रकार की घास। चटाई।
इट्चरः (पुं.) साँड़ या हिरन जो स्वतंत्र छोड़ दिया जाय।
इड् (स्त्री.) (वैदिक प्रयोग) इलु, बलि। प्रार्थना। धाराप्रवाह वक्तृता। पृथिवी। भोजन सामग्री। वर्षा ऋतु। पञ्च प्रयोगों में से तीसरा प्रयोग (इडोजयति) प्रजा।
इडस्पति (पुं.) विष्णु का नाम।
इडः (पुं.) अग्नि का नाम।
इडाला (स्त्री.) पृथिवी। वाणी। बलिप्रदान। गौ। स्वर्ग। बुध की पत्नी। शरीर के दाहिने भाग की टेढ़ी नाड़ी। एक देवी। मनु की पुत्री। इसका दूसरा नाम मैत्रावारुणी भी है। इसी के गर्भ से पुरूरवा का जन्म हुआ था। दुर्गा का नाम।
इडाचिका (स्त्री.) वर्र। बर्रैया।
इडिका (स्त्री.) धरती। पृथिवी।
इण् (क्रि.) जाना।
इत (त्रि.) गया। स्मरण किया हुआ। गत। प्राप्त।
इतर (त्रि.) नीच। पामर। निम्न श्रेणी का। दूसरा। भिन्न।
इतरथा (अव्य.) अन्यथा। अन्य रीति से। और तरह से। और प्रकार से।
इतरेतर (त्रि.) अन्योन्य। परस्पर। आपस में।
इतस् (अव्य.) यहाँ से। मुझ से। यहाँ। इस ओर। इधर। इसमें। अबसे।
इतरेद्युः दूसरे दिन। अन्य दिवस।
इतस्ततः (अव्य.) इधर उधर। इसमें उसमें।
इति (अव्य.) समाप्ति। हेतु। निदर्शन। निकटता। मत। प्रत्यक्ष। अवधारण। व्यवस्था। मान। परामर्श। शब्द के यथार्थ रूप को प्रकट करने वाला। वाक्य के अर्थ का प्रकाशक।
इतिकर्त्तव्यता (स्त्री.) अवश्य करने योग्य काम करने का क्रम। जिसके अनुसार एक काम के अनन्तर दूसरा काम किया जाय।
इतिमध्ये (अव्य.) इतने में।
इतिह (अव्य.) उपदेशपरम्परा। देर से सुना जाने वाला। उपदेश। सुना सुनाया अच्छा वचन।
इतिहास (पुं.) ग्रन्थ जिसमें धर्म अर्थ और काम मोक्ष का उपदेश प्राचीन कथानकों से युक्त हो। पुरावृत्तान्त का प्रकाशक। संस्कृत में पुराने इतिहास ग्रन्थ दो ही हैं। अर्थात् महाभारत और वाल्मीकीय रामायण।
इत्थम् (अव्य.) इस तरह। इस प्रकार। ऐसे।
इत्थशालः (पुं.) ज्योतिष में वर्षफल के तीसरे योग का नाम।
इत्वर (त्रि.) निष्ठुर कर्म करने वाला। क्रूर कर्म्म। नीच। पथिक। बटोही।
इत्वरी (स्त्री.) अभिसारिका। अपने प्रणयी द्वारा निश्चित स्थान पर अपने प्रणयी से जो मिलने जाय। व्यभिचारिणी। कुलटा स्त्री।

इत्य (त्रि.) प्राप्य। पहुँचने के योग्य। जाने योग्य।
इद् (क्रि.) ऐश्वर्य होना।
इदम् (त्रि.) किसी ऐसी वस्तु को वतलाने वाला जो कहने वाले के समीप हो। यह। यहाँ।
इदानीम् (अव्य.) सम्प्रति। अव। इस समय। अभी।
इद्ध (न.) धूप। घाम। आतप। दीप्ति। प्रकाश। आश्चर्य। वृढ़ा। निर्मल। साफ।
इध्म (न.) समिध्। समिधा। काष्ठ। लकड़ी।
इनः (पुं.) योग्य। सुदृढ़। बलवान्। साहसी। प्रतापी। सूर्य। प्रभु। नृप विशेष। राजा।
इनक्षति (क्रि.) पहुँचने का यत्न करना। पाने की चेष्टा करना।
इन्दिरा (स्त्री.) लक्ष्मी। कमला। धन की अधिष्ठात्री देवी। विष्णु की स्त्री।
इन्दिवर (न.) लक्ष्मी का प्रिय। नीलोत्पल। नीला कमल। इन्दीवर।
इन्दु (पुं.) चन्द्रमा। मृगशिर नक्षत्र। एक संख्या। कपूर। चाँदनी से पृथिवी को गीला करने वाला।
इन्दुकलिका (स्त्री.) केतकी। निवाड़ी केवड़े का फूल।
इन्दुकान्त (पुं.) चन्द्रकान्तमणि। यह मणि चन्द्रमा के सामने पिघलती है।
इन्दुजनक (पुं.) चाँद को पैदा करने वाला समुद्र। अत्रिऋषि (इनके नेत्र से भी चन्द्र की उत्पत्ति किसी कल्प में होती है।)
इन्दुजा (स्त्री.) चन्द्र से निकली नर्मदा नदी। चाँदनी।
इन्दुपुत्र (पुं.) चन्द्रपुत्र अर्थात् वुध।
इन्दुभृत (पुं.) शिव। शङ्कर। महादेव।
इन्दुमती (स्त्री.) पूर्णिमा। राजा अज की स्त्री।
इन्दुरत्न (पुं.) मुक्ता। मोती।
इन्दुलेखा (स्त्री.) चाँद की कला। सोमलता। अमृतलता।
इन्दुवासर (सं.) चन्द्रमा का वार। सोमवार।
इन्द्र (पुं.) देवताओं का स्वामी। परमेश्वर। ज्येष्ठा नक्षत्र। द्वादश सूर्यों में से एक। चौदह की संख्या।
इन्द्रक (न.) सभाभवन। कमेटी घर।
इन्द्रकील (पुं.) मन्दर पर्वत।
इन्द्रगोप (पुं.) पटबीजना। वर्षाती लाल रङ्ग का कीड़ा।
इन्द्रजालिक (त्रि.) मदारी। जादूगर। छलिया।
इन्द्रजित् (पुं.) इन्द्र को जीतने वाला। मेघनाद। रावण का पुत्र।
इन्द्रधनुष (न.) सूर्य की किरणें जो धनुषाकार बादलों पर पड़ कर विचित्र रङ्ग धारण करती हैं।
इन्द्रनील (पुं.) मरकत मणि। नीलम।
इन्द्रनेत्र (न.) एक हजार की गिनती।
इन्द्रपर्वत (पुं.) महेन्द्र पर्वत।
इन्द्रपुरोहित (पुं.) बृहस्पति।
इन्द्रप्रस्थ (न.) दिल्ली नगर।
इन्द्रभेषज सोंठ। शुण्ठी।
इन्द्रवंशा (स्त्री.) जिसके प्रति पाद में बारह अक्षर हों-वह छन्द।
इन्द्रवज्रा (स्त्री.) ग्यारह अक्षरों के पाद वाला छन्दविशेष।
इन्द्रशत्रु (पुं.) वृत्रासुर।
इन्द्राणी (स्त्री.) शची। सिन्धुवार वृक्ष। बड़ी। इलायची। षोडशमातृकाओं में से प्रथम माता। लता विशेष।
इन्द्रायुध (न.) ब्रज। इन्द्र-धनुष।
इन्द्रिय (न.) ईश्वर-प्रणीत ज्ञान और कर्म के साधन अर्थात् हाथ, पैर, कान, नाक आदि।
इन्द्रियार्थ (पुं.) इन्द्रियों के विषय। यथा-शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध।
इन्द्रियायतन (न.) शरीर।
इन्ध (क्रि.) जलना। चमकना। आग का जलना।
इन्धन (न.) लकड़ी। इन्धन।
इभ (पुं.) हाथी। निर्भीक। शक्ति। नौकर। अधीनस्थ। आठ की गिनती।
इभकणा (स्त्री.) बड़ी पीपल। गजपिप्पली।
इभनिमिलिका (स्त्री.) वनस्पति विशेष जिसके सेवन से हाथी भी सो जाय। भाङ्ग। विजया। बूटी।
इभपालक (पुं.) हस्पितक। पीलवान। महावत।
इभपोटा (स्त्री.) युवा हथिनी।

इभपोतः (पुं.) हाथी का वच्चा।
इभमाचल (पुं.) शेर। केशरी।
इभया (स्त्री.) स्वर्णक्षीरी।
इभ्य (त्रि.) बड़ा धनी। धनवान् मालिक।
इभ्या (स्त्री.) हथिनी। हस्तिनी।
इभ्यक (पुं.) धनी।
इयत् (त्रि.) इतना। एतावत्।
इयत्ता (स्त्री.) सीमा। माप। गिनती।
इरम्मद (पुं.) बिजली। बज्राग्नि। समुद्र की आग। बड़वानल।
इरा (स्त्री.) धरती। भूमि। वाणी। सुरा। मद्य। जल। अन्न। कश्यप की स्त्री।
इरावती (स्त्री.) एक नदी का नाम। यह नदी पञ्जाब में है और इसका प्रसिद्ध नाम रावी है। दुर्ग।
इरिण (न.) ऊसर भूमि। आश्रयशून्य। सूना।
इरेश (पुं.) वरुण। वृहस्पति। राजा। विष्णु।
इर्वारू-लु (स्त्री) कर्कटी। आलू।
इल् (क्रि.) धोना। फेंकना।
इलविला (स्त्री.) कुबेरजननी। पुलस्त्य की स्त्री। माता का नाम इलविला होने से कुबेर का नाम ऐलविल है।
इला (स्त्री.) भूमि। पृथिवी। गौ। वाणी। जम्बूद्वीप के नव वर्षों में से एक। वैवस्वत मनु की कन्या। बुध की स्त्री।
इलावृत (न.) जम्बूद्वीप के नव वर्षों में से एक। चार सीमा वाला देश। जगत् के नव खण्डों में से एक।
इली (स्त्री.) छोटा खड्ग। छुरी। करवालिक।
इलीविल (पुं.) एक दैत्य जिसे इन्द्र ने परास्त किया था।
इल्वल (पुं.) अति चञ्चल। एक प्रकार का मच्छ। एक दैत्य जो अगस्त्य द्वारा मारा गया था।
इव् (क्रि.) फैलना। (अव्य.) जैसा। थोड़ा। मानों। बराबरी। थोड़ा। वाक्यालंकार।
इष् (क्रि.) चाहना। पसन्द करना। चुनना। माँगना। प्रार्थना करना। सरकना। जाना।
इष (पुं.) आश्विन मास। जिस मास में जय की इच्छा करने वाले यात्रा करते हैं।
इषु (पुं.) बाण। तीर। पाँच की संख्या।
इषुधिः (पुं.) तरकस। बाण रखने का स्थान।
इष्ट (त्रि.) आदर किया गया। पूज्य। अभिलषित। चाहा गया। प्रिय। यज्ञादि कर्म। रेड़ी का पेड़। (पुं.) संस्कार (न.) चाह। धर्म कार्य।
इष्टका (स्त्री.) मिट्टी आदि का वना हुआ एक प्रकार का मिट्टी का खण्ड अर्थात् ईंट। खपरैल।
इष्टा (स्त्री.) शमी वृक्ष।
इष्टापूर्त्तम् (न.) अग्निहोत्र तप। सत्य। यज्ञ। दान। वेदरक्षा। आदित्य। वैश्वदेव। ध्यानादि कर्म। बावली। कुँआ। तालाब। देवालय। अन्नदान। वाटिका रोपना आदि इष्टों की पूर्ति।
इष्टि (स्त्री.) यज्ञ। दर्श पौर्णमास यज्ञभेद। अभिलाषा। इच्छा। चाह।
इष्वासन (पुं.) धनुष।
इह (अव्य.) यहाँ। इस समय। इस देश में। इस जगत में। अब।
इहलः (पुं.) चेदि देश का नाम।
इहामुत्र (अव्य.) यहाँ वहाँ। इस लोक और परलोक में।

ई

ई (स्त्री.) लक्ष्मी तथा कामदेव का नाम। अनुत्साह। पीड़ा। शोक। क्रोध। अनुकम्पा। कृपा। प्रत्यक्ष। पुकारना।
ई (क्रि.) जाना। चमकना। फैलना। इच्छा करना। फेंकना। माँगना। गर्भ धारण करना।
ईक्ष् (क्रि.) देखना। ताकना। जानना। विचार करना।
ईक्षण (न.) देखना। दृष्टि। आँख।
ईक्षणिक (त्रि.) मनुष्य के शारीरिक चिह्नों अथवा जन्मकुण्डली को देख कर शुभाशुभ फल बतलाने वाला। दैवज्ञ। सामुद्रक जानने वाला। सगुनोतिया। सगुन उठाने वाला। ज्योतिषी।
ईक्षा (स्त्री.) दर्शन। देखना।
ईख् (क्रि.) डोलना। झूलना। हिलना।
ईज् (क्रि.) जाना। भर्त्सना करना। दोषारोपण करना।
ईड् (क्रि.) स्तुति करना। सराहना।
ईडा (स्त्री.) स्तुति। प्रशंसा। सराहना।

ईण्मत् (पुं.) जिसका कोई स्वामी या प्रभु हो।

ईति (स्त्री.) उत्पन्न हुआ। खेती सम्बन्धी छः प्रकार के उपद्रव यथा-१. अतिवृष्टि। २. अनावृष्टि। ३. मकड़ी। ४. चूहे। ५. तोता। ओर ६. राजाओं का दौरा। यात्रा करना। कष्ट।

ईदृक्ष (त्रि.) इसके समान। ऐसा। इसके बराबर। इसके सदृश।

ईप्सित (त्रि.) अपेक्षित। चाहा हुआ। इष्ट।

ईर् (क्रि.) जाना।

ईर्म्मम् (न.) व्रण। घाव। फोड़ा। जखम।

ईर्ष्य (क्रि.) डाह करना। होड़ करना।

ईर्ष्या (स्त्री.) डाह। दूसरे की बढ़ती को देख कर जलना। बैर।

ईला (स्त्री.) पृथिवी। वाणी। गौ। स्तुति।

ईलिः-ली (स्त्री.) हथियार। छुरी। करवालिका।

ईवत् (अव्य.) इतना लम्बा। ऐसा भड़कदार।

ईश् (क्रि.) शासन करना। शक्तिमान् होना। स्वामी के समान बर्ताव करना। परवानगी देना।

ईशान (पुं.) महादेव। परमेश्वर। धनी। प्रभु। आर्द्रा नक्षत्र। शिव की अष्ट मूर्त्तियों में सूर्य की मूर्त्ति। शमी वृक्ष। विष्णु। दुर्गा।

ईशिता (स्त्री.) अष्ट ऋद्धियों पर प्रभुत्व।

ईश्वर (पुं.) महादेव। कामदेव। चैतन्य आत्मा। परमेश्वर। पातञ्जल के मतानुसार क्लेश कर्मविपाकाशयों से अस्पृश्य पुरुष विशेष। पहिला। स्वामी। लताभेद।

ईष (पुं.) स्वामी। मालिक। महादेव। परमेश्वर।

ईषत् (अव्य,) अल्प। थोड़ा। कुछ।

ईषत्कर (पुं.) लेशमात्र, थोड़े से यत्न या प्रयास से सिद्ध हो जाने वाला।

ईषदुष्ण (पुं.) गुनगुना। कुछ कुछ गर्म। मन्दोष्ण।

ईषा (स्त्री.) हलदण्ड। हल की नोंक। हल की फाल।

ईषिका (स्त्री.) हाथी की आँख की पुतली। चित्रकार की कूँची। तीर। अस्त्र।

ईह (क्रि.) अभिलाषा करना। चाहना। वस्तु पाने के लिये प्रयत्नशील होना।

ईहा (स्त्री.) चेष्टा। उद्योग। प्रयत्न। वाञ्छा।

ईहित (त्रि.) ढूँढ़ा हुआ। खोजा हुआ। प्रार्थित। (सं.) अभिलाषा। चाह। इच्छा किया हुआ।

उ

उ हिन्दी वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर।

उ (क्रि.) शब्द करना। कोलाहल मचाना। धौंकना। गरजना। माँगना। तगादा करना।

उः (सं.) शिव का नाम। ब्रह्म का नाम। चन्द्र का बिम्ब। सम्बोधन का शब्द। क्रोध। दया। अनुकम्पा। आज्ञा। विस्मय। हैरानी।

उकानहः (सं.) लाल और पीले रङ्ग का घोड़ा।

उकुणः (पुं.)खटमल। खटकीरा।

उक्त (त्रि.) कथित। कहा गया। कथन। कहना। एक अक्षर के पाद का चिह्न।

उक्ति (स्त्री.) कहना। कथन।

उक्थ (न.) नव प्रकार के सामवेद का एक भाग। सामवेद का प्रधान अङ्ग। महाव्रताख्य यज्ञ। प्राण। कथन। वाक्य। स्तोत्र। प्रशंसा।

उक्ष् (क्रि.) छिड़कना। सींचना। भिंगोना। नम करना। उड़ेलना। फैलाना। साफ करना।

उक्षतर (पुं.) तीसरी अवस्था को पहुँचा हुआ वैल। बड़ा बैल।

उक्षन् (पुं.) बड़ा। सोम। मरुत। अग्नि। ऋषभौषधि।

उक्षाल (पुं.) तेज। भयानक। ऊँचा। बड़ा। सर्वोत्तम। बन्दर।

उख् (क्रि.) जाना। हिलना। डोलना।

उख (पुं.) पाकपात्र। किसी वस्तु को उबालने का पात्र। बटलोई। भगौना। तसला। वेदी। शरीर का अङ्ग।

उग्र (त्रि.) भयानक। निष्ठुर। बनैला। बली। दृढ़। तीक्ष्ण। तेज। क्रुद्ध। क्षत्रिय पिता और शूद्रा माता के गर्भ से उत्पन्न सन्तान। वायु की मूर्त्ति धारण करने वाले शिव। विष विशेष। नक्षत्र-समूह।

उग्रकाण्ड (पुं.) करेला। कारवेल्ल अर्थात् करेला का वृक्ष।

उग्रगन्ध (त्रि.) तेज गन्धवाला। चम्पा। चमेली। अर्जक वृक्ष। लशुन। हींग।

उग्रधन्वन् (त्रि.) जिसका धनुष बड़ा तेज हो। महादेव। इन्द्र।
उग्रश्रवस् (पुं.) रोमहर्षण का पुत्र। सुनी हुई बात को तुरन्त अवधारण करने वाला।
उग्रसेन (पुं.) कंस का पिता। यह यदुवंश था और इसका दूसरा नाम आहुक था। धृतराष्ट्र का पुत्र।
उच् (क्रि.) एकत्र करना। योग्य होना।
उचित (त्रि.) योग्य। मुनासिब।
उच्च (त्रि.) ऊँचा। उन्नत।
उच्चतरु (पुं.) नारियल का वृक्ष।
उच्चक्षुस् (पुं.) आँख उठाए हुए।
उच्चाटन (न.) उत्पाटन। उखाड़ना। अपनी जगह से अलग करना। किसी मन्त्र-प्रयोग से पागल कर देना।
उच्चण्ड (पुं.) बड़ा उग्र। बलवान्।
उच्चार (पुं.) उच्चारण। कहना। विष्ठा। मल।
उच्चावच (त्रि.) बड़े-छोटे। ऊँचे-नीचे।
उच्चूलन (पुं.) ऊँची चोटी वाला। झण्डे के ऊपर वाला। भूषण। झण्डा।
उच्चैःश्रवस (पुं.) ऊँचे कान वाला। इन्द्र का घोड़ा।
उच्चैर्घुष्ट (न.) ढण्डोरा। डौंड़ी। मुनादी।
उच्चैस् (अव्य.) ऊँचा। बड़ा। लम्बा।
उच्छिख (त्रि.) आगे से ऊँचा। चोटी उठी हुई।
उच्छित्ति (स्त्री.) उच्छेद। नाश। विनाश।
उच्छिष्ट (त्रि.) जूठा। भोजन करने से बचा हुआ। छोड़ा हुआ।
उच्छीर्षक (न.) तकिया। बालिश।
उच्छुष्क (न.) सूखा हुआ।
उच्छून (त्रि.) फूला हुआ। बढ़ा हुआ।
उच्छृङ्खल (त्रि.) विनयरहित। निरातङ्क। बेकाबू। बेलगाम।
उच्छेत्तृ (पुं.) नष्ट करने वाला।
उच्छेद (क्रि.) छेदन करना। तोड़ना।
उच्छोथ (पुं.) सूजन।
उच्छोषण (त्रि.) सुखाने वाला। सन्तापक।
उच्छ्वसन (न.) सुस्त पड़ जाना।
उच्छ्वासन (न.) साँस लेना। प्राण।
उच्छ्राय (पुं.) ऊँचाई।
उच्छ्रित (त्रि.) ऊँचा। बढ़ा हुआ।
उच्छ्वास (पुं.) भीतर जाने वाली श्वास। आख्यायिका का अध्याय। प्राण।
उछ् (क्रि.) दानों का बटोरना। बाँधना। समाप्त करना।
उज्जयिनी (स्त्री.) उज्जैन नगरी। अवन्ती पुरी। विक्रमादित्य की राजधानी।
उज्जागर (पुं.) भड़का हुआ। उत्तेजित।
उज्जासन (न.) मारण। मारना।
उज्जिति (स्त्री.) जीत।
उज्जृम्भ (पुं.) खिलना। फूटना। विकाश। जमुहाई।
उज्ज्वल (पुं.) चमकदार। चमकीला। दमकता हुआ। शृङ्गार।
उज्झ (क्रि.) छोड़ना। भूलना।
उञ्छन (पुं.न.) हाट आदि में गिरे हुए अनाज के बचे और जमीन पर पड़े दानों को बीनना।
उटज (पुं.न.) पत्रकुटी। पर्णशाला।
उड् (क्रि.) इकट्ठा करना।
उड (स्त्री.न.) तारा। नक्षत्र। जल।
उडप (पु.न.) चन्द्र। चाँद। चन्द्रमा।
उडपति (पुं.) तारों का पति। चन्द्रमा। जल का स्वामी। वरुण।
उड्डामर (त्रि.) अतिप्रचण्ड। बड़े जोर का। सब से ऊँचा।
उड्डयन (न.) उड़ान।
उत (अव्य.) विकल्प। और। भी। क्या। अथवा। या तो। प्रश्न। अत्यर्थ।
उतथ्य (पुं.) अङ्गिरा से श्रद्धा में उत्पन्न। वृहस्पति के बड़े भाई का नाम।
उताहो (अव्य.) विकल्प। सन्देह। प्रश्न। ऐसा या ऐसा। विचार।
उत्क (त्रि.) अन्यमनस्क। उत्कण्ठित।
उत्कञ्चुक (पुं.) चोली का बन्द। कुर्ता आदि पहने हुए।
उत्कट (पुं.) अत्यधिक। अतीव। बहुत। तेज। (सं.) बाण। दारचीनी। मत्त हस्ती।
उत्कण्टकित (पुं.) काँटे या बालदार।

उत्कण्ठ (पुं.) उठी हुई गर्दन वाला।

उत्कण्ठा (स्त्री.) चाही हुई वस्तु को जल्दी पाने की चिन्ता। फ़िकिर। दुःख। विकलता। किसी प्रिय वस्तु को पाने की इच्छा।

उत्कर (पुं.) धानादि का एकत्र करना। फैलाना। हाथ पाँव पसारना। घास का विखेरना। टीला।

उत्कर्ण (न.) कान छेदना।

उत्कर्ष (पुं.) अतिशय। अत्यधिक। बहुत अधिक। उन्नति।

उत्काल (पुं.) उड़ीसा प्रदेश। शिकारी। भारवाहक। बोझ ढोने वाला। ब्राह्मणों की एक जाति।

उत्कलिका (स्त्री.) उत्कण्ठा। कली। लहर।

उत्कार (पुं.) धानों को एकत्र करना और ऊपर उछालना। फेंकना।

उत्किर (पुं.) गुफना की तरह घुमाना।

उत्कीर्ण (त्रि.) फैलाया गया। फेंका गया। वेधा गया। गढ़ा गया। उल्लिखित।

उत्कीलित (न.) खुला हुआ।

उत्कुण (पुं.) जूँ। चील्हर। केशों में उत्पन्न होने वाले कीड़े।

उत्कुल (पुं.) पतित।

उत्कूर्दन (न.) फलाङ्ग। छलाङ्ग।

उत्कूल (त्रि.) किनारे तक भरा हुआ।

उत्कृति (स्त्री.) एक छन्द विशेष।

उत्कृष्ट (पुं.) श्रेष्ठतर।

उत्कोच (पुं.) घूँस। रिश्वत।

उत्क्रम (पुं.) उलटा क्रम। विदा। नियम विरुद्ध। उछलना।

उत्क्रोश (पुं.) कूंज। चिल्लाहट। कुररी पक्षी।

उत्क्षिप्ति (पुं.) उछाल। फेंक। लुकान।

उत्खात (त्रि.) उत्पाटित। उखाड़ा हुआ।

उत्तंस (पुं.) कान में पहनने का गहना। कलगी। शिरोभूषण। हार।

उत्तप्त (त्रि.) सन्तप्त। तपा हुआ। गरम। स्नान किया हुआ। सूखा मांस।

उत्तम (पुं.) बहुत अच्छा।

उत्तमर्ण (पुं.) महाजन। ऋणदाता।

उत्तमाङ्ग (न.) मस्तक। सब से अच्छा अङ्ग।

उत्तम्भ (क्रि.) ठहरना। पकड़ना। रोकना। भरोसा देना। कुत्सा से हटना। आराम करना।

उत्तर (न.) जवाब। उत्तर नाम की दिशा। उदीची। विराटराज के पुत्र का नाम। पीछे। योग्य। ऊँचा। अच्छा। अन्तिम।

उत्तरकोशला (स्त्री.) अयोध्या नगरी।

उत्तरकाय (पुं.) शरीर का ऊपरी भाग।

उत्तरङ्ग (पुं.) ऊँची लहरों वाला। दरवाजे के ऊपर की लकड़ी।

उत्तरच्छद (पुं.) ढकना। बिछौने की चादर। अँगोछा।

उत्तरमीमांसा (स्त्री.) अगला विचार। फैसले की बात। वेदान्त दर्शन।

उत्तरा (स्त्री.) सपिण्डीकरण के अनन्तर की क्रियाएँ। उत्तर दिशा। काल देश। राजा परीक्षित की माता।

उत्तरात् (अव्य.) उत्तर दिशा। उत्तर की ओर। उत्तर काल।

उत्तराधिकारिन् (त्रि.) एक स्वत्वाधिकारी के अनन्तर जो दूसरा स्वत्वाधिकारी हो सकता है, वह उत्तराधिकारी कहलाता है। पीछे का अधिकारी। वारिस।

उत्तराभास (पुं.) दुष्ट उत्तर। बुरा जवाब।

उत्तरायण (न.) उत्तरी मार्ग। वह समय जब सूर्य उत्तर की ओर झुकते हैं। मकर संक्रान्ति से ले कर मिथुन तक छः महीने मकर संक्रमण का दिन।

उत्तरीय (न.) ऊपर का कपड़ा। दुपट्टा। अङ्गा। चुगा।

उत्तरेण (अव्य.) उत्तर। उत्तर की ओर।

उत्तान (त्रि.) विस्ताररहित। ऊपर की ओर मुँह किये हुए।

उत्तानशय (त्रि.) ऊपर को मुँह कर के सोने वाला। छोटा बच्चा। शिशु।

उत्ताप (पुं.) उष्णता। गरमी। दुःख। सन्ताप।

उत्तार (त्रि.) तारा। बहुत ऊँचा। अच्छे तारे वाला। उतार।

उत्ताल (त्रि.) प्रतिष्ठित। प्याला। ऊँचा। भयङ्कर। बन्दर। अत्युत्तम।

उत्तीर्ण (त्रि.) मुक्त। सफलीभूत। पार हुआ। छूट गया।

उत्तुङ्ग (पुं.) वड़ा ऊँचा।

उत्तुष (पुं.) धान की खीलें।

उत्तेजना (स्त्री) प्रेरणा। तेज करना। घबराना। चमकाना। उत्साहित करना। पैना करना।

उत्थान (क्रि.) उठ खड़े होना। उद्यम। लड़ाई। मन्दिर। बेड़ा। सेना। मैदान।

उत्पत (पुं.) पक्षी। चिड़िया।

उत्पत्ति (स्त्री) जन्म। उद्भव। जीव का शरीर से संयोग। आविर्भाव।

उत्पल (न.) नीला कमल। दुर्बल। मांसरहित। कुष्ठ रोग की दवा।

उत्पाटन (न.) उन्मूलन। उखाड़ना।

उत्पात (पुं.) उपद्रव।

उत्पादक (पुं.) पैदा करने वाला।

उत्पादशय (पुं.) ऊपर को पैर कर के सोने वाला। टिट्टिभपक्षी। टिटहरा।

उत्प्रास (पुं.) हँसना। उपहास।

उत्प्रेक्षा (स्त्री.) समानता। अर्थालङ्कार भेद जिसमें मुख्य विषय को छोड़ कर अन्यके साथ एक ही होने का विचार किया जाय।

उत्प्लवन (न.) फलाङ्गना। कूद जाना। छलाङ्ग भरना।

उत्प्लवा (स्त्री.) नौका। डोंगी।

उत्फुल्ल (त्रि.) खिला हुआ।

उत्स (पुं.) झरना। सोता।

उत्सङ्ग (पुं.) क्रोड़। गोद। गोदी।

उत्सर्ग (पुं.) फेंक देना। त्यागना। अर्पण करना। देना। न्याय।

उत्सव (पुं.) आनन्ददायी कार्य। विवाहादि कर्म। प्रसन्नता। पर्व। त्योहार।

उत्सादन (न.) निकालना। नाश करना। सुगन्धि लगाना। चढ़ना। खेत मे दुबारा हल चलाना। मैला साफ करना। उबटना लगाना।

उत्सारण (नं.) निकालना। दूर हटाना। चालना। हिलाना। किसी वस्तु को हटा कर दूसरी जगह कर देना।

उत्साह (पुं.) उद्यम। राजाओं का विशेष गुण। किसी कार्य को अवश्य करने का यत्न। सुख। इच्छा।

उत्सिक्त (त्रि). घमण्डी। गर्वीला। उद्धत। स्नान किया हुआ। बढ़ा हुआ। नियम भङ्ग करने वाला।

उत्सुक (त्रि.) उत्कण्ठित। व्याकुल। उद्विग्न।

उत्सृष्ट (त्रि.) छोड़ा हुआ। दिया गया

उत्सेक (पुं.) अहङ्कार। आधिक्य। उठा कर बाहर सींचना।

उत्सेध (पुं.) ऊँचाई। शरीर। लम्बा।

उद् (अव्य) ऊपर। बाहिर।

उद (न.) पानी।

उदक (न.) जल। पानी।

उदकाञ्जलि (स्त्री) अञ्जलि भर जल।

उदक्या (स्त्री) जो स्त्री चौथे दिन नहा कर शुद्ध हो।

उदगद्रि (पुं.) उत्तर का पहाड़ हिमालय।

उदगयन (न.) उत्तर का आश्रय लेना। सूर्य का उत्तर की ओर जाना। उत्तरायण।

उदग्र (पुं.) उठा हुआ।

उदङ्क (पुं.) कुप्पा। चमड़े का बना पात्र।

उदञ्च (पुं.) ऊपर की ओर। उत्तर की ओर।

उदञ्चन (न.) ढकना। डोल।

उदय (पुं.) पूर्व का पर्वत। उगना। ऊँचा होना।

उदधि (पुं.) घट। घड़ा। समुद्र।

उदन्त (पुं.) बात। वृत्तान्त। साधु।

उदन्या (स्त्री) प्यास। प्यास।

उदन्वत् (पुं.) मत्स्य। समुद्र।

उदपान (पुं.) चोबच्चा। होदी। खात। गढ़ा।

उदधान (पुं.न) पानी का कुण्ड।

उदन् (न.) लहर। पानी।

उदन्त (पुं.) संवाद।

उदर (न.) पेट। जठर। नाभि और स्तनों के बीच के शरीर का भाग। युद्ध। लड़ाई। पेट का रोग।

उदरम्भरि (पुं.) पेटू। मरभुक्का।

उदरावर्त (पुं.) नाभि।

उदरिणी (स्त्री.) गर्भवती।
उदर्क (पुं.) अन्त। भविष्य। परिणाम। फल।
उदर्चिस (पुं.) अग्नि। कामदेव। शिव। ऊँची लाट।
उदवसित (न.) वासगृह। घट।
उदहार (पुं.) पानी जाकर लाना।
उदात्त (पुं.) ऊँचे स्वर से उच्चारण किया गया स्वर। ऊँचा। मनोहर। बड़ा। अलंकारभेद। ऊँचा शब्द। अच्छा। चमकने वाला। बड़ा बाजार।
उदान (पुं.) शरीर के पाँच पवनों में से एक प्राण वायु। गले की हवा। नाभि। सर्पभेद।
उदार (पुं.) दाता। व्ययी। पार्वती। चतुर। गम्भीर। असाधारण।
उदासीन (त्रि.) वीतरागी। संन्यासी। उपदेशक। किसी से सम्बन्ध न रखने वाला।
उदास्थित (पुं.) व्रतभङ्ग। यती।
उदाहरण (न.) दृष्टान्त। मिसाल। प्रयन्तर। पटतर।
उदाद्वृत (त्रि.) दृष्टान्तरूप से दिखाया गया।
उदित (पुं.) कहा गया। उठा। निकला। डेग। बढ़ा।
उदितोदित (न.) विद्वान्।
उदीक्षा (स्त्री.) ऊपर देखना।
उदीच्य (त्रि.) उत्तरकाल में होने वाली वस्तु। उत्तरीय। सरस्वती नदी का उत्तर-पश्चिमी भाग। बाला नामी गन्धद्रव्य।
उदीरण (न.) कहना। उच्चारण करना। बोलना।
उदीर्ण (त्रि.) उदार। बड़ा।
उदुम्बर (पु.) गूलर का वृक्ष या फल।
उदुम्बल (गु.) ताँबे जैसा रङ्ग वाला।
उदूढ (त्रि.) ब्याहा हुआ।
उद्गत (त्रि.) उदय हुआ। उगा हुआ। ऊँचा गया।
उद्गम, निकलना। चढ़ना।
उद्गमनीय (न.) दो साफ सुथरे कपड़े।
उद्गाढ़ (न.) अतिशय। अत्यन्त। बहुतही।
उद्गातृ (पुं.) सामवेद गाने वाला।
उद्गार (पुं.) उगाल। वमन। शब्द। थूक।
उद्गीथ (पुं.) सामवेद का एक भा।
उद्गूर्ण (त्रि.) उद्यत। तत्पर हथियार उठाना।
उद्ग्राह (पुं.) स्वागत।
उद्ग्रीव (पुं.) गर्दन उठाये हुए।
उद्घहन (पुं.) पीटना। मारना। ढोना।
उद्घर्षण (न.) पीसना। रगड़ना। खुजलाना।
उद्घाटक (पुं.न.) गिर्री। चरखी। अरघट। घूरना। रुकावट दूर करना। खोलना। कुञ्जी।
उद्घात (पुं.) आरम्भ। पाँव का फिसलना। प्राणायाम भेद। ऊँचा। मुदगर। शस्त्र। ग्रन्थ का भाग विशेष।
उद्घोष घोषण।
उद्दण्ड (पुं.) असाधारण कार्य करने वाला, उजड्ड।
उद्दर्प (पुं.) क्रोधी। रिसहा।
उद्दलन (न) चीरना। फाड़ना। मलना। मसलना।
उद्दाम (न.) खुला हुआ। चुल्ली। समुद्र की आग।
उद्दामनः (त्रि.) बन्धनरहित। खुला हुआ। स्वतंत्र। वरुण का नाम।
उद्दिष्ट (त्रि.) उपदिष्ट। चाहा गया। छन्दशास्त्र में प्रस्तार के विशेष ज्ञान का साधन।
उद्दीपन (न.) प्रकाशन। रोशनी। भड़काना। उत्तेजित।
उद्देश (पुं.) अनुसन्धान। ढूँढ़ना। खोजना। इच्छा। चाह। निशान। लिये। संक्षेप। वस्तु का नाम लेना। निमित्त। लक्ष।
उद्द्राव (पुं.) भागना। दौड़ना।
उद्योत (पुं.) प्रकाश। धूप।
उद्धत (पुं.) राजाओं का पहलवान। बोलने में बड़ा चञ्चल। अनविचारे बोलने वाला। अविनीत। अनसिखा। अहङ्कारी। उठा हुआ। अतिनिष्ठुर। उत्तेजनापूर्ण।
उद्धरण छुटकारा। वमन। उऋण होना। उखाड़ना।
उद्धर्ष (न.पुं.) उत्सव। आनन्द। पर्व। तीज त्योहार। शरदोत्सव।
उद्धर्षण (न.) रोमाञ्च। शरीर के रोओं का खड़ा होना।
उद्धव (पुं.) यज्ञाग्नि। श्रीकृष्ण के प्रिय यादव विशेष। उत्सव।
उद्धार (पुं.) जो उठाया जावे। जिसे शोधन करना पड़े। ऋण। छुटकारा। सम्पदा। खींच कर बाहर निकालना।
उद्धृत (त्रि.) उठाया गया। छुड़ाया गया। पृथक्

किया गया। रक्षा किया गया। प्रतिलिपि करना। खींच लेना।

उद्बन्धन (न.) अपने गले में रस्सी बाँधना। फाँसी लगाना।

उद्बाहु (गु.) बाँह उठाये हुए।

उद्बुद्ध (त्रि.) विकसित। खिला हुआ। जागा हुआ।

उद्बोध (पुं.) थोड़ी समझ। पहचान। स्मरण।

उद्भट (पुं.) असाधारण। ग्रन्थ से बाहर का श्लोक। फुटकल। सूर्य। प्रसिद्ध।

उद्भव (पुं.) उत्पत्ति। जन्म। निकलना। पैदा होना।

उद्भिज्ज (त्रि.) अंकुर। भूमि फाड़ कर उत्पन्न हुआ वृक्ष। वनस्पति। स्थावर।

उद्भिद (त्रि.) वृक्ष। झाड़ी। लता। यज्ञ।

उद्भूत (त्रि.) उत्पन्न। प्रकट हुआ। प्रत्यक्ष जिसे हम देख सकें।

उद्भेद (पुं.) फुहारा। देह पर रोओं का खड़ा होना। जन्म। उत्पत्ति।

उद्भ्रम (पुं.) उद्वेग। व्याकुलता। घबराहट। भूल। चिन्ता। घूमना।

उद्भ्रमण (न.) उड़ना।

उद्भ्रान्त (न.) तलवार घुमाना। निकलना।

उद्यत (त्रि.) तैयार हुआ। ऊँचा किया गया। ग्रन्थ का अध्याय।

उद्यम (पुं.) उद्योग। हिम्मत। कोशिश। तैयारी।

उद्यान (न.) जाना। सैर करना। उपवन। बगीचा। आशय।

उद्योग (पुं.) यत्न। उपाय। चेष्टा। उत्साह।

उद्रिक्त (त्रि.) अधिक। बढ़ा हुआ।

उद्रेक (पुं.) बाढ़। उपक्रम। प्रारम्भ। नीम का पेड़।

उद्वत् (स्त्री.) उचान। ऊँचाई।

उद्वर्तन (न.) उबटना। उबटन लगाना। चन्दन लगाना। घिसना। उछलना।

उद्वान्त (पुं.) वमन करना। बाहर निकालना।

उद्वासन मारना। विसर्जन। विदा करना। छोड़ना।

उद्वाह (पुं.) विवाह। परिणय।

उद्बाहु (त्रि.) भुजा ऊपर किये हुए।

उद्विग्न (त्रि.) विकल। घबड़ाया हुआ। उद्वेग युक्त।

उद्वृत्त (त्रि.) दुर्वृत्त, दुराचारी।

उद्वेग (पुं.) बिछोह से दुःखी होना। निश्चल। शीघ्र जाने वाला।

उद्वेल (त्रि.) मर्यादा भङ्ग करने वाला।

उद्वेष्टन (न.) पैर हाथ का बन्धन। दस्ताने। पगड़ी। खुला हुआ। मुक्त।

उन्द (क्रि.) गीला करना।

उन्दुरु (पुं.) मूसा। चूहा।

उन्न (त्रि.) आर्द्र। गीला।

उन्नति (स्त्री.) उदय। बढ़ती। वृद्धि। गरुड की स्त्री।

उन्नद्ध (त्रि.) बढ़ा हुआ। भली प्रकार बँधा हुआ।

उन्नमन (न.) सीधा खड़ा करना।

उन्नमित (त्रि.) उठाया गया। ऊँचा किया गया।

उन्नस (न.) ऊँची नोंक वाला।

उन्निद्र (त्रि.) खिला हुआ। निद्राशून्य। निद्रा न आने का एक रोगविशेष।

उन्मत्त (पुं.) पागल। धतूरा। मुचकुन्द का पेड़। ग्रहपीड़ित।

उन्मद (त्रि.) पागल। जिसे नशा चढ़ा हो। मादक द्रव्य।

उन्मनस (त्रि.) घबड़ाया हुआ। जिसका मन डाँवाडोल हो।

उन्मथ (पुं.) वध करना। मार डालना। हत्या करना।

उन्माथ (पुं.) मांस का टुकड़ा रख कर बनैले पशुओं को फँसाने का जाल या फन्दा। मारना। नष्ट भ्रष्ट करना। विवश करना।

उन्माद (पुं.) पागलपन। सिड़ीपन।

उन्मान (न.) तोल। तोला। माशा आदि।

उन्मिषित (त्रि.) प्रस्फुटित। खिला हुआ।

उन्मीलन (न.) खोले हुए। उन्मेष। नेत्र का खोलना।

उन्मुख (त्रि.) ऊँचे मुख वाला। किसी कार्य में लगा हुआ।

उन्मूलन (न.) जड़ से उखाड़ डालना। समूल नष्ट कर डालना।

उन्मेष (पुं.) नेत्र आदि का खोलना। थोड़ा सा प्रकाश।

उन्मोचन (न.) खोलना। मुक्त करना। स्वतन्त्र करना।

उन्मोटन (न.) तोड़ डालना।

उप (अव्य.) सामीप्य। अधिक। सादृश्य। आरम्भ। न्यून।

उपकण्ठ (त्रि.) निकट। गले के समीप। गाँव का पिछवाड़ा। घोड़े की उछलने की चाल।

उपकरण (न.) सामग्री। साधन।

उपकार (पुं.) कृपा। अनुकूलता। सहायता। फैलाये हुए पुष्पादि।

उपकूल (न.) किनारे पर उत्पन्न हुआ।

उपक्रम (पुं.) आरम्भ। उद्योग। तैयारियाँ। भागना। बल।

उपक्रोश (पुं.) निन्दा। लगभग एक कोस। कोसभर। चिड़कना। कोसना।

उपक्रोष्ट (पुं.) गधा। निन्दक। चिल्लाना।

उपक्षय (पुं.) अवनति। कमी।

उपक्षेप (पुं.) सूचना।

उपगर्त (त्रि.) स्वीकृत। माना गया। पहुँचा। जाना गया।

उपगम (पुं.) समीप जाना। अंगीकार। मालूम करना।

उपगीति (स्त्री.) गाना। आर्या छन्द का एक भेद।

उपगुह्य (त्रि.) मिलने योग्य।

उपगूहन (न.) आलिङ्गन। मिलना। पकड़ना।

उपग्रह (पुं.) जेलखाना। कारागृह। धूमकेत्वादि उपग्रह।

उपग्राह्य (पुं.) खंड भेंट। नजराना। कृपा का पात्र।

उपघ्न (न.) सहारा।

उपघात (पुं.) नाश। अपकार। रोग। चोट।

उपचय (पुं.) उन्नति। वृद्धि। बढ़ती। ज्योतिष मतानुसार लग्न से तीसरा, छठवाँ और ग्यारहवाँ स्थान।

उपचार (पुं.) चिकित्सा। सेवा। व्यवहार। घूँस। झूठी प्रशंसा से किसी को प्रसन्न करना।

उपचित (त्रि.) दग्ध। सड़ा हुआ। इकट्ठा किया हुआ।

उपजाति (स्त्री.) एक प्रकार का छन्द।

उपजाप (पुं.) भेद। पृथक् होना। धीरे-धीरे जाप करना।

उपजीविका (स्त्री.) जीविका। रोजी।

उपजीवक (पुं.) अधीन। आश्रित। नौकर।

उपज्ञा (स्त्री.) स्वयं उपार्जित ज्ञान। प्रथम ज्ञान।

उपढौकन (न.) उपहार। भेंट।

उपत्यका (स्त्री.) पहाड़ की तराई की भूमि।

उपदंश (पुं.) रोग विशेष। गर्मी की बीमारी। चरती। डसना। डङ्क मारना।

उपदर्शक (पुं.) दरवान। द्वारपाल।

उपदा (स्त्री.) घूँस।

उपदेश (पुं.) सिखावन। शिक्षा। गुप्त बात का कहना। मन्त्र आदि देना।

उपद्रव (पुं.) उत्पात। विघ्न।

उपद्रुत (त्रि.) विकल। सङ्कट में पड़ा हुआ।

उपधा (स्त्री.) छल। प्रवञ्चन।

उपधातु (पुं.) स्वर्णादि सात धातुओं के समान धातु यथा-स्वर्णमाक्षिक। तार माक्षिक। तुत्थ। कांस्य। रीति। सिन्दूर। शिलाजीत।

उपधान (न.) सिरहाना। तकिया। प्रणय। विष। एक प्रकार का व्रत।

उपधि (पुं.) कपट। छल। रथ का पहिया।

उपधूपित (त्रि.) मरने के निकट। दुःखित। सन्तप्त।

उपनत (त्रि.) उपस्थित। आप्त।

उपनय (पुं.) उपनयन। जनेऊ। पास ले जाया गया। न्याय का एक अवयव। ज्ञान लक्षण से उत्पन्न ज्ञान का भेद।

उपनयन (न.) संस्कार विशेष। यज्ञसूत्रधारण संस्कार। जनेऊ पहनना। द्विजत्व का प्रधान चिह्न।

उपनाह (पुं.) बीन बाजे में तार बाँधने की जगह। घाव। फोड़ा शान्त करने की वस्तु।

उपनिधि (पुं.) अमानत। धरोहर।

उपनिक्षेप (पुं.) अमानत। धरोहर।

उपनिमंत्रण (न.) न्योता।

उपनिषद् (स्त्री.) वेद का वह भाग जिसे शिरोभाग करते है और जिसमें ब्रह्म और जीव के स्वरूप का वर्णन पाया जाता है। वेद

के गुप्तार्थप्रकाशक ग्रन्थ। ब्रह्मविद्या। वेदान्त। परविद्या। धर्म। पास पहुँचना।

उपनेत्र (न.) चश्मा। ऐनक।

उपन्यास (पुं.) वाक्य रचना। सूचना। विचार। छल। भूमिका।

उपपति (स्त्री.) पति के समान माना गया। जार। गौण पति। रखेला।

उपपत्ति (स्त्री.) युक्ति। सिद्धि। संगति। मिलावट। साधन। सफलता।

उपपद (न.) पास या पीछे बोला गया पद।

उपपन्न (त्रि.) युक्तियुक्त। यथार्थ।

उपपातक (न.) छोटा पाप।

उपपादन (न.) युक्ति पूर्वक किसी विषय को समझाना।

उपपुराण (न.) पुराणों के पीछे के गन्थ। इनकी संख्या भी अठारह ही है।

उपप्लवः (पुं.) उल्कापात। चन्द्र। सूर्यग्रहण। गोलमाल।

उपप्लुत (पुं.त्रि.) पीड़ित। मुसीबत में फँसा हुआ। जलमग्न। उपद्रुत।

उपमर्द (पुं.) पहले धर्म को छिपा कर दूसरे धर्म को स्थापन करना। आलोडन। मारना। रखना।

उपमेय (त्रि.) सर्वोच्च। सब से ऊँचा।

उपमन्यु (पुं.) एक ऋषि जिनका गोत्र शुक्ल यजुर्वेद में विशेष है। डाही।

उपमा (स्त्री.) समानता। सादृश्य। बराबरी। अर्थालंकार भेट। उपमेय।

उपमान (न.) समानता सूचक। जिससे उपमा दी जाय जैसे "सिंह के समान कटि" में जैसे सिंह उपमान है। उपमा।

उपमिति (स्त्री.) उपमा। बराबरी का ज्ञान।

उपमेय (त्रि.) सादृश्य या उपमा का अवलम्ब। बराबरी का आश्रय। जैसे "सिंह के समान कटि" में कटि उपमेय है।

उपयातृ (पुं.) स्त्री के साथ विहार करने वाला। पति।

उपयम (पुं.) विवाह। परिणाम।

उपयुक्त (त्रि.) ठीक ठीक। न्याय्य। खाया हुआ। उपयोग में लाया गया। भोगा गया।

उपयोगः (पुं.) भला आचरण। भोजन। जोड़ना। लगाना। प्रयोग करना।

उपयोगिता (स्त्री.) योग्यता। आवश्यकता। कृपा। अभिप्राय।

उपरक्त (पुं.) रंगीन। राहुग्रस्त चन्द्र सूर्य। सकंट में फँसा हुआ।

उपरत (त्रि.) विरत। निहत। भरा हुआ। सब कामनाओं से शून्य। ठहर गया।

उपरति (स्त्री.) विषयों से इन्द्रियों को हटाना। जीवन। प्रभुत्व और विषय भोगादि की सामग्री और साधन प्रस्तुत होने पर भी उनमें आसक्त न होना। विरति। हटना। मृत्यु जिस बुद्धि द्वारा मनुष्य को यह ज्ञान उत्पन्न होता है कि कर्म से पुरुष का अर्थ सिद्ध नहीं हो सकता उस बुद्धि को उपरति कहते हैं।

उपराग (पुं.) सूर्य और चन्द्रग्रहण। राहु उपद्रव। निन्दा। व्यसन। कष्ट।

उपरामः (पुं.) निवृत्ति। हटना। विषयों से वैराग्य। आराम। शान्ति।

उपरि, उपरिष्टात् (अव्य.) ऊपर।

उपरुदितः बिलबिलाना।

उपरुद्ध (त्रि.) निज का कमरा।

उपरूपक (न.) द्वितीय श्रेणी का अभिनय।

उपरोधः (पुं.) अनुरोध। अपने पक्ष में करने के अर्थ रुकावट। रोकना। बड़ाई। सहायता। आसरा।

उपल (पुं.) पत्थर। रत्न।

उपलब्धि (स्त्री.) प्राप्ति। ज्ञान। जानना।

उपवन (न.) वन के समान। उद्यान। बनावटी वन। बागीचा।

उपवर्हः (पुं.न.) तकिया। सिरहाना।

उपवासः (पुं.) आठ पहर तक बिना कुछ खाये रहना। लङ्घन। अनाहार। उपोषण। व्रत।

उपवाह्य (पुं.स्त्री.) राजा की सवारी का हाथी। हथिनी अथवा पालकी।

उपविष्टः (त्रि.) आसन पर बैठा हुआ।

उपवीत (न.) बाएँ कन्धे पर रखा हुआ यज्ञ- सूत्र अथवा जनेऊ। यज्ञोपवीत। द्विजत्व का प्रधान चिह्न।

उपवृंहित (त्रि.) वर्धित। पढ़ा हुआ।
उपवेद (पुं.) वेदों से भिन्न किन्तु वेदों के समान जैसे-आयुर्वेद। धनुर्वेद। गान्धर्ववेद। और स्थापत्यवेद। भागवत। के स्कं० ३ के अ० १२ में इनका निरूपण है।
उपवेशन (न.) बैठना।
उपशमः (पुं.) संयतता। इन्द्रियों को वंश में करना। शान्ति। तृष्णा का नाश। रोग का प्रतीकार।
उपशल्य (न.) प्रान्त। मैदान।
उपश्रुति (स्त्री.) अंगीकार। प्रतिज्ञा। भाग्य सम्बन्धी प्रश्न। ख्याति। सुनी बात।
उपश्लेषः (पुं.) एक ओर की मिलावट। आधार और आधेय का एक ओर मिलना।
उपष्टम्भक (न.) खूँटा। खम्भा। थूनी। टेक। अधिकता। रोक।
उपसंग्रह (पुं.) पैर छूना। झुक कर नमस्कार करना। पाँलागन।
उपसंयम (पुं.) उपसंहार। खींचना। समाप्त करना। पूरा करना। रोकना। बाँधना। जगत् का नाश।
उपसंख्यान (न.) धोती। पहिरने का वस्त्र।
उपसंहार (पुं.) अन्तिम भाग। समाप्ति। इकट्ठा करना। खींचना।
उपसत्ति (स्त्री.) सेवा। मिलना। पूजा।
उपसर्ग (पुं.) रोग का विकार। उपद्रव। शुभाशुभ की सूचना देने वाला। महाभूत विकाररूप उत्पात। व्याकरण का एक शब्द विशेष।
उपसर्ज्जन (न.) अप्रधान। गौण। विशेषण। छोड़ना। प्रतिनिधि। एक के स्थान पर काम करने वाला।
उपसृष्ट (न.) मिला हुआ। दबाया हुआ। मैथुन। भोग।
उपसेक (पुं.) सींच कर मुलायम करना।
उपस्कर (पुं.) मसाला। सामान। सामग्री। भूषण। निन्दा। कलंक। दोष।
उपस्थ (पुं.) स्त्री की योनि। पुरुष का लिङ्ग। दोनों का नाम।
उपस्थातृ (त्रि.) सेवक। नौकर। पुरोहित। भेद। पहुँच गया।
उपस्थान (न.) निकट होना। नमस्कार। प्रार्थना। प्राप्ति। बहुत लोग।
उपस्पर्श (पुं.) छूना। स्नान। आचमन।
उपस्पर्शन (न.) छूना। विधि से आचमन करना।
उपस्पृष्ट (त्रि.) स्नान किया हुआ। आचमन किया हुआ।
उपहस्तिका (स्त्री.) पानदान।
उपहर (पुं.) युद्ध। लड़ाई। एकान्त। निर्जन। निकट।
उपहार (पुं.) भेंट। नजर। पुरस्कार।
उपहारस (पुं.) हास्य। ठट्ठा।
उपहर (न.) उतार।
उपकारण (न.) जनेऊ पहन कर वेद पढ़ना। श्रावणी पूर्णिमा का वैदिक कर्म्म संस्कार कर चुकने पर यज्ञ में पशुहनन। प्रारम्भ।
उपाख्यान (न.) प्राचीन वृत्तान्त।
उपागम (पुं.) स्वीकार। मान लेना। पहुँचना। निकट आना।
उपाङ्ग (न.) अङ्ग के समान। मुख्य का सहाय्य।
उपात्त (त्रि.) प्राप्त। लिया गया। मद प्रकट न हुआ हाथी।
उपादान (न.) पकड़ना। लेना। कार्य के साथ मिला हुआ कारण।
उपादेय (त्रि.) उत्कृष्ट। उत्तम। लेने योग्य। मुख्य। मनोहर।
उपाधि (पुं.) पदवी। धर्म की चिन्ता। छल। चिह्न। नाम। कुटुम्ब के भरण पोषण की चिन्ता से उत्पन्न घबराहट।
उपाध्याय (पुं.) अध्यापक। जीविका के लिये वेद अथवा वेदाङ्ग को पढ़ाने वाला।
उपानह (स्त्री.) जूते।
उपान्त (पुं.) निकट। समीप। प्रान्त। सिरा। आँख की कोर।
उपाय (पुं.) उपगम। साधन। उद्योग। शत्रु को वश में करने के चार उपाय-यथा साम, दाम, दण्ड और भेद।
उपार्जन (क्रि.) पैदा करना।
उपालम्भ (पुं.) निन्दापूर्वक दुष्ट वचन। दोष। उलहना।

उपासक (त्रि.) उपासना करने वाला। सेवक। भक्त।
उपास्ति (स्त्री.) उपासना। देवता की सेवा।
उपेक्षा (स्त्री.) लापरवाही। उदासीनता। चित्त का हटना। तिरष्कार। घृणा।
उपेन्द्र (पुं.) विष्णु या कृष्ण। इन्द्र का छोटा भाई।
उपोढ़ (पुं.) जमा या संग्रह किया हुआ, युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध। निकटस्थ। विवाहित।
उपोद्घात (पुं.) आरम्भ, प्रस्तावना, भूमिका। उदाहरण, सुयोग्य, माध्यम। साधन। किसी के कथन के विपरीत युक्ति।
उपोषण (न.) उपवास। व्रत रखना। फाँका।
उरस (पुं.) छाती। वक्षस्थल।
उरसिल (वि.) विशाल वक्षःस्थल वाला।
उरस्य (वि.) अवरस (सन्तान) एक ही वर्ण के विवाहित दम्पति का पुत्र या पुत्री, सर्वोत्कृष्ट।
उरसः (पु.) छाती। वक्षःस्थल।
उरसिलः (वि.) विशाल वक्षःस्थल वाला।
उरस्वत् (वि.) चौड़ी छाती वाला।
उरी (अव्य.) दे.उररी। उरीक्र अनुमति देना। अनुज्ञा देना।
उरु (वि.) विशाल। विस्तृत। लम्बा। विपुल। अत्यधिक। महान्। श्रेष्ठ। बहुमूल्यवान्।
उरुरी (अव्य.) उररी।
उर्णनाभ (पुं.) मकड़ी।
उर्णाः (स्त्री.) भेड़ के वाल। ऊन।
उशनस् (पुं.) शुक्र का नाम। शुक्र ग्रह का अधिष्ठातृ देवता। भृगु का पुत्र।
उशी (स्त्री.) इच्छा, अभिलाषा।
उष् (पुं.) भोर। तड़का। कामुक पुरुष। गुग्गुल। खारी मिट्टी।
उषण (न.) कालीमिर्च। अदरक। सौंठ।
उषप (पुं.) अग्नि, सूर्य।
उषस् (स्त्री.) तड़का। पो फटना। प्रभात। प्रातः कालीन। प्रकाश।
उषसि (स्त्री.) दिन का अवसान, सांयकाल।
उषा (स्त्री.) प्रातः काल, पौ फटना।
उषित (वित्र) वसा हुआ। जला हुआ।
उष्ट्रिका (स्त्री.) ऊँटनी, मिट्टी का वना ऊँच की शक्ल का मदिरा पात्र।
उषित (वि.) वसा हुआ। जला हुआ।

ऊ

ऊढ़ (वि.) ढोया हुआ। लिया गया। विवाहित पुरुष।
ऊढ़ा (स्त्री.) लड़की जिसका विवाह हो चुका हो।
उढिः (स्त्री) विवाह। शादी।
ऊतिः (स्त्री.) बुनना। सीना। उपभोग। क्रीड़ा।
ऊधस (न.पुं.) गौ या भैंस आदि का ऐन व थैली जिसमें दूध रहता है।
ऊधस्य (न.पुं.) दूध, क्षीर।
उद्र्ध्वपाद (पुं.) शरभ नामक जीव जो हाथी का शत्रु है। इसके आठ पाँव होते हैं।
ऊद्र्ध्वपुण्ड्र (पुं.) ऊँचा दण्डाकार या गन्ने जैसा सीध ा तीन रेखा वाला टीका। तिलक जिसे वैष्णव लोग धारण करते हैं और धार्मिक प्रधान चिह्न मानते हैं।
उद्र्ध्वरेतस (पुं.) जिसका वीर्य ऊपर रहता हो। नीचे न गिरता हो। अखण्ड ब्रह्मचारी जैसे महादेव। सनकादि। संन्यासी। भीष्म पितामह।
ऊद्र्ध्वमिङ्ग (पुं.) महादेव।
ऊद्र्ध्वलोक (पुं.) स्वर्ग।
ऊर्म्मि (पुं.) तरंग। लहर। प्रकाश। वेग। पीड़ा। चाह। भूख आदि छः ऊर्मियाँ हैं।
ऊर्म्मिका (स्त्री.) अंगूठी।
उर्म्मिमालिन् (पुं.) समुद्र।
ऊर्म्मिला (स्त्री.) लक्ष्मण जी की पत्नी का नाम।
ऊर्म्या (स्त्री.) रात्रि। रात।
ऊष (पुं.) प्रभात। चन्दन। खारी नदी।
ऊषण (त्रि.) परिघ। पीपलामूल। चीता। मद्य। साँटा।
ऊषर (त्रि.) ऊसर भूमि। जिसमें कोई चीज उत्पन्न न हो।
ऊष्मन् (पुं.) ग्रीष्म। गरमी।
ऊह् (क्रि.) वितर्क करना।
ऊह (पुं.) तर्क वितर्क। अनुमान। अध्याहार। छूटे

हुए शब्दों को लगा कर वाक्य पूरा करना। जोड़।

ऊहवत् (गु.) बुद्धिमान। तीव्र।

ऊहिनी (स्त्री.) सेना। ढेर।

ऊहा (स्त्री.) अध्याहार। जोड़। वाक्य में लुप्त वाक्यों को जोड़ कर अर्थ पूरा करना।

ऋ

ऋ नागरी वर्णमाला का सातवाँ अक्षर।

ऋ (क्रि.) हिंसा करना। मारना। प्राप्ति होना।

ऋक्थ (न.) धन। सोना। धर्मशास्त्रानुसार दायरूप धन। बड़ों को बाँटने योग्य धन।

ऋकृथ गाना। चिल्लाना।

ऋक्ष (पुं.) रीछ। नक्षत्र। मेषादि राशि। गञ्जा।

ऋक्षगन्धा (स्त्री.) महाश्वेता। क्षीरबिदारी।

ऋक्षराज (पुं.) जाम्बवान्। चाँद।

ऋग्वेद (पुं.) वेद जिसमें प्रधान विषय देवताओं की स्तुति है अथवा जिसमें परमात्मा की स्तुति का वर्णन है। भारत की सबसे पुरानी धर्मपुस्तक।

ऋघाय (न.) तरकस। काँपना। क्रोध।

ऋघावत् (न.) तूफानी।

ऋच् (क्रि.) स्तुति करना। प्रशंसा करना।

ऋच् (स्त्री.) सूक्त। गीत। ऋग्वेद का मंत्र। स्तुति। पूजन। वेदों की ऋचा (मन्त्र)।

ऋच्छ् (क्रि.) मोह करना। मूर्च्छित होना। वेसुध हो जाना।

ऋज् (क्रि.) जाना और कमाना।

ऋजीक (न.) चमकदार। भड़कीला।

ऋजीष (न.) कढ़ाई। धन। एक नरक।

ऋजु (त्रि.) सरल। सीधा।

ऋज (त्रि.) ललोहौं। सुर्खी माइल।

ऋण (न.) कर्जा। देना। जन। दुर्ग। दुर्ग की भूमि। देव, ऋषि और पितरों के उद्देश्य से यथाक्रम यज्ञ करना। वेद का अध्ययन और सन्तानोत्पत्ति नामक अवश्यमेव कर्त्तव्य कर्म।

ऋणमार्गण (न.) प्रतिभू। जमिन्दार।

ऋणादान (न.) कर्ज लेना। अट्ठारह प्रकार के व्यवहारों में से एक।

ऋणिन् (पुं.) ऋण लेने वाला। उधार काढ़ने वाला।

ऋत् (क्रि.) जाना।

ऋत (न.) ब्राह्मण की उपजीव्य वृत्ति। ब्राह्मण के भोजन करने योग्य भोजन। मोक्ष। कर्म का फल। प्रिय वचन। सत्य जो कायिक, वाचिक, मानसिक हो। चमकता हुआ। पूज्य। सच्चा। ईमानदार।

ऋतधामनु (पुं.) विष्णु। नारायण। जिसका सत्य घर है।

ऋतम् (अव्य.) सत्य। सच्चा।

ऋतम्भरा (स्त्री.) योगशास्त्रानुसार सत्य को धारण और पुष्ट करने वाली चित्त की वृत्ति का एक भेद।

ऋति (स्त्री.) सौभाग्य। कल्याण। मार्ग। स्पर्द्धा। निन्दा। जाना। बुराई।

ऋतु (पुं.) वसन्तादि छः ऋतु। मौसम। स्त्रियों का मासिक समय जब रजोधर्मयुक्त हो शुद्ध होती हैं। चमक। ठीक समय जैसे-चैत्र से दो-दो मासों में एक-एक ऋतु होती है।

ऋतुमती (स्त्री.) रजस्वला।

ऋतुराज (पुं.) ऋतुओं का राजा अर्थात् वसन्त।

ऋते (अव्य.) बिना। सिवाय।

ऋतेजा नियमानुकूल रहना।

ऋतेरक्षस् (न.) भूत प्रेतों को भगाना।

ऋतोक्ति (स्त्री.) सत्य वचन।

ऋत्वन्त (पुं.) ऋतु का अन्त। वसन्तादि एक ऋतु का समाप्त होना। स्त्री के रजोधर्म से १६ वीं रात्रि।

ऋत्विज् (पुं.) जो निरन्तर यज्ञ करता हो। यज्ञकर्त्ता पुरोहित।

ऋत्विय (पुं.) नियमानुसार। निरन्तर। ऋत्विक् कर्म को जानने वाला।

ऋद्ध (न.) पका और मींजा हुआ अन्न। समृद्ध। सम्पत्तिशाली। सिद्धान्त। बढ़ा हुआ।

ऋद्धि (स्त्री.) बढ़ती। देवभेद। औषध विशेष। दुर्गा।

ऋधक (क्रि.) देना। मारना। निन्दा करना। लड़ना।

ऋभु (पुं.) देव। देवता। चतुर। चालाक। जो स्वर्ग में या अदिति में हुए हों।

ऋभुक्ष (पुं.) स्वर्ग। वज्र। इन्द्र।

ऋभ्वन् (पुं.) पटु। दक्ष।

ऋष् (क्रि.) जाना। गति।

ऋष्य (पुं.) एक प्रकार का बारहसिंहा।

ऋषभ (पुं.) बैल। एक औषधि। जैनियों का मान्य पहला अवतार ऋषभदेव मुनि विशेष। अच्छ।

ऋषभतर (पुं.) कमजोर बैल।

ऋषभध्वज (पुं.) शिवजी। महादेव।

ऋषभा (स्त्री.) पुरुष के रूपवाली स्त्री। शिवा लता।

ऋषि (पुं.) वेद। मंत्रद्रष्टा। मुनि। अनुष्ठानादि कर्म बतलाने वाले सूत्रों के रचयिता। आचार्य। गोत्र और प्रवर के प्रवर्त्तक। मत्स्यविशेष।

ऋषियज्ञ (पुं.) ब्रह्मयज्ञ। वेदाध्ययन।

ऋषु गर्मी। अङ्गारा।

ऋष्य (पुं.) मृगभेद। एक प्रकार का हिरन।

ऋष्टि (स्त्री.) दुधारा खड्ग। दोनों ओर ध्यार वाली तलवार। भाला।

ऋष्यमूक (पुं.) पम्पा सरोवर के समीप फूले हुए वृक्षों से लदा हुआ पर्वत।

ऋष्यश्रृङ्ग (पुं.) विभाण्डक मुनि के पुत्र जिन्होंने लोमपाद राजा की शान्ता नामक कन्या के साथ विवाह किया था और राजा परीक्षित् को सर्प काटने का शाप दिया था।

ऋष्व (पुं.) बड़ा। ऊँचा। अच्छा। देखने योग्य। इन्द्र और अग्नि का नाम।

ॠ

ॠ नागरी वर्णमाला का आठवाँ अक्षर।

ॠ (स्त्री.पुं.) जाना (अव्य.) बचाना। रक्षा। निन्दा। डरना। छाती। दैत्य और देवताओं की माता। स्मरणशक्ति। ताना। भैरव। दैत्य। दया।

ऌ

ऌ नागरी वर्णमाला का नवाँ अक्षर। अव्यय में इसका अर्थ होता है। देवता और दैत्यों की माता। पृथिवी। पर्वत।

ॡ

ॡ नागरी वर्णमाला का दसवाँ अक्षर।

ॡ (अव्य.) देवताओं की माता। देवस्त्री। महादेव (पुं.) दैत्यों की माता (स्त्री.) विष्णु (पुं.) संस्कृत का कोई भी शब्द ऌ या ॡ से आरम्भ नहीं होता।

ए

ए नागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर।

ए (अव्य.) दया। स्मरण करना। घृणा करना। बुलाना। (पुं.) विष्णु।

एक (त्रि.) संख्या एक। मुख्य। केवल। और। सच्चा। एक ही। समान। थोड़ा।

एकक (त्रि.) असहाय। अकेला।

एकचक्र (न.) एक पहिये वाला सूर्य का रथ। एक पुरी का नाम। जहाँ रह कर पाण्डवों ने बकासुर को मारा था। चक्रवर्ती राजा।

एकचर (त्रि.) अकेला घूमने वाला। साँप।

एकजाति (पुं.) जिसका एक ही बार जन्म होता है। शूद्र।

एकजातीय (त्रि.) एक प्रकार का। एक जाति का। बराबर।

एकतम (त्रि.) अनेकों में एक।

एकतर (त्रि.) दो के बीच एक। दो में से एक।

एकतस् (अव्य.) एक ओर से।

एकातान (क्रि.) श्रद्धा करना। भरोसा करना। एक पर विश्वास करने वाला। एक ही ओर ध्यान वाला। एक ही ओर ध्यान लगाने वाला।

एकत्र (अव्य.) एक जगह। एक स्थान पर एक जगह में।

एकत्व (न.) अभेद। एका। बराबर। सायुज्य मुक्ति। ध्येय और जीव की अभेद दशा।

एकदण्डिन् (पुं.) एकमात्र दण्ड को धारण करने वाला। शिखा यज्ञोपवीतादि रहित। सन्यासी।

एकदन्त (पुं.) एक दाँत वाला। गणेश।

एकदा (अव्य.) एक बार। किसी समय।

एकदृक् (त्रि.) एक नेत्रवाला। काना। काक। अभिन्न भाव वाला। शिव।

एकधा (अव्य.) एक प्रकार का।

एकपत्नी (स्त्री.) पतिव्रता। सच्ची औरत।

एकपदी (स्त्री.) छोटा रास्ता। पगडंडी।

एकपदे (अव्य.) सहसा। अकस्मात्। अचानक। एक ही वेर।

एकपिङ्ग (पुं.) पीली एक आँख वाला कुबर।

एकभक्तव्रत (पुं.न.) आधा दिन बितने पर भोजन करने वाला और फिर रात में न खाने वाला।

एकयष्टिका (स्त्री.) इकलरी। एक लर की।

एकराज् (पुं.) सार्वभौम। चक्रवर्ती। वारह। मण्डल का अधिपति।

एकविंशति (स्त्री.) इक्कीस। संख्या विशेष। २१।

एकवीर (पुं.) बड़ा वीर। एक प्रकार का वृक्ष।

एकशफ (पुं.) एक खुर वाले। गधा। घोड़ा खच्चर आदि।

एकशेष (पुं.) द्वन्द्व समास का एक भेद जिसमें एक ही बचा रहे।

एकश्रुति (स्त्री.) प्रातिशाख्य में प्रसिद्ध उदात्त, उनुदात्त और स्वरित का विभाग किये बिना बोलना।

एकसर्ग (त्रि.) एक ओर मन वाला। एकाग्रचित्त।

एकाकिन् (त्रि.) अकेला। असहाय।

एकाक्ष (त्रि.) काना। कौआ। एक आँख वाला।

एकाग्र (त्रि.) एकमन। एकचित्त।

एकादशी (स्त्री.) प्रत्येक पक्ष की ग्यारहवीं तिथि। वैष्णवों के उपवास का दिन।

एकान्त (त्रि.) अत्यन्त। आवश्यक। अकेला। दृढ़।

एकान्ततस् (अव्य.) अव्यभिचारी। जरूर होने वाला। केवल।

एकान्न (त्रि.) एक बार खाने का व्रत।

एकाब्दा (स्त्री.) एक वर्ष की अवस्था की गौ।

एकायन (त्रि.) एक ही विषय में लगा हुआ। एकाग्रमन। संसार वृक्ष।

एकावली (स्त्री.) एक लर का हार। अर्थालंकार का भेद।

एकाश्रय (त्रि.) अनन्यगति।

एकाह (पुं.) एक दिन।

एकाहार (पुं.) दिन भर में एक बार भोजन करने वाला।

एकीभाव (पुं.) एकत्व। ऐक्य।

एकीय (त्रि.) एक का सहायक। एक पक्ष का।

एकोद्दिष्ट (न.) एक के उद्देश से किया हुआ श्राद्ध। वार्षिक श्राद्ध वाला।

एकोनविंशति (स्त्री.) उन्नीस। १६।

एजृ (क्रि.) काँपना। चमकना।

एड़ (पुं.) मेढ़ा। बहिरा। डोरा।

एड़क (पुं.) भेड़। बड़े सींगों वाला भेड़ा। भेड़।

एड़मूक (त्रि.) गूंगा और बहरा। आदमी।

एण (पुं.) काले रंग का हिरन।

एणतिलक (पुं.) हिरन के चिह्न वाला। मृगाङ्क। चन्द्रमा।

एणाजिन (न.) हिरन का चमड़ा। मृग चर्म।

एम (त्रि.) हिरन। चितकबरा रङ्ग।

एतद् (त्रि.) सामने। यह।

एतर्हि (अव्य.) अब।

एतवे (क्रि.) टहलना।

एधृ (क्रि.) बढ़ना।

एधस् (न.) आग भड़काने वाली वस्तु। लकड़ी। इन्धन।

एधित (त्रि.) वृद्धि युक्त। बढ़ा। हुआ।

एनस् (न.) पाप। अपराध। दोष।

एना (अव्य.) यहाँ वहाँ।

एनी (स्त्री.) बारहसिंही।

एमन् (पुं.) मार्ग। रास्ता।

एरका (स्त्री.) गाँठ रहित तृण। एक प्रकार की घास।

एरण्ड (पुं.) एक पेड़।

एर्वारुक (पुं.स.) ककड़ी।

एला (स्त्री.) इलायची।

एव (अव्य.) सादृश्य। समानता। परिभव। तिरस्कार। निश्चय। ही।

एवम् (अव्य.) इस प्रकार। और। स्वीकार। प्रश्न। निश्चय।

एषृ (क्रि.) जाना।

एषण (पुं.)। लोहे का बाण। इच्छा। (स्त्री.) पुत्र, लोक और धन की कामना। सुनार का काँटा।

ऐ

ऐ नागरी वर्णमाला का बारहवाँ अक्षर। (अव्य.) स्मरण। बुलाना। शिव। सम्बोधन सूचक।

ऐकमत्य (न.) एक आशय। एकमत।

ऐकागारिक (पुं.) चोर।

ऐकाग्र (त्रि.) ध्यान। एक ही ओर मन लगा हुआ।

ऐकात्म्य (न.) एका करना। अद्वितीय आत्मा का होना।

ऐकाङ्ग (पुं.) अङ्गरक्षक। एक सिपाही।

ऐकान्तिक (त्रि.) न रुकने वाला। नितान्त। दृढ़। अव्यभिचारी।

ऐकाह्निक (त्रि.) एक दिन में होने वाला। एक दिन का।

ऐक्य (न.) अभेद। मेल। एकत्व।

ऐक्षव (त्रि.) गन्ने का रस। गुड़।

ऐक्ष्वाकः (पुं.) इक्ष्वाकुवंशसम्भूत। सूर्यवंशी राजा।

ऐङ्गुद (न.) इङ्गुदी वृक्ष का फल (लसोढ़ा)। हिंगोट का फल।

ऐतिहासिकः (त्रि.) इतिहास सम्बन्धी।

ऐतिहास्य (न.) इतिहासी।

ऐदपद्य (पुं.) मुख्य विषय। छोर।

ऐन्दवः (पुं.) चन्द्र-सम्बन्धी मृगशिरा नक्षत्र।

ऐन्द्रजाल (न.) जादू। दीठबन्ध।

ऐन्द्रि (पुं.) काक। कौआ।

ऐन्द्रिय (पुं.न.) विषय भोग।

ऐरावण (पुं.) इन्द्र के हाथी का नाम।

ऐरावत (पुं.) एक सर्प का नाम। इन्द्रधनुष। समुद्र से निकला इन्द्र का हाथी।

ऐरिण (न.) सेंधा नोन। पहाड़ी नोन।

ऐरेय (न.) अन्नसम्भूत। मदिरा।

ऐल (पुं.) इला का बेटा। बुध का पुत्र। राजा पुरूरवा।

ऐलवः (पुं.) शोर। कोलाहल। हल्ला गुल्ला।

ऐलविल (पुं.) कुबेर। इलविला का पुत्र।

ऐश (गु.) महादेव जी का। शिव जी का।

ऐशान-नी (न.स्त्री.) जिसका शिव देवता है। उत्तर और पूर्व की दिशा।

ऐश्य (न.) शक्ति। सामर्थ्य।

ऐश्वर्य्य (न.) विभव। आठ प्रकार की विभूतियाँ।

ऐषमस् (अव्य.) वर्त्तमान वर्ष।

ऐषीक (पुं.) नरकुल का बना हुआ।

ऐष्टिक (पुं.) ईंट का बना हुआ।

ऐहलौकिक (त्रि.) इस लोक में होने वाला। इस लोक का।

ऐहिक (न.) इस लोक का।

ओ

ओ नागरी वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर। (अव्य.) स्मरण। सम्बोधन। दया। बुलाना।

ओ (न.) ब्रह्मा। जगत्पति।

ओक (पुं.) पक्षी। वृषल। शूद्र।

ओकस् (न.) घर। सुख।

ओकोदनी (स्त्री.) केशकीट। जूँ। लीख।

ओखृ (क्रि.) सुखाना। सजाना। हटाना। सामर्थ्य रखना।

ओघ (पुं.) पानी की धार। शीघ्र नाचना। गाना। बजाना।

ओङ्कार (पुं.) ओं। प्रणाव।

ओज (क्रि.) बल करना। (सं.) ऊना।

ओजस् (न.) दीप्ति। चमक। प्राणवल। सामर्थ्य। शक्ति। ज्योतिष शास्त्रानुसार १ ली, ३री, ५वीं, ७वीं आदि। विषमराशि। धातुपुष्ट करने वाली औषधि।

ओजिष्ठ (त्रि.) बहुत तेज वाला। अति बल वाला। बड़ा बली।

ओण (क्रि.) निकालना। हटाना।

ओत (त्रि.) अन्तर्व्याप्त। बुना हुआ।

ओतु (त्रि.) ताने बाने के सूत। विड़ाल। विल्ला।

ओदन (पुं.) भात। गीला अन्न।

ओम् (अव्य.) प्रणव। ओंकार। प्रश्न का स्वीकार करना। हाँ कहना। ओंकार वाचक ब्रह्म। आरम्भ। स्वीकार। हठाना मङ्गल। ब्रह्म। जानने योग्य। निकालना।

ओमन् (पुं.) कृपा। सहायता।
ओष (क्रि.) दाह। जलाना।
ओषधि (स्त्री.) दाह को धारण करने वाली। वृक्ष जो फलों के पकने तक ही रहते हैं। धान। जौ। दवाई। रूखरी वनस्पति।
ओषधिप्रस्थ (पुं.न.) हिमालय।
ओषम् (अव्य.) शीघ्रता से।
ओष्ट (पुं.) होठ। दाँतों का परदा।
ओष्ठी (स्त्री.) बिम्बफल नामी वृक्ष। तेलाकुचा। कुँदुरू।
ओष्ठ्य (पुं.) अक्षर जिनका उच्चारण होठों की सहायता से होता है।
ओष्ठपमफला (स्त्री.) बिम्ब की लता। कुँदुरू की बेल।

औ

औ देवनागरी वर्णमाला का चौदहवाँ अक्षर।
औक्ष (न.) वृषसमूह। बैलों की हेड़। बैल सम्बन्धी।
औख्य (त्रि.) वटलोई या तसले में रींधी हुई वस्तु।
औग्रय (न.) उग्रता। तीव्रता।
औघः (पुं.) जल की बाढ़।
औचिती-औचित्य (स्त्री.न.) न्यायत्व। सत्यत्व। योग्यता।
औच्चैःश्रवसः (पुं.) इन्द्र के घोड़े का नाम।
औज्ज्वलय (न.) चमक। उजलापन।
औडुम्बर (पुं.) चतुर्दश यमों में से एक प्रकार का यम। कुष्ठरोग भेद। गूलर का। ताँबे का। मृत्यु का देवता।
औड़व (त्रि.)। नक्षत्रसम्बन्धी। तारों का।
औत्कण्ठय (पुं.) उत्कण्ठा। इच्छा। खेद।
औत्तानपादी (पुं.) उत्तानपाद राजा की सन्तति। ध्रुव नामीं राजा। न हिलने वाला तारा। ध्रुवतारा।
औत्तमि (पुं.) तीसरे मनु का नाम। उत्तम का पुत्र।
औत्पत्तिक (पुं.) प्राकृतिक। प्रकृति सम्बन्धी।
औत्पातिक (पुं.) असाधारण। विशेष।
औत्सर्गिक (त्रि.) सामान्य विधि के योग्य। प्राकृतिक। त्याज्य। स्वाभाविक। छोड़ने योग्य।
औत्सुक्य (न.) उत्कण्ठा। इच्छा। अभिलाषा।
औदक (न.) जलोद्भव। जल में उत्पन्न होने वाला।
औदनिक (त्रि.) रसोइया जो भात बनाता है।
औदरिक (त्रि.) खाऊ। पेटू। केवल पेट भरने की चिन्ता वाला।
औदार्य (न.) उदारता। महत्त्व। बड़प्पन।
औदासीन्य (न.) उपेक्षा। उदासीनता।
औदास्य (न.) वैराग्य। विरक्ति। मन न लगना।
औदुम्बर (पुं.) गूलर की लकड़ी का बना हुआ।
औद्धत्य (न.) उद्दण्डता। अविनीतत्व।
औद्वाहिक (न.) विवाह के समय मिली हुई वस्तु।
औपचारिक (पुं.) उपचार-सम्बन्धी।
औपधर्म्य (न.) झूठा सिद्धान्त।
औपधिक (पुं.) धोखा। छल। प्रपञ्च।
औपनिषद (पुं.) उपनिषदों द्वारा ही जानने योग्य।
औपनीविक (त्रि.) धोती की गाँठ के पास लगा हुआ।
औपम्य (न.) सादृश्य। समानता।
औपयिक (त्रि.) उपाय से प्राप्त। ठीक। न्याय से प्राप्त वस्तु।
औपवस्तक (पुं.न.) आरम्भिक। आरम्भ का।
औपवाह्य (न.) सवारी के योग्य।
औपसर्गिक (पुं.) वात आदि सन्निपात से उत्पन्न रोग।
औपहारिक (पुं.) भेंट या पुरस्कार सम्बन्धी।
औपाकरण (न.) वेदाध्ययन का आरम्भ।
औरभ्र (न.) कम्बल। ऊन का बना।
औरभ्रक (न.) भेड़ों का झुण्ड।
औरस (पुं.) ब्याही हुई स्त्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान। सच्चा पुत्र।
और्ण (पुं.) ऊनी।
और्ध्वदेहिक (त्रि.) श्राद्धादि कर्म। प्रेत कर्म। मरने के बाद प्रेतसंस्कार से लगा कर मङ्गल श्राद्ध पर्यन्त की जाने वाली क्रिया। दशगात्रविधि।
और्व (पुं.) उर्व की औलाद। वाड़वानल। पहाड़ी नमक। पृथिवी का।
और्वशेय (पुं.) उर्वशी से उत्पन्न।
औलूक (न.) उल्लुओं का समूह।

औलूक्य (पुं.) वैशेषिक दर्शनकार कणाद मुनि।
औशनस् (न.) शुक्र से कही हुई राजनीति।
औशीर (न.) चौंर की डण्डी। शय्या और पीठ। शयन। बिस्तर। आसन।
औषध-धी (न.स्त्री.) दवाई। सिद्ध की हुई दवा।
औषस (गु.) प्रातःकाल का।
औष्ट्र (गु.) ऊँट से उत्पन्न दूध।
औष्ट्रक (गु.) ऊँटों का गिरोह।
औष्ठ्य (त्रि.) होठों की सहायता से उच्चारित अक्षर।
औष्य (न.) गरम। गरमी। धूप। सन्ताप।
औष्ण्य (न.) सन्ताप। उष्णता।

क

क व्यंजनों में प्रथम अक्षर। पांचों वर्गों में प्रथम अक्षर।
क (पुं.न.) कौन। क्या। जल। ब्रह्म। वायु। आत्मा। यम। दक्ष प्रजापति। सूर्य। अग्नि। विष्णु। काल। राजा। भोर। शरीर। मन। धन। प्रकाश। शब्द। सुख। शिर। रोग।
कंस (पुं.) उग्रसेन का पुत्र राजा कंस। तेज बढ़ाने वाली वस्तु। काँसा धातु। सोने व चाँदी का बना हुआ मदिरा पान के लिए बरतन। कटोरा। आढ़क के नाम से प्रसिद्ध तौल।
कंसक (न.) नेत्र रोग के लिये हीराकस नामक एक विशेष औषधि। जस्त का सार। कौसीस।
कंसकार (पुं.) कसेरा। बरतन बनाने वाली एक जाति।
कंसजित (पुं.) श्रीकृष्ण।
कंसाराति (पुं.) श्रीकृष्ण।
कक् (क्रि.) चाहना। जाना।
ककुत्स्थ (पुं.) सूर्यवंशी एक राजा। जिसकी सन्तान ने बैल की ठुड्ढी पर बैठ कर शत्रु विजय करने के कारण ककुत्स्थ उपाधि धारण की थी। इक्ष्वाकु का पोता। इसी कुल में श्रीरामावतार हुआ था।
कक्कु (क्रि.) हँसना।
ककुद् (स्त्री.) छाता आदि राजचिह्न। प्रधान। पर्वत की चोटी। बैल के कन्धे का मांस।
ककुद्मत् (पुं.) बैल। कुब्ब वाला। पर्वत। कमर।
ककुद्मती (स्त्री.) रेवत राजा की कन्या रेवती, जिसको साथ ले कर राजा ब्रह्मा से पूछने गया और लौट कर बलदेव जी को ब्याही। कमर।
ककुन्दर (न.) कूपक। खूआ। राँन।
ककुभ (स्त्री.) दिशा। शोभा। चम्पे के फूलों की माला। शास्त्र। रागिनीभेद। पहाड़ की चोटी। वृक्षविशेष।
ककुब्जय (पुं.) दिग्विजय।
कक्कोल (पुं.) गन्धद्रव्य। वनकपूर। शीतलचीनी।
कक्ष (पुं.) स्त्रियों के डुपट्टे के पीछे का आँचल। लता। समीप का भाग। राजा का अन्तःपुर। भुजाओं का मूल। कन्ध। आँचल। हाथी बाँधने का रस्सा। काञ्ची। पाप। वन। घर की दीवार। काँच निकलने का रोग। तड़ागी। तह। परत।
कक्षोत्था (स्त्री.) नागरमोथा।
कक्ष्या (स्त्री.) हाथी बाँधने का चमड़े का रस्सा। राजप्रासाद का बड़ा कमरा। बराबरी। साहस। (स्त्री.) उत्तरीय वस्त्र। ऊपर का कपड़ा। तराजू।
कग् (क्रि.) क्रिया करना। चलना।
कङ्कः (पुं.) काक नामक एक पक्षी, इसी पक्षी के परों से बाणों के पुंख बनाये जाते हैं। युधिष्ठिर का वह नाम जो उन्होंने विराटनगर में पहुँचने पर स्वयं रखा था।
कंकट (पुं.) कवच। वर्म्म।
कंकण (न.) विवाह के समय स्त्री पुरुष दोनों के हाथ में बाँधा जाने वाला सात गाँठों का सूत्र। करभूषण। हाथ का भूषण। ककना। ककनी।
कङ्कत (न.) कंघी। बालों को साफ करने वाली।
कंकतिका (स्त्री.) नागबला। कंघी।
कंकती (स्त्री.) कंघी।
कंकपत्र (पुं.) तीर। बाण।
कंकमुख (पुं.) सडांसी। सड़सी। कंकपक्षी के मुख जैसा।
कंकाल (पुं.) हड्डियों का पिञ्जर। खखड़ी।
कंकालमालिन् (पुं.) अस्थिपिञ्जर की माला वाला। इन्द्र। रुद्र।

कंकु (पुं.) कगुनी-एक प्रकार का अनाज।
कच् (क्रि.) शब्द करना। बाँधना। वैर करना।
कच (पुं.) बाल। वृहस्पति का पुत्र। सूखा घाव। मेघ। बादल। हथिनी। सजावट।
कचु (स्त्री.) कचूर। हल्दी।
कच्चर (त्रि.) मलिन। मैला। छाछ।
कच्चित् (अव्य.) हर्ष। मङ्गल। इष्ट-प्रश्न।
कच्छ (पुं.) स्थान जहाँ पानी ही पानी हो। तट। खाल। कछवा। पुन्नागद्रुम। केसर का पेड़। काछनी।
कच्छप (पुं.) कूर्म्म। कछवा। कुबेर का धनागार। मदिरा निकालने की कला। वृक्षविशेष। मल्लयुद्ध।
कच्छुर (त्रि.) लम्पट। व्यभिचारी। व्यभिचारिणी स्त्री।
कज (न.) कमल। पद्म।
कज्जल (न.) अञ्जन। काजल। कादल। मच्छी विशेष।
कज्जलरोचक (पुं.) डीवट। दीपक की बैठकी। कज्जल को चमकाने वाला।
कञ्चुक (पुं.) लोहे का वर्म्म। केंचुली। चोली। अङ्गिया। कुर्ता।
कञ्चुकिन् (पुं.) ड्योढ़ीदार। दरबान। साँप। जार। जौ। वर्म्मधारी। रनवासरक्षक। चणक नामक मुनि। अङ्गरखा पहरने वाला।
कञ्जक (पुं.) मैना। कोयल।
कञ्जार (पुं.) सूर्य। ब्रह्मा। उदर। पेट।
कट (क्रि.) जाना। बरसना। हस्तिगण्डस्थल। बहुत। काल। चटाई। मुर्दे की रथी। तख्ता। औषध। मरघटा। कमर। कमर का मांस।
कटक (स्त्री.) सेना। पर्वत का मध्यभाग। जोशन। हाथीदाँत। पहिया। राजधानी। समुद्र का नमक। वृत्त। भूमि।
कटङ्कट (पुं.) शिवजी का नाम।
कटपूतन (सं.) राक्षसविशेष।
कटप्रू (पुं.) महादेव। विद्याधर। मायावी राक्षस। पाँसा खेलने वाला। क्रीड़ा। जुआरी।
कटभङ्ग (पुं.) सेना के हारने से राजा का नाश। हाथ से धान को निकोना।
कटायन (न.) तृण जिनकी चटाई वनाई जाती है। खस।
कटाह (पुं.) भैंस का बच्चा। पड़ा। पड़वा। कढ़ाई। खप्पर। नरक।
कटि (स्त्री.) कमर। चूतड़।
कटित्र (न.) कटिवस्त्र। करबेड़।
कटिल्ल (पुं.) करेला।
कटिसूत्र (न.) करधनी। मेखला। गोट।
कटु (न.) कड़वा। तीता। दुर्गन्ध। कटुकी लता। चम्पक। चीनकपूर। पटोल। नीम।
कटुकन्द (पुं.) कड़वी जड़ वाला। सैजना। अदरक। लहसन।
कटुकीटक (पुं.) मच्छर।
कटुक्वाण (पुं.) तेज आवाज वाला। तीतर। टटीरा। परिन्दा।
कटुग्रन्थि (पुं.) पिप्पलीमूल। पीपल की जड़। सोंठ की जड़।
कटुच्छद (पुं.) तगर का पेड़।
कटुत्रय (न.) कड़वी तीन चीजें। सोंठ, पीपल, काली मिरच।
कटुदला (स्त्री.) कर्कटी। कंडियारी बूटी।
कटुर (न.) मठा। छाछ। लस्सी।
कटुरस (पुं.) नेंडक। तेज शब्द वाला।
कटुवीजा (स्त्री.) पीपल। कडुवे बीज वाली।
कटूवर (न.) माठा। छाछ। चटनी।
कठ (क्रि.) बडे चाव से याद करना।
कठिन (गु.) क्रूर। बेरहम। कठोर। रोका हुआ। (स्त्री.) थाली।
कठिनी (स्त्री.) खडिया।
कठोर (त्रि.) कठिन। पूर्ण। भरा हुआ।
कड् (क्रि.) फाड़ना। भेदना। रक्षा करना। बचाना। प्रसन्न होना। खाना।
कड (पुं.) गूङ्गा।
कडङ्गर (न.) भूसा। घास।
कडङ्गरीय (त्रि.) भुस खाने वाले पशु आदि।
कड़ार (पुं.) पीला रंग। दास।
कड्ड (क्रि.) कड़ा होना।
कण् (क्रि.) जाना। (पुं.) अणु। कणिका। अनाज का दाना। बहुत थोड़ा। वन का जीरा।

कणजीरक (न.) छोटा जीरा।
कणभक्ष (पुं.) काली चिड़िया। कणाद मुनि, इन्होंने वैशेषिक दर्शन की रचना की है।
कणिक (पुं.) आटा। कनिक। अति सूक्ष्म। अंश।
कणिश् (पुं.) अनाज की वाल।
कणेर (पुं.) कनेर का पेड़। वेश्या। हथिनी।
कण्टक (पुं.) सुई की नोक। काँटा। रोमांच। मछली की हड्डी। लग्न से ४ था, १० वाँ और सातवाँ स्थान। क्षुद्र। शत्रु।
कण्टकद्रुम (पुं.) शाल्मली वृक्ष।
कण्टकाशन (पुं.) ऊँट अर्थात् जो काँटों को खाय।
कण्टकित (त्रि.) रोम खड़े हुए हैं जिसके। प्रसन्न।
कण्टकिन् (पुं.) मछली विशेष। खजूर का पेड़। गुखरू का पेड़। बाँस। बेरी।
कण्टपत्रफला (पुं.) ब्रह्मदण्डी। काँटेदार फल और पत्तेवाली।
कण्टफल (पुं.) गुखरू। धतूरा। कटहरा।
कण्टालु (पुं.) करील। बैंगन।
कण्ठ (पुं.) गरदन का अगला भाग। गला। समीप। होमकुण्ड के बाहिर की अंगुल भर भूमि।
कण्ठारक (पुं.) खुर्जी। यात्रा का सामान रखने का थैला।
कण्ठाल (पुं.) लाज। लड़ाई। ऊँट। नाव। गौ आदि पशुओं के गरदन के नीचे लटकने वाला चमड़ा।
कण्ठिका (स्त्री.) इकलरा। कण्ठी। माला।
कण्ठीरव (पुं.) सिंह। शेर। मत्तगज। कबूतर।
कण्ठेकाल (पुं.) महादेव का नाम।
कण्डन (न.) फटकना। कूटना। छरना।
कण्डनी (स्त्री.) उखली। उलूखल।
कण्डिका (स्त्री.) वेद का एक भाग।
कण्डु (स्त्री.) अंगों को खुजाना।
कण्डूघ्न (पुं.) सफेद सरसों।
कण्डूति (स्त्री.) खुजलाना।
कण्डोल (पुं.) डलिया। कण्डी। ऊँट। डोल।
कण्व (पुं.) एक मुनि का नाम जिन्होंने शकुन्तला को पाला था। पाप। अपराध।
कतक (पुं.) निर्मली वृक्षविशेष। पानी साफ करने वाली वस्तु।
कतम (त्रि.) बहुतों में से एक या कौन ?
कतर (त्रि.) दो में से कौन ?
कति (त्रि.) कितने ?
कतिपय (त्रि.) कितने। कुछ।
कत्तोय (न.) शराब। मदिरा। बुरा पानी।
कत्थ् (क्रि.) सराहना। अभिमान करना।
कथ् (क्रि.) कहना। बोलना।
कत्थन (न.) घमण्ड करना।
कतपयम् (अव्य.) किसी प्रकार।
कथक (पुं.) कहने वाला। कत्थकड़।
कथन (न.) वर्णन।
कथञ्चन (अव्य.) किसी प्रकार।
कथञ्चिज् (अव्य.) कठिनता। बड़ी सावधानी से।
कथम् (अव्य.) किस प्रकार।
कथमपि (अव्य.) बड़े प्रयत्न से। किसी तरह।
कथंभू (अव्य.) किस प्रकार। कैसे।
कथंभूत (त्रि.) किस प्रकार। कैसा।
कथा (स्त्री.) कहानी। प्रबन्धरचना। वादरूप वाक्य।
कथानक (सं.) छोटी कहानी। किस्सा।
कथाप्रसङ्ग (पुं.) कथा में जिसकी चर्चा हो। बहुत बोलने वाला। उन्मत्त। सिड़ी।
कद् (क्रि.) रोना। घबड़ाना। घबड़ा जाना।
कदन (न.) पाप। लड़ाई।
कदन्न (सं.) बुरा अन्न। रामदाना। सिंघाड़ा।
कदम्ब (पुं.) एक पेड़।
कदर्थ (पुं.) नीच प्रयोजन। दुष्ट मतलब।
कदर्थन (न.) पीड़ित करना। अत्याचार करना।
कदर्य्य (त्रि.) क्षुद्र। नीच। कञ्जूस। धन के सामने स्त्री पुत्रादि को भी तुच्छ समझने वाला।
कदर्य (पुं.) दरिद्री। लालची।
कदली (स्त्री.) केला। हिरनी विशेष। झण्डी।
कदा (अव्य.) किस समय। कब।
कदाख्य (पुं.) कूट वृक्ष।
कदाचन (अव्य.) किसी समय। कभी।
कदापि (अव्य.) किसी समय भी। कभी भी।
कदुष्ण (न.) गुनगुना। कुछ-कुछ गरम।
कद्रु (पुं.) पीला रंग। नागों की माता का नाम। पृथिवी।

कद्रू (स्त्री.) कश्यप की स्त्री और नागों की माता।
कद्वद (त्रि.) गाली गलौज करने वाला।
कन् (क्रि.) प्यार करना। प्रसन्न होना। सन्तुष्ट होना।
कनक (न.) सोना। धतूरा। किंशुक पेड़।
कनकक्षार (पुं.) सुहागा।
कनकरस (पुं.) हरताल।
कनकाचल (पुं.) सुमेरु पर्वत।
कनकारक (पुं.) कोविदार वृक्ष। कचनार का वृक्ष।
कनखल (पुं.) हरिद्वार के समीप गंगातट पर बसा हुआ एक तीर्थ।
कना (स्त्री.) लड़की।
कनिष्ठ (त्रि.) अतिछोटा।
कनी (स्त्री.) लड़की।
कनीयस् (त्रि.न.) ताँबा। दो में छोटा।
कन्तु (पुं.) सुखी। कामदेव।
कन्था (स्त्री.) मिट्टी की दीवाल। कन्द। चीथड़ों की गुथी गुदड़ी।
कन्द (पुं.) गाजर। एक प्रकार की जड़ विशेष। बादल।
कन्दर (पुं.) गुफा।
कन्दराकर (पुं.) अनेक गुफाओं वाला स्थान। पहाड़।
कन्दराल (पुं.) पाकुड़। अखरोट।
कन्दर्प (पुं.) कामदेव। बुरा। अहङ्कार उत्पन्न करने वाला।
कन्दर्प-कूप (पुं.) स्त्री का चिह्न। योनि। कुस।
कन्दर्पमूषल (पुं.) पुरुषचिह्न। लिंग।
कन्दली (स्त्री.) हिरणविशेष। वृक्षविशेष। पताका। झुण्ड। पद्मबीज।
कन्दु (पुं.स्त्री.) कढ़ाई। ताँबा।
कन्दुक (पुं.) गेन्द।
कन्धर (पुं.) बादल। कन्धा। ग्रीवा।
कन्धि (स्त्री.) गला। गरदन।
कन्नम् (न.) पातक। पाप। मूर्च्छा। बेहोशी।
कन्य (पुं.) सबसे छोटा।
कन्यका (स्त्री.) लड़की। कुमारी।
कन्या (स्त्री.) अविवाहिता लड़की। कुमारी। दस वर्ष की क्वारी लड़की। राशि का नाम। देवी। बड़ी इलायची।
कन्याकुब्ज (पुं.) एक देश। कन्नौज। यहाँ पर वायु ने सौ कन्याओं को कुबड़ी बना दिया था।
कन्याट (पुं.) स्थान जहाँ लड़कियां खेलें। वासभवन।
कप् (क्रि.) चलना। हिलना।
कप (पुं.) देवताविशेष।
कपट (पुं.न.) छल। प्रवञ्चन। ठगी।
कपटिन् (त्रि.) छली। लुच्चा। गुण्डा।
कपर्द (पुं.) कौड़ी। शिव की जटा।
कपर्दिन् (पुं.) महादेव। शिव।
कपाट (स्त्री.) किवाड़।
कपाल (पुं.न.) खोपड़ी। खप्पर।
कपालभृत् (पुं.) शिव। महादेव।
कपालमालिन् (पुं.) शिव। दुर्गा।
कपालिका (स्त्री.) टीकरी।
कपि (पुं.) बन्दर। लाल चन्दन। सुअर। विष्णु। धूप।
कपिकेतन (पुं.) अर्जुन। कपिध्वज।
कपिञ्जल (पुं.) गोरा तीतर। पपीहा।
कपित्थ (पुं.) कैथ। वृक्षभेद।
कपित्थास्य (पुं.) एक प्रकार का बन्दर
कपिप्रिय (पुं.) कैथ का वृक्ष। आम का वृक्ष।
कपिरथ (पुं.) रामचन्द्र। अर्जुन।
कपिल (पुं.) अग्नि। सांख्यशास्त्र के निर्माता मुनिविशेष। वासुदेव। दैत्य विशेष। पीलारंग। सोने के रंग की एक गौ। एक नदी। धूप। पुण्डरीक नामक दिग्गज की हथिनी।
कपिलधारा (स्त्री.) स्वर्गनदी। मन्दाकिनी। काशी का एक प्रसिद्ध तीर्थ।
कपिलाश्व (पुं.) पीले रंग के घोड़े वाले इन्द्र। देवराज।
कपिलोह (न.) पीतल धातु।
कपिवक्त्र (पुं.) बानर के समान मुख वाला। नारद।
कपिवल्ली (स्त्री.) गजपिप्पली।

कपिश (पुं.) नदीविशेष। माधवी लता।
कपिशीर्ष (न.) कोट के कँगूरे।
कपीज्य (पुं.) एक पौधा। क्षीर का वृक्ष।
कपीन्द्र (पुं.) बन्दरों का इन्द्र या राजा। सुग्रीव।
कपीष्ट (पुं.) कैथा का पेड़।
कपूय (त्रि.) कुत्सित। निन्दित। कुरूप।
कपोत (पुं.) कबूतर। पक्षी।
कपोतपालिका (स्त्री.) पक्षियों के बैठने का मचान या छतरी।
कपोतवर्णी (स्त्री.) छोटी इलायची।
कपोतारि (पुं.) बाज पक्षी।
कपोल (पुं.) गाल।
कफ (पुं.) श्लेष्मा। बलगम।
कफ-कूर्चिका (स्त्री.) लार। थूक।
कफार्ण (पुं.) कोहनी। बाँह के बीच की गाँठ।
कफविरोधि (पुं.न.) कफ का शत्रु। काली मिरच। गोल मिरच।
कफारि (पुं.) सोंठ। कफ का बैरी। अदरख।
कबन्ध (पुं.) धड़। बिना सिर के शरीर। वायु द्वारा रुकने वाला। उदर। पेट। धूमकेतु। राहु। जल। राक्षसविशेष।
कम् (क्रि.) चाहना। (अव्य.) अवश्य। पादपूरण। पानी। मुख। मस्तक। निन्दा। मङ्गल।
कमठ (पुं.) कछवा। कमण्डलु अर्थात् एक प्रकार का पात्र जिसमें संन्यासी पानी रखते हैं।
कमण्डलु (पुं.न.) संन्यासियों का पानी रखने का पात्र। प्लक्ष वृक्ष। चतुष्पाद जन्तुविशेष।
कमन (त्रि.) कामी। सुन्दर। अशोक वृक्ष।
कमनच्छद (पुं.) बगुला। सुन्दर पत्ते वाला।
कमनीय (गु.) मनोहर। चाहने योग्य। सुन्दर। बहुत उत्तम।
कमल (न.) जल को सजाने वाला। पद्म। कमल फूल। ताँबा। दवाई। हिरनविशेष। सारस पक्षी। (न.) जल।
कमलख (न.) कमलों का समूह।
कमला (स्त्री.) लक्ष्मी। सुन्दरी स्त्री।
कमलालया (स्त्री.) कमलों में रहने वाली। लक्ष्मी।
कमलासन (पुं.) कमल के आसन वाले। ब्रह्मा। (।) लक्ष्मी।
कमलिनी (स्त्री.) कमलों का समूह। कमलों वाली लजा।
कमलोत्तर (न.) कुसुम्भ का पुष्प।
कमितृ (त्रि.) कामी। चाहने वाला।
कम्प (पुं.) कपकपी। वेपथु।
कम्पिल (पुं.) करञ्ज। ग्रामविशेष। रोचनी। कमलागुण्ड।
कम्प्र (त्रि.) कम्पित। काँपा हुआ।
कम्ब (क्रि.) गति। जाना।
कम्बल (पुं.) ऊनी मोटा वस्त्र जो ओढ़ने बिछाने का काम देता है। हिरनविशेष। साँप का छोटा बच्चा। आसन।
कम्बु (पुं.न.) शङ्ख। गज। हाथी। घोंघा। चित्रविचित्र।
कम्बुपुष्पी (स्त्री.) शङ्खपुष्पी। शङ्ख के आकार के पुष्प वाली।
कम्बोज (पुं.) एक देश का नाम जो भारतवर्ष के उत्तर में है। एक प्रकार का हाथी। एक प्रकार का शङ्ख।
कम्र (त्रि.) कामी। सुन्दर। भोग की इच्छा। करने वाला।
कर (पुं.) हाथ। किरन। वह रुपया जो राजा। अपना स्वत्व समझ कर लेता है। राजस्व। महसूल। ओला। हाथी की सूँड़। ग्यारहवें नक्षत्र का नाम।
करक (पुं.) करञ्ज का पेड़। पक्षी। अनार का पेड़। बकुल वृक्ष। शरीर। नारियल की खोपड़ी। नरेरी। कमण्डलु। ओला। गढ़ा।
करकण्टक (पुं.) नख। नौह।
करकाजल (न.) बरफ। ओले का पानी।
करकाम्भस् (पुं.) ओले के समान जल वाला। नारियल। नारिकेल।
करग्रह (पुं.) पाणिग्रहण। विवाह।
करङ्क (पुं.) पात्रभेद। डब्बा। कमण्डलु। खोपड़ी। खोल।
करच्छद (पुं.) सिहोड़ा। सिन्दूरपुष्पी।
करज (पुं.) नख। सिर अथवा पानी को रङ्गने वाला। कञ्ज। करंजुआ।
करञ्ज (पुं.) वृक्षविशेष। करंजुआ का पेड़।
करट (पुं.) कौआ। काक। गजगण्ड। कुसुम्भ वृक्ष।

करटिन् (पुं.) हाथी।
करण (न.) व्याकरण का एक कारक। वर्ण। हेतु। क्षेत्र। इन्द्रिय। शरीर। वैश्य पुरुष द्वारा शूद्रा स्त्री में उत्पन्न सन्तान। दोगला। कायस्थ। डलिया।
करणाधिप (पुं.) जीव। आत्मा। इन्द्रियों का स्वामी।
करण्ड (पुं.) बाँस की डलिया या छोटी पेटी। मधुमक्खी का छत्ता। बतक जैसा एक पक्षी। यकृत।
करताल (न.) झाँझ। मञ्जीरा।
करताली (स्त्री.) करतलध्वनि। ताली।
करतोया (स्त्री.) कामरूप देश की एक नदी का नाम।
करपत्र (न.) आरा। पानी का एक खेल।
करपत्रवत् (पुं.) ताड़ का पेड़।
करपल्लव (पुं.) अगुंली।
करपात्र (न.) स्नान करते समय पानी के छींटे मारना। अञ्जली। हाथ का पात्र।
करपीड़न (न.) विवाह। हाथ मरोड़ देना।
करपुट (पुं.) अञ्जली।
करभ (पुं.) हाथ का विशेष भाग। हाथी का बच्चा। ऊँट का बच्चा।
करमालः (पुं.) धुवाँ। धूम।
करमुक्त (सं.) एक प्रकार का हथियार।
करम्वित (गु.) मिश्रित। मिला हुआ।
करम्भः-बः (पुं.) दधिमिश्रित सत्तू या दही से सना हुआ कोई भोजन का पदार्थ। कीचड़।
कररुह (पु.) नोह। नख।
करवाल (पुं.) तलवार। नख।
करवीरः-कः (सं.) तलवार। असि। कब्रस्थान। भारत के दक्षिण भाग में एक नगर का नाम।
करहाटः (पुं.) देशविशेष। कमल की जड़। मदन वृक्ष।
कराङ्गणः (पुं.) हाट। बाजार। पैंठ। राजस्व उगाहने का स्थान।
करायिका (स्त्री.) पक्षी। छोटी जाति का सारस।
कराल (पुं.) भयानक। चौड़ा। नुकीला। असम। विस्तृत। कुरूप। वृक्षविशेष।
करालिका (स्त्री.) तलवार। वृक्षभेद।
करास्फोटः (पुं.) ताल ठोंकना। वक्षःस्थल।
करिका (स्त्री.) हाथ के नखों से किया हुआ घाव।
करिणी (स्त्री.) हथिनी।
करिदारक (पुं.) सिंह।
करिन् (पुं.) हाथी। आठ की संख्या।
करीर (पुं.) बाँस का अखुआ। करील का झाड़। झिल्ली। हस्तिदन्तमूल।
करीषः (पुं.) सूखा गोबर।
करीषंकशा (स्त्री.) आँधी। तूफान।
करीषिणी (स्त्री.) लक्ष्मी। धन की अधिष्ठात्री देवी।
करुणा (पुं.) दीन। अनाथ। करुणा वाला। दया।
करुणा (स्त्री.) दया। माया। छोह।
करूष (पुं.) एक देश का नाम।
करेट (सं.) हाथ की अंगुली का नोह।
करेणु (पुं.) हाथी। हथिनी।
करेणू (पुं.) हाथी। हथिनी।
करोटः (पुं.न.) सिर की हड्डी। खोपड़ी।
कर्क् (क्रि.) हँसना। (पुं.) आग। चित्ता। घोड़ा। दर्पण। शिक्षा। केकड़ा। कर्कट पेड़। काँटा। मेष से चौथी राशि। घड़ा।
कर्कट (पुं.) केकड़ा। चौथी राशि। शाल्मली वृक्ष। एक प्रकार का गन्ना।
कर्कटि-टी (स्त्री.) ककड़ी।
कर्कटु (पुं.) सारसविशेष।
कर्कन्धुः-धूः (स्त्री.) बेर। उनाव। काँटेदार पेड़।
कर्कर (पुं.) कड़ा। दृढ़। हड्डी। खोपड़ी के टूटे हड्डे। चमड़े की रस्सियाँ। तस्मा।
कर्कशः (पुं.) करञ्ज। स्पर्श। तीव्र हुआ गन्ना। खड्ग कठोर। साहसी। निर्दय।
कर्कसार (न.) दधिमिश्रित भोजन का पदार्थ।
कर्केतनः (पुं.) एक प्रकार का बहुमूल्य रत्न।
कर्कोट (पुं.) एक प्रकार का उग्र सर्प जिसके देखने ही से विष चढ़ता है। गन्ना। बेल का वृक्ष।
कर्चूर (पुं.) कचूर। एक गन्धद्रव्य।
कर्चूरकः (पुं.) इमली।
कर्ज् (क्रि.) दुःख देना। कष्ट देना। विकल करना।
कर्ण् (क्रि.) फाड़ना। छेद करना। सुनना।

कर्ण (पुं.) कान। सूर्यपुत्र। राजा कर्ण। त्रिभुज क्षेत्र। डाँड़।
कर्णकोटी (स्त्री.) कनखजूरा।
कर्णगूथं (न.) कान की ठेठ या मैल।
कर्णधार (पुं.) नाविक। मल्लाह।
कर्णपाली (स्त्री.) कान का गहना। बाली। बाला।
कर्णपूरक (पुं.) कान का गहना। कदम्ब वृक्ष। अशोक वृक्ष। नील कमल।
कर्णफलः (पुं.) एक प्रकार की मछली।
कर्णवेध (पुं.) कनछिदावन। संस्कार विशेष।
कर्णाट (पुं.) रामेश्वर से ले कर श्रीरंग तक का देश। काव्य की एक रीति। एक राग का नाम।
कर्णि-र्णी (पुं.) एक प्रकार का तीर। चोरी आदि विद्या के पिता मूलदेव की माता का नाम।
कर्णिका (स्त्री.) मध्यमा अंगुली। हाथी की सूँड़ की नोक। कर्णाभरण। पद्मबीज कोष। लेखनी। कुट्टिनी।
कर्णिकार (पुं.) कनेर का फूल। कनेर का पेड़।
कर्त् (क्रि.) शिथिल होना। ढीला पड़ना। हटाना।
कर्तः (पुं.) छेद। गुफा। चीर फाड़।
कर्तन (न.) काटना। सूई से सूत निकालने का व्यापार। कातना।
कर्तरी (स्त्री.) कैंची। कतरनी। बरछी। छुरी।
कर्तव्य (त्रि.) करने योग्य।
"हीनसेवा न कर्त्तव्या
कर्त्तव्यो महदाश्रयः।"
कर्तृ (त्रि.) कर्त्ता। करने वाला। क्रिया का स्वतंत्र आश्रय। ब्रह्मा, विष्णु और शिव का भी नाम है। पुरोहित।
कर्तृक (पुं.) करने वाला।
कर्त्रं (पुं.) जादू। इन्द्रजाल का खेल।
कर्तका (स्त्री.) छोटा खड्ग। चाकू।
कर्द् (क्रि.) (पेट का) गड़गड़ाना। गुड़बुड़ करना। (काक की तरह) काउ काउ करना।
कर्दः-कर्दरः (पुं.) कीच। कीचड़।
कर्दम (पुं.) कीचड़। पाप। एक प्रजापति का नाम। भगवान् कपिल के पिता। मांस।
कर्दमक (सं.) फलविशेष। सर्पविशेष।

कर्पट (पुं.न.) चिथड़ा। कपड़े की धज्जी। रूमाल। गेरुआ रंग का कपड़ा। उपरना।
कर्पण (पुं.) एक प्रकार का शस्त्र।
कर्परः (पुं.) कड़ाही। खपरा। कपार। अस्त्रविशेष। मेरुदण्ड। रीढ़ की हड्डी।
कर्पास (पुं.न.) कपास।
कर्पूर (सं.) कपूर। सुगन्धद्रव्य।
कर्फरः (सं.) दर्पण। शीशा। बट्टा।
कर्ब् (क्रि.) जाना। डोलना। समीप होना।
कर्बु-कर्बूर (पुं.) चित्तीदार। भूरा। (सं.) पाप। भूत प्रेत। धतूरे का पौधा। जल के भीतर उत्पन्न चावल। साठी के चावल। सोना। जल। हरताल।
कर्म (न.) काम।
कर्मकर (पुं.) मजदूर। नौकर।
कर्मकाण्ड (पुं.) क्रियाकर्म। वेद का वह भाग जो कर्म का प्रतिपादन करता है।
कर्म्मकार (पुं.) कोई सा काम करने वाला। कारीगर। यह शब्द विशेष कर बेगार में काम करने वालों के लिये आता है।
कर्म्मठ (पुं.) कार्य करने में कुशल। क्रियाकुशल। काम करने में पटु।
कर्म्मण्य (पुं.) काम में योग्य। काम में चतुर। पटु। मजदूरी।
कर्मधारय (पुं.) एक प्रकार का समास।
कर्मन् (न.) क्रिया।
कर्ममीमांसा (स्त्री.) कर्मकाण्डसम्बन्धी वेद भाग पर विचार करने वाला और जैमिनि द्वारा रचा गया ग्रन्थविशेष।
कर्मविपाक (पुं.) शुभाशुभ कर्म का फलस्वरूप सुख और दुःख। जीव के कर्मानुसार उसकी दशा को बताने वाला एक ग्रन्थ।
कर्म्मसन्यासिन् (पुं.) विधानपूर्वक वेदविहित कर्म्मों को त्यागने वाला। संन्यासी। यती।
कर्म्मसिद्धि (स्त्री.) इष्ट-अनिष्ट फल की उपलब्धि या प्राप्ति।
कर्म्मार (पुं.) कारीगर। लुहार। वृक्ष विशेष। एक प्रकार का बाँस।

कर्म्मिष्ठ (त्रि.) क्रियाकुशल। कार्य में संलग्न। काम करने में पटु या चतुर।

कर्म्मेन्द्रिय (न.) वे इन्द्रियाँ जिनसे क्रिया सिद्ध हो यथा-हाथ, पैर, नाक। कान आदि।

कर्व् (क्रि.) अभिमान करना। घमण्ड करना।

कर्व (सं.) प्रेम। इच्छा। एक प्रकार का मूसा।

कर्वट (पुं.) दौ सौ ग्रामों में प्रधान स्थान जहाँ बाजार या पैंठ लगती हो। पुर। नगर। पहाड़ का उतार या ढालूपन।

कर्वर (पुं.) राक्षस। पाप। रङ्गबिरंगा। चीता। (ी) दुर्गा का नाम। रात्रि। एक राक्षसी। चीता की मादा।

कर्ष् (क्रि.) खींचना। आकर्षण करना। जोतना।

कर्ष (पुं.) हल। सोलह माशे का एक माप। तोला।

कर्षक (पुं.) खींचने वाला। किसान। कसौटी।

कर्षफल (पुं.) बहेड़ा। आमलकी वृक्ष विशेष।

कर्षिणी (स्त्री.) औषधविशेष। लगाम।

कर्षू (स्त्री.) हल। नदी। नहर। (पुं.) कण्डे की आग। कृषिकर्म। आजीविका।

कर्हि (अव्य.) किस समय। कब।

कर्हिचित् (अव्य.) किसी समय।

कल् (क्रि.) गिनना। प्रेरण करना। बजाना। पकड़ना। ढोना। ले जाना। रखना।

कल (पुं.) मधुर और अस्पष्ट। धीमी, कोमल, आनन्ददायिनी (आवाज)। अनपच। साल वृक्ष।

कलकण्ठ (पुं.) कोकिल। हंस। पारावत। कबूतर। मधुर कण्ठ वाला।

कलकल (पुं.) होहो। कोलाहल। हल्ला गुल्ला। गुलगपाड़ा।

कलघोष (पुं.) मीठे कण्ठ वाला। कोइल।

कलङ्क (पुं.) दाग। धब्बा। चिह्न। अपयश। दोष। त्रुटि। लोहे की जङ्ग। काई।

कलञ्ज (पुं.) पक्षी। विषैले अस्त्र से मारा हुआ हिरन या कोई अन्य जन्तु। तमाखू। ताम्रकूट। दस रुपये भर का माप।

कलत (गु.) गञ्जा।

कलत्र (न.) चूतड़। भार्य्या। पत्नी। स्त्री।

कलधौत (पुं.) चाँदी।

कलध्वनि (पुं.) मधुर धीमा शब्द। कबूतर। मोर। कोइल।

कलन (पुं.) बेत का झाड़। चिह्न। एक मास का गर्भ। पकड़ना। गिनना। समझना। जानना।

कलभ (पुं.) हाथी का बच्चा जो पाँच वर्ष का हो चुका हो। धतूरे का पेड़।

कलम (पुं.) चावल, जो मई जून में बोये जाते और दिसम्बर जनवरी में काटे जाते हैं। लेखनी। नरकुल। चोर। गुण्डा। बदमाश।

कलम्ब (पुं.) तीर। कदम्ब का वृक्ष।

कलरव (पुं.) मधुर धीमे शब्द। पिडुकिया। कोइल।

कलल (पुं.न.) गर्भ की झिल्ली। स्त्री का गुप्त अंग।

कलविङ्क-ङ्ग (पुं.) गौरइया पक्षी। इन्द्रजौ। चिह्न। धब्बा।

कलश (पुं.) कलसा। घड़ा। मापविशेष जिसमें चौतीस सेर हो।

कलह (पुं.) झगड़ा। तकरार। विवाद। लड़ाई। तलवार रखने की मियान। छल। झूठ। मार्ग।

कलहंस (पुं.) राजहंस। परमात्मा। सर्वोत्तम। राजा।

कला (स्त्री.) किसी वस्तु का एक छोटा अंश। चन्द्रमण्डल का सोलहवाँ भाग। राशि के तीसवें भाग का साँठवा अंश। चातुर्य। कापट्य। छल। विभूति। सामर्थ्य। नौका। गिनती। मरीचि की स्त्री। कला चौसठ होती हैं-गाना, बजाना आदि।

कलाद (पुं.) अंश लेने वाला। सुनार।

कलानिधि (पुं.) चन्द्रमा।

कलानुनादिन् (पुं.) भौंरा। गौरैया पक्षी।

कलाप (पुं.) समूह। मोर की पूँछ। गहना। मेखला। तर्कस। चाँद। एक गाँव। व्याकरणविशेष।

कलापक (पुं.) जिसमें चार श्लोक का एक ही अन्वय हो।

कलापिन् (पुं.) वट जिसकी शखा मोरपङ्ख के समान हो-बोड़। कोइल।

कलाभृत् (पुं.) चन्द्र। चाँद। कलाधारी। अमीर मनुष्य।

कलावत् (पुं.) कला वाला। चन्द्रमा। कलाधारी। बड़ा आदमी।

कलाविकः (पुं.) मुर्गा।
कलाहकः (पुं.) काहिली। एक प्रकार का मुँह से बजने वाला बाजा।
कलि (पुं.) झगड़ा। युद्ध। चार युगों में से चौथा युग। वहेडे का वृक्ष। पाँसे का वह पहल जिस पर १ का चिह्न हो। शूरवीर। तीर। (स्त्री.) कली।
कलि-कारक (पुं.) कलि=कलह। कराने वाला= नारद। भूम्याट पक्षी।
कलिंग (गु.) चतुर। चालाक। करंजुए का पेड़। शिरीष वृक्ष। प्लक्ष वृक्ष। कृष्ण के दूसरे तीर तक और जगन्नाथ के पूर्व भाग वाला देश।
कलित (त्रि.) प्राप्त। ज्ञात। कथित। विचारा हुआ। बाँधा गया।
कलिन्द (पुं.) सूर्य्य। विभीतक वृक्ष।
कलिन्दकन्या (स्त्री.) यमुना। जमुना।
कलिलः (त्रि.) सघन वन। मिश्रित। गहन।
कलुष (पुं.स्त्री.) महिष। भैंसा। पाप। पापी।
कलेवरः (न.) शरीर। देह।
कल्क (पुं.न.) विभीतक। पेड़। विष्ठा। कान का मैल। ठेठ। कीट। मैल। पाप। पाखण्ड। घी तेल आदि का अवशिष्ट अंश।
कल्कि (पुं.) विष्णु भगवान् का होने वाला दसवाँ अवतार। अन्तिम अवतार।
कल्पिन् (पुं.) भगवान् का दसवाँ अवतार जो कलि के अन्त में सम्भल नामक नगर में होगा।
कल्पः (पुं.) वेदाङ्ग का भेद। बौधायन कृत अनुष्ठेय क्रम विधान। सूत्ररूप में कर्म्मानुष्ठान पद्धति। ब्रह्मा का दिन। प्रलय। कल्पवृक्ष। न्यायशास्त्र। विकल्प।
कल्पक (पुं.) नाई। कल्पना करने वाला। काटने वाला। नउआ।
कल्पतरु (पुं.) नन्दन कानन का एक वृक्ष, जो माँगने वाले की इच्छानुरूप फल देता है। कल्पवृक्ष।
कल्पनः (न.) काटना। रचना।
कल्पना (स्त्री.) रचना। उपाय। सजाना। बाँटना। अनुमितिभेद।
कल्पान्त (पुं.) कल्प का अन्त। प्रलय। नाश।
कल्माष (पुं.) राक्षस। चित्रवर्ण। काला रंग। काला पीला रंग।
कल्माषकण्ठः (पुं.) काले गले वाला। शिवजी।
कल्य (न.) सवेरा। भिंसारा। प्रातःकाल। प्रभात। शहद। बीता हुआ दिन। तैयार। रोगरहित। चतुर। सुखी जन। बहरा और गूँगा। शिक्षाप्रद। सुखसंवाद।
कल्या (स्त्री.) हरीतकी। हर्र। बधाई।
कल्यजग्धि (स्त्री.) कलेवा। कलेऊ। प्रातःकाल का भोजन।
कल्याण (न.) हेम। सुवर्ण। सोना। मंगल। खुशी।
कल्याणकृत (त्रि.) लाभकारी। शास्त्रानुसार कार्य करने वाला।
कल्ल (क्रि.) कूजना। चिल्लाना। शब्द करना। (पुं.) बधिर। बहिरा।
कल्लोल (पुं.) बड़ी लहर। हर्ष। खुशी। बैरी। "आयुः कल्लोललोलम्।"
कल्लोलिनी (स्त्री.) नदी।
कल्हार (पुं.) सफेद कमल। पानी में उगने वाले पेड़ का सफेद फूल।
कव् (क्रि.) प्रशंसा करना। वर्णन करना। सङ्कलित करना। चित्रित करना।
कवक (पुं.) मुहभर।
कवचः (पुं.) वर्म्म। फौजी बाजा। जिरहबख्तर। सञ्जोया। भोजपत्रादि पर लिख कर शरीर पर धारण किया हुआ यंत्र।
कवटी (पुं.) चौखटा (द्वार का या तसवीर का)।
कवडः (पुं.) कुल्ला के लिये जल।
कवत्नुः (पुं.) दुष्कर्म। बुरा काम।
कवनम् (पुं.) जल। पानी।
कव (पुं.) लवण। नोन। अलकें।
कवरी (स्त्री.) गुथी हुई चोटी।
कवरकी (पुं.) कैदी। बन्धुआ।
कवर्ग (पुं.) "क" से लेकर "ङ" तक पाँच अक्षर।
कवल (पुं.) ग्रास। मत्स्यभेद। कौर।
कवलिका (स्त्री.) पट्टी। घाव या चोट पर बाँधने का कपड़ा।

कवलित (त्रि.) खाया हुआ। निगला हुआ। चबाया हुआ। फैला हुआ। व्याप्त।

कवष्-कवष् (पुं.) किवाड़ों के खुलने का चरचराहट का शब्द। ढाल।

कवसः (पुं.) वर्म्म। कवच। कटीली झाड़ी।

कवाट (न.) कपाट। किवाड़। हवा रोकने के लिये काठ के टुकड़े।

कवार (पुं.) कमल। पद्म।

कवारि (न.) स्वार्थी। क्षुद्र और तिरस्कार के योग्य शत्रु।

कवि (पुं.) शुक्र। कविता रचने वाला। भास्कर। काव्यकर्त्ता। ब्रह्मा। आगे पीछे का हाल जानने वाला। सूक्ष्म अर्थ देखने वाला। लगाम। पण्डित।

कविका (स्त्री.) लगाम।

कविता (स्त्री.) पद्यरचना।

"सुकविता यद्यस्ति राज्येन किं।"

कवेलं (न.) कमल। पद्म।

कवोष्ण (न.) गुनगुना। कुछ-कुछ गर्म।

कव्य (न.) पितरों के लिये तैयार किया हुआ अन्न।

कश् (क्रि.) शब्द करना।

कश-शा (स्त्री.) कोड़ा। चाबुक। मुख। गुण। रस्सी।

कशस् (न.) जल। पानी।

कशिकः (पुं.) न्योला।

कशिपु (पुं.) भक्त। अन्न। कपड़ा। खाट। बिस्तरा।

"सत्यां क्षितौ किं कशिपोः प्रयासैः।"

कशेरु (पुं.न.) पीठ की हड्डी। मेरुदण्ड। ब्रह्मदण्ड। जल में उत्पन्न मूलदेव।

कश्मलः (न.) मूर्च्छा। मोह। पाप। मैल।

कश्मीर (पुं.) कश्मीर नामक एक देश जो भारतवर्ष के उत्तर पश्चिम में हैं।

कश्मीरज (पुं.) कुङ्कुम। केसर। इसे कश्मीरजन्मा और काश्मीरजन्मा भी कहते हैं।

कश्यप (पुं.) एक मुनि का नाम। जो दिति और अदिति के पति और देवता तथा दैत्यों के पिता हैं। एक प्रकार का मृग। कच्छप। मछली।

कष् (क्रि.) मलना। मारना। खरोटना। खोंचा मारना। जाँच करना। कसौटी पर सोने को मलना।

कषण (पुं.न.) कच्चा घिसना। खुजलाना।

कषाक् (पुं.) अग्नि। सूर्य्य।

कषाय (पुं.) श्योनाक वृक्ष। राग। क्रोध। कसैला। रसविशेष। लाल पीला मिश्रित रंग। काढ़ा। गोंद। मैल। सुस्ती। मूर्खता। सांसारिक पदार्थों में अनुराग। नाश। कलियुग।

कषायित (त्रि.) रंगा हुआ। ललोहाँ। कसैले रंग का किया हुआ। गेरुआ रंग हुआ।

कषिका (स्त्री.) पक्षी। चिड़िया।

कषीका (स्त्री.) पक्षी। विशेष।

कषे (शे) रुका (स्त्री.) पीठ की हड्डी। मेरुदण्ड।

कव्कष (पुं.) एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।

कष्ट (न.) पीड़ा। दुःख। चिन्तित। उपद्रवी।

कस् (क्रि.) हिलना। चलना। समीप जाना। नष्ट करना।

कस (पुं.) कसौटी। पत्थर जिस पर खरे खोटे सोने की परीक्षा की जाती है।

कसना (स्त्री.) एक विषैली मकड़ी।

कसिपुः (सं.) आहार। भात।

कसेरुः (पुं.) एक प्रकार की घास। सुअरों के खाने का प्यारा जलकन्द। (कसेरू)।

कस्तम्भ (स्त्री.) गाड़ी के बम्ब की लकडी जिस पर बम्ब रखा जाता है।

कस्तीर (पुं.न.) टीन। राङ्गा।

कस्तूरिका (स्त्री.) कस्तूरी। मुश्क। मृगमद। मृगनाभि।

कहाहः (पुं.) भैंसा।

कहः (पुं.) एक प्रकर का बेत।

कांशि (पुं.) प्याला। कटोरा। बेला।

कांसीयं (न.) कांसा। सफेद ताँबा।

कांस्य (न.) पीने का पात्र। ताँबा और राङ्गा के मेल से बना हुआ धातुविशेष।

कांस्यकं (न.) पीतल।

कांस्यकार (पुं.) कसेरा। धातु के बरतन बनाने वाला।

काक (पुं.) कौआ। खञ्ज। लङ्गड़ा।

काकचिञ्चा (स्त्री.) गुञ्जा। रत्ती।

काकच्छद (पुं.) खञ्जन खग। ममोला।

काकतालीयः (न.) न्यायविशेष। कौए के जाते ही फल का अचानक गिरना।

काकतिन्दुकः (पुं.) कुचला।

काकपक्ष (पुं.) कौओं के पङ्ख। लड़कों की दोनों कनपुटियों के बालों को काकपक्ष कहते हैं। पट्टे।

"काकपक्षधरमेत्ययाचितः।"

काकपुष्टः (पुं.) कोइल।

काकभीरु (पुं.) उल्लू। घुग्घू।

काकली (स्त्री.) सूक्ष्म। मधुर। शब्द।

काकलीक मधुर धीमा शब्द।

काकलीरवः (पुं.) कोइल।

काकाक्षिगोलकन्याय (पुं.) कौए की एक ही आँख का बिन्दु दोनों ओर चला जाता है, इसी तरह का उभयसम्बन्धी दृष्टान्त।

काकिणी (स्त्री.) एक माशे का चौथाई भाग। बीस कौड़ी। एक दमड़ी। "काकिनी" भी काकिणी ही के अर्थ में आता है।

काकिलः (पुं.) हार। गले का गहना। गरदन का ऊपरी भाग।

काकीः (स्त्री.) मादा कौआ। कौए जैसी रंग वाली वायसी लता। एक प्रकार की बेल।

काकु (स्त्री.) वक्रोक्ति। भय, क्रोध, शोक के उद्वेग में स्वर की बदलौअल। गुनगुनाहट। जिह्वा।

काकुत्स्थ (पुं.) ककुत्स्थ की सन्तान। सूर्य्यवंशी राजाओं का नाम।

"काकुत्स्थमालोकयतां नृपाणाम्।"

इक्ष्वाकु राजा। रामचन्द्र।

काकुद (न.) तालु। जिह्वा का आश्रय स्थान। तलुआ।

काकेष्टः (पुं.) निम्बौरी। नीम। नीम की निम्बौरी कौओं को बड़ी प्रिय हैं।

काकोदर (पुं.) साँप। सर्प।

काकोल (पुं.) पहाड़ी काक। साँप। एक प्रकार का सुअर। नरकभेद। विषभेद। (स्त्री.) अश्वगन्धा। वायसी।

काक्ष् (क्रि.) चाहना।

काक्ष (त्रि.) बुरी आँख वाला। भेंड़ा। ऐंचाताना। कनखियों रो देखना।

काक्षी (स्त्री.) एक प्रकार की सुगन्धियुक्त द्रव्य। दुष्टदृष्टि वाला।

काक्षीव (पुं.) सहींजन का पेड़।

काङ्क्षा (स्त्री.) इच्छा। चाह।

काक्षोरुः (पुं.) बगुला।

काचः (पुं.) एक प्रकार की मणि। चक्षु रोगविशेष। रेत और एक प्रकार के खार से उत्पन्न एक पदार्थ। मोम। खार। मिट्टी।

काचलवण (न.) कालानोन। शोरा।

काचित (त्रि.) छींके पर रखी हुई वस्तु।

काञ्चन (पुं.न.) एक वृक्ष। चम्पा। नागकेसर। उदुम्बर। धत्तूरा। सोना। दीप्ति। चमक।

काञ्चनक (पुं.) कोविदार का पेड़। पक्षी विशेष। कचनार का पेड़। हरताल।

काञ्चनाल (पुं.) कोविदार वृक्ष। कचनार वृक्ष।

काञ्चि-ञ्ची (स्त्री.) करधनी। इकलरा हार। घुँघची। रत्ती। दक्षिण की एक पुरी का नाम जिसकी गणना सप्तपुरियों में है।

काटः (पुं.) कूप। कुआ।

काटुकं (न.) खारापन। कटुता।

काठ (पुं.) चट्टान। पत्थर।

काठिनं-न्यं (न.) कठोरता। कड़ापन।

"काठिन्यमुरुस्तनम्"

निष्ठुरता। कठिनाई।

काण (पुं.) काना। कौआ।

काणूकः (पुं.) काक। मुर्गा। हंसभेद। बया जो ताल वृक्ष पर लटकती हुई घोंसला बनाती है।

काणेयः-रः (पुं.) कानी स्त्री का पुत्र।

काणेली (स्त्री.) दुराचारिणी अथवा विश्वासघातिनी स्त्री। अविवाहिता स्त्री।

काण्ड (पुं.न.) अध्याय। शाखा। स्तम्भ। तिनके आदि का गुच्छा। तीर। अवसर। पत्थर। नाड़ियों का समूह। निर्जन स्थान। अखरोट का वृक्ष। जल। बाँह या टाँग की

हड्डी। मापविशेष। चापलूसी। घोड़ा। बुरा। पापी।

काण्डकटुक (पुं.) करेला।

काण्डकार (पुं.) तीर बनाने वाला। सुपारी।

काण्डगोचर (पुं.) लोहे का तीर।

काण्डपटः (पुं.) पर्दा। कनात।

काण्डपृष्ठः (त्रि.) योद्धा। सैनिक। वैश्या स्त्री का पति। औरत पुत्र को छोड़ किसी का भी दत्तक पुत्र। अकुलीन। जाति, धर्म अथवा अपने कर्म से च्युत।

काण्डवत् (पुं.) धनुषधारी।

काण्डालः (पुं.) नरकुल की डलिया।

काण्डीर (पुं.) तीरन्दाज। बाण धारण करने वाला (न.) अपामार्ग (स्त्री.) कारवेल। मजीठ।

काण्डोलः (पुं.) कण्डी। नरकुल की टोकरी।

काण्डेक्षु (पुं.) तृणभेद। तालमखाना।

काण्व (पुं.) कण्व का शिष्य या विद्यार्थी। यजुर्वेद की एक शाखाविशेष। कण्व का पुत्र।

कात् (क्रि.) तिरस्कृत करना। अपमानित करना। "यन्मयैश्वर्यमत्तेन गुरुः सदसि कात्कृतः।"

कातंत्र (न.) एक व्याकरण ग्रन्थ का नाम।

कातर (त्रि.) अधीर। भीरु। डरपोक। दुःखी। शोकान्वित। डरा हुआ। आन्दोलित। घबड़ाया हुआ। बेवस। पानी पर बहुत तैरने वाला और न डूबने वाला। एक प्रकार की बड़ी मछली। नाव। बेड़ा।

कातृण (न.) बुरी घास। बुरा तृण। खराव तिनका।

कात्यायन (पुं.) कात्यायन सूत्र नामक धर्मशास्त्र के निर्माता एक मुनिविशेष। वररुचि नामक व्याकरण के वार्त्तिक के बनाने वाले।

कात्यायनी (स्त्री.) अधेड़ या वृद्धा विधवा (जो लाल वस्त्र धारण किये हो)। याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम। पार्वती जी का नाम।

कातुः (पुं.) कूप। कुआँ।

काथंचित्क (पुं.) बड़ी कठिनाई से पूरा होने वाला। किसी तरह का।

काथिकः (पुं.) कथा कहानी कहने वाला। कथक्कड़।

कादम्ब (पुं.) कलहंस। वाण। गन्ना। कदम्बवृक्ष। कदम्बवृक्ष का फूल।

कादम्बकः (पुं.) तीर।

कादम्बिनी (स्त्री.) मेघमाला। वादलों की श्रेणी। "मदीयमतिचुम्बनी भवतु कापि कादम्बिनी।"

कादम्बरी (स्त्री.) नशीली मादक वस्तु जो कदम्ब के वृक्ष से निकाली जाती है। सुरा। मदिरा। हाथी के गण्डस्थल का मद। विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का नाम। कोइलिया। वर्षा का जल जो गढ़ों में एकत्र होता है। सारिका।

कादाचित्क (त्रि.) कभी-कभी होने वाला।

काद्रवेय (पुं.) कश्यप की स्त्री। कद्रू की सन्तान। कालिय नाग जिसको श्रीकृष्ण ने नाथा था। सर्प।

कानक (पुं.) सुनहला। जयपाल बीज।

कानन (न.) वन। घर। ब्रह्मा का मुख।

काननाग्नि (पुं.) शमी वृक्ष। वन की आग।

कानिष्ठिक (न.) छगुनिया। सबसे छोटी हाथ की अंगुली।

कानिष्ठिनेयः-यी (पुं.) सबसे छोटे पुत्र की सन्तान या औलाद।

कानीन (पुं.) अविवाहिता स्त्री का पुत्र। व्यास का नाम। कर्ण का नाम।

कान्त (पुं.) प्यारा। प्रिय। पति। चन्द्रमा। वसन्त ऋतु। एक प्रकार का लोहा। चन्द्र अथवा सूर्य्यकान्तमणि। कार्तिकेय और कृष्णा का नाम। केसर। मनोहर। प्रियङ्गु वृक्ष। नारी।

कान्तलौह (पुं.) अयस्कान्त। चुम्बक पत्थर। लोहसार।

कान्ता (स्त्री.) प्रेयसी। पत्नी। प्रियङ्गु लता। बड़ी इलायची। एक प्रकार की गन्धवस्तु। भूमि। पृथिवी।

कान्तार (पुं.) सघन और बड़ा वन। बुरा मार्ग। छेद। खुखाल। लाल रंग के गन्ने। बाँस। कोविदार। कचनार। उपद्रव।

कान्ति (स्त्री.) सुन्दरता। मनोहरता। चमक। दीप्ति। अभिलाष। चाह। शोभा। दुर्गा का नाम।

कान्तिदा (स्त्री.) शोभा देने वाली। सोमराजी लता।

कान्दव (न.) कढ़ाई या चूल्हे में राँधी गई वस्तु। मिठाई आदि।

कान्दविक (त्रि.) हलवाई। मिठाई बेचने वाला।

कान्दिशीक (त्रि.) भय से पलायित। डर से भागा हुआ।

कान्यकुब्जः (न.) वह देश जहाँ वायु द्वारा सौ कन्या कुबड़ी हो गयी थीं। देश भेद। कन्नौज। ब्राह्मणविशेष। कन्नौजिये ब्राह्मण।

कापटिक (त्रि.) कपटी। छली। दुष्ट। चापलूस। धर्मभ्रष्ट। विद्यार्थी।

कापथ (पुं.) बुरा मार्ग। निन्द्य पथ।

कापाल -कापालिक (पुं.) खोपड़ी सम्बन्धी। शैवियों की सम्प्रदाय के अन्तर्गत एक सम्प्रदायविशेष, जो सदा खोपड़ी अपने पास रखते और उसी में राँध कर अथवा रख कर खाते-पीते हैं। एक प्रकार की कोढ़। वामाचारी।

कापालिन् (पुं.) शिव जी का नाम।

कापाली (स्त्री.) खोपड़ी की माला। बड़ी चतुर स्त्री।

कापिक (पुं.) बन्दर जैसे आकार वाला या बन्दर जैसा व्यवहार करने वाला।

कापिल (पुं.) पीत रंग। पीले रंग वाला। कपिल कथित शास्त्र को पढ़ने वाला। सांख्य शास्त्र का ज्ञाता।

कापिश (न.) मदिरा। मद्य।

कापुरुष (पुं.) बुरा आदमी। डरपोंक मनुष्य।

कापोत (न.) कबूतरों का झुण्ड। सुरमा। कबूतर जैसे रंग वाला।

काफल (सं.) कडुआ बीज।

काम (न.) वैषयिक अभिलाषा का नाम काम है। विषयवासना। सम्भोगलिप्सा। कामदेव। अत्यन्त लालसा।

कामकला (स्त्री.) काम की स्त्री रति का नाम। कामप्रिया।

कामकार (त्रि.) स्वेच्छाचारी। स्वतंत्र।

कामकेलि (पुं.) सुरतक्रिया। कामक्रीड़ा। सम्भोग।

कामचार (पुं.) यथेच्छाचारी। अपनी मनमानी करने वाला।

कामद (त्रि.) अभीष्ट पूरा करने वाला।

कामदुघा (स्त्री.) सुरभी गौ। कामधेनु। स्वर्ग की गौ।

कामदुह् (स्त्री) कामधेनु।

कामध्वंसिन् (पुं.) काम को ध्वंस करने वाले। शिव जी।

कामपाल (पुं.) बलराम। बलभद्र। कामनाओं की रक्षा करने वाला।

कामम् (अव्य.) अनुमति। सम्मति। प्रकाम। चोखा। पर्याप्त। स्वीकार। हाँ। चाहे।

कामरूप (पुं.) इच्छानुसार रूप धारण करने वाला। एक देश का नाम जो आसाम के अन्तर्गत है। मनोहर रूप वाला।

कामल (पुं.) कामी। एक प्रकार का रोग।

कामसुत (पुं.) अनिरुद्ध।

कामसखा (पुं.) कामदेव का मित्र। ऋतुराज वसन्त। काम को प्रदीप्त करने वाला चन्द्रमा।

कामसूत्र (न.) वात्स्यायन सूत्र जिसमें कामशास्त्र प्रतिपादन किया गया है।

कामान्ध (पुं.) काम से अंधा। जो अपने शब्द से दूसरों को अंधा कर दे। कोइल। विचारहीन।

कामिन् (पुं.) चकवा। कबूतर। सारस। कामी। भीरु स्त्री। मदिरा।

कामुक (त्रि.) अशोक वृक्ष। माधवी लता। चटक। चिड़िया। बहुत सम्भोग की इच्छा रखने वाला। द्रव्य कमाने की इच्छा रखने वाली स्त्री।

काम्पिल्य (पुं.) कम्पिला नदी का तटवर्त्ती देश। गुण्डारोचना नामी लता।

काम्बविक (पुं.) शंख का काम करने वाला। शंखकार।

काम्बोज (पुं.) कम्बोज देश का घोड़ा। पुन्नाग वृक्ष। कम्बोजदेवासी। म्लेच्छविशेष। हयपुच्छी।

काम्य (न.) फलकामना से किया गया कर्म्मानुष्ठान, यथा-तप, यज्ञ, पाठ, पूजनादि। कार्य जिसको करने में बड़ा क्लेश हो। सुन्दर।

काय (पुं.) अन्नादि से बढ़ने वाला। शरीर। वृक्ष का धड़। समुदाय। मुख्य। प्रधान। घर। चिह्न। ब्राह्मतीर्थ। मूलधन। ब्रह्मा।

कायस्थ (पुं.) शरीर में स्थित। परमात्मा। लेखक

का काम करने वाला। जातिविशेष। हरीतकी। आमलकी। लेखक जाति जिनकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से है।

कायिक (त्रि.) शारीरिक। जो देह से किया जाय।

कार (पुं.) मारने योग्य। निश्चय। उपाय। काम। पति। स्वामी। प्रभु। दृढ़ विचार। शक्ति। सामर्थ्य। कर। महसूल। बर्फ का ढेर। हिमालय। ओले का पानी। मारना। यति।

कारक (त्रि.) करने वाला। क्रियाजनक। व्याकरण में कारक उसे कहते हैं जिसका क्रिया से सम्बन्ध हो। कर्त्ता, कर्म, अपादन आदि सात कारक हैं।

कारणदीपक (न.) अलङ्कारशास्त्र का अर्थालङ्कारभेद।

कारज उगंलियों से सम्बन्धयुत।

कारण (न.) हेतु। बिना जिसके कार्य की उत्पत्ति न हो सके। साधन। इन्द्रिय। शरीर। तत्व। किसी नाटक की मूल घटना। चिह्न। प्रमाण। प्रमाणपत्र। पीड़ा। (क्रि.) मारना। हनन करना!

कारणमाला (स्त्री.) अर्थालंकारभेद।

कारणोत्तर (न.) कुछ अभिप्राय मन में रख कर उत्तर देना। वादी की कही बात को स्वीकार कर के उसका खण्डन करना जैसे-"मैं मानता हूँ कि यह पुस्तक जो मेरे पास है, राम की है, पर राम ने मुझे यह पुस्तक उपहार में दे डाली है।"

कारण्डव (पुं.) हंसविशेष।

कारमिहिका (स्त्री.) कपूर। काफूर।

कारम्भा प्रियङ्गु वृक्ष।

कारवः (पुं.) काक। कौआ।

कारस्करः (पुं.) किम्पाल वृक्ष।

कारा (स्त्री.) कारागार। बन्दीगृह। वीणा की तूम्बी। सुनारिन। पीड़ा। कष्ट। दूती। शब्द। वीणा की गूञ्ज को कम करने का औजार।

कारापथ (पुं.) देशभेद।

कारि (स्त्री.) क्रिया। काम। शिल्पी। कारीगर।

कारिका (स्त्री.) काम। क्रिया। नटी। अल्पाक्षर युक्त बहुत अर्थ बताने वाला श्लोक। कारीगरी। यातना। नाई आदि का कार्य। ब्याज। वृद्धिविशेष। भर्तृहरि की रची कारिका व्याकरण पर है। सांख्यकारिका सांख्यदर्शन पर है।

कारीर (न.) बाँस अथवा नरकुल के अँखुओं की बनी।

कारीरी (स्त्री.) वृष्टि के लिये यज्ञ की क्रिया। पानी बरसाने वाली यज्ञक्रिया।

कारीष (न.) सूखे गोबर का ढेर।

कारु (त्रि.) शिल्पी। कारीगर। कवि। गवैया। भयानक। विश्वकर्मा का नाम।

कारुज (पुं.) कल का कोई सा पुर्जा। हाथी का बच्चा। पहाड़ी। फेन। गेरू। तिल। मस्सा। नागकेसर।

कारुणिक (पुं.) दयालु स्वभाव वाला।

कारुण्य (न.) दया। अनुकम्पा।

कारुण्डिका कारुण्डी (स्त्री.) जोंक।

कार्कीक (पुं.) सफेद अश्व जैसा।

कार्त्तवीर्य (पुं.) हैहयराज कृतवीर्य का पुत्र। सहस्रबाहु। सहस्रार्जुन।

कार्त्तस्वर (न.) स्वर्ण। सोना। धतूरा। काञ्चन वृक्ष।

कार्तिक (पुं.) कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न। स्वामिकार्तिक। कार्तिकी पूर्णिमा।

कार्तिकेय (पुं.) शिवपुत्र। स्कन्द। स्वामि- कार्तिक।

कार्तिकोत्सव (पुं.) दीपोत्सव, जो कार्तिकी शुक्ला प्रतिपदा को होता है।

कार्त्स्न्यं (न.) सार असार। सम्पूर्णता। समूचापन।

कार्दम कीचड़युक्त। कीच से सना या भरा। कर्दम प्रजापति सम्बन्धी।

कार्पटः (पुं.) प्रार्थी। उम्मीदवार।

कार्पटिक (त्रि.) तीर्थयात्री, जो तीर्थोदक से निर्वाह करता है। तीर्थयात्रियों का समूह। अनुभवी मनुष्य। पिछलग्गू।

कार्पण्य (न.) सूमपन। कञ्जूसपन। दीनता। अधीनता। चित्त का हल्कापन।

कार्पाण (पुं.) खड्गयुद्ध।

कार्पास (पुं.) रुई। कपास।

कार्पासी (स्त्री.) वृक्षभेद। कपा। कपास।

कार्म (पुं.) परिश्रमी। मेहनती।

कार्मण (त्रि.) क्रिया में चतुर। योगविद्या। मंत्रविद्या।
कार्मुक (पुं.) धन्वा। धनुष। कमान। बाँस। कार्य में पटु। महानिम्ब। सफेद खदिर।
कार्य्य (न.) कर्त्तव्य कर्म। काम। पेशा। व्यवसाय। धार्मिक अनुष्ठान। विनश्वर। अवयव वाला। झगड़ा। करने योग्य।
कार्शानव (पुं.) अग्निपुंज। गरम।
कार्श्य (न.) निर्बलता। दुबलापन। कमी। थोड़ापन।
कार्षापण (पुं.न.) सोलह पैसा। सोली पण। कृषक। सोना। मुद्रा।
कार्षिक (पुं.) एक तोले भर।
काल (पुं.) काले रंग वाला। कृष्णवर्ण। समय। किसी कार्य या वस्तु के लिये उपयुक्त समय। भाग्य। नेत्र में जो काला भाग होता है। कोइल। शनैश्चर ग्रह। शिव। रक्तचित्रक। कासमर्द। क्षण घड़ी आदि समय।
कालकञ्ज (न.) नीला कमल।
कालकण्ठ (पुं.) मोर। नीलकण्ठ। पक्षी। शिव जी का नाम। खञ्जन। दात्यूह। कालविङ्क।
कालकूट (पुं.) विष। विष जो समुद्रमन्थन के समय निकला था और जिसे शिव जी ने पान कर लिया था।
कालनेमि (पुं.) १ राक्षस का नाम। हिरणयकशिपु का पुत्र। दैत्य।
कालपर्ण (पुं.) तगर का वृक्ष। काले पत्ते वाला वृक्ष।
कालपुच्छ (पुं.) काली पूँछ वाला। बारहसिंहा।
कालपृष्ठ (पुं.) मृगभेद। काली पीठ वाला। कंकपक्षी। धनुष।
कालरात्रि (स्त्री.) कल्पान्त रात्रि। कार्तिक की अमावास्या की रात्रि।
काललौह (न.) काला लोहा।
कालसूत्र (न.) नरकविशेष।
कालस्कन्ध (पुं.) काली शाखा वाला। तमाल वृक्ष। उदुम्बर।
काला (स्त्री.) नील। मजीठ। काला जीरा। अश्वगन्धा।
कालागुरु (न.) अगुरु चन्दन।
कालाग्नि (पुं.) मृत्यु को देने वाली आग। प्रलयाग्नि। कालानल।
कालिक (पुं.) बगला पक्षी। कृष्ण चन्दन।
कालिंग (पुं.) हाथी। सर्प। राजकर्कटी।
कालिन्दी (स्त्री.) यमुदा नदी।
कालिन्दीभेदन (पुं.) बलभद्र।
कालिमन् (पुं.) कालापन। कृष्णता।
काली (स्त्री.) काले रंग वाली। देवीभेद। मत्स्यगन्धा। सत्यवती। नये बादलों की माला। गाली गलौज। रात्रि। कालाञ्जनी।
कालेय (पुं.) कुत्ता। हल्दी।
काल्पनिक (त्रि.) कल्पित। बनावटी।
काल्या (स्त्री.) गौ, जिसके गर्भ धारण का समय आ पहुँचा हो।
कावेरी (स्त्री.) दक्षिण की एक नदी का नाम। वेश्या। हल्दी।
काव्य (पुं.) पद्यमयी रचना। कविता के गुणयुक्त ग्रन्थ। दैत्यों का गुरु। शुक्र।
काव्यलिंग (न.) एक प्रकार का अर्थालंकार।
काश् (क्रि.) चमकना।
काश (पुं.) फेफड़े का रोग। तृणपुष्प।
काशिराज (पुं.) दिवोदास। धन्वन्तरि।
काशी (स्त्री.) वाराणसी पुरी। बनारस।
काश्मीर (न.) कुङ्कुम। कमल की जड़। सुहागा। एक देश। कश्मीरदेशवासी।
काश्यप मुनिविशेष। मृगविशेष। एक प्रकार की मच्छी। गोत्रभेद। कश्यप का वंशधर।
काश्यपि (पुं.) गरुड़ के ज्येष्ठ भ्राता अरुण। (सूर्य का सारथि अनूरु)।
काश्यपी (स्त्री.) पृथिवी।
काष्ठ (न.) काठ। लकड़ी। इंधन।
काष्ठकदली (स्त्री.) बनैला केला।
काष्ठकीट (पुं.) घुन।
काष्ठतक्ष् (पुं.) रथ बनाने वाला। दोगला।
काष्ठलेखक (पुं.) देखो काष्ठकीट।
काष्ठा (स्त्री.) दिशा। पर्य्यवसान। सीमा। चिह्न। समय का परिमाणविशेष। कला का तीसवाँ भाग। जल। सूर्य्य।

कास (पुं.) फेफड़े का रोग। काही।
कासघ्नी (स्त्री.) कण्टकारी। कण्डभारी।
कासरः (पुं.) भैंसा।
कासारः (पुं.) तालाब। ह्रद। सरोवर।
कासिका (स्त्री.) खाँसी।
कासीस (न.) हीराकस। एक प्रकार की धातु। कौंसीस।
कासू (स्त्री.) घबराहट का बोल। चमक। बुद्धि। रोग।
काहल (न.) सूखा। मुर्झाया हुआ। उपद्रवी। बड़ा। विस्तृत। बहुत। मुर्गा। कौआ। नगाड़ा। बाजा विशेष।
काहलिः (पुं.) शिव जी का नाम।
किंवत् (अव्य.) दीन। तुच्छ। नीच।
किंवदन्ती (स्त्री.) जनश्रुति। लोकापवाद।
किंवा (अव्य.) विकल्प। अथवा। या। वा।
किंशारु (पुं.) धान की बाल। तीर। कंकपक्षी।
किंशुक (पुं.) वृक्ष जिसमें सुनदर लाल पुष्प लगते हैं, पर उन पुष्पों में महक नहीं होती। पलाश पुष्प। ढाँक के फूल। "विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः"।
किकिः (पुं.) नारियल का वृक्ष। चातक। पक्षी।
किक्किशः (पुं.) एक प्रकार का कीड़ा।
किंकरः (त्रि.) नाकर।
किङ्किणी (स्त्री.) करधनी। छोटी घण्टी। घुँघुरू।
किंकिर (पुं.) कोयल। भौंरा। घोड़ा। कामदेव।
किङ्किरात् (पुं.) अशोक वृक्ष। तोता। रक्तभाटी। कोमल। कामदेव।
किञ्च (अव्य.) आरम्भ। समुच्चय। कुछ और।
किञ्चन (अव्य.) थोड़ा। अपूर्ण।
किञ्जल्क (पुं.) केसर। फूल की धूरी। नाग केसर।
किट् (क्रि.) समीप जाना। डरना।
किटिः (पुं.) सुअर।
किटिभः (पुं.) खटमल।
किटिमः (पुं.) एक प्रकार की कोढ़।
किट्टं (न.) लोहे की जङ्ग या मैल।
किण् (पुं.) मांस की गाँठ। गूत। तिल। लकड़ी का कीड़ा।
किण्विन् (पुं.) घोड़ा।
कित् (क्रि.) सन्देह करना।
कितव (पुं.) जुआरी। ठग। नीच। धतूरा। उन्मत्त या सनकी आदमी।
किंथिन् (पुं.) घोड़ा।
किन्तनु (पुं.) आठ पाँव का कीड़ा। मकरी। बहुत छोटे शरीर वाला।
किन्तु (अव्य.) लेकिन। पर। परन्तु।
किन्नर (पुं.) देवताओं का गवैया, जिसका मुख घोड़े जैसा और शरीर मनुष्य जैसा होता है।
किन्नरेश (पुं.) किन्नरों का स्वामी। कुबेर। धन का दाता।
किन्नु (अव्य.) प्रश्न। वितर्क। स्थान। सादृश्य। क्या।
किनाट (स्त्री.) पेड़ की भीतरी छाल।
किम् (अव्य.) क्या। वितर्क। निन्दा।
किमु (अव्य.) सम्भावना। सन्देह। विमर्ष।
किमुत (अव्य.) प्रश्न। वितर्क। सन्देह। विकल्प। अतिशय। फिर क्या।
किम्पच (त्रि.) सूम। कृपण।
किंपुरुष (पुं.) देवयोनिभेद। हिमालय और हेमकूट के बीच। नववर्ष नामी जम्बुद्वीप का एक वर्ष। बुरा आदमी।
किंभूत किस प्रकार का। किस तरह का।
कियत् (त्रि.) कितना।
कियाहः (पुं.) लाल रंग का घोड़ा।
किर (पुं.) शूकर। सुअर।
किरण (पुं.) किरन। सूर्य।
किरणमय चमकीला। प्रकाशयुक्त।
किरणमालिन् (पुं.) सूर्य।
किरात (पुं.) छोटे शरीर वाला। भील। बनैला पुरुष। साईस। शिव जी का नाम।
किरातार्जुनीय (न.) भारवि रचित एक उच्च काव्य का नाम जिसमें अर्जुन और भीलरूपधारी शिव जी के युद्ध का वर्णन किया गया है।
किरातिः (स्त्री.) गंगा। दुर्गा का नाम। भिल्लनी। मोरछल या चौरी लेने वाली स्त्री। कुटनी। आकाशगंगा।

किरिः (पुं.) सुअर।
किरिटिः (पुं.) छुहारे के वृक्ष का फल।
किरीटः (पुं.) मुकुट। पगड़ी। मुकुट के नीचे की टोपी।
किरीटिन् (पुं.) मुकुटधारी। अर्जुन।
किर्मिः य किर्म्मी (स्त्री.) बड़ा कमरा। इमारत। सोने या लोहे की प्रतिमा। पलाश वृक्ष।
किर्म्मीर (पुं.) राक्षसविशेष, जिसे भीम ने मारा था। रंगबिरंगा। नारंगी का वृक्ष।
किर्याणि (पुं.) बनैला शूकर।
किल् (क्रि.) सफेद होना। जम जाना। खेलना। अनुरोध करना। फेंकना। भेजना।
किल (अव्य.) निश्चय। पछताना। प्रसिद्ध। सत्य। कारण। झूठ।
किलकिञ्चित (न.) स्त्रियों का विलासभेद।
किलकिला (स्त्री.) किलकारी। प्रसन्नता का बोल।
किलाट (पुं.) जमा हुआ दूध।
किलाटकः (पुं.) पके हुए दूध का पिण्ड। दूध का विकार। मलाई। मावा। खोया।
किलाटिन् (पुं.) बाँस।
किलास (पुं.) कोढ़ी। कोढ़ का सफेद चकत्ता।
किलिञ्जम् (स्त्री.) चटाई। हरी लकड़ी का तख्ता।
किलिमं (न.) अञ्जीर का वृक्ष।
किल्विन् (पुं.) घोड़ा।
किल्विष (न.) अपराध। पाप। रोग। धर्म और अधर्म का फल। अनिष्ट। संसार।
किशलय (पुं.न.) पल्लव। पत्र। पत्ता।
किशोरः (पुं.) हाथी का बच्चा। बालक, जिसकी अवस्था पाँच वर्ष से अधिक और पन्द्रह वर्ष से कम हो। दस वर्ष से १५ वर्ष तक की उम्र वाला किशोरावस्था का कहा जाता है। सूर्य।
किष्क् (क्रि.) मारना।
किष्किन्ध -न्धेय. (पुं.) ओड् देश का एक पहाड़। वहीं की गुफा।
किष्कु (पुं.स्त्री.) बारह अंगुल का माप। बाँह। हाथ का परिमाण।
किसल -किसलयः (पुं.न.) नवपल्लव। कोमल पत्र। अंकुर।
कीकट (पुं.न.) दीन। दरिद्र। घोड़ा। बिहार देश का नाम। "कीकटेषु गया पुण्या"।
कीकस (पुं.) कड़ा। दृढ़। हड्डी।
कीकिः (पुं.) नीलकण्ठ।
कीचकः (पुं.) पोला बाँस। बाँस की, हवा के लगने से सनसनाहट या खड़खड़ाहट। जातिविशेष। विराट् राजा का साला और और उनकी सेना का प्रधान सेनापति केकय देश का राजा।
कीचकजित् (पुं.) भीमसेन।
कीज (पुं.) अद्भुत। विलक्षण।
कीट् (क्रि) रंगना। बाँधना।
कीट (पुं.) कड़ा। दृढ़। कीड़ा।
कीटघ्न (पुं.) कीड़ों को विनाश करने वाला। गन्धक।
कीटजा (स्त्री.) कीड़ों से निकली हुई। लाख।
कीटमणि (पुं.) खद्योत। जुगनू।
कीदृश् (त्रि.) किस प्रकार। कैसे। कैसा।
कीनं (न.) मांस।
कीनारः (पुं.) अधम पुरुष। नीच मनुष्य।
कीनाश (पुं.) यम। वानरविशेष। खितहर। बापुरा। छोटा। कम।
कीरः (पुं.) तोता। देशविशेष। मांस। काश्मीर देश और वहां के निवासी।
कीरइष्टः (पुं.) आम का पेड़।
कीरिः प्रशंसा। भजन। गीत।
कीर्ण (त्रि.) बिखरा हुआ। ढका हुआ। भरा हुआ। रखा हुआ। घायल।
कीर्तना (स्त्री.) यश। नेकनामी।
कीर्त्ति (स्त्री.) यश।
कीर्तित (त्रि.) कहा गया। प्रसिद्ध किया गया।
कीर्तिशेष (पुं.) मरण। मौत।
कील् (क्रि.) बाँधना। खोंसना।
कील (पुं.स्त्री.) आग की लाट। शस्त्र। खम्भा। लेश। कील। माला। टिहुनी। शिव का नाम। अणु। धूपघड़ी का काँटा व कील।
कीलक (पुं.) कील। मेख। गऊ का खूँटा।
कीलालम् (न.) जल। रक्त। अमृत। पशु। मधु।
कीलालजम् (न.) मांस।

कीलालधिः (पुं.) समुद्र।
कीलालपः (पुं.) राक्षस। देव।
कीशः (पुं.) नंगा। (सं.) लंगूर। बन्दर। सूर्य। एक पक्षी।
कु (क्रि.) शब्द करना। दुःख से शब्द करना।
कु (अव्य.) पाप। निन्दा। थोड़ा। हटाना। भूमि। त्रिभुज का आधार।
कुकभ एक प्रकार की मदिरा।
कुकीलः (पुं.) पर्वत।
कुकुद (पुं.) आदपूर्वक अलंकृत कन्या को देने वाला।
कुकुन्दर (पुं.) जघनकूप।
कुकुर (पुं.) दशार्ह देश। यदुवंश का एक राजा जिसे ययाति से शाप से राज्य नहीं मिला था।
कुक्कुट (पुं.) आग की चिनगारी। मुर्गा पक्षी।
कुक्कुटव्रत (न.) व्रतविशेष। यह व्रत सन्तान प्राप्ति के लिये जेठ और भादों की शुक्ला सप्तमी के दिन किया जाता है।
कुक्कुटी (स्त्री.) मुर्गी। घरेलू छोटी छिपकली। वृक्षविशेष।
कुक्कुभः (पुं.) जंगली मुर्गा। वारनिश।
कुक्कुरः (पुं.) कुत्ता।
कुक्षः (पुं.) पेट।
कुक्षिः (पुं.) उदर। पेट। गर्भाशय। किसी वस्तु का भीतरी भाग। गुफा। तलवार की म्यान। खाड़ी। पेट का बायाँ और दाहिना भाग।
कुक्षिम्भरिः (पुं.) देवता और अतिथियों को ठग कर केवल अपना पेट भरने वाले। स्वार्थी। पेटू।
कुंकुम (न.) केसर।
कुंकुमाद्रिः (पुं.) एक पर्वत का नाम।
कुच् (क्रि.) चिड़िया की तरह सीटी बजाना। चिकनाना। मोड़ना। रोकना। बन्द करना। लिखना। टेढ़ा हो कर चलना। गुस्सा करना। मिलना। तिरछा होना।
कुच (पुं.) स्तन। चूची। चूची के ऊपर की घुण्डी या बौड़ी।
कुचफल (पुं.) अनार का फल या जो फल कुचों जैसा हो।
कुचर (त्रि.) अन्य के दोषों को कहने वाला।
कुचर्या (स्त्री.) कुव्यवहार। कुचालक।
कुच्छं (न.) कमलभेद।
कुज् (क्रि.) चुराना।
कुज (पुं.) मंगल ग्रह। नरकासुर। वृक्षमात्र। सीता। कात्यायनी (स्त्री.)।
कुजम्भलः (पुं.) घर फोड़ कर चोरी करने वाला चोर। नकब लगाने वाला चोर।
कुज्झटि, कुज्झटिका, कुज्झटी (स्त्री.) कुहासा। नीहार। पाला। कुहर।
कुञ्चन (न.) कुटिलता। अनादर। नेत्ररोग।
कुञ्चि (पुं.) कुटिल होना। आठ मूठ का नाम।
कुञ्चिक (पुं.) काला जीरा। मच्छी का भेद। कुञ्जी। ताली। बाँस की शाखा। रत्ती।
कुञ्चित (न.) सिकुड़ा हुआ। तगर का फूल।
कुञ्ज (पुं.) हाथी। ठोड़ी। लताओं से आच्छादित और बीच में खुला हुआ स्थान। लतागृह। लतावितान। हाथीदाँत।
कुञ्जर (पुं.) हाथी।
कुञ्जरच्छाया (पुं.) योगविशेष जो त्रयोदशी के दिन मघा नक्षत्र के होने पर होता है।
कुञ्जराशन (पुं.) बड़ का वृक्ष।
कुट् (क्रि.) तिरछा होना। कुटिल होना।
कुट (पुं.) घड़ा। दुर्ग। गढ़। हथौड़ा। वृक्ष। घर। पर्वत।
कुटक (पुं.) बिना बाँस का हल। (:) खम्भा जिसमें मथानी की रस्सी लपेटी जाती है।
कुटङ्क (पुं.) छत्त। छप्पर।
कुटङ्ककः (पुं.) छोटा घर। झोपड़ी। कुटी।
कुटपः (पुं.) कुडव। तौलविशेष। घर के समीप का बाग। ऋषि। तपस्वी। कमल।
कुटरः (पुं.) देखो कुटकः।
कुटरुः (पुं.) मुर्गा। खीमा।
कुटलं (न.) छत्त। छप्पर।
कुटिः (पुं.) शरीर। वृक्ष। कुटी। झोपड़ी। घुमाव।
कुटिरम् (न.) झोपड़ी। कुटी।
कुटिल (त्रि.) टेढ़ा। धोखेबाज।
कुटिलिका (स्त्री.) चुपके चुपके जैसे शिकारी अपनी

शिकार की ओर जाता है, जाना। लुहार की भट्ठी।
कुटी (स्त्री.) घुमाव। झोपड़ी। मुरा। मदिरा। कुटिनी।
कुटुङ्गकः (पुं.) बेलों अथवा लताओं से आच्छादित गृह या कुटी। किसी वृक्ष पर चढ़ी हुई बेल। लता। छप्पर। छत। झोपड़ी। खत्ती।
कुटुनी (स्त्री.) कुटनी। वह दुराचारिणी स्त्री जो अन्य स्त्रियों को चुपके चुपके व्यभिचार के लिये अन्य पुरुषों के पास पहुँचावे।
कुटुम्ब (न.) गृहस्थी। पोष्यवर्ग। नातेदार। सन्तान।
कुट्ट् (क्रि.) काटना। विभक्त करना। पीसना। दोषारोपण करना। जलाना। बढ़ाना।
कुट्टक (पुं.) अंगमेज जिसका वर्णन लीलावती में दिया हुआ है।
कुट्टनी (स्त्री.) देखो कुटुनी।
कुट्टमित (न.) मित्र के साथ मिलने की इच्छा रहते हुए भी, न मानने के लिये हाथ हिलाना। विलासभेद।
कुटमल (पुं.न.) खिलने पर आई हुई कली। नरकविशेष।
कुट्टारः (पुं.) पहाड़। सम्भोग विलास। ऊनी कम्बल। अकेलापन।
कुट्टिम (पुं.) छोटे पत्थरों से जड़ा हुआ। रत्नों की खान। अनार। कुटी।
कुट्टिहारिका (स्त्री.) दासी। टहलुनी।
कुट्टीरः (पुं.) पहाड़ी।
कुट्टीरकं (न.) झोपड़ी।
कुठ् (क्रि.) घबराना। आलस्य करना। छुड़ाना।
कुठः (पुं.) वृक्ष।
कुठाकुः (पुं.) चिड़िया विशेष।
कुठाटङ्कः-का (पुं.स्त्री.) कुल्हाड़ी।
कुठारः-री (पुं.स्त्री.) एक प्रकार की कुल्हाड़ी। वृक्ष।
कुठारुः (पुं.) वानर। पेड़। शस्त्र बन. े वाला।
कुठिः (पुं.) वृक्ष। पहाड़।
कुठेरः (पुं.) अग्नि।
कुठेरुः (पुं.) पंखा या चौंरी से उत्पन्न हवा।
कुड् (क्रि.) जलाना। घबड़ाना। बचाना। खाना। बालक होना।
कुड़ङ्गः (पुं.) कुञ्ज। लतागृह।
कुड़प -व (पुं.) एक पाव। सेर का चौथियाई भाग।
कुड्मल (पुं.न.) खिलने के समय को प्राप्त हुई कली। नरकविशेष।
कुडिः (सं.) शरीर। देह।
कुडिका (स्त्री.) कठौती या पथरौटी।
कुडी (स्त्री.) कुटी। झोपड़ी।
कुड्यं (न.) दीवार। कौतूहल। व्यसन।
कुण् (क्रि.) सहारा देना सहायता देना। शब्द करना। सलाह देना। बातचीत करना। आमंत्रण देना। नमस्कार करना।
कुणकः (पुं.) किसी जीवजन्तु का हाल का जन्मा बच्चा।
कुणप (पुं.) प्राणरहित। मृत शरीर। मुर्दा। दुर्गन्धयुक्त। भाला।
कुणरू (गु.) चिल्लाता हुआ।
कुणिः (पुं.) बिसहरी। फोड़ा जो हाथ के उङ्गली के नाखूनों के किनारे होता है।
कुण्टक (पुं.) मोटा। चर्बीला।
कुण्ठ (पुं.) मौथरा। ढीला। मूर्ख। मन्दबुद्धि। निर्बल।
कुण्ठकः (पुं.) मूर्ख।
कुण्ड् (क्रि.) जलाना। खाना। ढेर लगाना। रक्षा करना।
कुण्डलिन् (पुं.) घेरा देने वाला। सर्प। साँप।
कुण्डलिनी (स्त्री.) तांत्रिक शक्तिविशेष। साँपिन।
कुण्डिका (स्त्री.) घड़ा। कमण्डलु।
कुण्डिन (पुं.) शिव जी का नाम। वर्णसंकर। घोड़ा। मुनिविशेष।
कुण्डिनं (न.) विदर्भों की राजधानी का नाम। मुनिविशेष।
कुण्डिर-कुण्डीर (पुं.) दृढ़। मजबूत मनुष्य।
कुतपः (पुं.) सूर्य्य। अग्नि। ब्राह्मण। अतिथि। गौ। भाञ्जा। दौहित्र। बाजा। नैपाली कम्बल। कुशतृण। दिन के दोपहर की पिछली घड़ी से तीसरे पहर की पहली घड़ी तक का समय।
कुतस् (अव्य.) प्रश्न। कहाँ से। कब से। कहाँ। किस स्थान पर। क्यों। किस कारण से। कैसे।

कुतुकं (न.) इच्छा। अभिलाष। कौतुक।
कुतुप (पुं.) छोटा सा चमड़े का कुप्पा। घी रखने का बरतन। दिन का आठवाँ मुहूर्त।
कुतूहल (न.) अद्भुत। विलक्षण। अपूर्व।
कुत्र (अव्य.) कहाँ। कब।
कुत्स् (क्रि.) गाली देना। निन्दा करना।
कुत्सा (स्त्री.) निन्दा। परिवाद।
कुत्सित (न.) निन्दित। निन्दा किया हुआ। बुरा कहा गया। कमीना। क्षुद्र।
कुथ् (क्रि.) सड़ना। दुर्गन्ध निकलना। फफूदी लगना।
कुथः (पुं. स्त्री.) हाथी की झूल। (:) कुश तृण।
कुद्दारः-लः-लकः (पुं.न.) कोविदार वृक्ष। कचनार का पेड़। काकानासा। कुदाली। ताँबे का घड़ा।
कुद्दङ्कः-गः (पुं.) चौकीदार का घर। मकान जिसमें किसी वस्तु का ताकने वाला रहता है।
कुध्रः (पुं.) पहाड़। पर्वत।
कुनकः (पुं.) काक। कौआ।
कुनखः (पुं.) नखों का रोग जिसमें नखों का रंग बदल जाता है। कुनख रोग वाला मनुष्य।
कुनालिका (स्त्री.) कोइल।
कुन्तः (पुं.) प्रास नामी शस्त्र। भाला। एक छोटा जानवर। कीट। अत्रविशेष। भल। गवेधुका धान्य। सहन। क्रोध। प्रेम।
कुन्तलः (पुं.) केश। पीने का पात्र। हाथ। देशविशेष। हल। जौ। गन्धद्रव्य।
कुन्तिः (पुं.) देशविशेष। राजा क्रथ के पुत्र का नाम।
कुन्ती (स्त्री.) सूरसेन राजा की औरसी पुत्री जिसका नाम पृथा था, और कुन्तिभोज ने उसे निज-सन्तान की तरह ग्रहण किया। पाण्डु की पटरानी।
कुन्थ् (क्रि.) घायल करना। पीड़ित होना।
कुन्द (पुं.) फूलदार एक वृक्ष। कुन्दरू नामक गन्ध द्रव्य। विष्णु भगवान् का नाम। कुबेर के नौ धनागारों में से एक। नौ की संख्या। कमल। खराद। भूमियंत्र। करवीर वृक्ष।
कुन्दमः (पु.) बिल्ली।
कुन्दरः (पुं.) विष्णु का नाम। तृण या घासविशेष।
कुन्दु (पुं.) चूहा। घूँस।
कुप् (क्रि.) क्रुद्ध होना। कुपित होना। उत्तेजित होना। आन्दोलित होना। चमकना। बोलना।
कुपाणि (त्रि.) टेढ़े हाथ वाला।
कुपिन्द (पुं.) ताँत। जुलाहा।
कुपिनिन् (पुं.) मछवा। धीमर।
कुपिनी (स्त्री.) एक प्रकार का छोटा जाल जिससे छोटी मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।
कुपूय (त्रि.) दुष्टाचरण वाला। बुरे चाल-चलन वाला। नीच। अकुलीन। घृणित।
कुप्य (न.) उपधातु। जस्ता धातु। चाँदी और सोने को छोड़ कर कोई धातु।
कुबेरः (पुं.) यक्षराज। मूर्ख। बुरे शरीर वाला।
कुब्जः (पुं.) थोड़ी कोमलता वाला। कुबड़ा। तलवार। अपामार्ग।
कुब्र (पुं.त्रि.) वन। हवनकुण्ड। छल्ला। बाली। सूत। छकड़ा। गाड़ी।
कुभृत् (पुं.) पहाड़। राजा।
कुमारः (पुं.) बालक। जिसकी उम्र पाँच वर्ष के नीचे हो। युवराज। कार्तिकेय, जो युद्ध के अधिष्ठाता देवता हैं। अग्नि। तोता। ब्रह्मचारी। सिन्धुनद। वरुण वृक्ष।
कुमारकः (पुं.) बालक। आँख की पुतली।
कुमारिका, कुमारी (स्त्री.) दस से बारह वर्ष की अविवाहिता कन्या। अविवाहिता लड़की। क्वारी लड़की। दुर्गा। कई एक पौधों के नाम। सीता। बड़ी इलायची। भारतवर्ष की दक्षिणी अन्तिम सीमा पर स्थित अन्तरीप। श्यामा पक्षी। नवमल्लिका। घृतकुमारी। नदीविशेष। वरुण का फूल।
कुमुद (पुं.) अकृपालु। अमित्र। लालची। कुमुदनी का सफेद फूल। कैरव। कल्हार। वारनमेद। दैत्यविशेष।
कुमुदिनी (स्त्री.) कमलसमूह। तड़ाग जिसमें कमलों की बहुतायत हो। कुमुदलता।
कुमुद-नाथ-पति-बन्ध-बान्धव-सुहृद-नायकः (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।
कुमोदक (पुं.) विष्णु का नाम।
कुम्बः (पुं.) स्त्रियों के सिर पर ओढ़े जाने वाला वस्त्र विशेष। लाठी अथवा डण्डे का ऊपरी भाग।

मोटे कपड़े की कुर्ती। यज्ञकुण्ड के चारों ओर का अहाता।

कुम्भः (पुं.) घड़ा। हाथी के माथे पर के दो मांसपिण्ड। हृदय का रोग। कुम्भकर्ण का पुत्र। वेश्यापति। प्राणायाम का एक अंग जिसमें स्वाँस रोकी जाती है। चौसठ सेर की तौल। ज्योतिषमतानुसार ग्यारहवीं राशि। गुग्गुल।

कुम्भक (पुं.) प्राणयाम का अंगविशेष।

कुम्भकर्ण (पुं.) घड़े के समान कान वाला। रावण का छोटा भाई।

कुम्भकार (पुं.) जातिविशेष, जो घड़ा आदि बनावे अर्थात् कुम्हार। कुकुभ नामक पक्षी।

कुम्भयोनि (पुं.) कुम्भज। अगस्त्य मुनि। द्रोणाचार्य। द्रोणपुष्पी।

कुम्भसम्भव अगस्त्य मुनि का नाम।

कुम्भदासी (स्त्री.) कुटनी।

कुम्भिका (स्त्री.) छोटा बरतन। हण्डिया। वेश्या। नेत्ररोग।

कुम्भिन् (पुं.) हाथी। नक्र। मछली। एक प्रकार का विषैला कीड़ा। गुग्गुल।

कुम्भिलः (पुं.) चोर। श्लोकार्थ चुराने वाला। साला। गर्भमास पूर्ण होने के पहले ही उत्पन्न हुआ बालक।

कुम्भ (पुं.) छोटा जलपात्र। मिट्टी के रसोई के बरतन। अनाज के तौलने का एक बाँट। अनेक पौधों का नाम।

कुम्भीधान्य (न.) छः दिन के खर्च के योग्य घड़ों में संगृहीत अनाज।

कुम्भीधान्यकः (पुं.) गृहस्थ जो धान्य एकत्र करता है।

कुम्भीनसः (पुं.) एक प्रकार का विषैला सर्प।

कुम्भीपाकः (पुं.) नरक, जहाँ तेल के तपे हुए घड़े में पकाये जाते हैं या जहाँ कुम्हार के घड़े की तरह पापी जीव तपाये जाते हैं।

कुम्भीकः पुन्नाग वृक्ष। गाडू।

कुम्भीरः (पुं.) जल का जन्तु। बड़ी मछली। तेंदुआ।

कुम्भीरकः कुम्भीलः, कुम्भीलकः, (पुं.) चोर। मगर। नक्र।

कुर् (क्रि.) शब्द करना। बजाना।

कुरङ्करः कुरङ्कुरः (पुं.) सारस।

कुरङ्गः (पुं.) हिरन, विशेष कर वह जिसका रंग ताम्रवर्ण का हो।

कुरचिल्लः (पुं.) केंकड़ा। कर्कराशि। बनैले सेव।

कुरटः (पुं.) मोची। चमार। जूते बनाने वाला।

कुरण्डः (पुं.) फोते बढ़ने की बीमारी।

कुरर (पुं.) उत्क्रोश पक्षी। चकवा।

कुरुः (पुं.) वर्तमान दिल्ली के समीप का देश। इस देश के राजा। पुरोहित। भात। कण्टकारिका। जम्बुद्वीप का वर्षभेद।

कुरुक्षेत्र (न.) पाप दूर करने वाला स्थान। वह स्थान जहाँ कौरव पाण्डवों का लोकक्षयकारी इतिहास प्रसिद्ध हुआ था।

कुरुवक (पुं.) कुड़ची। पुष्पवृक्ष।

कुरविस्त (पुं.) तौलविशेष। चार तोले सोने की तौल।

कुरुटिन् (पुं.) एक फोड़ा।

कुररी (स्त्री.) एक प्रकार की चिड़िया।

कुरुलः (पुं.) चोटी। माथे पर की अलकें।

कुरुंबं (सं.) एक प्रकार की नारंगी।

कुरुविन्दः (पुं.) लाल, काला नमक। दर्पण।

कुरुवृद्ध (पुं.) भीष्म पितामह। कौरवों में बूढ़े।

कुरूप्य (न.) राँगा धातु।

कुर्परः (पुं.) घुटना। कोहनी।

कुर्पास (पुं.) चोली। कंचुकी।

कुर्वत् (त्रि.) काम करने वाला। नौकर।

कुल (न.) वंश। घराना। देश। समूह।

कुलक (न.) समूह। ऐसे दो तीन चार श्लोकों का समूह जो एक में मिले हुए हों।

कुलकुण्डलिनी (स्त्री.) तान्त्रिकों की उपास्य शक्ति। शिवशक्तिविशेष।

कुलघ्न (त्रि.) कुल को नाश करने वाला। वर्णसंकर।

कुलज (त्रि.) खानदानी। अच्छे घराने का। कुलीन।

कुलञ्जन (पुं.) वृक्षविशेष।

कुलटा (स्त्री.) बदचलन औरत। घर-घर घूमने वाली।

कुलत्थ (पुं.) कुल्था नाम से प्रसिद्ध अन्न विशेष।
कुलतन्तु (पुं.) वंश को चलाने वाला।
कुलतिथि (स्त्री.) चौथ। अष्टमी। द्वादशी। चतुर्दशी। वह तिथि जिस दिन कुलदेवता की विशेष पूजा की जाने का नियम हो।
कुलधर्म (पुं.) वंशपरम्परा में आम्नाय से प्रचलित धर्म। कुलाचार। रीति।
कुलपति (पुं.) १०००० छात्रों का अन्न वस्त्र दे कर विद्या पढ़ाने वाला मुनि। घराने का मुखिया। सेनापति।
कुलपर्वत (पुं.) सात बड़े २ पर्वत।
कुलविप्र (पुं.) पुरोहित।
कुलाट (पुं.) एक प्रकार की छोटी मछली।
कुलाय (पुं.) घोसला। शरीर। यज्ञविशेष।
कुलायिका (स्त्री.) पक्षीशाला। चिड़ियाखाना।
कुलाल (पुं.) कुम्हार। उल्लू पक्षी।
कुलाह (पुं.) हल्के पीले रंग का काली जाँघों वाला घोड़ा।
कुलाहक (पुं.) गिरगिट।
कुलिक (पुं.) एक नाग। एक साग। एक योग।
कुलिंग (पुं.) गौरैया चिड़िया। (त्रि.) बुरे चिह्न वाला।
कुलिंगी (स्त्री.) काकरासिंगी।
कुलिश (पुं.न.) वज्र। एक मछली।
कुलिशद्रुम (पुं.) थूहर का वृक्ष।
कुलिशासन (पुं.) शाक्यमुनि।
कुली (स्त्री.) गोखरू। बड़ी साली।
कुलीन (त्रि.) खानदानी। प्रतिष्ठित।
कुलीनस (न.) जल।
कुलीर (पुं.) काँकड़ा नाम का जलजीव। कर्कट। केंकड़ा।
कुलुक (न.) जीभ का मैल।
कुल्लूकभट्ट (पुं.) मनुस्मृति पर टीका लिखने वाले पण्डित। इनका समय ईसा की सोलहवीं शताब्दी कहा जाता है।
कुलेश्वर (पुं.) महादेव। घराने का मालिक। वंश का मालिक।
कुल्फ (पुं.) एक रोग। पैरों के गुल्फ (गट्टे)।
कुल्मल (न.) पाप।
कुल्माष (पुं.) घुने उड़द। लपसी।
कुल्य (न.) हड्डी। एक प्रकार की अन्न की माप। सूर्य। मांस। मान्य पुरुष।
कुल्या (स्त्री.) नहर। कृत्रिम नदी।
कुवलय (न.) श्वेत कमल। कोकाबेली। नीला कमल। पृथ्वीमण्डल।
कुवलयादित्य (न.) एक राजा।
कुवलयानन्द (न.) अप्पय दीक्षित रचित एक अलंकार ग्रन्थ।
कुवलयापीड़ (न.) कंस का हाथी, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा।
कुवाद (पुं.) बुरी बातचीत। अफवाह।
कुविन्द (पुं.) जुलाहा। कपड़ा बनाने वाला।
कुविवाह (पुं.) निन्दनीय ब्याह। बे-मेल ब्याह।
कुवृत्ति (स्त्री.) बुरी प्रवृत्ति। खराब जीविका।
कुवेणी (स्त्री.) मछली रखने की टोकरी।
कुश (पुं.न.) तृणविशेष। रामचन्द्र के बड़े पुत्र। द्वीपविशेष। जल। पापी। मतवाला।
कुशध्वज (पुं.) राजा जनक के छोटे भाई।
कुशप (पुं.) पानपात्र। प्याला।
कुशल (न.) कल्याण। मंगल। (त्रि.) चतुर।
कुशस्थल (न.) कन्नौज।
कुशस्थली (स्त्री.) द्वारकापुरी।
कुशलप्रश्न (पुं.) खैर खबर पूछना।
कुशली (पुं.) कुशलयुक्त। (स्त्री.) पथरचटा का वृक्ष।
कुशा (स्त्री.) लगाम। रस्सी।
कुशाग्र (पुं.) बहुत महीन। कुशे की नोक के समान। कुशे की नोक। बुद्धि (त्रि.) तीक्ष्ण बुद्धि वाला।
कुशरणि (पुं.) दुर्वासा ऋषि।
कुशावती (स्त्री.) रामचन्द्र के पुत्र कुश की राजधानी।
कुशिक (पुं.) जमदग्नि मुनि के पिता। विश्वामित्र के पिता। काही। बहेड़ा। सर्जवृक्ष।
कुशिष्य (त्रि.) बुरा शिष्य।
कुशी (पुं.) वाल्मीकि मुनि। (स्त्री.) हल की फाल। लोहविकार।
कुशीद (न.) लाल चन्दन। ब्याज। सूद।
कुशीलव (पुं.) वाल्मीकि मुनि। रामचन्द्र के पुत्र लव

कुश। चारण। भाट। याचक। नाचने गाने की वृत्ति वाले, कथिक। (त्रि.) बुरे शील वाला।
कुशूलः (पुं.) धान की भूसी की आग। अन्न भरने की कोठार।
कुशेशयः (न.) कमल। सारस पक्षी। कनैर का वृक्ष।
कुषाकु (पुं.) बन्दर। अग्नि। सूर्य (त्रि.) पर-सन्तापी।
कुषीद (न.) ब्याज। सूद।
कुष्ठ -कुष्टः (न.) कोढ़ का रोग। एक प्रकार का विष।
कुष्ठकेतु (पुं.) खेखसा का साग।
कुष्ठगन्धिनी (स्त्री.) अश्वगन्धा। असगंध।
कुष्ठारि (पुं.) कत्था। पर्वल। गन्धक।
कुष्ठी (त्रि.) कोढ़ी।
कुष्माण्ड (पुं.) कुम्हड़ा। शिव का एक गण।
कुष्माण्डी (स्त्री.) अम्बिका। एक औषध। कुम्हड़ा। एक यज्ञ का कर्म।
कुसित (पुं.) शहर। बसी हुई बस्ती।
कुसिम्बी (स्त्री.) सेम की तर्कारी।
कुसीद (न.) सूद। ब्याज।
कुसुम (न.) फूल। फल। स्त्रियों का रज। नेत्ररोग। फुल्ली।
कुसुमकार्मुक (नुं.) कामदेव।
कुसुमपुर (न.) पटना। बिहार की पुरानी राजधानी।
कुसुमशर (पुं.) कामदेव।
कुसुमाकर (पुं.) वसन्त ऋतु।
कुसुमाञ्जलि (पुं.) पुष्पाञ्जलि।
कुसुमाधिप (पुं.) फूलों का राजा गुलाब अथवा चम्पे का फूल।
कुसुमाल (पुं.) चोर।
कुसुमासव (न.) शहद। फूलों के रस का मद्य।
कुसुमेषु (पुं.) कामदेव।
कुसुमोच्चय (पुं.) फूलों का गुच्छा। फूलों का ढेर।
कुसुम्भ (न.) बहुत फूलों वाला वृक्ष। कुसुम का वृक्ष। कमण्डलु। सोना।
कुसृति (स्त्री.) ठगी। दुष्टता। जादू-टोना।
कुस्तुभ (पुं.) विष्णु। सागर।
कुस्तुम्बरी (स्त्री.) धनिया।
कुह (पुं.) कुबेर। आश्चर्य। (अव्य.) क्व, कुत्र 'कहाँ' के अर्थ में।
कुहक (न.) इन्द्रजाल। माया। छल। धूर्तता। (त्रि.) धूर्त।
कुहकस्वनः (पुं.) मुर्गा।
कुहक्क (पुं.) तालविशेष।
कुहन (पुं.) मूसा। साँप। (न.) मिट्टी का एक प्रकार का बर्तन। काँच का पात्र। (त्रि.) ईर्ष्या करने वाला।
कुहर (पुं.) नागविशेष। गुफा। छिद्र। बिल।
कुहा (स्त्री.) कुहासा। कुहरा।
कुहू (स्त्री.) अमावास्या तिथि। कोयल का शब्द।
कुहूकण्ठ (पुं.) कोयल।
कुहेलिका (स्त्री.) आकाश की धूल। कुहासा।
कू (क्रि.) शब्द करना।
कूकुद (पुं.) गहना कपड़ा पहना कर कन्यादान करने वाला। चिह्न। पहचान।
कूच (पुं.) स्तन।
कूचिका (स्त्री.) चित्र बनाने की कूची।
कूजन (न.) पक्षियों का शब्द। अस्पष्ट शब्द।
कूट (पुं.) अगस्त्य ऋषि। पर्वत का शिखर। घर। निश्चल। ढेर। लोहे का मुद्गर। पाखण्ड। माया। असल बात को या चीज को छिपाना। तुच्छ। मूर्ख। मृग को फँसाने की कला। पुरद्वार।
कूटयुद्ध (न.) छिप कर लड़ना।
कूटरचना (स्त्री.) जालसाजी।
कूटसाक्षी (पुं.) झूठा गवाह।
कूटस्थ (पुं.) आत्मा। आकाश आदि तत्व। व्याघ्रनख नाम का सुगन्ध पदार्थ।
कूटागार (न.) क्रीड़ाभवन। नकली घर। चौखण्डी।
कूणिका (स्त्री.) शिखर। फूल की कली। वीणा की लम्बी लकड़ी।
कूप (पुं.) कुँआ। नाव बाँधने का खंभा। तेल का कुप्पा। मस्तूल।
कूपखानक (पुं.) कुँआ खोदने वाला।
कूपार (पुं.) समुद्र।
कूर (पुं.न.) अन्न। भात।

कूर्च (पुं.न.) दाढ़ी-मूछ। भौंह का मध्य। छल। मोर की पूँछ। दम्भ। चरण। मुट्ठी भर कुश। शिर। आसनविशेष। कूची।
कूर्चशीर्ष (पुं.) नारियल।
कूर्चिका (स्त्री.) दुग्धविकार। चित्र लिखने की कूची। कली। गहना साफ करने की कूची।
कूर्दन (न.) खेलना। कूदना।
कूर्प (न.) भौंह का बीच।
कूर्पर (पुं.) कुहनी।
कूर्पास (पुं.) चोली। अँगिया।
कूर्म (पुं.) कछुआ। एक प्रकार की मुद्रा। एक प्राणवायु का नाम।
कूर्मचक्र (न.) ज्योतिष में प्रसिद्ध एक प्रकार का चक्र। कछुए के आकार का चक्र।
कूर्मपुराण (न.) १८ पुराणों में एक पुराण।
कूर्मपृष्ठ (पुं.) हरा भरा वृक्ष। कछुए की पीठ। (न.) सकोरा। सरवा।
कूल (न.) नदी का किनारा। तालाब।
कूलंकष (पुं.) समुद्र।
कूलंकषा (स्त्री.) नदी।
कूवर (पुं.) कुबड़ा। कूँजा नाम से प्रसिद्ध पुष्प। गाड़ी का धुरा। (त्रि.) रम्य। सुन्दर।
कूष्माण्ड (पुं.) ककड़ी। पेठा। कुम्हड़ा। शिव का एक गण।
कूष्माण्डवटिका (स्त्री.) कुम्हड़ौरी।
कूहा (स्त्री.) कुहासा। कुहरा।
कृक (पुं.) गला।
कृकण (पुं.) कयार नाम का पक्षी। केकड़ा नाम का कीड़ा।
कृकर (पुं.) शिव। एक प्राणवायु। कनैर का वृक्ष।
कृकला (स्त्री.) पीपल।
कृकलास (पुं.) गिरगिट।
कृकवाकु (पुं.) मोर। मुर्गा।
कृकवाकुध्वज (पुं.) शिव के पुत्र स्वामिकार्तिकेय।
कृकाटिका (स्त्री.) घट्टी। गर्दन का ऊँचा हिस्सा।
कृच्छ्र (न.) कष्ट। दुःख। दुःख के कारण। एक प्रकार का व्रत। पाप। संकट। मूत्रकृच्छ्र रोग। कठिन।
कृच्छ्रसान्तपन (न.) एक व्रत।
कृच्छ्रातिकृच्छ्र (पुं.) अत्यन्त कष्ट। कठिन से कठिन। एक प्रकार का व्रत।
कृणु (पुं.) चितेरा। चित्र बनाने वाला।
कृत् काटना।
कृत (न.) सत्ययुग। पूरा। (त्रि.) किया गया। फल। विहित।
कृतक (न.) बनावटी।
कृतकर्मा (त्रि.) निपुण। चतुर। शिक्षित। पुण्यात्मा। जो काम पूरा कर चुका।
कृतकृत्य (त्रि.) कृतार्थ। धन्य। विद्वान्। जो काम पूरा कर चुका।
कृतकोटि (पुं.) एक मुनि का नाम।
कृतक्षण (त्रि.) प्रतिज्ञा करने वाला। वादा करने वाला। जिसे अवकाश मिला हो।
कृतघ्न (त्रि.) किसी के किये उपकार को भूल जाने वाला।
कृतज्ञ (पुं.) विष्णु। आत्मा। कुत्ता। (त्रि.) दूसरे के किये उपकार को जानने-मानने वाला।
कृतज्ञता (त्रि.) दूसरे के किये उपकार को जानना और मानना।
कृतदास (पुं.) पन्द्रह प्रकार के दासों में से एक प्रकार का दास।
कृतधी (त्रि.) उत्तम पण्डित। शास्त्राभ्यास से निर्मल अन्तःकरण वाला।
कृतनाश (पुं.) अपना नाश आप करने वाला। किये हुए का नाश।
कृतमाल (पुं.) कनैर का वृक्ष।
कृतमाला (स्त्री.) एक नदी।
कृतवर्मा (पुं.) एक क्षत्रिय।
कृतविद्य (त्रि.) जिसने भली भाँति विद्या का अभ्यास किया हो।
कृतवीर्य (पुं.) सहस्रबाहु। अर्जुन का पिता।
कृतवेदी (त्रि.) कृतज्ञ। उपकार को मानने वाला।
कृतस्वरः (पुं.) सुवर्ण की खान।
कृतहस्त (त्रि.) वाण चलाने में सिद्धहस्त।
कृताकृत (न.) कार्य-कारण। किये गये और न किये गये कर्म।

कृताञ्जलि (त्रि.) हाथ जोड़े हुए। लज्जावती लता।
कृतात्मा (पुं.) साफ हृदय वाल। शुद्धान्तःकरण।
कृतात्दय (पुं.) कर्म का नाश।
कृतान्त (पुं.) दैव। पाप। यमराज।
कृताय (पुं.) पाँसा।
कृतार्थ (त्रि.) काम कर चुका। जिसकी कामना पूर्ण हो गयी।
कृतार्थता (स्त्री.) सफलता।
कृति (स्त्री.) करतूत। पुरुष का उद्योग। २० अक्षर के चरण वाला एक छन्द।
कृती (त्रि.) पण्डित। योग्य। जानकार। पुण्यात्मा। साधु। कृतार्थ।
कृत्त (त्रि.) काटा गया।
कृत्ति (त्रि.) मृगछाल। खाल। भोजपत्र। कृत्तिका नक्षत्र।
कृत्तिका (स्त्री.) २७ नक्षत्रों में से एक नक्षत्र।
कृत्तिकासुत (पुं.) चन्द्रमा। कार्त्तिकेय।
कृत्तिवासा (पुं.) चर्म ओढ़ने वाले। बाघम्बरधारी। शिव।
कृत्य (न.) काम। करने लायक। प्रयोजन।
कृत्यवित् (त्रि.) कर्त्तव्य को जानने वाला। विधि का ज्ञाता।
कृत्या (स्त्री.) जादू टोना की देवता।
कृत्रिम (न.) गोद लिया गया लड़का। एक प्रकार का नमक। (त्रि.) बनावटी। नकली।
कृत्स्न (न.) जल। कोख। (त्रि.) सारा। सम्पूर्ण।
कृत्स्नवित् (त्रि.) सब जानने वाला। परमात्मा।
कृन्तन (न.) काटना।
कृप (पुं.) शरद्वान् के पुत्र और द्रोणाचार्य के साले। व्यासदेव।
कृपण (पुं.) कीड़ा। दीन। सूम। बुरा। ओछा। मूर्ख।
कृपा (स्त्री.) दया। बदले की इच्छा न रख कर दूसरों पर अनुग्रह।
कृपाण (पुं.) खड्ग। तलवार।
कृपाणी (स्त्री.) छुरी। कैंची।
कृपालु (त्रि.) कृपा ये युक्त। कृपापूर्ण।
कृपी (स्त्री.) द्रोणाचार्य की स्त्री।
कृपीट (न.) पेट। पानी। जंगल। ईंधन।
कृपीटयोनि (पुं.) काष्ठ से उत्पन्न होने वाला, अग्नि।
कृमि (पुं.) कीड़ा। लाख। गधा। पेट का कृमिरोग।
कृतिकण्टक (न.) गुलर। बिड़ंग।
कृतिकोषोत्थ (न.) रेशम। रेशमी वस्त्र।
कृमिघ्न (पुं.) प्याज। कोलकन्द। बहेड़ा। बिड़ंग।
कृमिघ्ना (स्त्री.) हल्दी।
कृमिला (स्त्री.) बहुत बच्चे जनने वाली स्त्री।
कृमिशैल (पुं.) बाँबी।
कृवि (पुं.) ताँत।
कृश (त्रि.) थोड़ा। सूक्ष्म। दुबला।
कृशानु (पुं.) अग्नि। चित्रक वृक्ष।
कृशानुरेता (पुं.) शिव जी।
कृष् खींचना।
कृषक (पुं.) समय। किसान। हल की फाल।
कृषि (स्त्री.) खेती। वैश्य का काम।
कृषीवल (त्रि.) खेती करने वाला। खेतिहर।
कृष्ट (त्रि.) खींचा गया। जुता हुआ खेत।
कृष्ण (पुं.) काला। विष्णु का एक अवतार। श्रीकृष्ण। वेदव्यास। अर्जुन। कौआ। कोयल। लोहा। अञ्जन। कज्जल।
कृष्णकाय (पुं.) भैंसा। (त्रि.) काले रंग के शरीर वाला।
कृष्णजटा (स्त्री.) जटामांसी।
कृष्णपक्ष (पुं.) अँधेरा पाख।
कृष्णपर्णी (स्त्री.) श्यामा तुलसी।
कृष्णपुच्छ (पुं.) लोमड़ी।
कृष्णला (स्त्री.) घुँघची।
कृष्णवक्त्र (पुं.) लंगूर। (त्रि.) काले मुँह वाला।
कृष्णवर्त्मा (पुं.) अग्नि। राहु। बुरी राह पर चलने वाला। चीते का वृक्ष।
कृष्णसार (पुं.) मृगविशेष।
कृष्णा (स्त्री.) द्रौपदी। यमुना। दाख। काला जीरा।
कृष्णाजिन (न.) काले चितकबरे मृग का चमड़ा।
कृष्णिका (स्त्री.) राई।
कृष्णेतर (त्रि.) जो काला न हो। (पुं.) शुक्लपक्ष।
कृष्या (स्त्री.) जोतेने लायक पृथ्वी।
कृसरात्र (न.) खिचड़ी।

क्लृप्त (त्रि.) रचित। बनाया गया।

केकय (पुं.) एक देश।

केकयी (स्त्री.) दशरथ की छोटी रानी। भरत की माता।

केकर (पुं.) ढेरा। ऊँची नीची आँख की पुतली वाला पुरुष।

केका (स्त्री.) मोर की वाणी।

केचन (अ.) कोई।

केचित् (अ.) कोई।

केणिका (स्त्री.) कपड़े की कुटी। तम्बू। कनात।

केतक (पुं.) क्यौड़ा। केतकी।

केतन (न.) मकान। घर। झण्डा। चिह्न। निमन्त्रण।

केतु (पुं.) झण्डा। रोग। कान्ति। चमक। चिह्न। शत्रु। नवग्रहों में से एक ग्रह।

केतुमाल (न.) जम्बूद्वीप के नव खण्डों में से एक खण्ड।

केदार (पुं.) एक पर्वत। एक शिवलिंग। पानी भरे खेत। पृथ्वी का स्थानविशेष। खेत की क्यारी।

केन्द्र (न.) मध्यस्थल। मुख्य स्थान। जन्मपत्र के लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम स्थान।

केमद्रुम (पुं.) ज्योतिष के अनुसार जन्म काल में पड़ने वाला योगविशेष।

केयूर (न.) बाजूबंद।

केरल (पुं.) मालावार देश। पतित क्षत्रिय जातिविशेष। एक सम्प्रदाय। एक 'प्रश्न' का ग्रन्थ।

केलि (पुं.) क्रीड़ा। हँसी-मजाक। (स्त्री.) पृथ्वी।

केलिकला (स्त्री.) सरस्वती की वीणा। रति-कला।

केवल (त्रि.) एक। अकेला। सिर्फ। ज्ञान-भेद। शुद्ध।

केश (पुं.) बाल। वरुण देवता।

केशकलाप (पुं.) केशकलाप। बालों का जूड़ा।

केशपर्णी (स्त्री.) लटजीरा।

केशमार्जक (न.) कंघा।

केशर (पुं.) सिंह के कन्धे पर की जटाएँ। वृक्ष-विशेष। घोड़े की गर्दन पर के बाल। सुपारी का पेड़।

केशरी (पुं.) सिंह। घोड़ा। तर्बूज। हनुमान् के पिता।

केशव (पुं.) विष्णु का नाम। जो ब्रह्मरुद्रादिकों पर दया करता हो। केशी दैत्य को मारने वाला श्रीकृष्ण। (त्रि.) जिसके केश अच्छे हों। सूर्य।

केशवेश (पुं.) बालों की सजावट। चोटी बाँधना।

केशिका (स्त्री.) सतावर।

केशी (पुं.) एक दैत्य। विष्णु। शेर। घोड़ा।

केशिनिषूदन (पुं.) केशी दैत्य को मारने वाले कृष्णचन्द्र।

केसर (पुं.) केसर। बकुल वृक्ष। सिंह और घोड़े के कन्धे के बाल। कसीस। सुवर्ण। कमल के फूल के भीतर की सुइयाँ।

केसरी (पुं.) सिंह। घोड़ा। हनुमान् के पिता।

कैकेयी (स्त्री.) दशरथ की छोटी रानी। भरत की माता।

कैटभ (पुं.) एक दैत्य।

कैटभारि (पुं.) विष्णु।

कैटर्य (पुं.) कायफल। नीम। मदन वृक्ष।

कैतव (न.) कपट। छल। जुआ। वैडूर्यमणि। धतूरे के फूल और फल।

कैमुतिक (पुं.) एक प्रकार का न्याय। जैसे- "यदि ऐसा न होता तो ऐसा होता"।

कैरव (पुं.) शत्रु। कपटी। (न.) कोकावेली।

कैरवी (पुं.) चन्द्रमा। (स्त्री.) चाँदनी।

कैलास (पुं.) चाँदी के रंग का पहाड़, जिस पर शिव और कुबेर जी रहते हैं।

कैलासपति (पुं.) महादेव। कुबेर।

कैवर्त (पुं.) मल्लाह। माँझी।

कैवल्य (न.) मुक्तिभेद। अकेले होना।

कैशिकी (स्त्री.) नाट्यशास्त्र की एक वृत्ति।

कैशोर (न.) किशोर अवस्था, जो दस से पन्द्रह वर्ष तक रहती है।

कोक (पुं.) चकवा पक्षी। भेड़िया। खजूर। का वृक्ष। मेढ़क। कामशास्त्र का ग्रंथ।

कोकनद (न.) लाल कमल।

कोकबन्धु (पुं.) सूर्य।

कोकाह (पुं.) सफेद घोड़ा।

कोकिल -ला (पुं.स्त्री.) कोयल।

कोकिलाक्ष (पुं.) तालमखाना।

कोकिलावास (पुं.) आम का पेड़।

कोङ्कण (पुं.) देशविशेष, सह्य पर्वत और समुद्र के बीच की भूमि।
कोच (पुं.) एक वर्णसंकर जाति। एक देश।
कोट (पुं.) गढ़। कोट। कुटिलता।
कोटर (पुं.) वृक्ष का बड़ा छेद। समूह। कुटी।
कोटरा (स्त्री.) बाल-ग्रह। बाणासुर की माता।
कोटवी (स्त्री.) चण्डिका। नंगी स्त्री।
कोटि (स्त्री.) धनुष का अग्रभाग। हथियारों की नोक। एक करोड़ की संख्या।
कोटिर (पुं.) न्यौला। इन्द्र। बीरबहूटी।
कोटिशः (अ.) करोड़ों। अग्रभागमात्र भी। किञ्चित् भी।
कोटीश (त्रि.) करोड़पती।
कोण (पुं.) कोना। सारंगी बजाने की कमान सी लड़की। लाठी। मंगल ग्रह। लग्न से नवम और पञ्चम स्थान शनैश्चर।
कोणकुण (पुं.) खटमल।
कोदण्ड (पुं.) भौंह। (न.) धनुष।
कोद्रव (पुं.) कोदो नाम का अन्न।
कोप (पुं.) क्रोध। रिस।
कोपन (त्रि.) क्रोधी।
कोमल (न.) जल। (त्रि.) नरम।
कोयष्टि (पुं.) जल पर उड़ने वाला पक्षी।
कोरक (पुं.न.) कली। कमल की डंडी।
कोल (पुं.) सुअर। चीता। शनैश्चर। गोद। डोंगी। भील। मिर्च। बेर का फल।
कोला (स्त्री.) पीपल नाम की औषध। राजा सुरथ की राजधानी।
कोलापुर (न.) कोल्हापुर दक्षिण दिशा में प्रसिद्ध लक्ष्मी देवी का स्थान।
कोलाविध्वंसी (पुं.) एक पहाड़ी म्लेच्छ जाति।
कोलाहल (पुं.) शोरगुल। कलकल। हौरा।
कोविद (पुं.) पण्डित। विवेकी।
कोविदार (पुं.) लाल कचनार।
कोश (पुं.) खजाना। तलवार की म्यान। मद्यपान का प्याला। अण्डकोष। जायफल। कली। गुप्तस्थान। शब्दसंग्रह ग्रन्थ। सुवर्ण। सन्दूक।
कोशल (पुं.) अयोध्या प्रदेश।
कोशलिक (न.) घूस। रिश्वत।
कोशातकी (स्त्री.) तुरई।
कोष (पुं.न.) कोठरी। ड्योढ़ी। अन्न भरने की कोठार। पेट। कोठा।
कोष्ण (न.) गुनगुना।
कोसल (पुं.) कोशल शब्द देखो।
कोहल (पुं.) एक प्रकार का बाजा। नाट्य शास्त्र के आचार्य एक मुनि। मद्य।
कौक्कुटिक (पुं.) पाखण्डी। संन्यासी।
कौक्षेयक (पुं.) तलवार।
कौटल्य (पुं.) वात्स्यायन मुनि का एक नाम, जिन्हें चाणक्य कहते हैं।
कौटिल्य (पुं.) चाणक्य मुनि। (न.) कुटिलता।
कौणप (पुं.) राक्षस।
कौण्डिन्य (पुं.) एक मुनि।
कौतुक (न.) अपूर्व वस्तु या कार्य देखने सुनने का चाव। तमाशा। उत्सव।
कौतूहल (न.) कौतुक। चाव।
कौन्तेय (पुं.) कुन्ती के पुत्र पाण्डव। अर्जुन।
कौपीन (न.) लँगोटी। गुप्त अंग। पाप।
कौमार (न.) जन्म से पाँच वर्ष तक की अवस्था। कुआँरापन। लड़कपन।
कौमारिकेय (पुं.) कुआँरी स्त्री का लड़का।
कौमारी (स्त्री.) देवीविशेष।
कौमुद (पुं.) कार्तिक का महीना।
कौमुदी (स्त्री.) चाँदनी। व्याकरण का एक ग्रन्थ।
कौमोदकी (स्त्री.) विष्णु की गदा।
कौरव (पुं.) राजा कुरु की सन्तति। दुर्योधन आदिक।
कौरव्य (पुं.) कौरव।
कौल (त्रि.) कुलीन। खानदानी। ब्रह्मज्ञानी। तान्त्रिक।
कौलटिनेय, **कौलटेय**, **कौलटेरः** } सती भीख माँगने वाली स्त्री का लड़का। व्यभिचारिणी स्त्री का लड़का का लड़का।
कौलिक (पुं.) जुलाहा। कुलाचार। (त्रि.) शक्ति का उपासक। पाखंडी।
कौलीन (न.) निन्दा। लोकापवाद। गुह्य। छिपाने

योग्य। कुकर्म। कुलीनता। सर्प, पशु और पक्षियों का युद्ध। प्राणियों का जुआ।

कौलीन्य (न.) कुलीनता।

कौवेरी (स्त्री.) कुबेर की पुरी। उत्तर दिशा। कुबेर की।

कौशल (न.) काम करने की चतुराई। भलाई। माङ्गल्य।

कौशल्या (स्त्री.) महाराजा दशरथ की पटरानी। श्रीरामचन्द्र जी की माता।

कौशाम्बी (स्त्री.) वत्स राजा की नगरी।

कौशिक (पुं.) विश्वामित्र मुनि। न्यौला। साँप को पकड़ने वाला। मदारी। गूगल। इन्द्र। उल्लू पक्षी। खजांची।

कौशिकी (स्त्री.) दुर्गा। एक नदी। नाट्य शास्त्र की एक वृत्ति।

कौशीतकी (स्त्री.) एक उपनिषद्। अगस्त्य मुनि की स्त्री।

कौशेय (त्रि.) रेशमी कपड़ा।

कौसुम्भ (न.) कुसुम का रँगा कपड़ा।

कौसृतिक (त्रि.) मायावी।

कौस्तुभ (पुं.) समुद्र से निकली हुई श्रीविष्णु के हृदय का भूषण एक मणि।

क्रकच (पुं.) आरा। गाँठदार। वृक्ष विशेष।

क्रकचच्छद (पुं.) क्यौड़ा।

क्रकचपात (पुं.) गिरगिट।

क्रकर (पुं.) करील का वृक्ष। गरीब।

क्रतु (पुं.) यज्ञ। संकल्प। मुनिविशेष। इन्द्रियाँ। विष्णु।

क्रतुद्विष् (पुं.) असुर। नास्तिक। शिव।

क्रतुभुजः (पुं.) देवता।

क्रतुराज (पुं.) राजसूय यज्ञ। अश्वमेघ यज्ञ।

क्रथन (न.) मारना।

क्रन्दन (न.) रोना।

क्रम (पुं.) तरीका। सिलसिला। नियम। हमला। पैर रखना। ढव।

क्रमशः (अ.) क्रम से।

क्रमागत (त्रि.) क्रम से आया हुआ। सिलसिलेवार। क्रम क्रम से।

क्रमुक (पुं.) सुपारी। लोध का पेड़। कपास का फल।

क्रमेल (पुं.) ऊँट।

क्रय (पुं.) खरीदना। मोल लेना।

क्रयविक्रय (पुं.) बनिज। खरीद फरोख्त।

क्रव्य (न.) मांस।

क्रव्याद (पु.) राक्षस। गिद्ध। शेर। (त्रि.) मांस खाने वाला।

क्रशित (त्रि.) दुर्बल।

क्रशिता (स्त्री.) दुर्बलता।

क्रान्त (पुं.) घोड़ा। (त्रि.) दबाया हुआ। लाँघा हुआ। घिरा हुआ।

क्रान्तदर्शी (त्रि.) बीती बातों के जानने वाला। कवि।

क्रान्ति (स्त्री.) चढ़ाई करना। आक्रमण। आकाशगोलक में सूर्य के चलने की कुछ टेढ़ी गोल रेखा।

क्रिमि (पुं.) कीड़ा। सूक्ष्म जीव। लाख। रोगविशेष।

क्रियमाण (न.) किया जा रहा।

क्रिया (स्त्री.) करना। पूरा करना। कार्यारम्भ। चेष्टा। मृतकसंस्कार।

क्रियाफल (न.) कर्म का फल।

क्रियायोग (पुं.) कर्मयोग।

क्रीड़नक (न.) खिलौना।

क्रीड़ा (स्त्री.) खेल। अनादर।

क्रीड़ोपस्कर (न.) खेल की सामग्री।

क्रीत (त्रि.) खरीदा हुआ। मोल लिया गया।

क्रुङ् (पुं.स्त्री.) क्रौञ्च पक्षी।

क्रुद्ध (त्रि.) खफा।

क्रुष्ट (न.) शब्द करना। बुलाना। रोना।

क्रूर (त्रि.) कठिन। घोर। गर्म। लाल कनैर। बाज पक्षी। कंक पक्षी। पाप ग्रह।

क्रूरकर्मा (त्रि.) क्रूर-निष्ठुर काम करने वाला।

क्रेता (त्रि.) खरीदार।

क्रेय (त्रि.) खरीदने की चीज।

क्रोड (पुं.) शूकर। शनिग्रह। (स्त्री.) गोद।

क्रोड़ाङ्घ्रि (पुं.) कछुआ।

क्रोध (पुं.) गुस्सा।

क्रोधन (त्रि.) क्रोधी।

क्रोश (पुं.) एक कोस। मुहूर्त।

क्रोष्टा (पुं.) सियार।

क्रौञ्च (पुं.) कुरर पक्षी। एक पर्वत। एक दैत्य। एक द्वीप।

क्रौञ्चदारण (पुं.) कार्तिकेय। इन्द्र।
क्रौञ्चादन (न.) कमल की डंडी। पीपल। कमल के बीज।
क्लम (पुं.) ग्लानि करना। आयास। परिश्रम।
क्लान्त (त्रि.) थका हुआ। मुरझाया हुआ।
क्लान्ति (स्त्री.) थकावट। मुरझा जाना।
क्लिन्न (त्रि.) गीला।
क्लिष्ट (त्रि.) क्लेश को प्राप्त। कठिन।
क्लिष्टा (स्त्री.) क्लेश। सेवा।
क्लीब (पुं.) नपुंसक। हिजड़ा। पराक्रमहीन। कायर।
क्लृप्त (न.) रचित। कल्पित। निर्मित।
क्लेद (पुं.) पसीना। गीलापन। कष्ट। उपद्रव। कफ।
क्लेश (पुं.) दुःख। व्यथा।
क्लेशापह (पुं.) पुत्र। (त्रि.) क्लेश मिटाने वाला।
क्लैब्य (न.) कायरपन। पौरुष न होना। दीनता। नपुंसकता।
क्व (अ.) कहाँ।
क्वचित् (अ.) कहीं।
क्वचन (अ.) कहीं।
क्वण (पुं.) वीणा का शब्द। हर एक शब्द।
क्वथित (त्रि.) पकाया गया।
क्वथिता (स्त्री.) कढ़ी।
क्वाथ (पुं.) काढ़ा। बहुत पकाई गई वस्तु।
क्षण (पुं.) पर्व। उत्सव। अवसर। मध्य। घड़ी। लहजा। छिन।
क्षणद (पुं.) ज्योतिषी। पानी।
क्षणदा (स्त्री.) रात्रि।
क्षणप्रभा (स्त्री.) विजली।
क्षणभंगुर (त्रि.) छिन भर में नष्ट हो जाने वाला।
क्षणिक (त्रि.) दम भर का।
क्षणिकबुद्धि (त्रि.) जिसकी बुद्धि छिन-२ भर पर बदला करती है।
क्षत (न.) घाव। (त्रि.) खण्डित। नष्ट।
क्षतघ्नः (पुं.) कुकरौंधा। घाव को पूरने वाला। मरहम।
क्षतज (न.) रुधिर। पीव।
क्षति (स्त्री.) घटी। हानि।
क्षत्ता (पुं.) शूद्र से क्षत्रिया में उत्पन्न। द्वारपाल। सारथी। दासीपुत्र। विदुर। ब्रह्मा। मछली। खजांची।
क्षत्र (पुं.) क्षत्रिय। (न.) तगर। शरीर। क्षत्रिय जाति के कर्म।
क्षत्रबन्धु (पुं.) अधम क्षत्रिय। अपने कर्म न करने वाला क्षत्रिय।
क्षत्रविद्या (स्त्री.) धनुर्वेद। युद्धविद्या।
क्षत्रिय (पुं.) दूसरा वर्ण।
क्षत्रिया (स्त्री.) क्षत्रिय जाति की स्त्री।
क्षत्रियाणी (स्त्री.) क्षतित्रय जाति की स्त्री।
क्षत्रियी (स्त्री.) क्षत्रिय की स्त्री।
क्षन्तव्य (त्रि.) क्षमा करने योग्य।
क्षन्ता (त्रि.) क्षमा करने वाला।
क्षपण (त्रि.) निर्लज्ज।
क्षपणक (पुं.) बौद्धभिक्षु। संन्यासी।
क्षपा (स्त्री.) रात्रि। हल्दी।
क्षपाकर (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।
क्षपचर (पुं.) राक्षस। (त्रि.) रात को घूमने वाला।
क्षपित (त्रि.) दूर हुआ। नष्ट हुआ। विस्मृत।
क्षम (न.) उपयुक्त। (त्रि.) समर्थ।
क्षमता (स्त्री.) सामर्थ्य। योग्यता। शक्ति।
क्षमा (स्त्री.) भूमि। शक्ति होने पर भी दूसरे के अपराध को टाल देना। माफी।
क्षमी (त्रि.) क्षमा करने वाला।
क्षय (पुं.) विनाश। एक रोग। तपेदिक।
क्षयपक्ष (पुं.) कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख।
क्षयिष्णु (त्रि.) क्षय होने वाला।
क्षर (पुं.) मेघ। (त्रि.) नाश होने वाला।
क्षरण (न.) चूना। टपकना।
क्षात्र (न.) क्षत्रिय का धर्म या कर्म।
क्षान्त (त्रि.) निवृत। क्षमा करने वाला।
क्षान्ति (स्त्री.) क्षमा। सब्र।
क्षाम (त्रि.) दुबला। कमजोर।
क्षार (पुं.) खार। धूर्त। नमक। काँच। भस्म। जवाखार। सज्जी।
क्षारकर्दम (पुं.) एक नरक।
क्षालन (न.) धोना। साफ करना।
क्षालित (त्रि.) धोया हुआ। साफ किया।

क्षिति (स्त्री.) पृथ्वी। निवास। क्षय।
क्षितिज (पुं.) रसविशेष। मंगल ग्रह। वृक्ष। आकाश के मध्यस्थल से ९० अंशान्तर पर की आड़ी रेखा। (त्रि.) पृथ्वी से उत्पन्न।
क्षितिधर (पुं.) पहाड़। शेषनाग। दिग्गज।
क्षितिपाल (पुं.) राजा।
क्षितिरुह (पुं.) वृक्ष।
क्षिपणि (स्त्री.) नाव चलाने के डाँड़। शस्त्र। मछली फँसाने का काँटा।
क्षिप्त (त्रि.) फेंका गया। अनादृत। (न.) पागल। सिड़ी।
क्षिप्र (न.) जल्दी। वेग वाला। नक्षत्रविशेष। वारविशेष।
क्षिप्रकारी (त्रि.) जल्दी करने वाला।
क्षीण (त्रि.) दुबला। कमजोर। नाजुक। गरीब। खोया हुआ। मरा हुआ। नष्ट हुआ।
क्षीयमाण (त्रि.) क्षीण हो रहा। नष्ट हो रहा।
क्षीर (न.) दूध। जल। खीर।
क्षीरकण्ठ (पुं.) बालक। दुधमुहा।
क्षीरपर्णी (स्त्री.) पीपल। बर्गद। मदार। जिन वृक्षों या वनस्पतियों के पत्तों में दूध हो।
क्षीरसार (पुं.) मक्खन। घी।
क्षीरसागर (पुं.) दूध का समुद्र, जिसमें नारायण शेषशय्या पर शयन करते हैं।
क्षीराब्धितनया (स्त्री.) क्षीरसागर की कन्या लक्ष्मी।
क्षीव (त्रि.) मतवाला।
क्षुण्ण (त्रि.) उदासीन। अभ्यास किया गया। मारा गया। चूर्ण किया गया। पीसा गया।
क्षुत् (स्त्री.) भूख।
क्षुत (न.) छींक।
क्षुद्र (त्रि.) क्रूर। कृपण। छोटा। ओछा। नीच। दरिद्र।
क्षुद्रघण्टिका (स्त्री.) घुंघरू।
क्षुद्रता (स्त्री.) ओछापन। नीचता। क्रूरता।
क्षुधा (स्त्री.) भूख।
क्षुधित (त्रि.) भूखा।
क्षुप (पुं.) छोटी शाखा और जड़ वाला एक वृक्ष। झाड़ी। एक पर्वत। एक क्षत्रिय।
क्षुब्ध (पुं.) मथानी। (त्रि.) क्षोभ को प्राप्त। मथा गया। कंपित। व्याकुल। घबड़ा गया।
क्षुभित (त्रि.) हिलाया गया। आन्दोलित।
क्षुमा (स्त्री.) अलसी। सन।
क्षुर (पुं.) अस्तुरा। खुर। गोखरू। बाण। छूरा। उस्तरा।
क्षुरप्र (पुं.) एक प्रकार का बाण। खुर्पा।
क्षुरिका (स्त्री.) छुरी। पलाँकी का साग।
क्षुल्ल (त्रि.) थोड़ा। हल्का। छोटा।
क्षुल्लक (त्रि.) नीच। थोड़ा। दुःखित। दुष्ट।
क्षेत्र (न.) शरीर। खेत। स्त्री। तीर्थस्थान। मेष आदि राशियाँ।
क्षेत्रज (पुं.) अपनी स्त्री में दूसरे से उत्पन्न कराया गया पुत्र। (त्रि.) जो खेत उपजा हो।
क्षेत्रज्ञ (पुं.) जीवात्मा। (त्रि.) निपुण। किसान।
क्षेत्रपाल (पुं.) भैरव। (त्रि.) खेत की रखवाली करने वाला।
क्षेत्राजीव (पुं.) किसान।
क्षेत्रिय (पुं.) असाध्य रोग। परस्त्रीगामी पुरुष।
क्षेत्रेक्षु (पुं.) जुआर।
क्षेप (पुं.) आक्षेप। निन्दा। अहंकार। विलम्ब। फेंकना। बिताना।
क्षेपक (त्रि.) फेंकने वाला। विलम्ब करने वाला। घमण्डी। गुच्छा। (न.) पुस्तकों में ऊपर से मिलाया गया पाठ।
क्षेपण (न.) प्रेरणा। गोफा नामक यन्त्र, जिसमें रख कर कंकड़ दूर तक फेंके जाते हैं। फेंकना। बिताना।
क्षेम (न.) कल्याण। मोक्ष।
क्षेमकरी (स्त्री.) कल्याण करने वाली। भवानी।
क्षेमेन्द्र (पुं.) कश्मीर का एक भारी पण्डित ग्रन्थकार।
क्षैरय (न.) लप्सी। (त्रि.) दूध में पकाया गया।
क्षोड़ (पुं.) हाथी बाँधने की जंजीर।
क्षोणी (स्त्री.) पृथ्वी। जमीन।
क्षोणीप्राचीर (पुं.) समुद्र।
क्षोद (पुं.) धूल। चूर्ण। खोदविनोद।
क्षोभ (पुं.) चित्त की चञ्चलता। घबड़ाहट।

क्षौद्र (न.) शहद। पानी (पुं.) धूल। चम्पा का वृक्ष। एक वर्णसंकर जाति।
क्षौद्रज (न.) मोम।
क्षौम (पुं.न.) रेशमी कपड़ा। सन का कपड़ा।
क्षौर (न.) हजामत।
क्षौरिक (पुं.) नाई।
क्ष्णुत (त्रि.) सान धरा हुआ। पैना।
क्ष्मा (स्त्री.) पृथ्वी। धरती।
क्ष्मातल (न.) पृथ्वीतल।
क्ष्मापति (पुं.) राजा।
क्ष्माभृज (पुं.) पहाड़। राजा।
क्ष्वेड़ (पुं.) विष। अक्षरों की ध्वनि। फलभेद। पुष्पभेद। (त्रि.) दुर्लभ। कुटिल।
क्ष्वेड़न (न.) त्याग करना। छोड़ना। सिंहनाद।
क्ष्वेलिका (स्त्री.) क्रीड़ा। खेल।

ख

ख (न.) आकाश। शून्य। स्वर्ग। इन्द्रिय। सूर्य। पुर। शरीर। बिन्दु। मेघ। सुख। लग्न से दशम राशि। अबरख।
खग (पुं.) सूर्य आदि ग्रह। पक्षी। बाण। देवता। वायु। राक्षस। (त्रि.) आकाश में चलने वाला।
खगपति (पुं.) गरुड़।
खगासन (पुं.) विष्णु। उदयाचल।
खगेन्द्र (पुं.) गरुड़।
खगोल (पुं.) आकाशमण्डल।
खचर (पुं.) खग शब्द देखो।
खचित (त्रि.) व्याप्त। बँधा हुआ। मिला हुआ।
खज (पुं.) कलछी। चिमचा। मथानी।
खजिका (स्त्री.) खाज। खुजली।
खज्योति (पुं.) जुगनू।
खञ्ज (पुं.) लँगड़ा।
खञ्जन (पुं.) खड़रैचा पक्षी।
खञ्जरीट (पुं.) खञ्जन।
खट (पुं.) अन्धा कुँआ। कफ। हल। घास। टाँकी।
खटका (स्त्री.) खड़िया मिट्टी। कान का छेद। घास।
खट्टिक (पुं.) खटिक। चिड़ीमार।
खट्टिका (स्त्री.) छोटी खाट। रत्थी।
खट्वा (स्त्री.) पलँग। खाट। मचान।
खट्वाङ्ग (पुं.) एक सूर्यवंशी राजा, जिसने अपनी आयुष्य दो घड़ी शेष जान कर स्वर्ग से वर माँग अयोध्या में आ सर्वत्यागी हो कर मुक्त हुआ। मनुष्य की हड्डियों का ढाँचा। रीढ़। एक शस्त्र।
खट्वाङ्गधारी (पुं.) शिव।
खट्वारूढ़ (त्रि.) खाट परा चढ़ा हुआ। निषिद्ध कार्य करने वाला।
खड़क्किका (स्त्री.) खिड़की।
खड़ी (स्त्री.) खड़िया।
खड्ग (न.) लोहा। (पुं.) गैंड़ा। खाँड़ा।
खड्गपिधान (न.) म्यान।
खण्ड (पुं.) टुकड़ा। खाँड़। नपुंसक। रत्न का ऐव।
खण्डकर्ण (पुं.) शकरकन्द।
खण्डताल (पुं.) एक प्रकार की ताल।
खण्डधारा (स्त्री.) कैंची।
खण्डन (न.) तोड़ना। टुकड़े २ करना। काट डालना।
खण्डपरशु (पुं.) शिव।
खण्डित (त्रि.) तोड़ा गया। काटा गया।
खण्डिता (स्त्री.) वह स्त्री, जिसका पति रात भर अन्य स्त्री के यहाँ रहे।
खतमाल (पुं.) मेघ। धुआँ।
खदिर (पुं.) खैर। कत्था। इन्द्र। चन्द्र।
खरिदिका (स्त्री.) लाख।
खद्योत (पुं.) जुगनू। सूर्य।
खधूप (पुं.) हवाई। बन्दूक।
खनक (पुं.) मूसा। सेंध लगाने वाला। चोर। (त्रि.) पृथ्वी को खोदने वाला।
खनन (न.) खोदना।
खनयित्री (स्त्री.) कुदार। फावड़ा।
खनि (स्त्री.) खान।
खनित्र (न.) कुदार। खोदने का औजार।
खभ्रान्ति (पुं.) चील्ह।
खमणि (पुं.) सूर्य।
खर (पुं.) गधा। जनस्थान-निवासी राक्षस। कामदेव। कौआ। तीक्ष्ण। वह घर, जिसका द्वार पश्चिम मुख हो।

खरदूषण (पुं.) धतूरा। खर और दूषण नाम के राक्षस। (त्रि.) उग्र दोष वाला।

खरध्वंसी (पुं.) रामचन्द्र।

खरी (स्त्री.) गधी।

खरु (पुं.) घमंड। शिव। घोड़ा। दाँत। श्वेत वर्ण। कामदेव। मूर्ख। क्रूर।

खर्जन (न.) खुजलाना।

खर्जू (स्त्री.) खनखजूरा कीड़ा। खजूर का पेड़। खुजली।

खर्जूघ्न (पुं.) मदार। धतूरा।

खर्जूर (पुं.) बिच्छू। खजूर का फल। चाँदी।

खर्जूरी (स्त्री.) बनखजूर।

खर्पर (पुं.) चोर। धूर्त। खप्पर। (न.) एक धातु।

खर्ब (पुं.) बौना। कुबड़ा। एक निधि। सहस्रकोटि संख्या।

खर्बट (पुं.न.) चलना। पहाड़ के पास का ग्राम। वह ग्राम जिसके पास शहर हो नदी तथा पर्वत भी वहाँ हो। मंड़ी लगने वाला ग्राम। चार सौ गाँव के बीच की जगह।

खर्बशाखः (त्रि.) छोटा। ठेंगना। छोटी डाल के वृक्ष।

खल् चलना। हीलना।

खल धान कूटने का स्थान। ओखरी। काँड़ी। पृथ्वी। तिल का चूर्ण। नीच। अधम। निर्दय। बेरहम।

"सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्य्यते।।"

खर्बा (स्त्री.) छोटे अंगों की स्त्री। बवनी। नाटी स्त्री विशेष।

खर्नुरा (स्त्री.) तरदी वृक्ष।

खर्बूजम् (न.) खर्बूजा। प्रसिद्ध लताफल।

खलपू (त्रि.) जगह का साफ करने वाला। फर्रास। झाडू देने वाला।

खलः (पुं.) सूर्य। तमाल का पेड़। धतूरा। भूमी। स्थान। पीसी हुई गीली लुवदी।

खलता (स्त्री.) दुष्टता। आकाशबेल।

खलतिः (पुं.) चंदुला। गंजा।

खलु (अव्य.) निश्चय। पूँछना। वचन के शोभा करने वाला। विशेष इच्छा। निषेध करना। शब्द को पूरा करने वाला। कारण।

खर्मम् (न.) पुरुषार्थ। रेशमी वस्त्र।

खलमूतिः (पुं.) पारा। दुष्टमूरत।

खलकपोत (पुं.) धान छाँटने की जगह। यथा कबूतर एक ही बार आ कर एकट्ठे गिरते हैं तथा विशेषणों का एक स्थल में अन्वय होना इसी तरह एक न्यायभेद।

खल्या (स्त्री.) खलों का जो समुदाय। धान छाँटने का समुदाय। स्थान।

खल्त (पुं.) एक तरह का कपड़ा। काम। गढ़ा। चातक पक्षी। पपीहा। मसा। दवाई। मलने का पात्र। खल। ओस।

खवाष्प (न.) रात्रि को बहने वाला आकाश से। ओस। वरफ।

खश (पुं.) हिमालय के पास का देश। देश विशेषभेद। पतित। क्षत्रियभेद।

खसखस (पुं.) पोस्ते का बीज। वृक्षभेद। जिसका दूध अफीम है।

खजिक (पुं.) लावा। खील। जो तनिक वायु लगने से उड़ने लगते हैं।

खटि (पुं.स्त्री.) रथी। मुर्दा ले जाने की वस्तु।

खांडव (पुं.) इन्द्रप्रस्थ। देहली शहर। नगर के पास का वन।

खलाधारा (स्त्री.) तेल पीने वाली। तिलचट्टा भाषा है।

खलिः (पुं.) तेल का कीट। खरी जो चौपायों को खिलाई जाती है।

खनितः (पुं.न.) कविका में। घोड़े वास्ते देय।

खात (न.) गढ़ा। तलैया आदि।

"पूर्त्तं खातादि कर्म च इति स्मृतिः"।

खातक (पुं.) परिखा। खाँई। ऋणी। कर्जदार।

खाद् (क्रि.) खाना।

खादक (पुं.) कर्जदार। खाने वाला। (त्रि.) खादिका स्त्री।

खादिर (त्रि.) खैर। खैर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञस्तंभादि।

खरी (स्त्री.) अनाज के नाप का प्रमाण। तौल अर्थात् १२ मन ३२ सेर जो होता है।

खारीक (त्रि.) खारी। १६ द्रोण परिमाण। धान के बोने का खेत।

खार्कार (पुं.) गदहे का बोलना। जो दूर से शंख के समान मालूम हो।

खिट् (क्रि.) भयभीत होना।

खिद् (क्रि.) दीन होना।

खिन्न (त्रि.) दुःख में पड़ा हुआ। आलसी। खेदयुक्त।

खिल् (क्रि.) किनकियों को चुंगना। दाना-२ लेना।

खिल (त्रि.) हल नहीं चला हुआ खेत आदि। थोड़े में तत्त्व। प्रथम न कहे गये का परिशिष्ट अंश वर्णन।

खु (क्रि.) शब्द। आवाज करना।

खुज् (क्रि.) चोराना।

खुड् (क्रि.) फाड़ना। टुकड़े-२ करना।

खुर (पुं.) पशु के खुर। नख। नखला (भाषा में) गन्धद्रव्य। नहन्नी। नाई का शस्त्र नख काटने वाला। छुरा बार बनाने का। पलँग का पाया इत्यादि।

खुरणस (त्रि.) जिसकी नाक खुर के समान हो। चिपटी नाक वाला या चौड़ी नाक वाला।

खुरालिक (पुं.) जो खुरों की कतारों से चमकता है। नाऊ के शस्त्र रखने का स्थान। संजोह। गुच्छी। नाराचास्त्र। बाण। तकिया।

खुर्द (क्रि.) खेलना।

खेचर (पुं.) जो आकाश में विचरै। शिव जी। सूर्य्यादि ग्रह। विद्याधर। मुद्राभेद। (स्त्री.) खेचरी मुद्रा योगशास्त्र में।

खलिनी (स्त्री.) तालमूली। दुष्टों का समूह। धानों के खल।

खलिवर्द्धनः (पुं.) दाँत के रोगविशेष।

मारुतेनाधिकोदन्तो जायते तीव्रवेदनः।
खलिवर्धनसंज्ञोऽसौ जाते रुक् च प्रशाम्यति।।

खलिशः (पुं.) खलिशामाच् इति गौड़भाषा प्रसिद्ध मत्स्य। कंकपक्षी के चोंच को भी कहते हैं।

खलीकारः (पुं.) अपकारी। द्रोह करना।

खल्लः (पुं.) निन्दा करने वाला।

खलीनः (पुं.न.) घोड़े के मुख में जो छिप जावै। लगाम।

खलु (अ.) वाक्य के सजाने में। पूछना। शान्ति में। कहने की इच्छा में। मान में। वर्जन में। पदों की पूर्त्ति में। वाक्यपूरण में। विनती करने में। निश्चय में।

खलुक (पुं.) अन्धकार।

खलुरेषः (पुं.) हरिणों के जातिभेद।

खलूरिका (स्त्री.) शस्त्राभ्यास करने की जगह।

खलेवाली (स्त्री.) बैलों के बाँधने का गाड़ा हुआ काष्ठ अर्थात् खूँटा बैलों का।

खलेशः, खलेशयः (पुं.) दुष्ट आशय।

खल्या (स्त्री.) दुष्टा स्त्री। खलों का समुदाय।

खल्लः (पुं.) कपड़ों का भेद। गढ़्ढा। निम्न। चमड़ा। पपीहा। दवा घोटने का पात्र। खल। मसक "भिस्ती के कामवाली"।

खल्ली (स्त्री.) ऽल्ली चढ़ना हाथ पाँव की। प्रायः हैजे की बीमारी में होती है उसकी दवा कूट सेंधानमक चूक तिल का तेल पका कर मालिश करना सहता हुआ अधिक गर्म नहीं मलना।

खल्वाटः (पुं.) इन्द्रलुप्तरोग। बार झड़ा हुआ सिर।

खल्विका (स्त्री.) पिसान वगैरह भूँजने का बरतन। कड़ाही। तसला।

खवल्लरी (स्त्री.) आकाशबेल।

खवल्ली (स्त्री.) अमरबेल जो पेड़ों पर ही रहती है। इसका गुण वैद्यनिघण्टु में ऐसा लिखा है-

खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाक्ष्यामयापहा।
तुवराऽग्निकरी हृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी।।

खवारिम् (न.) आकाश का जल।

खशा (स्त्री.) तालपत्री। मुरा नाम सुगन्धित पदार्थ। कश्यप ऋषि की स्त्री। दक्ष प्रजापति की कन्या। यक्ष राक्षस की माता।

खश्वासः (पुं.) वायु। हवा।

खष्पः (पुं.) क्रोध बल सक करना।

खसकन्दः (पुं.) क्षीरकंचुकी का वृक्ष।

खसमः (पुं.) बौद्धमतावलम्बी। बुध्न।

खसम्भवा (स्त्री.) बुद्ध जातिविशेष।

खसा (स्त्री) राक्षसों की माता।

खसात्मजः (पुं.) राक्षसी का पुत्र।

खसूमः (पुं.) विप्रचित्ति का बेटा।

खस्खसः (पुं.) पोस्ते का दाना।

खस्खसरसः, (पुं.) अफ़ीम।

खस्तनी (स्त्री.) जमीन।
खस्फटिक (पुं.) चन्द्रकान्तमणि। सूर्य्यकान्तमणि।
खाखसः (पुं.) खसखस का दाना। प्रमाण वैद्यनिघण्टुः। उक्तं च-

स्यात् खाखसफलोद्भूतं वल्कलं शीतलं लघुः।
ग्राहि तिक्तं कषाये च वातकृत् कफकासहृत्।।
धातूनां शोषकं रूक्षं मदकृच्चाग्निवर्धनम्।
मुहुर्मोहकरं रुच्यं सेवनात् पुंस्त्वनाशनम्।।

खांगाहः (पुं.) सफेद और पीला रंग का घोड़ा मिश्रित रंग का।
खाजिकः (पुं.) लावा धान इत्यादिक का।
खाटिः (स्त्री.)
खाटिका (स्त्री.) खराब ग्रह। शराब का सत्त।
खाटी (स्त्री.)
खांडवम् (न.) चूर्णविशेष। यथा-

कोलामलकजं चूर्णं शुण्ठ्येलाशर्करान्वितम्।
मातुलुंगरसेनाक्तं शोषितं सूर्य्यरश्मिभिः।।
एवं तु बहुशोभ्यक्तं शोषितं च पुनः पुनः।
ईषल्लवणसंयुक्तं चूर्णं खाण्डवमुच्यते।। गुणाः।।
खाण्डवं मुखवैशद्यकारकं रुचिधारणम्।
हृद्रोगशमनं चेति मुखवैरस्यनाशनम्।।
भोजनान्ते विशेषेण भोक्तव्यं खाण्डवं सदा।

खांडवः (पुं.) देवराज इन्द्र का वन। अर्थात् नंदन नाम का वन।
खांडदी (स्त्री.) पुरीविशेष।
खाडिकः (पुं.) खंडपालक। खंडजीवनी। खंडराज्य। खंडियों का समूह।
खातकः (पुं.) ऋणी। खाई कुँयें के पास जो गड्ढा जल का हो प्रतिकूप कहते हैं।
खेटक (पुं.) ढाल। फलक। दुर्गा के ध्यान में है-खेटकं पूर्णचापं।
खेद (पुं.) दुःख। शोक। हृदय की घबराहट।
खेय (न.) खाई। परिखा। खोदने लायक।
खेलृ (क्रि.) हिलाना। जाना।
खेलन (न.) क्रीड़ा। खेल। खेलना।
खेला (स्त्री.) क्रीड़ा। खेल खेलना।
खेद (क्रि.) सेवा करना।
खेसर (पुं.) शीघ्र चलने से मानो आकाश में चलती है। अश्वतर। खच्चड़। अस्तर। एक तरह का पशु।
खोट् (क्रि.) चाल की रुकावट।
खोटि (स्त्री.) चतुर स्त्री। बुद्धिमती और खचरी स्त्री।
खोड् (क्रि.) लंगड़ा। लूला। खंज।
खोर् (क्रि.) चाल की रुकावट। चाल का टूटना।
ख्यात (त्रि.) जाहिरात। प्रसिद्धि वाला। मशहूर। कथित। कहा गया।
ख्या (क्रि.) कहना।
ख्याति (स्त्री.) स्तुति। प्रशंसा। तारीफ। मशहूरी। कहना।
ख्यापक (त्रि.) प्रकाश करने वाला। प्रसिद्ध करने वाला।
खातम् (न.) पुष्करिणी। तलैया। गड्ढा।
खातकः (पुं.) कर्जदार। परिखा। खाई।
खात्रं (न.) खन्ती। फरुहा। कुदार। जमीन खोदने के शस्त्र।
खातभूः (स्त्री.) खाई। कुँयें के समीप जल रुकने की जगह। गड्ढा।
खादकः (त्रि.) खाने वाला। भक्षक। जैसा-

विक्रियैर्गोविनिमयैर्दत्त्वा गोमांसखादके।
व्रतं चान्द्रायणं कुर्याद्वधे साक्षाद्वधी भवेत्।।
इति गोभिलः।

खादनः (पुं.) दाँत। आहार। खाना।
खादितः (त्रि.) लील जाना। निगलना। खा गया।
खादिरः (पु.) यज्ञ का खंभा। खैर का विकार।
खादिरसारः (पुं.) खैर या खैरसार।
खादुकः (त्रि.) जीवघात की इच्छा वा श्रद्धा।
खाद्यः (त्रि.) खाने लायक चीज।
खानः (पुं.) हिन्दुधर्म लोप करने वाले म्लेच्छजातिविशेष।
खानिः (स्त्री.) खान। धातु और जवाहिरात निकलने की खान जगह को कहते हैं।
खानिकम् (न.) भीत में छेदने योग्य अर्थात् आला। ताख। ताखा।
खानोदकः (पुं.) नारियल। श्रीफल।
खापगा (स्त्री.) गंगा नदी।
खारः (पुं.) खारी परिमाण।

खारिंपचः (त्रि.) खारी परिमाण अन्न की जो रसोई करने वाला। रसोईदार। कड़ाही।

खारीवापः (त्रि.) बोरा। थैला।

खार्क्कारः (पुं.) गदहे के जाती शब्द।

खार्ज्जूरः (पुं.) खार्ज्जूर योग ज्योतिषशास्त्र में है। यथा-

योगे विरुद्धे त्वभिजितसमेते
खार्ज्जूरमर्क्कात् विषमे शशी चेत्।

खार्बूजेयम् (न.) खर्बूजे का बनता है इसे रसाला का भेद माना है। यथा-

मधुरदधिनि मध्ये शर्करां सन्नियोज्य
शुचि विदलितखण्डं प्रक्षिपेत् खार्बुजेयम्।
करविलुलितमेणैर्वासितं नाभिगन्धै-
र्जिगमिषु जठराग्निं स्थापयत्येव नूनम्।।
रसालं खार्बुजस्येदं विष्टम्भि रुचिकारकम्।
हृद्यं च कफदं बल्यं पित्तघ्नं मूत्रकृद्धरम्।।

खिखिः (स्त्री.) लोखरी। स्यार की छोटी जाति होती है लोमड़ी कही जाती है।

खिखिरः (पुं.) लोमड़ी। खट्वांग शिव जी का शस्त्र एक प्रकार का है। हीबेर अर्थात् हाऊबेर भा०।

खिदिरः (पुं.) चन्द्रमा। कुमुदबन्धु।

खिद्यमानः (त्रि.) खेदसहित। दीनता-ग्रसित। उपतापसहित।

खिद्रः (पुं.) रोगी। दरिद्री। थकाई से युक्त।

खिन्नः (स्त्री.) आलसी। खेदयुक्त। हीनावस्था वाला जो है।

खिरहिट्टीः (त्रि.) धव का वृक्ष। चिचिड़ी। अपामार्ग।

खिलम् (त्रि.) हर से जोती हुई जमीन। ब्रह्मा। सूना। खाली। कम्। पहिले न कहा गया से बाकी जो कहा जाय। श्रीसूक्त। शिवसंकल्पादिक।

खिलीकृतः (त्रि.) कठिन कृति।

खुंगाहः (पुं.) काले रंग का घोड़ा।

खुज्जाकः (पुं.) देवताड़ का पेड़।

खुरली (स्त्री.) तीर चलाना सिखना। अभ्यास करना।

खुराका (पुं.) पशु को कहते हैं।

खुरालकः (पुं.) लोहे का बाण।

खुरालिकः (पुं.) नाई का संजोह। बाण।

खुरासानः (पुं.) देशविशेष। खुरासान देश है। यथा-

हिङ्गुपीठं समारभ्यामक्केशान्तं महेश्वरि।
खुरासानाभिधो देशो म्लेच्छमार्गपरायणः।।

खुल्लम् (न.) नख नाम का सुगंधद्रव्य। नीच में। अल्प।

खुल्लकः (पुं.) नीच। स्वल्प। थोड़ा।

खुल्लमः (पुं.) मार्ग। रास्ता।

खेखीरकः (पुं.) शब्द सहित लाठी या छड़ी।

खेगमनः (पुं.) कालकंठ नाम का पक्षी।

खेचर (पुं.) आकाश में विचरने वाला। शिव। सूर्य्यादि ग्रह। विद्याधर। मुद्रा विशेष।

खेट् (क्रि.) खाना। भोजन करना।

खेट (पुं.) जो आकाश में घूमे। सूर्य्यादि ग्रह। कफ। ग्रामभेद। मृगया। (गु.) नीच।

खेटक (पुं.) ढाल। फलक।

खेलृ (क्रि.) जाना। हिलाना।

खेलन (न.) खेल। क्रीड़ा।

खेला (स्त्री.) खेल। क्रीड़ा।

खेवृ (क्रि.) सेवा करना।

खेसर (पुं.) खच्चर। अश्वतर।

खोट् (क्रि.) चाल का रुकना।

खेटि-टी (स्त्री.) चतुरा स्त्री।

खोड् (क्रि.) चाल का रुकना।

खोड (त्रि.) खञ्ल। लंगड़ा। पंगु।

खोर-ल (त्रि.) खञ्ज। लंगड़ा। लूला।

ख्यात (त्रि.) प्रसिद्ध। कहा गया। कथित।

ख्या (क्रि.) कहना।

ख्याति (स्त्री.) प्रशंसा। प्रसिद्धि। स्तुति।

ख्यापक (त्रि.) प्रकाश करने वाला। प्रसिद्ध करने वाला।

ग

ग (त्रि.) तीसरा व्यञ्जन। कवर्ग का तीसरा अक्षर। यह केवल समास में पीछे आता है। जो, जाता है। जाने वाला। हिलना। होना। ठहरना। रहना। गन्धर्व। गणपति का नाम। छन्दशास्त्र में गुरु अक्षर के लिये चिह्न। (पुं.) गीत।

गगन (न.) आकाश। शून्य। स्वर्ग।

गगनध्वज (पुं.) मेघ। सूर्य।

गगनेचर (पुं.) सूर्य्यादि ग्रह। नक्षत्र। तारा। पक्षी। देवता। राशिचक्र।

गग्घ (क्रि.) हँसना। चिढ़ाना।

गंगा (स्त्री.) जाह्नवी। त्रिपथगा। भागीरथी। दुर्गा। देवी।

गंगाज (पुं.) गंगा का पुत्र। भीष्म। कार्तिकेय।

गंगाधर (पुं.) शिव। समुद्र।

गंगापुत्र (पुं.) भीष्म। कार्तिकेय। दोगला। वर्णसंकर। घाटिया।

गंगासागर (पुं.) वह पवित्र तीर्थस्थान जहाँ पर गंगा सागर में मिलती है।

गंगोल (पुं.) रत्नविशेष। गोमेद।

गच्छ (पुं.) वृक्ष। पेड़। गणित में अंक भेद।

गज् (क्रि.) मद से शब्द करना। मस्त होना। दहाड़ना। गरजना।

गज (पुं.) हाथी। गिनतीविशेष। आठ। मनुष्य के ३० अंगुल तक का परिमाण। एक दैत्य जो महादेव द्वारा मारा गया था।

गजकूर्माशिन् (पुं.) गरुड़ का नाम।

गजगामिनी (स्त्री.) गज के समान झूम कर चलने वाली स्त्री।

गजच्छाया (स्त्री.) श्राद्ध करने का समय विशेष। सूर्यग्रहण का समय। कुआर के श्राद्धपक्ष में हस्त नक्षत्र लग जाने के बाद का समय।

सैहिकेयो यदा भानुं ग्रस्ते पर्वसन्धिषु।
गजच्छाया तु सा प्रोक्ता श्राद्धं तत्र प्रकल्पयेत्।।

गजता (स्त्री.) हाथियों का समूह। हाथीपन। मस्ती।

गजदन्त (पुं.) हाथीदाँत। गणेश जी का नाम।

गजपुट (पुं.) हाथ भर का गढ़ा।

गजप्रिया (स्त्री.) शल्लकी नामक वृक्ष।

गजबन्धिनी (स्त्री.) हाथी बाँधने का घर।

गजाजीव (पुं.) महावत। हाथी पालने वाला। हस्तिपालक।

गजारि (पुं.) सिंह।

गजानन (पुं.) गणेश जी का नाम।

गजाह्वय हस्तिनापुर का नाम।

गञ्ज (पुं.) भाण्डागार। कान। गोशाला। नीचों का घर। मदिरापात्र। कलारी (स्त्री.) दुकान। हाट। मण्डी। बाजार।

गड् (क्रि.) सींचना। बाहिर निकालना। रस निकालना।

गड (पुं.) मछली विशेष। विघ्न। अटकाव। खाई। व्यवधान। अन्तर। बीच में पड़ गया। देशभेद।

गड़ि (पुं.) बच्छा। कामचोर। बैल।

गडु (पुं.) मांसवर्द्धक रोग। गलगण्ड। कुबड़ा। बर्छी।

गडुरि-लि-का (स्त्री.) भेड़ों की पंक्ति।

गण् (क्रि.) गिनना।

गण (पुं.) शिव जी का अनुचर। संख्या। गिनती। सैन्यसंख्याविशेष जिसमें १३२ पैदल, ८२ घोड़े, २७ रथ और २७ हाथी होते हैं। धातुओं का समूह। तारा। छन्दोग्रन्थ का शब्दविशेष। गणेश जी का नाम।

गणक (पुं.) दैवज्ञ। ज्योतिषी। गिनने वाला।

गणदेवता (स्त्री.) देवसमूह। यथा- १२ आदित्य, १० विश्वेदेवा, ८ वसु, ४६ वायु, १२ साध्य, ११ रुद्र, ३६ तुषित, ६४ आभास्वर, ३२० महाराजिक।

आदित्यविश्ववसवस्तुषिता भास्वरानिलाः।
महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः।।

गणनाथ (पुं.) गणेश। शिव। गण का मालिक। सेनापति।

गणरूप (पुं.) अर्क का पेड़। मदार। अकउवा।

गणान्न (त्रि.) बहुतों के लिये दिया हुआ अन्न।

गणिका (स्त्री.) वह स्त्री जिसके बहुत से पति हों। वेश्या। रण्डी। हथिनी।

गणित (न.) अङ्कशास्त्र।

गणेरु (त्रि.) कनेर का वृक्ष। हथिनी। वेश्या।

गणेश (पुं.) गणों का स्वामी। स्वनामख्यात देवता।

गण्ड (पुं.) हाथी का गाल। गैड़ा। चिह्न। वीर। घोड़े का भूषण। बुलबुला। स्फोटक। कोड़ा। पिटारा। योगविशेष।

गण्डक (पुं.) पशुविशेष। गैंड़ा। चार की गिनती (गण्डा)। रुकावट। अंग निशान।

गण्डकी (स्त्री.) एक नदी जिसमें शालग्राम की शिलाएँ मिलती हैं।

गण्डगात्र (न.) सीताफल। चेचक।
गण्डमाला (स्त्री.) फोड़ों की पंक्ति। रोगविशेष।
गण्डशैल (पुं.) पर्वत के गिरे हुए मोटे पत्थर। ललाट। मस्तक।
गण्डु (पुं.स्त्री.) गाँठ। उपधान। तकिया।
गण्डूपद (पुं.) केंचुआ।
गण्डूष (पुं.) मुँह भर पानी। हाथी की सूँढ़ की नोक। हाथ की अंगुली।
गत (त्रि.) जाना गया। लाभ किया गया। गिर गया। समाप्त हुआ।
गतागत (न.) गया और आया। पक्षी की चाल विशेष।
गतार्त्तवा (स्त्री.) बाँझ स्त्री। गर्भ धारण न करने वाली स्त्री। जिसका रजोधर्म बन्द हो गया हो।
गति (स्त्री.) जाना। पथ। ज्ञान। पहुँचना। दशा। यात्रा। उपाय। कर्मफल।
गदः (पुं.) रोग। श्रीकृष्ण के छोटे भाई का नाम। विष। कहना।
गदा (स्त्री.) लोहे का अस्त्र। पाटला पेड़।
गदाग्रज (पुं.) गद का बड़ा भाई। श्रीकृष्ण।
गदाधर (पुं.) श्रीकृष्ण।
गदाराति (पुं.) दवाई।
गद्गद (पुं.) अव्यक्त और अस्फुट शब्द। गिड़गिड़ाना।
गद्य (त्रि.) वह रचना जिसमें कविता न हो।
गंत्री (स्त्री.) बैलों की गाड़ी। जाने वाली।
गन्ध् (क्रि.) वैर करना।
गन्ध (पुं.) लेश। गन्धक। अहंकार। सुहाँजना। महक। घिसा हुआ चन्दनादि।
गन्धकचूर्ण (पुं.) बारूद।
गन्धकाष्ट (न.) अगुरु चन्दन।
गन्धज्ञा (स्त्री.) नासिका। नाक।
गन्धतैल (न.) अतर आदि।
गन्धत्वच् (स्त्री.) इलायची।
गन्धदला (स्त्री.) अजमोद। अजवाइन।
गन्धन (न.) उत्साह। दिलेरी। प्रकाशन। चुगली। हिंसा। मारना।
गन्धपाषाण (पुं.) गन्धक।
गन्धबन्धु (पुं.) आम का पेड़।
गन्धमांसी (स्त्री.) जटामांसी।
गन्धमादन (पुं.न.) पर्वतविशेष। भौंरा। बन्दर। गन्धक।
गन्धमादिनी (स्त्री.) लाख। सुरा।
गन्धमुखा (स्त्री.) छंछूदर।
गन्धमृग (पुं.) कस्तूरी मृग।
गन्धराज (न.) चन्दन। गुग्गुल। वृक्ष विशेष।
गन्धर्व (पुं.) मृगभेद। घोड़ा। स्वर्ग के गायक।
गन्धर्वलोक (पुं.) गुह्यलोक के ऊपर और विद्याधरों के लोक के नीचे का लोक।
गन्धर्ववेद (पुं.) सामवेद का उपवेद। संगीतविद्या।
गन्धवती (स्त्री.) व्यासदेव की माता। पृथिवी। वायु और वरुण की नगरी। मद्य।
गन्धवल्कल (न.) दारचीनी। गन्धदार छिलके वाली।
गन्धवह (पुं.) वायु। नमक।
गन्धवाह (पुं.) हवा। नासिका।
गन्धवीजा (स्त्री.) मैथी का साग।
गन्धशाली (पुं.) चावल जिसमें बड़ी सुगन्ध होती है।
गन्धसार (पुं.) चन्दन का वृक्ष।
गन्धसोम (न.) कुमुद का फूल।
गन्धा (स्त्री.) चम्पे की कली।
गन्धाजीव (पुं.) गन्धी। गन्ध पदार्थ बेचकर आजीविका करने वाले।
गन्धाढ्य (पुं.) चन्दन वृक्ष। नागरंग वृक्ष।
गन्धार (पुं.) राग। सिन्दूर। देशभेद।
गन्धिनी (स्त्री.) मद्य।
गन्धोत्तमा (स्त्री.) मदिरा। शराब।
गभस्ति (पुं.) किरण। सूर्य।
गभस्तिम (पुं.) सूर्य। प्रभाकर। तेजस्वी।
गभस्तिहस्त (पुं.) सूर्य। दिवाकर।
गभीर (त्रि.) गहुत गहरा। गहन।
गम् (क्रि.) जाना।
गम् (पुं.) जुआ विशेष। जाना। मार्ग।
गमक (त्रि.) बोधक। समझाने वाला। प्रमाण। जताने वाला।
गम्भीर (त्रि.) नीचे का स्थान। मन्द। गहरा। जम्बीर। कमल। ऋग्वेद का मंत्रविशेष।

गम्भीरवेदिन् (पुं.) चिरकाल से शिक्षित। हाथी।
गय (पुं.) एक दैत्य का नाम। एक बन्दर। राजा विशेष।
गया (स्त्री.) तीर्थविशेष। जो मगध देश में है।
गर् (क्रि.) निगलना। बोलना। पुकारना। बुलाना। (पुं.) विष। रोग। पाँचवाँ करण।
गरल (न.) विष। तिनकों का मूल।
गरिमन् (पुं.) गौरव। बड़ाई।
गरिष्ठ (त्रि.) बहुत बड़ा।
गरुड़ (पुं.) विनता के गर्भ से उत्पन्न। कश्यप पुत्र। विष्णुवाहन। सर्पों का बैरी पक्षिराज।
गरुड़ध्वज (पुं.) विष्णु।
गरुड़पुराण (न.) अष्टादश पुराणों में से एक।
गरुत् (पुं.) पर। पंख।
गरुत्मत् (पुं.) पर वाला। गरुड़। प्रत्येक पक्षी।
गर्ग (पुं.) ब्रह्मा का पुत्र। मुनिविशेष। गर्गाचार्य यदुवंश के प्रसिद्ध पुरोहित।
गर्गरि (स्त्री.) कलश। घड़ा। मच्छविशेष (पुं.) जवान पशु। गगरी।
गर्ज्ज (क्रि.) बड़े जोर का शब्द करना।
गर्जर (न.) गाजर।
गर्जित (न.) मेघ का शब्द। मत्त हस्ती। गरजना।
गर्त्त (पुं.) गढ़ा। स्त्रियों का नितम्ब देश। रोगविशेष।
गर्द्द (क्रि.) शब्द करना।
गर्दभ (पुं.) गधा। खर। चिट्टा। कुमुद। गर्दभी (स्त्री.) गधी।
गर्दभाण्ड (पुं.) पाकर का वृक्ष।
गर्द्ध् (क्रि.) लाभ करने की इच्छा करना।
गर्द्ध (पुं.) बड़ी चाह। अतिशय स्पृहा। वृक्षविशेष।
गर्द्धन (त्रि.) लोभी।
गर्ब् (क्रि.) जाना। गति।
गर्भ (पुं.) मांसपिण्ड। कुक्षि। बच्चा। नाटक में सन्धि का भेद। अन्न। आग। पुत्र। गंगा आदि नदियों के पास का स्थान।
गर्भक (पुं.) केशों के बीच की माला।
गर्भगृह (न.) घर के बीच का कोठा। गर्भाशय।
गर्भद (पुं.) वृक्षविशेष।
गर्भवती (स्त्री.) गर्भ वाली स्त्री।
गर्भस्राव (पुं.) प्रसूतिकाल उपस्थित होने के पहले ही किसी कारण से गर्भस्थ बालक का बाहर गिरना।
गर्भाधान (न.) गर्भ का ठहराना। सोलह संस्कारों में से एक संस्कारविशेष।
गर्भाशय (न.) गर्भ की झिल्ली।
गर्भिणी (स्त्री.) गर्भवती स्त्री।
गर्व् (क्रि.) अभिमान करना।
गर्व (पुं.) घमण्ड। अभिमान। अहंकार।
गर्वाट (पुं.) चौकीदार। दरबान। द्वारपाल।
गर्ह् (क्रि.) निन्दा करना।
गर्ह्य (गु.) निन्दा के योग्य। नीच। अयोग्य।
गर्ह्यवादिन् (पुं.) निन्दा वाक्य बोलने वाला।
गल् (क्रि.) खाना।
गल (पुं.) कण्ठ। गला, बाजा। मच्छी। धूना।
गलकम्बल (पुं.) गौ के गले के नीचे लटकता हुआ चमड़ा।
गलगण्ड (पुं.) रोगविशेष।
गलग्रह (पुं.) गला पकड़ना। एक प्रकार का रोग। कृष्णपक्ष की ४थी, ७मी, ८मी, ९मी, १३शी आदि दिन गलग्रह कहे जाते हैं। ऐसा दिवस जिसमें अध्ययन आरम्भ हो किन्तु अगले दिन ही अनध्याय हो जाय। अपने आप विसाई विपत्ति। मछली की चटनी।
गलस्तनी (स्त्री.) बकरी। जिसके गले में थन हों।
गलहस्त (पुं.) अर्द्धचन्द्र। गलहत्था। गरदनिया।
गलित (त्रि.) पिघला हुआ। पतित।
गल्या (स्त्री.) गलों का समूह।
गल्ल (पुं.) गाल। गण्ड। कपोल।
गल्लक (पुं.) पानपात्र। शराब का प्याला।
गवच (पुं.) वानरविशेष।
गवल (पुं.) बनैला भैंसा।
गवाक्ष (पुं.) झरोखा। खिड़की।
गवेष् (क्रि.) खोजना। ढूँढ़ना।
गवेषणा (स्त्री.) अन्वेषण। खोज।
गव्य (गु.) गौ सम्बन्धी। दूध। दही। मक्खन। गोबर। गोमूत्र। पीला।
गव्यूति (स्त्री.) क्रोशयुग। दो कोस। जिस स्थान पर गौएँ मिलें।

गह् (क्रि.) गाढ़ा होना। कठिनता से प्रवेश करना।
गहन (न.) जंगल। गह्वर। दुःख। दुर्गम।
गह्वर (पुं.) निकुञ्ज। गुफा। वन। रोना। दम्भखण्ड। कठिन स्थान।
गा (क्रि.) जाना। स्तुति करना।
गाङ्गेय (पुं.) भीष्म। गंगापुत्र। सोना। धतूरा।
गाढ़ (गु.) अतिशय। दृढ़। पक्का। सेवित।
गाणिक्य (न.) वेश्या। रण्डी।
गाण्डि (गु.) गाँठ वाला।
गाण्डिव (पुं.) अर्जुन। धनुषधारी। अर्जुन वृक्ष।
गात्र् (क्रि.) शिथिल पड़ना। ढीला पड़ना।
गात्र (न.) देह। शरीर। हाथी के आगे की जंघा।
गाथा (स्त्री.) प्राकृत। देशी भाषा में रचा हुआ श्लोक अथवा गीत।
गाधृ (क्रि.) ठहरना। गुथना। पाने की इच्छा करना।
गाध (पुं.) स्थान । लिप्सा। कुछ-कुछ गहरा।
गाधि (पुं.) कन्नौज का चन्द्रवंशी एक राजा। विश्वामित्र के पिता का नाम।
गाधिज (पुं.) विश्वामित्र।
गाधेय (पुं.) विश्वामित्र।
गान (न.) गीत। ध्वनि। सुर।
गान्दिनी (स्त्री.) गंगा। यादववंश में अक्रूर की जननी।
गान्धर्व (पुं.) गन्धर्वसम्बन्धी। विवाह, विवाह जो वर कन्या की इच्छानुसार हुआ हो। वेद, सामवेद का एक उपवेद। संगीतशास्त्र।
गान्धार (पुं.) रागविशेष। गन्धार देश में उत्पन्न। (न.) गन्धक।
गान्धारराज (पुं.) दुर्योधन का नाना सुबल, उसका पुत्र शकुनि। दुर्योधन का मामा।
गान्धारी (स्त्री.) दुर्योधन की माता। धृतराष्ट्र की स्त्री।
गान्धिक (पुं.) गन्धी। इत्र, तेल बेचने वाला।
गायत्री (स्त्री.) जो गाते हुए को बचावे। वेद का मंत्रविशेष। छः वा आठ अक्षरों के पाद का छन्द।
गायन (त्रि.) गानोपजीवी। गान द्वारा पेट पालने वाला।
गारुड़ (न.) मरकतमणि। विष का मंत्र। स्वर्ण।
गारुडिक (पुं.) विषवैद्य।
गारुत्मत् (न.) जिसका देवता गरुड़ हो। मरकतमणि।
गार्हपत्य (पुं.) एक प्रकार के यज्ञ का अग्नि।
गार्हस्थ्य (गु.) गृहस्थों का अनुष्ठेय कर्म। गृहस्थों का धर्म।
गालव (पुं.) लोध का पेड़। एक मुनि का नाम।
गालि (पुं.) शाप। निन्दा। बुरा वचन।
गाहृ (क्रि.) बिलोना। भली-भाँति देखना।
गिरा-रा (स्त्री.) वाक्य। वचन। वाणी।
गिरि (पुं.) पहाड़। पर्वत। दसनामी गुसांई संन्यासियों में से एक की उपाधि। (स्त्री.) बालमूषिका।
गिरिज (न.) बादल। लोहा। शिलाजीत। गौरी। पार्वती।
गिरिदुर्ग (न.) पहाड़ी गढ़।
गिरिभिद् (पु.) इन्द्र।
गिरिश (पुं.) पर्वत पर सोने वाला। शिव।
गिरिसुत (पुं.) पर्वत का पुत्र। मैनाक नामक पहाड़। (स्त्री.) पार्वती।
गिरीश (पुं.) महादेव। शिव।
गिलित (गु.) खाया हुआ।
गीत (न.) गाना।
गीता (स्त्री.) गुरु और शिष्य की कल्पना से उपदेश के रूप में दी हुई शिक्षा।
गीति (स्त्री.) गाना। आर्य्या छन्द विशेष।
गीर्णि (स्त्री.) खाना। स्तुति। बड़ाई।
गीर्वाण (पुं.) वाणी ही जिसका शर है। देव।
गीष्पति (पुं.) वाणियों का स्वामी। देव गुरु बृहस्पति।
गु (क्रि.) शब्द करना। मल का छोड़ना।
गुग्गुल (पुं.) गन्धद्रव्य। यह धूनी देने के काम में लाया जाता है। लाल सुहाँजना।
गुच्छ (पुं.) गुच्छा। स्तवक। बाइस लड़ियों का हार। मोर का पर। मोतियों का हार।
गुत्स (पुं.) ताल वृक्ष। इसका प्रत्येक पत्ता गुच्छे जैसा होता है।
गुच्छफल (सं.) रीठा। करञ्जा। इमली। अग्निदमनी। केला। दाख।

गुज् (क्रि.) आवाज करना। गूजना। कूकना।
गुञ्जा (स्त्री.) लताविशेष। मापभेद। नगाड़ा। मीठी और धीमी आवाज। कलारी। रत्ती।
गुटी (स्त्री.) गोली। वटी। मूर्त्ति।
गुठ् (क्रि.) लपेटना।
गुड् (क्रि.) लपेटना। तोड़ना। रोकना।
गुड (पुं.) गोल। हाथी का फन्दा। गुड़।
गुडत्वक् (सं.) मीठी छाल वाला। दालचीनी।
गुडपक्ष (पुं.) मधूक। महुआ।
गुड़ाकेश (पुं.) नींद को वश में करने वाला। शिव। अर्जुन।
गुडुची (स्त्री.) गिलोय। गुर्च।
गुण (पुं.) रोदा। प्रत्यञ्चा। धनुष खींचने की रस्सी। तन्तु। दुहराना। दूर्वा घास।
गुणक (पुं.) वह राशि जिसके साथ गुणा जाता है।
गुणवृक्षक (पुं.) मस्तूल।
गुणित (गु.) चोटिल। पूरित।
गुणिन् (पुं.) धनुष।
गुणीभूतव्यंगच (न.) अलंकार में कहा हुआ मध्यम काव्य।
गुण्डिक (पुं.) पिसे हुए चावल आदि।
गुद् (क्रि.) खेलना।
गुद (न.) गुदा। मलद्वार।
गुदकील (पुं.) बवासीर रोग।
गुध् (क्रि.) रोकना। लपेटना।
गुप् (क्रि.) निन्दा करना। बचाना। घबराना।
गुप्त (गु.) रक्षित। छिपाया हुआ। वैश्य की संज्ञा।
गुप्ति (स्त्री.) किसी राजा का निज नगर। दूसरे का नगर। रक्षा। पहरा। बन्दीगृह। पृथिवी का गढ़ा। मैला डालने का स्थान। यम।
गुफ् (क्रि.) ग्रन्थ। गाँठना।
गुम्फ (पुं.) बाहु का भूषण। बाजू। जोशन। डाढ़ी।
गुम्फित (गु.) गुथा हुआ।
गुर् (क्रि.) मारना। जाना। यत्न करना। कष्ट देना। हानि पहुँचाना।
गुरु (पुं.) जो अज्ञान को दूर कर, धर्म्मोपदेश करता है। पिता। वेद पढ़ाने वाला आचार्य। शास्त्र पढ़ाने वाला। सम्प्रदाय चलाने वाला। बृहस्पति। पुष्यतारा। दो मात्रा। दीर्घस्वर वाला वर्ण। बिन्दु और विसर्गवाला एकमात्र। द्रोणाचार्य। बलवान्। भारी पूजने योग्य। माननीय। बड़ा।
गुरुतल्पग (पुं.) गुरु की सेज पर जाने वाला। सौतेली माता के पास जाने वाला।
गुर्ज्जर (पुं.) गुजरात देश।
गुर्विणी (स्त्री.) गर्भवती स्त्री।
गुर्वी (स्त्री.) गर्भवती। बड़ी स्त्री। आदर योग्य स्त्री।
गुल्फ (पुं.) पावों की गाठें। गट्टा। गिटुआ।
गुल्म (पुं.) प्रधान पुरुषों से युक्त रक्षकों का दल जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े, ४५ पैदल हों। रोग विशेष। झाड़ी। तिल्ली का रोग।
गुल्ममूल (न.) अदरक।
गुल्मवल्ली (स्त्री.) सोमलता।
गुवाक (पुं.) सुपारी। पूगीफल।
गुह् (क्रि.) संवरण करना। छिपाना।
गुह (पुं.) कार्त्तिकेय। घोड़ा। श्रृगवेरपुर के निषादों का राजा और श्रीरामचन्द्र जी का मित्र। गढ़ा। विष्णु। सिंहपुच्छी बेल।
गुहाशय (पुं.) अज्ञान। सिंह। हृदय। जीव। ईश्वर अर्थात् जो गढ़े में सोता है।
गुह्य (त्रि.) पाखण्ड। परमात्मा। एकान्त। भग। लिंग। (न.) रहस्य। छिपाने के योग्य।
गुह्यक (पुं.) मुख जिसका छिपा हुआ हो। देवयोनिविशेष। कुबेर के धन को बचाने वाले।
गू (क्रि.) मल त्यागना।
गूढ़ (त्रि.) गुप्त। छिपा हुआ। ढका हुआ। गहन। एकान्त।
गूढज (पुं.) छिपा कर पैदा हुआ। बारह प्रकार के पुत्रों में से एक।
गूढपाद (पुं.) सर्प। साँप।
गूढपुरुष (पुं.) जासूस। भेदिया।
गूढ़मैथुन (पुं.) काक।
गूढांग (पुं.) कच्छप। कछुआ।
गूथ (पुं.न.) विष्ठा। मल।
गूर् (क्रि.) उद्योग करना। मारना। जाना।

गृ (क्रि.) सींचना।
गृज् (क्रि.) शब्द करना।
गृञ्जन (पुं.) गाजर। विषैले पशु का मांस।
गृध् (क्रि.) लोभ करना। लालच दिखाना।
गृध्नु (गु.) लोभी।
गृध्र (पुं.) गीध। शकुनि। लोभी।
गृध्रराज (पुं.) गरुडपुत्र जटायु। पक्षियों का राजा।
गृष्टि (स्त्री.) एक बार ब्याने वाली गौ। वराहक्रान्ता। काश्मरी।
गृह् (क्रि.) ग्रहण करना। लेना। पकड़ना।
गृह (न.) घर। कलत्र। स्त्री। नाम। जब यह शब्द एक घर के अर्थ में प्रयुक्त होता है तब यह नंपुसक लिंग होता है और जब एक से अधिक घरों के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है; तब यह पुलिंग होता है। यथा मेघदूत में-

"तत्रागारं धनपतिगृहान्।"

गृहपति (पुं.) घर का स्वामी। मंत्री। धर्म।
गृहमणि (पुं.) प्रदीप। दीपक। दीवा।
गृहमृग (पुं.) कुत्ता।
गृहमेधिन् (पुं.) गृहस्थ।
गृहमेधीय (पुं.) गृहस्थों के धर्म।
गृहयालु (त्रि.) लेने वाला।
गृहस्थ (पुं.) घर में रहने वाला। गृही। द्वितीय आश्रम वाला।
गृहागत (पुं.) अतिथि। आगन्तुक। पाहुना।
गृहावग्रहणी (स्त्री.) देहली। देहरी। दहरी। डेवढ़ी।
गृहिणी (स्त्री.) घर वाली। पत्नी। घर सम्बन्धी कार्य में चतुरा स्त्री।
गृहिन् (पुं.) गृहस्थ।
गृहीत (त्रि.) स्वीकृत। प्राप्त। जाना हुआ। पकड़ा गया।
गृहनर्दिन् (पुं.) घर में डींगें मारने वाला और युद्धक्षेत्र में पीठ दिखाने वाला। भीरु। डरपोक।
गृह्य (पुं.) घर में फँसा हुआ। पशु। पक्षी। मलद्वार। वेदविहित कर्मों के प्रयोगों को बताने वाला ग्रन्थविशेष। पराधीन। घर का।
गॄ (क्रि.) जताना। शब्द करना। निगल जाना।
गेन्दुक (पुं.) गेन्द। गद्दा।
गेय (त्रि.) गवैया। गान। गीत।
गेह (न.) घर।
गै (क्रि.) गाना।
गैरिक (न.) गेरू। सोना।
गो (पुं.) बैल। स्वर्ग। किरन। वज्र। जल। पशु। चन्द्रमा। वायु। सूर्य। औषध विशेष। गाय। दृष्टि। तीर। दिशा। माता। वाणी। भूमि।
गोकर्ण (पुं.) गौ जैसे कान वाला। बछड़ा। खच्चर। एक तीर्थ का नाम। पशुभेद। गणदेवता का भेद।
गोकील (पुं.) मूसल। हल।
गोकुल (न.) वह स्थान जहाँ गौओं का समुदाय हो। गोष्ठ। गौशाला। यमुना के समीप नन्द गोप का निवासस्थान।
गोघ्न (पुं.) कसाई। अतिथि।
गोचर (पुं.) गौओं के चरने की भूमि। चरागाह। इन्द्रियों के विषय। जन्मराशि से उस-उस स्थान में सूर्यादि ग्रहों का जाना।
गोजिह्वा (स्त्री.) लता विशेष।
गोणी (स्त्री.) पुराना पात्र। आवपन पात्र। एक प्रकार का माप।
गोतम (पुं.) ब्रह्मा का पुत्र। मुनिविशेष।
गोत्र (पुं.) पृथिवी को बचाने वाला। पर्वत। वन। खेत। घर। वंश। नाम। रास्ता। छाता। जाति समूह। मनुकथित शाण्डिल्यादि चौबीस आदिपुरुष।
गोत्रभिद् (पुं.) पहाड़ों को फोड़ने वाला। इन्द्र।
गोत्रा (स्त्री.) पहाड़ों वाली। धरती। धरा। गौवों का हेड़।
गोदन्त (न.) हरिताल। गौ के दाँतों के समान अवयव वाला। गौ का दाँत।
गोदारण (न.) लांगल। हल। कुदाल।
गोदावरी (स्त्री.) दक्षिण भारत की एक नदी जिसके तट पर बसे हुए मुख्य नगरों में से एक नासिक है।
गोधा (स्त्री.) भुजा को बचाने के लिये चमड़े का पट्टा जिसे धनुषधारी भुजा पर बाँधते हैं।
गोधूम (पुं.) कनक। गेहूँ। एक प्रकार का धान।

गोधूलि (पुं.) गोचर भूमि से गौओं के आने की बैला। सूर्यास्त का समय। साँझ।

गोनर्दीय (पुं.) गोनर्द देश के समीप उत्पन्न हुआ। व्याकरणकर्त्ता पाणिनिमुनि।

गोनस (पुं.) जिसकी नासा गौ के समान है। एक प्रकार का साँप।

गोपति (पुं.) गौओं का पति। बैल। साण्ड। शिव। पृथिवीपति। श्रीकृष्ण। सूर्य। इन्द्र। ऋषभ नाम औषध।

गोपा (स्त्री.) श्यामा लता।

गोपानसी (स्त्री.) छज्जा। परदा डालने के लिये दीवार पर गड़ी हुई लकड़ी।

गोपाल (पुं.) गोप। अहीर। राजा। नन्द राजा का पुत्र।

गोपुर (न.) पुरद्वार। शहर का द्वार।

गोप्य (गु.) रक्षा के योग्य। छिपाने योग्य (पुं.) गोपीसमूह।

गोमती (स्त्री.) नदीविशेष। वेद का मंत्र विशेष।

गोमय (पुं.न.) गोबर। गौ जैसा।

गोमायु (पुं.) श्रृगाल। गीदड़। सियार। गन्धर्व।

गोमिन् (त्रि.) गौओं का स्वामी। गीदड़।

गोमुख (पुं.) यक्षविशेष। नक्र। तेंदुआ। तिरछा घर। एक प्रकार का बाजा। लेपन। जपमाला की गोमुखी। गुप्ती। गंगोत्री।

गोमूत्रिका (स्त्री.) लताविशेष। काव्य की रचनाविशेष। गणित में ग्रहस्पष्ट की एक रेखा।

गोमेद (पुं.) मणिविशेष। जवाहर। द्वीप। भेद। टापू।

गोमेध (पुं.) यज्ञविशेष जिसमें पशु के स्थान पर गौ रखी जाती है।

गोरोचना (स्त्री.) हल्दी जो गौ से उत्पन्न हुई हो। गौ के मस्तक से निकला पीले रंग का पदार्थ।

गोल (पुं.) चारों ओर से गोल। मदन का पेड़। पति के मरने पर जार से उत्पन्न हुआ पुत्र। भूगोल। आकाशमण्डल। एक राशि पर छः ग्रहों का एकत्र होना। गोलक। लकड़ी की गेंद।

गोलाङ्गूल (पुं.) गौ के समान काली पूँछ वाला। लङ्गूर। वानरविशेष।

गोलोक (पुं.न.) वैकुण्ठ की दाहिनी ओर का स्थान। लोकविशेष।

गोवर्द्धन (पुं.) ब्रज का एक पर्वतविशेष। गौओं को बढ़ाने वाला।

गोवर्द्धनधर (पुं.) पर्वत उठाने वाला। श्रीकृष्ण। गोवर्धननाथ। गिरिधारी।

गोविन्द (पुं.) श्रीकृष्ण। बृहस्पति। गौओं का स्वामी।

गोष्ट् (क्रि.) इकट्ठा होना।

गोष्ठ (न.) गौशाला। ग्वाल। गूजर।

गोष्ठी (स्त्री.) सभा। समिति।

गोष्पद (न.) गौ के खुर के चिह्न जो नम धरती पर बन जाता है। देश जिसे गौएँ सेवन करती हों।

गोसेव (पुं.) गोमेध यज्ञ।

गोस्तन (पुं.) गौ के स्तन जैसा गुच्छा वाला। गौ का स्तन। चार लड़ों का हार।

गोस्तनी (स्त्री.) एक प्रकार की दाख।

गोस्थानक (न.) देखो गोष्ठ।

गौड़ (पुं.) नगरविशेष। जो बंगाल से भुवनेश तक है। उस देश के अधिवासी। विन्ध्याचल के उत्तर जो देश है उसमें बसने वाले ब्राह्मणविशेष।

गौडी (स्त्री.) मद्यविशेष। मिठाई। अलंकार में एक रीतिविशेष।

गौण (त्रि.) अमुख्य। छोटा। दूसरा। व्याकरण में प्रधान का विरोधी।

गौणपक्ष (पुं.) निर्बल पक्ष।

गौणिक (त्रि.) छोटा। लघु। तीन गुणों (सत्त्व, रज, तम) वाला।

गौतम (पुं.) गौतम के वंशधर अथवा उनकी शिष्यपरम्परा के लोग। नचिकेता का पिता जिसका नाम शतानन्द था। शाक्यसिंह। भरद्वाज ऋषि। बुद्धदेव का नाम। न्यायशास्त्र के प्रणेता।

गौतमी (स्त्री.) गौतमसम्बन्धी। गौतमरचित सोलह पदार्थों वाली विद्या। गोदावरी नदी। राक्षसीविशेष। द्रोण की स्त्री कृपी। बुद्धदेव की विद्या। गोरोचना। कण्व मुनि की बहिन। दुर्गा।

गौधार (पुं.) गोधापुत्र। गिरगिट।

गौर (पुं.) सफेद वर्ण। सफेद सरसों। चन्द्र। धव वृक्ष। विशुद्ध। साफ। लाल रंग।

गौरव (न.) बड़प्पन। मान।

गौरी (स्त्री.) पार्वती। शिवपत्नी। रजरहित आठ वर्ष की अविवाहिता कन्या की संज्ञा। हल्दी। गोरोचना। नदी। मजीठ। तुलसी। सुवर्ण कदली। आकाशमाँसी। रागिनीविशेष।

गौरीशिखर (न.) हिमालय की एक चोटी। जहाँ पर गौरी ने तप किया था।

गोष्ठीन (न.) पुरानी गौशाला।

ग्रथ् (क्रि.) टेढ़ा करना। तिरछा करना। गूँथना। रचना।

ग्रथित (त्रि.) गुम्फित। मारा गया। दबाया गया।

ग्रन्थ (पुं.) गुम्फन। धन। शास्त्र। अनुष्टुप् छन्द वाला पद्य। पुस्तकरचना।

ग्रन्थि (पुं.) गाँठ। वृक्षविशेष। बंधन। रोगविशेष। थैली। धन। पोशाक। शरीर के जोड़। ढिठाई। झूठ।

ग्रन्थिभेद (पुं.) गठकटा। चोर।

ग्रन्थिमूल (न.) गाजर।

ग्रन्थिल (न.) गठीला। पिप्पलीमूल। मद्य। अदरक।

ग्रस् (क्रि.) खाना।

ग्रस्त (न.) खाया गया। आधा बोला हुआ वाक्य।

ग्रह् (क्रि.) पकड़ना।

ग्रह (पुं.) सूर्य्यादि नवग्रह। हठ के वशीवर्ती हो कर पकड़ना। अनुग्रह। युद्ध का उद्यम। बालकों को दुःखदायी पूतनादि बालग्रह।

ग्रहण (न.) स्वीकृति। मान लेना। लेना। आदर। बन्धन। चन्द्र व सूर्य्य का ग्रास। इन्दिय।

ग्रहिणीहर (न.) लौंग। ग्रहणी रोग को दूर करने वाली।

ग्रहपति (पुं.) ग्रहों का स्वामी। सूर्य।

ग्रहाधार (पुं.) ग्रहों का आधार। ध्रुव नामक नक्षत्रविशेष।

ग्राम (पुं.) गाँव। समूह। स्वरभेद। राग का उठान। ब्राह्मणदि वर्णों का वासस्थान। वह स्थान जहाँ खेत हों और जहाँ विशेष कर शूद्र रहते हों।

ग्रामगृह्य (स्त्री.) ग्राम की रक्षा के लिये ग्राम के बाहिर रहने वाली सेना।

ग्रामणी (पुं.) नापित। नाई। पति। प्रधान। कोतवाल। वेश्या। नीतिका (स्त्री)।

ग्रामधर्म (पुं.) गाँव का धर्म। मैथुन।

ग्रामयाजक (पुं.) ग्रामवासी अनेक वर्णों को यज्ञ कराने वाला नीचकोटि का ब्राह्मण।

ग्रामीण (पुं.) गाँव का। कुत्ता। काक। ग्राम का शूकर। ग्रामोत्पन्न।

ग्राम्य (त्रि.) ग्रामोत्पन्न। गाँव का। प्रकृति। गँवार। नीच। मूढ़। मिथुनादि राशिभेद। भाण्ड आदि का गालीसूचक वचन।

ग्रावन् (पुं.) पत्थर। बादल। दृढ़।

ग्रास (पुं.) कवर। कौर।

ग्राह (पुं.) पकड़ना। लेना। जानना। मगर। नक्र। जलजीव।

ग्राहक (पुं.) सपेरा। राजपक्षी। मोल लेने वाला।

ग्राह्य (त्रि.) लेने योग्य। उपादेय।

ग्रीवा (स्त्री.) गरदन।

ग्रीष्म (पुं.) निदाघ। पसीना। पसीना निकालने वाला सूर्य्यातप आदि जेठ का महीना।

ग्रुच् (क्रि.) चोरी करना।

ग्रैव (न.) गले का आभूषणविशेष। ग्रीवा सम्बन्धी।

ग्रैवेय (न.) कण्ठाभरण। गले का गहना।

ग्लस (क्रि.) खाना।

ग्लह् (क्रि.) पकड़ना। जु।

ग्लह (पुं.) जुए का दाँव। जुआ। पाँसा।

ग्लानि (स्त्री.) घृणा। घबराहट। थकान। हानि। बीमारी।

ग्लास्नु (त्रि.) ग्लानियुक्त। थका हुआ। घबराया हुआ।

ग्लुच (क्रि.) चोरी करना।

ग्लुञ्च् (क्रि.) चोरी करना और जाना।

ग्लेप् (क्रि.) देना। निर्धन होना। दुःखी होना। कोपना। जाना। हिलना।

ग्लेव् (क्रि.) सेवा करना। पूजा करना।

ग्लेष् (क्रि.) ढूँढ़ना। खोजना।

ग्लै (क्रि.) कष्ट का अनुभव करना। घबड़ाना। थक जाना।

ग्लौ (पुं.) चन्द्रमा। कपूर। पृथिवी।

घ

घ कवर्ग का चौथा अक्षर।
घ (पुं.) घण्टा। घर्घर शब्द। यह समास में शब्द के पीछे जोड़ा जाता है। मारना। ताड़न करना। नाश करना।
घष् (क्रि.) प्रकाश डालना। बहना।
घग्घ (क्रि.) हँसना। उपहास करना। चिढ़ाना।
घट् (क्रि.) काम करना। यत्न करना। शब्द करना।
घट (पुं.) घड़ा। जलघड़ी। कुम्भराशि का संकेत। परिमाणविशेष।
घटक (त्रि.) दलाल। वाक्य के बीच में पड़ने वाला पदार्थ। दियासलाई बनाने वाला।
घटना (स्त्री.) एकत्र करना। जोड़ना। हाथियों का समूह। रचना। यत्न। बनाना।
घटा (स्त्री.) यत्न। सभा। समूह। बादलों का समूह।
घटिका (स्त्री.) साठ पल का समय। घड़ी। नितम्ब। चूतड़। पानी का छोटा घड़ा या डोलची। एड़ी।
घटी (स्त्री.) एक छोटा बरतन। जलघड़ी।
घटीयंत्र (न.) कूप में से जल निकालने का यंत्र। गिर्री। उद्घाटन। खोलना।
घट्ट् (क्रि.) हिलना।
घट्ट (पुं.) घाट। महसूल उगाहने का स्थान।
घट्टित (त्रि.) निर्मित। बना हुआ। रंगा गया। हिलाया गया। घोटा गया।
घण् (क्रि.) दीप्ति। चमकना।
घण्ट् (क्रि.) बोलना। चमकना।
घण्टा (स्त्री.) घण्टी। घड़ियाल। अतिबला। नागबला।
घण्टापथ (पुं.) नगर का मुख्य मार्ग।
घण्टिका (स्त्री.) छोटी घण्टी। छोटी घण्टी के आकार की होने के कारण तालूवर्त्तिनी जीभ।
घन (पुं.) मेघ। बादल। मोथा। प्रवाह। दृढ़। कठिन। फैलाव। शरीर। लोहे का मुद्गर। कफ। अभ्रक। समान जाति के तीन अंगों का आपस में गुणन। गाढ़ा। भरा हुआ। बाजा। मध्यम नाच। लोहा।
घनकफ (पुं.) ओले।
घननाभि (पुं.) धुआँ।
घनपदवी (स्त्री.) आकाश अर्थात् बादलों का पथ।
घनरस (पुं.) बादलों का रस अर्थात् जल। कपूर।
घनवल्ली (स्त्री.) बिजली या बादलों की बेल।
घनसार (पुं.) कपूर। पारा। जल। एक प्रकार का वृक्ष।
घनागम (पुं.) वर्षाकाल।
घनाघन (पुं.) इन्द्र। बरसाऊ बादल। मत्त हस्ती। एक दूसरे को परस्पर धकियाना। निरन्तर।
घनात्यय (पुं.) वह समय जब बादल छिप जाँय अर्थात् शरत्काल।
घनामय (पुं.) खजूर का पेड़।
घनोपल (पुं.) ओला। सिल।
घम्ब् (क्रि.) जाना। हिलना।
घरट्ट (पुं.) जाँता। चक्की।
घर्घर (पुं.) नद। द्वार। एक प्रकार का स्वर।
घर्घरिका (स्त्री.) छोटी घण्टी। एक बाजा। भुने हुए धान। एक नद।
घर्व् (क्रि.) जाना।
घर्म्म (पुं.) पसीना। धूप। गरमी।
घर्षणी (स्त्री.) हल्दी।
घस् (क्रि.) खाना।
घस्मर (त्रि.) खाने वाला। खाऊ।
घस्र (पुं.) दिन। मारने वाला।
घाण्टिक (पुं.) घण्टा बजाने वाला। धतूरा।
घात (पुं.) प्रहार। चोट। मारना। गुणना। गुना करना। अंक को पूर्ण करना। तीर।
घातिन् (त्रि.) मारने वाला। घातक।
घातुक (त्रि.) क्रूर। मारने वाला। हिंसा करने वाला।
घार (पुं.) सेचना। सींचना। छिड़कना।
घार्तिक (पुं.) घी का बना खाद्यविशेष।
घास (पुं.) गौ आदि के खाने योग्य चारा।
घु (क्रि.) शब्द करना।
घुट् (क्रि.) लौटना। पीछे हटना।
घुट (पुं.) चरणग्रन्थि। घुटना। एड़ी।
घुण् (क्रि.) घूमना। लेना।
घुण (पुं.) घुन। लकड़ी खाने वाला कीड़ा।
घुर् (क्रि.) शब्द करना। बड़ा शब्द करना। गुर्राना।

घुर्घुर (पुं.) शूकर का शब्द।
घुष् (क्रि.) प्रशंसा करना। प्रकट करना।
घुसृण (न.) केसर। कुङ्कुम।
घूक (पुं.) उल्लू। पेचक।
घूर् (क्रि.) मारना। पुराना पड़ना।
घूर्ण् (क्रि.) घूमना।
घृ (क्रि.) सींचना।
घृण् (क्रि.) चमकना।
घृणा (स्त्री.) कारुण्य। दया। निन्दा। घिन।
घृणि (पुं.) तरंग। लहर। किरन। सूर्य।
घृत (न.) चमक। घी। पानी।
घृतकुमारी (स्त्री.) घीकुआर। जिमीकन्द। औषधविशेष।
घृताची (स्त्री.) अप्सराविशेष। राब। घी वाली। चमकने वाली।
घृष् (क्रि.) रगड़ना।
घृष्टिः (पुं.) बहार। सुअर।
घोट-क (पुं.) अश्व। घोड़ा।
घोटकारि (पुं.) भैसा।
घोणा (स्त्री.) घोड़े के नथुने। नाक।
घोणिन् (पु.) लम्बी नाक वाला। सुअर।
घोर (पुं.) शिव। ऋषिविशेष। विष। सख्त। भयानक। दुर्गम।
घोररासन (पुं.) भयानक शब्द वाला। सियार। गीदड़।
घोल (पुं.न.) मट्ठा। लस्सी।
घोष (पुं.) अहिरों या गोपों का गाँव। बादलों की गर्जन। लताविशेष। व्याकरण में बाह्यप्रयत्न का एक भेद।
घोषणा (स्त्री.) डौंड़ी। ढिंढोरा।
घ्रा (क्रि.) गन्ध लेना। सूँघना।
घ्राणतर्पण (पुं.) सुगन्धि।
घ्रातव्य (त्रि.) सूँघने योग्य।

ङ

ङ इस अक्षर से आरम्भ होने वाला कोई शब्द नहीं है।
ङ (पुं.) विषयेच्छा। भोगलिप्सा। शिव जी का नाम।
ङु (क्रि.) शब्द करना।

च

च (अव्य.) और। पादपूर्ण। (पूं.) चन्द्रमा। शिव का नाम। कछुआ। चोर। (गु.) बुरा। दुष्ट।
चक् (क्रि.) चमकना। प्रसन्न होना। तृप्त होना।
चकास् (क्रि.) चमकना।
चकित (न.) भय। डर। डरा हुआ। हैरान हुआ। विस्मित। एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में सोलह अक्षर होते हैं।
चकोर (पुं.) एक पक्षी।
चक्क (क्रि.) पीड़ित होना। कष्ट उठाना।
चक्र (न.) चकवा पक्षी। पहिया। सैनिक। राज। एक प्रकार का पाखण्ड। चाक। जिससे कुम्हार बरतन बनाता है। एक प्रकार का अस्त्र। भँवर। काव्यरचना विशेष। कोल्हू। समूह। गाँव। पुस्तक का भाग। नदी का शब्द।
चक्रक (पुं.) जिसकी पहिया घूमने जैसा शब्द निकलता हो। एक दोष। एक प्रकार का तर्क।
चक्रधर (पुं.) विष्णु। सर्प। राजा।
चक्रधारा (स्त्री.) पहिये का अग्रभाग।
चक्रपाणि (पुं.) विष्णु।
चक्रपादः (पुं.) रथ। गाड़ी।
चक्रबन्धु (पुं.) सूर्य्य।
चक्रभेदिनी (स्त्री.) रात।
चक्रभ्रम (पुं.) पीसने की चक्की।
चक्रवर्तिन् (पुं.) महाराजाधिराज। राजाओं का अधीश्वर। आसमुद्रान्त भूमण्डल का स्वामी। मुख्य।
चक्रवाक (पुं.) स्वनाम प्रसिद्ध पक्षी।
चक्रवाड (पुं.) लोकालोक पर्वत। मण्डल।
चक्रवृद्धि (स्त्री.) सूद दर सूद। ब्याज पर ब्याज।
चक्रव्यूह (पुं.) युद्धक्षेत्र में शत्रु से लड़ने के लिये विशेष विधि से सेना खड़ा करना।
चक्रा (स्त्री.) नागरमौथा। काकड़ासिंगी।
चक्राङ्ग (पुं.) रथ। गाड़ी। हंस।
चक्रिन् (पुं.) विष्णु। साँप। चकवा। कुम्हार। चुगलखोर। सूचक। तेली। चक्रवर्ती। अवनीपति। चक्र वाला।

चक्रीवत् (पुं.) सदा घूमने वाला। गधा। राजा विशेष।
चक्ष् (क्रि). कहना। छोड़ना। विचारना।
चक्षण (न.) कहना। बोलना। भूख बढ़ाने वाली एक प्रकार की चटनी।
चक्षुस् (न.) देखना। आँख। प्रकाश।
चक्षुःश्रवस् (पुं.) ऐसा जीव जो आँखों ही से सुनता हो अर्थात् साँप।
चक्षुष्य (पुं.) सुरमा। काजल।
चङ्क्रमण (न.) बहुत घूमना। बार-बार घूमना।
चञ्चरी (स्त्री.) भौंरी।
चञ्चल (पुं.) विषयी। वायु। चपल। अस्थिर। कामुक।
चञ्चा (स्त्री.) चटाई। चौकी। घास की गुड़िया।
चञ्चु (पुं.) पक्षियों की चोंच।
चट् (क्रि.) मारना। तोड़ना। फोड़ना। ढाकना।
चटक (पुं.) चिड़िया।
चटकाशिरस् (पुं.) पिप्पलीमूल। मद्य।
चटु (पुं.) प्रियवचन। व्रतियों का एक आसन। उदर। पेट।
चटुल (त्रि.) चञ्चल। फुरतीला। बिजुली।
चड् (क्रि.) क्रोध करना।
चण् (क्रि.) जाना। मारना। शब्द करना। देना।
चणक (पुं.) चने। तृणभेद। एक मुनि का नाम जिसके वंश में चाणक्य का जन्म हुआ था।
चण्ड (पुं.) इमली का वृक्ष। यमदूत। दैत्यविशेष। तीक्ष्ण। तेज।
चण्डांशु (पुं.) सूर्य। दिनकर। प्रभाकर।
चण्डातमक (पुं.न.) कुर्त्ती। छोटा कोट।
चण्डाल (पुं.) संकरवर्ण जिसका जन्म ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता द्वारा हो। जातिविशेष।
चण्डी (स्त्री.) दुर्गा देवी। क्रोध वाली। सप्तशती में चण्डी देवी की कथा होने से उस पुस्तक का नाम ही चण्डी पड़ गया है।
चत् (क्रि.) माँगना। जाना।
चतुःशाला (स्त्री.) चौखण्डी। चार खण्ड का मकान।
चतुर् (त्रि.) चार की गिनती। चार संख्या वाला।
चतुर (पुं.) हाथीखाना। काम में कुशल। दक्ष। आँखों के सामने। चालाक।

चतुरंग (न.) जिसके चार अंग हों। हाथी, घोड़ा, गाड़ी, पैदल इन चार अंगों से सुसज्जित सेना।
चतुरश्र (त्रि.) चतुष्कोण। चौकोना। चार कोने वाला। ज्योतिष में लग्न से चौथा तथा आठवाँ स्थान।
चतुरानन (पुं.) चार मुख वाला। ब्रह्मा। चमुर्मुख।
चतुर्थ (त्रि.) चौथा।
चमुर्थांश चौथा भाग। चार भागों में से एक।
चतुर्थी (स्त्री.) चौथ तिथि।
चतुर्दन्त (पुं.) चार दाँत वाला। इन्द्र का ऐरावत नामक हाथी।
चतुर्दशन (त्रि.) चौदह।
चतुर्द्धा (अव्य.) चार प्रकार से।
चतुर्भद्र (न.) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-चार कल्याण।
चतुर्भुज (पुं.) चार हाथ वाला। विष्णु।
चतुर्युग (न.) सत्य, त्रेता, द्वापर और कलिरूप चारो युग।
चतुर्वर्ग (पुं.) चार प्रकार का पुरुषार्थ अर्थात् अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।
चतुर्विंशति (स्त्री.) चौबीस।
चतुर्विद्य (पुं.) चारों वेदों का जानने वाला।
चतुर्विधशरीर (न.) जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिद-ये चार प्रकार के शरीर हैं।
चतुर्व्यूह (पुं.) उत्पत्ति आदि कार्य के लिये चार विभाग वाला अर्थात् वासुदेव, सङ्कर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध रूप विष्णु।
चतुष्क (न.) चार खम्भों वाला घर।
चतुष्टय (त्रि.) चार हिस्से वाला।
चतुष्पथ (पुं.) चौराहा। चार आश्रमों वाला।
चतुष्पद (पुं.) चौपाया। चार पैर वाला एक करण।
चतुष्पदी (स्त्री.) चार पाँव वाली । चार चरणों का श्लोक जिसमें ३२ अक्षर होते हैं।
चतुस्त्रिंशत् (त्रि.) चौंतीस।
चत्वर (न.) यज्ञ के लिये शुद्ध पृथिवी। आँगन। बाड़ा।
चत्वारिंशत् (स्त्री.) चालीस।

चत्वाल (पुं.) होमकुण्ड। कुश।
चद् (क्रि.) माँगना। प्रसन्न होना। चमकना।
चन् (क्रि.) मारना। शब्द करना।
चन (अव्य) अपूर्ण। जो कुछ भी।
चञ्च् (क्रि.) जाना।
चन्दन (पुं.न.) चन्दन। एक वानर। एक बूटी।
चन्दनधेनु (स्त्री.) चन्दन लगी गौ। ऐसी गौ उसे कहते हैं जो सधवा और सन्तानवती स्त्री द्वारा मृत्यु के अनन्तर स्वर्गप्राप्ति की कामना से दी जाती है।
चन्द्र (पुं.) कपूर। हींग। पानी। सुन्दर। काला रंग। मोर का चाँद। बड़ी इलायची। चन्द्रमा। मृगशिर नक्षत्र।
चन्द्रक (पुं.) सफेद मिर्च। मछली विशेष।
चन्द्रकला (स्त्री.) चन्द्र का सोलहवाँ अंश। द्रविड़ देश का वाद्यविशेष।
चन्द्रकान्त (पुं.) मणिविशेश। कमल। चन्दन। रात। चाँदनी। चन्द्र की स्त्री।
चन्द्रकान्ति (न.) चाँदी। चन्द्रमा की चमक।
चन्द्रकिन् (पुं.) मयूर। मोर।
चन्द्रगुप्त (पुं.) मगध देश का राजा विशेष। चित्रगुप्त।
चन्द्रवाला (स्त्री.) बड़ी इलायची।
चन्द्रभागा (स्त्री.) काश्मीर देश की एक नदी का नाम।
चन्द्रमण्डल (न.) चाँद का गोल आकार।
चन्द्रमस् (पुं.) चन्द्रमा। चाँद।
चन्द्रमौलि (पुं.) शिव। शकंर।
चन्द्रवल्लरी (स्त्री.) सोमलता।
चन्द्रव्रत (न.) चान्द्रायण नामक व्रत।
चन्द्रशाला (स्त्री.) प्रासादोपरिस्थ गृह।
चन्द्रशेखर (पुं.) शिव जी। पूर्व देश का एक पर्वत।
चन्द्रसम्भव (पुं.) वुध। नर्मदा नदी। बड़ी इलायची।
चन्द्रहास (पुं.) खड्ग। रूपा। (स्त्री.) गुडूची। गिलोय।
चन्द्रा (स्त्री.) एला। चन्द्रातप। चन्दोवा।
चन्द्रापीड (पुं.) शिव। तारापीड राजा का पुत्र।
चन्द्रिका (स्त्री.) चाँदनी। बड़ी इलायची। छन्द जिसके प्रत्येक पाद में तेरह अक्षर होते हैं।
चन्द्रोपल (पुं.) चन्द्रकान्तमणि।
चप् (क्रि.) पीसना। शान्ति देना। उत्तेजित करना।
चपल (पुं.) पारा। मछली। क्षणिक। चञ्चल। घबड़ाया हुआ। दुर्विनीत। अशिक्षित। लक्ष्मी। विजली। कुलटा स्त्री। पीपल। भोग। मदिरा। जीभ। छन्दविशेष।
चपेट (पुं.) थप्पड़।
चम् (क्रि.) खाना।
चमत्कार (पुं.) विलक्षण। विस्मयकारी। अपामार्ग वृक्ष।
चमर (पुं.) भैंसे के रूप रंग जैसा हिरन। जिसकी पूँछ के बाल के चँवर बनाये जाते हैं।
चमस (पुं.न.) लकड़ी का बना हुआ यज्ञीय एक पात्र। लड्डू। चमचा।
चमीकर (पुं.) सोने के उपजने का स्थान।
चमू (स्त्री.) सेना।
चमूरु (पुं.) मृगविशेष। कचनार का वृक्ष।
चम्पक (पुं.) केला। ढेउ का वृक्ष। चम्पे का फूल।
चम्पकमाला (स्त्री.) स्त्रियों के गले का आभूषण विशेष। चम्पाकली। छन्दोविशेष।
चम्पाधिप (पुं.) चम्पा देश का स्वामी। कर्ण राजा।
चम्पू (स्त्री.) काव्यविशेष। जिसमें गद्यपद्य मिश्रित हों।
चम्बु (क्रि.) जाना।
चय (पुं.) कोट। समूह। चौकी।
चयन (न.) एक प्रकार की रचना। चुनना। एकत्र करना।
चर् (क्रि.) जाना।
चर (पुं.) राजदूत। भेदिया। ज्योतिष में लग्नविशेष। (त्रि.) चलने वाला। जाने वाला।
चरक (पुं.) वैद्यकाचार्यविशेष। चार। छिपा हुआ दूत। पापड़। भिक्षुक। संन्यासी।
चरण (पुं.न.) पैर। वेद का एक भाग। शाखारूपी ग्रन्थविशेष, उसको पढ़ने वाला गोत्र। (क्रि.) जाना। खाना। (न.) आचार। स्वभाव।
चरणग्रन्थि (पुं.) पाँव की गाँठ। गुल्फ।

चरणायुध (पुं.) पाँव है आयुध जिसका, अर्थात् मुर्गा। कुक्कुट।

चरणव्यूह (पुं.) वह ग्रन्थ जिसमें वेद की शाखाओं का विशदरूप के वर्णन है। वेदव्यास का रचा ग्रन्थविशेष।

चरम (त्रि.) अन्त। अवसान। पश्चिम। अन्तिम।

चराचर (न.) चलने और न चलने वाला। दुनिया। जगत्। (पुं.) स्थावर जंगम। आकाश। शिव जी की जटा।

चरित (त्रि.) चला गया। पा लिया। कर लिया। जाना गया। अनुष्ठान। काम। सञ्चार। विचारना। लीला। कहानी। चाल-चलन। स्वभाव। व्रतादि कर्म में यत्नवान् होना।

चरिष्णु (त्रि.) चलने वाला। चालाक। इतस्ततः डोलने वाला।

चरु (पुं.) होम में डालने का पदार्थ विशेष, यह अन्न घी में राँधा जाता है और ऊपर से उसमें दूध छिड़का जाता है।

चर्च् (क्रि.) पढ़ना। कहना। झिड़कना।

चर्चरी (स्त्री.) टेढ़े बाल। हर्ष से खेलना। अभिमान युक्त वचन। छन्दविशेष।

चर्चा (स्त्री.) दुर्गा। चन्दनादि शरीर पर लगाना। चिन्ता। विचार। जिक्र।

चर्त्व (क्रि.) जाना। खाना।

चर्म्मकार (पुं.) चमार। मोची।

चर्म्मण्वती (स्त्री.) नदीविशेष।

चर्म्मदण्ड (पुं.) चाबुक। हण्टर। कोड़ा।

चर्म्मन् (न.) ढाल। चाम। छूने वाली इन्द्रिय।

चर्म्मपादुका (स्त्री.) जूता। जूती।

चर्म्मप्रसेविका (स्त्री.) लुहार की धौंकनी। भस्त्रा।

चर्म्मिन् (पुं.) ढाल बाँधने वाला। भोजपत्र वाला वृक्ष। भृङ्गरीट। केला। चमड़े वाला। सैनिक। सिपाही।

चर्य्या (स्त्री.) नियम पालन गुरूपदिष्ट उपदेशानुसार व्रतादि का पालन। विचरना। गाड़ी में बैठ कर घूमना फिरना। व्यवहार। स्वभाव। खाना।

चर्व्व (क्रि.) चबाना।

चर्षणि (पुं.) जन। (वेद) देखना। विचारना। चालाक। मनुष्य।

चल् (क्रि.) जाना।

चला (स्त्री.) चलने वाली, स्त्री।

चलाचल (त्रि.) अत्यन्त चञ्चल। काक। कौआ।

चष् (क्रि.) खाना। मारना।

चषक (पुं.न.) मदिरा पीने का पात्र। शहद। मद्यविशेष।

चाषाल (पुं.) यज्ञपशु बाँधने का खूँटा।

चह् (क्रि.) ठगना।

चाकचक्य (न.) उज्ज्वलता। चमक। प्रकाश।

चाक्षुष (न.) नेत्रोत्पन्न ज्ञान। देखना। दृष्टि। छठवें मनु।

चाट (पुं.) प्रथम विश्वास दिला कर पीछे धन ले जाने वाला चोर।

चाटकेर (पुं.) चिड़िया का बच्चा।

चाटु (पुं.न.) प्रिय वचन। चापलूसी से भरा वचन।

चाटुपटु (पुं.) चापलूस। भाण्ड। विदूषक। मसखरा।

चाणक्य (पुं.) एक प्रसिद्ध नीति बनाने वाला ब्राह्मण। ग्रन्थविशेष।

चाणूर (पुं.) कंस राजा का एक नामी पहलवान जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था।

चाणूरसूदन (पुं.) चाणूरहन्ता। श्रीकृष्ण।

चाण्डाल (पुं.) श्वपच। नीचातिनीच जाति का मनुष्य। घातक।

चातक (पुं.) पपीहा।

चातुरी (स्त्री.) चतुराई। छल। कार्यपटुता।

चातुर्मास्य (न.) वर्षा के चार मासों में किये गये। चार मास में पूर्ण होने वाला, यज्ञ या व्रत।

चातुर्वर्ण्य (न.) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र-चारों वर्ण।

चान्द्र (पुं.) चन्द्रकान्तमणि। चन्द्रमा की तिथियों से गिना जाने वाला मास। चान्द्रायण व्रत। चन्द्रलोक। चन्द्रकथित व्याकरण विशेष। चान्द्र व्याकरण पढ़ने वाला।

चान्द्रायण (न.) वह व्रत या कर्म जिससे चन्द्रलोक प्राप्त हो। व्रतविशेष।

चाप (पुं.) धनुष। ज्योतिष की नवमी राशि।

चापल (न.) चपल होना। मन को सुख न मिलना।

विना विचारे किसी कार्य के करने में लग जाना। निष्प्रयोजन हाथ पैर हिलाना। अनवस्थान।

चामर (पुं.न.) चमर। मृग की पूँछ का बना चँवर।

चामीकर (न.) सोना। धतूरा।

चामुण्डा (स्त्री.) आकाशादिरूपी सेना को ग्रहण करने वाली। दुर्गा। देवी। चण्ड मुण्ड को लाने वाली।

चाम्पेयक (न.) चम्पे का फूल। नागकेसर। सोना। किञ्जल्क।

चायृ (क्रि.) दर्शन करना। देखना।

चारण (पुं.) यश को फैलाने वाला। भाट। यशसञ्चारक।

चारु (पुं.) बृहस्पति। सुन्दर। मनोहर।

चार्चिक्य (न.) शरीर को चन्दनादि सुगन्धयुक्त द्रव्यों से चर्चित करना।

चार्म्म (पुं.) चारों ओर चमड़े से मढ़ी गाड़ी या रथ।

चार्वाक (पुं.) वह लोग जिसका वचन सारे संसार को रुचे।

चालनी (स्त्री.) चलनी। धान आदि छानने की छन्नी।

चाष (पुं.) नीलकण्ठ।

चि (क्रि.) चुनना।

चिकित्सक (पुं.) वैद्य। डाक्टर। हकीम।

चिकित्सा (स्त्री.) बीमारी का इलाज। रोग दूर करने की प्रक्रिया।

चिकित्स्य (न.) साध्य रोगी। इलाज के योग्य रोगी।

चिकुर (पुं.) बाल सिर के। वृक्षविशेष। पहाड़। सरीसृप जीवजन्तु। चञ्चल। तरल।

चिक्क् (क्रि.) दुःख देना। कष्ट देना।

चिक्कण (पुं.) चिकना। गुवाक का पेड़ या फल।

चिच्छक्ति (स्त्री.) मन और बुद्धि की सामर्थ्य। चैतन्य।

चिञ्चा (स्त्री.) इमली का पेड़।

चिट् (क्रि.) भेजना।

चित् (क्रि.) जानना।

चित (स्त्री.) ज्ञान। चैतन्य।

चित् (अव्य.) अपूर्ण। थोड़ा। जैसे किञ्चित्।

चित (त्रि.) चिता।

चिति (स्त्री.) चिता। समुदाय। वेदान्तमतानुसार ऐसा ज्ञान, जिसका कोई विषय न हो। अग्निस्थानविशेष।

चित्त (न.) मन। बुद्धि। अनुसन्धान। चिता की लकड़ी।

चित्तविक्षेप (पुं.) चित्त में विक्षेप डालने वाले। योग से जो हटा लें-ऐसी बातें।

चित्तविप्लव (पुं.) उन्माद रोग।

चित्य (पुं.) आग। चिता।

चित्र् (क्रि.) लिखना। आश्चर्य होना।

चित्र (पुं.) यमविशेष। (वृकोदराय चित्राय)। अशोक वृक्ष। चित्रक वृक्ष। अण्डी का पेड़। आकाश। एक प्रकार का कुष्ठ। कई रंग वाला। तिलक। शब्दसम्बन्धी अलंकारविशेष। भेड़ियाविशेष।

चित्रकण्ठ (पुं.) कबूतर। घुग्घू। उल्लू।

चित्रकर (पुं.) मूर्त्ति बनाने वाला। दोगला। तसवीर वाला।

चित्रकूट (पुं.) जिसके शिखर पर चित्र हों। बाँदा के पास का एक स्थान।

चित्रगुप्त (पुं.) यमराज के पेशकार।

चित्रपट (पुं.) रंगबिरंगा कपड़ा। चित्र। मूर्ति। तसवीर।

चित्रपादा (स्त्री.) सारिका पक्षी। मैना।

चित्रभानु (पुं.) अग्नि। सूर्य। चित्रक पेड़। आक का रूख।

चित्ररथ (पुं.) सूर्य। गन्धर्वविशेष। गायक देवता।

चित्रलेखा (स्त्री.) कुमाण्ड की कन्या। अप्सरा विशेष। उषा की सखी। छन्द विशेष जिसके प्रत्येक पाद में अठारह अक्षर होते हैं।

चित्रशिखण्डिन् (पुं.) शिखा वाला। सप्तर्षि यथा- १. मरीचि। २. अङ्गिरा। ३. अत्रि। ४. पुलस्त्य। ५. पुलह। ६. कृत। ७. वसिष्ठ।

चित्राङ्गद (पुं.) शन्तनु राजा का पुत्र और विचित्रवीर्य का भाई। एक गन्धर्व।

चित्राङ्गी (स्त्री.) विलक्षण अंग वाली। मजीठ। कर्णजलौका।

चिद्रूप (पुं.) आत्मा। परमात्मा। जीवात्मा।
चिदाकाश (न.) शुद्ध ब्रह्म।
चिदाभास (पुं.) बुद्धि पर आत्मा की परछाईं। जीव।
चिन्ता (स्त्री.) संस्कार को जागरूक करने वाली। देखे हुए पदार्थ का फिर स्मरण दिलाने वाली।
चिन्तामणि (पुं.) विचारते ही अभिलषित वस्तु को प्रदान करने वाली मणि। ब्रह्मा। बुद्धदेव।
चिन्मय (पुं.) चैतन्यरूप ईश्वर। परब्रह्म।
चिपिट (पुं.) भोजनविशेष। चपटी नाक वाला।
चिर (अव्य.) दीर्घ। बहुत दिनों से।
चिरक्रिय (त्रि.) दीर्घसूत्री। ढिल्लड़। आलसी।
चिरजीविन् (पुं.) दीर्घकाल तक जीने वाला। काक। सेंवल का वृक्ष। मार्कण्डेय ऋषि। अश्वत्थामा। बलि। हनुमान्। व्यास। विभीषण। कृपाचार्य। परशुराम।
चिरण्टी (स्त्री.) पित्रालय में बहुत दिनों तक रहने वाली युवती।
चिरत्न (गु.) चिरन्तन। पुराना। पुरातन।
चिरन्तन (गु.) पुराना। पुरातन।
चिरायुस् (पुं.) बड़ी उम्र वाला। देवता।
चिर्भटी (स्त्री.) ककड़ी। खीरा। तर।
चिल्ल् (क्रि.) ढीला पड़ना।
चिल्ल (पुं.) चील नामक पक्षी। पीड़ित नेत्र वाला।
चिल्लाभ (पुं.) चोर।
चिबुक (न.) ठोड़ी। मुचकुन्द वृक्ष।
चिह्नम् (न.) लाञ्छन। लक्षण। धब्बा। पताका।
चीन (पुं.) देशविशेष। हिरनविशेष। महीन वस्त्रविशेष।
चीत्कार (पुं.) चीखना। चिल्लाना।
चीभ् (क्रि.) प्रशंसा करना। बड़ाई करना।
चीर (न.) वस्त्रखण्ड। कपड़े का टुकड़ा।
चीर्ण (त्रि.) कृत। किया हुआ। एकत्र किया। सीखा हुआ। काटा गया।
चीव् (क्रि.) लेना। ढाँकना। चमकना।
चीवर (न.) कफनी जिसे फकीर पहनते हैं। सन्यासियों की कौपीनादि वस्त्र।
चुक्क् (क्रि.) कष्ट देना। उत्पीड़ित करना।
चुट्ट् (क्रि.) कम होना।
चुड् (क्रि.) काटना।

चुत् (क्रि.) बहना। चूना। टपकना।
चुत (न.) गुह्यदेश। मलद्वार।
चुद् (क्रि.) प्रेरणा करना। भेजना। फेंकना।
चुप् (क्रि.) धीरे-धीरे चलना।
चुब् (क्रि.) चूमना। चुम्बन करना।
चुम्बक (पुं.) अयस्कान्तमणि। धूर्त। ठग। चूमने वाला।
चुर् (क्रि.) चुराना।
चुरा (स्त्री.) चोरी।
चुल् (क्रि.) उठना। ऊँचा होना। बढ़ना। डुबकी मारना।
चुलुक (पुं.) निबिड़। पङ्क। एक प्रकार का बर्तन। हाण्डी। डूबने योग्य जल।
चुल्ल (पुं.) सजल नयन वाला।
चुल्लि (स्त्री.) चूल्हा।
चूड़ा (स्त्री.) मोरशिखा।
चूड़ामणि (पुं.) शिर की मणि।
चूड़ाल (गु.) चुटीला। चोटी वाला। नागर-मोथा।
चूण (क्रि.) सिकोड़ना। संकीर्ण करना।
चूत (पुं.) चुसा हुआ। आम। घर का द्वार। कूपक। गुदा। योनि।
चूर्ण् (क्रि.) पीसना।
चूर्ण (पुं.) चूना। पिसी कुटी वस्तु।
चूर्णक (पुं.) चूरा। गद्यविशेष। छन्दोविशेष।
चूर्णकुन्तल (पुं.) सिर के छोटे-छोटे बाल। छल्लेदार बाल।
चूर्णी (पुं.) पतञ्जलि का महाभाष्य। शिव जी की जटा।
चूलिका (स्त्री.) हाथी के कान की जड़। नाटकाङ्गविशेष।
चूष् (क्रि.) चूसना। पीना।
चूषा (स्त्री.) चाम की लगाम। चूसना।
चूष्य (गु.) चूसने योग्य।
चृत् (क्रि.) मारना। गाँठना।
चेट (पुं.) नौकर। सेवक। दास।
चेत् (अव्य.) यदि। सन्देह न होने पर भी सन्दिग्ध हो कर कहना।
चेतन (पुं.) आत्मा। जीव। परमेश्वर। प्राणी। चैतन्य।

चेतस् (न.) चित्त। मन। आत्मा।
चेतोमुख (पुं.) जिसका चित्त द्वार हो। जीव।
चेदि (पुं.) देशविशेष। उस देश के निवासी।
चेदिपति (पुं.) दमघोष राजा का पुत्र।
चेल् (क्रि.) जाना। चलना। हिलना। चञ्चल होना।
चेल (न.) कपड़ा।
चेलप्रक्षालक (पुं.) धोबी।
चेल्ल् (क्रि.) चालन। हिलना। जाना।
चेष्ट (क्रि.) जीवन के चिह्न दिखाना। पूरा करना। यत्न करना।
चेष्टा (स्त्री.) यत्न। आत्मा से इच्छा, इच्छा से यत्न और यत्न से चेष्टा उत्पन्न होती है।
चैतन्य (न.) चेतना। ब्रह्म। प्रकृति। माया।
चैत्य (न.) महावृक्ष। विदेश। देवता के रहने का पेड़। बुद्धभेद। मन्दिर। चिता का चिह्न। जनसभा। यज्ञीय स्थान। बिम्ब। विश्रामस्थान।
चैत्यगृह (न.) चैत्य का घर।
चैत्र (पुं.) मास जिसमें चित्रा नक्षत्र में पूर्णिमा हो। चैत का महीना।
चैत्रक (पुं.) पहाड़ विशेष।
चैत्ररथ (पुं.) कुबेर का उद्यान जिसे चित्ररथ ने बनाया था।
चैद्य (पुं.) शिशुपाल।
चोदना (स्त्री.) प्रवृत्त कराने के लिये कहा हुआ वाक्य। उपदेश।
"चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः।"
प्रेरणा। झिड़की।
चोद्य (न.) प्रश्न। पूर्वपक्ष। विलक्षण। प्रेरणा योग्य।
चोर (पुं.) चोरी करने वाला। गन्धद्रव्य विशेष।
चोल (न.) चोली। अङ्गिया। द्राविड और कलिङ्ग देशों के मध्य का देश।
चोली (स्त्री.) अङ्गिया।
चोष्य (न.) चूसने योग्य। गन्ना। पौंड़ा।
चौड़ (न.) चूड़ा संस्कार।
च्यवन (न.) धीरे-धीरे चूना। ऋषिविशेष।
च्यु (क्रि.) जाना। हसना। सहन करना। सहारना।
च्युत् (क्रि.) देखो चुत्।
च्युति (स्त्री.) झरन। टपकन। चुअन। नाश।
च्यौत्न (त्रि.) जाने वाला। छोड़ा हुआ। गुण्डा। धर्मरहित। अण्डे से उत्पन्न। त्याग के योग्य। चूरचूर। प्रयत्न। उद्योग। प्रबन्ध। सामर्थ्य। बल।

छ

छ (गु.) विशुद्ध। स्वच्छ। छेदक। काटने वाला। चञ्चल।
छगल (पुं.) छाग। बकरा।
छटा (स्त्री.) प्रकाश। चमक। परम्परा। लगातार।
छत्र (पुं.) छाता। सोये का साग।
छत्रक (पुं.) वृक्षविशेष। पक्षीभेद। मधुमक्खी का छत्ता।
छत्रभङ्ग (पुं.) नृपनाश। वैधव्य। पराधीनता।
छत्राक (न.) शिलीन्ध्र।
छद् (क्रि.) छाना। ढाकना।
छद (पुं.) चिड़िया का पर। तमाल वृक्ष। ग्रन्थिपर्ण।
छदन (न.) पत्र। पर। छाल। चमड़ा।
छदपत्र (पुं.) भोजपत्र।
छदि (पुं.) छत। भोजपत्र।
छद्मतापस (पुं.) दाम्भिक तपस्वी।
छद्मन् (न.) कपट। छल।
छन्द (पुं.) अभिलाषा। चाह। अधीनता। विषविशेष।
छन्दस् (न.) वेद। स्वेच्छाचार। गायत्री आदि छन्द। पद्य। वृत्त।
छन्दोग (पुं.) सामवेद गाने वाला ब्राह्मण। स्वच्छन्दचारी। वेदमार्ग से चलने वाला।
छर्द (क्रि.) वमन करना।
छर्दन (पुं.) नीम का पेड़। मदन का वृक्ष। वमन।
छर्दि (स्त्री.) वमन करने का रोग। वान्ति। कै।
छल (न.) कपट।
छलना (स्त्री.) छल। दूसरे को ठगना।
छल्ली (स्त्री.) छाल। वल्कल। बेल। लता। सन्तान।
छवि (स्त्री.) शोभा। कान्ति। चमक। दमक। भड़क।
छाग (पुं.) छागल। बकरा।
छागवाहन (पुं.) अग्नि का वाहन बकरा है, इससे अग्नि।

छात (त्रि.) छिन्न। कटा हुआ। दुर्बल।
छात्र (त्रि.) शिष्य। मधुमक्खी का छत्ता।
छान्दस (पुं.) वेद पढ़ने वाला।
छान्दोग्य (न.) सामवेदीय उपनिषद्।
छाया (स्त्री.) धूप का अभाव। प्रतिबिम्ब। परछाहीं। पालन। घूँस। पंक्ति। सूर्य की स्त्री। छन्द जिसके पाद में उन्नीस अक्षर होते हैं।
छायातनय (पुं.) शनैश्चर।
छायापुरुष (पुं.) अपने आप शरीर की छाया को देखते-देखते सहसा आकाश की ओर देखने से एक पुरुष दिखलाई पड़ता है, उसी का नाम छायापुरुष है।
छिक्कनी (स्त्री.) नकछिकनी। एक औषध जिस को चूर्ण सूँघने से छींके आने लगती है।
छिक्का (स्त्री.) छींक।
छिल्लर (त्रि.) शत्रु। धूर्त्त। काटने वाला।
छिद् (क्रि.) काटना।
छिदिर (पुं.) कुल्हाड़ा। अग्नि। रस्सी। तलवार।
छिदुर (त्रि.) शत्रु। वञ्चक। ठग। काटने वाला। काटने का औजार।
छिद्र (न.) दोष। त्रुटि। छेद। आकाश। ज्योतिष में लग्न से आठवाँ स्थान।
छिन्नमस्ता (स्त्री.) जिसका सिर कटा हो। दस महाविद्याओं में से एक। दुर्गा देवी।
छिन्नरुह (पुं.) तिलवृक्ष। गुर्च गिलोय। स्वर्णकेतकी।
छुट् (क्रि.) काटना।
छुर् (क्रि.) छेदना। काटना। लेप करना।
छुरिका (स्त्री.) छुरी। चाकू।
छुद् (क्रि.) भड़काना। चमकाना। खेलना।
छेक (पुं.) पालतू चिड़िया या पशु। हिरन। चतुर। नागर।
छेकानुप्रास (पुं.) अनुप्रास का भेद। शब्दसम्बन्धी अलंकार।
छेकोक्ति (स्त्री.) चतुरा स्त्री का वचन। पेचीली बात। रूपालंकार का भेद।
छेद् (क्रि.) छेदना। काटना।
छेद (पुं.) काटना। तोड़ना। काटने वाला। तोड़ने वाला।
छेमण्ड (पुं.) अनाथ।
छेलक (पुं.) बकरा।
छैदिक (पुं.) छड़ी। बेत।
छो (क्रि.) क्रि. काटना।
छोटिका (स्त्री.) चुटकी।
छोटिन् (पुं.) मछुआ। धीमर।
छोलग (पुं.) चूना।
छ्यु (क्रि.) जाना।

ज

ज (पुं.) समास के अन्त में आता है और तब इसका अर्थ होता है-"उससे या इससे उत्पन्न हुआ" जैसे "पंकज"। बना हुआ। सम्बन्धी। विजयी। पिता। जन्म। विष। कान्ति। विष्णु। शिव। भोग। गति। वेग। गण।
जक्ष् (क्रि.) खाना।
जगच्चक्षु (पुं.) सूर्य। भास्कर।
जगत् (पुं.) लोक। वायु।
जगत्प्राण (पुं.) वायु। पवन।
जगत्साक्षिन् (पुं.) सूर्य्य। चन्द्र। पृथिवी। वायु। यम।
जगती (स्त्री.) धरती। भुवन। जन। लोक। जम्बुद्वीप। एक छन्द जिसका बारह अक्षर वाला पाद हो।
जगदाधार (पुं.) वायु। जगत् का सहारा।
जगद्धात्री (स्त्री.) जगत् की माँ। जगदम्बा। लक्ष्मी जी। दुर्गा।
जगद्योनि (पुं.) जगत् की उत्पत्ति करने वाला। हिरण्यगर्भ। कुमार। विष्णु। शिव। पृथिवी।
जगन्नाथ (पुं.) जगत् के स्वामी। विष्णु। विष्णु का क्षेत्र। तान्त्रिकों के मतानुसार विमला पीठ का भैरव। यथा-
"विमला भैरवी यत्र जगन्नाथस्तु भैरवः"।
जग्ध (त्रि.) खाया हुआ। भुक्त।
जग्धि (स्त्री.) एकत्र बैठ कर भोजन करना। भोजन। खाना।
जघन (न.) जाँघ। पद।
जघन्य (त्रि.) अधम। नीच। सबसे पिछला। शूद्र। पुरुष का गुह्याङ्ग।
जघन्यज (पुं.) शूद्र। कनिष्ठ। सबसे छोटा।

जङ्गम (त्रि.) चलने की शक्ति वाला। लिङ्गायित सम्प्रदाय के गुरु जङ्गम कहलाते हैं।

जङ्गल (न.) वन। बेहड़। अकेला। (पुं.) मांस।

जङ्घा (स्त्री.) जाङ्घ। गुल्फ और जानु के बीच का देश।

जंघाकरिक (त्रि.) डाकिया। चर। दूत। दौड़ने वाला।

जाङ्घाल (त्रि.) बड़ी वेग वाली जंघा वाला। दौड़इया। कई एक पशु।

जज् (क्रि.) लड़ना।

जट् (क्रि.) जुड़ना। एकत्र होना।

जटा (स्त्री.) जूड़ा। शेर के अयाल। वृक्षादि की जड़। जटामांसी। वेद का पाठविशेष। लता। शतावरी।

जटाजूट (पुं.) जटाओं का समुदाय।

जटामांसी (स्त्री.) सुगन्धिद्रव्यविशेष।

जटायु (पुं.) बड़ी आयु वाला। पक्षी विशेष। गूगल। जठीर।

जटाल (पुं.) वट। गूगल। कपूर। (स्त्री.) जटामांसी। जटा वाला (त्रि.)।

जटिन् (पुं.) पाकुर का वृक्ष। जटा वाला।

जटिल (पुं.) जटा वाला। सिंह। ब्रह्मचारी। जटामांसी। पिप्पली। बच। दमन वृक्ष। (गु.) उलझन डालने वाला।

जठर (न.) पेट। कुक्षि। बढ़ा हुआ तथा कठिन।

जड (त्रि.) अच्छा बुरा न जानने वाला। मूक। बुद्धिहीन। मूर्ख। जल और सीसा।

जतु (न.) लाख।

जत्रुं (न.) काँख। बगल। गले के नीचे की दो हड्डियाँ।

जन् (क्रि.) उत्पन्न होना।

जन (पु.) लोग। सर्वसाधारण लोग। नीच लोग। जीव। महालोक के ऊपर का लोक।

जनक (पुं.) पिता। बाप। मिथिलानगरी का एक राजा। कारण। हेतु। सीता के पिता।

जनकसुता (स्त्री.) सीता। श्रीरामचन्द्र की धर्मपत्नी।

जनता (स्त्री.) भीड़। बहुत जन।

जननि (स्त्री.) माता। माँ। औषध। लाख का रंग। मजीठ। जटामांसी।

जनपद (पुं.) देश। नगर।

जनमेजय (पुं.) राजा परीक्षित् के पुत्र। अर्जुन का पौत्र।

जनयितृ (पुं.) उत्पादक। पिता। माता।

जनलोक (पुं.) जगत्विशेष। वह लोक जो महालोक के ऊपर है।

जनश्रुति (स्त्री.) लोकप्रवाद। किंवदन्ती। अफवाह।

जनस्थान (न.) दण्डकवन के समीप एक स्थान जहाँ खर दूषण की चौकी थी। लोगों के रहने का स्थान।

जनार्दन (पुं.) विष्णु नारयण।

जनाश्रय (पुं.) मण्डप। घर। कुटी। झोपड़ी।

जनि-नी (स्त्री.) उत्पत्ति। नारी। माँ। स्नुषा। बहू। जाया। औषधविशेष। जतुका।

जनुस् (न.) उत्पत्ति।

जनु-नू (स्त्री.) उत्पत्ति।

जन्तु (पुं.) प्राण वाला। अविद्या के कारण शरीर में आत्माभिमान करने वाला जीव।

जन्तुघ्न (पुं.) बायविडङ्ग। हींग। जीवों को मारने वाला।

जन्तुफल (सं.) उदुम्बर। गुलर।

जन्तुला (स्त्री.) काही। बहुत कीड़ों वाली।

जन्मन् (न.) उत्पत्ति। अपूर्व शरीरादि का सम्बन्ध। जन्मलग्न। जन्मनक्षत्र।

जन्मान्तर (न.) दूसरा जन्म। देहान्तर।

जन्माष्टमी (स्त्री.) श्रीकृष्ण के जन्म की तिथि। भादों मास की कृष्णाष्टमी।

जन्मी (पुं.) प्राणधारी। जीव।

जन्य (त्रि.) उत्पन्न हुए। उत्पन्न होने योग्य। पिता। अटारी। बदनामी। प्रीति। युद्ध। शरीर। नयी विवाहिता स्त्री के जाति भाई। माँ की सहेली।

जप् (क्रि.) मन ही मन उच्चारण करना।

जप (पुं.) वेद के मन्त्रों को बार बार उच्चारण करना।

जपा (स्त्री.) वृक्षविशेष के फूल।

जभ् (क्रि.) मैथुन करना। जमुहाई लेना।

जम् (क्रि.) भक्षण करना। खाना।

जमदग्नि (पुं.) परशुराम का पिता। मुनिविशेष।

जम्पति (पुं.) स्त्री और पुरुष का जोड़ा। दम्पती।

जम्बाल (पुं.) कीचड़। सिवार। केतकी। केवड़ा।

जम्बालिनी (स्त्री.) नदी जिसमें जम्बाल हो।

जम्बु-म्बू (स्त्री.) जामुन का फल।

जम्बुक (पुं.) जामुन का पेड़। गीदड़ा। श्रृगाल।

जम्बुद्वीप (पुं.) सप्तद्वीपों में से एक।

जम्बूक (पुं.) श्रृगाल। नीच। वरुण। जामुन। दाख।

जम्भ (पुं.) एक दैत्य। दाँत। अंश। ठोड़ी। तर्कस। (क्रि.) खाना। जमुहाई लेना।

जम्भभेदिन् (पुं.) इन्द्र।

जम्भला (स्त्री.) एक राक्षसी। कहते हैं, इसका नाम लेने से ज्वर और ज्वर के पूर्व जमुहाई का आना नष्ट हो जाता है।

"समुद्रस्योत्तरे तीरे जम्भला नाम राक्षसी।"

जय (पुं.) जीत। नारायण का द्वारपाल। युधिष्ठिर का कल्पित नाम जो उन्होंने अज्ञातवास के समय रखा था। देवी (स्त्री)।

जयढक्का (स्त्री.) विजयवाद्य। विजयसूचक बाजा।

जयद्रथ (पुं.) सिन्धुदेश का राजा। दुर्योधन का बहनोई। अभिमन्यु को मारने वाला। यह अर्जुन द्वारा मारा गया था।

जयन्त (पुं.) इन्द्र के पुत्र का नाम जिसने काक बन कर सीता जी को चोंच से घाव किया था। चन्द्रमा। शिव। अज्ञात वास में भीम का नाम।

जयन्ती (स्त्री.) दुर्गा। झण्डा। इन्द्र की कन्या का नाम। बुढ़ापा। वृक्षविशेष। भगवान् श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण आदि के जन्मोत्सव का दिन।

जयपत्र (न.) विजयसूचक पत्र। अश्वमेध के घोड़े के माथे पर जो पत्र बाँधा जाता था उसे जयपत्र कहते थे।

जयपाल (पुं.) वृक्षविशेष। ब्रह्मा। विष्णु। राजा। जमालगोटे का पेड़।

जया (स्त्री.) हड़। जयन्ती। दुर्गा। भाँग। झण्डी। नील दुर्गा। शान्ता वृक्ष। ज्योतिष में त्रयोदशी, अष्टमी और तृतीया जया तिथि कही जाती हैं।

जय्य (त्रि.) जीतने योग्य। जो जीता जा सके।

जरठ (त्रि.) कठोर। कड़ा। कर्कश।

जरत् (त्रि.) वृद्ध। बूढ़ा। पुराना।

जरत्कारु (पुं.) मनसादेवी का पति। एक मुनिविशेष। मनसादेवी (स्त्री.)।

जरद्गव (पुं.) बूढ़ा बैल। पंचतंत्र का एक गीध।

जरन्त (पुं.) भैंसा। बूढ़ा। पुराना। ढीला।

जरा (स्त्री.) बुढ़ापा।

जरायुज (त्रि.) वे प्राणी जो जरा से युक्त उपजते हैं। यथा-मनुष्य, मृग, आदि।

जरासन्ध (पुं.) मगध देश का प्रसिद्ध बलवान् राजा। कहा जाता है जब यह उत्पन्न हुआ था, तब इसके शरीर के दो भाग पृथक्-पृथक् थे। किन्तु जरा नाम की राक्षसी ने उन दोनों को एक कर दिया, इससे इसका नाम जरासन्ध पड़ा।

जर्च-र्द (क्रि.) कहना। झिड़कना। घुड़कना।

जर्ज्जर (पुं.) बूढ़ा। अतिप्राचीन। बहुत से पुराना। इन्द्र का झण्डा। शक्रध्वजा।

जर्झ् (क्रि.) निन्दा करना।

जल् (क्रि.) छोंकना। तेल होना।

जल (त्रि.) जड़। मूर्ख। पेट। ठण्डा। गन्धद्रव्य। लग्न से चौथा घर। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र। पाँच तत्वों में से एक तत्व जल भी है।

जलकण्टक (पुं.) सिंघाडा। नक्र। संसार।

जलकपि (पुं.) घड़ियाल। शिशुमार।

जलकरङ्क (पुं.) नारियल। बादल। कमल का फूल। शंख। लहर।

जलकाक (पुं.) पानी का कौआ। पानकौड़ी।

जलकुन्तल (पुं.) सिवार घास। शैवाल।

जलचर (पुं.) जल में रहने वाले जीवजन्तु।

जलज (पुं.) सिवार। मछली। कमल। शंख या पानी में उत्पन्न हुई कोई भी वस्तु।

जलद (पुं.) बादल। कपूर। जल देने वाला।

जलदागम (पुं.) वर्षा ऋतु।

जलधर (पुं.) बादल। कपूर। समुद्र। पानी रखने वाला।

जलधि (पुं.) समुद्र। चार संख्या विशेष।

जलधिजा (स्त्री.) लक्ष्मी।
जलनिधि (पुं.) समुद्र। चार।
जलबुद्बुद (न.) बुलबुला।
जलमार्ग (पुं.) मोरी। नाली।
जलमुच् (पुं.) मेघ। बादल।
जलयंत्र (न.) फुआरा। पानी की कल।
जलवेतस (पुं.) पानी में उत्पन्न हुआ बेत।
जलव्याल (पुं.) साँप। क्रूरकर्म्मा जीव।
जलशायिन् (पुं.) विष्णु। नारायण।
जलशुक्ति (स्त्री.) जलजीव। घोंघा। सीप।
जलहस्तिन् (पुं.) मगर। ग्राह।
जलहास (पुं.) फेन। झाग। समुद्रफेन।
जलाधार (पुं.) तालाब। समुद्र। सिंघाड़ा। उशीर। चन्दन।
जलावर्त्त (पुं.) भँवर।
जलूका (स्त्री.) जोंक।
जलेचर (पुं.) हंस। बतक आदि जल में विचरने वाले जीव।
जलेन्धन (पुं.) समुद्री आग। वाड़वानल।
जलेश्वर (पुं.) वरुण। समुद्र।
जलोच्छ्वास (पुं.) बहुत पानी का चारों ओर बहना।
जलोदर (पुं.) उदरामय रोग। वह बीमारी जिसके कारण पेट में पानी भर जाता और पेट बढ़ जाता है।
जलौकस (स्त्री.) जोंक।
जलौका (स्त्री.) जोंक।
जल्प् (क्रि.) बोलना। कहना। बकना।
जल्प (पुं.) दूसरे की बात को काट कर, अपनी बात रखने वाला वचन। बात। गप्प।
जल्पाक (त्रि.) बड़े बुरे वचन कहने वाला। बकवादी। बक्की। वाचाल। बहुत बोलने वाला।
जव (पुं.) वेग। तेज।
जवन (पुं.) वेगवान् घोड़ा। देशविशेष। जातिविशेष।
जवनिका (स्त्री.) परदा। कनात।
जवस (न.) घास। "जवस" का "यवस्" भी होता है।
जविन् (पुं.) घोड़ा। ऊँट।
जष्, (क्रि.) मारना। छुड़ाना।
जहत्स्वार्था (स्त्री.) लक्षणविशेष। जिसे अपना अर्थ छोड़ता है।
जह्नु (पुं.) चन्द्रवंशीय एक राजा। जो गंगा को पी गया था।
जह्नुतनया (स्त्री.) गंगा।
जागर (पुं.) निद्राऽभाव। नींद का न आना। जागना। कवच।
जागरित (न.) जागा हुआ।
जागरूक (त्रि.) सावधान। जागा हुआ।
जागर्य्य (स्त्री.) जागना।
जागृ (क्रि.) जागना।
जाग्रत (न.) जागा हुआ।
जाङ्गल (पुं.) कपिञ्जल पक्षी। निर्जल देश। हिरन आदि पशु। कुरुदेश का समीपवर्त्ती देश, या उस देश के रहने वाले।
जाङ्घिक (त्रि.) धावक। हलकारा। ऊँट। घोड़ा।
जात (न.) समूह। व्यक्त। प्रकट। जन्म। अच्छा। प्रशस्त।
जातक (न.) उत्पन्न प्राणी का शुभाशुभ अदृष्ट बतलाने वाला। ज्योतिष का एक गन्थ। एक प्रकार का संस्कार।
जातरूप (न.) सुन्दर। सुस्वरूप। सुवर्ण।
जातवेदस् (पुं.) वह्नि। आग। चित्रा। चित्रक वृक्ष।
जाति (स्त्री.) जन्म। षड्ज आदि सात स्वर। अलंकारविशेष। चुल्ली। आडला। छन्दभेद। मालती। फूलदार वृक्षविशेष।
जातिब्राह्मण (पुं.) केवल जाति से ब्राह्मण किन्तु कर्म द्वारा नहीं। तप और वेदहीन ब्राह्मण। निन्दा योग्य विप्र।
जातिस्मर (त्रि.) पहले जन्म का स्मरण रखने वाला।
जातीफल (न.) जायफल।
जातीय (त्रि.) जातिसम्बन्धी। सजातीय।
जातु (अव्य.) कदाचित्। कभी। निन्दा। निषेध। निस्सन्देह।
जातुधान (पुं.) जो अवसर पा कर कभी पकड़ा जाता है। राक्षस।

जातुष (त्रि.) लाख का पदार्थ।
जातूकर्ण (पुं.) शिव। मुनिविशेष।
जातेष्टि (स्त्री.) उत्पन्न हुए के संस्कारार्थ किया गया एक यज्ञ। संस्कारभेद।
जातोक्ष (पुं.) युवा। साँड़।
जात्य (त्रि.) कुलीन। श्रेष्ठ। सुन्दर।
जात्यन्ध (त्रि.) प्रज्ञाचक्षु। जन्म का अन्धा।
जात्युत्तर (न.) झूठा जवाब। असत् उत्तर।
जानकी (स्त्री.) जनक की कन्या। सीता।
जानपद (त्रि.) देश का। देश से आया हुआ।
जानु (पुं.न.) घुटना।
जामदग्न्य (पुं.) जमदग्नि का पुत्र। परशुराम।
जामाता (पुं.) जमाई। स्वामी। प्रिय। लड़की का पति।
जामि (स्त्री.) भगिनी। बहिन। बहू। कुलस्त्री।
जाम्बवत् (पुं.) जाम्बवान्। रीछों के राजा।
जाम्बवती (स्त्री.) श्रीकृष्ण की भार्या। जाम्बवान् की कन्या। सर्पों को वश में करने वाली।
जाम्बूनद (न.) सोना। धतूरा। जम्बूनद में उत्पन्न।
जाया (स्त्री.) स्त्री। औरत। लग्न से सातवाँ घर।
जायु (पुं.) दवा। औषध। बूटी।
जार (पुं.) उपपति। जार। यार।
जारज (त्रि.) उपपति से उत्पन्न सन्तान। कुण्ड। गोलक।
जाल (पुं.) मच्छी पकड़ने का जाल। कदम का पेड़। झरोखा। छिद्र। फरेब। ठगई। धूर्त्तता। दम्भ। समूह। मोचकफल। नवीन कलियों का समूह।
जालिक (पुं.) फन्दा फँसाने वाला। धीवर। मल्लाह। मकड़ी। मर्कटक।
जाल्म (त्रि.) पामर। नीच। मूर्ख। क्रूर। बेरहम। आवला।
जावाल (पुं.) जवाल ऋषि की सन्तान।
जाह्नवी (स्त्री.)। गंगा। भागीरथी।
जि (क्रि.) जीतना।
जिगीषा (स्त्री.) जय करने की इच्छा। प्रकर्ष। उद्यम।
जिज्ञासु (पु.) ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा करने वाला। मुमुक्षु।
जित (न.) जय। जीत। पराजित। वशीकृत।
जितकाशिन् (त्रि.) जयी। विजयी। जीतने वाला।
जितात्मन् (त्रि.) जिसने मन अथवा इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया है। जितेन्द्रिय।
जितेन्द्रिय (त्रि.) देखो जितात्मन्।
जित्वर (त्रि.) जयशील। जीतने वाला।
जिन (पुं.) संसार को जीतने वाला। बुद्ध। विष्णु। जैनियों के पूज्यविशेष।
जिषू (क्रि.) सींचना।
जिष्णु (पुं.) अर्जुन। इन्द्र। विष्णु। सूर्य्य। अष्टवसु। जीतने वाला।
जिह्म (त्रि.) कुटिल। तिरछा। मन्द। मूर्ख। तगर का वृक्ष।
जिह्मग (पुं.) जो टेढ़ा हो कर चलता है। सर्प। साँप। मदन का वृक्ष। कुटिल।
जिह्वा (स्त्री.) रसना। जीभ।
जिह्वामूलीय (पुं.) अक्षर जो जिह्वा की जड़ से उच्चारित किये जाते हैं।
जिह्वारद (पुं.) दन्तहीन। जीभ ही से चबाने वाला पक्षी।
जीन (त्रि.) वृद्ध। बूढ़ा।
जीमूत (पुं.) मेघ। मोथा। पर्वत। देवताड़ वृक्ष। इन्द्र।
जीर (पुं.) जीरा। खड्ग। छोटा।
जीर्णोद्धार (पुं.) संस्कार। मरम्मत।
जीव् (क्रि.) प्राण धारण करना। जीना।
जीव (पुं.) प्राणी। जीवन का उपाय। वृक्षविशेष।
जीवघन (पुं.) हिरण्यगर्भ।
जीवजीव (पुं.) जीवों को जिलाने वाला। चकोर चिड़िया।
जीवन (न.) वृत्ति। जीविका। जल। टटका मखाना।
जीवन्ती (स्त्री.) हर्र। गुरुच। जीवाख्य शाक।
जीवन्मुक्त (त्रि.) जीते जी संसार को छोड़ने वाला। आत्मा का साक्षात् करने वाला।
जीवस्थान (न.) जीव का स्थान। मर्मस्थान।
जीवा (स्त्री.) रोदा। पृथिवी। वचा। जल।
जीवातु (पुं.) अन्न। जीवन। मुर्दे को जीवित करने वाली औषधि।

जीवात्मन् (पुं.) देहाभिमानी जीव।
जीविका (स्त्री.) जीवन का उपाय। वृत्ति। रोजी। आजीविका।
जीवितेश (पुं.) यम। चन्द्रमा। सूर्य। प्रिय। स्वामी।
जीवोपाधि (पुं.) जीव की उपाधि। स्वप्न, जाग्रत्, सुषुप्ति अवस्था।
जु (क्रि.) जोर से चिल्लाना।
जुग् (क्रि.) त्यागना। छोड़ना।
जुगुप्सा (स्त्री.) निन्दा करना।
जुटिका (स्त्री.) शिखा। जुटे हुए बाल।
जुड् (क्रि.) बाँधना। जाना।
जुत् (क्रि.) चमकना।
जुन् (क्रि.) गति। जाना।
जुष् (क्रि.) प्रसन्न होना।
जुष्ट (न.) जूठा। सेवित।
जुहू (स्त्री.) होम करने का पात्रविशेष। श्रुवा।
जूति (स्त्री.) वेग। तेजी से चलना।
जूर् (क्रि.) बूढ़ा होना।
जूर्ति (स्त्री.) ज्वर। ताप। बुखार।
जूष् (क्रि.) मारना।
जृभ (क्रि.) मूँ खोलना। जमुहाई लेना।
जृम्भ (पुं.) जमुहाई।
जृम्भकास्त्र (न.) शत्रुदल में सुस्ती फैलाने वाला अस्त्र।
जॄ (क्रि.) बूढ़ा होना।
जेमन (न.) भोजन। खाना।
जेय (त्रि.) जीतने योग्य।
जै (क्रि.) क्षय होना। नाश होना।
जैत्र (त्रि.) विजयी। जीतने वाला। पारा। औषध। दवाई।
जैन (पुं.) अर्हत् का उपासक। जैनी।
जैमिनि (पुं.) व्यासशिष्य एक मुनि विशेष, जिसने वेद पर मीमांसा के सूत्र रचे हैं।
जैवातृक (पुं.) चन्द्रमा। औषध। कपूर। बड़ी उम्र वाला।
जोषम् (अव्य.) सुख। प्रशंसा। बड़ाई। चुपचाप। लाँघना।
जोषा (स्त्री.) नारी। स्त्री। औरत।
जोषित् (स्त्री.) नारी। स्त्री।
जोषिका (स्त्री.) कलियों का गुच्छा। स्त्री।
ज्ञप् (क्रि.) प्रसन्न करना।
ज्ञपित (त्रि.) जनाया गया। मारा गया।
ज्ञप्ति (स्त्री.) बुद्धि। जानना। सूचना।
ज्ञा (क्रि.) बोध होना। जानना।
ज्ञाति (पुं.) पिता के वंश में उत्पन्न। सपिण्ड। बिरादरी।
ज्ञान (न.) जानकारी। बोध।
ज्ञानयोग (पुं.) निष्ठाविशेष। ब्रह्म की प्राप्ति का उपाय।
ज्ञानवापी (स्त्री.) काशी में एक तीर्थ विशेष।
ज्ञानापोह (पुं.) विस्मरण। भूलना। ज्ञान का जाता रहना।
ज्ञानाभ्यास (पुं.) ज्ञान का अभ्यास।
ज्ञानिन् (त्रि.) तत्त्वज्ञानी। जानने वाला। यथार्थ बात को जानने वाला।
ज्ञानेन्द्रिय (न.) ज्ञान की इन्द्रिय। यथा-कान, आँख, नाम, जीभ, अन्तःकरण, मन।
ज्या (क्रि.) बूढ़ा होना।
ज्या (स्त्री.) रोदा। धनुष चढ़ाने की डोरी।
ज्यानि (स्त्री.) जीर्णत्व। बुढ़ापा। पुरातनत्व। हानि। नदी।
ज्यायस् (त्रि.) बहुत बुड्ढ़ा।
ज्युत् (क्रि.) चमकना।
ज्येष्ठ (त्रि.) बड़ा। सब की अपेक्षा बड़ा। अग्रज। बहुत अच्छा। (स्त्री.) गंगा। अलक्ष्मी। अठारहवाँ नक्षत्र।
ज्येष्ठतात (पुं.) पिता से बड़ा काका या चाचा।
ज्यैष्ठाश्रम (पुं.) गृहस्थाश्रम।
ज्यैष्ठी (पुं.) जेठ मास। ज्येष्ठा नामक चान्द्रमास।
ज्यैष्ठ्य (न.) ज्येष्ठत्व। बड़प्पन।
ज्योक् (अव्य.) अब। शीघ्र। प्रश्न।
ज्योतिरिङ्ग (पुं.) प्रकाश की भाँति चमकने वाला। खद्योत।
ज्योतिर्विद (पुं.) ज्योतिष विद्या जानने वाला। गणक।
ज्योतिश्चक्र (न.) सूर्य्यादि ज्योतिमण्डल। सत्ताइस नक्षत्र वाला राशिचक्र।

ज्योतिःशास्त्र (न.) ग्रह और नक्षत्र आदि की गति और स्वरूप का निश्चय कराने वाला शास्त्र।

ज्योतिष (न.) ग्रहादि की गति, स्थिति, आदि जानने वाला शास्त्रविशेष। वृद्धि। बढ़ती।

ज्योतिष्टोम (पुं.) यज्ञविशेष। जिसे सम्पन्न करने के लिये सोलह कर्मकाण्डी विद्वानों की आवश्यता होती है।

ज्योतिष्मत् (पुं.) सूर्य। प्लक्षद्वीप का एक पहाड़। मालकाङ्गनी लता। रात्रि। ज्योतिष वाला। चित्त की एक वृत्ति विशेष।

ज्योतिस् (पुं.) सूर्य। अग्नि। मैथी का शाक। आँख की पुतली। पदार्थ। नक्षत्र। प्रकाश। स्वयं प्रकाशमान। चैतन्य।

ज्योत्स्ना (स्त्री.) कौमुदी। चाँदनी। चन्द्रमा की किरन। चाँदनी रात।

ज्यौतिषक (पुं.) दैवज्ञ। गणक। ज्योतिषी।

ज्रि (क्रि.) दबाना। तिरस्कार करना।

ज्री (क्रि.) बूढ़ा होना।

ज्वर् (क्रि.) रोगी होना।

ज्वर (पुं.) ताप। बुखार।

ज्वरघ्न (पुं.) ताप दूर करने वाला। गिलोय। चिरायता।

ज्वरापहा (स्त्री.) बिल्वपत्र। ज्वरनाशक। बुखार दूर करने वाला।

ज्वरित (त्रि.) ज्वरयुक्त।

ज्वल् (क्रि.) चमकना। चलना।

ज्वलन (पुं.) वह्नि। आग। दीप्ति। चमकना। दाह। जलना।

ज्वलनाश्मन् (पुं.) सूर्यकान्तमणि।

ज्वलित (त्रि.) दग्ध। जला हुआ। उज्ज्वल। चमकीला।

ज्वाल (पुं.) आग की शिखा।

ज्वालजिह्व (पुं.) आग।

ज्वालामुखी (स्त्री.) दुर्गा का स्थान।

ज्वालावक्त्र (पुं.) शिव नाम। आग।

ज्वालिन् (त्रि.) शिव जी का नाम। जलता हुआ। चमकता हुआ।

झ

झ (पुं.) झंझावात। बृहस्पति। इन्द्र। ध्वनि। आवाज। नष्टद्रव्य। हिराई हुई वस्तु। बन्द करना।

झग-ति (अव्य.) शीघ्र। एक बार ही।

झकांर (पुं.) भौंरे की गुञ्ज।

झङ्कृति (स्त्री.) काँसे के बर्तन का शब्द।

झञ्झा (स्त्री.) एक प्रकार का शब्द। बड़ा वायु, जिसके साथ जल भी हो।

झट् (क्रि.) एकत्र होना।

झटिति (अव्य.) शीघ्र उसी समय। तत्क्षण।

झणत्कार (पुं.) नूपुर, कंकण आदि का शब्द।

झम्प (पुं.) वेगपूर्वक ऊपर से नीचे गिरना। कूदना।

झर (पुं.) झरना।

झर्च (क्रि.) कहना। घुड़कना।

झर्चर (पुं.) ढोल। कलियुग। नद विशेष। बाजा।

झल्लरी (स्त्री.) वाद्यविशेष। साफ। गीला। ढोल।

झष् (क्रि.) मारना। लेना। बन्द करना।

झष (पुं.) मच्छ। ताप। धूप। वन।

झषकेतु (पुं.) मछली का निशान वाला। कामदेव।

झाट (पुं.) लताच्छादित स्थान। फोड़ा को धोना।

झामक (न.) बहुत पकी हुई ईंट।

झिङ्गिनी (स्त्री.) वृक्षविशेष। उल्का।

झिली (स्त्री.) झींगुर।

झुण्ट (पुं.) स्तम्ब। झाड़ी।

झॄ (क्रि.) पुराना पड़ना। बूढ़ा होना।

झोंड़ (पुं.) सुपारी का वृक्ष।

झ्यु (क्रि.) जाना। डोलना।

ञ

ञ (पुं.) बैल। शुक्र। तिरछे हो कर गमन करना। संगीत। गाना। घर्घर शब्द। घुरघुराना।

ट

ट (पुं.) टङ्कार (धनुष की)। बौना। चतुर्थांश। शपथ। पृथिवी। नारियल की नरेरी।

टक् (क्रि.) बाँधना।
टक्कर (पुं.) शिव जी।
टगर (गु.) तिरछी आँख वाला। गड़बड़ी। क्रीड़ा।
टङ्क (क्रि.) बाँधना। जोड़ना। ढकना।
टङ्क (पुं.) कुदाली। कुल्हाड़ी। खड्ग। खड्ग की म्यान। उतार। कोप। अहंकार। अभिमान। टाङ्ग। दरार। दर्रा। बनैले सेव का वृक्ष। सुहागा। चाँदी का माप जो चार माशे होता है। अङ्कित मुद्रा।
टङ्कक (पुं.) चाँदी का रुपया। मोहर।
टङ्कन (पुं.) खार विशेष। सुहागा।
टङ्कटीक (पुं.) शिव जी का नाम।
टङ्कार (पुं.) धनुष के रोदे को खींच कर छोड़ने पर जो शब्द होता है उसे टङ्कार कहते हैं।
टङ्किका (स्त्री.) कुल्हाड़ी। कुदाली।
टट्टनी (स्त्री.) घरेलू छोटी छिपकली।
टट्टरी (स्त्री.) वाद्ययंत्रविशेष। हँसी की बात। झूठ। ढोल।
टट्टुर (पुं.) ढोल का शब्द।
टल् (क्रि.) गड़बड़ में पड़ना।
टाङ्क (सं.) मद्यविशेष।
टाङ्कर (पुं.) लम्पट। व्यभिचारी पुरुष।
टाङ्कार (सं.) झङ्कार। टङ्कार।
टार (पुं.) घोड़ा। बालमैथुनकारी।
टिक् (क्रि.) जाना। डोलना।
टिटि (ट्टि) भः (पुं.) टि टि बोलने वाली टिटीहरी चिड़िया।
टिप् (क्रि.) प्रेरणा करना। चलाना। फेंकना। ढालना।
टिप्पणी-नी (स्त्री.) टीका।
टीक् (क्रि.) जाना।
टीका (स्त्री.) कठिन पद्यों का सरल अर्थ अथवा भाषान्तर।
टु (सं.) सोना। वह जो इच्छानुसार अपना रूप बदल सके। कामदेव।
टुण्टक (गु.) छोटा। स्वल्प। दुष्ट। निर्दय। कठोर।
टेर-टेरक (पुं.) टेढ़ा। जिसकी दृष्टि तिरछी हो।
टोर (पुं.) छोटा। स्वल्प।
टुल् (क्रि.) गड़बड़ी में पड़ जाना।

ठ

ठ (पुं.) रव। चन्द्र अथवा सूर्य्य मण्डल। वृत्त। शून्य। पवित्रस्थान। मूर्त्ति देव। शिव जी का नाम।
ठक्कुर (पुं.) देवप्रतिमा। ठाकुर। प्रतिष्ठासूचक एक उपाधि। काव्यप्रदीप के ग्रन्थकार का नाम।
ठार (पुं.) पाला। बरफ।
ठालिनी (स्त्री.) पटका। कमरबन्द।

ड

ड (पुं.) शब्दविशेष। एक प्रकार का ढोल या मृदङ्ग। वाडवाग्नि। समुद्र की आग। भय। शिव। चाष पक्षी।
डक्कारी (सं.) चाण्डाल का बाजा। बीन। सारङ्गी या तम्बूरा।
डप् (क्रि.) एकत्र करना। इकट्ठा करना।
डम् (क्रि.) शब्द करना। बजाना।
डम (पुं.) डोम। नीच जाति।
डमर (पुं.) विप्लव। गदर। लड़ाई। शत्रु को भावभङ्गी और ललकार से डराना। डर कर भाग निकालना।
डमरु (पुं.) एक प्रकार का बाजा जो शिव जी को बड़ा प्रिय है। कापालिक सम्प्रदाय के शैवियों का वाद्ययंत्र।
डम्ब् (क्रि.) फेंकना। भेजना। देखना। आज्ञा देना।
डम्बर (गु.) प्रसिद्ध। (सं.) सभा। समूह। दिखावट। समानता। अहङ्कार।
डम्भ् (क्रि.) एकत्र करना।
डलक -डल्लक (न.) डलिया। डला।
डवित्थ (पुं.) लकड़ी का हिरन।
डाकिनी (स्त्री.) काली देवी की एक सहचरी।
डाकृति (स्त्री.) घण्टे का नाद। झालर का शब्द।
डामर (पुं.) इस नाम का शिवकथित एक तंत्रग्रन्थ है। (गु.) भयानक। आश्चर्यप्रद दृश्य कोलाहल। वर्णसंकर जाति विशेष।
डाहल (पुं.) देशविशेष के अधिवासी।

डाहुक (पुं.) जलकुक्कुट।
डिक्करी (स्त्री.) युवती।
डिङ्गर (पुं.) नौकर। गुण्डा। धूर्त्त। ठग। नीच पुरुष। मोटा आदमी। अपचार।
डिण्डिम (पुं.) छोटा ढोल। वृक्षविशेष।
डिण्डिर (पुं.) समुद्रफेन।
डित्थ (पुं.) काठ का बना हाथी। सुस्वरूप। श्यामवर्ण वाला। विद्वान्। सम्पूर्ण शास्त्रों के रहस्य को जानने वाला।
डिप् (क्रि.) एकत्र करना। फेंकना। डालना। भेजना। निर्देश करना।
डिव् (क्रि.) प्रेरणा करना। चलाना।
डिम् (क्रि.) मारना। चोटिल करना। घायल करना।
डिम (पुं.) दस प्रकार के दृश्य काव्यों अर्थात् नाटकों में से एक।
डिम्ब (पुं.) बच्चा। विप्लव। डर कर चीत्कार करना। अण्डा। गोला। गेंद। गोलाकार पुष्प। तिल्ली।
डिम्बिका (स्त्री.) दुश्चरित्रा स्त्री।
डिम्भ (पुं.) शिशु। बच्चा। बछड़ा। मूर्ख। मूढ़।
डी (क्रि.) उड़ना। आकाश में गमन करना।
डीन (न.) पक्षियों की उड़ान।
डुण्डुभ -म (पुं.) सर्पविशेष जो विषैला नहीं होता।
डुण्डुल (पुं.) छोटी जाति का उल्लू।
डुन्दुक (पुं.) जलपक्षी विशेष।
डोम (पुं.) चाण्डाल। नीचजातिविशेष।
डोर (पुं.) कलाई में बाँधने का डोरा। डोर। डोरी।
ड्वल् (क्रि.) मिलाना। संमिश्रण करना।

ढ

ढ (पुं.) शब्दविशेष। बड़ा ढोल। कुत्ते की पूँछ। कुत्ता। सर्प। निर्गुण।
ढक्का (स्त्री.) बड़ा ढोल। अन्तर्धान होने की क्रिया।
ढामरा (स्त्री.) हंस।
ढाल (न.) ढाल।
ढालिन् (पुं.) योद्धा जिसके पास ढाल हो।
ढुण्ढन (न.) ढूँढ़। खोज।
ढुण्ढि (पुं.) गणेश जी।
ढौल (पुं.) ढोल या मृगङ्ग।
ढौक् (क्रि.) जाना। समीप पहुँचना।
ढौकन (त्रि.) भेंट। चढ़ौती। घूस।

ण

संस्कृत भाषा में ऐसे शब्दों का अभाव ही समझना चाहिये जिसके आरम्भ में "ण" हो।
धातु पाठ में कुछ धातु हैं जो "ण" से लिखे जाते हैं। किन्तु वास्तव में वे "ण" से न लिखे जा कर "न" से लिखे जाते हैं। "ण" के साथ लिखे जाने का कारण यह है कि इससे यह सूचित होता है कि "न" कतिपय उपसर्गों के पूर्व आने से "ण" के साथ भी परिवर्तित होता है।
ण (पुं.) ज्ञान। निर्णय। भूषण। जल। जल का स्थान। बुरा मनुष्य। शिव। न। देना। भेंट।
णट् (क्रि.) भाव दिखा कर नाचना। मारना।
णद् (क्रि.) ऐसा शब्द करना जो समझ में न आवे।
णश् (क्रि.) छिपना। नाश होना।
णह् (क्रि.) बाँधना।
णिज् (क्रि.) शोधना। साफ करना।
णिस् (क्रि.) चूसना।
णी (क्रि.) पहुँचना। ले जाना।
णु (क्रि.) स्तुति करना। स्तव करना। प्रशंसा करना।

त

त (पुं.) पूँछ। गीदड़ की पूँछ। छाती। गर्भाशय। टोहनी। योद्धा। चोर। दुष्टजन। जातिच्युत। वर्वर। बौद्ध। रत्न। अमृत। छन्द में गणविशेष।
तक् (क्रि.) दुःखी होना। उड़ना। झपटना। हँसना। चिढ़ाना। सहन करना।
तक्र (न.) छाछ। माठा।
तक्ष् (क्रि.) काटना।
तक्षक (पुं.) बढ़ई। लकड़कटा। नाटक का मुख्य पात्र। विश्वकर्मा। नाग का नाम। कश्यप पुत्र।
तक्षन (पुं.) बढ़ई। लकड़हारा। विश्वकर्मा।
तक्षशिला (स्त्री.) सिन्ध देश की एक नगरी।

तगर (पुं.) एक पेड़ का नाम।
तङ्कन (न.) कष्ट सहित जीवन व्यतीत करना।
तच्छील (त्रि.) उस स्वभाव वाला कोई जीव।
तट् (क्रि.) ऊँचा होना।
तट (त्रि.) किनारा। तीर। नदी का गर्भ। शिव जी का नाम। क्षेत्र।
तटस्थ (त्रि.) तीरवर्त्ती। समीप का। उदासीन पुरुष।
तटाक (पुं.) कम जल वाला तालाब।
तटाग (पुं.) तालाब।
तटा-घात (पुं.) हाथी का सूँड़ ऊँची कर के उसे पटकना। कुञ्जरक्रीड़ा।
तटिनी (स्त्री.) नदी।
तडाग (पुं.) तालाब। हिरन फँसाने का फन्दा।
तड़ित् (स्त्री.) बिजली। दामिनी।
तडित्वत् (पुं.) बादल।
तण्डक (पुं.) झाग। बहुसमासयुक्त वाक्य। मायावी।
तण्डुल (पुं.) चावल।
तत् (अव्य.) हेतु। इसलिये। इस कारण।
तत (न.) वायु। हवा। वीणा। घिरा हुआ। फैला हुआ।
ततस्त्य (त्रि.) वहाँ का। वहाँ होने वाला।
तति (स्त्री.) श्रेणी। पंक्ति। पतीर। समूल। फैलाव।
तत्काल (पुं.) उसी समय। वर्त्तमान काल। हो रहा समय।
तत्कालधी (त्रि.) सिर पर आयी आपत्ति को निवारण करने की बुद्धि।
तत्क्रिय (त्रि.) अवैतनिक काम करने वाले।
तत्क्षण (पुं.) उसी समय। झट।
तत्त्व (न.) सच्चाई। निष्कर्ष। यथार्थरूप। परमात्मा। ब्रह्मत्व। नाचना। बजाना। गाना। चित्त। वस्तु। सांख्य के मतानुसार पच्चीस पदार्थ।
तत्पर (त्रि.) तद्गत। तैयार। सन्नद्ध।
तत्परायण (त्रि.) तदासक्त। उसी में लगा हुआ।
तत्पुरुष (पुं.) परमात्मा। समासविशेष।
तत्र (अव्य.) उस समय। उस जगह। वहाँ।
तत्रत्य (अव्य.) वहाँ होने वाला। वहाँ की वस्तु।
तत्रभवत् (त्रि.) पूज्य। पूजा के योग्य।
तथा (अव्य.) साम्य। वैसे ही। निश्चय।
तथाच (अव्य.) जैसा कि।
तथाहि (अव्य.) दृष्टान्त। उदाहरण।
तथ्य (न.) सत्य।
तद् (त्रि.) पहिले कहा हुआ।
तदा (अव्य.) उस समय। तब।
तदात्मन् (त्रि.) उस रूप वाला।
तदानीम् (अव्य) तब। उस समय।
तद्गत (त्रि.) तत्पर। किसी कार्य में लगा हुआ।
तदुगण (पुं.) अर्थालंकारभेद।
तद्धन (त्रि.) कृपण। सूम।
तद्धित (पुं.) उसके लिये हितकर। नाम के आगे लगने वाले प्रत्यय।
तद्वत् (अव्य.) उसके समान।
तन् (क्रि.) फैलना। विस्तृत होना।
तनय (पुं.) पुत्र। बेटा। बेटी। लता। बेल। सूरन। जिमींकन्द।
तनिमन् (पुं.) छुटाई। मिहीन। कोमलता।
तनु (स्त्री.) शरीर। देव। मूर्ति। आकार। (गु.) थोड़ा। बिरला। लटा। मिहीन।
तनुच्छाया (पुं.) शरीर की परछाई या शोभा। थोड़ी छाया वाला। बबूर का पेड़।
तनुत्र (न.) कवच।
तनुभस्त्रा (स्त्री.) नासिका। नाक।
तनुभृत (पुं.) जीव। शरीर को अपना मानने वाला।
तनुवार (न.) कवच। सन्नाह।
तनुस् (न.) शरीर। देह। काया।
तनूनपात् (पुं.) अग्नि। आग।
तनूरुह (न.) रोम। रोएँ। चिड़ियों के पर, जो शरीर पर उगें।
तञ्जू (क्रि.) सिकोड़ना।
तन्तु (पुं.)। ग्राह। सन्तान। सूत। तान।
तन्तुनाभ (पुं.) मकड़ी।
तन्तुनिर्यास (पुं.) ताल वृक्ष।
तन्तुपर्वन् (न.) यज्ञोपवीत धारण करने कराने का पर्व। श्रावणी पूर्णिमा। सलूनो।
तन्तुर (न.) ताँत वाला। मृणाल।
तन्तुवाप (पुं.) जुलाहा। कोरी।
तन्तुवाय (पुं.) जुलाहा। कोरी। कपड़ा। बिनने वाला।

तन्तुविग्रह (स्त्री.) केला।
तन्तुशाला (स्त्री.) सूत बिनने का घर।
तन्तुसन्तत (त्रि.) सिला हुआ कपड़ा।
तंत्र (न.) सिद्धान्त। निर्णय। औषध। कुनबा। प्रधान। बड़ा। जुलाहा। कोरी। परिच्छद। पराधीन हो कर काम करने वाला। हेतु। अर्थसिद्धकारी। ताँत। स्वराज्य चिन्ता। परिजन। नौकर। प्रबन्ध। शपथ। धन। घर। बोने का उपस्कर। कुल। वेद की शाखाविशेष। शास्त्रविशेष। शिव जी कथित शास्त्रविशेष।
तंत्रक (न.) नया कपड़ा।
तंत्रावाप (पुं.) जुलाहा। कोरी।
तंत्रिका (स्त्री.) गुर्च। गिलोय।
तंत्री (स्त्री.) वीणाविशेष। गिलोय। शरीर की नाड़ी। रस्सी। नदी। युवती।
तन्द्रा (स्त्री.) उँघाई। नींद।
तन्द्रालु (त्रि.) बहुत सोने वाला।
तन्मय (त्रि.) उसी में निवेशित चित्त वाला। उसी में लगा हुआ।
तन्मात्र (त्रि.) वही। उसी आकार का।
तन्वी (स्त्री.) बेलविशेष। कृशाङ्गी। कोमल प्रकृति की स्त्री। पतली कटि वाली स्त्री। छन्दविशेष।
तप् (क्रि.) जलाना। तपाना।
तपती (स्त्री.) सूर्य की स्त्री, जिसका नाम छाया है। एक नदी (तापती) सूर्य्यतनया, जिसके योग से कुरु तापत्य बोले जाते हैं।
तपन (पुं.) ताप। सूर्य। भिलावे का पेड़। नरकविशेष। गर्मी की ऋतु। मदार का पेड़। सूर्य्यकान्तमणि।
तपनतनय (पुं.) यम। यमुना। शमी।
तपनी (स्त्री.) गोदावरी।
तपनीय (न.) सोना। तपने योग्य।
तपस् (पुं.) माघ मास। शिशिर ऋतु। जनलोक के ऊपर का लोक। आलोचन। अपने आश्रम का शास्त्रविहित कर्मानुष्ठान। चान्द्रायण आदि व्रत। लग्न से नवम ग्रह।
तपस्य (पुं.) फागुन मास। कुन्द का पुष्प। तप में संलग्न।
तपस्या (स्त्री.) तप। व्रतचर्या।
तपस्विन् (त्रि.) तापस। तपस्वी। तप करने वाला। दीन। चिड़िया।
तपस्विनी (स्त्री.) तप करने वाली। दीना। दुःखिनी। जाटामांसी।
तपात्यय (पुं.) वर्षाकाल। वसकाला।
तपोधन (पुं.) तपस्वी। तपन नामक वृक्षविशेष।
तपोवन (न.) तपस्वियों के तपने का वन। तीर्थविशेष।
तप्तकुम्भ (पुं.) नरकभेद।
तप्तकृच्छ्र (न.) व्रतविशेष।
तम् (क्रि.) थक जाना। कष्ट उठाना।
तम (पुं.) तमोगुण। राहु। तमाल का वृक्ष।
तमसः (न.) अन्धकार। शोक। पाप। कार्याकार्य का विचार न करना। गुण विशेष। राहु।
तमस्विनी (स्त्री.) रात।
तमाल (पुं.) वृक्ष। तिलक, वरुण वृक्ष। खड्ग।
तमि (स्त्री.) अन्धेरे वाली। रात।
तमिस्र (न.) अन्धकार। अन्धेरा। कोप। गुस्सा। अज्ञान। अन्धकारमयी रजनी।
तमिस्रपक्ष (पुं.) अन्धेरा पक्ष।
तमोघ्न (पुं.) सूर्य। अग्नि। चन्द्र। बुद्ध। विष्णु। शिव।
तमोज्योतिस् (पुं.) जुगुनू। खद्योत।
तमोपह (पुं.) ज्ञान। सूर्य। चन्द्र। आग।
तरक्षु (पुं.) भेड़िया। मार्ग रोकने वाला।
तरङ्ग (पुं.) लहर।
तरङ्गिणी (स्त्री.) तरङ्ग वाली। नदी।
तरङ्गित (त्रि.) लहरों वाला। चञ्चल।
तरण (पुं.) डोङ्गा। स्वर्ग। (क्रि.)। तरना।
तरणि (पुं.) सूर्य। डोङ्गा। अकउआ। किरन। ताँबा। नौका। जिर्मीकन्द।
तरतम (त्रि.) न्यून, अधिक भाव वाला। अर्थ।
तरपणय (न.) नदी की उतराई। पार जाने का महसूल।
तरल (पुं.) हार। चपल। कामी। विस्तार। चमकीला। पनीला। मद्य। लस्सी।
तरवारि (पुं.) तलवार। शत्रु की गति को रोकने वाली।

तरस् (न.) जल। वेग।
तरसा (अव्य.) झट। अति शीघ्र।
तरस्विन् (पुं.) हवा। गरुड़। शीघ्रगामी। वीर।
तरि-री (स्त्री.) नाव। पिटारी। पलड़ा।
तरु-ष-खण्ड (पुं.) वृक्ष समूह या वृक्षों के टुकड़े।
तरुण (पुं.) अण्डी का पेट। जीरा। पुष्प विशेष। नया। युवा। फिर से उदित। गर्म। कोमल। सद्यः। युवती नारी।
तरुणज्वर (पुं.) सात दिन चढ़ा रहने वाला ज्वर। तुरन्त चढ़ा हुआ ज्वर। खूब चढ़ा हुआ बुखार।
तरुविलासिनी (स्त्री.) नवमल्लिका।
तर्क (पुं.) आकांक्षा। वितर्क। विचार। सम्भावना।
तर्क् (क्रि.) चमकना।
तर्कु (पुं.) यंत्रविशेष। बेलना। कातने का साधन।
तर्ज (क्रि.) झिड़कना।
तर्जनी (स्त्री.) अङ्गूठे के पास की उङ्गली।
तर्ण्य (पुं.) वत्स। प्रिय। सद्यःप्रसूत शिशु। गौ का हाल का ब्याना बच्चा।
तर्द (क्रि.) मारना।
तर्दू (स्त्री.) लकड़ी की कर्छी।
तर्पण (न.) प्रसन्न करना। पितृयज्ञ। उदकक्रिया। तृप्त करना।
तर्व् (क्रि.) जाना।
तर्ष (पुं.) अभिलाष।
तर्हि (अव्य.) तो। तदा। उस समय।
तल् (क्रि.) स्थिर होना। पूरा। करना। प्रतिज्ञा पूर्ण करना।
तल (पुं.न.) स्वरूप। निचला भाग। थपेड़। ताल का वृक्ष। तलवार की मुठिया। आधार और स्वभाव।
तलप्रहार (पुं.) थप्पड़ मारना। चनकटा मारना।
तलातल (न.) पाँचवाँ पाताल लोक।
तलित (न.) भुना मांस।
तलुन (पुं.) वायु। युवा। पट्ठा। (ी) युवती स्त्री।
तल्प (पुं.) खाट। सेज। दारा। स्त्री।
तल्लज (पुं.) प्रशस्त। बहुत अच्छा।
तष्ट (त्रि.) छोटा किया गया।
तष्टृ (पुं.) बढ़ई। विश्वकर्मा जातिविशेष।
तसु (क्रि.) सजाना। ऊपर फेंकना।
तस्कर (पुं.) चोर। दमनक पेड़।
ताच्छिल्य (न.) निर्दिष्ट स्वभाव वाला।
ताटस्थ्य (न.) उदासीन होना। पास होना।
ताडका (स्त्री.) राक्षसीविशेष। जो रामचन्द्र जी द्वारा मारी गयी थी।
ताड़नी (स्त्री.) चाबुक। हण्टर।
ताण्डव (न.) पुरुष का नाच। घासविशेष। जोर से नाचना।
ताण्डवप्रिय (पुं.) शिव।
तात (न.) पिता। पुत्र। दया। करने योग्य। काका। चाचा। पूजने योग्य।
तात्पर्य (न.) आशय। निष्कर्ष। अभिप्राय।
तादर्थ्य (न.) उसके लिये।
तादात्म्य (न.) अभेद। एक ही रूप वाला।
तादृक्ष (त्रि.) उस प्रकार का। उस जैसा।
तान (पुं.) एक धागा। कमल का डोरा। उच्चस्वर। फैलाव। विस्तार।
तांत्रिक (त्रि.) तंत्रशास्त्र को जानने वाला। ब्रह्मवादी।
ताप (पुं.) सन्ताप। गर्मी। शोक। कठिन। दुःख।
तापस (न.) तप करने वाला। दमनक वृक्ष।
तापसतरु (पुं.) उङ्गुदी का पेड़।
तापिञ्छ (पुं.) ताप दूर करने वाला पेड़। तमाल वृक्ष।
तापी (स्त्री.) विन्ध्य पर्वत की एक नदी जिसका वर्तमान प्रसिद्ध नाम तापती है।
तामरस (न.) पद्म। कमल। सोना। धतूरा। छन्द जिसके पाद में बारह अक्षर होते हैं।
तामस (पुं.) साँप। उल्लू। नीच। अविद्याग्रस्त। राहु की सन्तान। रात। जटामांसी।
तामस्र (पुं.) साँप। उल्लू। नीच। अविद्याग्रस्त। राहु की सन्तान। रात। जटामांसी।
तामिस्र (पुं.) अन्धेरे वाला। नरकविशेष। राक्षस। वस्तु को उल्टा दिखाने वाला अज्ञान।
ताम्बूल (न.) नागवल्ली का पत्ता। पान। गुवाक।
ताम्बूल-करङ्क (पुं.) पान का बिलहरा।
ताम्बूलिक (पुं.) पान बेचने वाला। तमोली।

ताम्र (न.) ताँबा। लाल रङ्ग।

ताम्रकर्णी (स्त्री.) पश्चिम दिशा की हथिनी। एक नदी।

ताम्रकार (पुं.) कसेरा।

ताम्रकूट (न.) तमाखू।

ताम्रचूड (पुं.) मुर्गा। कुक्कुट।

ताम्रपट्ट (न.) ताँबे का पटरा।

ताम्रपर्णी (स्त्री.) नदीविशेष।

ताम्रपल्लव (स्त्री.) मजीठ। लाल बेल वाली।

ताम्रबीज (पुं.) लाल बीज वाला।

ताम्रशिखिन् (पुं.) कुक्कुट। मुर्गा।

ताम्रसार (पुं.) ताँबे की भस्म। लाल चन्दन का बुरादा।

ताम्रिक (पुं.) एक जाति।

ताम् (क्रि.) पालन करना।

तार (पुं.) प्रेरणा। सञ्चालन। वानर विशेष। शुद्ध मोती। प्रणव (ओं)। देवी का प्रणव (ह्रीं)। तरना। तारा। पुलती। ऊँचा शब्द। निर्म्मल। महाविद्या विशेष। वृहस्पति की स्त्री।

तारक (पुं.) तारने वाला। मल्लाह। दैत्यविशेष। तारा। पुतली।

तारकजित् (पुं.) तारकासुर को जीतने वाला कार्तिकेय।

तारकित (न.) तारों वाला। आकाश।

तारतम्य (न.) न्यूनाधिक्य। थोड़ा बहुत। भेद। अन्तर।

तारापति (पुं.) तारा का स्वामी। शिव। चन्द्रमा। वृहस्पति। वाली। सुग्रीव।

तारापथ (पुं.) आकाश।

तारापीड (पुं.) चन्द्रमा। राजाविशेष।

ताराभ्र (पुं.) कपूर।

तारिणी (स्त्री.) तारने वाली। पार्वती। दूसरी महाविद्या।

तार्किक (पुं.) तर्कशास्त्री। नैयायिक पण्डित।

तार्क्ष्य (पुं.) तार्क्ष की औलाद। गरुड़। अरुण। साँप। घोड़ा। सोना। रथ।

तार्तीयक (न.) तीसरा। तृतीय।

ताल (पुं.) वृक्षविशेष। हड़ताल। देवी का सिंहासन। राग का माप। ताली बजाना। काँसे का बना हुआ बाजा। खड्ग की मूठ। ताला।

तालक (न.) ताला। हड़ताल।

तालध्वज (पुं.) बलभद्र। बलराम।

तालपत्र (न.) करनफूल। कान का भूषण।

तालवृन्त (न.) पंखा। बीजना।

तालाङ्क (पुं.) बलभद्र। बलदेव।

तालिक (पुं.) थप्पड़। हथेली।

तालु (न.) मुख में जीभ के ऊपर का भाग।

तालुजिह्व (पुं.) तालु ही जिसकी जिह्वा है। कुम्भीर। नक्र के जीभ न होने पर भी वह तालु ही से जिह्वा का काम लेता है।

तावत् (अव्य.) तब तक। इतना। निश्चय। प्रशंसा। वाक्य का भूषण। तब। इतना बड़ा।

तिक् (क्रि.) जाना।

तिक्त (पुं.) कसैला। खट्टा।

तिग्म (पुं.) तीक्ष्ण। तेज।

तिग्मरश्मि (पुं.) सूर्य्य। तेजस्वी।

तिघ् (क्रि.) हनन करना।

तिज् (क्रि.) क्षमा करना।

तितउ (पुं.) चलनी। छोटा छाता।

तितिक्षा (स्त्री.) क्षमाशीलता। सहन शीलता।

तितिक्षु (त्रि.) सहनशील। शीतादि सहने वाला।

तितिभ (पुं.) जुगनू। खद्योत। इन्द्रगोप।

तित्तिर-तितिर (पुं.) तीतर नामक पक्षी।

तिथ (पुं.) आग। प्रेम। समय। वर्षाऋतु। शरत्काल।

तिथि (पुं.स्त्री.) चन्द्रमान की गणना से दिनों की गिनती। पन्द्रह की संख्या।

तिथिक्षय (पुं.) जिसमें चनद्रमा की तिथि का नाश होता है। अमावास्या। तिथि नाश।

तिथिपत्री (स्त्री.) पञ्चाङ्ग। जन्त्री।

तिथिप्रणी (पुं.) चन्द्रमा।

तिनिश (पुं.) वृक्षविशेष।

तिन्तिड-डी (स्त्री.न.) इमली का पेड़। खट्टी चटनी।

तिन्दु-तिन्दुल, तिन्दुक (पुं.) वृक्ष विशेष। मापविशेष।

तिप् (क्रि.) छिड़कना। बून्दें टपकाना। छानना। उड़ेलना। चुआना। बचाना।

तिम् (क्रि.) भिगोना। नम करना।

तिमि (पुं.) ह्वेल जैसे शरीर की बड़ी मछली।

तिमिङ्गिल (पुं.) बड़ा भारी मच्छ जो तिमि को भी निगल जाता है।

तिमित (त्रि.) गीला।

तिमिर (न.) अन्धकार। एक प्रकार का नेत्ररोग। लोहे का चूरा।

तिमिरमय (पुं.) राहु की उपाधि। ग्रहण।

तिरयति (क्रि.) छिपाना। गुप्त रखना। बाधा देना। रोकना। जीतना।

तिरश्चीन (त्रि.) टेढ़ा हो गया।

तिरस् (अव्य.) अन्तर्धान छिपना।

तिरस्करणी (स्त्री.) परदा। कनात। अदृष्ट हो जाने की विद्या।

तिरस्कार (पुं.) अनादर। अपमान।

तिरोधा (क्रि.) अदृश्य होना। छिपना। जीतना। हटाना।

तिरोधान (न.) अन्तर्धान, छिपना। पिछौरा। बुरका। परदा।

तिरोहित (त्रि.) छिपा हुआ। ढका हुआ।

तिरोभाव (पुं.) छिपाव। ढकाव।

तिर्य्यक् (अव्य.) टेढ़ा। रुका हुआ। योनिविशेष। पशु, पक्षी, वनस्पति आदि।

तिल् (क्रि.) चीकन करना। चिकनाना।

तिल (पुं.) स्वनाम ख्यात वृक्षविशेष। तिली।

तिलक (पुं.) तिल का वृक्ष। घोड़ा विशेष। रोगविशेष। टीका जो मस्तक पर लगाया जाता है।

तिलकर (न.) तिली की छार। तिली का चूरा।

तिलकल्क (पुं.) तिली का चूरा। तिल की चटनी।

तिलकालक (पुं.) शरीर पर तिलों जैसा काला चिह्न। रोगविशेष।

तिलतैल (न.) तिल्ली का तेल।

तिलित्स (पुं.) बड़ा सर्प। अजगर।

तिलोत्तमा (स्त्री.) अप्सराविशेष।

तिल्य (न.) तिलों का खेत।

तिष्ठद्गु (अव्य.) गौओं के दुहे जाने का दूसरी जून का समय, घण्टा डेढ़ घण्टा रात बीते।

तिष्य (पुं.) पुष्य नक्षत्र। पौषमास। कलियुग। भाग्यवान्। पुष्यनक्षत्र के समय उत्पन्न।

तिष्य-केतु (पुं.) शिव की उपाधि।

तिष्यक (पुं.) पौष मास।

तिष्यफला (स्त्री.) कलियुग में भी जिसका फल हो। आँवला।

तीक् (क्रि.) जाना। डोलना।

तीक्ष्ण (न.) पैना। गर्म। गुस्सैल। कठोर प्रभावोत्पादक। हानिकारक। पैनी बुद्धि का। चतुर। उत्साही। भक्तिमान्। प्रतिकूल। मोक्षकामी। योगी।

तीक्ष्णकण्टक (पुं.) तेज काँटे वाला। धतूरा। इङ्गुदी वृक्ष। बाँस।

तीक्ष्णकन्द (पुं.) पलाण्डु।

तीक्ष्णगन्धा (पुं.) तेज गन्ध वाला। छोटी इलायची। जयन्ती।

तीक्ष्णपुष्प (पुं.) लौंग। केतकी।

तीक्ष्णशूक (पुं.) जौ।

तीक्ष्णायस (न.) फौलाद। लोहे की लेखनी। लोहविशेष।

तीम (क्रि.) गीला करना।

तीर् (क्रि.) पार होना। तैर जाना। पूरा करना। तै करना। ठीक ठाक करना।

तीर (न.) किनारा। तट। बाण। सीसा। जस्ता।

तीरु (पुं.) शिव।

तीर्ण (त्रि.) उत्तीर्ण। तैर गया। पार हुआ। दबाया गया। स्नान किया हुआ।

तीर्थ (न.) मार्ग। घाट। जलस्थान। पवित्रस्थली। मन्दिर। नहर। चिकित्सा। उपाय। प्रतिष्ठित। एवं पूज्य व्यक्ति। गुरु। श्रोत। उद्गमस्थान। यज्ञ। अमात्य। शिक्षा। उपदेश। हाथ के विशेष देश जो देव अथवा पितृकार्य में पवित्र माने जाते हैं। स्त्रियों का रज। योनि। दर्शन। आगम। आग। सरोवर।
"शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्।"

तीर्थकर (पुं.) शास्त्रोपदेश। हितोपदेश करने वाला। गौतम। कपिल। कणाद आदि। जैनियों के गुरु तीर्थंकर।

तीर्थदेव (पुं.) शिव।

तीर्थराज (पुं.) तीर्थों के राजा। मुख्यतीर्थ। प्रयागराज।

तीव् (क्रि.) मोटा होना। सुदृढ़ होना।

तीवर (पुं.) समुद्र। शिकारी। वर्णसङ्कर जातिविशेष।
तीव्र (पुं.) शिव। लोहा। गरम। असीम। सुदृढ़। यातना।
तीव्रवेदना (स्त्री.) अत्यन्त वेदना।
तु (अव्य.) किन्तु। परन्तु। पादपूर्तिकर। और। वही तो। इसको छोड़ कर। भी।
तु (क्रि.) अधिकार प्राप्त करना। सुदृढ़ होना। प्राप्त करना। उन्नति करना। परिपूर्ण करना। जाना। डोलना। चोटिल करना। घायल करना। मारना।
तुग्र्वा (स्त्री.) जल। पानी। यह वैदिक प्रयोगों में आता है।
तुङ्ग (पुं.) ऊँचा। लम्बा। बड़ा। मुख्य। दृढ़। विषयी (पुं.) ऊँचाई। पर्वत। शिखर। चोटी। बुधग्रह। गैंड़ा। नारियल का वृक्ष। राशिएँ (ज्योतिष की)। सिंहासन। बुद्धिमान् पुरुष। शिव की उपाधि।
तुङ्गबीज (पुं.) पारद। पाला।
तुङ्गभद्र (पुं.) मदचूर्णित हाथी। (ा) (स्त्री.) दक्षिण भारत की एक नदी का नाम जो कृष्णा नदी में गिरती है।
तुङ्गमुख (पुं.) गैंड़ा।
तुङ्गशेखर (पुं.) पहाड़।
तुङ्गी (स्त्री.) रात्रि। हल्दी।
तुच्र् (पुं.स्त्री.) सन्तान। औलाद। वैदिक प्रयोग।
तुच्छ (पुं.) रीता। रहित। व्यर्थ। हल्का। छोटा। त्यक्त। क्षुद्र। दीन। अभागा। (न.) भूसी रहित धान्य। तुष।
तुच्छद्रु (पुं.) एरण्ड वृक्ष।
तुज् (क्रि.) मारना। घायल करना।
तुट् (क्रि.) झगड़ा करना। झगड़ना। चोटिल करना।
तुटम (पुं.) चूहा। घूस।
तुटितुट (पुं.) शिव का नाम।
तुड् (क्रि.) तुच्छ समझना। अपमान करना।
तुण् (क्रि.) टेढ़ा करना। झुकाना। धोका देना। छलना। ऐंठना।
तुण्ड (क्रि.) दबाना।
तुण्ड (न.) मुख। चोंच। (सुअर की) थूँथनी।
तुण्डिका (स्त्री.) नाभि। टुड़ी।
तुण्डिकेरी (स्त्री.) कपास का पौधा। तालु की सूजन।
तुण्डिन् (पुं.) शिव जी के नादिया का नाम।
तुण्डिभ (गु.) बातूनी। बड़ी नाभि वाला।
तुत्थ् (क्रि.) प्रशंसा करना। ढकना। ओट करना। फैलाना।
तुत्थ (पुं.) अग्नि। एक प्रकार का अञ्जन। पत्थर। (ा) (स्त्री.) छोटी इलायची। नील का पौधा।
तुत्थक (पुं.) तूतिया।
तुद् (क्रि.) चोटिल करना। चुभोना। कुरेदना खेद करना। पीड़ा करना। तङ्ग करना। अत्याचार करना।
तुन्द (पुं.) पेट। तोंद।
तुन्दकूपी (स्त्री.) नाभि। टुड़ी।
तुन्न (पुं.) वृक्ष। पीड़ित। काटा गया।
तुन्नवोम (पुं.) कटे हुए को जोड़ने वाला।
तुम् (क्रि.) मारना। घायल करना।
तुमुल (पुं.) कलिवृक्ष। (गु) घबड़ाया हुआ। भम्भरिहा। शोर गुल मचाने वाला।
तुम्ब् (क्रि.) कष्ट देना। मारना।
तुम्ब (पुं.) कूष्माण्ड। तुम्बड़ी। तौ भी।
तुम्बरु (पुं.) गन्धर्वविशेष। वाद्ययंत्र विशेष। तमूरा।
तुर् (क्रि) शीघ्रता करना। पकड़ लेना। भागना।
तुरकिन् (पुं.) तुर्की। तुर्क देश का।
तुरक (पुं.) तुर्कदेशवासी। तुर्क।
तुरग (पुं.) घोड़ा। सात की संख्या। मन।
तुरी (स्त्री.) जुलाहे का यन्त्रविशेष।
तुरीय (त्रि.) चौथा। चार भाग वाला। आत्मा की चतुर्थ दशा। ब्रह्म।
तुरीयवर्ण (पुं.) शूद्र वर्ण।
तुरुष्क (पुं.) गन्धद्रव्यविशेष। तुरुक।
तुर्य (त्रि.) चौथा।
तुर्व् (क्रि.) मारना।
तुर्वसु (पुं.) ययाति राजा का पुत्र।
तुल् (क्रि.) तोलना। मापना।
तुलसी (स्त्री.) वृक्षविशेष। जो विष्णु को परम प्रिय है।

तुला (स्त्री.) तराजू। सादृश्य। माप। बड़ा पात्र। सातवीं राशि।
तुलाकोटि (स्त्री.) बिछिया। पायजेब। झाञ्झन। मापविशेष।
तुलाधार (त्रि.) बया। तोलने वाला।
तुलापुरुष (पुं.) सोलह प्रकार के महादानों में से एक प्रकार का दान।
तुलित (त्रि.) परिमित। मापा गया। समान किया गया।
तुल्य (त्रि.) बराबर। सादृश्य। समान।
तुल्ययोगिता (स्त्री.) अर्थालङ्कार का एक भेद।
तुवर (पुं.) एक प्रकार का धान। कसैले स्वाद का।
तुष् (क्रि.) प्रसन्न करना।
तुष (पुं.) बहेड़े का वृक्ष। धान का छिलका। भूसी।
तुषानल (पुं.) तिनकों की आग। प्राचीन समय में दण्ड का एक विधान था जिसे प्राणदण्ड दिया जाता उसके शरीर में घास लपेट कर बाँध दी जाती थी और फिर उसमें आग लगा कर वह जला डाला जाता था।
तुषार (पुं.) बर्फ। ओद। कुहासा। कपूर।
तुष्टि (स्त्री.) सन्तोष।
तुह् (क्रि.) मारना।
तुहिन् (न.) हिम। बर्फ। चन्द्रमा का तेज।
तुहिनांशु (पुं.) चन्द्रमा। चाँद।
तूण् (क्रि.) सिकोड़ना। भरना।
तूण-णी (पुं.स्त्री.) तरकस।
तूणीर (पुं.) तरकस।
तूर्ण (न.) शीघ्र। त्वरा वाला।
तूर्य्य (क्रि.) मारना। (न.) वाद्ययन्त्र विशेष। तुरही बाजा।
तूल् (क्रि.) भरना। पूर्ण करना।
तूल (पुं.न.) एक प्रकार का कपास। आकाश। तुन्द नामक वृक्ष।
तूलिका (स्त्री.) शय्या का साधन।
तूवर (पुं.) बेसींग वाली गौ। बेदाढ़ी मूँछ का पुरुष। कसैला रस।
तूष्णीक (त्रि.) चुप रहने वाला।
तूष्णीम् (अव्य.) मौन। चुपचाप।

तूस्त (न.) जटा। लट। धूर। महीन।
तृण् (क्रि.) खाना।
तृण (न.) तिनका। घास।
तृणकाण्ड (न.) तिन अथवा घास का ढेर।
तृणद्रुम (पुं.) नारियल। ताल। खजूर।
तृणधान्य (सं.) बिना जोती हुई भूमि में उत्पन्न धान। नीवार। धान्यविशेष।
तृणराज (पुं.) ताल का वृक्ष।
तृणौकस (न.) तिनकों का बना हुआ घर।
तृण्य (स्त्री.) तिनकों का ढेर।
तृतीय (त्रि.) तीसरा।
तृतीयप्रकृति (स्त्री.) हिजड़ा। नपुंसक।
तृतीया (स्त्री.) तीज।
तृतीयाकृत (त्रि.) तिगुना किया गया।
तृद् (क्रि.) अनादर किया गया।
तृन्ह (क्रि.) मारना।
तृप् (क्रि.) तृप्त होना।
तृप्ति (स्त्री.) पेट भर जाना। प्रसन्न होना। सन्तुष्ट होना।
तृफ् (क्रि.) प्रसन्न होना।
तृफला (स्त्री.) हर्र, बहेरा, आमला का संयोग तृफला कहलाता है।
तृष् (क्रि.) चाहना। तृष्णा करना।
तृषाभू (स्त्री.) क्लोम। हृदय का एक स्थान।
तृषित (त्रि.) प्यासा। चाह वाला।
तृष्णाक्षय (पुं.) मन को रोकना। चाह का नाश।
तृह (क्रि.) मारना।
तॄ (क्रि.) तरना। पार होना। उछलना। दबाना।
तेज् (क्रि.) तेज करना। पैना करना।
तेजःफल (पुं.) तेजबल का वृक्ष।
तेजस् (न.) उष्ण। अग्नि आदि द्रव्य। आग। प्रकाश। पराक्रम। वीर्य। घी। लगाने वाला। ज्योति। सूर्य। कान्ति (शरीर की)। सुवर्ण आदि धातु द्रव्य। पित्त। अपमान आदि का न सहना। घोड़ों का स्वाभाविक बल। ब्रह्म। सत्त्वगुण (सांख्यमतानुसार)।
तेजस्विनी (स्त्री.) तेजबल। ज्योतिष्मती बेल। तेज वाली स्त्री।

तेजीयस् (त्रि.) तेज वाला।
तेजोमय (त्रि.) ज्योतिर्मय। प्रकाशमय। प्रधान तेज वाला।
तेजोमात्रा (स्त्री.) सत्त्वगुण का अंश। इन्द्रियसमूह।
तेपृ (क्रि.) काँपना। गिरना।
तेम (पुं.) आर्द्रीभाव। गीला होना।
तेमन (न.) चूल्हाविशेष। भाजी। गीला करना।
तैजस (न.) तेज का विकार। घी। चमकीला। सूक्ष्म शरीर।
तैतिल (पुं.) गैंड़ा।
तैत्तिरीया (स्त्री.) यजुर्वेद की शाखा विशेष। कृष्णयजुः।
तैत्तिरीय (त्रि.) तैत्तिरीय शाखा का पढ़ने वाला या जानने वाला।
तैमिरिक (न.) पुरुष जिसकी आँख में जाला हो गया हो।
तैर्थिक (त्रि.) दर्शन शास्त्र का रचने वाला। कपिल कणाद प्रभृति।
तैल (न.) तेल।
तैलकार (पुं.) तेली।
तैलकिट्ट (न.) तेल का मैल। खली।
तैलङ्ग (पुं.) कर्णाटक, तैलङ्ग देश के वासी।
तैलफला (स्त्री.) इङ्गुदी का पेड़।
तैलम्पाता (स्त्री.) श्राद्ध। तैलमिश्रित।
तैलीन (त्रि.) तिलों का खेत।
तैष (पुं.) पूस मास। पौष मास की पूर्णिमा।
तोक (न.) अपत्य। सन्तान। पुत्र। बेटा। लड़की। बेटी।
तोटक (न.) छन्द जिसका बारह अक्षर का पाद होता है।
तोड् (क्रि.) अनादर करना। अप्रतिष्ठा करना। बेइज्जत करना।
तोत्र (न.) छड़ी। गौ हाँकने की साँटी। चाबुक। हण्टर। अंकुश।
तोदन (न.) मुख। मूँ। व्यथा। पीड़ा।
तोमर (पुं.) एक प्रकार का लोहे का डंडा जिससे लड़ाई में शत्रुसंहार करने के अर्थ काम लिया
तोयकाम (पुं.) पानी चाहने वाला। पानी का बेत।
तोयद (पुं.) बादल। मोथा। घास।
तोयधि (पुं.) समुद्र।
तोयसूचक (पुं.) मेड़क।
तोरण (पुं.न.) बाहिरी द्वार। द्वार का बाहिरी प्रदेश। गर्दन।
तोल (पुं.न.) तोलक। मापविशेष। एक तोला।
तौर्य्य (न.) मृदङ्ग तबला आदि बाजों का शब्द।
तौर्य्यत्रिक (न.) नाचना, गाना और बजाना तीनों काम।
तौलिक (पुं.) चित्रकार। मूर्ति बनाने वाला। मानचित्र। नकशा।
त्यज् (क्रि.) छोड़ना। दान देना।
त्यक्त (गु.) छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ
त्याग (पुं.) उत्सर्ग। छुड़ाव। पृथक्त्व। दान। उदारता।
त्यागिन् (त्रि.) दाता। शूर। वर्ज्जनशील। त्यागी। कर्मफल छोड़ने वाला।
त्याज्य (त्रि.) त्यागने योग्य। छोड़ने योग्य। बाहिर निकालने योग्य।
त्रक् (क्रि.) जाना।
त्रप् (क्रि.) लज्जित होना।
त्रपा (स्त्री.) लज्जा। कुलटा स्त्री। कुल। कीर्ति। यश।
त्रपु (न.) टीन। सीसा।
त्रपुटी (स्त्री.) छोटी इलायची।
त्रपुस (न.) राँगा। टीन।
त्रय (न.स्त्री.) तीनों का भाग। तीन भाग वाला। तीन संख्या वाला। वेदत्रयी। देवत्रयी। कुटुम्बिनी स्त्री। अच्छी बुद्धि।
त्रयीधर्म (पुं.) वेदत्रयी से विधान किया गया धर्म। वैदिक धर्म।
त्रयोदशन (त्रि.) तेरह। त्रयोदशी।
त्रस् (क्रि.) डरना। भय खाना।
त्रसरेणु (पुं.) सूर्य की किरण में व्याप्त परमाणु का छठवाँ अंश। सूर्य्य की स्त्री का नाम।
त्रस्त (त्रि.) भीत। डरा हुआ। चकित। हैरान। जल्दी। त्वरा।
त्रस्नु (त्रि.) डरपोंक। भीरु।

त्रापुष (त्रि.) राँगे अथवा टीन का पात्र।
त्रि (त्रि.) तीन।
त्रिंश (त्रि.) तीस का तीसवाँ।
त्रिक (न.) तीन का समुदाय। पीठ की हड्डी के नीचे का प्रदेश। त्रिफला। त्रिकटु (सोंठ, मद्य, मिरच)।
त्रिकक्कुद (पुं.) त्रिकूट पर्वत।
त्रिकाल (न.) भूत। भविष्य। वर्त्तमान।
त्रिकालज्ञ (पुं.) ज्योतिषी। सर्वज्ञ। सब कुछ जानने वाला।
त्रिकूट (पुं.) लङ्का जिस पर्वत पर बसी हुई है वह सुवेल पर्वत।
त्रिकोण (त्रि.) त्रिभुज। लग्न से नवाँ और पाँचवाँ स्थान।
त्रिगर्त (पुं.) तीन गढ़े। देशविशेष। उस देश के रहने वाले।
त्रिगुण (न.) रज, सत्त्व और तमस्।
त्रिगुणाकृत (त्रि.) तिगुना खींचा गया या जोता गया खेत आदि।
त्रिगुणात्मक (त्रि.) त्रिगुणमय। त्रिगुण रूप। (न.) अज्ञान। 'प्रधान' नामक तत्त्व।
त्रिजटा (स्त्री.) एक राक्षसी।
त्रितय (न.) तीन वस्तुओं का समूह। तीन।
त्रिदण्ड (न.) संन्यासियों का चिह्न।
त्रिदण्डी (पुं.) संन्यासीविशेष।
त्रिदश (पुं.) देवता।
त्रिदशाधिप (पुं.) इन्द्र। परमात्मा। विष्णु।
त्रिदशालय (पुं.) देवतों के रहने का स्थान। स्वर्ग।
त्रिदिव (पुं.) आकाश। स्वर्ग।
त्रिदोष (पुं.) सन्निपात की अवस्था, जब वात पित्त श्लेष्मा तीनों में दोष हो जाता है।
त्रिधा (अ.) तीन तरह। तीन टुकड़े।
त्रिधामा (पुं.) अग्नि। शिव। विष्णु।
त्रिनयन (पुं.) शिव (त्रि.) तीन आँख वाला। (स्त्री.) दुर्गा। क्रोधी।
त्रिनेत्र (पुं.) महादेव जी।
त्रिपथगा (स्त्री.) गंगा। तीन रास्तों से जाने वाली। मन्दाकिनी आदि नामों वाली।
त्रिपदी (स्त्री.) लताविशेष। एक वैदिक छन्द। हाथी के पैर बाँधने की साँकल। तिपाई। एक भाषा का छन्द।
त्रिपर्ण (पुं.) ढाक। बेल का वृक्ष।
त्रिपात् (पुं.) विष्णु। ज्वर।
त्रिपुट (पुं.) दोना। हथेली। धनुष। चमेली। छोटी इलायची। गोखरू।
त्रिपुण्ड्र (न.) मस्तक में भस्म की तीन लकीरों का तिलक। आड़ा तिलक।
त्रिपुर (पुं.) दैत्यविशेष। मयासुर के बनाये असुरों के तीन सोने चाँदी और लोहे के पुर, जिन्हें शिव जी ने बाण मार कर भस्म कर दिया।
त्रिपुरभैरवी (स्त्री.) देवीविशेष।
त्रिपुरारि (पुं.) शिव।
त्रिपुष्कर (पुं.) एक ज्योतिष का योग। (न.) पुष्करक्षेत्र।
त्रिफला (स्त्री.) हड़, बहेड़ा, आँवला।
त्रिभंगी (स्त्री.) एक प्रकार का भाषाछन्द।
त्रिभुज (न.) तीन कोने वाला क्षेत्र।
त्रिभुवन (न.) स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल-ये तीनों लोक।
त्रिमधु (न.) घी, मिश्री, शहद।
त्रिमार्गगा (स्त्री.) गंगा। आकाश। पृथ्वी और पाताल तीनों रास्तों से जाने वाली।
त्रिमूर्ति (पुं.) ब्रह्मा, विष्णु, शिव।
त्रियामा (स्त्री.) रात। हल्दी। नील। यमुना।
त्रियुग (पुं.) यज्ञपुरुष।
त्रिरात्र (न.) तीन रातें।
त्रिरुक्त (न.) तीन बार कह कर प्रतिज्ञा करना।
त्रिरेख (पुं.) शंख। (त्रि.) तीन रेखा वाला।
त्रिलोकी (स्त्री.) तीनों लोक। त्रिभुवन।
त्रिलोकेश (पुं.) विष्णु। शिव। सूर्य।
त्रिलोचन (पुं.) शिव।
त्रिवर्ग (पुं.) धर्म, अर्थ, काम। सत्त्व, रज, तम। आमदनी, खर्च और बढ़ती।
त्रिविक्रम (पुं.) वामन अवतार से रूप बढ़ाने वाले श्रीविष्णु। तीनों लोक नाप कर भी एक पाँव घटा रहने से त्रिविक्रम नाम हुआ।
त्रिविध (त्रि.) तीन तरह का।

त्रिविष्टपम् (न.) स्वर्ग।
त्रिवृत् (पुं.) मन, प्रणव। ओंकार।
त्रिवेणी (स्त्री.) प्रयाग में स्थित गंगा यमुना सरस्वती का संगमस्थल।
त्रिवेणु (पुं.) रथ का धुरा।
त्रिशंकु (पुं.) एक सूर्यवंशी राजा। टीड़ी। जुगनू। बिल्ली। पपीहा।
त्रिशिख (पुं.) एक राक्षस। बिल्वपत्र। (न.) त्रिशूल। किरीट मुकुट। (त्रि.) तीन नोकों वाला।
त्रिशिरा (पुं.) बुखार। कुबेर। राक्षस विशेष।
त्रिशूल (न.) तीन नोकों वाला अस्त्र।
त्रिशूली (पुं.) शिव।
त्रिष्टुप् (स्त्री.) एक वैदिक छन्द।
त्रिसन्ध्या (स्त्री.) सवेरे, दोपहर और शाम।
त्रिसवन (न.) त्रिकाल।
त्रिहायणी (स्त्री.) तीन बरस की गऊ। द्रौपदी।
त्रुटि (स्त्री.) लेश। संशय। जितनी देर में आँख झपकती है उतना समय। कमी। हानि। गलती।
त्रुटित (त्रि.) टूटा हुआ।
त्रेता (स्त्री.) सत्ययुग के वाद का (दूसरा) युग।
त्रेधा (अ.) तीन तरह। तीन रूप।
त्रैगुण्य (न.) संसार। तीन (सत्त्व, रज, तम) गुण।
त्रैमासिक (त्रि.) तीन महीने का।
त्रैराशिक (न.) गणितविशेष।
त्रैलोक्य (न.) त्रिलोकी।
त्रैवर्णिक (त्रि.) द्विज। ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्ण का।
त्र्यक्ष (पुं.) तीन नेत्र वाला। शिव।
त्र्यक्षर (पुं.) ओंकार।
त्र्यङ्गुल (न.) तीन अंगुल की माप।
त्र्यम्बक (पुं.) शिव। त्रिनेत्र। त्रिलोचन।
त्र्यम्बकसखा (पुं.) शिव का मित्र। कुबेर।
त्र्यहस्पर्श (पुं.) वह दिन जिसमें तीन तिथियों का समावेश हो जाय।
त्वक् (स्त्री.) खाल। छाल।
त्वक्सार (पुं.) बाँस। तेजपात। दालचीनी। गुर्व। (त्रि.) जिसमें केवल छाल ही छाल हो ऐसा वृक्ष अथवा प्राणी।
त्वक्सुगन्ध (पुं.) नारङ्गी।
त्वचा (स्त्री.) खाल। छाल।
त्वदीय (त्रि.) तुम्हारा।
त्वद्विध (त्रि.) तुम्हारे ऐसा।
त्वरा (स्त्री.) जल्दी। फुर्ती। शीघ्रता।
त्वष्टा (पुं.) विश्वकर्मा। १२ आदित्यों में से एक आदित्य। बढ़ई। चित्रा नक्षत्र।
त्वादृश (त्रि.) तुम्हारे ऐसा।
त्वाष्ट्र (पुं.) विश्वकर्मा का पुत्र। वृत्रासुर।
त्विष् (स्त्री.) शोभा। कान्ति। प्रकाश।
त्विषांपति (पुं.) सूर्यदेव।
त्सरु (पुं.) तलवार की मूठ। कब्जा।
त्सरुक (त्रि.) तलवार पकड़ने या चलाने में चतुर।

थ

थ (पुं.) पहाड़। बचाने वाला। रोगभेद। भयचिह्न। भक्षण। (न.) मंगल। साहस।
थुत्कार (पुं.) थूकने का शब्द।
थूथू (अ.) निन्दासूचक शब्द।
थैथै (अ.) नाच के समय मृदंग के बोल।

द

द (पुं.) यह समास के पीछे आता है। देना। उत्पन्न करना। काटना। नष्ट करना। पृथक् करना। भेंट। पहाड़। (स्त्री.) भार्य्या। गर्मी। पश्चात्ताप।
दंश् (क्रि.) डसना। काटना। डङ्क मारना।
दंश (पुं.) बनैली मक्खी। मर्म। गुप्त भाग। दोष (रत्न का)। दाँत। कवच। अङ्ग।
दंशन (न.) डसना। डङ्क मारना। कवच पहने हुए।
दंशित (त्रि.) कवच पहने हुए।
दंशेर (पुं.) हानिकारक।
दंष्ट्रा (स्त्री.) दाढ़।
दंष्ट्रिन् (पुं.) शूकर। साँप। कुत्ता आदि दाढ़ वाला।
दकं (न.) जल। जैसे "दकोदर"।
दक्ष् (क्रि.) उगना। बढ़ना। करना। चोटिल करना।

दक्ष (त्रि.) निपुण। पटु। कार्यकुशल। "नाट्ये च दक्षा वयम्"।

दक्षकन्या (स्त्री.) सती। दक्ष प्रजापति की कन्या। अश्विनी आदि नक्षत्र।

दक्षिण (पुं.) नायकविशेष। मध्य देश के दक्षिण वाला देश। शरीर का दाहिना भाग। सरल। दूसरे की इच्छानुसार चलने वाला। उदार स्वभाव।

दक्षिणतस् (अव्य.) दक्षिण दिशा या देश।

दक्षिणपूर्वा (स्त्री.) अग्निकोण।

दक्षिणमार्ग (पुं.) पितृमार्ग। मार्ग जिससे पितृलोक में जीव जाता है। तंत्र का विधानविशेष।

दक्षिणस्थ (पुं.) रथवान। सारथि।

दक्षिणा (स्त्री.) यमराज की दिशा। यज्ञान्त में कर्मसमाप्ति के अर्थ दिया जाने वाला द्रव्य। यज्ञपत्नी। प्रतिष्ठा। रुचि प्रजापति की कन्या।

दक्षिणाग्नि (पुं.) यज्ञीय अग्निभेद।

दक्षिणचार (पुं.) आचारविशेष।

दक्षिणात् (अव्य.) दक्खिन से।

दक्षिणापथ (पुं.) अवन्ती। दक्षिण दिशा का देश। दाहिनी ओर रास्ता।

दक्षिणामूर्त्ति (पुं.) शिव की मूर्त्ति विशेष।

दक्षिणायन (न.) कर्क संक्रान्ति से मकर राशि पर्यन्त जब सूर्य जाते हैं तब सूर्य का जो अयन बदलता है उसे दक्षिणायन कहते हैं। इस अयन में सूर्य छः मास रहते हैं।

दक्षिणावर्त्त (त्रि.) दाहिनी और घूमा हुआ। शंखविशेष।

दक्षिण्य (त्रि.) दक्षिणा के योग्य।

दग्ध (त्रि.) भस्म किया हुआ। जलाया हुआ।

दघ् (क्रि.) मारना। विनष्ट करना।

दण्ड (न.) लाठी। डण्डा। घोड़ा। सेना। साठ पल का कालविशेष। भूमि का माप विशेष। सूर्य का अनुचर। राजाओं की चौथी नीति।

दण्डका (स्त्री.) दण्डक वन के अन्तर्गत जनस्थान नामक स्थानविशेष।

दण्डकारण्य (न.) दण्डक नामक राजा का देश जो शुक्र के शाप से वन हो गया था। तीर्थविशेष।

दण्डधर (पुं.) यमराज। राजा। कुम्हार।

दण्डनायक (पुं.) कोतवाल। सिपाही।

दण्डनीति (स्त्री.) नीतिविशेष। फौजदारी की आईन।

दण्डपारुष्य (न.) स्मृतिकथित अठारह प्रकार के झगड़ों में से एक। राजाओं का दुर्व्यसनविशेष।

दण्डवत् (पुं.) दण्ड ले जाने वाला। बड़ी सेना वाला। दण्ड की तरह सतर खड़ा होने वाला। पसर कर प्रणाम करने वाला।

दण्डादण्डि (अवय.) लाठमलाठी।

दण्डाहत (न.) माठा। तक्र। छाछ।

दण्डिन् (पुं.) राजा। यमराज। द्वारपाल। सूर्य्य के पास बिचरने वाला। संन्यासी। चौथे आश्रम वाला। कविविशेष।

दत्त (त्रि.) दिया गया। रखा गया। छोड़ा गया। बारह प्रकार के पुत्रों में से एक। वैश्य की उपाधिविशेष। दत्तात्रेयी नामक भगवदवतार विशेष।

दत्ताप्रदानिक (न.) दी हुई वस्तु को पुनः ले लेने का झगड़ा। नारदकथित व्यवहारभेद।

दत्तात्मन् (पुं.) पुत्रविशेष।

दत्रिम (त्रि.) दत्तक पुत्र। गोद आया लड़का।

दद् (क्रि.) देना। धीरज बँधाना।

दद्रु (पुं.) दाद रोग। कछुआ।

दद्रुघ्न (पुं.) दाद को दूर करने वाली दवा।

दद्रुण (पुं.) दाद का रोगी।

दद्रू (पुं.) दाद।

दध् (क्रि.) देना। धारण करना।

दधि (न.) दही। एक प्रकार का दूध का विकार।

दधिकूर्चिका (स्त्री.) गर्म दूध में खट्टा दही डाल कर जो एक पदार्थ तैयार किया जाता है।

दधिसार (पुं.) दही का सार। मक्खन।

दधीचि (पुं.) अथर्व मुनि का औरस पुत्र। मुनि जिसकी हड्डी से वृत्र दैत्य के मारने को वज्र बनाया गया था।

दनु (स्त्री.) कश्यपपत्नी। दक्ष प्रजापति की कन्या। दानव माता। राक्षसमाता। दैत्यमाता।

दनुज (पुं.) असुर। दैत्य।

दन्त (पुं.) दाँत।

दन्तक (त्रि.) दातों में लगा हुआ। नागदन्त।
दन्तकाष्ठ (न.) दतवन। मुखारी। दन्तधावन।
दन्तच्छद (पुं.) होंठ।
दन्तधावन (पुं.) खदिर आर बकुल का पेड़। दतौन। दतवन।
दन्तपत्रक (न.) दाँत की तरह जिसके सफेद पत्र हों। कुन्दपुष्प। कुन्द का फूल।
दन्तवक्र (पुं.) बड़े बड़े दाँतों वाजा। श्रीकृष्ण जी का विरोधी राजाविशेष।
दन्तबीजक (पुं.) अनार। दाडिम।
दन्तालिका (स्त्री.) लगाम।
दन्तावल (पुं.) हाथी।
दन्तिन् (पुं.) दाँतों वाला। हाथी।
दन्तुर (त्रि.) ऊँचे दाँत वाला। नीची ऊँची जगह।
दन्त्य (त्रि.) दाँतों की सहायता से बोले जाने वाले अक्षर। दाँतों के लिये हितकर।
दन्दशूक (पुं.) साँप।
दम्भ् (क्रि.) चोटिल करना। छलना। धोखा देना।
दभ्र (गु.) छोटा। थोड़ा। (पुं.) समुद्र।
दम् (क्रि.) अधीन करना। अपने वश में करना।
दम (पुं.) बाहिर की वृत्तियों का रोकना दम कहलाता है। बुरे कामों से मन को हटाना। कीचड़। रोकना।
दमघोष (पुं.) शिशुपाल का पिता। चन्द्रवंशीय एक राजा।
दमयन्ती (स्त्री.) नल राजा की पत्नी। दमघोष की लड़की। भद्रमल्लिका।
दमित (त्रि.) रोकने वाला। सहने वाला। इन्द्रियों की वृत्तियों को अपने वश में करने वाला।
दमु-मू (पुं.) अग्नि। शुक्राचार्य।
दम्पती (पुं.) पति पत्नी। जोड़ा।
दम्भ (पुं.) कपट। छल। धूर्तता। पाप। अभिमान। घमंड।
दम्भोलि (पुं.) वज्र नामक अस्त्र। एक प्रकार का हथियार। योग की कष्टसाध्य मुद्राविशेष।
दम्य (पुं.) वयस्क। बोझा उठाने योग्य। बछड़ा। बैल। वश करने योग्य।

दय् (क्रि.) जाना। मारना। देना। पालन करना।
दया (स्त्री.) कृपा। किसी को दुःखी देख कर उसका दुःख दूर करने की इच्छा।
दयालु (त्रि.) दया वाला। कृपालु।
दयित (पुं.) पति। प्यारा।
दर (अव्य.) थोड़ा। डर। गढ़ा।
दरकाण्टिका (स्त्री.) शतावरी।
दरद् (स्त्री.) जलप्रपात। डर। पहाड़। बाण। हृदय। म्लेच्छजातिभेद। खस जाति।
दरिद्र (पुं.) निर्धन। धनरहित। दीन।
दरिद्रा (क्रि.) बुरी दशा को प्राप्त होना। गरीब होना।
दर्दुर (पुं.) बादल। मेंडक। बाजा विशेष। पहाड़। मिट्टी का पात्रविशेष। एक प्रकार के चावल।
दर्दू (स्त्री.) रोगभेद। एक प्रकार की बीमारी।
दर्प (पुं.) अहङ्कार। गर्व। अभिमान। घमण्ड। असारत्व। हिरन विशेष। छल।
दर्पक (पुं.) अभिमान उत्पन्न करने वाला। कामदेव।
दर्पण (पुं.) बट्टा। आदर्श। आईना। एक पर्वत का नाम।
दर्भ (पुं.) कुश आदि छः प्रकार की घास।
दर्भर (सं.) निज का कमरा।
दर्व (पुं.) हिंस्र। शैतान। सर्प का फन।
दर्वर (पुं.) गाँव का चौकीदार। पुलिस का अफसर। द्वारपाल।
दर्वरीक (पुं.) इन्द्र की उपाधि। एक प्रकार का बाजा। वायु। पवन।
दर्विक-का, (स्त्री.) कलछी। चमचा। चंमच।
दर्वी-र्वि (स्त्री.) कलछी। चमचा। सर्प का फैला हुआ फन।
दर्वीकर (पुं.) साँप। सर्प।
दर्श (पुं.) अमावास्या तिथि। यज्ञविशेष। "दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत-" श्रुतिः। देखना। देखने वाला।
दर्शक (पुं.) आये हुओं को राजा का दर्शन कराने वाला।
दर्शन (न.) आँख। स्वप्न। बुद्धि। धर्म। शीशा। शास्त्रविशेष।
दर्शनीय (त्रि.) देखने योग्य। मनोहर।

दर्शयितृ (त्रि.) द्वारपाल। दरवान।

दलृ (क्रि.) फूट जाना। बीच से फट जाना। दरार होना।

दल (न.) टुकड़ा। मियान। पत्ता। बादल। तमाल वृक्ष। आधा। अस्त्र की धार। सेना का भाग। मिलावट।

दलप (पुं.) अस्त्र। सुवर्ण।

दल्म (पुं.) पहिया। छल। जाल। कपट।

दल्मि (पुं.) इन्द्रि की उपाधि। वज्र।

दलिक (पुं.) लकड़ी का टुकड़ा। शहतीर। तख्ता।

दलित (त्रि.) तोड़ा गया। टूटा हुआ। तड़का हुआ। कुचला हुआ। रुँधा हुआ। प्रस्फुटित। प्रकट।

दवृ (क्रि.) जाना।

दव (पु.) वन। जङ्गल। वन की आग। गर्मी। ज्वर। पीड़ा।

दवथु (पुं.) गर्मी। अग्नि। पीड़ा। चिन्ता। कष्ट। आँख की सूजन।

दवाग्नि (पुं.) वन की आग। दावानल।

दविष्ठ (त्रि.) बहुत दूर।

दशृ (क्रि.) चमकना। डसना। काटना।

दशक (न.) दस की संख्या।

दशकण्ठ (पुं.) रावण। दशकण्ठ वाला।

दशतृ (पुं.) दसों का समूह।

दशधा (अव्य.) दस प्रकार का।

दशन् (पु.) दाँत। शिखर। कवच। (क्रि.) डसना। दाँत से काटना।

दशकर्म (न.) दस प्रकार के संस्कार!

दशभुजा (स्त्री.) दुर्गा देवी।

दशम (त्रि.) दसवाँ।

दशमिन् (त्रि.) बहुत बूढ़ा।

दशमी (स्त्री.) दसमी तिथि। कामदेव की दसवीं अवस्था। बहुत बूढ़ी उम्र।

दशमीस्थ (त्रि.) अति वृद्ध। बहुत बूढ़ा। स्मृतिहीन।

दशमूल (न.) दस प्रकार की जड़ों का बना काढ़ा या चूर्ण।

दशरथ (पुं.) जिसका रथ दसों दिशाओं में घूम फिर आया हो। सूर्यवंशी एक राजा जिनके प्रसिद्ध पुत्र श्रीरामचन्द्र जी थे।

दशहरा (स्त्री.) जो दश जन्म के अर्जित पापों को नष्ट करे। गंङ्गा का जन्मदिन। जेठ मास की शुक्ला दशमी। विजया दशमी। कुआँर और चैत्र के शुक्ल रक्ष की दशमी।

दशा (स्त्री.) अवस्था। आँचल। जवानी। बालावस्था। वृद्धावस्था। ज्योतिष में ग्रह और योगिनी की दशा।

दशाकर्ष (पुं.) दीवा। आँचल।

दशार्ण (पुं.) देशविशेष। एक नदी का नाम।

दशार्ह (पुं.) राजा यदु का देश। उस देश के रहने वाले।

दशावतार (पुं.) दस अवतार वाला। विष्णु।

दशाश्व (पुं.) दस घोड़ों के रथ वाला। चन्द्रमा।

दशाश्वमेधिक (पुं.) जहाँ ब्रह्मा ने दस अश्वमेघ यज्ञ किये हैं। काशी वा प्रयाग में स्थान विशेष।

दशाह (पुं.) दस दिन। दसवाँ दिन।

दशेन्धन (पुं.) दीपक, चिराग।

दष्ट (त्रि.) काटा गया। डँसा गया।

दस्यु (पुं.) चोर। शत्रु। बड़ा साहसी।

दस्र (पुं.) गधा। अश्विनीकुमार।

दहन (पुं.) अग्नि। बहेड़ा। कबूतर।

दहर (पुं.) मूसा। चाँदी। सोना गलाने की घरिया। थोड़ा। सूक्ष्म। हृदय।

दह (पुं.) दावानल। हृदय के भीतर की अग्नि।

दा, (क्रि.) दान।

दाक (पुं.) यजमान। दाता।

दाक्षायणी (स्त्री.) सती। शिव की स्त्री।

दाक्ष्याय्य (पुं.) गिद्ध।

दाक्षिणात्य (त्रि.) दक्खिनी। दक्षिण दिशा का। नारियल।

दाक्षिण्य (न.) अनुकूलता।

दाक्षी (स्त्री.) व्याकरणाचार्य पाणिनि की माता।

दाक्ष्य (न.) दक्षता। निपुणता।

दाघ (पुं.) घाम। उष्णता।

दाड़क (पुं.) दन्त।

दाड़िम (पुं.) अनार। इलायची।

दाड़िम्ब (पुं.) अनार।

दाढ़ा (स्त्री.) दाढ़। अभिलाषा। समूह।
दाण्डा (स्त्री.) पटेबाजी का खेल।
दात (त्रि.) कटा। शुद्ध। साफ।
दाता (त्रि.) दानी। देने वाला।
दात्यूह (पुं.) चातक। जलकाग। मेघ।
दात्र (न.) कुल्हाड़ी। आरी।
दान (न.) हाथी का मदजल। पालन। देना। सफाई।
दानक (न.) निन्दित दान।
दानपति (पुं.) अक्रूर। सदा देने वाला।
दानव (पुं.) असुर।
दानवारि (पुं.) देवता लोग। इन्द्र विष्णु।
दानशील (त्रि.) स्वाभाविक दानी।
दानशौण्ड (त्रि.) दानशूर। उदार।
दान्त (त्रि.) जितेन्द्रिय।
दापित (त्रि.) दिलाया गया। दण्डित। वश किया गया।
दाम (स्त्री.न.) रस्सी। माला। लड़।
दामिनी (स्त्री.) बिजली।
दामोदर (पुं.) श्रीकृष्ण।
दाम्भिक (त्रि.) पाखण्डी।
दाय (पुं.) दहेज। बाप दादे की सम्पत्ति। विरसा। बँटने की जायदाद।
दायभाग (पुं.) बाप दादे की सम्पत्ति का हिस्सा बाँट।
दायाद (पुं.) पुत्र। सगोत्र। सम्बन्धी।
दारक (पुं.) बालक। पुत्र। शूकर।
दारकर्म (न.) विवाह।
दारण (न.) फाड़ना।
दारद (पुं.) विष। पारा। हींग। समुद्र।
दारा (नित्य पुं.) स्त्री। भार्या।
दारिका (स्त्री.) बालिका।
दारिद्र्य (न.) दरिद्रता। गरीबी।
दारी (स्त्री.) बेवाँई।
दारु (न.) पीतल। लकड़ी। देवदारु। कारीगर।
दारुक (पुं.) कृष्ण का सारथी।
दारुका (स्त्री.) कठपुतली।
दारुण (त्रि.) भयानक। घोर।
दारुसार (न.) चन्दन। लकड़ी के भीतर का चार चूर्ण। बुरादा।
दारुसिता (स्त्री.) दालचीनी।
दार्दुर (न.) दक्षिणावर्त शंख।
दार्वट (न.) सलाह करने का स्थान। कचहरी।
दार्वण्ड (पुं.) मयूर।
दार्वाघाट (पुं.) कठफोरवा पक्षी।
दार्वी (स्त्री.) लकड़ी की।
दाल (पुं.) कोदौ। मधुविशेष।
दाल्भ्य (पुं.) एक मुनि।
दाव (पुं.) जंगल की आग। वन।
दावानल (पुं.) दाव। वन में लगी हुई आग। दवाड़।
दाश (पुं.) धीवर। मल्लाह।
दाशरथ-थि (पुं.) दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण, भरत ओर शत्रुघ्न।
दाशार्ह (पुं.) श्रीकृष्ण। विष्णु।
दाशेयी (स्त्री.) वेदव्यास की माता।
दाशेरक (पुं.) मालवा देश।
दाश्व (पुं.) दाता।
दास (पुं.) नौकर। गुलाम। शूद्र।
दासकर्म (न.) नौकरी। गुलामी। सेवा। टहल।
दासी (स्त्री.) टहलुई। चाकरानी।
दासेय (पुं.) दास का लड़का।
दासेर (पुं.) ऊँट। धीवर।
दास्य (न.) सेवकाई।
दास्र (न.) अश्विनी नक्षत्र।
दाह (पुं.) जलन। जलना।
दाहज्वर (पुं.) ज्वरविशेष।
दाहन (न.) जलाना।
दाहसर (पुं.) मसान।
दिक्क (पुं.) बीस वर्ष का हाथी।
दिक्कर (पुं.) नौजवान।
दिक्पति (पुं.) इन्द्र आदि १० दिक्पाल।
दिक्पाल (पुं.) दिशाओं के स्वामी।
दिक्शूल (न.) भिन्न २ दिशाओं की यात्रा में निषिद्ध भिन्न २ दिन।
दिगन्त (पुं.) दिशा का छोर।

दिगम्बर (त्रि.) नंगा। (पुं.) शिव। बौद्ध भिक्षु विशेष। अन्धकार।
दिग्गज (पुं.) ऐरावत आदि आठ दिशाओं में पृथ्वी के रक्षक दिग्गज। गजराज।
दिग्दर्शन (न.) कंपास। इशारा।
दिग्दाह (पुं.) सूर्यास्त के समय कभी २ दिखने वाली आकाश की लड़ाई।
दिग्ध (पुं.) विष-बुझा तीर। आग। स्नेह। प्रबन्ध। (त्रि.) लिपा हुआ।
दिग्विजय (पुं.) बल या विद्या से सब दिशाओं को जीत लेना।
दिङ्मात्र (न.) एक देश। एक हिस्सा।
दिति (स्त्री.) दैत्यमाता। कश्यप ऋषि की स्त्री।
दितिज (पुं.) दैत्य।
दित्सा (स्त्री.) देने की इच्छा।
दिदृक्षा (स्त्री.) देखने की इच्छा।
दिधिषाय्य (पुं.) मदिरा।
दिधिषु (पुं.) दुबारा ब्याही गई स्त्री का पति।
दिधिषू (स्त्री.) दुबारा ब्याही गई स्त्री।
दिन (न.) दिन।
दिनकर (पुं.) सूर्य।
दिनक्षय (पुं.) तिथि का घट जाना।
दिनपति (पुं.) सूर्य।
दिनमणि (पुं.) सूर्य।
दिनमुख (न.) प्रातःकाल। सवेरा।
दिनान्त (पुं.) सायंकाल।
दिनावसान (नं.) सायंकाल।
दिलीप (पुं.) सूर्यवंश का एक राजा।
दिलीर (न.) धरती का फूल।
द्यौः (स्त्री.) स्वर्ग। आकाश।
दिव (न.) स्वर्ग। आकाश। दिन। जंगल।
दिवस (पुं.न.) दिन।
दिवस्पति (पुं.) इन्द्र।
दिवा (अ.) दिन।
दिवाकर (पुं.) सूर्य। मदार का वृक्ष। कौआ।
दिवाकीर्ति (पुं.) नाई। चंडाल।
दिवाटन (पुं.) कौआ।
दिवान्ध (पुं.) उल्लू पक्षी।
दिवान्धकी (स्त्री.) छछूँदर।
दिवाभीत (पुं.) चोर। चन्द्रमा। उल्लू पक्षी।
दिवामणि (पुं.) सूर्य।
दिवामध्य (न.) दोपहर।
दिवास्वाप (पुं.) दिन को सोना।
दिविज (त्रि.) स्वर्गीय। स्वर्ग में होने वाला।
दिविषद (पुं.) देवता।
दिवोदास (पुं.) चन्द्रवंशी काशी का राजा।
दिवौकस (पुं.) देवता।
दिव्य (न.) लवंग। चन्दन। कसम। (पुं.) गूगल। जव। (त्रि.) अद्भुत। अलौकिक। मनोहर। सुन्दर।
दिव्यस्त्री (स्त्री.) अप्सरा। सुन्दर स्त्री।
दिव्या (स्त्री.) आँवला। सतावर। ब्राह्मी। सफेद दूब। हड़।
दिशा (स्त्री.) पूर्व आदि चार दिशाएँ।
दिष्ट (न.) भाग्य। समय।
दिष्टान्त (पुं.) मरण।
दिष्ट्या (अ.) हर्ष। मंगल। बड़े भाग से।
दिष्णु (त्रि.) दाता।
दीक्षा (स्त्री.) नियम। मन्त्र लेना। संस्कार।
दीक्षागुरु (पुं.) मन्त्रोपदेश करने वाला गुरू।
दीक्षित (त्रि.) दीक्षा ले चुका।
दीधिति (स्त्री.) किरण।
दीन (त्रि.) दुर्गति को प्राप्त। दरिद्र। डरा हुआ। शोचनीय।
दीनार (पुं.) सोने का गहना। सोने का सिक्का (मोहर)। ३२ रत्ती सोना।
दीप (पुं.) दीवा। एक राग। काव्य का एक अर्थालंकार। बाज पक्षी। कुंकुम। एक छन्द।
दीपकूपी (स्त्री.) पलीता।
दीपध्वज (पुं.) काजल।
दीपन (पुं.) प्याज। तगर की जड़। केसर। मेथी।
दीपमालिका (स्त्री.) दीवाली। दीपकों की माला।
दीप्त (पुं.) सिंह। नींबू। (न.) सुवर्ण। हींग। (त्रि.) प्रकाशित।
दीप्तजिह्वा (स्त्री.) स्यारी।
दीप्तलोचन (पुं.) बिलाव।

दीप्ताग्नि (पुं.) अगस्त्य मुनि।
दीप्ति (स्त्री.) प्रभा। कान्ति। चमक।
दीप्यमान (त्रि.) प्रकाशमान। चमक रहा।
दीयमान (त्रि.) दिया जा रहा।
दीर्घ (पुं.) ऊँट। दो मात्रा का अक्षर (त्रि.) लम्बा।
दीर्घकण्टक (पुं.) बबूल
दीर्घकण्ठ (पुं.) बगला
दीर्घकेश (पुं.) भालू। रीछ।
दीर्घग्रन्थि (पुं.) ईख। गन्ना।
दीर्घजिह्व (पुं.) सर्प।
दीर्घतरु (पुं.) ताड़ का वृक्ष।
दीर्घदर्शी (पुं.) पण्डित। दूरदर्शी। दूरअन्देश। गिद्ध। भालू।
दीर्घनाद (पुं.) शंख।
दीर्घनिद्रा (स्त्री.) मरण।
दीर्घपल्लव (पुं.) सन का पेड़।
दीर्घपादप (पुं.) लंबा पेड़। सन का पेड़। सुपारी का पेड़।
दीर्घफला (स्त्री.) काली दाख।
दीर्घरागा (स्त्री.) हल्दी।
दीर्घसत्र (न.) यज्ञविशेष। बहुत दिनों में होने वाला यज्ञ।
दीर्घसूत्र (पुं.) } ढिलंगा। किसी काम में बहुत
दीर्घसूत्री } बहुत देर लगाने वाला।
दीर्घायु (पुं.) मार्कण्डेय ऋषि। (त्रि.) चिरजीवी। बड़ी उमर वाला।
दीर्घिका (स्त्री.) बावली।
दीर्घिमा (स्त्री.) लम्बाई।
दीर्ण (त्रि.) फटा हुआ। डरा हुआ।
दुःख (न.) पीड़ा। कष्ट। तकलीफ।
दुःखग्राम (पुं.) संसार।
दुःखत्रय (न.) आध्यात्मिक। आधिभौतिक और आधिदैविक संज्ञक तीन दुःख।
दुःखवसान (पु..) दुःख का अन्त।
दुःखित (त्रि.) दुखिया। दुःख पाया हुआ।
दुःखी (त्रि.) दुखिया। दुःख पाया हुआ।
दुःशकुन (न.) असगुन।
दुःशासन (पुं.) दुर्योधन का छोटा भाई। धृतराष्ट्र का लड़का।
दुःशील (त्रि.) बुरे स्वभाव का। बदमिजाज।
दुःसह (त्रि.) असह्य।
दुःसाक्षी (त्रि.) बुरा गवाह। झूठा गवाह।
दुःसाधी (पुं.) द्वारपाल।
दुःसाध्य (त्रि.) कष्टसाध्य। कठिनाई से होने वाला।
दुःस्थ (त्रि.) दुर्गति में पड़ा
दुःस्थित हुआ। दीन। मूर्ख।
दुःस्पर्श (त्रि.) जो छुआ न जा सके।
दुकूल (न.) महीन कपड़ा। रेशमी वस्त्र। दुपट्टा। चिकना। वस्त्र।
दुग्ध (न.) दूध। अमृत। (त्रि.) दुहा गया।
दुग्धफेन (पुं.) दूध का फेना। झाग।
दुग्धिका (स्त्री.) दूधी नाम की घास।
दुन्दुभि (पुं.) नगाड़ा। एक राक्षस। विष। (स्त्री.) पाँसे।
दुम्बक (पुं.) दुम्म। भेड़ा।
दुर् (अ.) निषेध। दुष्ट। दुःख। निन्दा।
दुरक्ष (पुं.) कपट के पाँसे।
दुरतिक्रम } (त्रि.) दुस्तर। जिसे नाँघना
दुरत्यय } या पार जाना कठिन हो।
दुरदृष्ट (न.) दुर्भाग्य। बदकिस्मती।
दुरधिगम (त्रि.) दुःख से जो मिल सके।
दुरन्त (त्रि.) बुरे फल वाली जुआ, मद्यपान, शिकार आदि की आदतें। दुर्ज्ञेय। अथाह।
दुराग्रह (पुं.) बुरा हठ। व्यर्थ हठ।
दुराचार (पुं.) दुष्ट आचार। बुरा चलन।
दुरात्मा (त्रि.) नीच। दुष्ट।
दुराधर्ष (त्रि.) दुष्प्राप्य। जिस पर हमला करना कठिन हो।
दुराप (त्रि.) दुर्लभ,
दुरारोह (त्रि.) जिस पर चढ़ना कठिन हो।
दुरासद (त्रि.) दुष्प्राप्य। दुर्धर्ष।
दुरित (न.) पाप।
दुरुक्त (न.) शाप। गाली।
दुरुह (त्रि.) बड़ी कठिनता से जो जाना जा सके।
दुरोदर (न.) जुआ। चौंसर।

दुर्ग (न.) गढ़। कोट। एक असुर।
दुर्गत (त्रि.) दुर्दशाग्रस्त।
दुर्गति (स्त्री.) दुर्दशा। दारिद्र्य। नरक।
दुर्गन्ध (पुं.) बदबू।
दुर्गम (त्रि.) जहाँ जाना कठिन हो।
दुर्गा (स्त्री.) देवी।
दुर्गाध्यक्ष (पुं.) सेनापति। सिपहसालार।
दुर्घट (त्रि.) जिसका होना बहुत ही कठिन हो।
दुर्जन (त्रि.) दुष्ट। बुरा आदमी।
दुर्जय (त्रि.) जिसे जीतना कठिन हो।
दुर्जर (त्रि.) जो कठिनता से जीर्ण हो।
दुर्जात (न.) संकट। असमंजस।
दुर्दर्श (पुं.) बड़े कष्ट से दिखलाई पड़ने वाला।
दुर्दान्त (पुं.) ऊधमी। उपद्रवी।
दुर्दिन (न.) बदली का दिन।
दुर्धर (पुं.) विष्णु। (त्रि.) जिसे धारण करना या पकड़ रखना कठिन हो।
दुर्द्धर्ष (त्रि.) जिसका तिरस्कार न हो सके। जो पकड़ा न जा सके।
दुर्नाम (न.) बदनामी।
दुर्बल (त्रि.) दुबला। कमजोर।
दुर्भग (त्रि.) अभागा।
दुर्भाग्य (न.) अभाग्य।
दुर्भिक्ष (न.) अकाल। कहत। सूखा।
दुर्मति (त्रि.) दुष्ट बुद्धि वाला। मूर्ख।
दुर्मना (त्रि.) उदास। घबड़ाया।
दुर्मर्षण (त्रि.) डाह रखने वाला। न सह सकने वाला।
दुर्मुख (पुं.) घोड़ा। बानर। एक दैत्य। (त्रि.) बुरे मुख वाला। अप्रिय। वचन बोलने वाला।
दुर्मेधा (त्रि.) कुबुद्धि वाला।
दुर्योधन (पुं.) धृतराष्ट्र का बड़ा लड़का।
दुर्लभ (त्रि.) दुष्प्राप्य।
दुर्वर्ण (न.) धोबी। रँगरेज। (त्रि.) बुरे रंग वाला। मैला।
दुर्वाक् (स्त्री.) दुष्ट वाणी।
दुर्वाच्य (न.) गाली आदि न कहने की बातें।
दुर्वाद (पुं.) बदनामी। निन्दा।
दुर्वासा (पुं.) ऋषिविशेष।
दुर्विज्ञेय (त्रि.) जो न जाना जा सके।
दुर्विध (त्रि.) दरिद्र। नीच। मूर्ख।
दुर्विनीत (त्रि.) ढीठ।
दुर्विभाव्य (त्रि.) अतर्क्य। अचिन्तनीय।
दुर्वृत्त (त्रि.) दुर्जन। दुष्ट।
दुर्हृद (त्रि.) दुष्ट हृदय वाला।
दुल् (क्रि.) ऊपर फेंकना। लुकाना।
दुलि-ली (स्त्री.) कमठी। मादा। कच्छप। मुनिविशेष।
दुश्चर्म्म (पुं.) बुरे चमड़े वाला। महापातक से उत्पन्न चिह्नों वाला।
दुश्च्यवन (पुं.) इन्द्र। च्यवन ऋषि के कोप से एव बार इन्द्र को च्युत होना पड़ा था।
दुष् (क्रि.) बदल जाना। वैर करना।
दुष्कर (न.) कठिनता से करने योग्य। आकाश।
दुष्कर्मन् (न.) पाप। पापी। बुरा काम। बुरे काम करने वाला।
दुष्कृत (न.) पाप। पापी।
दुष्ट (त्रि.) नीच। अधम। दुर्जन। कोढ़। दुर्बल। (ा) (स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री।
दुष्य-(ष्म)न्त (पुं.) चंद्रवंशी एक राजा। भरत राजा का पिता। शकुन्तला का पति।
दुःषम (पुं.) बुरा। भूला।
दुस् (उप.) इसे संज्ञा और क्रियाओं के पहले लगाने से उनका अर्थ बुरा, दूषित, दुष्ट, नीच, कठिन, कठोर आदि हो जाया करते हैं।
दुस्तर (त्रि.) कठिनता से पार होने योग्य।
दुह् (क्रि.) दुहना। निचोड़ना। वध करना। मारना।
दुहितृ (स्त्री.) बेटी। लड़की।
दू (क्रि.) दुःखी होना। कष्ट सहना।
दूत (पुं.) सँदेशा ले जाने वाला।
दूति-ती (स्त्री.) कुटनी।
दूत्य (न.) दूतपना।
दून (त्रि.) थका हुआ। तपा हुआ। दुःखित।
दूर (त्रि.) दूर। अगोचर। आँखों से परे।
दूरग (त्रि.) दूर तक फैला हुआ।
दूरद (पुं.) कड़ा।
दूरदर्शन (पुं.) दूर से देखने वाला। गीध।

दूरदर्शिन् (पुं.) पण्डित। दूर से देखने वाला।

दूर्वा (स्त्री.) एक प्रकार की घास जो घोड़ों को खिलाई जाती है। बहुत फैलने वाली। गणेशजी की पूजा की प्रधान और प्रिय सामग्री। रक्तशुद्धि करने वाली घास।

दूषण (पुं.न.) एक राक्षस जो रावण की मौसी का बेटा था और जनस्थान की चौकी पर जो रहता था। हानिकारक। दोष।

दूषिका (स्त्री.) आँख का कीचर।

दूषित (त्रि.) बुरा। दोषयुक्त। निन्दित।

दूष्य (न.) तम्बू। रुई। दूषण देने योग्य। (स्त्री.) हाथी की मादा बच्ची।

दृ (क्रि.) मारना। आदर करना।

दृक्छत्र (न.) पलक।

दृक्प्रसाद (पुं.) कुलत्था, इसका बना हुआ अञ्जन आँख में लगाने से नेत्र साफ होते हैं।

दृढ़ (न.) कड़ा। बहुत मोटा। गाढ़ा। सबल। लोहा।

दृढ़मुष्टि (पुं.) खड्ग। कृपण। सूम। कञ्जूस।

दृढ़व्रत (पुं.) दृढ़ प्रतिज्ञा वाला। पक्का नियमिष्ठ।

दृता (स्त्री.) जीरा।

दृति (पुं.) चमड़े की मसक। चरस। एक प्रकार की मच्छी।

दृन्भू (पुं.) राजा। वज्र। सूर्य्य। साँप। पहिया।

दृप् (क्रि.) कष्ट देना। भड़काना। प्रसन्न होना। घमण्ड करना। पागल होना।

दृप्त (त्रि.) गर्वीला। अहङ्कारी। घमण्डी।

दृफ् (क्रि.) कष्ट उठाना।

दृब्ध (त्रि.) गुथा हुआ। डरा हुआ।

दृभ् (क्रि.) गूँथना। गाँठना।

दृश-दृश् (क्रि.) देखना।

दृश (न.) नेत्र। आँख। दो की संख्या। साक्षी। जानने वाला।

दृशीका (स्त्री.) सूरत।

दृश्य (गु.) प्रत्यक्ष। नाटक का सीन।

दृश-(ष) द् (स्त्री.) पत्थर। सिल।

दृश-(ष)द्वती (स्त्री.) वैदिक साहित्य की एक नदी का नाम जो सरस्वती में गिरती है।

दृषत्कण (पुं.) चमकीला पत्थर। बिल्लौर पत्थर। पेबिल।

दृषद् (स्त्री.) चट्टान।

दृषन्नौ (स्त्री.) पत्थर की नौका।

दृष्ट (न.) देखा गया। लौकिक। अपनी अथवा शत्रु की सेना का भय। ज्ञान। बोध।

दृष्टकूट (न.) कूट प्रश्न। कठिन प्रश्न। पहेली।

दृष्टान्त (पुं.) उदाहरण। अर्थालंकार विशेष। मृत्यु। शास्त्र।

दृष्टि (स्त्री.) निगाह। दर्शन। बुद्धि। नेत्र। आँख। दो की संख्या। मानसिक व्यापार।

दृह् (क्रि.) बढ़ाना।

दे (क्रि.) पालन करना। बचाना।

देव् (क्रि.) खेलना।

देव (पुं.) अमर। स्वर्गीय। देवता। ब्राह्मण की उपाधि। इन्द्रिय। पूज्य। नाट्योक्ति में राजा।

देवक (पुं.) श्रीकृष्ण के मातामह (नाना) देवकी का पिता।

देवकी (स्त्री.) देवक राजा की बेटी। वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की मां।

देवकी-नन्दन (पुं.) श्रीकृष्ण।

देवकुसुम (न.) लौङ्ग। लवङ्ग।

देवकुल (न.) मन्दिर।

देवखात (न.) अकृत्रिम तालाब। जिसको देवताओं ने बनाया हो।

देवखातबिल (न.) गुहा। गुफा। देवताओं का खोदा हुआ छिद्र।

देवगायन (पुं.) गन्धर्व।

देवगुरु (पुं.) देवताओं का गुरु। बृहस्पति। कश्यप की उपाधि।

देवच्छन्द (पुं.) सौ लरों का हार।

देवतरु (पुं.) मदार। पारिजात। कल्पतरु। हरिचन्दन।

देवता (स्त्री.) इन्द्रादि देवता।

देवतुमुल (न.) दैवी उपद्रव। आँधी पानी।

देवदत्त (पुं.) देवता का दिया हुआ। देवता को अर्पण किया हुआ। अर्जुन का शङ्ख। जमुहाई उत्पन्न करने वाला वायु।

देवदारु (न.) एक वृक्ष।

देवदासी (स्त्री.) इन्द्रिय को मारने वाली। वेश्या। बनैला। तर्बूज।

देवदीप (पुं.) नेत्र।
देवदेव (पुं.) महादेव। शङ्कर।
देवन (पुं.) पाँसा। पाश का खेल चमक। स्तुति। व्यवहार। जुआ। जीतने की कामना।
देवनदी (स्त्री.) देवताओं की नदी। गङ्गा।
देवपति (पुं.) इन्द्र। देवताओं का स्वामी।
देवपथ (पुं.) उत्तर का रास्ता। छायापथ।
देवपुरोधस् (पुं.) देवताओं का पुरोहित। बृहस्पति। देवगुरु।
देवभवन (न.) स्वर्ग। देवों का स्थान।
देवभूय (न.) देवत्व। देवसायुज्य।
देवमणि (पुं.) शिव। कौस्तुभमणि।
देवयान (न.) देवरथ। अर्चिरादि मार्ग। (ी) शुक्राचार्य की कन्या।
देवयात्रा (स्त्री.) यात्रोत्सव।
देवयु (पुं.) पवित्र।
देवयोनि (पुं.) देवताओं के अंश के उत्पन्न विद्याधर आदि नौ योनियाँ प्रधान हैं। जैसे-विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक और सिद्ध।
देवर (पुं.) पति का छोटा भाई।
देवराज (पुं.) इन्द्र।
देवरात (पुं.) अभिमन्युपुत्र। परीक्षित्।
देवर्षि (पुं.) नारदादि मुनि। देवताओं के ऋषि।
देवल (पुं.) एक मुनि। पुजारी। जिसकी जीविका देवपूजन से चलती हो।
देवलोक (पुं.) स्वर्ग।
देववर्द्धकि (पुं.) विश्वकर्म्मा।
देवव्रत (पुं.) भीष्म।
देवसात् (अव्य.) देवताओं के अधीन।
देवसायुज्य (न.) देव के साथ मेल। देव के साथ एकासन होने की योग्यता।
देवसेना (स्त्री.) इन्द्रकन्या। कार्तिकेय की स्त्री षष्ठी। सोलह माताओं में से एक। इन्द्रादि देवताओं की फौज।
देवसेनापति (पुं.) कार्तिकेय। इन्द्रपुत्र। शिवपुत्र।
देवस्व (न.) देवताओं का धन।
देवहूति (स्त्री.) स्वायम्भव मनु की कन्या। कर्दम मुनि की स्त्री। कपिल भगवान् की माता।
देवाजीव (त्रि.) देवता की प्रतिमा के द्रव्य से जीने वाला।
देवात्मन् (पुं.) पीपल का वृक्ष। देवता जैसा।
देवानांप्रियः (पुं.) देवताओं का प्यारा। बकरा। मूर्ख।
देवापि (पुं.) चन्द्रवंशीय एक राजा।
देवार्ह (न.) देवताओं के योग्य। सहदेवी लता।
देवालय (पुं.) स्वर्ग। देवमन्दिर।
देविका (स्त्री.) नदीविशेष।
देवी (स्त्री.) दुर्गा। ब्राह्मणियों की उपाधि।
देवृ (पुं.) देवर। पति का छोटा भाई।
देवेश (न.) महादेव। देवदेव। विष्णु।
देवेष्ट (पुं.) गुग्गुल। बनबीजपूरक।
देवैनस (न.) देवशाप।
देवोद्यान (न.) वैभ्राज। मिश्रक। सिधकरण और नन्दन-ये चार देवोद्यान हैं।
देव्यायतन (न.) दुर्गा देवी का मन्दिर।
देश (पुं.) भूमण्डल का कोई विभाग। भाग स्थान।
देशान्तर (न.) अन्य देश। और देश।
देशिक (पुं.) पथिक। बटोही। गुरु। उपदेश देने वाला।
देशनी (स्त्री.) तर्जनी। अंगूठे के पास वाली अंगुली।
देश्य (न.) प्रथम सम्मति। पूर्व पक्ष।
देह (पुं.) शरीर। वपु। वदन।
देहधारक (पुं.) हड्डी।
देहभृत (पुं.) जीवात्मा। शरीर का रक्षक।
देहयात्रा (स्त्री.) आजीविका। शरीर की रक्षा का साधन। भोजन। मरण।
देहली (स्त्री.) ड्योढ़ी। घर का प्रवेश-स्थान। मर्यादा
देहसार (पुं.) मज्जा।
देहात्मवादिन् (पुं.) चार्वाक। नास्तिक।
देहिन् (त्रि.) शरीर वाला। प्राणी। जीव।
दैप् (क्रि.) साफ करना।
दैतेय (पुं.) असुर। दैत्य।
दैत्यगुरु (पुं.) शुक्राचार्य। दैत्यों का गुरु।
दैत्यनिसूदन (पुं.) विष्णु। दैत्यों के वधकर्ता।
दैत्यमेदज (पुं.) गुग्गुल। पृथिवी। भूमि।
दैत्या (स्त्री.) सुरा। दैत्य की स्त्री।
दैत्यारि (पुं.) दैत्यों के शत्रु। विष्णु।

दैन (न.) दीनपन। कायरपन।
दैनन्दिन (त्रि.) प्रतिदिन होने वाला।
दैनन्दिनप्रलय (पुं.) रचे हुए सम्पूर्ण पदार्थों का क्षय।
दैन्य (न.) दीनता। कायरता।
दैव (न.) भाग्य। देवसम्बन्धी।
दैवज्ञ (पुं.) गणक। ज्योतिषी। भूत-भविष्य को जानने वाला। भाग्य का ज्ञाता।
दैवत (पुं.) देवसमूह।
दैवतन्त्र (त्रि.) भाग्याधीन।
दैवपर (त्रि.) भाग्य पर निर्भर। कायर। कामचोर।
दैववाणी (स्त्री.) आकाशवाणी।
दैवात् (अव्य.) हठात्। अचानक। ईश्वरेच्छा से।
दैविक (न.) देवसम्बन्धी। विचित्र। विलक्षण।
दैवी (स्त्री.) देवता की सात्त्विक।
दैवोदासी (पुं.) दिवोदास का सन्तान। प्रतर्दन राजा।
दैव्य (न.) भाग्य देवता का।
दैशिक (त्रि.) देश का। विशेषण सम्बन्ध।
दैष्टिक (त्रि.) भाग्याधीनतावादी।
दैहिक (गु.) शरीरसम्बन्धी।
दो (क्रि.) छेद करना। काटना।
दोःशिखर (न.) कन्धा। मुड्ढा।
दोग्धृ (पुं.) दुहैया। अहीर। बछड़ा। सोने वाला।
दोर्दण्ड (पुं.) भुजदण्ड।
दोर्मूल (न.) कक्ष। बगल।
दोल (पुं.) दोलयात्रा। डोली।
दोलायमान (त्रि.) झूलता हुआ।
दोष (पुं.) पाप। वैद्यक में वात, पित्त और कफ ये तीन दोष होते हैं। अलङ्कार में रसादि बिगाड़ने वाले शब्द। न्याय में राग, द्वेष, मोह।
दोषग्राहिन् (त्रि.) दोष देखने वाला।
दोषज्ञ (त्रि.) पण्डित। चिकित्सक।
दोषत्रय (न.) तीन दोष-वात, पित्त, कफ।
दोषन् (अ.) बिगड़ा हुआ।
दोषस् (न.) साँझ। अन्धेरा।
दोषा (स्त्री.) रात।
दोषाकर (पुं.) चन्द्रमा। दोषों का समूह।
दोषैकदृक् (त्रि.) केवल दोष ही को देखने वाला। नीच। खल।
दोस्-षा (पुं.) भुजा। बाहु।
दोह (पुं.) दूध। दुधैड़ी। चीनी का बर्तन (क्रि.) दुहना।
दोहद (पुं.) लालसा। गर्भ का लक्षण।
दोहदिनी (स्त्री.) गर्भवती। दो हृदय वाली।
दोहनी (स्त्री.) दुधैड़ी या दूध दुहने का पात्र।
दोहा (स्त्री.) मात्रा छन्द विशेष जिसका प्रयोग प्रायः भाषा की कविता में हुआ करता है।
दौत्य (न.) दूतपना। दूत का काम।
दौरात्म्य (न.) खुटाई। खलता।
दौर्गत्य (न.) दीनता। दरिद्रता। दुर्गति में जाना।
दौर्जन्य (न.) दौरात्म्य। दुष्टता।
दौर्भाग्य (न.) अभाग्यपना। मन्दभाग्यत्व।
दौर्मनस्य (न.) उदासी। चिन्ताजन्य घबराहट। बुरा परामर्श।
दौर्वृत्य (न.) अवज्ञा। दुष्ट वृत्ति से रहना।
दौवारिक (पुं.) द्वारपाल। दरवाजे का रक्षक।
दौष्कुलेय (त्रि.) छोटी जाति का। नीच।
दौर्हृद (पुं.) गुण्डा। बुरे कर्म द्वारा पेट पालने वाला। धूर्त। बदमाश।
दौहित्र (न.) दोहता। कन्या का पुत्र।
द्यावापृथिवी (स्त्री.) भूमि-आकाश।
द्यु (पुं.) अग्नि। सूर्य। मदार वृक्ष। आकाश। दिन।
द्युत् (क्रि.) चमकना।
द्युति-ती (स्त्री.) कान्ति। शोभा। चमक।
द्युपति (पुं.) सूर्य। मदार का वृक्ष।
द्युम्न (पुं.) धन। बल।
द्युयोषित् (स्त्री.) अप्सरा।
द्यू (पुं.) चौसर या पाँसे का खेल।
द्यूत (न.) जुआ। कैतव। छल।
द्यूतकर (त्रि.) ज्वारी।
द्यूतपूर्णिमा (स्त्री.) आश्विन की पूर्णिमा।
द्यो (स्त्री.) स्वर्ग। आकाश।
द्योत (पुं.) प्रकाश। धूप। चमक।
द्योतनिका (स्त्री.) व्याख्या। प्रकरण-पत्रिका।
द्योतिस् (न.) नक्षत्र। तारा।
द्रङ्ग (पुं.) कसबा। जनपद।
द्रढ़िमन् (पुं.) दृढ़ता। पक्कापन।

द्रधस् (न.) कपड़ा।

द्रष्-य-स (न.) छाछ। मठा। बूँद।

द्रव (पुं.) रस। पतला। पनीला।

द्रवत्व (न.) पतलापन। पनीलापन।

द्रवद्रव्य (न.) दूध, दही, घी आदि बहने वाले पदार्थ।

द्रवन्ती (स्त्री.) नदी। शतमूलिका। मूषिकपर्णी।

द्रविड (पुं.) एक देश।

द्रविण (न.) सोना। पराक्रम। बल।

द्रव्य (न.) पीतल। धन। लेपन पदार्थ। लाख। विनय। मदिरा। वृक्षविकार। दवा।

द्रष्ट (त्रि.) विचारकुशल। चतुर। साक्षी। देखने वाला।

द्रा (क्रि.) सोना। भागना।

द्राक् (अव्य.) शीघ्र।

द्राक्षा (स्त्री.) अङ्गूर। मुनक्का। किसमिस।

द्राघय (क्रि.) देर करना।

द्राघिमन् (पुं.) लम्बाई।

द्राघिष्ठ (त्रि.) अति लम्बा।

द्रावक (पुं.) जार। उपपति। चन्द्रकान्त मणि।

द्राविड़ी (स्त्री.) द्रविड़ में उत्पन्न हुई। छोटी इलायची।

द्राह् (क्रि.) जागना।

द्रु (क्रि.) जाना।

द्रुः (पुं.) ऊपर बहने वाला या जाने वाला। वृक्ष। पेड़।

द्रुघण (पुं.) कुल्हाड़ी।

द्रुड़ (क्रि.) डुबकी मारना।

द्रुण (क्रि.) टेढ़ा करना।

द्रुणस् (त्रि.) लम्बी नाक वाला।

द्रुणी (स्त्री.) कनखजूरा।

द्रुत (पुं.) तेज। झट। भागा हुआ।

द्रुपद (पुं.) चन्द्रवंशीय एक राजा जो द्रौपदी का पिता था। खम्भा।

द्रुम (पुं.) पेड़। पारिजात। कुबेर।

द्रुह् (क्रि.) बुरा चीतना। द्रोह करना।

द्रुहिण (पुं.) जगत्स्रष्टा। ब्रह्मा।

द्रेक् (क्रि.) शब्द करना। उत्साहित करना।

द्रै (क्रि.) सोना।

द्रोण (पुं.) पाण्डव राजकुमारों के गुरु। द्रोणाचार्य। काक विशेष। बिच्छू। बादल विशेष। एक वृक्ष। चौतीस सेर की तौल विशेष। आठ सौ गज लम्बा तालाव विशेष। कूड़ा। नाँद।

द्रोणि (स्त्री.) एक देश। एक नदी। नील का वृक्ष। एक पहाड़।

द्रोह (पुं.) बुरा चीतना। वैर।

द्रोणायन (पुं.) द्रोणाचार्य की औलाद। अश्वत्थामा।

द्रौपदी (स्त्री.) द्रुपदराज की कन्या। पाण्डवों की धर्मपत्नी।

द्वन्द्व (पुं.) रहस्य। कलह। जोड़ा। विवाद। रोगविशेष। समासविशेष। शोक। हर्ष। शीत। उष्ण।

द्वन्द्वचर (पुं.) जो साथ साथ जोड़ा हो कर विचरे। चकवा चकई।

द्वय (न.) दो की संख्या।

द्वाःद्वास्थ (पुं.) दरवान। द्वारपाल।

द्वाचत्वारिंशत् (स्त्री.) ४२।

द्वादश (त्रि.) बारह।

द्वादशकर (पुं.) कार्तिकेय और वृहस्पति।

द्वादशनेत्र (पुं.) कार्तिकेय।

द्वादशाङ्गुल (पुं.) बिलस्त का नाप।

द्वादशात्मन् (पुं.) सूर्य्य। मदार का पेड़।

द्वापर (पुं.) संशय। युग विशेष। जो सत्य और त्रेता के पीछे आता है।

द्वामुष्यायण (पुं.) गौतम मुनि।

द्वार (स्त्री.) द्वार। उपाय। वसीला।

द्वारका (स्त्री.) द्वारावती। सात पुरियों में से एक। श्रीकृष्ण की बसाई राजधानी।

द्वारकेश (पुं.) श्रीकृष्ण। द्वारकाधीश। रणछोड़।

द्वारप (त्रि.) द्वारपाल।

द्वारयंत्र (न.) ताला।

द्वारावती (स्त्री.) द्वारका।

द्वारिन् (त्रि.) द्वारपाल। दरवान।

द्वाविंशति (स्त्री.) बाइस।

द्वि (त्रि.) दो।

द्विक (पुं.) काक। कौआ। दो संख्या वाला।

द्विककुत् (पुं.) ऊँट।

द्विगु (पुं.) संख्यावाचक शब्द पहले आने वाला समास। दो गौओं का स्वामी।

द्विगुण (त्रि.) दुगुना।

द्विज (पुं.) संस्कार और जन्म से दो बार जन्मा। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। त्रैवर्णिक। दाँत। अण्डज जीव। तुम्बुरू का एक वृक्ष। संस्कारित ब्राह्मण।

द्विजदेव (पुं.) ब्राह्मण। ऋषि। चन्द्रमा।

द्विजन्मन् (पुं.) देखो द्विज।

द्विजबन्धु (पुं.) कर्म से रहित। जन्ममात्र से जीने वाले ब्राह्मणादि प्रथम तीन वर्ण।

द्विजराज (पुं.) द्विजों का राजा। चन्द्र। अनन्त। गरुड़।

द्विजवर (पुं.) उच्च विप्र। ब्राह्मण।

द्विजाति (पुं.) देखो द्विजन्मा।

द्विजिह्व (पुं.) दो जीभ वाला। सर्पविशेष। खल। चुगल। चोर। झूँठा।

द्विजेन्द्र (पुं.) ब्राह्मणश्रेष्ठ। कर्मिष्ठ ब्राह्मण।

द्वितय (त्रि.) दो की संख्या वाला।

द्वितीय (त्रि.) दूसरा।

द्वितीयाकृत (त्रि.) दुबारा जोता हुआ खेत।

द्विदत् (त्रि.) दो दाँत वाला। घोड़ा। बैल आदि।

द्विदैव (पुं.) विशाखा नामी नक्षत्र।

द्विधा (अव्य.) दो प्रकार।

द्विप (पुं.) हाथी। मुँह और सूँड से पीने वाला।

द्विपद (पुं.) मनुष्य। देवता। पक्षी। राक्षस। राशि। दो पैर वाला।

द्विपदा (त्रि.) ऋग्वेदीय मंत्र विशेष।

द्विमातृक (पुं.) गणेश। जरासन्ध।

द्विमुख (पुं.) दो मुख वाला। राजसर्प। कुचलैंड़। चुगलखोर।

द्विरद (पुं.) दो दाँतों वाला। हाथी।

द्विरागमनम् (न.) गौना। विवाह के पश्चात् दूसरी बार दुलहिन का घर आना।

द्विरुक्त (त्रि.) दुहराया हुआ।

द्विरुढ़ा (स्त्री.) दो बार की विवाही स्त्री।

द्विरेफ (पुं.) भौंरा।

द्विवचन (न.) दो वचन।

द्विशफ (पुं.) गौ बकरी या वे जानवर जिनके खुर। फटे हुए हैं।

द्विशस् (अव्य.) दो बार जो देता या कर्ता।

द्विष् (स्त्री.) बैर करना।

द्विषत् (पुं.) शत्रु। बैरी।

द्विषन्तप (पुं.) शत्रु को तपाने वाला।

द्विष्ठ (त्रि.) दो के बीच का। संयोगादि पदार्थ।

द्विस् (अव्य.) दो बार। दुहरा।

द्विसप्तति (स्त्री.) बहत्तर।

द्विहल्य (त्रि.) दुबारा जोता हुआ खेत।

द्विहायनी (स्त्री.) दो वर्ष की गौ।

द्विहृदया (स्त्री.) गर्भवती।

द्वीप (न.) पानी से चारों ओर घिरा स्थल। टापू। चीते का चमड़ा। बाघ। दुरङ्गा।

द्वीपिन् (पुं.) चीता।

द्वीपिनी (स्त्री.) नदी।

द्वृ (क्रि.) संवरण करना। रोकना। ढाँकना।

द्वेधा (अव्य.) दो प्रकार से।

द्वेष (पुं.) बैर। विरोध।

द्वेषण (त्रि.) बैरी। शत्रु।

द्वेष्य (त्रि.) शत्रु। बैरी।

द्वैगुणिक (त्रि.) सूदखोर। ब्याज खाने वाला।

द्वैत (न.) दो प्रकार के भेद वाला।

द्वैतवन (न.) वनविशेष।

द्वैतवादिन् (त्रि.) जीव और ईश्वर में भेद मानने वाले।

द्वैध (पुं.) दो प्रकार।

द्वैप (पुं.) चीता का चमड़ा। चीते के चमड़े से ढका हुआ रथ।

द्वैपायन (पुं.) जिनकी दो मातायें हों। गणेश। जरासन्ध।

द्व्यणुक (न.) दो परमाणुओं से उत्पन्न पदार्थ।

द्वाष्ट (सं.) ताँबा। ताँमा।

द्वामुष्यायण (पुं.) एक प्रकार का गोद लिया हुआ पुत्र।

ध

ध (पुं.) धर्म। कुबेर। ब्रह्मा। धन।
धक्क् (क्रि.) नाश करना।
धट (पुं.) तुला। लकड़ी। तराजू।
धटक (पुं.) ४२ रत्ती की एक तौल।
धण् (क्रि.) ध्वनि करना। शब्द करना।
धत्तूर (पुं.) धतूरा।
धन् (क्रि.) धानों को उत्पन्न करना। शब्द करना।
धन (न.) सम्पत्ति। दौलत। लूट का माल।
धनञ्जय (पुं.) धन को जीतने वाला। अर्जुन। वह्नि। हाथी। शरीर को पुष्ट करने वाला। वायु। वृक्षविशेष।
धनद (पुं.) कुबेर। हिजल वृक्ष।
धनदानुचर (पुं.) यक्ष।
धनदानुज (पुं.) कुबेर का छोटा भाई। रावण। कुम्भकर्ण और विभीषण।
धनाधिप (पुं.) कुबेर।
धनिक (पुं.) धनी। साहूकार।
धनिष्ठा (स्त्री.) बहुत धन वाली। नक्षत्र। विशेष।
धनु (पुं.) कमान। धनुष।
धनुर्गुण (पुं.) रोदा। कमान की रस्सी।
धनुर्द्धर (पुं.) तीर चलाने वाला।
धनुर्वेद (पुं.) वेद विशेष जिसमें धनुष चलाने की विद्या का वर्णन है।
धनुष्क (पुं.) तीर चलाने वाला।
धनुष्मत् (पुं.) तीरन्दाज।
धनुस्(पुं.) धनुष्। तीर। मेष से नवमी राशि। बन। चार हाथ का नाप।
धन्य (पुं.) धन के लिये हितकर। अश्वकर्ण वृक्ष। सराहने योग्य। कृतार्थ। पुण्यशील। धन देने वाला। धनी।
धन्याक (न.) धनिका नामक पेड़ विशेष।
धन्वन् (न.) धनुष। तीर। मरुदेश। रेगिस्तान।
धन्वन्तरि (पुं.) श्रीविष्णु के चौबीस अवतारों में एक अवतार। देवताओं का वैद्य। इस नाम के कई वैद्य और कई पण्डित भी हो चुके हैं।
धन्वी (पुं.) अर्जुन। विदग्ध। चतुर। धनुषधारी। बकुल वृक्ष।
धम् (क्रि.) धौंकना। फूँकना।
धमक (पुं.) फूँकने या धौंकने वाला। लुहार।
धमनि (स्त्री.) नाड़ी। शिरा। ग्रीवा।
धमिल्ल (पुं.) स्त्रियों के गुहे हुए केश। जुड़ा।
धय (क्रि.) चूसना।
धर (पुं.) पकड़ना। धरना। पहाड़। कच्छपराज। वस्तुओं में से एक। कपासी सूत। धागा।
धरण (पुं.) पहाड़। लोक। गुण। धान। सूर्य। पुल। चौबीस रत्ती की तौल।
धरणि (स्त्री.) पृथिवी। बनकन्द। (पुं.) पहाड़। विष्णु। कच्छप।
धरा (स्त्री.) पृथिवी। गर्भाशय। जरायु। मेद को उठाने वाली नाड़ी।
धराधर (पुं.) पृथिवी को धारण करने वाला। पर्वत। विष्णु। शेष।
धरामर (पुं.) ब्राह्मण। पृथ्वी पर का देवता।
धरित्री (स्त्री.) पृथिवी। भूमि।
धरिमन् (पुं.) तराजू।
धर्णसि (गु.) मजबूत। दृढ़।
धर्तृ (पुं.) सहारा। अवलम्ब।
धर्म्म (पुं.) वेदविहित कर्म। वह कर्म जिसके करने से अपना अभ्युदय हो और मोक्ष मिले।
धर्मक्षेत्र (न.) कुरुक्षेत्र।
धर्मचारिणी (स्त्री.) धर्मपत्नी। भार्य्या। एक लता।
धर्मदेवी (स्त्री.) गङ्गा। महानदी।
धर्मध्वजिन् (त्रि.) जिसका झण्डा धर्म हो। अपनी जीविका के लिये धर्मचिह्नधारी।
धर्मपत्नी (स्त्री.) भार्या। कीर्ति। स्मृति। मेधा। धृति। क्षमा।
धर्मपुत्र (पुं.) युधिष्ठिर।
धर्मराज (पुं.) युधिष्ठिर। यमराज।
धर्मशास्त्र (न.) धर्म का कर्तव्य अकर्तव्य का यथार्थ उपदेशक शास्त्र। मनुस्मृति आदि ग्रन्थ।
धर्मशील (त्रि.) धार्मिक।
धर्मसंहिता (स्त्री.) देखो धर्मशास्त्र।

धर्मात्मन् (पुं.) धर्मात्मा। धार्मिक।
धर्माधिकरण (पुं.) विचारालय। कचहरी।
धर्माध्यक्ष (पुं.) न्यायकर्त्ता। विचारक।
धर्मासन (न.) न्यायासन।
धर्मिन् (त्रि.) धार्मिक।
धर्मिष्ठ (त्रि.) धर्म्मात्मा। साधु।
धर्म्य (त्रि.) धर्म वाला।
धर्ष (पुं.) चतुराई। कोप। मेल। मारना।
धर्षक (पुं.) आक्रमणकारी।
धर्षण (न.) तिरस्कार। अभिसारिका स्त्री। (प्रियतम से मिलने के लिये पूर्व साङ्केतिक स्थान पर गयी हुई स्त्री।)
धर्षित (न.) अपमानित। (स्त्री) कुलटा स्त्री।
धव् (क्रि.) जाना।
धव (पुं.) पति। धूर्त। वृक्ष। काँपना।
धवल (पुं.) इतना सफेद जिस पर दृष्टि न ठहरे और आँखें चौंधिया जाँय। धव वृक्ष। अच्छा बैल। चीनी कपूर।
धवलपक्ष (पुं.) हंस। शुक्लपक्ष।
धवलमृत्तिका (स्त्री.) खड़ी मिट्टी। सफेद मिट्टी।
धवलोत्पल (न.) कुमुद। रात को खिलने वाला कमल।
धवित्रम् (न.) पंखा।
धा (क्रि.) धारण करना। पकड़ना। पोसना। बढ़ाना। देना।
धाटी (स्त्री.) अचानक। आक्रमण। आश्चर्य।
धाणक (पुं.) मोहर।
धातकी (स्त्री.) धाई नामक लता।
धातु (पुं.) शब्दार्थ को वताने वाला वर्ण समूह। मुख्य पदार्थ। तत्त्व। सार। स्वर्ण, लोहा आदि नौ पदार्थ। परमात्मा।
धातुघ्न (न.) काञ्जी। जिससे धातुओं ङा असर जाता रहे।
धातुद्रावक (न.) सुहागा। धातुओं को गलाने वाला।
धातुभृत् (पुं.) पर्वत। वीर्य। धातु बढ़ाने वाली वस्तु।
धातुमारिणी (स्त्री.) सुहागा।
धातुवैरिन् (पुं.) गन्धक।
धातुशेखर (न.) कसीस।
धातृ (पुं.) पालने वाला। ब्रह्मा। विष्णु।
धात्री (स्त्री.) माता। धाई। आँवला। राई।
धाना (स्त्री.) धनिआँ। सत्तू। भुने हुए जौ।
धानी (स्त्री.) बर्तन। स्थान। पोषण। मुख्य स्थान। पीलू का पेड़। बिना साफ किये चाँवल।
धानुष्क (त्रि.) धनुषधारी।
धानुष्य (त्रि.) धनुर्द्धर।
धानेय (न.) धनिया।
धान्य (न.) तुष सहित चाँवल। चार तिला का परिमाण। धनिया।
धान्यत्वच् (स्त्री.) भूसी।
धान्यवीर (पुं.) माष।
धान्याचल (पुं.) (दान के लिये) धानों का पहाड़।
धान्योत्तम (पुं.) चाँवल।
धान्यकोष्ट (क.) धानों का गोला।
धामन् (न.) किरन। आसरा। स्थान। जन्म। घर। देह। तेज। ज्योति। प्रभाव। स्वयं प्रकाशित।
धामनिधि (पुं.) सूर्य। आक का पेड़।
धाम्या (स्त्री.) लकड़ी आग जलाने वाला ऋग्वेदीय मंत्र। (:) (पुं.) कुल पुरोहित।
धार (न.) पानी का प्रवाह। मेह का जल।
धारणा (स्त्री.) आत्मा में चित्त की स्थिति। मर्य्यादा। उचित मार्ग में ठहरना। निश्चय। नाड़ी। श्रेणी।
धारा (स्त्री.) घड़े आदि का छेद। अस्त्र की तेज कोर। उत्कर्ष। यश। बहुत वर्षा। समान। एक पुरी। घोड़ों की पाँच प्रकार की गति। सेना के आगे का स्कन्ध।
धाराङ्कुर (पुं.) ओला।
धाराञ्चल (पुं.) अस्त्र की पैनी कोर।
धाराट (पुं.) चातक। घोड़ा। बादल। मस्त हाथी।
धाराधर (पुं.) बादल। मेह।
धारावाहिन् (त्रि.) निरन्तर गिरने वाला।
धारासम्पात (पुं.) महावृष्टि। मूसलाधार वर्षा।
धारिका (स्त्री.) खम्भी। थुनकिया।
धारिणी (स्त्री.) भूमि। सिम्बल का पेड़।

धारिन् (पुं.) पीलू का पेड़। आसरा देने वाला।
धार्तराष्ट्र (पुं.) एक सर्प। एक हंस। धृतराष्ट्र की सन्तान। दुर्योधन आदि।
धार्मिक (त्रि.) धर्मशील। धर्मात्मा। धर्म्मी।
धाव् (क्रि.) भागना। जल्दी चलना।
धावक (पुं.) दौड़ने वाला। दूत। धोबी।
धावन (न.) साफ करना। शीघ्र जाना।
धार्ष्ट्य (न.) ढिठाई। निर्लज्जता।
धि (क्रि.) पकड़ना। रखना। सन्तुष्ट करना।
धिक् (अव्य.) झिड़कना। निन्दा।
धिक्कार (पुं.) तिरस्कार। निरादर।
धिक्कृत (त्रि.) झिड़का गया। निन्द्य। तिरस्कृत।
धिक्ष् (क्रि.) जगाना। रहना।
धिग्दण्ड (पुं.) लानत मलामत।
धियंधा (गु.) चतुर।
धिषण (पु.) देवगुरु। बृहस्पति।
धिषणा (स्त्री.) बुद्धि। तसला।
धिष्ण्य (न.) जगह। घर। शक्ति। तारा। आग। (पुं.) शुक्र। ऊँचे पद के योग्य (त्रि.)।
धी (स्त्री.) बुद्धि। समझ।
धीन्द्रिय (न.) आँख, कान आदि ज्ञानेन्द्रिय।
धीमत् (पु.) प्रज्ञावान्। बृहस्पति। बुद्धि वाला पण्डित।
धीति (स्त्री.) पीना। चूसना। अनुभव। भक्ति।
धीर् (क्रि.) अपमान करना।
धीर (त्रि.) धीरज वाला। नम्र। बल वाला तथा पण्डित। राजा बलि। बुद्धि को प्रेरने वाला। बुद्धिसाक्षी। परमेश्वर। केसर। एक नायिका। प्रतिष्ठित प्रज्ञा।
धीरोदात्त (पुं.) एक नायक। धीर और शान्त पुरुष।
धीवर (पु.) कैवर्त्त। मच्छी पकड़ने वाला।
धीशक्ति (स्त्री.) शुश्रूषा आदि आठ गुण।
धीसचिव (पु.) मंत्री। अमात्य।
धु (क्रि.) काँपना।
धुक्ष् (क्रि.) जगाना। रहना।
धुत (त्रि.) छोड़ा गया। काँप गया। त्यक्त। कम्पित।
धुनि-नी (स्त्री.) तूफानी। नदी।
धुन्धुमान (पुं.) बृहदश्व राजा का पुत्र। बीरबहूटी। इन्द्रगोप कीड़ा।
धुर-रा (स्त्री.) चिन्ता। रथ की धुरी।
धुरन्धर (त्रि.) बोझा ढोने वाला। मुख्य बैल।
धुरीण (त्रि.) श्रेष्ठ। अच्छा।
धुर्य (त्रि.) भार उठाने वाला। अच्छा। सर्वोत्तम। प्रथम। मुख्य।
धुर्व (त्रि.) मारना।
धुवित्र (न.) यज्ञादि में अग्नि का सुलगाना।
धुवन (सं.) वधस्थान। हिलना।
धू (क्रि.) काँपना।
धूत (त्रि.) काँप गया। छोड़ा गया। त्यक्त। झिड़का गया।
धूप् (क्रि.) चमकना। तपना।
धूप (पुं.) एक प्रकार का चूर्ण जिसे जलाने से सुगन्ध युक्त धुआँ निकलता है। इसके पंचाग, दशांग, षोडशांग आदि कई भेद हैं। वस्तुभेद से नामभेद है।
धूपित (त्रि.) थका हुआ। सन्तप्त। धूप दिया हुआ।
धूम (पुं.) धुआँ।
धूमकेतन (पुं.) अशुभसूचक तारों का समूह। पूँछ वाला तारा।
धूमयोनि (पुं.) मेघ। मौथा। आग। गीली लकड़ी।
धूमल (पुं.) काले और लाल रंग वाला।
धूम्या (स्त्री.) धुएँ का साधन।
धूम्र (पुं.) धुमैला। काले और लाल रंग वाला।
धूम्रक (पुं.) ऊँट।
धूम्रलोचन (पुं.) कबूतर। महिषासुर नामक एक सेनापति।
धूम्रवर्ण (पुं.) धुमैला रंग या धुमैले रंग वाला।
धूमावती (स्त्री.) देवीविशेष।
धूमिका (स्त्री.) बाफ। कोहरा। ओद।
धूर् (क्रि.) मारना। जाना।
धूर्ज्जटि (पुं.) जहाँ तीनों लोक की चिन्ता एकत्र हो रही हो। शिव।
धूर्त्त (पुं.) धतूरे का पेड़। ठग। वञ्चक। मायावी। ज्वारी। नायकविशेष।
धूर्त्तक (पुं.) श्रृंगाल। गीदड़।

धूर्तकितव (पुं.) ज्वारी।
धूर्वह (त्रि.) बोझ उठाने वाला।
धूलि-ली (स्त्री.) पराग। धूल।
धूलिध्वज (पुं.) वायु। हवा।
धूसर (पुं.) ऊँट। कबूतर। पीले रंग वाला।
धूसरित (गु.) धुमैला।
धृ (क्रि.) गिरना। ठहरना। धारण करना।
धृत पकड़ना।
धृतराष्ट्र (पुं.) चन्द्रवंशी एक राजा। दुर्योधन का पिता। साँप। पक्षी।
धृतात्मन् (गु.) दृढ़। मजबूत।
धृति (स्त्री.) तुष्टि। प्रसन्न होना। पकड़ना। यज्ञ। आठवाँ योग। सुख। धारणा। सहनशीलता। छन्दविशेष जिसके पाद में अठारह अक्षर होते हैं। १२ की संख्या।
धृतोत्सेक (गु.) गुस्सैल। क्रोधी।
धृष् (क्रि.) चतुराई दिखाना। बल को रोकना। क्रोध करना। दबाना।
धृष्ट (त्रि.) ढीठ। निर्लज्ज। एक नायक।
धृष्टद्युम्न (पुं.) गम्भीर बल वाला। द्रुपदराजा का पुत्र।
धृष्टि (पुं.) चीमटा। (स्त्री.) बहादुरी। वीरता।
धृष्णु (गु.) चतुर। वीर। निर्लज्ज।
धेनु (स्त्री.) नई ब्याई गई गाय।
धेनुक (पुं.) असुरविशेष जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। (स्त्री.) हथिनी। धेनु।
धेनुका (स्त्री.) दुधार गाय।
धेनुदुग्धकर (पुं.) गाजर।
धेनुष्या (स्त्री.) गिरवी रखी हुई गौ।
धैनुक (पुं.) गौओं का झुण्ड।
धैर्य (न.) धीरज। ऊँचाई।
धैवत (पुं.) गले से निकला एक प्रकार का शब्द।
धोर (क्रि.) चतुराई दिखाना। चाल चलना।
धोरण (न.) हाथी। घोड़ा। गाड़ी आदि सवारी। घोड़े की एक प्रकार की चाल।
धौत (गु.) धुला हुआ। उत्तेजित।
धौतकौषेय (न.) धोया हुआ वस्त्र। कीड़ों के कोष से उत्पन्न वस्त्र।
धौरेय (त्रि.) बैल आदि बोझा ढोने वाले। घोड़ा।
ध्मा (क्रि.) आँच को फूँकना।
ध्मात (त्रि.) फूँका गया। भड़काया गया।
ध्माक्ष चाहना। घोर रव। डरावना शब्द।
ध्माङ्क्ष (पुं.) काक। मच्छिओं को खाने वाला। भिक्षुक। भिखारी।
ध्रु (क्रि.) टिकना। पक्का होना। जाना। चलना। मारना।
ध्रुव (पुं.) शङ्कु। विष्णु। महादेव। राजा उत्तानपाद का पुत्र। योगविशेष। नासिका के आगे का भाग। भूगोल के दोनों केन्द्रों के ऊपर के भाग। ताराविशेष। पक्का। तर्क। आकाश। लगातार। स्थिर। एक गीत।
ध्रौव्य (न.) पक्का होना। स्थिर होना।
ध्वंस (पुं.) विनाश। गिरना।
ध्वज् (क्रि.) जाना।
ध्वज-जा (पुं.) झण्डा। निशान। कलवार। सेना। पुरुष का चिह्न।
ध्वजिन् (पुं.) राजा। रथ। ब्राह्मण। घोड़ा। साँप। कलवार। मोर।
ध्वजिनी (स्त्री.) सेना।
ध्वन् (क्रि.) शब्द करना।
ध्वन (पुं.) सुर। शब्द।
ध्वनि (पुं.) धीमा सुर। अलंकार का एक उत्तम काव्य।
ध्वंस् (क्रि.) जाना। विनाश होना। गिरना।
ध्वस्त (त्रि.) नष्ट। चला गया। नाश हो गया।
ध्वांक्ष् (क्रि.) चाहना। डरावना शब्द करना।
ध्वांक्ष (पुं.) काक। बगला। फकीर। घर।
ध्वान (पुं.) शब्द।
ध्वान्त (न.) अन्धकार। अन्धेरा।
ध्वान्तारि (पुं.) सूर्य्य। आक का वृक्ष। चन्द्रमा। आग।
ध्वृ (क्रि.) झुकाना। मारना।

न

न (अ.) पतला। अतिरिक्त। रिक्त। रीता। एक ही सा। वही। प्रशंसित। अविभाजित। मोती। गणेश। धन। सम्पत्ति। दल। गाँठ। युद्ध। बुद्धदेव का नाम। भेंट। नहीं।

नंशुक (गु.) हानिकारी। नाशकारक। छोटा। मिहीन। पतला। भटका हुआ। खोया हुआ।
नकुर (न.) नाक।
नकुल (त्रि.) न्यौला। चौथे पाण्डव का नाम। शिव। जटामांसी। केसर।
नक्त (न.) रात्रि। व्रतविशेष।
नक्तचारिन् (पुं.) उल्लू। बिलार। चोर। राक्षस। चमगीदड़ या रात में विचरने वाला कोई भी जीव।
नक्तञ्चर (पुं.) देखो नक्तचारिन्।
नक्तन्दिव (न.) रात और दिन।
नक्तम् (अव्य.) रात।
नक्र (पुं.) नाका। मगर। कुम्भीर। द्वार के आगे का काठ। नासिका (।) बर्रइयों अथवा शहद की मक्खियों का झुण्ड।
नक्षत्र (न.) अश्विनी आदि अट्ठाईस नक्षत्र। तारा।
नक्षत्रचक्र (न.) आकाशमण्डल में दीखने वाला ताराओं का राशिचक्र।
नक्षत्रनेमि (पुं.) ध्रुव नक्षत्र। चन्द्रमा। विष्णु।
नक्षत्रमाला (स्त्री.) तारों की नाईं माला। २७ मोतियों वाला हार। तारों की पंक्ति।
नक्षत्रसूचक (पुं.) कुगणक। पञ्चाङ्ग देख कर मुहूर्त्तादि बताने वाला। कम पढ़ा सिद्धान्त न जानने वाला ज्योतिषी। सिद्धान्त ग्रन्थों में नक्षत्रसूची का मुख देखने से प्रायश्चित्त करना लिखा है। पूरा गणित-विशारद ज्योतिषी ही ज्योतिष-सम्बन्धी कार्य कर सकता है।
नक्षत्रेश (पुं.) चन्द्रमा। नक्षत्रों का स्वामी।
नक्षत्रविद्या (स्त्री.) ज्योतिषविद्या। खगोल विद्या।
नख् (क्रि.) जाना। चलना। सरकना।
नख (पुं.न.) जहाँ सूराख हो। नाखून। न्हो।
नखकुट्ट (पुं.) नाई। हज्जाम।
नखर (पुं.न.) पञ्चे के आकार का।
नखरायुध (पुं.) सिंह। व्याघ्र। चीता। भेंड़िया। कुत्ता। बिल्ली।
नखानखि (अव्य.) परस्पर नखों की लड़ाई।
नग (पुं.) पहाड़। वृक्ष।
नगण (पुं.) छन्दोशास्त्र में एक गण विशेष।
नगभिद् (पुं.) इन्द्र। पहाड़ को तोड़ने वाला।
नगभू (स्त्री.) पहाड़ से उत्पन्न होने वाली नदी। पत्थर।
नगर (न.) पुर। नगरी। शहर।
नगरन्ध्रकर (पुं.) कार्त्तिकेय।
नगरी (स्त्री.) पुरी।
नगरौकस् (पुं.) नगरवासी।
नगाट (पुं.) बन्दर।
नगाधिप (पुं.) हिमालय। नगेन्द्र। गजराज।
नगेन्द्र (पुं.) नगाधिप। हिमालय। गजराज।
नगौकस् (पुं.) पक्षी। सिंह। शरभ आदि।
नगाग्र (पुं.) पर्वतशिखर।
नग्न (गु.) नङ्गा। जैनियों का एक भेद। तीन वेद रूपी परदों को डालने वाला जन।
"नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति।"
नग्निका (स्त्री.) नङ्गी। वह स्त्री जो रजस्वला न हुई हो। निर्लज्ज स्त्री।
नज् (क्रि.) लजाना। शर्माना।
नञ् (अव्य.) नहीं। रोकना। स्वल्पत्व। बुरा। लाँघना। थोड़ा। बराबर। विरोध। अन्तर।
नट् (क्रि.) नाचना। मारना।
नट (पुं.) नाचने वाला। तमाशा करने वाला। नाटक का पात्र। स्त्री के सहारे जीने वाला। वर्णसङ्कर विशेष। अशोक वृक्ष।
नटन (न.) नृत्य। नाच।
नटी (स्त्री.) नट की स्त्री। नाटकपात्री। वेश्या।
नड् (क्रि.) गिरना।
नड़ (पुं.) नरकुल। चूड़ीगर।
नत (गु.) झुका हुआ। टेढ़ा। (न.) तगर की जड़।
नतनासिका (गु.) चिपटी नाक वाला।
नताङ्गी (स्त्री.) स्तन और जघन के बोझ से झुकी हुई स्त्री।
नति (स्त्री.) नम्रता। नमन।
नद् (क्रि.) सन्तोष करना। प्रसन्न होना।
नद (पुं.) बड़ा जलप्रवाह।

नदी (स्त्री.) स्रोतस्विनी। नदी उसे कहते हैं जो १००८ धनुष दूर तक बहे।

नदीज (पुं.) अर्जुन वृक्ष। अग्निमंथ वृक्ष यह नदी में जमता है।

नदीन (पुं.) समुद्र। वरुण।

नदीमातृक (त्रि.) नदी जिसे माता की नाईं पालती है। नदी के जल से सींचे हुए धानों से पला हुआ देश।

नदीष्ण (त्रि.) नदी में स्नान करने में पटु।

नद्ध (त्रि.) बँधा हुआ। मिला हुआ।

नद्धी (स्त्री.) चमड़े की बनी हुई रस्सी।

ननन्द (स्त्री.) सेवा करने पर भी जो प्रसन्न न हो। ननद। स्वामी की बहिन।

ननु (अव्य.) प्रश्न। निश्चय रूप से बुलाना। सम्बोधन। निन्दा।

नन्द (पुं.) एक गोप। श्रीकृष्ण के पोषण करने वाले पिता।

नन्दकी (पुं.) विष्णु की तलवार। मेंढक। आनददायी। कुलपालक।

नन्दयु (पुं.) आनन्द।

नन्दन (पुं.) प्रसन्न करने वाला। पुत्र। मेंढ़क। एक पहाड़। एक पर्वत।

नन्दनन्दन (पुं.) नन्दजी को प्रसन्न करने वाले। नन्दकुमार। श्रीकृष्ण।

नन्दनन्दिनी (स्त्री.) नन्द की कन्या। दुर्गा।

नन्दा (स्त्री.) गौरी। पार्वती। तिथि विशेष। (१ दा। ११शी। ६ष्ठी)। ननद।

नन्दि (पुं.) वृक्ष विशेष। आनन्द। महादेव का पार्श्वचर। नन्दिकेश्वर। विष्णु। शिव।

नन्दिन् (पुं.) शिवजी का एक द्वारपाल।

नन्दिनी (स्त्री.) वसिष्ठजी की धेनु का नाम। लड़की। सुता। पार्वती। गङ्गा। ननद। व्याडि की माता। रेणुका औषध।

नन्दिनीसुत (पुं.) व्याकरण का संग्रहकर्त्ता। व्याडि मुनि।

नन्दिपुराण (न.) नन्दी कथित पुराण। एक उपपुराण।

नन्दीश (पुं.) शिवजी का द्वारपाल।

नपुंसक (पुं.न.) हिजड़ा। जनखा। क्लीब।

नप्तृ (पुं.) पौत्र। पोता। दोहिता।

नभ (न.) आकाश। सावन का महीना।

नभःसद (पुं.) देवता। आकाश-निवासी।

नभश्चर (पुं.) आकाशचारी। बादल। वायु। पक्षी। सूर्क्ष, चन्द्रादि ग्रह। राक्षस।

नभस् (न.) आकाश।

नभस् (न.) बादल। श्रावण मास।

नभस्य (पुं.) भादों अर्थात् जिसमें वर्षा अच्छी हो।

नभस्वत् (पुं.) वायु। हवा।

नभोमणि (पुं.) सूर्य्य। सूरज।

नभोरजस् (न.) अन्धकार। अंधेरा।

नभ्राज् (पुं.) मेघ। बादल।

नमस् (अव्य.) नति। झुकना। छोड़ना। शब्द करना।

नमस्कार (पुं.) प्रणाम। अभिवादन।

नमस्य (त्रि.) प्रणाम करने योग्य।

नमुचि (पुं.) शुम्भ निशुम्भ का छोटा भाई। जो युद्ध को न छोड़े।

नमेरु (पुं.) सुरपुन्नाग वृक्ष। रुद्राक्ष।

नम्ब् (क्रि.) जाना।

नम्र (त्रि.) नत। झुका हुआ। विनयान्वित।

नम्रक (पुं.) वेंत।

नय् (पुं.) जाना।

नय (पुं.) नीति। शुक्राचार्यादि से रचा हुआ एक शास्त्र। नेता। न्याय्य। एक प्रकार का जुआ।

नयन (न.) नेत्र। आँख।

नर (पुं.) परमात्मा (आपो वै नरसूनवः) विष्णु। मनुष्य का अवतार। मनुष्य। अर्जुन। एक ऋषि। धूम घड़ी की एक पिन (Pin) कील।

नरक (पुं.) पृथिवी का बीच। वराह से उत्पन्न एक दैत्य। पापियों के दुःख भोगने का स्थान विशेष। रौरव आदि २८ प्रकार के नरक बतलाये जाते हैं। कुल संख्या हजारों है।

नरकजित् (पुं.) नरकान्तक। श्रीकृष्ण।

नरदेव (पुं.) राजा।

नरनारायण (पुं.) भगवान् का एक अवतार। ऋषभदेव। श्रीकृष्ण और अर्जुन।

नरपति (पुं.) नरदेव। राजा। नृपति।

नरपुङ्गव (पुं.) मनुष्यों में श्रेष्ठ। राजा।
नरमाला (स्त्री.) मनुष्यों के कटे सिरों की माला। "नरमाला विभूषणा" इति चण्डी।
नरमेध (पुं.) एक यज्ञ जिसमें नर के मांस से होम किया जाता है।
नरयान (सं.) पालकी। पीनस। डोली। तामझाम। कण्डी।
नरवाहन (पुं.) कुबेर।
नरसिंह (पुं.) विष्णु भगवान् का नर और सिंह के रूपों से मिला हुआ एक अवतार जो प्रह्लाद की रक्षा के लिये हुआ था।
नरस्कन्ध (पुं.) बहुत से मनुष्य।
नरेन्द्र (पुं.) राजा। विषवैद्य। २१ अक्षरों के पाद वाला एक शब्द।
नरेश (पुं.) राजा। नराधिप।
नरोत्तम (पुं.) राजा। वैरागी। पुरुषोत्तम।
नर्तक (पुं.) चारण। कथक। नचैया।
नर्त्तन (न.) नाच।
नर्द (क्रि.) शब्द करना।
नर्म्मद (पुं.) विदूषक। मसखरा (ा) नदी विशेष।
नर्म्मन् (न.) परिहास। क्रीड़ा।
नलकिनी (स्त्री.) जङ्घा। लात।
नलकूबर (पुं.) कुबेरपुत्र जिसका शापोद्धार श्रीकृष्ण ने किया था।
नलिका (स्त्री.) नाड़ी। नाली। सुगन्धि द्रव्य।
नलिनीखण्ड (न.) कमलिनियों का समूह।
नल्व (पुं.) एक नाप जो चार सौ हाथ का होता है।
नव (पुं.) नूतन। नया। स्तव। प्रशंसा।
नवग्रह (पुं.) सूर्य्य आदि नौ ग्रह।
नवति (स्त्री.) नब्बे की संख्या।
नवदल (न.) नया पत्ता। कमल की कर्णिका के पास का पत्ता।
नवदुर्गा (स्त्री.) शैलपुत्री आदि नौ दुर्गाओं की प्रतिमायें।
नवद्वारपुर (न.) नौ द्वार वाला पुर। शरीर। देह।
नवधा (अव्य.) नौ प्रकार।
नवधातु (पुं.) सोना आदि नौ धातु।
नवन् (त्रि.) नौ की संख्या।
नवनीत (न.) नया निकाला गया। मक्खन।
नवमल्लिका (स्त्री.) बहुत फूलों वाला वृक्ष।
नवम (त्रि.) नवाँ। नवमी।
नवरत्न (न.) नौ रत्नों का मेल। विक्रमादित्य की सभा के प्रसिद्ध नौ पण्डित।
नवरात्र (न.) नौ रातें। आश्विन तथा चैत्र शुक्ला १दा से ९ मी तक।
नववस्त्र (न.) नया कपड़ा जो पहली बार ही पहना गया हो।
नवशायक (पुं.) माली, तेली, नाई आदि जातियाँ।
नवश्राद्ध (न.) एकादशा श्राद्ध। ग्यारहवें दिन करने योग्य श्राद्ध।
नवसूतिका (स्त्री.) नई ब्याई गाय।
नवान्न (न.) नया नाज या नये अनाज के आने का समय।
नवीन (त्रि.) नूतन। नया।
नवोदक (न.) नया पानी या नया पानी बरसने का समय।
नवोद्धृत (न.) ताजा मक्खन।
नव्य (त्रि.) नूतन। नया।
नष्ट (त्रि.) तिरोहित। छिपा हुआ। जिसका पता न हो।
नष्टचेष्टता (स्त्री.) संज्ञाशून्य। अचेत। बेहोशी।
नष्टाग्नि (पुं.) प्रमाद से अग्निहोत्र करना छोड़ने वाला। निरग्नि। मन्दाग्निरोगी।
नष्टेन्दुकला (स्त्री.) चतुर्दशी से मिली हुई अमावास्या।
नस्य (न.) सूँघनी।
नस्योत (पुं.) नथा हुआ। बैल।
नहि (अव्य.) निषेध। रोकना। नहीं।
नहुष (पुं.) चन्द्रवंश का एक राजा। सर्प विशेष।
नहुषात्मज (पुं.) नहुषपुत्र। राजा ययाति।
ना (अव्य.) देखो नहि।
नाक (पुं.) स्वर्ग। बड़े सुख का स्थान।
नाकिन् (पुं.) देवता। स्वर्गवासी जीव।
नाग (पुं.) फन और पूँछ वाले साँप। हाथी। बादल। नागकेसर। मोथा। वायु विशेष जिससे पेट में डकार आती है।

नागदन्त (पुं.) हाथीदाँत।
नागपाश (पुं.) वरुणदेव का एक अस्त्र।
नागर (त्रि.) नगर का। विदग्ध। होशियार। नागरमोथा।
निःसत्त्व (त्रि.) धीरज रहित। कमजोर।
निःसम्पात (पुं.) आधीररात।
निःसरणम् (न.) घर का द्वार। मरना। बुझना।
निःसार (पुं.) सारशून्य। केले का पेड़।
निःसारणम् (न.) घर से निकलने का रास्ता।
निःस्नेहा (स्त्री.) प्रेमरहित। अतसी का वृक्ष।
निःस्व (पुं.) निर्धन। गरीब।
निकट (न.) समीप। पास।
निकर (पुं.) समूह। सार धन।
निकष-स (पुं.) कसौटी। सिल्ली। सान।
निकर्षण (न.) वास स्थानों के बाहिर घूमने फिरने का स्थान।
निकषा (अव्य.) निकट। मध्य। राक्षसों की माता।
निकषोपल (न.) सान। सिल्ली। कसौटी।
निकाम (न.) इच्छानुसार। बहुत। घर। परमात्मा।
निकाय (न.) निवास। एक धर्म वालों का समुदाय।
निकाय्य (न.) घर।
निकार (स.) तिरस्कार। अपमान। अपकार। छाँटना। कूटना।
निकाश (पुं.) दृष्टि। दृश्य।
निकुञ्ज (न.) उपवन। लता आदि से ढका हुआ स्थान।
निकुम्भ (पुं.) कुम्भकर्ण का पुत्र। दन्ती पेड़।
निकुम्भिला (स्त्री.) लङ्का में स्थापित एक देवीविशेष।
निकुरम्ब (न.) समुदाय। समूह। अतिशय। बहुतसा।
निकृत (त्रि.) तिरस्कृत। वञ्चित। धूर्त। नीच।
निकृति (स्त्री.) धूर्तता। तिरस्कार। अपमान। निध नता।
निकृष्ट (त्रि.) जाति और आचार से निन्दित। नीच। अधम।
निकेतन (न.) घर।
निकोच (पुं.) सिकुड़न।
निक्रमण (सं.) कुचलना।
निक्व-क्वा-ण (पुं.) वीणा का शब्द।
निक्षिप्त (त्रि.) फेंका गया। स्थापित।
निक्षेप (पुं.) धरोहर। ठीक करने के लिये शिल्पी के हाथ में सौंपी गयी वस्तु।
निखनन (न.) खोद कर गाड़ना।
निखर्ब (पुं.) बौना। दस हजार करोड़। दस खर्ब संख्या।
निखात (त्रि.) गढ़ा। खोदा हुआ।
निखिल (त्रि.) सम्पूर्ण। सकल।
निगड (पुं.) श्रृखला। सकरी। हथकड़ी। बेड़ी।
निगडित (त्रि.) बँधा हुआ।
निगद (पुं.) भाषण। चिल्ला कर पाठ करना।
नियम (पुं.) निश्चय। प्रतिज्ञा। वेद। न्याय शास्त्र के पञ्च अवयवों में से अन्तिम अवयव। व्यापार। वेद की शाखा। हाट। मार्ग।
निगमन (न.) न्याय शास्त्र का अवयव विशेष।
निगा-र (पुं.) भोजन। आहार।
निगाल (पुं.) घोड़े के गले का स्थान।
निगु (पुं.) मन। मल। विष्ठा। मूल विशेष। चित्रण।
निगृहीत (त्रि.) रोका हुआ। पाीड़ेत। झिड़का हुआ।
निग्रन्थन (न.) मारण। वध।
निग्रह (पुं.) झिड़कना। सीमा। बन्धन। कोप। मारना। प्रवृत्ति से हटाना। रोक। तिरस्कार।
निग्रहस्थान (न.) रोकने का स्थान। गौतम कथित षोडश पदार्थों में से अन्तिम पदार्थ।
निग्राह (पुं.) शाप। कटुवचन।
निघ (पुं.) गेंद। वृक्ष। वृत्त। जितना ऊँचा उतना ही चौड़ा। पाप।
निघण्टु (पुं.) अर्थ सहित शब्दसंग्रह। विशेष कर के वैदिक शब्दों का संग्रह। जिसे यास्क मुनि ने निरुक्त में किया है। वैद्यक का कोश जिसमें हर एक वस्तु के नाम और गुण-दोष हैं।
निघस (पुं.) भोजन। आहार।
निघ्न (त्रि.) अधीन। गुणा गया। "द्विगुणान्त्यनिघ्न-" लीलावती।
निचय (पुं.) बढ़ा हुआ। ढेर। समूह।

निचाय (पुं.) राशीकृत। समूह।
निचित (त्रि.) पूरित। भरा हुआ। फैला हुआ। संङ्कीर्ण। मिला हुआ। रचा हुआ।
निचोल (पुं.) डोली का परदा। डुपट्टा। चादर।
निज (न.) अपना।
निटल (न.) कपाल। माथा।
निण्य (न.) छिपा हुआ। गुप्त। रहस्यमय।
नितम्ब (पुं.) कटिदेश। चूतड़। कन्धा। तट। किनारा। कमर।
नितम्बिनी (स्त्री.) स्त्री।
नितरां (अव्य.) सदैव। अतिशय। विशेष करके।
नितल (न.) बहुत नीचा। पाताल विशेष।
नितान्त (न.) एकान्त। असाधारण। अतिशय। बहुत। सघन।
नित्य (न.) निरन्तर। अनन्त। अक्षर। अन्त रहित। (पुं.) समुद्र।
नित्यकर्म (न.) सन्ध्यावन्दनादि प्रतिदिन करने योग्य कर्म।
नित्यदा (अव्य.) सदा। सदैव। रोजरोज। नित्यनैमित्तिक कर्म। कोई कर्म जो किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिये नित्य किया जाय। कोई सामयिक कृत्य जो समय पर सदैव किया जाय।
नित्यमुक्त (पुं.) परमात्मा और शेष विष्वक्सेन आदि सूरिगण जिन्हें वेदों में "तद्विष्णोः परमं पद सदा पश्यन्ति सूरयः।" इत्यादि कहा है।
नित्ययज्ञ (पुं.) बलि-वैश्वदेव। अग्निहोत्रादि।
नित्यसत्त्वस्थ (त्रि.) धैर्य्यवान्।
नित्यसमास (पुं.) समासविशेष।
नित्यानध्याय (पुं.) वेद न पढ़ने का नियत दिन। प्रतिपदा आदि।
नित्याभियुक्त (त्रि.) केवल शरीर की रक्षा करने वाला। योगाभ्यास में निरत।
निदर्शन (न.) उदाहरण। अर्थालङ्कार।
निदाघ (पुं.) गरम। पसीना। गर्मी की ऋतु।
निदाघकर (पुं.) सूर्य्य।
निदान (न.) आदिकारण। शुद्धि। बछड़े की रस्सी। अवसान। रोग निर्णय करने वाला। रोग का मूल कारण और सामान्य लक्षण तथा परिणामनिदर्शक ग्रन्थ विशेष।
जैसे- "निदाने माधवः प्रोक्तः।"
माधवनिदान ग्रन्थ तथा और भी वैद्यक के ग्रन्थविशेष। रोग का कारण। तपःफल की याचना।
निदिग्ध (त्रि.) उपचित। बढ़ा हुआ। तेल मला गया।
निदिध्यासन (न.) ध्यान विशेष। विचारे हुए अर्थ में निमग्न होना।
निदेश (पुं.) शासन। आज्ञा। कथन। पास। वर्तन।
निद्रा (स्त्री.) नींद।
निधन (पुं.) मरण। नाश। कुल। लग्न से आठवाँ स्थान।
निधान (न.) आश्रम। धनागार। कार्यान्त।
निधि (पुं.) धन। वह धन जिसका कोई पाने वाला या स्वामी नहीं। अवलम्ब।
जैसे "दयानिधिः"। "वारिधिः"।
निधीश (पुं.) कुबेर।
निधुवन (न.) सुरत। क्रीड़ा। संयोग। मैथुन।
निनद / **निनाद** } (पुं.) ध्वनि। शब्द। रथ या गाड़ी का शब्द।
निन्दा (स्त्री.) बुराई। अपवाद। दोष।
निन्दक (पुं.) निन्दा करने वाला।
निन्द्य (गु.) निन्दा करने योग्य। बुरा।
निपत्या (स्त्री.) युद्धभूमि।
निपात (पुं.) मरण। व्याकरण में च, प्र आदि अजीव-वाचक अव्यय।
निपान (न.) कुएँ का हौद। दुधैड़ी।
निपीडित (त्रि.) निचोड़ा गया।
निपुण (त्रि.) प्रवीण। चतुर।
निबन्ध (पुं.) किसी वस्तु का किसी नियत समय पर देने की प्रतिज्ञा। गन्थ या प्रबन्धरचना। मूत्ररोगविशेष। बन्धन। नीम का पेड़। अनाह रोग जिसमें मल-मूत्र रुक जाते हैं।
निबन्धन (न.) हेतु। बाँधना। वीणा का ऊपरी भाग।
निभ (पुं.) वहाना। सदृश। समान।

निभृत (त्रि.) गुप्त। निर्जन। एकान्त। अस्तोन्मुख। विनीत। धी। निश्चल।

निमज्जथु (पुं.) अवगाहन। स्नान करना। चुपचाप स्थित रहना।

निमज्जन (न.) चुप रहना। निश्चल रहना। जल में घुसना।

निमंत्रण (न.) बुलावा। आह्वान।

निमान (न.) मूल्य। मोल।

निमि (पुं.) चन्द्रवंशीय एक राजा का नाम।

निमित्त (न.) हेतु। कारण। चिह्न। होने वाले शुभ अशुभ को बताने वाला। शकुन। उद्देश्य।

निमित्तकारण (न.) न्याय शास्त्र का कारण विशेष। जो निमित्तमात्र हो जैसे घड़ा, दीपक आदि का कुम्हार, चाक, सूत्र आदि निमित्त कारण है। मिट्टी उपादान कारण।

निमिष, **निमेष** } (पुं.) वह समय जितने में आँख का पलक झपकै।

निमीलन (न.) आँख का झपकाना। समेटना।

निम्न (त्रि.) गभीर। नीचा। गहरा। गढ़ा। खोल।

निम्नगा (स्त्री.) नदी। गहरी बहने वाली।

निम्नोन्नत (त्रि.) ऊँचा नीचा। दबा हुआ और उठा हुआ। असम।

निम्ब (पुं.) नीम का पेड़।

निम्लोचन (न.) अस्तप्राय।

नियत (त्रि.) निश्चित। पक्का। नित्य। आचार वाला। नियम वाला। नित्य का काम।

नियति (स्त्री.) नियम। भाग्य।

नियन्तृ (पुं.) सारथि। गाड़ीवान्। प्रभु। दण्ड देने वाला।

नियन्तृत (त्रि.) अबाध। रुका हुआ। भले प्रकार वश में किया गया।

नियम (पुं.) प्रतिज्ञा। निश्चय। व्रत। शौच। सन्तोष। तप। वेदाध्ययन। ईश्वर में चित्त लगाना।

नियामक (पुं.) आज्ञादाता। स्वामी। माँझी।

नियुत (न.) दस लाख।

नियोग (पुं.) अवधारण। जताना। काम। काम में लगाना।

नियोग्य (त्रि.) प्रभु। स्वामी।

नियोज्य (त्रि.) जिसे काम दिया जा सकता है। भेजने योग्य। नौकर। दास। परिचारक।

नियोजन (न.) लगाना। आज्ञा देना। मिलाना। स्थिर करना।

निर् (अव्य.) निषेध। नहीं। निश्चय। बाहिर।

निरंश (त्रि.) अंशरहित। पतित।

निरग्नि (पुं.) अग्निरहित। अग्नि द्वारा किये जाने वाले वैदिक कर्म्मों से रहित।

निरङ्कुश (त्रि.) जो अङ्कुश से भी न माने। जो वश में न हो। वज्रहठी।

निरञ्जन (त्रि.) निर्मल। परब्रह्म।

निरतिशय (त्रि.) परमोत्कृट। सर्वोत्तम। जिससे बढ़ कर कोई न हो।

निरत्यय (त्रि.) नाशरहित। न रुकने वाला। अमायिक। छलरहित।

निरन्तर (त्रि.) लगातार। निविड। सघन।

निरपत्रप (त्रि.) निर्लज्ज।

निरर्गल (त्रि.) न रुकने वाला। अबाध।

निरर्थक (त्रि.) व्यर्थ। निष्प्रयोजन।

निरवग्रह (त्रि.) बेरोक।

निरवद्य (त्रि.) दोषरहित। अच्छा।

निरवयव (पुं.) आकाररहित।

निरवशेष (त्रि.) सब। सारा।

निरवसित (त्रि.) चाण्डाल आदि नीच वर्ण।

निरसन (न.) परित्याग। छोड़ना। मारना। निकालना। तिरस्कार करना।

निरस्त (त्रि.) थूका गया। चोटिल किया गया। तिरस्कृत।

निराकरण (न.) निवारण। दूर करना। तिरस्कार करना।

निराकरिष्णु (त्रि.) निकाल देने वाला।

निराकृति (स्त्री.) हटाव। निवारण।

निरामय (त्रि.) रोग से निकला। रोग रहित। वन का बकरा और सूकर।

निरुक्त (न.) वेद का एक अङ्ग विशेष। कहा हुआ। निश्चय किया हुआ।

निरुक्ति (स्त्री.) निर्वचन। कथन। निश्चय।

निरुपाख्य (त्रि.) अस्फुट स्वरूप।
निरूढ (पुं.) अविवाहित।
निरूढलक्षणा (स्त्री.) शक्तितुल्या। लक्षणा।
निरुढि (स्त्री.) प्रसिद्धि। ख्याति।
निरूपण (न.) तत्त्वज्ञान के अनुकूल शब्द का प्रयोग करने वाला विचार।
निरूपित (त्रि.) वर्णित। नियुक्त। रचित।
निरोध (पुं.) नाश। प्रलय। प्रतिरोध। रोक।
निरोधन (न.) कारागार में बन्द कर के रोकना। बन्द करना।
निर्ऋति (पुं.) दक्षिण और पश्चिम दिशा का पति। अलक्ष्मी। जहाँ अवश्य घृणा उत्पन्न हो। निरुपद्रव।
निर्गुण (पुं.) सम्पूर्ण धर्मों से शून्य। गुणहीन। मूर्ख। प्राकृत गुणरहित ईश्वर।
निर्गुण्डी (स्त्री.) नीरस। सूखा। कमल की जड़। कली। सिन्धुवार का पेड़।
निर्ग्रन्थ (पुं.) क्षपणक दिगम्बर। ज्वारी। निर्धन। मूर्ख। असहाय। वैरागी। मुनि विशेष।
निर्ग्रन्थिक (पुं.) निर्गुण। कौपीन तक न पहिनने वाला। ग्रन्थिहीन।
निर्घात (पुं.) दो पवनों के टकराने से उत्पन्न शब्द। नाश। तूफान्। भूकम्प।
निर्घृण (त्रि.) निर्दयी। दयाशून्य।
निर्घोष (पुं.) हर तरह का शब्द।
निर्जन (त्रि.) विजन। एकान्त।
निर्जर (पुं.) देवता। अमृत। बुढ़ापे से शून्य।
निर्जरा (स्त्री.) गुर्च। गिलो। तालपर्णी।
निर्झर (पुं.) झरना।
निर्झरिणी (स्त्री.) नदी।
निर्णय (पुं.) निश्चय। ज्ञान। निष्कर्ष। निचोड़।
निर्णिक्त (त्रि.) सफा। संशोधित। संस्कारित।
निर्णेजक (पुं.) धोबी। साफ करने वाला।
निर्दहन (पुं.) अग्निरहित।
निर्दिष्ट (त्रि.) उपदिष्ट। बतलाया हुआ। ठहराया हुआ। कहा हुआ। दिखलाया हुआ।
निर्देश (पुं.) शासन। आज्ञा। वेतन। "कालतेव प्रतीक्षेत निर्देशं भृतको यथा।" देश से बाहिर हुआ।
निर्धन (पुं.) धन से रहित। गरीब।
निर्धारण (न.) पृथक्करण। निश्चय करना।
निर्धारित (त्रि.) निश्चय किया हुआ।
निर्द्वन्द्व (त्रि.) द्वन्दों से रहित। बेफिक्र।
निर्बन्ध (पुं.) हठ। प्रार्थना। आग्रह। अभिनिवेश।
निर्बाध (त्रि.) निरुपद्रव। बाधाशून्य। कष्टरहित।
निर्भय (पुं.) भयरहित। अच्छा घोड़ा।
निर्भर (न.) अवलम्बित। अतिमात्र।
निर्मक्षिक (अव्य.) मक्खी का अभाव। एकान्त।
निर्म्मम (त्रि.) ममताशून्य।
निर्म्मल (त्रि.) शुद्ध। मलरहित।
निर्म्माल्यम् (न.) देवोच्छिष्ट। विष्णु के सिवाय अन्य देवताओं को अर्पण किया पदार्थ जो उनका जूठा हो चुका हो।
निर्मुक्त (पुं.) बन्धनशून्य। छुटा हुआ।
निर्मोक (पुं.) साँप की केंचुली छोड़ने की क्रिया। सन्नाह। आकाश।
निर्याण (न.) हाथी के नेत्र का एक कोन। पशु के पाँव बाँधने की रस्सी। श्रृंखला। यात्रा। मोक्ष।
निर्यातन (न.) बैर निकालना। लौट कर देना। समर्पण। अमानत देना।
निर्यास (पुं.) गोंद। वृक्ष का रस। काढ़ा।
निर्यूह (पुं.) कील। द्वारा। गोंद। मुकुट। चोटी।
निर्वचन (न.) धातु एवं प्रत्यय के विभाग से अर्थ कहने वाली निरुक्ति। अर्थ का निष्कर्ष।
निर्वपण (न.) बीज बोना। दान। पितृ श्राद्ध।
निर्वर्तित (त्रि.) निष्पादित। अन्त तक पहुँचाया हुआ।
निर्वहण (न.) कथा की समाप्ति। अन्त। नाश। नाटक की एक संधि।
निर्वाण (न.) मोक्ष। छुटकारा। विनाश। गजस्नान। कीचड़। शान्त। विश्रान्त।
निर्वाद (पुं.) लोकापवाद। बदनामी। लोकनिन्दा।
निर्वापण (न.) मार डालना। देना।
निर्वासन (न.) निकालना। देशनिकासा देना। मारना। विसर्जन। छोड़ना।
निर्वाह (पुं.) कार्यसम्पादन। निष्पत्ति। अन्त। जीविका।

निर्विकल्प (त्रि.) जानने योग्य ज्ञान। अलौकिक अनुभव रूप ज्ञान।
निर्विकार (पुं.) विकार अथवा परिवर्तन रहित। परमात्मा।
निर्बीजा (स्त्री.) एक प्रकार की सांख्यमतानुसार समाधि। बेदाना।
निर्वृत्ति (स्त्री.) सुस्थिति। आराम से रहना। मोक्ष। छुटकारा।
निर्वृत्त (त्रि.) निष्पन्न। पूरा किया हुआ।
निर्वेद (पुं.) अनुपाय। अवमान। उदासी। वैराग्य।
निर्वेश (पुं.) भोग। वेतन। विवाह। प्राप्ति।
निर्व्यूढ (त्रि.) त्यक्त। असमाप्त। पूरा दिखलाया गया।
निर्हार (पुं.) तीर के निकालने की क्रिया। मल मूत्रादि का त्याग। मृतकक्रिया समूलोत्पाटन। छोड़ना। इच्छानुसार लगाना।
निर्हारिन (पुं.) शव को जलाने के लिये ले जाने वाला।
निर्ह्राद (पुं.) शब्द।
निलय (पुं.) घर। आवासस्थान। रहने की जगह।
निवपन (न.) पिता आदि के नाम पर किसी वस्तु का देना।
निवर्त्तन (न.) हटाना। सौ वर्ग गज भूमि।
निवर्हण (न.) मारना।
निवसति (स्त्री.) गृह। घर।
निवसथ (पुं.) ग्राम। गाँव।
निवसन (न.) घर। कपड़ा।
निवह (पुं.) समुदाय। समूह। झुण्ड।
निवात (पुं.) वातरहित देश। कवच।
निवातकवच (पुं.) एक देव। प्रह्लाद का पुत्र।
निवाप (पुं.) पितरों के लिये दान।
निवास (पुं.) घर। आसरा।
निविड (त्रि.) घन। मोटा।
निवीत (न.) कण्ठ में पड़ा हुआ जनेऊ। कपड़े पहने हुए।
निवृत्त (न.) निरत। हटा हुआ। लौट गया। चुपचाप।
निवृत्ति (स्त्री.) उपरम। हटना। विरति।
निवेदन (न.) सम्मानपूर्वक विज्ञप्ति।
निवेश (पुं.) विन्यास। धरना। छावनी। विवाह। स्थान।
निवेशन (न.) घर। प्रवेश। रहना।
निशू (स्त्री.) रात। हल्दी।
निशा (स्त्री.) रात। हल्दी। मेष आदि राशि समूह।
निशाकर (पुं.) चन्द्रमा। मुर्गा।
निशाचर (पुं.) राक्षस। उल्लू। साँप। पिशाच। चकवा। चोर। रात को विचरने वाला।
निशान (न.) तीक्ष्णीकरण। तेज करना।
निशान्त (न.) घर।
निशापति (पुं.) चन्द्रमा।
निशीथ (पुं.) आधीरात। रात।
निशीथिनी (स्त्री.) रात।
निशुम्भ (पुं.) शुम्भ दैत्य का भाई। एक दैत्य। मलना।
निश्चल (पुं.) संशयरहित सिद्धान्त। निर्णय पक्का।
निश्चल (त्रि.) स्थिर। पक्का। भूमि। (स्त्री.) शालपर्णी।
निश्वास (पुं.) साँस।
निषङ्ग (पुं.) तर्कस।
निषङ्गिन् (त्रि.) धनुषधारी।
निषद्या (स्त्री.) हाट। बाजार। दूकान। छोटा खटोला। मण्डी।
निषद्वर (पुं.) कीच। कामदेव।
निषध (पुं.) कठिन। एक देश। निषाद स्वर।
निषाद (पुं.) वीणा या गले का स्वर। चाण्डाल। वर्णसङ्कर विशेष।
निषादिन् (पुं.) महावत। हस्तिप।
निषिद्ध (त्रि.) बुरा। रोका हुआ। हटाया हुआ।
निषेक (पुं.) गर्भाधान।
निष्क् (क्रि.) मापना।
निष्क (पुं.) सोलह माशे की तौल। १०८ रत्ती भर सोना। सोने का बर्तन।
निष्कर्ष (पुं.) निचोड़। निश्चय। सार। तत्त्व।
निष्कल (त्रि.) कलाशून्य। जो हुनर न जानता हो। (पुं.) आश्रय।
निष्कासित (त्रि.) निकाला हुआ।
निष्कुट (पुं.) घर के पास का उपवन। खेत। अन्तःपुर। (स्त्री.) इलायची।

निष्कुषित (त्रि.) खण्डित। तोड़ा। गया। खाल उतार गया।

निष्कृति (स्त्री.) छुटकारा। मुक्ति।

निष्कृष्ट (त्रि.) निकाला गया। खींचा गया। सारांश। निचोड़।

निष्कोषण (न.) भीतर के हिस्सों या अंगों को बाहर निकालना।

निष्क्रमण (न.) बाहर निकलना। एक वैदिक संस्कार।

निष्क्रय (पुं.) बिक्री। तनख्वाह।

निष्क्रान्त (त्रि.) निकला।

निष्क्रिय (त्रि.) बेकार। कुछ न करने वाला।

निष्क्वाथ (पुं.) रसा। जूस।

निष्ठा (स्त्री.) निश्वास। दृढ़ता। अन्त।

निष्ठीवन (न.) थूक। खखार।

निष्ठुर (न.) निठुर। बेरहम।

निष्ठ्यूत (त्रि.) फेंका गया। थूका गया।

निष्णात (त्रि.) पारंगत। निपुण। नहाया हुआ।

निष्पत्ति (स्त्री.) निपटेरा। समाप्ति। सिद्धि।

निष्पदयान (न.) नौका। नाव।

निष्पन्न (त्रि.) पूर्ण। समाप्त। सिद्ध।

निष्परिग्रह (त्रि.) सन्यासी। परमहंस। अपने पास कुछ न रखने वाला।

निष्पादन (न.) सम्पादन। पूर्ण करना।

निष्पादित (त्रि.) समाप्त किया गया। पूरा किया गया।

निष्पाप (त्रि.) पापरहित।

निष्प्रतिभ (त्रि.) मूर्ख। जड़।

निष्प्रभ (त्रि.) प्रभारहित। फीका।

निष्फल (त्रि.) बेकार। व्यर्थ। वृथा।

निस् (अ.) निषेध। सफलता। निश्चय। पूरा पूरा।

निसर्ग (पुं.) स्वभाव। रूप।

निसूदन (न.) मारना। जान लेना।

निसृष्ट (त्रि.) न्यस्त। मध्यस्थ। पैदा किया। छोड़ा।

निसृष्टार्थ (पुं.) दोभाषिया।

निस्तत्त्व (त्रि.) तत्त्वशून्य। असार।

निस्तरण (न.) उपाय। निस्तार। तैरना।

निस्तल (त्रि.) गोल। बे पेंदे का।

निस्तार (पुं.) उद्धार। उबार। छुटकारा।

निस्तुषित (त्रि.) त्यागा हुआ। त्वचाहीन।

निस्तेज (त्रि.) तेज रहित।

निस्तोद (पुं.) पीड़ा। व्यथा। ८५।

निस्त्रिंश (पुं.) खड्ग। खाँड़ा।

निस्त्रैगुण्य (त्रि.) निष्काम।

निस्नेह (त्रि.) रूखा। बेमुरौवत।

निस्पन्द (पुं.) धड़कन। हिलना।

निस्पृह (त्रि.) लापर्वाह। कोई चाह न रखने वाला।

निस्यन्द (पुं.) टपकना। बहना।

निस्राव (पुं.) चावल का माँड़।

निस्व (त्रि.) उत्साहरहित। कंगाल। निर्धन। निर्बल।

निस्वन (पुं.) शब्द।

निस्सारित (त्रि.) निकाला गया।

निस्सीम (त्रि.) सीमारहित। बेहद।

निहत (त्रि.) मारा गया।

निहनन (न.) वध करना। मार डालना।

निहन्ता (त्रि.) मारने वाला।

निहव (पुं.) बुलाना। पुकारना।

निहित (त्रि.) भीतर रक्खा हुआ।

निह्नव (पुं.) छिपाना। कपट।

निह्नुत (त्रि.) छिपाया गया।

निह्राद (पुं.) अस्पष्ट भारी शब्द।

नीकार (पुं.) तिरस्कार।

नीकाश (पुं.) निश्चय। समान।

नीच (त्रि.) छोटी जाति का और छोटे खोटे हृदय का।

नीचीन (त्रि.) अधोमुख। औंधा।

नीचैः (अ.) नीचे। थोड़ा। क्षुद्र।

नीड़ (पुं.) झोंझ। घोंसला।

नीड़ज (पुं.) पक्षी। चिड़िया। घोंसले में पैदा होने वाला।

नीत (त्रि.) लाया गया। पहुँचाया गया।

नीति (स्त्री.) एक शास्त्र। न्याय। उचित व्यवहार।

नीतिशात्र (न.) नीति के ग्रन्थ।

नीतिज्ञ (त्रि.) नीति को जानने वाला।

नीप (पुं.) कदम्ब। नीला। अशोक। दुपहरिया।

नीयमान (त्रि.) पहुँचाया जा रहा। लिया जा रहा।

नीर (न.) जल। रस।

नीरज (न.) कमल। मोती। जलजीव।(त्रि.) रज से रहित।

नीरद (पुं.)बादल।मोथा।(त्रि.)बे दाँत वाला।
नीरधि, नीरनिधि (पुं.) समुद्र।

नीरन्ध्र (त्रि.) गाढ़ा। घना। छिद्र रहित।

नीरस (त्रि.) रूखा। रसहीन।

नीराजन (न.) आरती उपतारना।

नीरुक् (पुं.) रोगरहित। आराम।

नील (पुं.) नीला। वानर विशेष। निधि विशेष। पर्वत विशेष। लाञ्छन। कलंक। नीलम मणि।

नीलक (न.) काला नमक।

नीलकण्ठ (पुं.) महादेव। एक पक्षी। पपीहा। मोर।

नीललोहित (पुं.) महादेव। काला और लाल मिला हुआ रंग।

नीलाम्बर (पुं.) बलदाऊजी। शनैश्चर। राक्षस। (न.) नीले रंग का कपड़ा।

नीलोत्पल (न.) नीले रंग का कमल।

नीवार (पुं.) तृणधान्य। तिन्नी के चाव।

नीवी (स्त्री.) पूँजी। स्त्रियों के लहँगे का नाला।

नीवृत् (पुं.स्त्री.) जनपद। देश।

नीशार (पुं.) पर्दा। कनात। तंबू।

नीहार (पुं.) कुहासा। कुहरा।

नु (अ.) तर्कणा। विकल्प। अपमान। अनुनय। प्रश्न। कारण। व्यतीत।

नुति (स्त्री.) स्तुति। पूजा।

नुत्त (त्रि.) प्रेरित।

नुन्न (त्रि.) अस्त। प्रेरित। निरस्त।

नूतन (त्रि.) नया।

नूत्न (त्रि.) नया।

नूद (पुं.) शहतूत का दरख्त।

नून (त्रि.) समूचा।

नूनम् (अ.) निश्चय। तर्कणा। स्मरण। उत्प्रेक्षा। वचनपूर्ति।

नूपुर (पुं.) नेवर। बिछिया।

नृ (पुं.) पुरुष। मनुष्य।

नृकरोटिका (स्त्री.) मनुष्य की खोपड़ी।

नृकरोटिका (स्त्री.) मनुष्य की खोपड़ी।

नृग (पुं.) एक बड़े दानी राजा।

नृति (स्त्री.) नाचना।

नृत्त, नृत्य (न.) ताल लय के साथ नाचना।

नृप (पुं.) राजा।

नृपति (पुं.) राजा। कुबेर।

नृपशु (पुं.) पशु की तरह विवेकरहित मनुष्य।

नृपाध्वर (पुं.) राजसूय यज्ञ।

नृशंस (त्रि.) क्रूर। नीच। खूनी।

नृसिंह (पुं.) विष्णु का एक अवतार। मनुष्यों में शेर।

नेजक (पुं.) धोबी।

नेता (त्रि.) अगुआ। मुखिया। मालिक।

नेत्र (न.) मथानी की रस्सी। आँख। रथ।

नेत्रच्छद (पुं.) पलकें।

नेत्रबन्ध (पुं.) आँखमिचौनी का खेल।

नेत्राम्बु (न.) आँसू।

नेदिष्ठ (त्रि.) अत्यन्त निकटवर्ती।

नेदीयान् (त्रि.) बहुत ही नजदीकी।

नेप (पुं.) पुरोहित।

नेपथ्य (न.) रंगभूमि। स्टेज। वेशभूषा बनाने का स्थान।

नेपाल (पुं.) नैपाल देश।

नेम (पुं.) समय। अवधि। खण्ड। प्रकार। छल कपट। गढ़ा।

नेमि (स्त्री.) गरारी। पहिये की लकीर। जैनियों के एक देवता।

नैमिश (न.) नैमिषारण्य (नीमखार) क्षेत्र।

नेमी (स्त्री.) पहिये की लकीर। गरारी।

नेष्ट (त्रि.) निषिद्ध। अप्रिय। नापसन्द।

नैकट्य (न.) निकटता।

नैकृतिक (त्रि.) चुगलखोर।

नैगम (पुं.) उपनिषद्। ब्रह्मविद्या। बनिया। व्यापारी।

नैज (त्रि.) अपना।

नैत्य (न.) नित्यता।

नैपुण्य (न.) निपुणता। चातुरी।

नैमित्तिक (त्रि.) विशेष कारण से होने वाला (कर्म)।

नैमिष (न.) नीमखार क्षेत्र। नैमिषारण्य। वायुपुराणोक्त वह स्थान, जहाँ ब्रह्मा का दिया हुआ मानसचक्र आरा टूट कर गिर गया और तपस्या आदि के लिये सर्वोत्तम स्थान माना गया। "निमिःशीर्यत्यस्मिन्।"

नैयायिक (त्रि.) न्याय शास्त्र को पढ़ने या जानने वाला।

नैरन्तर्य (न.) निरन्तरता। अखण्डता।

नैराश्य (न.) नाउम्मैदी। आशा न रहना।

नैरुक्त (पुं.) निरुक्तसम्बन्धी।

नैर्ऋत (पुं.) राक्षस। पश्चिम-दक्षिण दिशा के स्वामी।

नैर्गुण्य (न.) निर्गुणता। मुक्ति।

नैवेद्य (न.) निवेदन (अर्पण) करने की सामग्री। भगवान् का भोग।

नैश (त्रि.) रात का।

नैषध (पुं.) महाराज नल। श्रीहर्ष कविराज का बनाया महाकाव्य।

नैष्कर्म्य (न.) कर्म न करना। बेकाम रहना।

नैष्ठिक (पुं.) बालब्रह्मचारी।

नैसर्गिक (त्रि.) स्वाभाविक। स्वभावसिद्ध।

नो (अ.) नहीं। अभाव। निषेध।

नोचेत् (अ.) नहीं तो।

नोदना (स्त्री.) प्रेरणा।

नौ (स्त्री.) नाव। बेड़ा।

नौका (स्त्री.) नाव।

नौकादण्ड (पुं.) डाँड़।

न्यक्कार (पुं.) अनादर। धिक्कार।

न्यग्रोध (पुं.) बर्गद का पेड़।

न्यङ्कु (पुं.) मुनिविशेष। बारहसिंगा।

न्यञ्चित (त्रि.) औंधा।

न्यस्त (त्रि.) रक्खा गया। त्यक्त।

न्यस्तदण्ड (पुं.) संन्यासी।

न्यस्तशस्त्र (त्रि.) त्यक्तशस्त्र। निहत्था।

न्याय (पुं.) उचित। इन्साफ। नीति। छः दर्शन शास्त्रों में से एक दर्शन शास्त्र।

न्याय्य (त्रि.) युक्तियुक्त। मुनासिब।

न्यास (पुं.) धरोहर। अमानत। संन्यास। रखना।

न्युब्ज (पुं.) कुशनिर्मित स्रुवा। (न.) कमरख। (त्रि.) कुबड़ा। औंधा।

न्यून (त्रि.) कम। निन्दा योग्य।

प

प पीना। बचाना। वायु। पत्ता। अण्डा।

पक्व (त्रि.) पका हुआ। दृढ़।

पक्कण (न.) भील का घर। चाण्डाल की झोपड़ी।

पक्ष (पुं.) १५ दिन। पखवाड़ा। पंख। सहाय। तरफ।

पक्षक (पुं.) खिड़की। पक्खा या कोट। दीवार।

पक्षति (स्त्री.) पखवाड़े की आरम्भ तिथि। पड़वा। प्रतिपदा तिथि। पक्षियों के पंखों की जड़।

पक्षपात (पुं.) तरफदारी। पक्ष का गिर जाना। पंख झड़ जाना।

पक्षान्त (पुं.) अमावस और पूर्नो का दिन। जिसमें पखवाड़ा समाप्त हो।

पक्षिल (त्रि.) सहायता देने वाला। वात्स्यायन मुनि।

पक्षी (पुं.) चिड़िया। तीर। पखवाड़े वाला। महीना।

पक्ष्म (न.) पलक।

पङ्क (पुं.न.) कीचड़। पाप।

पङ्कज (न.) कमल। (त्रि.) जो कीचड़ में पैदा हो।

पङ्किल (त्रि.) मैला। कीचड़ वाला।

पङ्करुह (न.) कमल। सारस पक्षी।

पङ्क्ति (स्त्री.) पाँति। कतार। श्रेणी।

पङ्क्तिदूषक (पुं.) धूर्त। चार आदमियों में न बैठने लायक। अनाचारी। जिसके साथ भोजन करने से भ्रष्टता हो जाय।

पङ्क्तिपावन (पुं.) विद्वान्। गुणी। सदाचारी जिसके साथ भोजन को बैठने वाले पवित्र हो जायँ।

पङ्क्तिशः (अ.) कतार की कतार। अनुक्रम से।

पङ्गु (त्रि.) लँगड़ा। (पुं.) शनैश्चर ग्रह।

पचन (न.) पकाना। अन्नादि का पचना।

पज्ज (पुं.) शूद्र।

पञ्चक (न.) पाँच का समूह। धनिष्ठा के उत्तरार्ध से रेवती तक पाँच नक्षत्र।

पञ्चकषाय (पुं.) जामुन। सेमर। बेर आदि पाँच कसैली चीजें।

पञ्चकोष (पुं.) अन्नमय। प्राणमय। मनोमय। विज्ञानमय और आनन्दमय-ये शरीर के भीतरी पाँच भाग।

पञ्चगव्य (न.) गौ की पाँच चीजें-दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोबर। त्रिवर्ण इसको पी कर अपनी देहशुद्धि मानते हैं।

पञ्चचूड़ा (स्त्री.) एक अप्सरा।

पञ्चजन (पुं.) एक दैत्य। पाँच आदमी। पुरुष।

पञ्चतत्त्व (न.) पाँच तत्त्व-पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश।

पञ्चवटी (स्त्री.) दण्डकारण्य का एक स्थान। जहाँ वनवास में रामचन्द्र ने निवास किया था। सीताहरण का स्थान।

पञ्चबाण (पुं.) पाँच बाण वाला। कामदेव के पाँच बाण ये हैं-

"अरविन्दमशोकञ्च चूतं च नवमल्लिका।
नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्च बाणस्य सायकाः।।"

अर्थात्- कमल, अशोक, आम, नयी मालती (मधुमालती) और नीले रंग का कमल ये पाँच बाण हैं। अथवा-

"उन्मादनस्तापनश्च स्तम्भनः शोषणस्तथा।
सम्मोहनश्च कामस्य पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः ।।"

अर्थात्- पागल कर देना। सन्तप्त कर देना। कर्तव्यशून्य करना। शरीर सुखा देना और मोहित (आशक) कर देना ये पाँच बाण हैं। कामदेव।

पञ्चशाख (पुं.) पन्शाखा। हाथ।

पञ्चसूना (स्त्री.) चूल्हा, चक्की, बुहारी, लीपना और चलना-इनसे होने वाली जीवों की हत्या।

पञ्चाग्नि (पुं.) चारों तरफ आग जला कर ऊपर से सूर्य का ताप सहना। पाँच आगें तपस्वी गरमी में दोपहर के वक्त तापते हैं।

पञ्चाङ्ग (न.) जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण ये पाँच अङ्ग हों। पत्रा। तिथिपत्र। (पुं.) कछुआ। (त्रि.) पाँच अंग वाला।

पञ्चामृत (न.) दूध, दही, घी, खाँड़ और शहद पाँचों वस्तु मिलाया हुआ एक पदार्थ।

पञ्चाल (पुं.) पंजाब।

पञ्चाली (स्त्री.) गुड़िया। द्रौपदी। पञ्चाल देश के राजा की कन्या।

पञ्चाशत् (स्त्री.) पचास।

पञ्चेन्द्रिय (न.) पाँच। इन्द्रियाँ-आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।

पञ्जर (पुं.न.) हड्डियों का ढाँचा। पिंजड़ा।

पञ्जी (स्त्री.) सूत की अट्टी। तिथिपत्र। जन्त्री।

पञ्चतय (न.) पाँच की संख्या।

पञ्चतन्मात्र (न.) इन्द्रियों से ग्रहण किये जाने वाले पाँच विषय-शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।

पञ्चत्व (न.) मरण। मृत्यु। पाँच तत्त्वों में लुप्त हो जाना।

पञ्चदश (त्रि.) पन्द्रह।

पञ्चदशी (स्त्री.) वेदान्त का एक ग्रन्थ। पूनों और अमावस्या तिथि। पन्द्रहवीं तिथि।

पञ्चधा (अ.) पाँच तरह।

पञ्चनख (पुं.) पाँच नख वाले व्याघ्र आदि जीव।

पञ्चनदः (पुं.) पंजाब प्रदेश।

पञ्चभूत (न.) पञ्चतत्त्व।

पञ्चम (त्रि.) पाँचवाँ। (पुं.) स्वरविशेष। पंचम राग।

पञ्चमकार (न.) तन्त्रोक्त मद्य-मांस-मुद्रा-मत्स्य-मैथुन।

पञ्चमहायज्ञ (पुं.) स्वाध्याय, अग्निहोत्र, अतिथिपूजन, तर्पण, बलिवैश्वदेव।

पञ्चमास्य (पुं.) कोयल।

पट (पुं.) कपड़ा।

पटकार (पुं.) जुलाहा।

पटकुटी (स्त्री.) तंबू।

पटच्चर (न.) फटा पुराना कपड़ा (पुं.) चोर।

पटल (न.) छत। पर्दा। आँख की बीमारी (फुल्ली)। ग्रन्थ विशेष।

पटह (पुं.न.) ढोल।

पटीर (न.) चलनी। खेत। मेघ। वंशलोचन। कत्था। पेट। कामदेव। चंदन।

पटीयान् (त्रि.) काम करने में होशियार।

पटोल (पुं.) पर्वल।

पट्ट (न.) प्रधान। नगर। चौराहा। पटा। पटड़ा। ढाल। राजा का सिंहासन। रेशम। पीसने का पत्थर।

पट्टज (न.) रेशमी वस्त्र।

पट्टदेवी (स्त्री.) पटरानी।

पट्टन (न.) भारी शहर। बड़ा मुल्क।

पठ् (क्रि.) पढ़ना। बाँचना। पाठ करना।

पड्‌ (क्रि.) जाना।

पण् (क्रि.) व्यवहार करना। मोल लेना और बेचना। स्तुति करना।

पण (पुं.) मूल्य। दाम। ताम्बा। मजदूरी। नियम। व्यवहार। अस्सी कौड़ियाँ। चार काकिनी'

पणन (न.) बेचना।

पणव (पुं.स्त्री.) एक प्रकार का ढोल। "पणवानकगोमुखाः"- भगवद्गीता।

पणाया (स्त्री.) व्यवहार। मण्डी। व्यापार का लाभ। जुआ। स्तुति।

पणायित (त्रि.) सराहा गया। प्रशंसित।

पणितव्य (त्रि.) मोल लेने योग्य। स्तुति करने योग्य।

पण्डित (पुं.) तत्त्व पहचानने वाली बुद्धिवाला। विद्वान्। समझदार।

पण्डितम्मन्य (पुं.) अपने को पण्डित मानने वाला।

पण्यवीथी (स्त्री.) मण्डी। गञ्ज। दूकान। हाट।

पण्यस्त्री (स्त्री.) वेश्या। रण्डी।

पण्याजीव (पुं.) बनिया। व्यापारी।

पत् (क्रि.) जाना। गिरना। नीचे आना।

पतग (पुं.) पक्षी। चिड़िया।

पतङ्ग (पुं.) सूर्य्य। मकरी। पक्षी। महुए का पेड़।

पतञ्जलि (पुं.) मुनिविशेष। व्याकरण के भाष्यकार।

पतत् (पुं.) पक्षी।

पतत्र (पुं.) बाजू। डहना। पर।

पतत्रि (पुं.) पक्षी।

पतत्रिन् (पुं.) पक्षी। पर वाला।

पतद्ग्रह (पुं.) नारद पाञ्चरात्रोक्त पञ्च कटोरी की पूजा में पाँचो पात्रों का जल गिरने का पात्र विशेष। पीकदान। खकारदान। उगालदान।

पतयालु (त्रि.) गिरने वाला।

पताका (स्त्री.) झण्डी। सौभाग्य नाटक का एक अङ्ग। छन्द का एक चक्र।

पताकिन् (त्रि.) पताकाधारी।

पति (पुं.) भर्त्ता। स्वामी। अधिपति। रक्षक।

पतित (त्रि.) गिरा हुआ। नीच। जाति भ्रष्ट।

पतिम्बरा (स्त्री.) अपनी इच्छानुसार पति को स्वीकार करने वाली कन्या। काला जीरा।

पतिवत्नी (स्त्री.) सधवा। सौभाग्यवती स्त्री। मकोव।

पतिव्रता (स्त्री.) सती। पति की आज्ञानुवर्तिनी स्त्री। पति ही का नियम धारणा करने वाली।

पत्ति (पुं.) सेना जिसमें एक रथ, एक हाथी, ३ घोड़े, ३ पैदल सिपाही हों।

पत्नी (स्त्री.) विधिपूर्वक ब्याही हुई स्त्री।

पत्र (न.) चिट्ठी। कागज। पत्ता।

पत्रभङ्ग (पुं.) शरीर को सजाने के लिये चित्रविचित्र लिखने। रचनाविशेष। सजावट।

"कस्तूरीवरपत्रभङ्गनिकरो सृष्टो न गण्डस्थले"

पत्ररथ (पुं.) पक्षी।

पत्रसूचि (स्त्री.) काँटा। कण्टक।

पत्राञ्जन (न.) मसी। स्याही।

पत्रिन् (पुं.) पक्षी। तीर। बाज पक्षी। रथी। पर्वत। ताल।

पथ् (क्रि.) जाना।

पथ (पुं.) मार्ग। रास्ता।

पथिक (पुं.) बटोही। राहगीर। राही।

पथिन् (पुं.) पथ। मार्ग।

पथ्य (त्रि.) रोगी के खाने के योग्य वस्तु। हितकर वस्तु। हर्र का पेड़।

"हरीतकी सदा पथ्या कुपथ्यं बदरीफलम्।"

पद् (क्रि.) गल जाना। हिलना।

पद (न.) श्लोक का चौथा चरण। किरण। स्थान। चिह्न। उद्यम। पाँव। चरण। निश्चय। रक्षा।

पद्ग (त्रि.) पैदल।

पदवि-वी (स्त्री.) पद। रास्ता।

पदाजि (पुं.) पाँव से चलने वाला।

पदाति (पुं.) पैदल।

पदार्थ (पुं.) अभिधेय। वस्तुमात्र। पदों का अर्थ।

पद्गन (पुं.) पैदल।

पद्धति-ती (स्त्री.) पगडण्डी। पथ। रास्ता। पंक्ति। पूजन आदि की विधि की पुस्तक। रिवाज।

पद्म (न.) कमल। सेनाचक्र विशेष। दस अर्ब की संख्या। धातु। पुष्करमूल। सीसा। नाड़ीचक्र।
पद्मकेशर (पुं.) कमल की तिरी।
पद्मगर्भ (पुं.) ब्रह्मा। कमल का मध्य।
पद्मनाभ (पुं.) विष्णु। जिनकी नाभि में कमल हो।
पद्मपुराण (न.) अठारह पुराणों में से एक।
पद्मबन्ध (पुं.) शब्दसम्बन्धी अलङ्कार विशेष।
पद्मबन्धु (पुं.) सूर्य्य। भौंरा।
पद्मभू (पुं.) पद्मोद्भव। ब्रह्मा।
पद्मराग (न.) माणिक। लाल।
पद्मलाञ्छन (पुं.) सूर्य्य। ब्रह्मा। राजा। कुबेर।
पद्मा (स्त्री.) लक्ष्मी। लवङ्ग। मनसा देवी। कुसुम्भ का पुष्प।
पद्मासन (न.) बैठक भेद। आसन विशेष।
पद्मिनी (स्त्री.) कमलों का समूह। कमलों वाला देश। स्त्री विशेष।
पद्मिन् (पुं.) हाथी। कमलों वाला।
पद्मेशय (पुं.) विष्णु।
पद्य (न.) श्लोक। कविता। कवियों की छन्दोबद्ध रचना।
पन् (क्रि.) स्तुति करना।
पनस (पुं.) कटहर। काँटाल। कण्टकीफल।
पन्न (त्रि.) गला हुआ। गिरा हुआ।
पन्नग (पुं.) साँप। सर्प।
पन्नगाशन (पुं.) गरुड़। साँप का खाने वाला। सर्पभोगी।
पन्नद्धा (स्त्री.) पाँव में बाँधी गयी। चर्म्मपादुका। जूती।
पम्पा (स्त्री.) दक्षिणी एक तालाब। पम्पा सरोवर। जहाँ श्रीरामचन्द्र और सुग्रीव की भेंट हुई थी। नदी विशेष।
पय् (क्रि.) जाना।
पय (न.) दूध। जल। पानी।
पयस्य (त्रि.) दुग्धविकार। दही, मलाई इत्यादि। विल्ला। अर्कपुष्पिका और कुटुम्बिनी स्त्री।
पयस्विनी (स्त्री.) दूध वाली। गौ। नदी। काकोली। बकरी। जीवन्ती। रात्रि।
पयोधर (पुं.) मेघ। स्त्री का स्तन। नारियल।
पयोधि (पुं.) समुद्र।
पयोव्रत (न.) बारह दिन का व्रतविशेष जिसमें केवल दूध पिया जाता है।
पर (त्रि.) भिन्न। और। दूसरा। अगला। दूर। सर्वोत्तम। छुटकारा। केवल। (न.) ब्रह्म। (पुं.) शत्रु।
परःशत (न.) सौ से अधिक।
परःश्वस् (अव्य.) परसों का दिन।
परःसहस्र (न.) एक हजार से ऊपर की गिन्ती।
परकीय (त्रि.) दूसरे का। (ा) (स्त्री.) उपनायिका।
परच्छन्द (पुं.) दूसरे की इच्छा। पराधीन।
परजात (त्रि.) दूसरे से उत्पन्न।
परतंत्र (त्रि.) पराधीन। दूसरे के अधीन।
परत्व (न.) वैशेषिक मतानुसार सिद्ध गुण विशेष एवं भेद।
परपिण्डाद (त्रि.) परान्नोपजीवी। दूसरे के अन्न से जीने वाला।
परपुष्ट (पुं.) कोइल (स्त्री.) वेश्या।
परपूर्वा (स्त्री.) दूसरा पति करने वाली स्त्री।
परभाग (पुं.) दूसरे का हिस्सा।
परभृत् (पुं.) काक। कौवा।
परम् (अव्य.) नियोग। क्षेप। केवल। अनन्तर।
परम (त्रि.) प्रधान। उत्कृष्ट। बड़ा। पहला। ओंङ्कार।
परमम् (अव्य.) अनुज्ञा। स्वीकार करना।
परमर्षि (पुं.) ब्रह्मवेत्ता। श्रेष्ठ सन्त।
परमहंस (पुं.) कुटीचक आदि संन्यासियों में से एक प्रकार का सबसे ऊँचा अन्तिम श्रेणी का संन्यासी।
परमाणु (पुं.) बहुत मिहीन अणु।
परमात्मन् (पुं.) परब्रह्म।
परमान्न (न.) खीर। दूध में पका हुआ अन्न। क्षीरान्न। देवप्रिय होने से परम संज्ञा है।
परमायुस् (न.) १०० वर्ष की पूरी आयु।
परमेश्वर (पुं.) जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और पालन का हेतु अर्थात् परमात्मा। चक्रवर्ती राजा।
परम्परा (स्त्री.) वंश। व्यवधान। सन्तति।

परम्पराक (न.) यज्ञार्थ पशुहनन।
परम्परीण (त्रि.) क्रमागत। अविच्छेद्य। सन्तत। त्याग।
परवश (त्रि.) पराधीन।
परवत् (त्रि.) परवश। दूसरे के अधीन।
परशु (पुं.) कुल्हाड़ा।
परशुराम (पुं.) जमदग्निपुत्र। एक ऋषि। भगवान का चौबीस में से एक अवतार।
परश्वधः (पुं.) कुल्हाड़ा।
परस्पर (त्रि.) आपस में।
परस्मैपदः (न.) जिससे दूसरे के लिये फल का ज्ञान हो। व्याकरण में कथित तिप् आदि।
परा (अव्य.) उलटा। बड़ाई। बुरे वचन कहना। सामने। देना। बहादुरी। नितान्त। जाना। टूटना। तिरस्कार। लौटना।
पराक (पुं.) व्रतविशेष। स्वंग। रोग विशेष। छोटा।
पराक्रम (पुं.) बल। जोर। वीरता।
पराग (पुं.) पुष्परज। उपराग। चन्दन।
पराङ्.मुख (त्रि.) विमुख। मुँह मोड़े। नाराज।
परांचित (त्रि.) दूसरे द्वारा घिरा या पुष्ट हुआ। दूसरे से पाला हुआ।
पराचीन (त्रि.) पराङ्मुख। परकालिक। पुराना।
पराजय (पुं.) पराभव। तिरस्कार। दबाव। विनाश।
परामर्श (पुं.) युक्ति। विवेचन। सलाह।
परायण (न.) तत्पर और प्रिय।
परारि (अव्य.) व्यतीत तृतीय वर्ष। बड़ा शत्रु।
परार्द्ध (न.) चरम संख्या। ब्रह्मा की आयु का आधा भाग, उनके ५० वर्ष।
परार्द्धर्च (त्रि.) श्रेष्ठ। बहुत अच्छा।
परावर्तः (पुं.) बदला। बदलना। विनिमय।
पराशर (पुं.) व्यासदेव के पिता का नाम।
परासन (न.) मारना।
परासुः (त्रि.) मरा हुआ। मृत।
परास्त (त्रि.) निरस्त। पराजित।
पराह (पुं.) परदिन। अगला दिन। दूसरा दिन।
पराह्ण (पुं.) दिन का पिछला हिस्सा।
परि (अव्य.) चारों ओर से। बर्जना। बीमारी। शेष। निकालना। पूजा। भूषण। शोक। सन्तोष। वोलना। बहुत। त्याग एवं नियम।
परिकरः (पुं.) परिवार। पर्य्यङ्क। समारम्भ। समूह। विवेक। कमर कसना। साथी।
परिकर्म्मन् (न.) देह का संस्कार। भूषण। उबटन लगाना। सेवक।
परिक्रम (पुं.) परिक्रमा। खेल आदि।
परिक्षित् (पुं.) अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का पुत्र। कुरुवंश का एक राजा। परीक्षित्। इसने पाँच वर्ष की अवस्था में श्रीकृष्ण को परीक्षा से जान लिया था।
परिखा (स्त्री.) खाई।
परिगत (त्रि.) प्रान्त। ज्ञान। विस्मृत। चेष्टित। घिरा हुआ। चला गया।
परिग्रह (पुं.) सेना का पिछला भाग। भार्य्या। परिजन।
परिघः (पुं.) लोहे का मुग्दर। लोहे से मढ़ा हुआ लट्ठ। शूल। घड़ा। घर। योगों में एक योग।
परिचय (पुं.) पहचान। संस्तव। प्रणय।
परिचर्य्या (स्त्री.) सेवा। अधीनता। पूजा।
परिचाय्य (पुं.) यज्ञ की आग।
परिचारक (पुं.) सेवक।
परिच्छदः (पुं.) सामान। परिवार।
परिच्छेद (पुं.) विशेषरूप से सीमा बाँधना। सर्ग। अध्याय। सीमा। विचार।
परिजन (पुं.) परिवार। प्रतिपाल्यजन।
परिणत (त्रि.) परिपक्क। बढ़ा हुआ। किसी काम के अन्तिम फल का लाभ। टेढ़े दाँत चलाने वाला हाथी।
परिणय (पुं.) विवाह।
परिणाम (पुं.) विकार। प्रकृति का अन्यथा भाव। शेष। अर्थालंकार। अन्तिम फल।
परिणाह (पुं.) विस्तार। फैलाव।
परिणेतृ (पुं.) विवाह करने वाला। भर्ता। पति।
परितस् (अव्य.) चारों ओर से।
परिताप (पुं.) तपन। दुःख। शोक। गर्मी। भय। कम्प। नरकविशेष।
परित्राण (न.) रक्षण। बचाना। हटाना।
परिदान (न.) विनिमय। एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु देना।

परिदेवन (न.) बारम्बार सोचना। विलाप। पश्चाताप।

परिधान (न.) पहिनने का कपड़ा। पहिरना।

परिधि (पुं.) चन्द्र अथवा सूर्य का मण्डल। परिवेश। गोल। गूलर वृक्ष की शाखा। चारों ओर। पास।

परिधिस्थ (त्रि.) परिचारक। सेवक। टहलुआ। रथी की रक्षा के लिये रणभूमि में चारों ओर खड़ी सेना।

परिपन (न.) मूलधन। पूञ्जी।

परिपन्थ (पुं.) शत्रु।

परिपन्थिन् (पुं.) चतुराई।

परिपाटि-टी (स्त्री.) अनुक्रम। रीति।

परिप्लव (न.) चञ्चल। अस्थिर।

परिबर्ह (पुं.) राजा के चढ़ने योग्य घोड़ा, हाथी।

परिभ-भा+व (सं.) अनादर। तिरस्कार।

परिभाषण (न.) गालीगलौज। नियम।

परिभाषा (स्त्री.) कृत्रिम संज्ञा विशेष नाम।

परिभूत (त्रि.) तिरस्कृत। अपमानित।

परिमण्डल (त्रि.) गोल आकार का। गोल।

परिमल (पुं.) केसर चन्दनादि का उबटन। सुगन्धित।

परिमाण (न.) माप। बराबरी। प्रमाण। समता। तौल।

परिमित (त्रि.) मापा हुआ। युक्त। ठीक। तौला।

परि-री+रम्भ (पुं.) छाती से लगाना।

परिवर्जन (न.) छोड़ना। देना। मारना।

परि-री+वर्त्त (पुं.) बदली। विनिमय। युगान्त काल। अध्याय आदि।

परिवह (पुं.) सप्तवायु में से एक।

परि-री+वाद (पुं.) अपवाद। निन्दा। बदनामी।

परिवादिनी (स्त्री.) निन्दा करने वाली स्त्री।

परि-री+वाप (न.) मुण्डन। हजामत।

परिवापित (त्रि.) मुड़ा हुआ।

परि-री+वार (पुं.) तलवार की म्यान। परिजन। कुटुम्बी।

परिवित्र (त्रि.) वह भाई जिसके छोटे भाई का विवाह, उसके पूर्व हो गया हो। ऐसी ही ज्येष्ठा भगिनी।

परिवित्ति (पुं.) अविवाहित बड़े भाई का विवाहित छोटा भाई। विवाहित छोटे भाई का अविवाहित बड़ा भाई।

परिवृत (त्रि.) घिरा हुआ। युक्त।

परिवृढ (त्रि.) स्वामी। मालिक।

परिवेदन (न.) बड़े भाई से पहले छोटे का ब्याह हो जाना।

परिवेश (पुं.) घेरा। सूर्य और चन्द्रमा के बिम्ब के चारों ओर कभी २ दिखलाई पड़ने वाला मण्डल।

परिवेषण (न.) परोसना। घेरा घेरना।

परिव्राट् (पुं.) संन्यासी। यती।

परिव्राजक (पुं.) संन्यासी। यती।

परिव्यय (पुं.) चटनी।

परिशङ्कनीय (त्रि.) शंका के योग्य। विश्वास-पात्र नहीं।

परिशिष्ट (न.) बच गया। रह गया। क्रोड़पत्र।

परिश्रम (पुं.) मेहनत।

परिश्रय (पुं.) सभा। समिति। कमेटी।

परिषद् (स्त्री.) सभा। धर्मसभा। विद्वानों की सभा।

परिषद्वल (त्रि.) सभासद्। मेंबर।

परिष्क (त्रि.) परपालित। दूसरे के द्वारा पाला गया।

परिष्कार (पुं.) साफ सुथरा।

परिष्टि (पुं.) कष्ट।

परिष्यन्द (पुं.) धार।

परिष्वंग (पुं.) लिपटना। भेंटना।

परिसर (पुं.) नदी। नगर और पहाड़ के आसपास की जगह। मौत। नियम।

परिसर्ग (पुं.) चारों ओर से लपेटना। चारों ओर जाना।

परिसर्या (स्त्री.) चारों ओर जाना।

परिसंवत्सर (पुं.) पूरा साल।

परिस्कन्द (पुं.) गाड़ी के पीछे दौड़ते चलने वाला नौकर।

परिस्यन्द (पुं.) हिलना। टपकना। सफाई। परिवार। नौकर।

परिहार, परीहार (पुं.) त्यागना। दोष दूर करना।

परिहास, परीहास (पुं.) हँसी। मसखरी।

परीक्षक (त्रि.) परीक्षा लेने वाला। परखैया।
प्रीक्षण (न.) परखना। परीक्षा लेना।
परीक्षा (स्त्री.) परखना। जाँचना। इम्तिहान।
परीक्षित् (पुं.) पाण्डवों के पौत्र का नाम।
परीक्षित (त्रि.) परखा गया। जाँचा गया। समझा गया।
परिताप / **परीताप** (पुं.) पछतावा। गर्मी।
परीप्सा (स्त्री.) जल्दी।
परु (पुं.) अंग। जोड़।
परुत् (अ.) पिछला साल। गत वर्ष।
परुष (त्रि.) कठोर। कड़ा।
परुषेतर (त्रि.) कोमल। नर्म।
परुस् (न.) गाँठ। जोड़।
परेत (त्रि.) मर गया। दूर गया।
परेतर (त्रि.) विश्वासी। विश्वस्त।
परेतराज (पुं.) यमराज।
परेद्यु (अ.) दूसरे दिन। कल।
परोक्षम् (अ.) अपने पीछे। आँखों की ओट में।
परोपकार (पुं.) पराया उपकार। दूसरे की भलाई।
पर्क (पुं.) मेल।
पर्जन्य (पुं.) बादल। इन्द्र।
पर्ण (न.) पत्ते। पर। पंख। पान।
पर्णशाला (स्त्री.) पत्तों की झोपड़ी।
पर्णास (पुं.) तुलसी।
पर्पट (पुं.) पापड़।
पर्यक् (अ.) चारों ओर।
पर्यङ्क (पुं.) खाट। पलँग।
पर्यटक (पुं.) घूमने वाला। यात्री। संन्यासी।
पर्यटन (न.) घूमना। फिरना। यात्रा करना।
पर्यन्त (पुं.) तक। तलक।
पर्यय (पुं.) चक्कर। लौट पौट। अनाचार।
पर्यवधारण (न.) दृढ़ निश्चय। दृढ़ विचार।
पर्यवस्था (स्त्री.) विरोध।
पर्यश्रु (अ.) आँसुओं से तर।
पर्यस्त (त्रि.) उलझापुलझा। अस्तव्यस्त। गिरा हुआ। अस्त हुआ।
पर्याण (न.) घोड़े की काठी।
पर्याप्त (न.) यथेष्ट। काफ़ी।
पर्याय (पुं.) बारी बारी। सिलसिला।
पर्यालोचन (न.) अच्छी तरह देखना-विचारना।
पर्यावृत्त (त्रि.) लौटा हुआ।
पर्यास (पुं.) किनारा।
पर्युक (न.) छिड़कना।
पर्युक्षण (न.) छिड़कना।
पर्युदञ्चन (न.) ऋण। कर्ज़।
पर्युदस्त (त्रि.) निवारित। रोका गया। हटाया गया।
पर्युदास (पुं.) निवारण। रोकना। हटाना।
पर्युषित (त्रि.) बासी।
पर्येषणा (स्त्री.) खोज। तलाश।
पर्वत (पुं.) पहाड़।
पर्वतीय (त्रि.) पहाड़ी।
पर्व (न.) त्यौहार। गाँठ। हिस्सा। खंड। भाग।
पर्वसन्धि (पुं.) जोड़। सूर्य और चन्द्रमा के 'ग्रहण' का समय।
पर्शान (पुं.) खाढ़ी। गुफा।
पर्शु (स्त्री.) पसली।
पर्शुका (स्त्री.) पसली की हड्डी।
पर्षद (स्त्री.) सभा। धर्मोपदेशक पण्डितों का समाज।
पल (न.) एक छोटी तौल। बहुत सूक्ष्म काल। सेकंड। मांस।
पलल (न.) कीचड। मांस।
पलाण्डु (पुं.) प्याज।
पलायन (न.) भागना।
पलाल (पुं.न.) पुआल। पैरा।
पलाश (न.) पत्ता। ढाँक। हरा रंग। राक्षस।
पलिक्नी (स्त्री.) बुढ़िया। बचपन में ही गर्भधारण करने वाली स्त्री।
पलित (न.) बालों का पकना। बदन की झुर्रियाँ।
पल्यङ्क (पुं.) पलँग।
पल्लव (पुं.) वृक्षों की कोपल। नई पत्तियाँ। महावर।
पल्ली (स्त्री.) छोटा गाँव। खेरा।
पवन (पुं.) हवा। (न.) साफ करना।
पवनात्मज (पुं.) हनुमान्। भीमसेन। आग।
पवनाश (पुं.) साँप।
पवमान (पुं.) वायु। हवा।

पवि (पुं.) वज्र। पहिए का 'हाल'।
पवित्र (त्रि.) शुद्ध।
पवित्री (स्त्री.) कुशों की बनी पैंती।
पशु (पुं.) मृग, कुत्ता, बिल्ली आदि जानवर। देवता।
पशुपति (पुं.) महादेव।
पशुराट् (पुं.) शेर। सिंह।
पश्चात् (अ.) पीछे।
पश्चात्ताप (पुं.) पछतावा। सोच।
पश्चार्ध (पुं.) पिछला आधा हिस्सा।
पश्चिम (पुं.) पूर्व के सामने की दिशा। पछाँह।
पश्यतोहर (पुं.) सुनार। गिरहकट।
पश्यन्ती (स्त्री.) नाड़ीविशेष।
पह्लव (पुं.) म्लेच्छों की एक जाति।
पा (क्रि.) पीना, रक्षा करना।
पांशु (पुं.) धूलि। राख। पाप।
पांशुल (त्रि.) मटमैला। पापी।
पाक (पुं.) पकना। एक दैत्य।
पाकशाला (स्त्री.) रसोईघर।
पाकशासन (पुं.) इन्द्र।
पाक्षिक (त्रि.) एक पक्ष का। एक पखवाड़े का।
पाचक (पुं.) रसोंइया।
पाचन (न.) पचाने वाला। चूरन वगैरह।
पाञ्चजन्य (पुं.) विष्णु का शंख।
पाञ्चाल (पुं.) पंजाब।
पाटच्चर (पुं.) चोर।
पाटल (पुं.) गुलाबी रंग।
पाटलिपुत्र (पुं.) पटना शहर।
पाटव (न.) होशियारी। तन्दुरुस्ती।
पाठ (पुं.) सबक। पढ़ना।
पाठक (पुं.) पढ़ाने वाला। ब्राह्मणों की एक जाति।
पाठशाला (स्त्री.) पढ़ने की जगह। मदर्सा। स्कूल।
पाठीन (पुं.) पढ़िना मछली।
पाणि (पुं.) हाथ।
पाणिगृहीती (स्त्री.) भार्या। जोडू।
पाणिग्रहण (न.) हाथ पकड़ना। विवाह संस्कार।
पाणिनि (पुं.) व्याकरण के आचार्य एक प्रसिद्ध मुनि।
पाणिनीय (न.) पाणिनिरचित व्याकरण।
पाणिसर्ग्या (स्त्री.) रस्सी।
पाण्डव (पुं.) राजा पाण्डु के लड़के युधिष्ठिर आदि।
पाण्डु (पुं.) चन्द्रवंशी एक राजा। पीला।
पाण्डुर (पुं.) पीला। काँवर का रोग।
पाण्ड्य (पुं.) एक देश।
पात (पुं.) पतन। गिरना। रक्षित।
पातक (न.) पाप।
पातञ्जल (न.) पतञ्जलि कथित योगशास्त्र।
पाताल (न.) पृथिवी के नीचे का लोक।
पातुक (त्रि.) गिरने वाला।
पात्र (न.स्त्री.) बर्तन। आधार। नाटक में अभिनय करने वाला।
पात्रीय (त्रि.) यज्ञीय द्रव्य।
पाथ (न.) जल। अग्नि। सूर्य।
पाथस् (न.) जल। अन्न। वायु। आकाश।
पाथेय (त्रि.) रास्ते में खाने के लिये भोजन।
पाद (पुं.) चरण। पैर। चतुर्थांश। वृक्ष की जड़।
पादकटक (पुं.) नूपुर। पाँजेब। झाँझन।
पादकृच्छ्र (पुं.) एक प्रकार का व्रत। एक दिवस का उपवास।
पादग्रहण (न.) पालागन।
पादचारिन् (पुं.) पैरों चलने वाला। पैदल।
पादत्राण (न.) जूता। खड़ाऊँ।
पादप (पुं.) पेड़। पीढ़ा।
पादमूल (न.) पैर का तलवा।
पादविक (त्रि.) पथिक। बटोही। पैदल।
पादाङ्गद (न.) बिछिया। पायजेब। झाँझन।
पादात (न.) सैन्य समूह।
पादुका (स्त्री.) जूते। खड़ाऊँ।
पाद्य (न.) पैर धोने का जल।
पान (न.) पीना। शराब। पीने का बर्तन। रक्षा। नहर।
पानगोष्ठी (स्त्री.) शराबियों की मण्डली।
पानभाजन (न.) पानपात्र। मदिरा पीने का प्याला या गिलास।
पानीय (न.) जल। पीने योग्य।
पानीयशालिका (स्त्री.) पौसाला। पौंसला।

पान्थ (पुं.) पथिक। बटोही।
पाप (न.) बुरे कर्म।
पापघ्न (पुं.) पाप नाश करने वाला। तिल।
पापपुरुष (पुं.) पापी जन। दुष्ट कर्म करने वाला मनुष्य।
पापात्मन् (पुं.) पापी।
पाप्मन् (पुं.) पाप।
पामन् (न.) खाज।
पामघ्न (पुं.) गन्धक।
पामन (त्रि.) खजुहा। खाज का रोगी।
पामर (त्रि.) नीच। मूर्ख। खल।
पायस (पुं.) खीर।
पायु (पुं.) गुदा। गुह्यद्वार।
पार (क्रि.) काम समाप्त करना।
पारक्य (त्रि.) परलोक हितकारी कर्म।
पारग (त्रि.) दूसरे पार जाने वाला।
पारण (न.) व्रतोद्यापन। व्रत की समाप्ति में भोजन।
पारतन्त्र्य (पुं.) पराधीनता।
पारत्रिक (त्रि.) परलोक के लिये हितकर।
पारदन्त (पुं.) पारा।
पारदार्य्य (पुं.) परदार गमन।
पारमार्थिक (त्रि.) कल्याण साधक कर्म।
पारम्पर्य्य (न.) लगातार चला आना।
पारलौकिक (त्रि.) दूसरे लोक का।
पारशव (पुं.) दोगला। लोहा। कुल्हाड़े का।
पारसीक (पुं.) देश विशेष। फारसी।
पारस्त्रैणेय (त्रि.) परस्त्री में उत्पन्न पुत्र। जारज।
पारापत (पुं.) कबूतर। परेवा।
पारापा-वा+र (न.) समुद्र। पारावार।
पारायण (न.) किसी ग्रन्थ का साद्यन्त पाठ।
पारावारीण (त्रि.) समुद्र पार जाने वाला।
पाराशर (पुं.) वेदव्यास।
पाराशरिन् (पुं.) भिक्षुक। संन्यासी।
पाराशर्य्य (पुं.) वेदव्यास।
पारिकाङ्क्षिन् (पुं.) मौनव्रतधारी। ब्रह्मज्ञान चाहने वाला।
पारिजात (पुं.) देवताओं का एक वृक्ष। नन्दनकानन का वृक्ष विशेष।
पारिणाष (त्रि.) विवाह के समय प्राप्त धन।
पारिपन्थिक (पुं.) चोर। डाँकू। ठग।
पारिपा-या+त्र (पुं.) मालव देशकी सीमा का एक पर्वत।
पारिपार्श्वक (पुं.) सूत्रधार के पास रहने वाला नट।
पारिप्लव (न.) चञ्चल। आकुल।
पारिभाव्य (न.) जामिन। एक प्रकार की औषधि।
पारिभाषिक (गु.) प्रचलित। चलतू। साधारण। जगत्मान्य। विशेष अर्थवाची।
पारिमाण्डल्य (न.) सर्वत्र विद्यमानत्व। अणु।
पारिमित्य (सं.) सीमा। परिमित स्थान या संख्या।
पारिमुखिक (गु.) मुँह के सामने। समीप।
पारियानिक (पुं.) यात्रा करने की गाड़ी।
पारिरक (पुं.) साधु। तपस्वी।
पारिवित्त्य (गु.) छोटे भाई के ब्याहे जाने पर भी जो बड़ा भाई अनब्याहा रहे।
पारिशील (पुं.) चपाती। रोटी।
पारिषद (त्रि.) सभास्थ। सभ्य। असेसर। राजा का सहचारी।
पारिहार्य्य (पुं.) कड़ा। पहुँची। ककना।
पारिहास्य (न.) हँसी-खेल।
पारी (स्त्री.) हाथी का पैर बाँधने की रस्सी। जल पीने का पात्र। प्याला। घड़ा। दुधेड़ी।
पारीण (त्रि.) पारग। निष्णात।
पारीणह्य (न.) घरेलू सामान। बर्तन आदि।
पारीन्द (पुं.) शेर। बड़ा सर्प।
पारीरण (पुं.) कछुवा। छड़ी। कपड़ा।
पारु (पुं.) सूर्य। अग्नि।
पारुष्य (न.) कड़ाई। निष्ठुरता।
पारेरक (पुं.) अबोध। रहस्यमय। गुप्त।
पार्घट (न.) धूलि।
पार्जन्य (न.) वर्षासम्बन्धी।
पार्थ (पुं.) पृथापुत्र। युधिष्ठिरादि पर विशेष कर अर्जुन।
पार्थक्य (न.) पृथक्त्व। जुदाई। भिन्नता।
पार्थव (न.) बड़प्पन। बहुतायत। चौड़ाई।
पार्थिव (पुं.) पृथिवी का। पृथिवी का अधिपति। राजा।

पार्पर (पुं.) अञ्जलि भर चावल। क्षयरोग। राख। यम का नाम।
पार्यन्तिक (न.) अन्तिम।
पार्वण (त्रि.) पूर्णिमा आदि में होने वाला श्राद्ध विशेष।
पार्वत (पुं.) पहाड़ी। पर्वत-सम्बन्धी।
पार्वती (स्त्री.) हिमालय की कन्या। शिव की स्त्री। पर्वत की वनस्पति।
पार्वतीनन्दन (पुं.) गणेश। कार्तिकेय।
पार्शव (पुं.) कुल्हाड़ा से सुसज्जित सिपाही।
पार्शुका (स्त्री.) पसली।
पार्श्व (पुं.) काँख। बगल। पास। पहिया। चक्र।
पार्षत (पुं.) द्रुपद और उसके पुत्र धृष्टद्युम्न की पदवी।
पार्षद (पुं.) साम्य। सभास्थ जन।
पार्ष्णि (पुं.स्त्री.) गिट्टे के नीचे का भाग। एड़ी सेना का पिछला भाग।
पार्ष्णिग्रह (पुं.) शत्रु जो पीछे हो। सेनापति जो सेना के पिछले भाग का संचालन करता हो।
पाल् (क्रि.) रक्षण करना। पालन करना।
पाल (त्रि.) रक्षा करने वाला। रक्षक।
पालक (पुं.) रक्षक। राजा। चित्रक पेड़।
पालङ्क (पुं.) पलङ्ग। पलकी का साग। कुन्दुरू का वृक्ष।
पालाश (न.) पलाशसम्बन्धी। तेजपात।
पावक (पुं.) आग। बिजली की आग।
पावकी (पुं.) अग्निपुत्र। कार्तिकेय।
पावन (पुं.) अग्नि। व्यासदेव। गोमय। प्रायश्चित्त। गङ्गा। हर्र। तुलसी।
पाश (पुं.) पशु और पक्षियों को फँसाने वाला फन्दा।
पाशक (पुं.) पाँसा।
पाशपाणि (पुं.) वरुण।
पाशुपत (पुं.) व्रतविशेष। अस्त्रविशेष। शिवभक्त।
पाशुपाल्य (न.) पशुओं का पालना। वैश्य जाति का धर्म।
पाश्चात्त्य (त्रि.) पश्चिम देश का।
पाश्या (स्त्री.) बहुत से फन्दे।
पाष-ख+ण्ड (पुं.) ढोंग।
पाषण्डिन् (पुं.) वेदाचारत्यागी। ढोंगी।
पाषाण (पुं.) पत्थर।
पाषाणदारक (पुं.) टाँकी जिससे पत्थर फोड़े जाते हैं।
पि (स्त्री.) जाना।
पिक (पुं.) कोकिल। कोइल।
पिकबन्धु (पुं.) आम का पेड़।
पिङ्ग (पुं.) मूसा। हरताल।
पिङ्गल (पुं.) नाग। रुद्र। सूर्य के समीप रहने वाला। बन्दर। खजाना। एक मुनि। मङ्गलग्रह। छन्दोग्रन्थ का रचयिता। एक आचार्य। नाड़ी। राजनीति। वेश्या (स्त्री.)।
पिङ्गाक्ष (पुं.) शिव। सुदर्शन।
पिचण्ड (पुं.) उदर। पेट।
पिचु (पुं.) कपास। कुष्ठ विशेष।
पिच्व (क्रि.) काटना। छेद करना।
पिच्छ (न.) मोर की पूँछ और चोटी। सिंवल का पेड़। सुपारी। कोष। पंक्ति।
पिज् (क्रि.) चमकना।
पिञ्ज (न.) बल। काफूर। (त्रि.) विकल। (स्त्री) हल्दी। अहिंसा।
पिञ्जट (पुं.) कीचड़।
पिञ्जर (न.) हरताल। सोना। नागकेसर। पिञ्जड़ा। ठइरी। घोड़ा विशेष। पीला और लाल रङ्ग।
पिट् (क्रि.) इकट्ठा होना। शब्द करना।
पिटक (पुं.) डलिया। पिटारी। फोड़ा।
पिठ् (क्रि.) कष्ट उठाना। मारना।
पिठर (पुं.) बर्तन। मथानी। थाली।
पिण्ड (त्रि.) शरीर का एक भाग। घर का एक भाग। श्राद्ध का एक अन्न का बना गोलाकार सामान। हाथी का माथा। मदन पेड़। आजीवन। लोहा।
पिण्डखर्जूर (पुं.) वृक्ष विशेष।
पिण्डयस (न.) तेज लोहा।
पिण्डार (पुं.) क्षपणक। गोप। गूजर।
पिण्डी (स्त्री.) गेंद। चक्र की धुरी। पिंडुरी। अशोक वृक्ष। घर। पीढ़ा। वेदी।
पिण्डीशूर (पुं.) गृहशूर।

पिण्याक (न.) तिलों का चूरा। हींग। खल।
पितामह (पुं.) बाबा। दादा। ब्रह्मा का नाम।
पितृ (पुं.) पिता। बड़े लोग।
पितृकानन (न.) श्मशान।
पितृतीर्थ (न.) गया। तर्जनी और अङ्गूठे का मध्यभाग।
पितृपति (पुं.) यमराज।
पितृपसू (स्त्री.) साँझ। दादी।
पितृयज्ञ (पुं.) पितृतर्पण।
पितृयाण (पुं.) पितरों के जाने का मार्ग।
पितृलोक (पुं.) चन्द्रलोक के ऊपर पितरों के रहने योग्य लोक।
पितृबन्धु (पुं.) पिता के मामा के लड़के।
पितृव्य (पुं.) चाचा। काका।
पितृष्वस्रीय (पुं.स्त्री.) बुआ का बेटा या बेटी।
पितृसन्निभ (पुं.) जो पिता के समान हो।
पित्त (न.) देहस्थ धातु विशेष। गर्मी।
पित्तल (न.) पीतल धातु। पित्त वाले स्वभाव का।
पित्र्य (त्रि.) मधु। मघा नक्षत्र। अमावास्या।
पित्सन् (पुं.) गिरने की इच्छा वाला।
पिधान (न.) परदा। ओढ़ना। पिछौरी।
पिनद्ध (त्रि.) पहना हुआ। बँधा हुआ।
पिनाक (पुं.न.) कमान। धूलि की वर्षा।
पिनाकिन् (पुं.) महादेव।
पिपासा (स्त्री.) पीने की इच्छा। प्यास।
पिपासु (त्रि.) प्यासा।
पिपीलक (पुं.) चेंटा।
पिप्पल (न.) पीपल का पेड़। जल। कपड़े का टुकड़ा। पक्षी।
पियाल (पुं.) वृक्ष विशेष।
पिल (क्रि.) चलाना।
पिव् (क्रि.) सींचना।
पिश (क्रि.) हिस्सा करना।
पिशङ्ग (पुं.) कमल की धूलि के सदृश रङ्ग वाला पीला रङ्ग।
पिशाच (पुं.) देवयोनिभेद।
पिशित (न.) मांस। जटामांसी।
पिशुन (न.) क्रूर। चुगलखोर। केसर। नारद और कौआ।

पिष् (क्रि.) पीसना।
पिष्ट (न.) पीठी। सीसा। दला गया।
पिष्टक (पुं.न.) चावल के चूरे का बना हुआ। पीठी।
पिष्टप (पुं.न.) भुवन। जगत्। सर्ग।
पिष्टात (पुं.) केसर आदि गन्धद्रव्य।
पिस् (क्रि.) जाना। चमकना। सुगन्धि लगाना। बल करना। मारना। देना।
पिहित (त्रि.) छिपा हुआ।
पी (क्रि.) पीना।
पीठ (पुं.न.) पीढ़ा। वेदी। चौकी।
पीड् (क्रि.) वध करना। प्रवेश करना।
पीडन (न.) दबाव। कष्ट। आक्रमण।
पीड़ा (स्त्री.) व्यथा। दुःख।
पीड़ित (त्रि.) दुःखित।
पीत (न.) हल्दी के रङ्ग जैसा।
पीतक (न.) केसर। हरताल। पीतल।
पीतवासस् (पुं.) श्रीकृष्ण।
पीन (त्रि.) स्थूल। मोटा। बूढ़ा। सम्पन्न।
पीनोध्नी (स्त्री.) बहुत मोटे थन वाली गौ।
पीनस (पुं.) नासिका का रोग जिसमें नाक से कीड़े झरते हैं। नाक गल कर गिर जाती है। खाँसी। जुकाम।
पीय् (क्रि.) मोटा होना।
पीवन (त्रि.) स्थूल। मोटा। बल वाला। (पुं.) वायु।
पीवर (त्रि.) युवती गौ। शतपर्णी अश्वगन्धा। स्थूल।
पुंलिङ्ग (न.) पुरुष का चिह्न।
पुंश्चली (स्त्री.) असती स्त्री। दुश्चरित्रा स्त्री।
पुंस् (क्रि.) मलना।
पुंसवन (न.) गर्भ का संस्कार विशेष। दूध।
पुंस्त्व (पुं.) पुरुषत्व। अङ्ग विशेष। शुक्र।
पुक्कस-श (पुं.) चाण्डाल। अधम।
पुंख (पुं.) तीर का सिरा। पूरा।
पुङ्गव (पुं.) बैल। किसी शब्द के पीछे आने पर इसका अर्थ उत्तम होता है जैसे नरपुङ्गव।
पुच्छ् (क्रि.) नापना। मापना।
पुच्छ (न.) पूँछ। दुम।
पुञ्ज (पुं.) राशि। समूह। ढेर।

पुट् (क्रि.) चमकना। जुड़ना। मिलना।
पुट (न.) जायफल। मिट्टी के प्याले। ढँकना। ढ़ोना।
पुटभेद (पुं.) नगर। बाजा। दरार। हवा का बवण्डर।
पुटिका (स्त्री.) इलायची।
पुटितम (त्रि.) गुँथा हुआ। सम्पुट दिया हुआ।
पुट्ट (क्रि.) अपमान करना।
पुड् (क्रि.) मलना। पीसना।
पुण् (क्रि.) धर्मकार्य करना।
पुण्डरीक (पुं.) अग्निकोण का दिग्गज। भेड़िया। चिरा कमल का फूल। दवाई।
पुण्डरीकाक्ष (पुं.) कमल-नयन। श्रीविष्णु। श्रीकृष्ण।
पुण्ड (पुं.) एक प्रकार का गन्ना। माधवी लता। चित्रक। दैत्य विशेष।
पुण्य (न.) अच्छा काम। धर्म।
पुण्यजन (पुं.) राक्षस।
पुण्यजनेश्वर (पुं.) कुबेर।
पुण्यभूमि (स्त्री.) आर्यावर्त्त। विन्ध्य और हिमालय के मध्य की भूमि।
पुण्यश्लोक (त्रि.) जिसका चरित्र पुण्यदायक है। प्रसिद्ध। शुद्धयशस्वी।
"पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः।।"
पुण्याह (न.) पुण्य उपजाने वाला दिन। पवित्र दिन।
पुण्याहवाचन (न.) वैदिक कर्म विशेष।
पुत्तिका (स्त्री.) छोटी मक्खी।
पुत्र (पुं.) बेटा। तनय।
पुत्रक (पुं.) कृत्रिम पुत्र। धूर्त। शरभ। पहाड़ विशेष।
पुत्रदा (स्त्री.) वन्ध्या। कर्कटी। लक्ष्मणकन्द।
पुत्रिकापुत्र (पुं.) पुत्र के अभाव में पुत्र के स्थान में स्वीकृत लड़की। लड़की का लड़का।
पुत्रेष्टि (स्त्री.) पुत्र के लिये यज्ञ।
पुथ् (क्रि.) मारना। हानि पहुँचाना।
पुद्गल (पुं.) परमाणु। शरीर। आत्मा। शिवजी का एक नाम।
पुनःपुनर (अव्य.) धीरे धीरे। बार। बार।
पुनःपुना (पुं.) एक नदी।
पुनःसंस्कार (पुं.) दूसरी बार संस्कार।
पुनर् (अव्य.) भेद। फिर। अधिकार।
पुनरुक्तवदाभास (पुं.) अलङ्कार विशेष।
पुनर्नव (पुं.) नख। नौं।
पुनर्भू (स्त्री.) दुबारा ब्याही हुई। फिर पैदा हुआ।
पुनर्वसु (पुं.) विष्णु। शिव। अश्विनी से सातवाँ नक्षत्र।
पुन्नाग (पुं.) वृक्ष विशेष। श्वेत कमल। जायफल। श्रेष्ठ मनुष्य।
पुन्नामनरक (पुं.) नरक विशेष।
पुमान् (पुं.) पुरुष।
पुरकोट्ट (न.) गढ़ी।
पुरः (अ.) आगे।
पुरःसर (त्रि.) आगे जाने वाला।
पुर (न.) नगर। शहर।
पुरञ्जन (पुं.) जीव।
पुरञ्जय (पुं.) सूर्यवंशी एक राजा। शिव। इन्द्र। (त्रि.) पुर को जीतने वाला।
पुरतः (अ.) आगे।
पुरन्दर (पुं.) इन्द्र। चोर।
पुरद्वार (न.) नगर का सदर फाटक।
पुरन्धि (स्त्री.) उत्साह।
पुरन्ध्रि (स्त्री.) दाई। बहुत परिवार वाली स्त्री।
पुरश्चरण (न.) किसी कार्य की सिद्धि के लिए नियमित देवपूजा। प्रयोग।
पुरस्कार (पुं.) पूजा। इनाम। आगे करना।
पुरस्कृत (त्रि.) आगे किया गया। इनाम को प्राप्त।
पुरस्तात् (अ.) आगे।
पुरा (अ.) पहले।
पुराकथा (स्त्री.) पुरानी कथा।
पुराण (त्रि.) पुराना। (न.) व्यासरचित अट्ठारह ग्रंथ।
पुराणपुरुष (पुं.) विष्णु। (त्रि.) बूढ़ा आदमी।
पुरातन (त्रि.) पुराना।
पुराधिप (पुं.) शहर का हाकिम।
पुरावित् (पुं.) पुरानी बातें जानने वाला। इतिहासज्ञ।
पुरावृत्त (न.) इतिहास। तवारीख।
पुरी (स्त्री.) नगरी।

पुरीतत् (स्त्री.) आँत। नाड़ी।
पुरीष (न.) विष्ठा। मैला।
पुरु (पुं.) चन्द्रवंश का एक राजा। एक दैत्य। एक नदी। स्वर्ग (त्रि.) बहुत।
पुरुष (पुं.) जीव। मर्द।
पुरुषकार (पुं.) पौरुष। हिम्मत। उद्योग।
पुरुषसिंह (पुं.) श्रेष्ठ पुरुष। बहादुर आदमी।
पुरुषार्थ (पुं.) शक्ति। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।
पुरुषोत्तम (पुं.) विष्णु। उत्तमपुरुष।
पुरुहानि (स्त्री.) बड़ी हानि।
पुरुहूत (पुं.) इन्द्र।
पुरूरवा (पुं.) एक चन्द्रवंशी राजा।
पुरोग (त्रि.) अग्रगामी।
पुरोडाश (पुं.) यज्ञ का देव-भाग।
पुरोधा (पुं.) पुरोहित। पाधा।
पुरोभागी (त्रि.) सबसे पहले भाग पाने वाला।
पुलक (पुं.) रोमाञ्च। कीड़ा। मणिचिह्न। अँगूठा। शराब का प्याला। राई। हाथी का भोजन।
पुलस्त्य (पुं.) एक मुनि। रावण और कुबेर का दादा।
पुलह (पुं.) एक मुनि।
पुलाक (पुं.) अन्न-शून्य।
पुलिन (न.) समुद्र नदी आदि का तट।
पुलिन्द (पुं.) चाण्डाल जाति विशेष।
पुलोमजा (स्त्री.) इन्द्र की स्त्री।
पुलोमा (पुं.) एक असुर।
पुष्कर (न.) एक तीर्थ। हाथी की सूँड़। कमल। एक द्वीप। (पुं.) एक दिग्गज। एक राजा। एक पहाड़। एक रोग।
पुष्करिणी (स्त्री.) कमलिनी। तलैया। पालकी।
पुष्कल (न.) बहुत। भरत का पुत्र।
पुष्ट (त्रि.) मजबूत।
पुष्टि (स्त्री.) पुष्ट होना।
पुष्प (प.) फूल। कुबेर का विमान। एक नेत्ररोग। स्त्री का रज।
पुष्पकरण्डक (न.) फूलों की टोकरी। झाबा।
पुष्पचाप (पुं.) कामदेव। फूलों का बना धनुष।
पुष्पदन्त (पुं.) एक दिग्गज। एक विद्याधर जो शिव का भारी भक्त और 'महिम्न' स्तोत्र का रचने वाला हुआ है।
पुष्पपुर (न.) पटना शहर।
पुष्पमास (पुं.) चैत का महीना।
पुष्पलिड् (पुं.) भौंरा।
पुष्पशरासन (पुं.) कामदेव।
पुष्पिताग्रा (स्त्री.) एक छन्द।
पुष्य (पुं.स्त्री.) एक नक्षत्र।
पुष्यलक (पुं.) कस्तूरी मृग।
पुस्त (न.) लिखना। ग्रन्थ। पलस्तर।
पुस्तक (पुं.) पोथी। किताब।
पुस्तिका (स्त्री.) पोथी। किताब।
पूग (पुं.) समूह। सुपारी। छन्द। काँटेदार पेड़।
पूगीफल (न.) सुपारी।
पूजक (पुं.) पुजारी, पूजा करने वाला।
पूजन (न.) पूजा। पूजा करना।
पूजा (स्त्री.) पूजना।
पूजनीय (त्रि.) मान्य। पूजा करने योग्य।
पूजार्ह (त्रि.) पूजा के योग्य।
पूज्य (पुं.) पूजा के योग्य। श्रद्धेय।
पूण् (क्रि.) इकट्ठा करना।
पूत (न.) पवित्र। सत्य। शंख।
पूतक्रतायी (स्त्री.) शची। इन्द्राणी।
पूतक्रतु (पुं.) जिसने सौ यज्ञ किये हों। देवराज। इन्द्र।
पूतना (स्त्री.) एक राक्षसी जो श्रीकृष्ण द्वारा मारी गई। हर्र। रोगविशेष।
पूति (स्त्री.) पवित्रता।
पूतिक (न.) विष्ठा। वृक्ष विशेष।
पूतिगन्ध (पुं.) गन्धक। इङ्गुदीवृक्ष। दुर्गन्ध।
पूप (पुं.) बड़ा। कचौरी।
पूपाष्टकाम (स्त्री.) अगहन बदी ८ मी को किया हुआ श्राद्ध। बड़ों की ८ मी।
पूय् (क्रि.) बदबू उठना। फाड़ना।
पुय (न.) पीप। राल।
पूर् (क्रि.) भरना। प्रसन्न होना।
पूर (पुं.) नदी का चढ़ाव। सरोवर। घाव का भराव। एक प्रकार की रोटी। नाक के द्वारा स्वाँस

को धीरे-धीरे खीचना। वृक्ष विशेष। गन्ध विशेष।

पूरक (पुं.) एक प्रकार का नीबू। प्रेत के शरीर को पूरा बनाने वाला। दसवाँ पिण्ड।

पुरुष (पुं.) नर। आदमी।

पूर्ण (त्रि.) भरा हुआ।

पूर्णपात्र (न.) भरा हुआ बर्तन। हर्ष का काल। यज्ञ में २५६ मुट्ठी चावलों से भरा एक पात्र विशेष।

पूर्णमास (पुं.) पूर्णिमा के दिन करने योग्य यज्ञ विशेष।

पूर्णिमा (स्त्री.) पूर्णमासी।

पूर्त्त (न.) तालाब। कूप। भरना। समय। ढका हुआ। पूरित।

पूर्ब-र्ब (क्रि.) बसना। बुलाना।

पूर्ब-र्व (त्रि.) प्रथम। समस्त। सारा। ज्येष्ठ भाई।

पूर्ब-र्व+देव (पुं.) असुर। दैत्य। अच्छा देवता।

पूर्बदेश (पुं.) पुरबिया देश।

पूर्वपक्ष (पुं.) पहिला पक्ष।

पूर्बपद (न.) पहिला पद।

पूर्बपर्वत (पुं.) उदयाचल।

पूर्बफाल्गुनी (स्त्री.) अश्विनी से ग्यारहवाँ नक्षत्र।

पूर्बभाद्रपद (पुं.स्त्री.) अश्विनी से २५ वाँ नक्षत्र।

पूर्वरङ्ग (पुं.) अभिनय (नाटक) में पहला अभिनय।

पूर्बरूप (न.) रोग का निदान।

पूर्बवादिन् (पुं.) मुद्दई। वादी।

पूर्बा-र्वा-षाढ़ा (स्त्री.) अश्विनी से तीसवाँ नक्षत्र।

पूर्वाह्ण (पुं.) पहला आधा दिना।

पूर्वेद्युस् (अव्य.) पहिला दिन।

पूल् (क्रि.) इकट्ठा करना।

पूष् (क्रि.) बढ़ाना।

पूषन् (पुं.) सूर्य्य।

पृ (क्रि.) काम करना। प्रसन्न होना। पालन करना।

पृच् (क्रि.) जोड़ना। मिलना। छूना। इकट्ठा होना।

पृच्छा (स्त्री.) प्रश्न। भविष्य के विषय में प्रश्न।

पृतना (स्त्री.) विशेष संख्या वाली सेना।

पृथ (क्रि.) फेंकना। फैलाना।

पृथक् (अव्य.) भिन्न। विना। नानारूप वाला।

पृथक्जन (पुं.) नीच। मूर्ख। पामर।

पृथग्विध (त्रि.) नानारूप। नाना प्रकार।

पृथा (स्त्री.) कुन्ती।

पृथिवी, **पृथ्वी** } (स्त्री.) धरा। भूमि।

पृथिवीपति (पुं.) भूपति। राजा।

पृथु (पुं.) मोटा। राजा विशेष।

पृथुक (न.) चिड़वा। (पुं.) बालक।

पृथुल (त्रि.) स्थूल। मोटा।

पृथूदर (पुं.) थोंदिल। बड़े पेट वाला। मेढ़ा।

पृथ्वी (स्त्री.) धरती। भूमि। बड़ी इलायची। जीरा।

पृदाकु (पुं.) साँप। बीछी। भेड़िया। हाथी। चित्रक वृक्ष।

पृश्नि (त्रि.) बौना। पतला। कमजोर। थोड़ा। श्रीकृष्ण की माँ देवकी।

पृश्निगर्भ (पुं.) श्रीकृष्ण।

पृष् (क्रि.) सींचना।

पृषत् (न.) बिन्दु। दाग। सींचने वाला।

पृषत (पुं.) चित्तादार हिरन। बून्द।

पृषत्क (पुं.) बाण। तीर।

पृषदश्व (पुं.) वायु। हवा।

पृषदाज्य (न.) दधिमिश्रित घृत।

पृषन्ति (पुं.) बून्द।

पृषोदर (त्रि.) धब्बों वाला।

पृष्ठ (न.) पीठ। स्तोत्र विशेष।

पृष्ठतस् (अव्य.) पीछे-पीछे।

पृष्ठदृष्टि (पुं.) भालू। रीछ।

पृष्ठवंश (पुं.) पीठ की हड्डी। मेरुदण्ड।

पृष्ठ्यम् (न.) यज्ञ विशेष। घोड़ा। बैल।

पेचक (पुं.) उल्लू। हाथी की पूँछ का सिरा। पर्यङ्क। जूँ। मेघ।

पेटक (पुं.न.) पेटी। सन्दूक। टोकरी। थैला। ढेर।

पेल् (क्रि.) काँपना।

पेल (न.) अङ्ग विशेष। अण्डकोष।

पेलव (त्रि.) कोमल। नरम। सुन्दर।

पेश-स+ल (त्रि.) सुन्दर। दक्ष। कोमल।

पेशि-शी (स्त्री.) अण्डा। मांसखण्ड। तलवार की

म्यान। नदी विशेष। राक्षसी विशेष। इन्द्र का वज्र। जूता।

पेष् (क्रि.) सेवा करना। निश्चय करना।

पेषण (न.) पीसना। नीच।

पेषणि (स्त्री.) पीसने की सिल।

पेस (क्रि.) जाना।

पै (क्रि.) सूखना। मुर्झाना।

पैङ्गि (पुं.) यास्क का नाम।

पैञ्जूषः (पुं.) कान।

पैठर (गु.) पिठर में उबला हुआ।

पैठीनसि (पुं.) एक मुनि का नाम।

पैण्डिक्य (न.) भिक्षुक। भिखारी।

पैतृक (न.) दाय। पुरखों का।

पैतृमत्य (पुं.) अनब्याही स्त्री का पुत्र। किसी नामी ग्रामी का पुत्र।

पैतृष्वसेय (पुं.) बुआ का बेटा।

पैत्तल (गु.) पीतल धातु का।

पैत्र (न.) पिता या पितरों का। पितृतीर्थ।

पैशाच (पुं.) अष्ट प्रकार के विवाहों में से एक दैत्य विशेष।

पैष्टी (स्त्री.) आटे से निकाली गयी मदिरा। गौडी।

पो (पुं.) पवित्र। स्वच्छ।

पोगण्ड (त्रि.) पाँच और दस वर्ष के बीच की अवस्था का। विकलाङ्ग। पौगण्ड।

पोट (पुं.) घर की नींव। संमिश्रण।

पोटा (स्त्री.) मर्दानी अर्थात् मूँछ दाड़ी वाली स्त्री।

पोटक (पुं.) सेवक। नौकर।

पोटिक (पुं.) एक फोड़ा।

पोटी (स्त्री.) एक बड़ा मगर। गुदा।

पोट्टलिका (स्त्री.) पोटली। पारसल।

पोड्डु (पुं.) खोपड़ी के ऊपर वाली खोपड़ी।

पोत (पुं.) जहाज। किसी जानवर का बच्चा। दस वर्ष की अवस्था का हाथी। कपड़ा। छोटा पेड़। घर की नींव।

पोतवणिज् (पुं.) जहाज द्वारा व्यापार करने वाला व्यापारी।

पोतवाह (पुं.) मल्लाह। माँझी।

पोतास (पुं.) एक प्रकार का कपूर।

पोतृ (पुं.) यज्ञ कराने वाले सोलह प्रकार के यज्ञकर्त्ताओं में से एक विष्णु का नाम।

पोत्या (पुं.) नावों का बेड़ा।

पोत्रं (न.) घुरघुराहट (शूकर की)। नाव। जहाज। बादज की गड़गड़ाहट। कपड़ा।

पोत्रिन् (पुं.) सूअर।

पोथकी (स्त्री.) आँख के पलकों पर लाल फुंसियाँ। रोहे।

पोल (पुं.) ढेर।

पोलिका (स्त्री.) गेहूँ के आटा की रोटी।

पोलिन्द (पुं.) जहाज का मस्तूला।

पोष (पुं.) पालन। वृद्धि। उन्नति।

पोषण (न.) पालना। सेवा।

पोषयित्नु (पुं.) कोइल।

पोष्यवर्ग (पुं.) वे कुटुम्बी जिनका पालन पोषण करना कर्त्तव्य है यथा माता, पिता, गुरु, स्त्री, सन्तान, अतिथि आदि।

पौंड्र (पुं.) एक देश का नाम। उस देश के निवासी। ईख विशेष। भीम के शंख का नाम।

पौड्रक (पुं.) एक प्रकार के पौड़े। वर्णसङ्कर विशेष।

पौतवं (न.) एक प्रकार का माप।

पौत्तिक (न.) पीले रङ्ग का मधु। शहद।

पौत्र (पुं.) नाती। पुत्र का पुत्र।

पौनःपुनिक (न.) बारम्बार। दुहराया गया।

पौनर्भव (पुं.) दुबारा ब्याही हुई स्त्री में उत्पन्न। बारह प्रकार के पुत्रों में से एक।

पौर (न.) नगरसम्बन्धी। नगरवासी।

पौरव (पुं.) पुरु नामी चन्द्रवंशीय राजा का पुत्र।

पौरस्त्य (त्रि.) पूर्वी। पहला। आगे का।

पौराणिक (पुं.) पुराणज्ञ। पुराण जानने वाला।

पौरुष (न.) विक्रम। वीरता। उद्यम।

पौरोगव (पुं.) राजा के रसोईघर का अध्यक्ष।

पौर्णमास (पुं.) पूर्णिमा को किया गया एक प्रकार का यज्ञ।

पौर्विक (गु.) पहला। पैतृक। पुराना।

पौलस्त्य (पुं.) रावण आदि।

पौलि (पुं.) एक प्रकार की रोटी।

पौलोमी (स्त्री.) शची। इन्द्राणी।

पौष (पुं.) पुस महीना।

प्यै (क्रि.) बढ़ना।

प्र (अव्य.) आरम्भ। गति चारों ओर से। प्रथमत्व। उत्पत्ति। प्रसिद्धि। व्यवहार।

प्रकट (त्रि.) स्पष्ट। प्रकाश।

प्रकम्पन (पुं.) हवा। वायु। नरक विशेष। बहुत काँपने वाला।

प्रकर (पुं.) समूह। अधिकार।

प्रकरण (न.) प्रस्ताव। प्रसङ्ग। दृश्य काव्य विशेष। ग्रन्थ-सन्धि।

प्रकर्ष (पुं.) उत्कर्ष। बढ़ती। बड़ाई। उत्तमता।

प्रकाण्ड (पुं.) वृक्ष का वह भाग जो उसकी जड़ से शाखा पर्यन्त होता है। प्रशस्त। अच्छा।

प्रकाम (त्रि.) बहुत ही। इच्छानुसार। (अव्य) मन की प्रसन्नता प्रकट करना।

प्रकार (पुं.) सादृश्य। भेद।

प्रकाश (पुं.) चमक। उजियाला। विकाश।

प्रकाशात्मन् (पुं.) सूर्य्य। परमात्मा।

प्रकीर्ण (न.) बिखरा हुआ। चामर। भिन्न-भिन्न जातियों का एकत्व।

प्रकृत (त्रि.) आरब्ध। आरम्भ किया हुआ।

प्रकृति (स्त्री.) स्वभाव। चिह्न। अज्ञान। मित्र। स्वामी। पुरवासी। दुर्ग। बल। कारीगर। शक्ति। स्त्री। परमात्मा। जीव। छन्द विशेष। माता। धातु।

प्रकृष्ट (त्रि.) प्रधान। उत्तम।

प्रकोष्ट (पुं.) मणिबन्ध का अन्त। सहन। कमरा।

प्रक्रम (पुं.) क्रम। सिलसिला। उपक्रम।

प्रक्रिया (स्त्री.) रीति। भांति। राजचिह्नों का लेना। उच्च पदवी। किसी ग्रन्थ का अध्याय। जैसे "उणादि प्रक्रिया"। अधिकार विशेष। किसी ग्रन्थ का उपोद्‌घात का अध्याय। शब्द बनाने के नियम।

प्रक्व-क्वा+ण (पुं.) वीणा का शब्द।

प्रक्ष्वेडन (पुं.) लोहे का तीर।

प्रखर (त्रि.) बड़ा पैना। घोड़े का साज। मुर्गा। कुत्ता। खच्चर।

प्रगण्ड (पुं.) उत्तम कपोल। कोहनी। दुर्ग की दीवाल।

प्रगल्भ (त्रि.) प्रतिभाशाली। हाजिरजवाब। नायिकाविशेष।

प्रगाढ (त्रि.) बहुत गाढ़ा। मजबूत।

प्रगुण (त्रि.) दक्ष। सीधे स्वभाव का।

प्रगृह्य (न.) स्मृति। वाक्य। व्याकरण में स्वर सन्धि न होने योग्य पद।

प्रगे (अव्य.) तड़का। बड़े सबेरे।

प्रघण (न.) बराण्डा। लोहे का मूसल।

प्रग्रह (पुं.) पकड़। घोड़े आदि की रस्सी। लगाम। किरण। बन्दी भाट। बाजू।

प्रचण्ड (त्रि.) दुरन्त। प्रतापी।

प्रचय (पुं.) एकीकरण। ढेर। जोड़। उन्नति। वृद्धि। एक श्रुति।

प्रचुर (त्रि.) बहुत।

प्रचेतस् (पुं.) वरुण। मुनि विशेष।

प्रचेतृ (पुं.) सारथी। रथवान्।

प्रचेल (न.) पीला चन्दन काष्ठ।

प्रचेलक (पुं.) घोड़ा।

प्रच्छ (क्रि.) पूँछना।

प्रच्छद् (क्रि.) ढकना। लपेटना। पर्दा डालना।

प्रच्छन्न (न.) छिपा हुआ। गुप्त।

प्रच्छर्दिका (स्त्री.) वमन।

प्रच्छादन (न.) पिछौरी।

प्रच्छान (न.) तीता करना।

प्रच्छाय (न.) घनी छाया। छायादार स्थान।

प्रच्छिल (त्रि.) शुष्क। जलरहित।

प्रच्यु (क्रि.) चला जाना। लौट जाना।

प्रजन (पुं.) उत्पत्ति।

प्रजा (स्त्री.) रियाया। सन्तान।

प्रजापति (पुं.) ब्रह्मा। दक्ष आदि। जामाता। सूर्य। अग्नि। विश्वकर्मा। त्वष्टा।

प्रजावती (स्त्री.) सन्तानवती स्त्री। भौजाई।

प्रज्ञा (स्त्री.) बुद्धि। सरस्वती। (पुं.) पण्डित।

प्रज्ञान (न.) बुद्धि। चिह्न।

प्रज्ञु (त्रि.) टेढ़ी जानु वाला।

प्रडीन (न.) पक्षियों की चाल या उड़ान।

प्रणय (पुं.) प्रीति। उत्पत्ति। स्नेह। विश्वास। निर्वाण। शान्ति।

प्रणयिन् (पुं.) प्रेम करने वाला। भर्त्ता। नायक।
प्रणव (पुं.) ओंकार।
प्रणाद (पुं.) कान की बीमारी।
प्रणाम (पुं.) झुकना। नवना। नमस्कार।
प्रणाय्य (त्रि.) प्रीतिशून्य। शत्रु। साधु। प्रिय।
प्रणिधान (न.) प्रयत्न। अभिनिवेश।
प्रणिधि (पुं.) चर। दूत। अनुचर। माँगना।
प्रणिपात (पुं.) झुकना। प्रणाम।
प्रणिहित (त्रि.) प्राप्त। पाया। स्थापित।
प्रणीत (त्रि.) फेंका हुआ। बनाया हुआ। यज्ञ। संस्कारित अग्नि। यज्ञीय पात्र विशेष।
प्रणेय (त्रि.) अधीन।
प्रतति (स्त्री.) विस्तार। वल्ली। बेल।
प्रतन (पुं.) पुरानी वस्तु।
प्रतल (न.) खुली हुई अङ्गुली वाला हाथ। चाँटा।
प्रताप (पुं.) ताप। गर्मी। आक का पेड़।
प्रतारण (न.) ठगना। धोखा देना।
प्रति (अव्य.) व्याप्ति। लक्षण। भाग। उलट कर देना। को। ओर। फिर।
प्रतिकर्म्मन् (न.) बनावटी। टीमटाम।
प्रति-ती+कार (पुं.) बदला। चिकित्सा।
प्रति-ती+काश-स (त्रि.) सदृश। चमक।
प्रतिकूल (त्रि.) विरुद्ध।
प्रतिकृति (स्त्री.) प्रतिमा। सादृश्य। प्रतिनिधि। फोटो।
प्रतिक्षणम् (अव्य.) बारम्बार।
प्रतिक्षिप्त (त्रि.) भेजा हुआ। झिड़का हुआ। बाधित। टूट गया। तिरस्कृत।
प्रतिग्रह (पुं.) स्वीकार। दान लेना। सेना की पीठ। सूर्य।
प्रतिघातन (न.) मारना।
प्रतिछन्दस् (न.) आशय के अनुसार। प्रतिरूप।
प्रतिच्छाया (स्त्री.) प्रतिमा। सादृश्य। चित्र। प्रतिलिपि। लेख की नकल।
प्रतिज्ञा (स्त्री.) वचनदान। नियम लेना।
प्रतिज्ञात (त्रि.) वचनबद्ध। वचन दिया हुआ।
प्रतिदान (न.) विनिमय। बदला। तुल्य दान। धरोहर सौंपना।
प्रतिध्वनि (पुं.) गूञ्ज। झाँई।
प्रतिध्वान (पुं.) गूञ्ज। झाँई।
प्रतिनिध (पुं.) प्रतिरूप।
प्रतिपक्ष (पुं.) विरुद्ध पक्ष वाला।
प्रतिपत्ति (स्त्री.) धीरज। चतुराई। गौरव। कर्त्तव्य ज्ञान। पद प्राप्ति।
प्रतिपद् (स्त्री.) पड़वा। प्रतिपदा। पाँव-पाँव पर। बारबार।
प्रतिपन्न (त्रि.) अवगत। जाना हुआ। माना हुआ। बलवान्।
प्रतिपादन (न.) दान देना। समझाना। अपने कथन की पुष्टि।
प्रतिबन्ध (पुं.) अड़चन। रोक।
प्रतिबल (पुं.) शत्रु। वैरी।
प्रतिभय (त्रि.) भयानक। डरावना।
प्रतिभा (स्त्री.) बुद्धि।
प्रतिभू (पुं.) लग्नक। जामिन।
प्रतिमा (स्त्री.) मूर्ति।
प्रतिमान (न.) प्रतिबिम्ब। परछाहीं।
प्रतिमुक्त (त्रि.) पहिना गया। छोड़ा हुआ। जकड़ा गया। लगाया गया।
प्रतियत्न (पुं.) इच्छा। उपग्रह। निग्रह। संस्कार। लेना। परिश्रमी।
प्रतियातना (स्त्री.) प्रतिमा। तसवीर।
प्रतियोगिन् (त्रि.) विरुद्ध सम्बन्ध वाला।
प्रतिरूप (न.) प्रतिबिम्ब। परछाहीं।
प्रतिविरोध (पुं.) बाधा। रोक। अड़चन।
प्रतिलोम (त्रि.) उलटा। विपरीत।
प्रतिलोमज (पुं.) वर्णसङ्कर। दोगला।
प्रतिवचन (न.) उत्तर। जवाब।
प्रतिवादिन् (पुं.) विपक्षी। प्रतिवादी।
प्रतिवासी (त्रि.) पड़ोसी।
प्रतिविधान (न.) प्रतीकार। उपाय। यत्न।
प्रतिबिम्ब (न.) परछाहीं।
प्रतिशासन (न.) विरुद्ध आज्ञा।
प्रतिश्रय (पुं.) यज्ञशाला। सभा। घर। आसरा।
प्रतिश्रव (पुं.) स्वीकार। गूञ्ज।
प्रतिश्रुत (स्त्री.) प्रतिज्ञा।

प्रतिषेध (पुं.) निषेध।
प्रतिष्टम्भ (पुं.) रोक। अड़चन।
प्रतिष्ठा (स्त्री.) क्षिति। पृथिवी। छन्द जिसके प्रत्येक पाद में चार अक्षर हों। प्रतिष्ठा। आश्रय। सदा के लिये स्थिरता करना जैसे मूर्त्तिप्रतिष्ठा।
प्रतिसर (पुं.) सेना का पिछला भाग। हस्तसूत्र।
प्रतिसर्ग (पुं.) विरुद्ध रचना। प्रलय।
प्रतिसीरा (स्त्री.) परदा। कनात।
प्रतिसृष्ट (त्रि.) तिरस्कृत। भेजा गया।
प्रतिहत (त्रि.) रोका गया। उलट कर मारा हुआ।
प्रति-ती+हार (पुं.) उलट कर चोट मारना। द्वार। द्वारपाल। दर्वान।
प्रतीक (पुं.) अवयव। प्रतिरूप।
प्रतीक्षा (स्त्री.) आवश्यकता। आशा। बाट।
प्रतीक्ष्य (त्रि.) पूज्य। प्रतिष्ठा योग्य।
प्रतीचीन (त्रि.) पश्चिमी।
प्रतीच्छक (पुं.) पाने वाला।
प्रतीति (स्त्री.) विश्वास। ख्याति। आदर। हर्ष।
प्रतीत्त (त्रि.) फेरा हुआ। वापिस किया गया।
प्रतीन्धक (पुं.) विदेह देश।
प्रतीनाह (पुं.) झण्डा। निशान।
प्रतीप (त्रि.) प्रतिकूल। चन्द्रवंशी एक राजा।
प्रतीपदर्शिनी (स्त्री.) स्त्री। औरत।
प्रतीर (न.) तट। किनारा।
प्रतोद (पुं.) चाबुक।
प्रतोली (स्त्री.) गली।
प्रत्न (त्रि.) पुराना।
प्रत्यक्ष (अव्य.) आँख के सामने।
प्रत्यग्र (त्रि.) नया। साफ हुआ।
प्रत्यच् (त्रि.) पिछला समय। पश्चिम दिशा।
प्रत्यन्तपर्वत (पुं.) बड़े पहाड़ के पास की पहाड़ी।
प्रत्यभियोग (पुं.) वादी पर अभियोग।
प्रत्यभिवाद (पुं.) आशीर्वाद।
प्रत्यय (पुं.) शपथ। विश्वास। अधीन। शब्द। छिद्र। आधार। निश्चय। कारण। व्याकरण का शब्द विशेष।
प्रत्ययित (त्रि.) प्राप्त। विश्वासी। लौटा।
प्रत्यर्थिन् (त्रि.) शत्रु। प्रतिवादी।
प्रत्यर्पण (न.) प्रतिदान। लौटाना।
प्रत्यवसान (न.) भोजन। खाना।
प्रत्यवसित (त्रि.) भुक्त। खाया हुआ।
प्रत्यवस्कन्द (पुं.) आईनी चार प्रकार के जवाबों में से एक। औषध विशेष।
प्रत्यवस्थातृ (त्रि.) शत्रु। प्रतिवादी।
प्रत्यवाय (पुं.) पाप। दोष। अड़चन। लोप। हताश।
प्रत्याख्यात (त्रि.) अस्वीकृत। उत्तर दिया गया।
प्रत्याख्यान (न.) अस्वीकार। उत्तर दे देना।
प्रत्यादिष्ट (त्रि.) निकाला गया। तिरस्कृत। अस्वीकृत।
प्रत्यादेश (पुं.) निकालना। अस्वीकार करना।
प्रत्यालीढ (न.) धनुषधारी का पैतरा। चाटा हुआ।
प्रयासन्न (त्रि.) अति निकटस्थ।
प्रत्याहार (पुं.) वापिस लेना।
प्रत्युत्क्रम (पुं.) युद्ध की तैयारी। काम करना।
प्रत्युत्तर (न.) उत्तर का उत्तर।
प्रत्युत्थान (न.) विरुद्ध खड़े होना। अगवानी। आगत व्यक्ति के सम्मानार्थ निज आसन छोड़ कर उठना।
प्रत्युत्पन्नमति (त्रि.) समय पर उचित बुद्धि का उत्पन्न होना।
प्रत्युद्गमनीय (न.) उपस्थान के योग्य। पूजा के योग्य।
प्रत्यूष (पुं.) प्रभात। सबेरा। आठ वसुओं में से एक।
प्रत्यूह (पुं.) विघ्न। रुकावट।
प्रथ् (क्रि.) प्रसिद्ध होना।
प्रथम (त्रि.) पहिला। प्रधान।
प्रथित (त्रि.) प्रसिद्ध।
प्रथिमन् (पुं.) मुटाई। बड़प्पन।
प्रदर (पुं.) फाड़ना। योनि का रोग विशेष।
प्रदीप (पुं.) दीप। दीवा।
प्रदीपन (पुं.) उदराग्नि को भड़काने वाला।
प्रदेश (पुं.) एक देश। दीवाल।
प्रदेश-शि+नी (स्त्री.) तर्जनी अङ्गुली।
प्रद्युम्न (पुं.) कामदेव। श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र का नाम। भगवान् के प्रधान चार व्यूहों में से एक।
प्रद्रव (पुं.) भागना।

प्रधन (न.) युद्ध। लड़ाई।
प्रधान (न.) मुख्य। परमात्मा। प्रशस्त। वजीर।
प्रधि (पुं.) पहिया। धुरा।
प्रपञ्च (पुं.) संसार। उलटापन। इकट्ठा। ठगना।
प्रपथ्या (स्त्री.) हरीतकी हर्र।
प्रपद (न.) पाँव के आगे का भाग।
प्रपन्न (त्रि.) शरणागत।
प्रपा (स्त्री.) पौसाला। पौंसला।
प्रपात (पुं.) झरना। कूल। किनारा। आश्रयदान।
प्रपितामह (पुं.) बाबा का पिता। ब्रह्मा।
प्रपौत्र (पुं.) पौत्र का बेटा। पन्ती।
प्रफुल्ल (त्रि.) खिला हुआ।
प्रबन्ध (पुं.) सन्दर्भ। ग्रन्थादि की रचना।
प्रवाल (न.) नया पत्ता। लाल रङ्ग। मूँगा। बीन का डण्डा।
प्रबोध (पुं.) अच्छी समझ। ज्ञान।
प्रबोधन (न.) जागना। चेतना। समझना।
प्रबोधनी (स्त्री.) कार्तिक शुक्ल ११। जगाने वाली वस्तु।
प्रभञ्जन (न.) वायु। हवा।
प्रभद्र (पुं.) नीम का पेड़।
प्रभव (पुं.) उत्पादक। बल। जन्म।
प्रभा (पुं.) चमक। दीप्ति।
प्रभाकर (पुं.) सूर्य। मीमांसा शास्त्र के रचने वाले।
प्रभात (न.) सबेरा।
प्रभाव (पुं.) राजाओं का कोष और दण्ड से उत्पन्न तेज। सामर्थ्य।
प्रभास (पुं.) एक तीर्थ "प्रभासक्षेत्र जिसकी कथा श्रीमद्भागवत में है"।
प्रभिन्न (पुं.) मस्त हाथी। अन्तर वाला।
प्रभु (पुं.) विष्णु। पारा। शक्त। स्वामी।
प्रभूत (पुं.) प्रचुर। बहुत ऊँचा।
प्रभृति (अव्य.) तब से लेकर।
प्रमथ (पुं.) शिव का एक अनुचर। घोड़ा। (स्त्री) हर्र।
प्रमथन (न.) वध। क्लेश देना।
प्रमथाधिप (पुं.) शिव। प्रमथादि गणों का स्वामी।
प्रमदवन (न.) राजा का विलासवन।
प्रमदा (स्त्री.) सुन्दरी स्त्री।
प्रमनस् (त्रि.) जिसका मन बहुत खुश होता है।
प्रमा (स्त्री.) यथार्थ ज्ञान।
प्रमाण (न.) मर्यादा। शास्त्र। हेतु। प्रमाता।
प्रमातामह (पुं.) नाने का पिता।
प्रमाद (पुं.) अनवधानता। असावधानी। लापरवाही।
प्रमापण (न.) मारना।
प्रमिति (स्त्री.) प्रमा। यथार्थ ज्ञान।
प्रमीत (त्रि.) मर गया। यज्ञार्थ मारा हुआ पशु।
प्रमीला (स्त्री.) तन्द्रा।
प्रमुख (त्रि.) मान्य। समूह। सुपारी। अच्छा। आरम्भ।
प्रमुदित (त्रि.) प्रसन्न।
प्रमेह (पुं.) एक प्रकार का रोग।
प्रमोद (पुं.) हर्ष।
प्रयत (त्रि.) पवित्र। साफ। शुद्ध।
प्रयत्न (पुं.) विशेष चेष्टा। प्रयास। आदर।
प्रयाग (पुं.) गङ्गा और यमुना के सङ्गम का प्रसिद्ध तीर्थ। इन्द्र। घोड़ा।
प्रयास (पुं.) प्रयत्न।
प्रयुत (न.) दस लाख।
प्रयोक्तृ (त्रि.) प्रयोग करने वाला। ऋणदाता। लगाने वाला।
प्रयोग (पुं.) अनुष्ठान। निदर्शन। मसाल। घोड़ा। कार्य अथवा औषधादि की योजना।
प्रयोजक (पुं.) लगाने वाला। प्रेरक।
प्रयोजन (न.) हेतु। मतलब। अभिप्राय।
प्रयोज्य (त्रि.) लगाने योग्य।
प्ररूढ़ (त्रि.) बढ़ा हुआ। उत्पन्न हुआ।
प्रलम्ब (पुं.) एक दैत्य।
प्रलम्बघ्न (पुं.) प्रलम्ब को मारने वाले। बलदेवजी।
प्रलय (पुं.) नाश। छिपना।
प्रलाप (पुं.) अनर्थक वाक्य। बकवाद।
प्रवचन (न.) वेदार्थ ज्ञान।
प्रवण (पुं.) चौराहा। चौड़ा। नम्र। झुका हुआ। निर्बल।
प्रवयस् (त्रि.) बड़ी उम्र वाला। बूढ़ा।
प्रवर (पुं.) श्रेष्ठ। अगुरुचन्दन।

प्रवर्ग (पुं.) होमाग्नि विशेष।
प्रवर्त्तक (त्रि.) काम में लगाने वाला।
प्रवर्त्तना (स्त्री.) व्यापार। काम में लगाना।
प्रवर्ह (त्रि.) श्रेष्ठ। अच्छा।
प्रवह (पुं.) वायु विशेष।
प्रवहण (न.) डोली। पालकी।
प्रवाद (पुं.) गौगा। अफवाह।
प्रवास (पुं.) विदेश वास।
प्रवासन (त्रि.) विदेश वास। मारना।
प्रवासिन् (त्रि.) परदेशी।
प्रवाह (पुं.) जल की धार। व्यवहार। अच्छा घोड़ा।
प्रविदारण (न.) युद्ध। लड़ाई।
प्रवीण (त्रि.) निपुण। चतुर। बीन का गवैया।
प्रवृत्ति (स्त्री.) बात। अवन्ती आदि देश।
प्रवृद्ध (त्रि.) बढ़ा हुआ। प्रौढ़। गाढ़ा।
प्रवेक (त्रि.) प्रधान। सर्दार। बड़ा।
प्रवेणि-णी (स्त्री.) स्त्रियों के केश का जूड़ा। चित्रित कम्बल। जहाज।
प्रवेश (पुं.) भीतर जाना।
प्रवेशन (न.) प्रधान द्वार। बड़ा द्वार। सिंहद्वार।
प्रव्रजित (पुं.) संन्यासी। जैन का शिष्य।
प्रव्रज्या (स्त्री.) संन्यास।
प्रव्रज्यावसति (पुं.) यति। संन्यासी।
प्रशंसा (स्त्री.) गुणों को प्रकट करने वाले वाक्य। तारीफ।
प्रशमन (न.) वध। मारना। हटाना। ठंढा करना।
प्रशस्त (त्रि.) प्रशंसा के योग्य। अच्छा। चौड़ा। योग्य।
प्रश्न (पुं.) जिज्ञासा। सवाल।
प्रश्रय (पुं.) स्नेह। प्यार।
प्रश्रित (त्रि.) विनीत। सीखा हुआ। भला।
प्रष्ठ (त्रि.) आगे जाने वाला।
प्रष्ठवाह (पुं.) घोड़ा। बैल।
प्रसक्त (त्रि.) प्रसङ्ग। जुड़ा हुआ।
प्रसक्ति (स्त्री.) आपत्ति और अनुमति। प्रसङ्ग। लगन।
प्रसङ्ग (पुं.) आपत्ति। मेल। मैथुन।
प्रसन्न (त्रि.) निर्मल। साफ। सन्तुष्ट।
प्रसत्ति (स्त्री.) सफाई। प्रसन्नता।
प्रसभ (न.) बलात्कार। हठपूर्वक।
प्रसर (पुं.) उत्पत्ति। वेग। समूह। युद्ध। नीवार। पास जाना। फैला हुआ।
प्रसर्पण (न.) सेना के लोगों का चारो ओर फैलना। किसी विषय जल आदि का फैलना।
प्रसव (पुं.) गर्भमोचन। उत्पत्ति। फल।
प्रसवित्री (स्त्री.) जननी। माता। जच्चा।
प्रसव्य (त्रि.) विरुद्ध। विपरीत।
प्रसह्य (अव्य.) हठात्। जोराबरी।
प्रसह्यचौर (पुं.) धाड़ा मारने वाला। चोर।
प्रसाद (पुं.) अनुग्रह। सफाई। देवताओं को नैवेद्य लगाया हुआ।
प्रसादना (स्त्री.) सेवा। प्रसन्न करने की खटपट करना।
प्रसाधक (त्रि.) सजाने वाला। पूरा करने वाला।
प्रसाधन (न.) सजावट। वेश। भेस।
प्रसाधित (त्रि.) पूरा किया गया। अलंकृत किया गया।
प्रसारण (न.) फैलाव। विस्तारकरण।
प्रसारिन् (त्रि.) फैलाने वाला।
प्रसित (त्रि.) आसक्त। जुड़ा हुआ।
प्रसिति (स्त्री.) रस्सी।
प्रसिद्ध (त्रि.) ख्यात। भूषित।
प्रसू (स्त्री.) जननी। जच्चा। केला। लता। घोड़ी।
प्रसूति (स्त्री.) पेट। माता। औलाद। सन्तान की उत्पत्ति।
प्रसूतिका (स्त्री.) जच्चा। सन्तान की माता।
प्रसूतिज (न.) प्रसव काल का दुःख। प्रसव काल का उत्पन्न बालक।
प्रसून (न.) पुष्प। फूल। फल।
प्रसृत (पुं.) आधी अञ्जली।
प्रसेवक (पुं.) तूँबा (वीणा का)।
प्रस्कन्न (पुं.) एक ऋषि। गिरा हुआ।
प्रस्तर (पुं.) पाषाण। पत्थर।
प्रस्तार (पुं.) फैलाव। प्रक्रिया। तृणवन।
प्रस्ताव (पुं.) प्रकरण। प्रसङ्ग। मजमून।
प्रस्तावना (स्त्री.) उत्थानिका। आरम्भ का कथन।
प्रस्तुत (त्रि.) प्रासङ्गिक। उपस्थित। उद्यत। बहुत स्तुति किया गया।

प्रस्थ (पुं.) एक सेर की तौल। पहाड़। फैलाव।
प्रस्थान (न.) जयेच्छु की रणयात्रा। यात्रा। जाना। चल देना।
प्रस्फोटन (न.) चोट लगाना। खिलाना। फोड़ना।
प्रस्रवण (न.) झरना। पसीना। टपकना। एक पर्वत का नाम।
प्रस्राव (पुं.) मूत्र। पेशाब। बहना।
प्रहर (पुं.) पहर। दिन का आठवाँ हिस्सा।
प्रहरण (न.) चोट लगाना। अस्त्र। सन्दूक (गाड़ी का) युद्ध। प्रहार। वशीभूत करना।
प्रहसन (न.) हास्य। एक प्रकार का नाटक।
प्रहसन्ती (स्त्री.) लता। वासन्ती।
प्रहर्षिणी (स्त्री.) हल्दी। बारह अक्षरों के पाद वाला एक छन्द।
प्रहस्त (पुं.) रावण के एक अमात्य एवं सेनापति का नाम।
प्रहि (पुं.) कूप। खौं जिसमें नाज दाबा जाता है।
प्रहित (त्रि.) भेजा हुआ। फेंका हुआ। दाल।
प्रहेलिका (स्त्री.) पहेली। बुझौअल।
प्रह्लाद (पुं.) हिरण्यकशिपु दैत्य का पुत्र एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त जिसके लिये भगवान् को नरसिंह अवतार लेना पड़ा।
प्रह्व (त्रि.) नम्र। विनीत।
प्रांशु (त्रि.) ऊँचा। उन्नत।
प्राकाम (न.) आठ सिद्धियों में से एक।
प्राकार (पुं.) प्राचीर। नगरकोट।
प्राकृत (त्रि.) नीच। स्वभावसिद्ध। बिगड़ी हुई बोली जो नाटकों में प्रायः काम में लाई जाती है।
प्राकृतप्रलय (पुं.) प्रकृति का लय जिसमें हो। ब्रह्मा के दिन की समाप्ति में होने वाला दैनंदिन प्रलय।
प्राक्तन (त्रि.) पहिले का।
प्रागभाव (पुं.) भविष्यत् काल।
प्राग्भार (पुं.) भारी बोझ। उत्कर्ष। बहुत सा। पर्वत का शिखर।
प्राग्रहर (त्रि.) जो सब से आगे किया जाय।
प्राग्र्य (त्रि.) श्रेष्ठ। नेक। बहुत आगे हुआ।
प्राग्वंश (पुं.) हवनशाला से पूर्व की ओर यजमानादि के रहने का घर।
प्राघार (पुं.) यज्ञादि में अग्नि पर घी का प्रवाह।
प्राघुण (पुं.) अतिथि। महमान।
प्राङ्गण (न.) आँगन। चबूतरा। हाता। बेड़ा। वाद्ययंत्र विशेष।
प्राच् (त्रि.) पहिला समय ओर देश। पूर्व दिशा।
प्राचीन (त्रि.) पुराना या पूर्व दिशा का।
प्राचीनबर्हिस् (पुं.) इन्द्र। एक राजा।
प्राचीनावीत (न.) श्राद्ध आदि कामों में यज्ञोपवीत का दहिने कन्धे पर रखना।
प्राचीर (न.) दीवार। नगरकोट। प्राकार।
प्राचेतस (पुं.) प्राचीनवर्हि राजा का पुत्र। वरुणपुत्र।
प्राच्य (पुं.) पूर्व का। शरावती नदी के पूर्व और दक्षिण भाग का देश।
प्राजापत्य (पुं.) आठ प्रकार के विवाहों में से एक प्रकार का विवाह। बारह दिन व्यापी एक व्रत। प्रजापति का चरु आदि।
प्राज्ञ (पुं.) पण्डित। बुद्धिमान्। चतुर।
प्राज्यम् (न.) बहुत।
प्राञ्जल (त्रि.) स्पष्टवादी। साफ। सच्चा।
प्राडविवेक (पुं.) मुंसिफ। न्यायकारी।
प्राण (पुं.) शरीर का वायु विशेष। काव्य का जीवनरस। वायु। बल।
प्राणनाथ (पुं.) पति। प्राणों का स्वामी।
प्राणमयकोष (पुं.) कर्मेन्द्रिय सहित पांचों प्राण अर्थात् प्राण, अपान, समान, उदाग और व्यान।
प्राणयाम (पुं.) योग की क्रिया विशेष।
प्राणय्य (ग.) ठीक। योग्य। उपयुक्त।
प्राणिद्यूत (न.) बाजी लगा कर मुर्गा, मेढ़ा आदि को लड़ाना।
प्राणिन् (पुं.) जीव। चेतन।
प्राणीत्य (न.) ऋण। कर्जा।
प्रातःकृत्य (न.) सबेरे करने योग्य काम। पूजा अनुष्ठानादि।
प्रातःसन्ध्या (स्त्री.) सबेरे करने योग्य सन्ध्या।
प्रातर् (अव्य.) सबेरा। तीन घड़ी दिन चढ़ने तक।

प्रातराश (पुं.) सबेरे का भोजन। कलेवा।
प्रातिका (स्त्री.) जवा।
प्रातिपदिक (पुं.) सार्थक शब्द।
प्रातिभाव्य (न.) जामिन होना।
प्रातिस्विक (न.) प्रत्येक पदार्थ का स्वाभाविक धर्म।
प्रातिहारिक (त्रि.) मायाकारक। छलिया।
प्राथमिक (त्रि.) पहला।
प्रादुर्भाव (पुं.) प्रकाश। आविर्भाव।
प्रादेश (पुं.) तर्जनी सहित फैला हुआ अङ्गूठा। एक प्रकार का नाप।
प्रादेशन (न.) दान देना।
प्राध्व (पुं.) रथ। रास्ता। नम्र। बद्ध।
प्रान्त (पुं.) शेष। सीमा।
प्रान्तर (न.) दूर गम्य पथ। जङ्गल। वृक्ष की खोड़। छायारहित मार्ग।
प्राप्ति (स्त्री.) वृद्धि। लाभ। दूसरे स्थान पर पहुँचना। मेल। आणिमा आदि सिद्धियों में से एक।
प्राप्य (त्रि.) गम्य। पाने योग्य।
प्राभृत (न.) उपढौकन द्रव्य। भेट।
प्रामाणिक (त्रि.) ठीक। प्रमाण सहित।
प्रामाण्य (पुं.) प्रमाण का होना।
प्राय (पुं.) मृत्यु। बाहुल्य। अनखाये मरना।
प्रायश्चित्त (त्रि.) प्रायश्चित्त करने योग्य जन।
प्रायस् (अव्य.) बहुतायत। तपस्या।
प्रायोपविष्ट (त्रि.) धरना देने वाला। विना खाये पिये प्राण देने वाला।
प्रायोवपवेश (पुं.) देखो प्रायोपविष्ट।
प्रारब्ध (न.) भाग्य। अदृष्ट। आरम्भ किया हुआ।
प्रार्थना (स्त्री.) माँगना। हिंसा। विनती।
प्रार्थित (त्रि.) माँगा गया। कहा हुआ। मारा हुआ। विनय।
प्रालम्ब (न.) बहुत लटकने वाला।
प्रालेय (न.) नाश होने वाला। बर्फ।
प्रावरण (न.) दुपट्टा। पिछौरी। चादर।
प्रावृष-षा (स्त्री.) वर्षा काल।
प्राश्निक (त्रि.) कुशलादि प्रश्न पूँछने वाला। सभ्य।
प्रास (पुं.) भाला।
प्रासाद (पुं.) महल।
प्राह्ण (पुं.) दिन का पहला पहर। अच्छा या प्रथम दिन।
प्राह्णेतराम् (अव्य.) बड़े तड़के।
प्रिय (पुं.) भर्त्ता। पति। मालिक। एक हिरन। मनोहर।
प्रियंवद (त्रि.) मधुर बोलनेवाला। एक गन्धर्व।
पियङ्गु (पुं.) एक वृक्ष। एक बेल। राई। पीपल। कंगुनी।
प्रियतम (पुं.) अतिप्रिय। मयूरशिखा वृक्ष।
प्रियता (स्त्री.) स्नेह। प्रियव्रत।
प्रियदर्शन (त्रि.) सुन्दर।
प्रियव्रत (पुं.) दृढ़नियमी। स्वायंभू मनु का पुत्र। प्रथम राजा जिसने सूर्य के समान रथचक्र घुमाया था।
प्रियाल (पुं.) पीपल का पेड़।
प्री (क्रि.) तृप्त कना। प्रसत्र करना।
प्रीणन (न.) तर्पण। प्रसत्रता।
प्रीत (त्रि.) हृष्ट। प्रसन्न।
प्रीति (स्त्री.) हर्ष। प्रसत्रता।
प्रु (क्रि.) सरकना।
प्रुद् (क्रि.) मलना।
प्रुष् (क्रि.) सींचना। भरना। प्यार करना।
प्रुष्ट (त्रि.) सड़ा हुआ। जला हुआ।
प्रेक्षा (स्त्री.) भले प्रकार देखना। पर्यालोचन।
प्रेक्षावत् (त्रि.) सोच विचार कर काम करने वाला।
प्रेंखा (स्त्री.) परिभ्रमण। घर विशेष। नृत्य।
प्रेखोंल (क्रि.) झूलना।
प्रेत (पुं.) नरकस्थ जीव। सूक्ष्म शरीर। मरा हुआ।
प्रेतकर्मन् (न.) दाह से ले कर सपिण्डीकरण कर्म तक।
प्रेतगृह (न.) श्मशान।
प्रेतनदी (स्त्री.) वैतरणी नदी।
प्रेत्यम् (अव्य.) लोकान्तर। मर कर।
प्रेमन् (न.) इन्द्र और वायु। प्रेम और ठट्ठा।
प्रेयस् (त्रि.) अतिप्रिय।
प्रेरण (न.) भेजना।
प्रेष (क्रि.) जाना।
प्रे-प्रै+ष (पुं.) भेजना। पीड़ा पहुँचाना।

प्रेष्ठ (त्रि.) अति प्यारा।
प्रे-प्रै+ष्य (पुं.) दास। टहलुआ। (त्रि.) भेजने योग्य। (स्त्री.) जङ्घा।
प्रोक्षण (न.) चारों ओर जल छिड़कना। मारना। यज्ञार्थ पशु हनन।
प्रोक्षित (त्रि.) सींचा गया।
प्रोञ्छन (गु.) पोंछना।
प्रोत (त्रि.) गुथा हुआ। सियाँ हुआ। पिरोया हुआ। जड़ा हुआ। कपड़ा।
प्रोथ (पुं.न.) घोड़े की नाक। कमर। धोती। गर्म। गर्त। घोड़े का मुख। (त्रि.) पथिक। रखा हुआ।
प्रोषित (त्रि.) परदेशी।
प्रोषितभर्तृका (स्त्री.) स्त्री जिसका पति विदेश गया हो।
प्रो-प्रौ-ष्ठपद (पुं.) भाद्र मास।
प्रौढ (त्रि.) युवा। उद्योगी। निपुण। नायिका विशेष।
प्लक्ष् (क्रि.) खाना।
प्लक्ष (पुं.) बड़ का वृक्ष। द्वीप विशेष।
प्लव (पुं.) उछलना। तरना। कूदना। मेंडक। मेढ़ा। बानर। श्वपच। जलकाक। पाकुड़ का पेड़। कारण्डव पक्षी। शब्द। वैरी। नागरमोथा। खस।
प्लवग (पुं.) बन्दर। मेंडक। सूर्य का सारथी। पक्षी विशेष।
प्लवङ्ग (पुं.) बन्दर। हिरन। वृक्ष विशेष।
प्लवङ्गम (पुं.) बन्दर। मेंडक।
प्लावन (न.) स्नान। बहाव। तूफान।
प्लावित (त्रि.) डूबा हुआ। बहा हुआ। आर्द्र।
प्लि-प्ली (क्रि.) जाना।
प्लीह (पुं.) तिल्ली का रोग। लर्क। प्लीहा।
प्लु (क्रि.) फरकना। उछल कर जाना।
प्लुत (न.) झपट कर जाना। घोड़े की चाल। ह्रस्व से तिगुने समय में जाने वाला अक्षर।
प्लुष् (क्रि.) जलाना।
प्लुष्ट (त्रि.) जला हुआ।
प्लोष (पुं.) जलन। जलाना।
प्लोत (पुं.) पट्टी। कपड़ा।
प्सा (क्रि.) खाना।
प्सा (सं.) भोजन। भूख।
प्सात (त्रि.) खाया हुआ।
प्सुर (गु.) प्यारा। सुन्दर। साकार। आकार युक्त।

फ

फ (न.) रूखा बोल। फूत्कार। फूँक। झञ्झा वात। जमुहाई। साफल्य। रहस्यमय अनुष्ठान। व्यर्थ की बकवाद। गर्मी। उन्नति।
फक्क् (क्रि.) भूल करना। धीरे-धीरे जाना। पहले ही से (बिना समझे बूझे) कोई मत स्थिर कर लेना।
फक्क (पुं.) खञ्ज। पङ्गु।
फक्किका (स्त्री.) निर्णय के लिये पूर्व पक्ष। छल। डाह। कौमुदी की क्लिष्ट पंक्तियाँ।

"कठिनदीक्षितकौमुदिफक्किका,
दहति छात्रवधूहृदयं सदा।
सुभगरूपधरे सखि कोमुदि,
त्वत्समा न हि वैरिणि मामपि।।"

फट् (अव्य.) योग। विनाश। विध्वंस। तंत्र में प्रायः इस शब्द का प्रयोग होता है। यथा "अस्त्राय फट्"।
फट (पुं.) साँप का फन।
फडिङ्गा (स्त्री.) टीढ़ी।
फण् (क्रि.) जाना। अपने आप उपजना।
फण (पुं.) साँप का फन।
फण-न+धर (पुं.) साँप। शिव।
फणिन् (पुं.) साँप।
फणीश्वर (पुं.) अनन्त। शेष। सर्पराज।
फणिज्झक (पुं.) लता विशेष।
फण्ड (पुं.) पेट। उदर।
फत्कारिन् (पुं.) पक्षी विशेष।
फर (न.) दाल।
फरुबक (न.) बिलहरा। गिलौरीदान।
फर्फरायते (क्रि.) फड़फड़ाना। इधर उधर घूमना। चमकना।
फर्फरीक (पुं.) खुला या फैला हुआ हाथ। छोटी डाली या कल्ला। कोमलता।

फल् (क्रि.) फल का उपजना। फाड़ना। तोड़ना।
फल (न.) लाभ। वृक्ष। का फल। ढाल। कार्य। अभिप्राय। प्रयोजन। जायफल। त्रिफला। तीर का अगला भाग। दान।
फलद (पुं.) वृक्षमात्र। फलदाता।
फलश्रेष्ठ (पुं.) आम का पेड़। अच्छे फलवाला।
फलिन् (त्रि.) फल वाला।
फलेग्रहि (पुं.) ठीक समय। फलने वाला पेड़।
फलोदय (पुं.) लाभ। स्वर्ग। हर्ष।
फल्गु (त्रि.) रम्य। मनोहर। व्यर्थ। गया में एक नदी।
फल्गूत्सव (पुं.) होली का त्योहार।
फल्य (न.) फल लाने वाला। फूल।
फाट् बुलाने का शब्द।
फाटकी (स्त्री.) फिटकरी।
फाणि (पुं.) करम्भ। हलवा। लप्सी। दही और सत्तू। सीरा।
फाणित (न.) कच्ची खाण्ड।
फाण्ट (न.) अनायास बनाया गया। वैद्यक के अनुसार फाँट औषध बनती है, वह फेंटकर (थाली डाल कर चीजें मिला कर घँसवा) बनाई जाती है।
फाण्ड (न.) पेट। उदर।
फाल (न.) हल की नोक। सीमन्त भाग। सिर पर की माँग। भाल। बलराम का नाम। शिव।
फालखेला (स्त्री.) पक्षी विशेष।
फाल्गुन (पुं.) हिन्दू वर्ष का बारहवाँ मास। अर्जुन का नाम। वृक्ष विशेष।
फाल्गुनी (स्त्री.) नक्षत्र विशेष। फागुन की पूर्णिमा।
फि (पुं.) दुष्टजन। गप्प। क्रोध।
फिङ्गक (पुं.) काँटेदार पूँछ वाला पक्षी विशेष।
फिरङ्ग (पुं.) योरुप। फिरङ्गियों का देश। गर्मी। आतशक।
फु (पुं.) मंत्रोच्चारपूर्वक फूँकना।
फुक (पुं.) पक्षी विशेष।
फुट (त्रि.) विदीर्ण। फटा हुआ। साँप का फन।
फुप्फुस (पुं.) फेफड़ा।
फुल्ल् (क्रि.) खिलना।
फुल्ल (त्रि.) खिला हुआ। पुष्प। फल।
फुल्लरीक (पुं.) जिल्त। जगह। सर्प।
फेटकार (पुं.) चीख।
फेण-न (पुं.) फेन। झाग। थूक। बर्फ।
फेर }
फेरण्ड } (पुं.) श्रृगाल। गीदड़।
फेरव (पुं.) श्रृगाल। गीदड़। राक्षस। धूर्त।
फेरु (पुं.) श्रृगाल।
फेल् (क्रि.) जाना।
फल-ला (न.स्त्री.) उच्छिष्ट। जूठा।

ब

ब (पुं.) बुन्ना। बोना। वरुण। घड़ा। योनि। समुद्र। जल। गमन। तन्तु सन्तान। सूचन।
बढ् (क्रि.) बढ़ना। उगना। दृढ़ करना।
बंहिष्ठ (त्रि.) बहुत ही।
बंहीयस् (त्रि.) अतिशय। बहुत ही।
बकुर (त्रि.) भयानक। बिजली।
बकुल (पुं.) वृक्ष विशेष। मौलसिरी।
बकेरुका (स्त्री.) छोटी जाति का सारस। हवा के झोके से झुकी वृक्ष की डाली।
बकोट (पुं.) हंस। सारस।
बटु (पुं.) बालक। छोकरा।
बडवा (स्त्री.) घोड़ी। अश्विनी। दासी। गोली।
बडवाग्नि (पुं.) समुद्री आग।
बडवासुत (पुं.) अश्विनीकुमार। घोड़ी का बच्चा। बछेड़ा।
बडि-लि+श (न.) मछली का काँटा।
बण् (क्रि.) शब्द करना।
बणिक्पथ (पुं.) हाट। मण्डी।
बणिग्भाव (पुं.) व्यापार।
बणिज (पुं.) व्यापार।
बत (अव्य) दुःख। शोक। दया। हर्ष। सन्तोष।
बद् (क्रि.) बोलना।
ब-व+दरी } (स्त्री.) बेर का पेड़। कपास।
ब-व+दर } (न.)
ब-व+दरिकाश्रम (पुं.न.) बेर के पास वाला

एक आश्रम। हिमालय पर्वत पर तीर्थ विशेष। श्रीबद्रीनाथ। उत्तर दिशा का प्रधान तीर्थ।

बद्धमुष्टि (त्रि.) कृपण। कन्जूस। तङ्गखर्च।

बद्धशिख (पुं.) शिशु। बँधी चोटी वाला।

बध (क्रि.) मारना। हनन करना।

बधिर (त्रि.) बहरा।

बधू (स्त्री.) नारी। बहू। औरत।

बधूटी (स्त्री.) अल्पवयस्का स्त्री।

बध्य (त्रि.) मारने योग्य।

बध्यभूमि (स्त्री.) मारने का स्थान। फाँसी लटकाने का या हिंसा का स्थान।

बध्र (न.) सीसा। चमड़े की रस्सी।

बन् (क्रि.) माँगना।

बन्ध् (क्रि.) बाँधना।

बन्ध (पुं.) रोक। शरीर। आधि।

बन्धक (पुं.) विनिमय। गिरवी रखी हुई वस्तु। व्यभिचारिणी स्त्री।

बन्धन (न.) बाँधना। मारना। रस्सी।

बन्धनस्तम्भ (पुं.) कीला। खूँटा।

बन्धनवेश्मन् (न.) जेलखाना।

बन्धु (पुं.) मित्र। भाई। इष्ट। मामा का पुत्र आदि। एक वृक्ष विशेष।

बन्धुता (स्त्री.) भाईचारा। मित्रता।

बन्धुर (न.) मुकुट। स्त्रीचिह्न। तिलों का चूरा। बहिरा। डोरा। हंस। बगला। मनोहर। नम्र। ऊँचा-नीचा। (स्त्री.) वेश्या। सत्तू।

बन्ध्य (पुं.) निष्फल। बेफल। पुत्ररहित स्त्री। बाँझ।

बभ्र (क्रि.) जाना।

बभ्रवी (स्त्री.) दुर्गा का नाम।

बभ्रु (त्रि.) ललोहा भूरा। (पुं.) गञ्जा। अग्नि। एक यादव का नाम। शिव। विष्णु। चातक पक्षी। महतर। भङ्गी। एक देश का नाम। पीला रंग। पीले रंग वाला।

बभ्रुधातु (पुं.) सोना। धतूरा। गेरू। लाल मिट्टी।

बभ्रुवाहन (पुं.) अर्जुनपुत्र, जो चित्राङ्गदा से हुआ था।

बम्ब् (क्रि.) जाना।

बम्भर (पुं.) मधुमक्खी।

बम्भराली (स्त्री.) मक्खी।

बर (न.पुं.स्त्री.) कुङ्कुम। अदरक। जामाता। धूर्त। यार। गुडूची। त्रिफला। मेदा। ब्राह्मी। हल्दी।

बरट (पुं.) अन्न विशेष।

बर्ब् (क्रि.) जाना।

बर्बट (पुं.) राजमाषा।

बर्बटी (स्त्री.) राजमाष। वेश्या।

बर्वणा (स्त्री.) नीले रङ्ग की मक्खी।

बर्बर (पुं.) जङ्गली। नीच। मूर्ख।

बर्बुर (पुं.) बबूर का पेड़।

बर्स (पुं.) गाँठ। बिन्दु। सिरा।

बर्ह् (क्रि.) बोलना। देना। ढकना। चोटिल करना। मारना। नाश करना। बिछाना।

बर्ह (न.) मोर की पूँछ। किसी पक्षी की पूँछ। पत्र। भीड़।

बर्हण (न.) पत्र। पत्ता।

बर्हि (पुं.) अग्नि। कुश।

बर्हिण (पुं.) मोर।

बल् (क्रि.) जीना। नाज एकत्र करना। देना। चोटिल करना। मारना। बोलना। देखना। चिह्न करना। निरूपण करना। पालना।

बल (न.) सेना। सामर्थ्य। मुटाई। गन्धरस। वीर्य। रूप। शरीर। पत्र। लाल। बल वाला। काक। बलदेव। वरुणावृक्ष। दैत्य विशेष।

बलक्ष (पुं.) बलक्षयकारी। सफेद रङ्ग।

बलद (पुं.) बलदाता। अग्नि विशेष।

बलदेव (पुं.) बलराम। श्रीकृष्ण का बड़ा भाई।

बलभद्र (पुं.) बलदेव। गवय। (बनरोझ)।

बलराम (पुं.) रोहिणीनन्दन। बलदेव।

बलवत् (अवय.) अतिशय। बहुत बल वाला। ताकतदार। दृढ़। मजबूत।

बलविन्यास (पुं.) सेना की रचना विशेष। व्यूह।

बलशालिन् (त्रि.) बल वाला।

बलसूदन (पुं.) इन्द्र। बल दैत्य को मारने वाला।

बला (स्त्री.) बल वाली। अस्त्रविद्या विशेष जो विश्वामित्र ने राम को दी थी।

बलाका (स्त्री.) बक भेद। प्रणयिनी।
बलाट (पुं.) मूँग।
बलात् (अव्य.) अचानक। जबरदस्ती।
बलात्कार (पुं.) जबरदस्ती करना।
बलानुज (पुं.) श्रीकृष्ण। बलराम का छोटा भाई।
बलाय (पुं.) बल का स्थान। वरुण वृक्ष।
बलराति (पुं.) इन्द्र।
बलासक (पुं.) आँख की सफेदी में पीला चिट्टा। रोग विशेष।
बलाह (न.) पानी।
बलाहक (पुं.) बादल। पर्वत। प्रलय के सात बादलों में से एक। विष्णु के चार घोड़ों में से एक।
बलि (पुं.) पूजा की भेंट। कर। उपद्रव। चामरदण्ड। चौरी। भूतयज्ञ। दैत्य का नाम। सकुड़न। छप्पर की बाढ़।
बलिध्वंसिन् (पुं.) विष्णु का वामन अवतार।
बलिन् (त्रि.) बलि वाला। बुढ़ापे के कारण ढीले चमड़े वाला।
बलिपुष्ट (पुं.) काक। काक-बलि खा कर पुष्ट।
बलिभुज् (पुं.) काक। कौआ। काकबलि का भोक्ता।
बलि-ली+मुखः (पुं.) बन्दर।
बलिष्ठ (त्रि.) बहुत बल वाला। ऊँट।
बलिसद्मन् (न.) पाताल।
बलीक (पुं.) छप्पर की बाढ़।
बलीन (पुं.) बिच्छू।
बलीयस् (त्रि.) बहुत बल वाला।
बलीवर्द (पुं.) बैल।
बल्यम् (न.) प्रधान धातु। शुक्र। लता विशेष।
बल्वज-जा (पुं.स्त्री.) एक प्रकार की मोटी घास।
बाल्हिका (पुं.) एक देश का नाम।
बव (पुं.) कर्ण। दिन का प्रथम विभाग (ज्योतिष के अनुसार)।
बष्कय (न.) पूरी उम्र का (यथा बछड़ा)।
बस्त (पुं.) बकरा।
बहुल (न.) बहुत। बड़ा। दृढ़। घना। कड़ा। (पुं.) पौड़ा। (स्त्री.) बड़ी इलायची।
बहिस् बाहिर। बाहिरी। पृथक्।
बहिष्कार (पुं.) निकास। त्याग। जातिच्युत करना।
बहु (त्रि.) विपुल। बहुत। (यह वहु भी होता है)।
बहुत्वच् (पुं.) भोजनपत्र का पेड़।
बहुप्रज (त्रि.) शूकर। मूञ्ज।
बहुमञ्जरी (स्त्री.) तुलसी का वृक्ष।
बहुमल (पुं.) सीसा।
बहुरूप (पुं.) धुना। विष्णु। हिरणगर्भ। शिव। कामदेव।
बहुल (त्रि.) अनेक संख्या वाला। प्रचुर।
बहुव्रीहि (त्रि.) बहुत से धान वाला। व्याकरण का एक समास भेद।
बहुशस् (अव्य.) अनेक बार। कई बार।
बहुशल्य (पुं.) लाल कत्थे का पेड़। अनेक कीलों वाला।
बहुसूति (स्त्री.) बहुत सन्तान वाली।
बह्वृच (पुं.) ऋग्वेद। सूक्त।
बाडव (न.) बहुत घोड़े। ब्राह्मण। और्व। समुद्र का अग्नि।
बाडवेय (पुं.) अश्विनीकुमार।
बाडव्य (न.) विप्र समुदाय।
बाडीर (पुं.) नौकर। कुली।
बाढ (न.) दृढ़। बहुत। उच्च। अवश्य। हाँ। बहुत अच्छा।
बाण (पुं.) तीर। गौ का थन। विरोचन पुत्र। कवि विशेष। बाण का पर।
बाणि-णी (स्त्री.) कपड़े बुनने की क्रिया। वाक्य। बोली। सरस्वती।
बादरायण (पुं.) वेदव्यास। बेर के वननिवासी।
बादरायणि (पुं.) व्यासपुत्र। शुक्रदेव।
बाधृ (क्रि.) रोकना। कष्ट उठाना।
बाध (पुं.) रोक। दर्द। उपद्रव।
बाधक (त्रि.) रोकने वाला। स्त्रियों के ऋतु को रोकने वाला एक रोग विशेष।
बाधिर्य्य (न.) बहिरापन।
बान्धकिनेय (पुं.स्त्री.) कुलटा स्त्री की सन्तान।
बान्धव (पुं.) सम्बन्धी। कुटुम्बी। विशेष कर पिता और माता के सम्बन्ध वाले।
बाभ्रवी (स्त्री.) दुर्गा देवी का नाम।
बाभ्रुक (पुं.) भूरा। चित्ता।

बार्पटीर (पुं.) टीन। अङ्कुर। वेश्यापुत्र। आम फल की गुठली।

बार्हद्रथ (पुं.) जरासन्ध का नाम।

बार्हस्पत (पुं.) बृहस्पति का शिष्य।

बार्हिण (पुं.) मोर का।

बाल (पुं.न.) छोटा। नया। अज्ञ। हाथी व घोड़े की पूँछ। नारियल। पाँच वर्ष का हाथी।

बालक (पुं.न.) गन्धवाला द्रव्य। बच्चा। १६ वर्ष के नीचे की उम्र वाला लड़का। कड़ा।

बाल-लि+खिल्य (पुं.) मुनिविशेष बालखिल्य और वालखिल्य एक ही हैं। इनका रूप अँगूठे के सिरे के बराबर और संख्या साठ हजार है। सूर्यनारायण के सन्मुख मुँह किये सूर्य की स्तुति करते हुए ये पीछे की ओर चलते हैं।

बालग्रह (पुं.) बच्चों को कष्ट देने वाले ग्रह। वैद्य-शास्त्र में इनमें अनेक भेद हैं।

बालधि (पुं.) बालों वाली पूँछ।

बालभोज्य (पुं.) बालकों के खाने योग्य। चना। बालभोग। विनियोग। जलपान।

बालव्यजन (न.) चामर। चँवर। छोटा पंखा।

बालहस्त (पुं.) पशुओं की पूँछ।

बाला (स्त्री.) नारियल। हल्दी। घृतकुमारी। बालछड़। षोड़शी स्त्री युवती। सोलह वर्ष की कन्या।

बालि (पुं.) इन्द्रपुत्र। बानरराज।

बालिश (त्रि.) मूर्ख। बच्चा। तकिया।

बालिहन् (पुं.) श्रीरामचन्द्र।

बाली (स्त्री.) कान में पहनने का एक गहना।

बालुका (स्त्री.) रेत। रेणुका।

बालुकी (स्त्री.) एक प्रकार की ककड़ी।

बालूक (पुं.) विष विशेष।

बालेय (पुं.) एक दैत्य। बलि की सन्तान। गधा। नरम।

बालेष्ट (पुं.) दर। बेर। बालकों का प्रिय।

बाल्य (न.) लड़कपन। १६ वर्ष तक की उम्र। मूर्खता।

बाल्हीक (पुं.) एक देश। एक राजा का नाम। केसर। हींग।

बाष्प-स्प (पुं.) भाप। आँसू। गर्मी।

बाह (पुं.) बाँह। घोड़ा।

बाहा (स्त्री.) बाहु।

बाहीक (पुं.) बाहिरी (ाः) पञ्जाबी। बैल।

बाहु (पुं.) भुजा।

बाहुज (पुं.) क्षत्रिय।

बाहुत्र (पुं.न.) अस्त्र की चोट बचाने के लिये बाहु में बँधा हुआ चमड़ा या लोहा।

बाहुमूल (न.) काँख। बगल। मुड्ढा।

बाहुयुद्ध (न.) मल्लयुद्ध।

बाहुल (पुं.) वह्नि। आग। कार्तिक मास। कृत्तिका का स्वामी।

बाह्य (त्रि.) बाहिरी।

बाहुलेय (पुं.) कार्तिकेय। महादेव का बड़ा पुत्र।

बिट् (क्रि.) चिल्लाना। शपथ खाना। शाप देना।

बिटक (पुं.) फोड़ा।

बिठ (न.) आकाश।

बिड (न.) एक प्रकार का नमक।

बिडाल (पुं.) आँख की पुतली। (ी) बिल्ली।

बिडालक (पुं.) बिल्ला।

बिडीजस् (पुं.) इन्द्र का नाम।

बिद् (क्रि.) अलग करना। चीरना।

बिन्दवि (पुं.) बून्द।

बिन्दु (पुं.) बून्द।

बिब्बोक (पु.) क्रोध। भावभङ्गी।

बिभित्सा (स्त्री.) भीतर घुसने या छेद करने की इच्छा।

बिभीषक (गु.) डरावना। भयदायी।

बिभीषण (पुं.) रावण का छोटा भाई।

बिभीषिका (स्त्री.) भय। डरावना। डराने वाली वस्तु।

बिभ्रक्षु (गु.) नाशकारी।

बिम्ब (न.) सूर्य की गोलाई। मूर्ति। छाया। दर्पण। घड़ा।

बिल् (क्रि.) फाड़ना। अलग करना।

बिल्म (न.) शिरस्त्राण। गड़ी।

बिल्ल (न.) बढ़ा। आलबाल। हींग का पौधा।

बिल्व (पुं.) बेल का वृक्ष।

बिस् (क्रि.) जाना। उसकाना। फेंकना। उगना। चीरना।

बिस्त (पुं.) सुवर्ण की तौल विशेष।
बिल्हण (पुं.) कवि विशेष। जिसने विक्रमाङ्कदेवचरित की रचना की।
बीज (न.) बीजा। कीट। उद्गम स्थान। वीर्य। गणित विशेष। मंत्र के विशेष अक्षर। सत्य। वृक्ष विशेष।
बीभत्स (त्रि.) घृणित। पापी। निष्ठुर। रस विशेष।
बीरिट (पुं.) वायु। भीड़।
बुक्क् (क्रि.) भूखना। बात करना। बोलना।
बुक्क (न.) हृदयपिण्ड। हृदय।
बुट् (क्रि.) चोटिल करना। मार डालना।
बुड् (क्रि.) छिपाना। ढकना।
बुद् (क्रि.) पहचानना। जानना।
बुद्ध (त्रि.) ज्ञात। जाना हुआ। जागा हुआ। (पुं.) भगवान् का नवाँ अवतार।
बुद्धि (स्त्री.) ज्ञानशक्ति।
बुद्बुद (न.) बुलबुला। बलबूला।
बुध् (क्रि.) जानना। समझना। विचारना।
बुध (पुं.) पण्डित। बार का नाम। देव विशेष। चतुर। दक्ष। समझदार।
बुधरत्न (न.) पन्ना।
बुधाष्टमी (स्त्री.) बुधवार सहित अष्टमी।
बुधित (त्रि.) ज्ञाता। जाना हुआ।
बुध्न (न.) वृक्षमूल। शिव। शरीर।
बुभुक्षा (स्त्री.) भूख। क्षुधा।
बुभुक्षित (त्रि.) भूखा।
बुभुत्सा (स्त्री.) जानने की इच्छा। हैरानी। अद्भुत।
बल् (क्रि.) डूबना। डुबोना।
बुलि (स्त्री.) डर। भय।
बुल्व (गु.) बाँका। तिरछा।
बुस् (क्रि.) छोड़ना। निकालना। बाँटना।
बुस (न.) भूँसी। सूखा गोबर। धन। खट्टा गाढ़ा दही। पानी।
बुस्त् (क्रि.) मान करना। प्रतिष्ठा करना।
बुस्त (न.) छिलका। भुजा हुआ मांस।
बृंह् (क्रि.) उगना।
बृह् (क्रि.) बढ़ना। उगना।
बृहत् (गु.) बड़ा।
बृहस्पति (पुं.) देवगुरु। बार का नाम।
बेकनाट (पुं.) सूदखोर।
बेड़ा (सं.) नाव।
बेट् (क्रि.) प्रयत्न करना।
बैडालव्रत (सं.) दम्भ। ढोंग।
बोध (पुं.) ज्ञान।
बोधकर (पुं.) भाट। जताने वाला।
बोधन (न.) विज्ञापन। जागरण।
बोधनी (स्त्री.) पीपल। देवोत्थान एकादशी। कार्तिक शुक्ल एकादशी।
बोधि (पुं.) पीपल का पेड़। जानने वाला।
बौद्ध (न.) बुद्धदेव के अनुयायी। उनके शास्त्र।
बोधायन (पुं.) एक प्राचीन लेखक।
व्युष् (क्रि.) छोड़ना। जुदा करना।
ब्रण (क्रि.) शब्द करना। बोलना।
ब्रतति (स्त्री.) लता। बहुत फैलाव।
ब्रघ्न (पुं.) सूर्य्य। आक का पौधा। शिव। पेड़ की जड़। घोड़ा। तीर की नोक।
ब्रह्मन् (सं.) परमात्मा। प्रशंसा का गीत। धर्मग्रन्थ। वेद। ओंकार। ब्राह्मण। ब्राह्मी शक्ति। धन। भोजन। सत्य।
ब्रह्मकूर्च (न.) व्रत विशेष।
ब्रह्मचर्य (न.) द्विजाति के लिये प्रथम आश्रम। मैथुनराहित्य। इन्द्रियनिग्रह।
ब्रह्मचारिन् (पुं.) ब्रह्मचारी। जितेन्द्रिय।
ब्रह्मज्ञ (न.) परमात्मा का ज्ञान रखने वाले। ब्रह्मवेत्ता। वेदज्ञ।
ब्रह्मण्य (न.) ब्राह्मण और वेदों का रक्षक। विष्णु।
ब्रह्मतीर्थ (न.) पुष्पकरराज। कमल की जड़।
ब्रह्मत्व (न.) ऋत्विग्विशेष। ब्रह्मा का धर्म। निर्विकार ब्रह्म की प्राप्ति।
ब्रह्मदण्ड (पुं.) ब्राह्मण से वसूल किया गया जुर्माना। ब्रह्मशाप। ब्राह्मण की लकड़ी।
ब्रह्मदाय (पुं.) समावृत विप्र को देने योग्य धन।
ब्रह्मनाल (न.) ब्रह्म में विश्राम। परमानन्द।
ब्रह्मपुत्र (पुं.) विष। एक नद। एक क्षेत्र। (स्त्री.) सरस्वती नदी।
ब्रह्मपुरी (स्त्री.) हृदय। सत्यलोक। काशी।

ब्रह्मभूय (न.) ब्रह्मपन। ब्रह्म के साथ मिलन।
ब्रह्मयज्ञ (पुं.) पञ्चयज्ञों में एक प्रधान यज्ञ। जिसमें श्रीविष्णु की स्तुति की जाती है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना।
ब्रह्मरन्ध्र (न.) खोपड़ी के भीतर का छेद।
ब्रह्मराक्षस (पुं.) जो ब्राह्मण का सर्वस्व छीनता है। वह ब्रह्मराक्षस होता है-
"अपहृत्य च विप्रस्वं, भवति ब्रह्मराक्षसः।"
ब्रह्मर्षि (पुं.) वशिष्ठादि ऋषि।
ब्रह्मलोक (पुं.) सत्यलोक।
ब्रह्मवर्चस् (न.) वेदाध्ययन से उत्पन्न हुआ तेज। ब्रह्मतेज, जिसके बल से वशिष्ठ ने विश्वामित्र को हराया था और विश्वामित्र ने कहा था-
"धिग्बलं क्षत्रियबलं, ब्रह्मतेजोबलं बलम्।
अतस्तत्साधयिष्यामि,यद्वै ब्रह्मत्वकारणम्।।"
ब्रह्मवादिन् (पुं.) वेदपाठक। ब्रह्म का निरूपण करने वाला।
ब्रह्मविद्या (स्त्री.) वेदान्तदर्शन।
ब्रह्मविन्दु (पुं.) वेदाध्ययन के समय मुख से निकला जलबिन्दु।
ब्रह्मवैवर्त्त (न.) अठारह पुराणों में से एक।
ब्रह्मसंहिता (स्त्री.) वैष्णवाचार द्योतक ग्रन्थ विशेष।
ब्रह्मसायुज्य (न.) मुक्ति विशेष।
ब्रह्मसूत्र (न.) जनेऊ। शारीरिक सूत्र।
ब्रह्महत्या (स्त्री.) ब्राह्मण की हत्या।
ब्रह्महन् (त्रि.) विप्रहत्याकारी।
ब्रह्महुत (न.) गृहस्थों के पाँच यज्ञों में से एक।
ब्रह्माञ्जलि (पुं.) यजुर्वेद पढ़ते समय हाथ से जो स्वर दिया जाता है वह मुद्रा।
ब्रह्माणी (स्त्री.) ब्रह्मशक्ति।
ब्रह्माण्ड (न.) सारा विश्व।
ब्रह्मावर्त्त (पुं.) सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का देश। बिठूर।
ब्रह्मासन (न.) ध्यान का आसन विशेष।
ब्राह्म (पुं.) ब्रह्म का। पुराण भेद। विवाह विशेष। राजा का धर्म।
ब्राह्मण (पुं.) परब्रह्म को जानने वाला। वेदज्ञ। चार वर्णों में से प्रथम वर्ण। विप्र।
ब्राह्मणब्रुव (पुं.) जो अपने को केवल उत्पत्ति ही से ब्राह्मण कहता है दूषित आचरण वाला ब्राह्मण।
ब्राह्मण्य (न.) विप्रधर्म।
ब्राह्ममुहूर्त्त (पुं.) अरुणोदय से पूर्व की दो घड़ी।
ब्रू (क्रि.) कहना।
ब्लेष्क (न.) जाल। फन्दा।

भ

भ (न.) नक्षत्र। मेष आदि राशियाँ। (पुं.) शुक्राचार्य। भौरा। भगण। २७ की संख्या। मधुमक्खी। रूप।
भक्किका (स्त्री.) झींगुर।
भक्त (पुं.न.) भक्ति करने वाला। भात। विभक्त।
भक्तदास (पुं.) उदरदास। पन्द्रह प्रकार के दासों में से एक।
भक्तमण्ड (पुं.न.) चावलों का बसाया हुआ पानी। माँड़।
भक्ति (स्त्री.) आराधना। बँटवारा। उपचार। अवयव। रचना। श्रद्धा।
भक्तियोग (पुं.) भक्तिरूपी योग। अनुराग उत्पन्न होने से चित्त का एक ओर लग जाना।
भक्ष् (क्रि.) खाना।
भग (पुं.न.) सूर्य। वीर्य। यश। लक्ष्मी। वैराग्य। योनि। इच्छा। माहात्म्य। यत्न। धर्म। मोक्ष। सौभाग्य। कान्ति। चन्द्रमा।
भगदत्त (पुं.) कामरूप देश का प्रसिद्ध राजा जो महाभारत में लड़ा था।
भगन्दर (पुं.) रोग विशेष।
भगवत् (त्रि.) परमेश्वर। भाग्यवान्। छः प्रकार के ऐश्वर्य वाला।
भगाङ्कुर (पुं.) बवासीर के मस्से।
भगिनी (स्त्री.) बहिन। सोदरा।
भगीरथ (पुं.) सूर्य्यवंशी राजा दिलीप का पुत्र, जिसने तपस्या का गङ्गा को प्रसन्न किया और उन्हें इस लोक में प्रवाहित किया।
भग्न (त्रि.) टूटा फूटा। पराजित।
भग्नप्रक्रम (पुं.) अलङ्कार कथित काव्य का दोष विशेष।

भङ्ग (पुं.) पराजय। हार। खण्ड। तिरछापन। भय। डर। पत्ररचना विशेष। जाना। पानी का निकास। सन। भाँग (स्त्री.)।

भङ्गि-गी (स्त्री.) विच्छेद। कौटिल्य। विन्यास। लहर। भेद। बहाना।

भङ्गुर (त्रि.) कुटिल। स्वयं टूटने वाला। नदियों का घुमाव।

भङ्गय (न.) भाँग का खेत।

भज् (क्रि.) बाँटना। सेवा करना। पकाना। देना।

भजमान (त्रि.) बाँटने वाला। सेवक। न्यासपूर्वक प्राप्त धन।

भट् (क्रि.) पालना। बोलना।

भटित्र (न.) कबाब।

भट्ट (पुं.) भाट। स्वामित्व। जाति विशेष। वेदज्ञ। पण्डित। सभी शास्त्रों का अर्थज्ञ।

भट्टार (पुं.) पूज्य। सूर्य।

भट्टारक (पुं.) पूज्य। बहुत पढ़ा हुआ। नाटक में राजा के लिये भी इस शब्द का प्रयोग होता है।

भट्टिनी (स्त्री.) ब्राह्मणी। नाटक की अकृताभिषेक रानी।

भड् (क्रि.) बहुत बोलना।

भण् (क्रि.) कहना।

भणिति (स्त्री.) कथन। कहना।

भण्ड (पुं.) गन्दे शब्द बोलने वाला।

भद् (क्रि.) प्रसन्न होना। कल्याण करना।

भदन्त (पुं.) पूजा गया। बौद्ध विशेष।

भद्र (न.) मङ्गल। सोना। मोथा। ज्योतिष का करण विशेष। महादेव। रामचन्द्र। बलदेव। सुमेरु। (स्त्री.) ज्योतिष में २या, ७मी और १२शी तिथियाँ। (त्रि.) साधु। श्रेष्ठ।

भद्रज (पुं.) इन्द्रजौ।

भद्रतुरग (न.) जम्बूद्वीप के नव वर्षों में से एक, जहाँ अच्छे घोड़े पाये जाते हैं।

भद्रपदा (स्त्री.) पूर्वा और उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र।

भद्रश्रय (न.) चन्दन रस। सन्दल का वृक्ष।

भद्रासन (न.) राजसिंहासन। नृपासन।

भय (न.) भय। डर।

भयङ्कर (त्रि.) डरावना। रस विशेष।

भयानक (पुं.) डरावना। भेड़िया। राहु। रस विशेष।

भर (पुं.) अतिशय। बहुत। पालन करने वाला।

भरण (न.) पोषण। मजूदरी। पकड़ना। (स्त्री.) घोष लता।

भरणयभुज् (त्रि.) मजदूर। वैतनिक कर्मचारी।

भरत (पुं.) जड़भरत नामक मुनि विशेष। नाट्यशास्त्र और अलङ्कारशास्त्र के निर्माता। भील। उरजी। खेत। जुलाहा। राम के भाई जिनका जन्म कैकेयी के गर्भ से हुआ था। नट। दुष्यन्तपुत्र भरत। एक वह राजा जिनके कारण यह वर्ष भारतवर्ष कहा जाता है।

भरतखण्ड (न.) जम्बूद्वीप के नव टुकड़ों में से एक, जिसे भरत ने प्रसिद्ध किया। भारतवर्ष।

भरतवर्ष (न.) भारतवर्ष। भारतखण्ड।

भरताग्रज (पुं.) भरत के बड़े भाई श्रीरामचन्द्र।

भरद्वाज (पुं.) मुनिविशेष। पक्षीभेद।

भर्ग (पुं.) शिव। चमकने वाला पदार्थ। तेज। सूर्यान्तर्गत ईश्वरीय तेज। प्रकाश।

भर्तृ (पुं.) मालिक। पति। राजा। धाता।

भर्तृदारक (पुं.) राजा का पुत्र।

भर्तृहरि (पुं.) विक्रमादित्य का बड़ा भाई। एक राजा।

भर्त्स (क्रि.) झिड़कना। तिरस्कार करना।

भर्त्सन (न.) तिरस्कार युक्त वचन।

भर्म् (क्रि.) मारना।

भर्म (न.) सुवर्ण। मजदूरी। नाभि। भार। घर। सहारा। पालना।

भर्व् (क्रि.) मारना।

भल (क्रि.) मारना।

भल्ल् (क्रि॰) देना। वध करना। निरूपण करना।

भल्ल (पुं.) रीछ। भालू। अस्त्र विशेष।

भव (पुं.) जन्म। उत्पत्ति।

भवत् (त्रि.) आप।

भवादृश (त्रि.) आपके समान।

भवानी (स्त्री.) पार्वती। दुर्गा।

भवितव्य (न.) अवश्य होने वाला।

भवितव्यता (स्त्री.) भाग्य। अदृष्ट। होनहार।

भविष्णु (त्रि.) होनहार। भवितव्यता।
भविष्यत् (पुं.) आने वाला समय।
भव्यः (त्रि.) सुन्दर। होनहार। मङ्गल। शुभ। सत्य। योग्य।
भष् (क्रि.) भौंकना।
भषक (पुं.) कुत्ता।
भस् (क्रि.) चमकना।
भस्त्रा (स्त्री.) फुंकनी। धौकनी। मसक।
भस्मक (न.) रोग विशेष जिसके कारण बहुत सा खाने पर भी भूख बनी ही रहती है।
भस्मन् (न.) शिवजी की विभूति।
भस्मसात् (अव्य.) पूरी तरह भस्म कर डालना।
भादीप्ति (क्रि.) चमकना।
भा (स्त्री.) चमकना। प्रकाश।
भाग (पुं.) बाँट। अंश। चाही गयी। एक देश। भाग्य राशि का तीसवाँ भाग।
भागधेय (न.) राजा का कर। सपिण्ड।
भागवत (त्रि.) अठारह पुराणों में से एक पुराण। भगवद्भक्त। वैष्णव। भगवत्सम्बन्धी।
भागशस् (अव्य.) एक-एक भाग का दान।
भागहर (त्रि.) अंशग्राही। उत्तराधिकारी।
भागिन् (त्रि.) हिस्सेदार।
भागिनेय (पुं.) भानजा।
भागीरथी (स्त्री.) गङ्गा।
भागुरि (पुं.) धर्मशास्त्र और व्याकरण का बनाने वाला एक मुनि विशेष।
भाग्य (न.) अदृष्ट। हिस्सेदार।
भाङ्गीन (न.) भाँग का खेत।
भाज् (क्रि.) पृथक् करना।
भाजन (न.) पात्र। बर्तन। योग्य। आसरा।
भाज्य (त्रि.) बाँटने योग्य।
भाटक (न.) भाड़ा। किराया।
भाण (पुं.) दृश्य काव्य विशेष।
भाण्ड (न.) पात्र। बर्तन। भाण्डार। पूञ्जी। नक्काल। नदी के दोनों तटों का बीच।
भाण्डारिन् (पुं.) भण्डारी।
भाण्डिवाह (पुं.) नाई।
भाति (स्त्री.) चमक। मनोहरता।
भाद्र (पुं.) चैत से ६वाँ मास। पूर्व और उत्तर भाद्रपद नक्षत्र।
भाद्रमातुर (पुं.) सती का पुत्र।
भानु (पुं.) आक का पौधा। सूर्य। किरन। स्वामी। राजा।
भानुमत् (पुं.) सूर्य।
भानुमति (स्त्री.) राजा विक्रमादित्य की रानी।
भाम् (क्रि.) क्रोध करना।
भाम (पुं.) सूर्य। रोष वाली स्त्री।
भामिनी (स्त्री.) स्त्रीमात्र। विशेष कर वह स्त्री जो रोष करती है।
भार (पुं.) बोझा। आठ हजार तोले की तौल।
भारत (न.) वेदव्यास रचित इतिहास का महाग्रन्थ।
भारती (स्त्री.) सरस्वती। पक्षी विशेष। अलङ्कार की एक प्रकार की वृत्ति। संस्कृत भाषा।
भारद्वाज (पुं.) भरद्वाजगोत्री। द्रोणाचार्य। अगस्त्य मुनि। पक्षी विशेष। वृहस्पतिपुत्र। बनैला कपास।
भारयष्टि (स्त्री.) बोझ उठाने का डण्डा। खूँटी।
भारवाह (पुं.) बोझ उठाने वाला।
भारवि (पुं.) किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता कवि।
भारक (पुं.) बोझ उठाने वाला। मजूर।
भार्गव (पुं.) शुक्राचार्य। परशुराम। तीरन्दाज। हाथी। वेद की एक विद्या विशेष। (स्त्री.) पार्वती। लक्ष्मी। दूब।
भार्या (स्त्री.) विधिपूर्वक विवाही गयी स्त्री। पत्नी।
भाल (न.) ललाट। मस्तक। माथा।
भालदर्शन (न.) सिन्दूर।
भालनेत्र (पुं.) शिवजी। जिनके मस्तक में नेत्र हो।
भालाङ्क (पुं.) एक प्रकार का साग। अस्त्र विशेष। सण्डासी। रोहू मछली। महापुरुष के चिह्न वाला। शिव। कछुआ। भाग्यवान् मनुष्य।
भालु-लू+क (पुं.) रीछ।
भाव (पुं.) पसीना। कम्प। साध्य। सिद्ध वा क्रिया रूपी धातु का अर्थ। अनुराग। आशय। अस्तित्व। दशा। परिस्थिति।

भावक (पुं.) मन का विकार। पदार्थ को सोचने वाला। उत्पादक।

भावत्क (पुं.) आपका।

भावना (न.) चिन्ता। ध्यान। पर्य्यालोचना। चिकित्सा शास्त्र में दवाइयों का संस्कार विशेष।

भावबोधक (पुं.) शरीर की चेष्टा। मुख का सुर्ख होना।

भावानुगा (स्त्री.) छाया। टीका। आशय के पीछे जाने वाली।

भावित (त्रि.) साफ। चिन्तित। प्राप्त। पैदा किया। स्वीकृत। बाहिर हुआ।

भाविनी (स्त्री.) स्त्री विशेष जिसके मन में किसी प्रकार की चिन्ता है। साधारणतः स्त्री मात्र।

भावुक (न.) होनहार। फलाफूला। प्रसन्न। शुभ। काव्य की रुचि रखने वाला। (पुं.) (नाटक में) बहनोई।

भाष् (क्रि.) बोलना।

भाषा (स्त्री.) बोली। प्रतिज्ञासूचक वाक्य।

भाषापाद (पुं.) अभियोग। दावा।

भाषित (न.) कहा हुआ।

भाष्य (न.) सूत्रों का व्याख्यान ग्रन्थ, जैसे-व्याकरण पर पातञ्जल, ब्रह्मसूत्र भाष्य आदि।

भास् (क्रि.) चमकना।

भास (पुं.) चमक। गोष्ठ। कुत्ता। शुक्र।

भासुर (त्रि.) चमकने वाला। स्फटिक। वीर। (पुं.) कुष्ठ की दवा।

भास्कर (पुं.) सूर्य। अग्नि। वीर। आक का पेड़। सिद्धान्तशिरोमणि ग्रन्थ का निर्माता।

भास्करप्रिय (पुं.) पद्मरागमणि।

भास्वर (त्रि.) सूर्य। दिन। आक। अग्नि (पुं.)।

भास्वत (पुं.) सूर्य। आक का पौधा। वीर। चमकने वाला।

भिक्ष् (क्रि.) लालच करना। क्लेश देना।

भिक्षा (स्त्री.) भीख।

भिक्षाक (त्रि.) सन्यासी। भिखारी।

भिक्षाशिन् (त्रि.) भीख खा कर जीने वाला। भिखारी। संन्यासी।

भिक्षु (पुं.) भिखारी। संन्यासी।

भिक्षुक (पुं.स्त्री.) भीख पर जीने वाला। भिखारी। संन्यासी।

भित्त (न.) दीवार। टुकड़ा।

भित्ति (स्त्री.) दीवार। अवसर। विभागकरण।

भिद् (क्रि.) दो टूक करना। बढ़ाना।

भिदा (स्त्री.) चीर फाड़। विशेष वृद्धि।

भिदुर (न.) वज्र। प्लक्ष वृक्ष। तोड़ने वाला।

भिन्दिपाल (पुं.) अस्त्र विशेष।

भिन्न (पुं.) जुदा किया। फोड़ दिया।

भिन्नाभिन्नात्मन् (पुं.) चने।

भिल् (क्रि.) फाड़ना।

भिल्ल (पुं.) भील।

भिष् (क्रि.) चिकित्सा करना।

भिषग (पुं.) वैद्य। चिकित्सक।

भिस्सटा (स्त्री.) दग्धान्न। सड़ा हुआ अन्न।

भी (क्रि.) डरना।

भी (स्त्री.) भय।

भीति (स्त्री.) भय। कम्प।

भीम (त्रि.) भयानक। महादेव। भीमसेन। (पुं.) अमलतास। (स्त्री.) दुर्गा।

भीमसेन (पुं.) युधिष्ठिर का छोटा भाई।

भीमैकादशी (स्त्री.) ज्येष्ठशुक्ला एकादशी।

भीरु (त्रि.) डरपोक। शतावरी।

भीरुक (पुं.) गीदड़।

भीषण (पुं.) भयानक।

भीष्म (पुं.) गङ्गापुत्र। देवव्रत। भयङ्कर।

भीष्मपञ्चक (न.) कार्तिक शुक्ला ११शी से १५शी तक पाँच तिथियाँ।

भुक्त (त्रि.) खाया हुआ। भोगा हुआ।

भाजनसमुज्झित (त्रि.) अवशिष्ट अन्न जो भोजन के बाद छोड़ा जाता है।

भुक्तिप्रद (पुं.) मूँग।

भुग्न (त्रि.) कुबड़ा।

भुज् (क्रि.) भक्षण करना।

भुज (पुं.स्त्री.) बाहु। क्षेत्र की रेखा विशेष। हाथी की सूँड़। वृक्ष की शाखा।

भुजग (पुं.) साँप। अश्लेषा नक्षत्र।

भुजगान्तक (पुं.) गरुड़। सर्पहन्ता।

भुजङ्ग (पुं.) साँप। जार। आश्लेषा नक्षत्र।
भूजङ्गप्रयात (न.) एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में १२ अक्षर होते हैं।
भुजङ्गम (पुं.) सर्प। साँप।
भुजशिरस् (पुं.) कन्धा।
भुजान्तर (न.) कोख। कुक्षि। गोद।
भुजिष्य (पुं.) दास। रोग। स्वतंत्र। हाथ का डोरा। (स्त्री.) दासी। वेश्या।
भुवन (न.) जगत्। दुनिया। लोग। आकाश। १४ की संख्या।
भुवनकोष (पुं.) भूगोल। ज्योतिष का एक ग्रन्थ।
भुवर् (अव्य.) आकाशस्वरूप दूसरा लोक।
भू (क्रि.) पाना। साफ करना। होना।
भूकेश (पुं.) बड़ का पेड़। सिवार। शैवाल।
भूगोल (पुं.) पृथिवीमण्डल।
भूच्छाया (स्त्री.) पृथिवी की छाया।
भूजम्बू (स्त्री.) गेहूँ। फल विशेष।
भूत (त्रि.) उचित। पृथिवी। तेज। जल। वायु। आकाश। यथार्थ। पिशाच आदि। रूप रस गन्ध आदि विशेष गुण वाले पदार्थ। कुमार। योगियों के राजा। कृष्णपक्ष। सदृश। सत्य। कृष्णा १४ शी।
भूतघ्न (पुं.) भोजनपत्र। लहसन। ऊँट। (स्त्री.) तुलसी।
भूतचतुर्दशी (स्त्री.) यमचतुर्दशी, यह आश्विन कृष्ण और कार्तिक मास की कृष्ण तथा शुक्ल की चतुर्दशी है, इन चतुर्दशियों में यमराज को दीपदान किया जाता है।
भूतधात्री (स्त्री.) पृथिवी।
भूतनाथ (पुं.) भैरव। महादेव।
भूतनाशन (न.) रुद्राक्ष। सरसों।
भूतपक्ष (पुं.) कृष्णपक्ष।
भूतभावन (पुं.) विष्णु। बटुक भैरव।
भूतयज्ञ (पुं.) कौवा आदि जीवों के लिये अन्नदान। पञ्चमहायज्ञों में से गृहस्थ के करने योग्य यज्ञ विशेष बलि-वैश्वदेव।
भूतल (न.) पृथ्वी।
भूतशुद्धि (स्त्री.) शरीर का संस्कार जो मंत्र द्वारा किया जाता है।
भूतहर (पुं.) गुग्गुल।
भूतात्मन् (पुं.) परमात्मा। विष्णु। बटुक भैरव।
भूतावास (पुं.) विष्णु। बहेड़े का पेड़।
भूति (स्त्री.) सम्पत्ति। जाति। अणिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियाँ।
भूदार (पुं.) सूअर।
भूदेव (पुं.) ब्राह्मण
भूधर (पुं.) पहाड़।
भूप (पुं.) नरेश। राजा।
भूपाल (पुं.) राजा। नृपति।
भूभुज् (पुं.) भूपाल। राजा।
भूभृत् (पुं.) पहाड़। राजा।
भूमन् (पुं.) बहुत्व।
भूमि-मी (स्त्री.) पृथिवी। जिह्वा। एक की संख्या।
भूमिका (स्त्री.) रचना। पृथिवी। उपोद्घात। छलने का भेष। मन की अवस्था। सीढ़ी। कक्षा। फर्श।
भूमिज् (पुं.) भूमि का पुत्र। मङ्गलग्रह। नरक दैत्य, इसीका नाम भौमासुर है।
भूमिरुह् (पुं.) वृक्ष।
भूमिष्ठ (पुं.) झुका हुआ।
भूमिस्पृश् (पुं.) वैश्य। झुका हुआ। धरती पर रखा हुआ।
भूमीन्द्र (पुं.) नृप। राजा।
भूयस् (अव्य.) फिर। बहुत ही।
भूयिष्ठ (त्रि.) बहुत ही।
भूर् (पुं.) नीचे के सप्त लोकों में एक। ब्रह्मा का मानसिक पुत्र।
भूरि (पुं.) विष्णु। शिव। इन्द्र (न.) सोना। (त्रि.) प्रचुर।
भूरिगम (पुं.) गधा।
भूरिमाय (पुं.) श्रृगाल। गीदड़।
भूरिशस् (अव्य.) बहुत बार।
भूरिश्रवस् (पुं.) चन्द्रवंशी राजा सोमदत्त का पुत्र। राजा विशेष।
भूर्ज्ज (पुं.) भोजनपत्र का वृक्ष।
भूर्ज्जपत्र (पुं.) भोजनपत्र।
भूष् (क्रि.) सजाना।

भूषण (न.) अलङ्कार। गहना।
भूषा (स्त्री.) सजावट।
भूषित (त्रि.) सजा हुआ।
भूष्णु (त्रि.) होनहार।
भृ (क्रि.) धारण करना। पालना।
भृकुंस-श (पुं.) भौ का इशारा। स्त्री का भेष धारण करने वाला नट।
भृकुटि-टी (स्त्री.) भौं का चढ़ाव उतार। भौं का तिर्छापन।
भृगु (पुं.) मुनि विशेष। जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों में बड़े की परीक्षा करने के लिये जा कर विष्णु को लात मारी थी। वह चिह्न "भृगुलता" सदा के लिये हो गया। शङ्कर। शुक्र ग्रह। पहाड़ की चोटी। जमदग्नि। ऊँचा स्थान। भृगुवंशीय।
भृगुलता (स्त्री.) विष्णु के वक्षःस्थल में भृगु के लात मारने का नित्य चिह्न जो भूषण में माना जाता है।
भृगुपति (पुं.) भृगुवंशीय। परशुराम।
भृगुसुत (पुं.) परशुराम। शुक्राचार्य।
भृङ्ग (पुं.) जार। भौंरा। अभ्ररक। पक्षी विशेष।
भृङ्गरिट-टी (पुं.) शिवजी का गणविशेष।
भृङ्गाभीष्ट (पुं.) भौंरे का प्रिय। आम का पेड़।
भृङ्गि (पुं.) शिवजी का गण।
भृज् (क्रि.) भूनना।
भृतक (त्रि.) मजदूर।
भृति (स्त्री.) भरण। पोषण। मजदूरी। मूल्य।
भृतिभुज् (त्रि.) मजदूर। नौकर।
भृत्य (पुं.) दास। नौकर।
भृ-भ्र+मि (पुं.) भँवर। वायुभेद।
भृश् (क्रि.) नीचे गिरना।
भृश (न.) बहुत। अधिक।
भृष्ट (त्रि.) भुना हुआ।
भॄ (क्रि.) भूँजना। झिड़कना। पालना।
भेक (पुं.) मेंडक। भेड़ा। ऋषि विशेष।
भेद (पुं.) जुदा करना। फाड़ना।
भेदक (त्रि.) विदारक। फाड़ने वाला।
भेदन (त्रि.) हींग। अमलतास। विदारण।
भेदित (त्रि.) विदारित। फाड़ा हुआ।
भेद्य (त्रि.) विदार्य। फाड़ने योग्य।
भेरि-री (स्त्री.) बड़ा नगाड़ा या ढोल।
भेल (पुं.) बेड़ा। (गु.) भीरु। मूर्ख। चञ्चल। लम्बा। तीव्र।
भेलक (पुं.) नाव। बेड़ा।
भेष् (क्रि.) डरना। भय खाना।
भेषज (न.) औषध।
भेषजाङ्ग (न.) अनुपान।
भैक्ष (न.) भीख।
भैक्षचर्य्या (स्त्री.) भीख माँगना।
भैमी (स्त्री.) ज्येष्ठशुक्ला ११शी। दमयन्ती।
भैरव (न.) भय। भयानक। रस विशेष। शङ्कर। रागभेद।
भैषज्य (न.) दवाई।
भो (अव्य.) सम्बोधन। हे। अरे।
भोग (पुं.) सुख दुःख का अनुभव। साँप का फन। धन। पोषण। आहार।
भोगदेह (पुं.) प्रेतदेह।
भोगभूमि (स्त्री.) भारतवर्ष।
भोगवती (स्त्री.) पातालगङ्गा।
भोगिन् (पुं.) साँप। राजा। नाई। गाँव का मुखिया। भोगने वाला।
भोगिवल्लभ (पुं.) चन्दन।
भोगीन्द्र (पुं.) अनन्त देव। वासुकि।
भोग्य (न.) धन। धान्य। भोगने योग्य।
भोज (पुं.) भोजराज।
भोजन (न.) आहार। विष्णु का नाम।
भोज्य (त्रि.) खाने योग्य पदार्थ।
भोटाङ्ग (पुं.) भूतान। देश विशेष।
भौतिक (त्रि.) व्याधि।
भौम (त्रि.) मङ्गलग्रह। नरकनामी दैत्य। पानी। प्रकाश। अत्रि ऋषि। (स्त्री) सीता।
भौमरत्न (न.) मूँगा। प्रवाल।
भौमिक (त्रि.) जमींदार।
भौरिक (त्रि.) खजान्ची।
भ्यस् (क्रि.) डरना।
भ्रण (क्रि.) शब्द करना।

भ्रङ्क्श-स (पुं.) स्त्री का रूप रख कर नाचने वाला नट।

भ्रकुटि-टी (स्त्री.) भ्रूभङ्ग। भौं चढ़ाना।

भ्रम् (क्रि.) चलना घूमना।

भ्रम (पुं.) मिथ्याज्ञान। पानी के निवास का स्थान। पानी का झरना। कुन्द फूल।

भ्रमण (न.) घूमना।

भ्रमर (पुं.) भौंरा।

भ्रमरक (पुं.) काली अलकें या जुल्फें।

भ्रश् (क्रि.) नीचे गिरना।

भ्रष्ट (त्रि.) गिरा हुआ।

भ्रसज् (क्रि.) पकाना। राँधना।

भ्राज (क्रि.) चमकना।

भ्राजिष्णु (त्रि.) चमकने वाला।

भ्रातृ (पुं.) भाई। सहोदर।

भ्रातृज (पुं.) भतीजा।

भ्रातृव्य (पुं.) भतीजा। शत्रु।

भ्रातृश्वशुर (पुं.) स्वामी का बड़ा भाई। जेठ।

भ्रात्रीय (पुं.) भाई का। भतीजा।

भ्रान्त (न.) मिथ्या ज्ञान वाला। घूमने वाला।

भ्रान्ति (स्त्री.) मिथ्या ज्ञान। भ्रमण।

भ्रान्तिमत् (गु.) घूमने वाला। भूलना। अर्थालङ्कार भेद।

भ्रामक (पुं.) गीदड़। घुमाने वाला।

भ्रामर (न.) शहद। भौंरा सम्बन्धी।

भ्राष्ट (न.) आकाश। कड़ाही।

भ्रुकुंस (पुं.) स्त्री का रूप धर कर नाचने वाला पुरुष।

भ्रुकुटि-टी (स्त्री.) क्रोध में भर कर भौं चढ़ाना।

भ्रू (स्त्री.) भौं।

भ्रूक्षेप (पुं.) भौं का चढ़ाना। कटाक्ष करना।

भ्रूण (पुं.) गर्भ। बालक।

भ्रूणघ्न (त्रि.) गर्भ की हत्या करने वाला।

भ्रेज् (क्रि.) चमकना।

भ्रेष् (क्रि.) पीना। चलना। उचित स्थान से गिरना।

भ्लक्ष् (क्रि.) खाना।

भ्लाश् (क्रि.) चमकना।

म

म (पुं.) चन्द्रमा। शङ्कर। ब्रह्मा। यम। समय। मधुसूदन। विष। विष्णु। गण विशेष। मध्यम स्वर। प्रसन्नता। जल।

मह् (क्रि.) उगना। बढ़ना। देना। बोलना। चमकना।

मक् (क्रि.) सजाना। जाना।

मकर (पुं.) मगर। कामदेव के झण्डे का चिह्न। दसवीं राशि। एक प्रकार के कान का आभूषण। कुबेर के नव कोषों में से एक। व्यूह विशेष।

मकरकुण्डल (पुं.) कान का आभूषण जिसकी बनावट मगरमच्छ जैसी होती है।

मकरकेतन (पुं.) कामदेव। मत्स्यध्वज।

मकरन्द (पुं.) फूल का रस। कुन्द वृक्ष। तरी। कोइल। भौंरा। आम का विशेष सुगन्ध वाला वृक्ष।

मकुट (न.) ताज। मुकुट।

मकुर (पुं.) दर्पण। आईना। बकुल वृक्ष। कुम्हार की लकड़ी। फूल की कली।

मक्क् (क्रि.) जाना।

मक्कल (पुं.) एक प्रकार का भयानक घोड़ा जो तरेट में होता है।

मक्कुल (पुं.) लाल खड़ी। गेरू।

मक्कोल (पुं.) खड़िया। चाक।

मक्ष् (क्रि.) गुस्सा करना। इकट्ठा करना।

मक्षवीर्य (पुं.) प्रियाल का पेड़!

मक्षिका, **मक्षीका** (स्त्री.) मक्खी।

मख् (क्रि.) रिंगना। सरकना। जाना।

मख (पुं.) यज्ञ। (त्रि.) सुन्दर। चालाक।

मग् (क्रि.) सरकना।

मग (पुं.) सूर्योपासक।

मगध (पुं.) पाप या दोष को धारण करने वाला। एक देश विशेष।

मगधेश्वर (पुं.) मगध देश का राजा। जरासन्ध।

मगधोद्भवा (स्त्री.) पीपल।

मघ् (क्रि.) छल करना। सजाना।

मघवत् (पुं.) इन्द्र।

मघवन् (पुं.) इन्द्र।

मघा (स्त्री.) अश्विनी से दसवाँ नक्षत्र।

मङ्क् (क्रि.) चलना। सजाना।

मङ्किल (पुं.) वन की आग।

मङ्कुर (पुं.) दर्पण।

मङ्क्षण (न.) पैरों का कवच।

मंक्षु / मङ्क्षु } (अव्य.) तुरन्त। बहुतसा।

मङ्क्षु (पुं.) बन्दी।

मङ्ग् (क्रि.) चलना।

मङ्ग (पुं.) नाव का सिरा। जहाज का एक भाग।

मङ्गल (त्रि.) एक ग्रह। प्रशस्त। दुर्गा। कुशा। शुभ।

मङ्गलच्छाया (पुं.) वटवृक्ष।

मङ्गलपाठक (पुं.) स्तुति पाठ करने वाला।

मङ्गलप्रदा (स्त्री.) हल्दी।

मङ्गल्य (न.) सोना। सिन्दूर। दही। बिल्व।

मङ्गल्यक (पुं.) मसूर की दाल।

मङ्गिनी (स्त्री.) नाव। जहाज।

मङ्घ् (क्रि.) सजाना।

मच् (क्रि.) ऊँचा करना। ठगना। अभिमान करना। पूजा करना। पकड़ना।

मचर्चिका (स्त्री.) यह शब्द जब संज्ञावाचक शब्द के पीछे लगता है तो अपनी जाति में अच्छे को सूचित करता है जैसे गोमचर्चिका। प्रशस्त। बहुत अच्छा।

मच्छ (पुं.) यह मत्स्य का अपभ्रंश है। इसका अर्थ है- बड़ी मछली।

मज्जन (न.) स्नान। नहान।

मज्जसमुद्भव (न.) शुक्र। वीर्य।

मज्जा (स्त्री.) हड्डियों का सार। वृक्ष का सार अंश।

मज्जाज (न.) गुग्गल।

मज्जारस (पुं.) वीर्य।

मज्जिका (स्त्री.) मादा सारस।

मज्जूषा (स्त्री.) पेटी। डलिया।

मञ्च् (क्रि.) ग्रहण करना। ऊँचा होना। चलना। चमकना। सजाना।

मञ्चः (पुं.) खाट। ऊँचा मण्डप विशेष।

मञ्चिका (स्त्री.) कुर्सी।

मञ्ज् (क्रि.) साफ करना। धोना। शब्द करना।

मञ्जर (न.) फूलों का गुच्छा। मोती। तिलक वृक्ष।

मञ्जरि-री (स्त्री.) नई निकली कोमल पत्तों की वल्लरी। मुक्ता। तुलसी।

मञ्जा (स्त्री.) बकरी। बेल। फूलों का गुच्छा।

मञ्जिका (स्त्री.) रण्डी।

मञ्जिमन् (पुं.) सुन्दरता।

मञ्जिष्ठ (पुं.) चमकीला। लाल।

मञ्जिष्ठा (स्त्री.) मजीठ। बेल विशेष।

मञ्जीर (न.) बिछिया। पायजेब। वह खम्भा जिसमें मक्खन निकालने की रई रस्सी से बाँधी जाती है।

मञ्जील (पुं.) वह गाँव जिसमें अधिकतर धोबी बसते हों।

मञ्जु (त्रि.) सुन्दर। मनोहर।

मञ्जुघोष (पुं.) देवता विशेष। (स्त्री.) अप्सरा।

मञ्जुल (त्रि.) मनोहर। (पुं.) जलरङ्क पक्षी। (न.) निकुञ्ज।

मञ्जूषा (स्त्री.) पेटी। पिटारी।

मट् (क्रि.) नाश होना। निर्बल होना।

मटची / मटती } (स्त्री.) ओला।

मट्टक (न.) छत की मेंड़।

मठ् (क्रि.) रहना। चलना। पीसना।

मठ (पुं.) तपस्वियों के रहने का स्थान। देवमन्दिर। पाठशाला।

मठिका (स्त्री.) मठी।

मड् (क्रि.) सजाना।

मड्डु / मड्डुक } (पुं.) वाक्यभेद। एक प्रकार का बाजा। बड़ा। डमरू।

मण् (क्रि.) बर्राना। अज्ञात शब्द करना।

मणि / मणी } (पुं.स्त्री) रत्न। मट्टी का मटका। सर्वोत्कृष्ट कोई भी वस्तु। लिङ्ग का ऊपरी भाग।

मणिकर्णिका (स्त्री.) काशी का एक तीर्थस्थान।

मणिकूट (पुं.) उत्तर देश का एक पहाड़।

मणित (न.) मैथुन के समय स्त्रियों का धीरे-धीरे अव्यक्त शब्द करना।

मणिपुर (न.) मनीपुर नामक एक नगर या राज्य।
मणिबन्ध (पुं.) हाथ का पहुँचा। सेंधे नमक का पहाड़।
मणिमण्डप (पुं.) मणियों का मण्डप (घर)।
मणिबीज (पुं.) अनार।
मणिसर (पुं.) मणियों का पिरोया हुआ हार।
मणीवः (अव्य.) मणि की तरह।
मण्ड (पुं.न.) सब अन्नों का सार। माँड़। आँवला। (स्त्री.) शराब। (पुं.) अण्डी का पेड़। साग विशेष। मेंडक।
मण्डन (पुं.) गहना। सजाना।
मण्डप (पुं.न.) देवादिगृह। थोड़े दिनों के लिये खड़ा किया गया मण्डवा। खीमा। निकुञ्ज। देवगृह।
मण्डल (न.) गोल आकार का। चार सौ योजन का एक देश। वृत्त। नखाघात। बारह राजाओं का समूह। गोल। चौक यथा गृहमण्डल, सर्वतोभद्र मण्डल। कुत्ता। साँप।
मण्डलनृत्य (न.) चक्र बाँध कर नाचना।
मण्डलाधीश (पुं.) मण्डलेश्वर। चार सौ योजन पर्य्यन्त भूमि का स्वामी।
मण्डलिन् (पुं.) कुड़रियादार साँप। बिल्ला। बड़ का पेड़।
मण्डित (त्रि.) भूषित।
मण्डूक (पुं.) मेंडक। मुनि विशेष।
मण्डूर (न.) लोहे का मैल।
मत (त्रि.) सम्मत। माना गया। ज्ञात। पूजा गया। (न.) आशय। पूजा।
मतङ्ग (पुं.) मेघ। बादल। एक मुनि।
मतङ्गज (पुं.) गज। हाथी।
मतल्लिका (स्त्री.) प्रशस्त। भला।
मति (स्त्री.) ज्ञान। इच्छा। चाह। स्मृति।
मतिभ्रम (पुं.) बुद्धि का फेर।
मतिविभ्रम (पुं.) उन्मादरोग। पागलपन।
मत्क (पुं.) खटमल। मेरा।
मत्कुण (पुं.) खटमल।
मत्कुणारि (पुं.) भाँग।
मत्त (पुं.) दुर्मद। मदयुक्त। प्रसन्न।
मत्तकाशिनी (स्त्री.) उत्तम योषिता। मस्त
मत्तकासिनी स्त्री। साधारण स्त्री।
मत्तमयूर (पुं.) बादल। एक प्रकार का छन्द।
मत्तवारण (पुं.) मस्त। हाथी।
मत्र् (क्रि.) गुप्त बात चीत करना।
मत्सर (पुं.) ईर्ष्या। क्रोध। कृपण। (स्त्री.) मक्खी।
मत्स्य (पुं.) मछली।
मत्स्यधानी (स्त्री.) मछली रखने का पात्र।
मत्स्यण्डी (स्त्री.) बिना साफ की हुई
मत्स्यण्डिका खाण्ड। राब।
मत्स्यरङ्ग (पुं.) मछरङ्गा एक प्रकार का पक्षी।
मत्स्यराज (पुं.) रोहित मछली। विराट का नाम।
मत्स्यवेधन (न.) मछली फँसाने की बंसी। पानकौड़ी।
मत्स्योदरी (स्त्री.) मत्स्यगन्धा। वेदव्यास की माता। काशी में एक तीर्थ विशेष।
मथ् (क्रि.) बिलोना। मथना। मारना।
मथन (न.) मारना। क्लेश देना। बिलोना।
मथित (त्रि.) हत। मारा गया। बिना पानी का माठा।
मथुरा (स्त्री.) श्रीकृष्ण की जन्मभूमि।
मथूरा प्राचीन शूरसेन देश की राजधानी।
मद् (क्रि.) अभिमान करना। प्रसन्न होना।
मद (पुं.) हाथी के गाल का पानी। आमोद। अहङ्कार। वीर्य। कस्तूरी। मस्ती। कल्याणकारी पदार्थ।
मदकट (पुं.) चीनी। खाण्ड।
मदकल (पुं.) बहुत मस्त। मतवाला हाथी।
मदगन्ध (पुं.) सप्तछद वृक्ष। शराब।
मदन (पुं.) कामदेव। वसन्त। मौसिम।
मदनचतुर्दशी (स्त्री.) चैत्रशुक्ला चतुर्दशी।
मदनमोहन (पुं.) श्रीकृष्ण देव।
मदनावस्था (स्त्री.) उन्मत्त दशा।
मदयित्नु (पुं.) कामदेव। मेघ। कलवार। (त्रि.) मादक। (न.) मदिरा।
मदालापिन् (पुं.) कोइल।
मदिरा (स्त्री.) शराब। लाल कत्था।
मदोत्कट (पुं.) मत्त गज। (स्त्री.) शराब। (त्रि.) मस्त।

मदोदग्र (पुं.) मत्त। (स्त्री.) नारी।
मदोद्धत (त्रि.) मत्त।
मद्गु (पुं.) एक प्रकार का साँप। नौका। जन्तु विशेष। दोगला। बगुला।
मद्य (न.) मदिरा।
मद्र (पुं.) देश विशेष। प्रसन्नता।
मद्वन् (गु.) नशीला। मादक (पुं.) शिव।
मधव्य (पुं.) वैशाख मास।
मधु (न.) शहद। पुष्पराग। शराब। जल। चीनी। मिठाई। सोम रस। एक दैत्य। चैत्र मास। वसन्त ऋतु। अशोक वृक्ष। मुलहठी।
मधु-अष्ठीला (स्त्री.) शहद का छत्ता।
मधु-आधार (न.) मोम।
मधुआम्र (पुं.) आम विशेष।
मधुकार (पुं.) भौरा।
मधुक्षीर (पुं.) खजूर का पेड़।
मधुज (न.) मोम। मधु दैत्य। मेद से उपजी।
मधुजित् (पुं.) विष्णु।
मधुत्रय (न.) शहद, घी और मिश्री।
मधुप (पुं.) भौंरा।
मधुपर्क (न.) दही, घी, पानी, शहद और मिश्री। काँसे के पात्र में रखा शहद और दही।
मधुपुरी (स्त्री.) मथुरा।
मधुमक्षिका (स्त्री.) शहद की मक्खी।
मधुमत् (त्रि.) चित्तवृत्ति विशेष। वेद की तीन ऋचाएँ। तान्त्रिक एक देवी।
मधुयष्टि (स्त्री.) मुलहठी।
मधुर (पुं.) मीठा। मनोहर। (प्रि.) प्रिय। (पुं.) लाल गन्ना। गुड़। धान। जीरा।
मधुरस (पुं.) गन्ना। पानी।
मधुरस्रवा (स्त्री.) पिण्डखजूर।
मधुलिह् (पुं.) भ्रमर।
मधुवन (न.) मथुरा क्षेत्र में एक स्थान विशेष। किष्किन्धा नगरी में सुग्रीव का बगीचा।
मधुवार (पुं.) बारम्बार मद्यपान।
मधुवीज (पुं.) अनार।
मधुशेष (पुं.न.) मोम।
मधुसख (पुं.) कामदेव।
मधुसूदन (पुं.) श्रीकृष्ण। भौंरा। शाक विशेष। पलाँकी का शाक।
मधुस्वर (पुं.) कोकिल। मीठी आवाल।
मधुहन् (पुं.) विष्णु। नारायण।
मधूच्छिष्ट (न.) मोम।
मधूपघ्न (पुं.न.) मथुरा नगरी।
मध्य (पुं.) बीच। कमर। पेट। बीच की अङ्गुली।
मध्यगन्ध (पुं.) आम का फल और पेड़।
मध्यतस् (न.) बीच। बीच से और बीच में
मध्यदेश (पुं.) कमर। हिमालय और विन्ध्याचल का बीच। देश विशेष।
मध्यन्दिन (न.) मध्याह्न। दोपहर। इस नाम की शाखा।
मध्यपदलोपिन् (पुं.) व्याकरण का समास विशेष।
मध्यम (त्रि.) बीच का।
मध्यमक (गु.) बीच का।
मध्यमिका (स्त्री.) लड़की जो ऋतुधर्म की अवस्था को पहुँच चुकी हो।
मध्यमपाण्डव (पुं.) अर्जुन।
मध्यमभृतक (पुं.) किसान। नौकरी पा कर खेती करने वाला।
मध्यमलोक (पुं.) पृथिवी।
मध्यमसंग्रह (पुं.) साधारण झगड़ा, जिसका कारण यह हो कि पराई स्त्री के पास माला मिठाई आदि भेजना।
"प्रेषणं गन्धमाल्यानां धूपभूषणवाससाम्।
प्रलोभनं चान्नपानैर्मध्यमः संग्रहःस्मृतः।।"
तीन प्रकार के दण्डों में से दूसरे प्रकार का दण्ड।
मध्यमसाहस (पुं.) पाँच पण का दण्ड। जोर से कोई कार्य करना। दूसरे के वस्त्रों को फेंकना या फाड़ना।
मध्यमा (स्त्री.) ऋतु वाली स्त्री। बीच की अङ्गुली। कमल की डण्डी। हृदयोद्भवा एक प्रकार की वाणी।
मध्यमाहरण (न.) प्रसिद्ध अव्यक्त मान को बतलाने वाली गणना।
मध्यरात्र (पुं.) निशीथ। आधी रात।

मध्यवर्तिन् (त्रि.) मध्यस्थ। बिचवनिया।
मध्यस्थ (पुं.) बीच में पड़ने वाला।
मध्या (स्त्री.) नायिका विशेष। मध्यमा अङ्गुली। छन्द जिसका पाद तीन अक्षर वाला होता है।
मध्याह (पुं.) दोपहर। दिन का बीच।
मध्वक (पुं.) मधुमक्षिका।
मध्वासव (पुं.) मदिरा। शराब।
मध्विजा (सं.) नशीला कोई आसव। मदिरा।
मन् (क्रि.) पूजा करना। अभिमान करना। जानना। विचारना। अनुमान करना। मान करना।
मनःशिला (स्त्री.) लाल रङ्ग की एक धातु। मनसिल।
मनस् (न.) मनसिल। मन।
मनसा (स्त्री.) आस्तीक मुनि की माता। जरत्कारु की पत्नी।
मनसिज (पुं.) कामदेव।
मनसिजय (पुं.) कामदेव।
मनस्कार (पुं.) मन का सुखेच्छु होना।
मनस्ताप (पुं.) पश्चात्ताप। मन की पीड़ा। मानसिक दुःख।
मनस्विन् (त्रि.) अच्छे मन का। धीर। पण्डित। दृढ़ चित्त वाला।
मनाक (अव्य.) थोड़ा। धीरे। थोड़ा सा।
मनाका (स्त्री.) हथिनी।
मनावी-यी (स्त्री.) मनु की स्त्री।
मनित (त्रि.) जाना हुआ।
मनीक (न.) आँख का कीचड़।
मनीषा (स्त्री.) बुद्धि। इच्छा। चाह। समझ। वैदिक सूक्त का गीत।
मनीषिका (स्त्री.) समझ। बुद्धि।
मनीषित् (गु.) चाहा हुआ। अभिलषित।
मनीषिन् (पुं.) पण्डित। बुद्धि वाला।
मनु (स्त्री.) एक प्रजापति। मानव शास्त्र के निर्माता। ब्रह्मा से उत्पन्न।
मनु+अन्तर (मन्वन्तर), (न.) मनु की आयु का ७१ चौगुनी। ब्रह्मा के दिन का चौदहवाँ हिस्सा।
मनुज (पुं.) मनुष्य। मन से उत्पन्न।
मनुजा (स्त्री.) स्त्री।
मनुज्येष्ठ (पुं.न.) तलवार।
मनुश्रेष्ठ (पुं.) विष्णु का नाम।
मनुसंहिता (स्त्री.) मानवधर्मशास्त्र।
मनुष्य (पुं.) आदमी। नर। मनुष्य जाति।
मनुष्यधर्मन् (पुं.) कुबेर। धन के राजा।
मनुष्ययज्ञ (पुं.) अतिथिसत्कार।
मनुष्यलोक (पुं.) विनाशशील देहधारियों का लोक। पृथिवी।
मनुष्यविश् (पुं.) मानव जाति।
मनुष्यशोणित (न.) मनुष्य का रक्त।
मनुष्यसभा (स्त्री.) नरों की सम्मेलनी।
मनुष्यता } (सं.) आदमियत।
मनुष्यत्व } इन्सानियत।
मनोतृ (पुं.) आविष्कारकर्त्ता। प्रवन्धक।
मनोजव (त्रि.) मन के समान वेग वाला। बड़े वेग वाला। (स्त्री.) आग की जीभ।
मनोजवृद्धि (पुं.) कामवृद्धि वृक्ष।
मनोज्ञ (त्रि.) मनोहर। सुन्दर। मनसिल। (स्त्री.) मदिरा।
मनोभव (पुं.) कामदेव।
मनोरथ (पुं.) इच्छा। अभिलाष।
मनोरम (त्रि.) मनोहर। सुन्दर। (स्त्री.) गोरोचना।
मनोहर (त्रि.) मनोरम। रुचिर। सुन्दर। (पुं.) कुन्द का वृक्ष। (न.) सोना।
मन्ज (क्रि.) पोंछना।
मन्तु (पुं.) अपराध। मनुष्य। प्रजापति।
मंत्र (पुं.) परामर्श। वेद का भाग विशेष। ऋचायें। देवता की सिद्धि के लिये वाक्य समूह विशेष।
मंत्रजिह (पुं.) अग्नि।
मंत्रदातृ (पुं.) गुरु।
मंत्रिन् (पुं.) अमात्य। सचिव। दीवान।
मन्थ् (क्रि.) बिलोना। रिड़कना।
मन्थ (पुं.) मथानी। सूर्य। आक का वृक्ष। आँख का कीचर। किरण।
मन्थज (न.) नवनीत। मक्खन।
मन्थन (पुं.) मथनी। रई।
मन्थर (त्रि.) धीमा। मन्द। मूर्ख। सुस्त। टेढ़ा। कोप। सूचक। केश। कोष। ताजा नवनीत।

मथानी। रुकावट। (पुं.) [illegible]। (स्त्री.) कैकेयी की दासी मन्थरा।

मन्थरु (पुं.) चौरी का पवन।

मन्थान (पुं.) मथनी। शिव।

मन्थिन् (क्रि.) बिलोने वाला। सोमलता का रस। वर्तन विशेष।

मन्थशैल (पुं.) मन्दार नामक पर्वत।

मन्द (त्रि.) सुस्त। मूर्ख। मृदु। अभागा। रोगी। थोड़ा। स्वतंत्र। खुला। नीच। शनिग्रह। हाथी विशेष। यम। प्रलय। सूर्य्यसंक्रमण।

मन्दग (त्रि.) धीरे-धीरे जाना। सुस्त।

मन्दरता (स्त्री.) मन्दपना। आलस्य। जड़ता।

मन्दर (पुं.) इस नाम का एक पर्वत। मन्दार का पेड़। स्वर्ग। हार विशेष। दर्पण। (त्रि.) बहुत। मन्द।

मन्दाकिनी (स्त्री.) स्वर्गगङ्गा। आकाश गङ्गा।

मन्दाक्रान्ता (स्त्री.) छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १७ अक्षर होते हैं।

मन्दाक्ष (न.) लज्जा। कम दृष्टि।

मन्दाग्नि (पुं.) पाचन शक्ति की क्षीणता। अनपच रोग। धीमी आँच।

मन्दिर (न.) घर। विशेष कर देवस्थान। पुर। शिविर। समुद्र। घुटने के पीछे का भाग।

मन्दिरपशु (पुं.) बिल्ली।

मन्दिरमणि (पुं.) शिव का नाम।

मन्दिरा (स्त्री.) घुड़साल। अस्तबल।

मन्दुरा (स्त्री.) घुड़साल। अस्तबल। चटाई।

मन्दोदरी (स्त्री.) मय दानव की कन्या। रावण की पटरानी।

मन्दोष्ण (न.) थोडा गरम। गुनगुना।

मन्द्र (पुं.) नीचा। गहरा। पोला। खड़खड़ाहट (शब्द)। प्रसन्नकर। हर्षप्रद। प्रशस्य। धीमा शब्द। एक प्रकार का ढोल। हाथी विशेष।

मन्धातृ (पुं.) बुद्धिमान् पुरुष। भक्त।

मन्मथ (पुं.) कामदेव। कैथा का पेड़।

मन्यु (पुं.) दीनता। कायरपन। यज्ञ। क्रोध। अहङ्कार।

मन्यु (पुं.) क्रोध। शोक। दुःख। दुरवस्था। नीचता। बलि। उत्साह। अभिमान। शिव। अग्नि।

मन्वन्तर (न.) सत्ययुग आदि १७ चौकड़ियाँ। ३११४४८०० वर्षों का समय।

मभ्र (क्रि.) जाना।

मम (अव्य.) मेरा।

ममता (स्त्री.) मेरापन। स्नेह।

ममापताल (पुं.) ज्ञानेन्द्रिय।

मब् (क्रि.) जाना।

मम्मट (पुं.) काव्यप्रकाश ग्रन्थ के रचयिता।

मय् (क्रि.) जाना।

मय (पुं.) एक दैत्य। ऊँट। खच्चर।

मयट (पुं.) झोंपड़ी।

मयष्टक, **मयुष्टक** } (पुं.) एक प्रकार की सेम या छीमी।

मयस (न.) हर्ष। सन्तोष।

मयु (पुं.) किन्नर। हिरन। बारहसिंहा।

मयूख (पुं.) चमक। किरन। शिखा। शोभा।

मयूखिन् (त्रि.) चमकीला। भड़कदार।

मयूर (पुं.) मोरपक्षी। पुष्प विशेष। सूर्यशतक काव्य के निर्माता का नाम। समय मापक यन्त्र विशेष।

मयूरकेतु, **मयूररथ** } (पुं.) कार्तिकेय का नाम।

मयूरारि (पुं.) गिरगट। कृकलास।

मर (पुं.) वैदिक प्रयोग में आता है, इसका अर्थ है-मृत्यु। पृथिवी।

मरक (पुं.) महापारी। छुआछूत की बीमारी।

मरकत (न.) पन्ना। हरे रङ्ग की मणि। इसके धारण करने से छुआछूत या महामारी का भय नहीं रहता।

मरण (न.) मरना। मृत्यु।

मरणशील (त्रि.) मरने वाला। मरने के स्वभाव वाला।

मरत (पुं.) मृत्यु।

मरन्द, **मरन्दक** } (पुं.) मकरन्द। पुष्पराग।

मरार (पुं.) अनाज की खत्ती।

मराल (पुं.) राजहंस। कज्जल। कारण्डव। घोड़ा। बादल। नीच। अनार का वन। चिकना।

मरीचि (पुं.) एक मुनि। किरण। कृपण। सूम। ब्रह्मा के दस मानसिक पुत्रों मरीचि में से एक स्मृतिकार का नाम। श्रीकृष्ण का नाम।
मरीचिका (स्त्री.) मृगतृष्णा।
मरीमृज (त्रि.) बार बार रगड़ने वाला।
मरु (पुं.) पर्वत। रेगस्तान। मारवाड़ देश।
मरुक (पुं.) मोर।
मरुण्डा (स्त्री.) बड़े माथे वाली स्त्री।
मरुत् (पुं.) वायु।
मरुत्त (पुं.) चन्द्रवंशी एक राजा।
मरुत्पथ (पुं.) आकाश।
मरुत्पाल (पुं.) इन्द्र। देवराज।
मरुत्वत् (पुं.) इन्द्र।
मरुत्सखा (पुं.) इन्द्र। चित्रक वृक्ष।
मरुदान्दोलम् (न.) पंखा।
मरुदिष्ट (पुं.) गुग्गुल।
मरुभू (पुं.) मारवाड़ देश। जलरहित देश।
मरुल (पुं.) एक प्रकार की बत्तक।
मरूव (पुं.) **राहु। पौधा विशेष।**
मरूवक, **मरूबक** (पुं.) व्याघ्र। राहु। सारस।
मरूक (पुं.) मोरपक्षी।
मरोलि, **मरोलिक** (पुं.) समुद्र का एक जीव। मकर। नक्र। मगर।
मर्क् (क्रि.) जाना।
मर्कक (पुं.) मकड़ी। मकड़ा।
मर्कट (पुं.) बन्दर। मकड़ी। सारस। विष विशेष।
मर्कटीजाल (न.) छन्द शास्त्र में एक चक्र विशेष जिससे लघु और गुरु का विचार किया जाता है।
मर्कर (पुं.) भृङ्गराज वृक्ष। भाण्ड। (स्त्री.) बाँझ स्त्री।
मर्करा (स्त्री.) बर्तन। गुफा। बन्ध्या स्त्री।
मर्च् (क्रि.) लेना। साफ करना। बजाना। जाना। डराना। चोट लगाना। भय में डालना।
मर्जू (पुं.) धोबी। गुदा भञ्जन कराने वाला।
मर्त् (क्रि.) पकड़ना।
मर्त्त (पुं.) मनुष्य। पृथिवी। मरणशील।
मर्त्य (त्रि.) मरणशील। मनुष्य।
मर्त्यलोक (पुं.) वह लोक जिसमें मरणशील देहधारी रहते हैं। मनुष्यलोक।
मर्दल (पुं.) एक प्रकार का ढोल।
मर्द्द (न.) पिसा हुआ। कुटा हुआ। चूर्ण किया हुआ।
मर्द्दन (न.) चूरा करना। पीसना। मलना।
मर्दित (त्रि.) चूर्णित।
मर्व (क्रि.) जाना। मरना।
मर्मज्ञ (पुं.) तत्त्वज्ञ। रहस्यवेत्ता।
मर्मन् (न.) कोमल। सन्धिस्थान। सार। भेद। तात्पर्य।
मर्म्मर (पुं.) मर्रमर्र शब्द। (स्त्री.) हल्दी।
मर्मरी (स्त्री.) इमली।
मर्मरीक (पुं.) गरीब मनुष्य। खोटा मनुष्य।
मर्म्मस्पर्शी (त्रि.) मर्म्मपीडक।
मर्य (त्रि.) मरणशील।
मर्य्या (अव्य) सीमा। हद। (पुं.) मनुष्य।
मर्य्यादा (स्त्री.) सीमा। तट।
मल् (क्रि.) अधिकार करना। पकड़ना।
मल (पुं.) मैल। पाप। विष्ठा। कीट। काई। पसीना। कफ। कपूर। कृपण।
मलघ्न (पुं.) शाल्मलीकन्द।
मलद्राविन् (पुं.) जमालगोटा।
मलमास (पुं.) लौंद का मास। अधिक महीना।
मलय (पुं.) नन्दनवन। पर्वत विशेष के निकट का स्थान। नवद्वीपों में से एक। ऋषभदेव का एक पुत्र।
मलयज (न.) चन्दन। मलय देश का पवन।
मलाका (स्त्री.) दूती। हथिनी। कामातुरा स्त्री।
मलि (स्त्री.) अधिकार। विलास।
मलिक (पुं.) राजा। अधिपति।
मलिन (त्रि.) मैला। दूषित। सड़ा हुआ। दागदगीला। सुहागा।
मलिम्लुच (पुं.) डाँकू। चोर। राक्षस। मच्छर। पवन। अग्नि। पञ्चमहायज्ञ नित्य न करने वाला ब्राह्मण। चित्रक वृक्ष। कोहरा। बर्फ।
मलिष्ठा (स्त्री.) रजस्वला स्त्री।

मलीमस् (गु.) मैला। अपवित्र। काला। दुष्ट। पापी। लोहा।

मल्ल् (क्रि.) पकड़ना।

मल्ल (पुं.) पहलवान। प्याला। गण्डस्थल। वर्णसङ्कर विशेष। देश विशेष।

मल्लक (पुं.) डीवट (दीपक रखने की)।

मल्लभू (स्त्री.) अखाड़ा।

मल्लयुद्ध (न.) कुश्ती।

मल्लारः (पुं.) छः रागों में से एक राग।

मल्लि, **मल्ली** } (स्त्री.) मालती की बेल।

मल्लिनाथ (पुं.) एक विद्वान्। रघुवंश आदि ग्रन्थों के प्रसिद्ध टीकाकार।

मल्लिका (स्त्री.) एक प्रकार का हंस। जिसकी चोंच पीली होती है। माघ मास। मालती।

मल्लीकर (पुं.) चोर।

मल्लु (पुं.) रीछ।

मल्लूर (पुं.) लोहे की जङ्ग।

मव्, **मव्य** } (क्रि.) बाँधना। जकड़ना।

मश् (क्रि.) क्रोध करना। मिनमिनाना।

मश (पुं.) मच्छर। मच्छर का शब्द।

मशक क्रोध।

मशकिन् (पुं.) उदुम्बर का पेड़।

मशहरी (स्त्री.) मसहरी।

मशी, **मसी** } (स्त्री.) स्याही।

मशुन (पुं.) कुत्ता।

मष् (क्रि.) मार डालना। घायल करना।

मस् (क्रि.) तौलना। मापना। रूप बदलना।

मस (पुं.) माप या तौल विशेष।

मसरा (स्त्री.) मसूर।

मसार, **मसारक** } (पुं.) रत्न विशेष। पन्ना।

मसि (स्त्री.पुं.) स्याही।

मसिधान (न.) दवात।

मसिपण्य (पुं.) मुंशी। बाबू। लेखक।

मसिप्रसू (स्त्री.) लेखनी। स्याही की बोतल।

मसिक (पुं.) साँप का बिल।

मसिन (त्रि.) अच्छे प्रकार पिसा हुआ।

मसीना (स्त्री.) अलसी।

मसूर (पुं.) मसूर की दाल। तकिया। वेश्या।

मसूरक (पुं.) तकिया। इन्द्र की ध्वजा का आभूषण विशेष।

मसूरिका (स्त्री.) चेचक का रोग। कुटनी। मसहरी।

मसूरी (स्त्री.) छोटी माता या चेचक।

मसृण (त्रि.) चिकना। कोमल। नरम। प्यारा।

मस्क् (क्रि.) जाना। गति।

मस्कर (पुं.) बाँस। पोला बाँस। ज्ञान। जाना।

मस्करिन् (पुं.) संन्यासी। चन्द्रमा।

मस्ज् (क्रि.) नहाना। डुबकी मारना। डूबना।

मस्त, **मस्तक** } (न.) माथा।

मस्तकस्नेह (पुं.) भेजा। मगज।

मस्ति (स्त्री.) नापना। तौलना।

मस्तिष्क (न.) मगज। भेजा।

मस्तमूलक (न.) गरदन। गला।

मस्तु (न.) खट्टी मलाई। दही का पानी।

मह् (क्रि.) मान करना। पूजा करना। चमकना। बढ़ना।

मह (पुं.) उत्सव। तेज। यज्ञ। भैंसा।

महक (पुं.) प्रसिद्ध पुरुष। कच्छप। विष्णु।

महक्क (पुं.) दूर तक फैली हुई गन्ध।

महत् (त्रि.) विपुल। बड़ा। बूढ़ा।

महती (स्त्री.) नारद बाबा की वीणा।

महत्तत्त्व (न.) बड़ा तत्त्व। बुद्धि।

महर्लोक (पुं.) भू आदि ऊपर के सात लोकों में से एक।

महर्षि (पुं.) वेदव्यास आदि बड़े ऋषि।

महस् (न.) तेज। यज्ञ। उत्सव।

महा (स्त्री.) गौ। बड़ा।

महाकाय (पुं.) बड़े शरीर वाला। शिवजी का नन्दी। हाथी। स्थूल शरीर वाला।

महाकार्तिकी (स्त्री.) रोहिणी नक्षत्र वाली कार्तिक की पूर्णिमा।

महाकाल (पुं.) शिवजी। एक बैल। भैरव विशेष।
महाकाव्य (न.) आठ से अधिक सर्ग वाला काव्य।
महाकुल (न.) बड़ा कुल। जिसमें दस पीढ़ी तक वेद का पढ़ना पढ़ाना चला आता हो।
महागन्ध (न.) हरिचन्दन। (स्त्री.) नागबला।
महागुरु (पुं.) माता। पिता। आचार्य। दान की गयी कन्या का पति।
महाग्रीव (पुं.) ऊँट।
महाङ्ग (पुं.) ऊँट। गोक्षुरक।
महाच्छाय (पुं.) वट वृक्ष।
महाजन (पुं.) वेद के वाक्यों में विश्वास करने वाला पुरुष। आस्तिक। श्रेष्ठ पुरुष।
महाज्यैष्ठी (स्त्री.) विशेष लक्षण वाली जेठ मास की पूर्णिमा।
महाढ्य (पुं.) कदम्ब का पेड़। बड़ा धनी।
महातल (न.) नीचे के लोकों में से पाँचवाँ पाताल।
महातारा (स्त्री.) जैनियों की देवी।
महातीक्ष्ण (स्त्री.) भिलावा। बहुत तेज।
महातेजस् (पुं.) पारा। अतितेजस्वी। कार्त्तिकेय। अग्नि।
महात्मन् (त्रि.) बड़े आशय वाला।
महादानम् (न.) बड़ा दान।
महादेव (पुं.) शिव।
महाद्रुम (पुं.) अश्वत्थ वृक्ष।
महाधन (पुं.) सुवर्ण।
महाधातु (पुं.) सोना।
महानदी (स्त्री.) गङ्गा।
महानन्द (पुं.) मोक्ष। माघ शुक्ला ६मी। सुरा। अतिशय आनन्द। एक नदी।
महानन्दि (पुं.) कलियुग का अन्तिम भारतवर्षीय नरेश।
महानवमी (स्त्री.) आश्विन मास की शुक्ला नवमी।
महानस (न.) पाकस्थान। रसोईघर।
महानाटक (न.) हनुमन्नाटक। नाटक विशेष।
महानाद (पुं.) बड़े शब्द वाला। हाथी। सिंह। बादल। ऊँट।
महानिद्रा (स्त्री.) बड़ी नींद। मृत्यु। मौत।
महानिशा (स्त्री.) रात्रि के मध्यभाग के दो प्रहर।
महानुभाव (पुं.) महाशय। बड़े विचार वाला।
महापथ (पुं.) बड़ा मार्ग। बड़ी सड़क। हिमालय के उत्तर स्वर्ग जाने का मार्ग।
महापद्म (पुं.) नाग विशेष। कुबेर का भण्डार। एक राजा।
महापातक (न.) ब्रह्महत्या, सुरापान। चोरी, गुर्वङ्गनागमन और इन चारों के साथ मेल रखना-ये महापातक हैं।
महापुराण (न.) सृष्टि आदि दश लक्षण युक्त व्यास रचित पुराण।
महापुरुष (पुं.) सुरश्रेष्ठ। नारायण।
महाप्रलय (पुं.) ब्रह्मा के आयुष्य की समाप्ति में जब वे अपने रचे सब पदार्थों को विलीन करते हैं। घोर प्रलय।
महाप्रसाद (पुं.) जगन्नाथजी का प्रसाद।
महाप्राण (पुं.) द्रोण नामक एक काक। अक्षरोच्चारण का बाह्यप्रयत्न विशेष।
महाफल (पुं.) बेल। (स्त्री.) इन्द्र वारुणी।
महाबल (पुं.) बड़े बल वाला। वायु। बुद्ध। सीसा।
महाभारत (पुं.न.) संस्कृत का वेदव्यास रचित इतिहास का बड़ा ग्रन्थ। इसमें १ लक्ष श्लोक हैं। इसका दूसरा नाम पञ्चम वेद भी है।
महाभीता (स्त्री.) छुईमुई। लज्जालु लता। बहुत डरी हुई।
महाभूत (न.) पाँच तत्त्व-पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश।
महामनस् (त्रि.) उदार। महाशय।
महामात्र (त्रि.) बहुत बड़ा। प्रधानामात्य। "मन्त्रे कर्मणि भूषायां वित्ते माने परिच्छदे। मात्रा च महती यैषा महामात्रास्तु ते स्मृताः।।" हाथियों को आज्ञा देने वाला। महावत।
महावारुणी (स्त्री.) शनिवार। शतभिषा नक्षत्र। शुभ योग सहित चैत्र की कृष्णा १३शी।
महामाया (स्त्री.) दुर्गा।
महामाष (पुं.) उर्द। राजमाष।
महामृग (पुं.) बड़ा पशु। हाथी। शरभ।
महामृत्युञ्जय (पुं.) शिव का एक प्रकार का वेदोक्त ओं जूं सः बीजयुक्त "त्र्यम्बकं यजामहे०" मन्त्र।

महामेद (पुं.स्त्री.) औषध विशेष।
महामोह (पुं.) अज्ञान विशेष।
महायज्ञ (पुं.) बड़ा यज्ञ।
महारथ (पुं.) शिव। बड़ा योद्धा।
महारस (पुं.) गन्ना। पारा। काञ्जी।
महाराज (पुं.) राजों के राजा। जैनियों के गुरु विशेष। हाथ की उङ्गली का नख।
महाराजिक (पुं.) विष्णु का नाम। पर जब यह बहुवचनान्त होता है तब उन देवताओं का अर्थ देता है जिनकी संख्या २२० या २३६ बतलाई जाती है।
महाराज्ञी (स्त्री.) महारानी। पटरानी। दुर्गा का नाम।
महारात्रि (स्त्री.) महाकल्प। अर्द्धरात्रि के पीछे की दो घड़ी। होली, दीवाली की दो रातें।
महाराष्ट्र (पुं.) मरहटों का देश। गजपिप्पली। बोली विशेष।
महारोग (पुं.) मिरगी आदि आठ रोग।
महारौरव (पुं.) बड़ा नरक विशेष।
महार्घ (त्रि.) बड़े मूल्य वाला। महँगा।
महार्णव (पुं.) महासागर।
महालय (पुं.) पितृपक्ष। परमात्मा। विहार।
महालक्ष्मी (स्त्री.) बड़ी लक्ष्मी। अठारह भुजा वाली दुर्गा की शक्ति का भेद। लक्ष्मी विशेष। जगन्माता। रमा।
महावराह (पुं.) विष्णु का अवतार विशेष।
महावरोह (पुं.) वट वृक्ष। ताड़ वृक्ष।
महावाक्य (न.) वेदवाक्य। बहुत से वाक्यों के स्वरूप में एक वाक्य।
महाविद्या (स्त्री.) दस महाविद्याएँ।
महाविषुव (न.) सूर्य की मेष राशि स्थिति।
महावीचि (पुं.) एक नरक।
महावीर (पुं.) बड़ा बहादुर। गरुड़। हनुमान्। सिंह। यज्ञाग्नि। वज्र। चिट्टा। घोड़ा। कोकिल। धनुर्धारी।
महावीर्य्य (पुं.) बड़े वीर्य्य वाला। वाराहीकन्द। परमात्मा।
महाव्याधि (पुं.) बड़ा रोग। कोढ़ आदि।
महाव्याहृति (स्त्री.) वैदिक मंत्र विशेष।
महाव्रण (न.) बड़ा फोड़ा।
महाव्रत (न.) बाहर वर्ष का व्रत विशेष।
महाशङ्ख (पुं.) बड़ा शङ्ख। तान्त्रिक माला विशेष जो मनुष्यों की खोपड़ी से बनती है। कान और आँख के बीच की हड्डी।
महाशठ (पुं.) धतूरा। बड़ा धूर्त्त।
महाशय (त्रि.) बड़े आशय वाला। महानुभाव। उदार।
महाशूद्र (पुं.) आभीर। जाति विशेष।
महाश्मशान (न.) काशी। बड़ा मरघटा।
महाष्टमी (स्त्री.) आश्विन के शुक्ल पक्ष की अष्टमी।
महासन्तपन (न.) सात दिन में समाप्त होने वाला व्रत।
महासेन (पुं.) बड़ी सेना के पति। कार्त्तिकेय।
महि, मही } (स्त्री.) पृथिवी। मालवा देश की एक नदी।
महिका (स्त्री.) हिम। बर्फ़।
महित् (त्रि.) प्रतिष्ठित। पूज्य।
महिन्धक (पुं.) चूहा। मूसा।
महिमन् (पुं.) बड़प्पन। बड़ाई।
महिर, मिहिर } (पुं.) सूर्य्य। अर्क वृक्ष।
महिला (स्त्री.) स्त्री। मस्त स्त्री। प्रियङ्गु लता। रेणुका नाम्नी गन्धद्रव्य।
महिष (पुं.) भैंसा। एक असुर।
महिषध्वज (पुं.) यमराज।
महिषमर्दिनी (स्त्री.) एक देवी। दुर्गा।
महिषासुर (पुं.) एक असुर जो दुर्गा के हाथ से मारा गया था।
महिषी (स्त्री.) भैंस। पटरानी।
महिष्ठ (त्रि.) सब से बड़ा।
मही (स्त्री.) पृथिवी। खंबात की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी। एक बड़ी सेना।
महीक्षित् (पुं.) नृप। राजा।
महीज (न.) अदरक। मङ्गल ग्रह। नरकासुर।
महीघ्र (पुं.) पर्वत। पहाड़।
महीप्राचीर (न.) समुद्र।
महीभृत् (पुं.) पर्वत। राजा।

महीयस् (त्रि.) वहुत वड़ा।
महीय्यमान (त्रि.) पूज्य। श्रेष्ठ।
महीरुह (पुं.) वृक्ष। शाक।
महेच्छ (त्रि.) महाशय। महानुभाव।
महेन्द्र (पुं.) इन्द्र। परमेश्वर। जम्बुद्वीप का एक पर्वत।
महेन्द्रपुरी (स्त्री.) अमरावती।
महेश (पुं.) शिव।
महेशबन्धु (पुं.) बिल्व वृ क्ष।
महैला (स्त्री.) मोटी इलायची।
महोक्ष (पुं.) बड़ा बैल।
महोत्सव (पुं.) बड़ा उत्सव।
महोत्साह (त्रि.) बड़ा साहसी।
महोदधि (पुं.) समुद्र।
महोदय (पुं.) कन्नौज देश। आनन्द। प्रताप।
महोन्नत (पुं.) बहुत ऊँचा। ताल वृक्ष।
महोरग (पु.) एक प्रकार का बड़ा सर्प।
महौषधि (स्त्री.) दूब। लाजवन्ती। स्नान की औषधियाँ।
मा (क्रि.) मापना। सीमाबद्ध करना। गरजना। दिखाना। बनाना। नपवाना।
मा (अव्य.) यह निषेधार्थ में आता है। (स्त्री.) लक्ष्मी। माता। माप विशेष।
मांस (न.) मास। आमिष।
मांसज (न.) चर्बी।
मांसल (त्रि) मोटा। पुष्ट। बलवान्।
मांससार (पुं.) मेद। चर्बी।
मांसिक (त्रि.) कसाई। बूचर।
माकन्द (पुं.) आम का पेड़। आँवले का पड़। पीला चन्दन। गङ्गातटवर्त्ती एक नगर का नाम।
माकर (पुं.) मकर राशि प्राप्त सूर्य्य के
माकरी (स्त्री.) समय की। समुद्री जन्तु मकर सम्बन्धी।
माकलि (पुं.) इन्द्र के सारथि का नाम। चन्द्रमा।
माक्ष् (क्रि.) चाहना।
माक्षिक / **माक्षीक** } (न.) उपधातु विशेष। मधु
माक्षिकज (न.) मोम।
माख-ी (त्रि.) यज्ञसम्वन्धी।
मागध (पुं.) सफेद जीरा। भाट। वर्णसङ्कर विशेष। मगध देश जात। छोटी इलायची। खाण्ड। बोली विशेष।
माघ (पुं.) एक मास का नाम। शिशुपालवध नामक काव्य और उसके निर्माता का नाम।
माध्य (न.) कुन्दपुष्प।
माङ्गल्य (न.) शुभ। हितकर।
माच (पुं.) मार्ग।
माचल (पुं.) चोर। बटमार।
माचिका (स्त्री.) मक्खी।
माजल (पुं.) पक्षी विशेष।
माञ्जिष्ट / **माञ्जिष्ठ** } (पुं.) लाल रङ्ग।
माठ (पुं.) मार्ग। रास्ता।
माठर (पु.) व्यास का नाम। ब्राह्मण विशेष सूर्य्य का पार्श्ववर्त्ती एक गण।
माठी (स्त्री.) कवच।
माड (पुं.) वृक्ष विशेष। तौल। माप।
माडि (पुं.) राजप्रासाद।
माड्डुक / **माड्डुक्कि** } (पुं.) ढोल बजाने वाला।
माढि (स्त्री.) शोक। निर्द्धनता। क्रोध। गोट। सञ्जाफ। नया निकला वृक्ष का पत्ता। कोपल।
माणव (पुं.) छोकरा। लड़का। सोलह लड़ का मोतियों का हार।
माणवक (पुं.) छोकरा। बोना। खोटा मनुष्य। ब्रह्मचारी। सोलह या बीस लड़ का हार।
माणविका (स्त्री.) छोकरी। अप्सरा।
माणवीन (त्रि.) लड़कपन। छोकरापन।
माणव्य (न.) छोकरों का दल या समूह।
माणिका (स्त्री.) माप विशेष जो आठ पल के बराबर है।
माणिक्य (न.) लाल मणि।
माणिक्या (स्त्री.) छिपकली। बिस्तुइया।
माणिबन्ध (न.) सेंधा या पहाड़ी नोन।
माण्डलिक (त्रि.) एक प्रान्त का शासक।
मातङ्ग (पुं.) हाथी। चाण्डाल। किरात। पीपल का वृक्ष।

मातङ्गी (स्त्री.) दस महाविद्याओं में से एक।
मातरपितृ (स्त्री.) माता पिता।
मातरिपुरुष (पुं.) भीरु। डरपोंक।
मातरिश्वन् (पुं.) वायु।
मातलि (पुं.) इन्द्र का साारथि।
माता (स्त्री.) माता।
मातामह (पुं.) नाना।
मातुल, **मातुलक** } (पुं.) मामा।
मातुलानी, **मातुली** } (पुं.) मामा का पुत्र।
मातुलेय (पुं.) मामा का पुत्र।
मातुलेयी (स्त्री.) मामा की बेटी।
मातुलिङ्ग, **मातुलुङ्ग** } (पुं.) बीजपुर। नीबू। अनार।
मातृ (स्त्री.) माता। गौ। लक्ष्मी। दुर्गा। आकाश। पृथिवी। देवी। रेवती। आखुकर्णी, इन्द्रकर्णी।, जटामांसी आदि रूखरी। अष्टमातृकाएँ यथा-
"ब्राह्मी माहेश्वरी चण्डी वाराही वैष्णवी तथा।
कौमारी चैव चामुण्डा चर्चिकेत्यष्टमातरः।।"
किन्तु किसी-किसी के मतानुसार आठ की जगह सात ही हैं। यथा-
"ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
माहेन्द्री चैव वाराही चामुण्डा सन्नमातरः।।"
कोई-कोई सोलह मातृका तक मानते हैं। आठ प्रकार की पितृलोकवासिनी माताएँ। सात माताओं को पूजा वसुधारा में और षोडश मातृकाओं की ग्रहमख आदि माङ्गलिक कृत्यों में होती है। जीव। ज्ञाता।
मातृबन्धु (पुं.) मातृबन्धुओं में इनकी गणना है। यथा-
"मातुः पितुः स्वसुः पुत्रा मातुर्मातुः स्वसुः सुताः।
मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबन्धवः।।"
मातृष्वसृ (स्त्री.) मौसी।
मातृष्वस्रेय (पुं.) मौसी का लड़का।
मात्र (न.) अल्प। माप। परिमाण। धन। ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत आदि। लवुवर्ण को उच्चारण करने का एक अवयव। इन्द्रियों की वृनियाँ।
मात्रा (स्त्री.) माप विशेष। फुट। पल। अणु। अंश। धन। नागरी वर्णमाला के स्वरों के चिह्न जो अक्षरों के ऊपर नीचे अगल बगल लगाये जाते हैं। काने में पहनने की वाली। रत्न।
मात्सर्य (न.) ईर्ष्या।
मात्स्यिक (पुं.) मछली पकड़ने वाला। धीमर। मल्लाह।
माथ (पुं.) पन्था। मार्ग। (क्रि.) बिलोना। नष्ट करना। मारना।
माथुर (त्रि.) मथुरा में उत्पन्न। मथुरा में आया हुआ।
माद (पुं.) नशा। दर्प। हर्ष।
मादक (त्रि.) नशैला। नशा उत्पन्न करने वाला। पपीहा।
मादन (न.) लौंग। कामदेव। मदन वृक्ष। (स्त्री.) भाँग।
मादृक्ष, **मादृशी** } (त्रि.) मेरे समान।
माद्री (स्त्री.) मद्रदेशसम्भूत पाण्डुराज की दूसरी स्त्री।
माधव (पुं.) नारायण। लक्ष्मीपति। बसन्त ऋतु। वैशाख मास। महुआ का पेड़। (स्त्री.) वासन्ती लता। इन्द्र। परशुराम। यादव। सायन के साथी और ऋग्वेद के टीकाकार।
माधवक (पुं.) मद्य विशेष जो मधु से बनाई जाती है।
माधविका (स्त्री.) एक लता।
माधवी (स्त्री.) एक प्रकार की मदिरा। वासन्ती लता। कुटनी।
माधुर (न.) मालती का पुष्प।
माध्य (त्रि.) बीच का।
माध्यन्दिन (न.) दिन का मध्य भाग। यजुर्वेद की एक शाखा।
माध्याि ; (त्रि.) दोपहर सम्बन्धी।
माध्व (गु.) मध्व के अनुयायी।
मान् (क्रि.) विचार करना। पूजा करना।
मान (न.) सम्मान। प्रतिष्ठा। अभिमान (अच्छे भाव में) क्रोध। माप। हाथ। तौलना। प्रमाण। गीत का अङ्ग।

मानग्रन्थि (पुं.) अपराध। भूल चूक।
मानरन्ध्रा (स्त्री.) एक प्रकार का समय सूचक यंत्र।
माननीय (गु.) मान के योग्य। प्रतिष्ठित।
मानःशिलम् (न.) मनसिल का।
मानव (पुं.) मनुष्य। मनु के वंशधर।
मानवधर्मशास्त्र (न.) मनु का बनाया धर्मशास्त्र।
मानस (न.) मन। मानसरोवर।
मानसव्रत (न.) अहिंसा, सत्य आदि व्रत, चोरी न करना। ब्रह्मचर्य्य धारण, लालच न करना-ये मानस व्रत कहलाते हैं।
मानसिक (न.) मन सम्बन्धी।
मानसौक (पुं.) हंस।
मानिका (स्त्री.) मदिरा विशेष। तौल विशेष।
मानिनी (स्त्री.) मान करने वाली स्त्री। फली वाला वृक्ष।
मानुष (पुं.) आदमी। मानव।
मानुषी (स्त्री.) स्त्री। नारी।
मानुष्य (न.) मनुष्यत्व। आदमीपन।
मानोज्ञक (न.) सुन्दरता।
मान्त्रिक (पुं.) मन्त्र जानने वाला।
मान्थ् (क्रि.) चोटिल करना।
मान्थर्य्य (न.) सुस्ती। थकावट। निर्बलता।
मान्दार (पुं.) वृक्ष विशेष।
मान्द्य (न.) जड़पना। सुस्ती। बीमारी। न्यूनता।
मान्धातृ (पुं.) सूर्य्यवंशी एक राजा का नाम। यह युवनाश्व का पुत्र था और अपने बाप के पेट से उत्पन्न हुआ था। पेट से उसके निकलते ही ऋषियों ने कहा था-
"कं एष धास्यति ?" इस पर इन्द्र ने प्रकट हो कर कहा- "मां धास्यति।" तब ही से इसका नाम मान्धातृ या मान्धाता पड़ा।
मान्य (पुं.) पूज्य।
मापत्य (पुं.) कामदेव।
माम (सर्व.) मुझे। मेरा (सम्बोधन में) चाचा।
मामक, मामिका } (त्रि.) मेरा। स्वार्थी। लालची।
माय (पुं.) बाजीगर। राक्षस।
माया (स्त्री.) अज्ञान विशेष। भ्रम। कृपा। दम्भ। लक्ष्मी। बुद्धदेव की माता। ईश्वर की उपाधि।
मायाकृत (पुं.) मदारी। बाजीगर।
मायादेवीसुत (पुं.) बुद्धदेव।
मायाविन् (त्रि.) ऐन्द्रजालिक। मदारी।
मायिक (त्रि.) मदारी। कपटी। छली।
मायु (पुं.) सूर्य्य। देहस्थ पित्त। रोग विशेष।
मायूर (न.) मोर सम्बन्धी। मोरों का झुण्ड।
मार (पुं.) मरण। मौत।
मारक (पुं.) मारण। महामारी। कामदेव। घातक। बाज पक्षी।
मारकस्थान (पुं.) वधस्थल। जन्मकुण्डली में लग्न से सातवाँ और दूसरा स्थान।
मारि (स्त्री.) महामारी।
मारीच (पुं.) ताडका राक्षसी का बेटा। एक राक्षस जिसे रामचन्द्र ने विश्वामित्र के यज्ञ में चार सौ योजन फेंका था। जिसने मायामृग बन कर सीता का हरण कराया था।
मारुतात्मज (पुं.) वायु का पुत्र, हनुमान् और भीमसेन।
मार्कण्ड (पुं.) एक मुनि। मृगकण्डु की सन्तान जो सदैव १४ ही वर्ष के रहते हैं।
मार्ग (क्रि.) ढूँढ़ना। साफ करना।
मार्गण (न.) अन्वेषण। खोज। याचन। प्रणय।
मार्गशिर, मार्गशीर्ष } (पु.) अगहन।
मार्गित (त्रि.) खोजा हुआ।
मार्गिन् (पुं.) नेता। अग्रसर होने वाला।
मार्ज् (क्रि.) बुहारना। बटोरना। धोना। पोंछना। साफ करना।
मार्जन (न.) पोंछ कर साफ करना।
मार्जनी (स्त्री.) बुहारी। झाड़ू।
मार्ज्जार, मार्ज्जाल } (पु.) बिलार। मोर।
मार्ज्जारी (स्त्री.) बिल्ली।
मार्ज्जारीय (पुं.) बिल्ली। शूद्र। कार्यशोधन।
मार्ज्जित (पुं.) साफ किया हुआ। सजाया हुआ।
मार्ज्जिता (स्त्री.) एक प्रकार की चटनी, जो दही में चीनी तथा अन्य मसालों के मिश्रण से बनायी जाती है।

मार्तण्ड (पुं.) सूर्य्य। अर्क वृक्ष। सूअर। बारह की संख्या। मरे अण्डे में उत्पन्न।
मार्तिक (पुं.) मिट्टी का बना। ढेला। घड़े का ढकना।
मार्त्य (त्रि.) मरणशील।
मार्दङ्ग (पुं.) ढोलची! ढोल वजाने वाला। नगर विशेष।
मार्दाङ्गक (पुं.) ढोल बजाने वाला।
मार्दव (न.) कोमलता। कोमल या दयालु हृदय वाला।
मार्द्वीक (न.) शराब। मदिरा।
मार्मिक (त्रि.) मर्म जानने वाला।
मार्ष्टि (स्त्री.) शोधन। सफाई।
माल (पुं.) बङ्गाल के एक नगर का नाम। जङ्गली लोगों की जाति। विष्णु।
मालक (पुं.) नीम का पेड़। ग्राम के समीप का वन। नारियल की लकड़ी का बना पात्र।
मालकौश (पुं.) राग विशेष।
मालति } मालती } (स्त्री.) चमेली। कली। अविवाहिता युवती। रात्रि। चाँदनी।
मालतीरज (पुं.) सुहागा।
मालतीत्री (स्त्री.) जावित्री।
मालतीफल (न.) जायफल।
मालयः (पुं.) } मालयी (स्त्री.) } मलय पर्वत का। चन्दन।
मालव (पुं.) एक देश जिस पर लक्ष्मीजी की कृपा हो (मायाः लवो यस्मिन्) दुर्भिक्षादि वर्जित मालवा प्रान्त। राग विशेष। (बहुवचन में) मालवा प्रान्त वासी।
मालविका (स्त्री.) त्योंरी।
मालसी (सं.) मौलसिरी का पेड़।
माला (स्त्री.) हार। गजरा। गुच्छा। डोरी। गुञ्ज।
मालाकारः (पुं.) माली।
मालादीपकम् (न.) अलङ्कार में अर्थालङ्कार विशेष।
मालिकः (पुं.) माली। रङ्गरेज। रङ्गइया। पक्षी विशेष।
मालिका (स्त्री.) मालती की बेल। गरदन का गहना। असली। पुत्री। राजभवन। सुरा। पक्षी विशेष। नदी विशेष। फूलों की माला।
मालिन् (पुं.) मालाकार। १५ अक्षर के पाद वाला छन्द। गौरी। चम्पा नगरी। आकाशगङ्गा। कण्व के आश्रम के निकट की एक नदी। अग्निशिखा वृक्ष।
मालेय (त्रि.) माला की रचना में चतुर। माली।
माल्यम् (न.) पुष्प। फूल। माथे पर डालने की पुष्पमाला।
माल्यवत् (त्रि.) माला वाला। केतुमाल और इलावृत वर्ष की सीमा का पहाड़। सुकेश राक्षस का बेटा। रावण का मंत्री। एक राक्षस।
मालिन्यं (न.) मैलापन। मैल।
मालु (स्त्री.) लताविशेष। स्त्री।
मालूरः (पुं.) बेल और कैथे का पेड़।
मालेया (स्त्री.) बड़ी इलायची।
माल्ल (पुं.) वर्णसङ्कर जाति विशेष।
माल्लवी (स्त्री.) कुश्ती के जोड़।
माशब्दिक (त्रि.) निषेध करने वाला।
माषः (पुं.) मासा (तौल का)। मूर्ख। उर्द की दाल। मुहाँसा।
माषकः (पुं.) फली। सेम। मासा (तौल का)।
माषवर्द्धकः (पुं.) सुनार।
माषिकः (गु.) } माषिकी (स्त्री.) } मासा भर।
माषीणम् (न.) उर्द का खेत।
मास् } मासः } (पुं.) चन्द्रमा। तीस दिन का समय। महीना।
मासन (न.) सोमराजी लता।
मासरः (पुं.) चावल का उबला हुआ पानी। माण्ड।
मासलः (पुं.) वर्ष।
मासान्त (पुं.) महीने का अन्त।
मासिक (त्रि.) महीने का।
मासुरी (स्त्री.) डाढ़ी।
मासूरम् (न.) } मासूरी (स्त्री.) } मसूर की दाल का।
मास्म (अव्य.) हटाना। रोकना।
माह् (क्रि.) नापना मापना।
माहा (स्त्री.) गौ।
माहाकुल (त्रि.) बड़े कुल वाला।
माहाकुली (स्त्री.) कुलीन स्त्री।

माहात्म्य (न.) महिमा।
माहिष (न.) भैंस का दूध।
माहिष्य (पुं.) सङ्कर। दोगला।
माहेन्द्र (पुं.) इन्द्र का। योग विशेष। पूर्व दिशा। इन्द्र की स्त्री। गौ।
माहेय (पुं.) पृथिवी की सन्तान। मङ्गल ग्रह। नरकासुर। गौ।
माहेश्वर (त्रि.) शिव सम्बन्धी। शिव पूजक।
माहेश्वरी (स्त्री.) पार्वती।
मि (क्रि.) फेंकना।
मिच्छ (क्रि.) रोकना। चिड़ाना।
मित् (स्त्री.) खम्भा।
मित (त्रि.) परिमित। मापा हुआ। निर्दिष्ट। सीमाबद्ध।
मितङ्गमः (पुं.) धीरे-धीरे चलना। हाथी।
मितद्रुः (पुं.) समुद्र।
मितम्पचः (पुं.) सूम।
मिति (स्त्री.) ज्ञान। माप। प्रमाण। साक्ष्य। संकल्प।
मित्रम् (न.) सुहृद। दोस्त।
मित्रविन्दः (पुं.) अग्नि।
मित्रता } (सं.) मैत्री। दोस्ती।
मित्रत्व }
मित्रयुः (पुं.) मित्रवत्सल।
मिथ् (क्रि.) मिलना। मारना। समझना। काटना। पकड़ना।
मिथिस् (अव्य.) अकेले। आपस में।
मिथिला (स्त्री.) तिरहुत। राजा जनक की पुरी।
मिथुनम् (न.) स्त्री पुरुष का जोड़ा। मेष से तीसरी राशि। विषय के अर्थ मिलन।
मिथ्या (अव्य.) असत्य। झूठ।
मिथ्यादृष्टि (स्त्री.) भूल।
मिथ्यानिरसनम् (न.) शपथ खा कर अस्वीकार करना या मुकरना।
मिथ्याभियोगः (पुं.) झूठी फरियाद।
मिथ्याभिशंसनम् (न.) झूठा कलङ्क।
मिथ्याभिशापः (पुं.) झूठा अपवाद।
मिथ्यामति (स्त्री.) भ्रम। भूल।
मिद् (क्रि.) स्नेह करना।
मिल् (क्रि.) मिलना।
मिलिन्द (पुं.) मधुमक्षिका।
मिलिन्दक (पुं.) सर्प विशेष।
मिलीमिलिन् (पुं.) शिव का नाम।
मिश् (क्रि.) शब्द करना।
मिश्र (क्रि.) मिलाना। हाथी विशेष। एक देश। पदवी। श्रेष्ठ।
मिश्रव्यवहार (पुं.) गणितविद्या की क्रिया विशेष।
मिष् (क्रि.) दूसरों को नीचा दिखाने की अभिलाषा। आँख मारना। नम करना।
मिषम् (न.) स्पर्द्धा। छल। कपट।
मिषिका (स्त्री.) जटामांसी।
मिष्ट (त्रि.) मीठा।
मिह् (क्रि.) सींचना। प्रस्राव या पेशाब करना। वीर्य निकालना।
मिहिका (स्त्री.) पाला। बर्फ।
मिहिरः (पुं.) सूर्य। आक का पेड़। वृद्ध। मेघ। चन्द्रमा। वायु।
मिहिराणः (पुं.) शिव।
मी (क्रि.) मारना। कम करना। बदलना। भङ्ग करना। खोना। भटकना। जाना। जानना। मरना। नष्ट होना।
मीढ (त्रि.) मूता हुआ।
मीढुष्टमः (पुं.) शिव। सूर्य। चोर।
मीनः (पुं.) **मछली। बारहवीं राशि।**
मीनकेतनः (पुं.) कामदेव।
मीनगन्धः (पुं.) सत्यवती।
मीनाण्डा (स्त्री.) मिश्री। परिष्कृत शर्करा। मछली का अण्डा।
मीम् (क्रि.) शब्द करना।
मीमांसकः (पुं.) मीमांसा शास्त्र के ज्ञाता अथवा उसके पढ़ने वाले। परीक्षक। सिद्धान्ती। निर्णयकर्त्ता।
मीमांसा (स्त्री.) गूढ़ विचार। अनुसन्धान। भारतवर्षीय षड्दर्शनों में से एक दर्शन का नाम। यह दर्शन दो भागों में विभक्त है एक पूर्वमीमांसा है, जिसके बनाने वाले जैमिनिजी हैं। इस भाग में कर्म का प्रतिपादन किया गया है। दूसरे

भाग का नाम उत्तरमीमांसा है। इसके रचयिता बारदायणजी हैं। इसमें ब्रह्मविद्या का निरूपण है। विचार। परीक्षा।

मीर (पुं.) समुद्र। सीसा। शर्बत। पर्वत का अङ्ग विशेष।

मील् (क्रि.) पलकों को बन्द करना। मुर्झाना। मिलना।

मीलनम् (न.) सकोड़ना। बन्द करना।

मीलित (त्रि.) अनखिला। संकुचित। अलङ्कार विशेष।

मीव् (क्रि.) जाना। मोटा होना।

मीवर (त्रि.) अहितकर। मान्य। सेनापति।

मीवा (स्त्री.) पवन।

मु (पुं.) शिव। चिता। भूरा रङ्ग।

मुकुटः (पुं.) शिरोभूषण। ताज।

मुकुः (पुं.) छुटकारा। उत्सर्ग। त्याग। मोक्ष।

मुकुन्दः (पुं.) मोक्षदाता। विष्णु। पारा। बहुमूल्य रत्न विशेष। कुबेर की नव निधियों में से एक। एक प्रकार का ढोल।

मुकुम् (अव्य.) मोक्ष। निर्विकल्पक समाधि।

मकुर (पुं.) शीशा। दर्पण। बकुल वृक्ष। कुम्हार का डण्डा। मालती का पेड़। कली।

मुकुल (पुं.न.) अधखिली कली। आत्मा। शरीर।

मुकुष्ठ, **मुकुष्ठक** } (पुं.) एक प्रकार की सेम या छीमी

मुक्त (त्रि.) छुटकारा प्राप्त। आनन्दयुक्त।

मुक्तसङ्ग (त्रि.) परिव्राजक। संन्यासी।

मृक्तहस्त (त्रि.) उदार। बहुदानशील।

मुक्ता (स्त्री.) मोती।

मुक्ताप्रसू (स्त्री.) सीप।

मुक्ताफलम् (न.) मोती। कपूर। सीताफल। वोपदेव कृत ग्रन्थ विशेष, जिसमें भक्ति का विशेष वर्णन है।

मुक्तावली (स्त्री.) मोतियों की माला। इस नाम का न्यायशास्त्र गन्थ।

मुक्तास्कोट (पुं.स्त्री.) सीप।

मुक्ति (स्त्री.) छुटकारा। मोख।

मुक्तिक्षेत्र (न.) काशी धाम।

मुक्त्वा (अव्य.) छुटकारा पाकर। अतिरिक्त। छोड़ कर।

मुख (न.) मुँह। थूँथन। थूथड़। सामने या आगे का भाग। तीर का अग्रभाग। द्वार। उपोद्घात। आद्य। प्रधान।

मुखजः (पुं.) विप्र।

मुखनिरीक्षक (त्रि.) मुँह की ओर देखने वाला। आलसी। खुशामदी।

मुखपूरण (न.) अञ्जलि भर जल।

मुखभूषण (न.) पान। बीड़ा।

मुखर (त्रि.) कह डालने वाला। वाचाल। बहुत शब्द करने वाला। अपशब्द बोलने वाला। अप्रियवादी। काक। शंख।

मुखरित (त्रि.) शब्द करने वाला।

मुखलाङ्गल (पुं.) शूकर।

मुखवल्लभः (पुं.) अनार का पेड़।

मुखवासन (पुं.) मुख को सुगन्धियुक्त करने वाला।

मुखव्यादान (पुं.) मुख खोलना। मूँदना। जमुहाई।

मुखशोधनम् (न.) दालचीनी।

मुखस्रावः (पुं.) लार।

मुखाग्निः (पुं.) ब्राह्मण। दावानल।

मुख्य (त्रि.) प्रधान। अग्रज।

मुग्ध (त्रि.) मूढ़। सादा। सीधा। आकर्षक। सुन्दर।

मुग्धा (स्त्री.) नायिका भेद।

मुच् (क्रि.) ठगना। छोड़ना।

मुचकुन्द, **मुचुकुन्द** } (पुं.) पुष्प वाला वृक्ष विशेष। राजा मान्धाता के पुत्र का नाम।

मुचकुन्दप्रसादक (पुं.) श्रीकृष्ण।

मुचिर (त्रि.) उदार। (पुं.) देव विशेष। नेकी। पवन।

मुचिलिन्द (पुं.) एक प्रकार का पुष्प।

मुचुटी (स्त्री.) चीमटी।

मुज् (क्रि.) साफ करना। बजाना।

मुञ्ज् शब्द करना।

मुञ्ज (पुं.) मूंज। जिससे ब्राह्मणों के लिये मेखला बनायी जाती है। मेखला। धार नगरी के एक राजा का नाम। जो भोज के चाचा थे।

मुञ्जाट, **मुञ्जाटक** } (पुं.) एक प्रकार का पौधा।

मुञ्जर (न.) कमल की जड़।
मुट् (क्रि.) तोड़ना। पीसना। दबाना।
मुड् (क्रि.) बालों का काटना या मलना।
मुण्ड (पुं.न.) मस्तक। एक दैत्य। नाई। शाखापत्रहीन वृक्ष।
मुण्डक (पुं.) नाई।
मुण्डफल (पुं.) नारियल।
मुण्डिन् (पुं.) नाई।
मुण् (क्रि.) वचन हारना। प्रतिज्ञा करना।
मुत्य (न.) मोती।
मुद् (क्रि.) प्रसन्न होना।
मुद, मुदा (स्त्री.) हर्ष।
मुदिर (पुं.) बादल। कामुक। कामी। पाला।
मुदी (स्त्री.) चाँदनी। जुन्हाई।
मुद्ग (पुं.) मूँग। पक्षी विशेष। जलकाक।
मुद्गर (न.) मालती भेद। मुग्दर। कली।
मुद्गल (पुं.) एक ऋषि का नाम। एक प्रकार की घास। राजा विशेष।
मुद्गष्ठ (पुं.) छीमी या सेम विशेष।
मुद्रा (स्त्री.) मनोहर। चिह्न। टकसाल में ढले रुपये पैसे। पूजन में अंगुली आदि को विशेष रूप से मोड़ने सिकोड़ने की क्रिया।
मुद्रालिपि (स्त्री.) छापे के अक्षर। पाँच प्रकार की लिखावटों में से एक।
मुद्रिका (स्त्री.) अंगूठी। मोहर। रुपया।
मुद्रित (त्रि.) चिह्नित। छापा हुआ। बन्द।
मुधा (अव्य.) मिथ्या। झूठ। व्यर्थ। वृथा।
मुनि (पुं.) पवित्र पुरुष। ऋषि। सात की गिन्ती।
मुनिभेषज (न.) हर्र। अगस्त्य। कुछ न खाना।
मुनीन्द्र (पुं.) ऋषिश्रेष्ठ। सांख्य मुनि। भरत। शिव।
मुन्थ् (क्रि.) जाना।
मुन्था (स्त्री.) ज्योतिष के ताजिक (वर्षफल) भाग में प्रयुक्त होने वाला एक विशेष ग्रह। दसवाँ ग्रह।
मुन्यन्न (न.) नीवार। कन्द।
मुमुक्षा (स्त्री.) मोक्ष की कामना।
मुमुक्षु (त्रि.) मोक्ष की इच्छा वाला।
मुमुचान (पुं.) बादल।
मुमुषिषु (पुं.) चोर।
मुमूर्षु (त्रि.) आसन्नमृत्यु।
मुर् (क्रि.) घेर लेना। फँसा लेना।
मुर (पुं.) दैत्य विशेष। वेष्टन। गन्धद्रव्य।
मुरज (पुं.) मृदङ्ग। कुबेरपत्नी।
मुररिपु (पुं.) विष्णु। मुरारि।
मुरला (स्त्री.) केरल देश की एक नदी का नाम।
मुरली (स्त्री.) बंसी। वेणु।
मुरलीधर (पुं.) श्रीकृष्ण। वंशीधर।
मुर्च्छ् (क्रि.) मूर्च्छित होना।
मुर्मुर (पुं.) तुषाग्नि। सूर्य्य का घोड़ा।
मुशली, मुसली (स्त्री.) छिपकली।
मुशलिन् (पुं.) बलराम।
मुष् (क्रि.) मूँसना। लूटना।
मुषल, मुशल, मुसल (पुं.) मूसल जिससे अनाज उखली में डाल कर छरा जाता है।
मुषित (त्रि.) चुराया हुआ द्रव्य। वह मनुष्य जिसका द्रव्य चोर चुरा ले गये हों।
मुष्क (पुं.) अण्डकोष। चोर। वृक्ष विशेष। मोटा आदमी।
मुष्कशून्य (पुं.) खोजा। नपुंसक।
मुष्टि (पुं.स्त्री.) मुट्ठी। माप विशेष। मूठ या मुठिया। लिङ्ग। (स्त्री.) चुराना।
मुष्टिमुष्टि (अव्य.) घूँसों की लड़ाई।
मुष्टिक (पुं.) कंस का एक पहलवान। सुनार। डोम।
मुष्टिकान्तक (पुं.) बलदेव। मुष्टिकासुर। मल्ल के काल।
मुष्टिन्धय (पुं.) बालक। बच्चा। मूठी चूँबने वाला।
मुष्टिबन्ध (पुं.) मुट्ठी बाँधना। मुट्ठी भर।
मुष्ठक (पुं.) काली सरसों। राई।
मुस् (क्रि.) टुकड़े-टुकड़े करना। चीरना। बाँटना।
मुसल (पुं.) मूसल।
मुसलिन् (पुं.) बलराम। मुसलधारी।
मुसलीका (स्त्री.) बिसतुइया। छिपकली।
मुस्त् (क्रि.) देर करना। एकत्र करना।

मुस्त (पुं.) मोथा। तृणविशेष।
मुस्र (न.) लोढ़ा। मूसल। दरार।
मुह् (क्रि.) बेसुध होना। अचेत होना। मूर्च्छित होना। हैरान होना। गड़बड़ी में पड़ना।
मुहिर (पुं.) कामदेव। मूर्ख।
मुहुक (न.) (वैदिक प्रयोग) क्षण। पल।
मुहुस् (अव्य.) प्रायः। बार-बार।
मुहूर्त (पुं.न.) ४८ मिनिट का काल विशेष। किसी कार्य के लिये नियत समय।
मुहेर (पुं.) मूर्ख। ज्योतिषी।
मू (क्रि.) बाँधना।
मूक (पुं.) मत्स्य। मछली। गूँगा। दीन। दैत्य विशेष।
मूकिमन् (पुं.) गूँगापन।
मूत (त्रि.) बँधा हुआ। घिरा हुआ।
मूत्र (न.) पेशाब।
मूत्रकृच्छ्र (सं.) पेशाब की बीमारी जिसमें पेशाब बड़े कष्ट से उतरता है।
मूर (त्रि.) मूर्ख। नाश करना।
मूर्ख (त्रि.) बुद्धिहीन। गँवार।
मूर्च्छना (स्त्री.) बेसुध होना।
मूर्च्छा (स्त्री.) मोह। अचैतन्यावस्था। वृद्धि।
मूर्च्छाल (त्रि.) मूर्च्छित। बेसुध। अचेत।
मूर्त (त्रि.) अचेत। बेसुध।
मूर्ति (स्त्री.) प्रतिमा। विग्रह।
मूर्तिमत् (पुं.) आकारसम्पन्न। शरीर। कड़ा।
मूर्धन् (पुं.) माथा। सर्व्वोच्च स्थान। नेता। अगला। आधार।
मूर्धज (पुं.) केश। बाल।
मूर्धन्य (त्रि.) माथे में उत्पन्न होने वाले। ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष ये मूर्धन्य कहलाते हैं।
मूर्धाभिषिक्त
मूर्वा
मूर्वी } (स्त्री.) हर्ष।
मूर्विका (स्त्री.) एक लता, जिसके द्वारा धनुषों की प्रत्यञ्चा और क्षत्रियों की करधनी बनायी जाती है।
मूल् (क्रि.) स्थित होना। पक्का होना। लगाना। उगना।

मूल (न.) जड़। नीव। आधार। यथार्थ। मुख्य। परम्परागत प्राप्त सेवक। धनमूल। निकुञ्ज। पूँजी। समीपी। पिप्पलीमूल। उन्नीसवाँ नक्षत्र।
मूलक (न.) एक प्रकार का कन्द। मूली।
मूलकर्म्मन् (न.) मुख्य काम। जादू। मंत्र और औषधि से किये जाने वाले कर्म।
मूलकृच्छ्र (न.) व्रतविशेष।
मूलप्रकृति (स्त्री.) प्रधान प्रकृति। युद्ध के चार सिद्धान्त, जिन पर युद्ध के समय ध्यान दिया जाता है, यथा-विजिगीषु, अरि, मध्यम और उदासीन।
मूलिन् (पुं.) वृक्ष।
मूलविभुज (पुं.) रथ। गाड़ी। छकड़ा।
मूलाधार (पुं.) नाभि। लिङ्ग का मध्य भाग। तंत्र का त्रिकोण वाला एक चक्र।
मूल्य (न.) दाम। कीमत।
मूष् (क्रि.) लूटना।
मूषक (पुं.स्त्री.) मूसा। चूहा।
मूष
मूषिक } (पुं.) चूहा
मूषी (स्त्री.) घरिया जिसमें रख कर सोना आदि पिघलाया जाता है।
मृ (क्रि.) मरना। मारना।
मृकण्डु (पुं.) एक मुनि का नाम।
मृग् (क्रि.) खोजना। पीछा करना। आखेट खेलना।
मृग (पुं.) पशुमात्र। हिरन। हाथी। चन्द्रलाञ्छन। अश्विनी से पाँचवाँ नक्षत्र। माँगना। यज्ञ। कस्तूरी। मकर राशि। शाकद्वीप का एक नगर।
मृगगामिनी (स्त्री.) औषध विशेष।
मृगजीवन (पुं.) शिकारी। व्याध।
मृगणा (स्त्री.) नष्ट द्रव्य को खोजना।
मृगतृष्णा (स्त्री.) जल की भ्रान्ति।
मृगदंशक (पुं.) कुत्ता।
मृगधूर्तक (पुं.) श्रृगाल। सियार।
मृगनाभि (पुं.) कस्तूरी।
मृगनेत्रा (स्त्री.) हिरन के समान नेत्र वाली स्त्री।
मृगपति (पुं.) सिंह।

मृगवधाजीव (पुं.) व्याध। शिकारी।
मृगबन्धनी (स्त्री.) जाल। फन्दा।
मृगमद (पुं.) कस्तूरी।
मृगया (स्त्री.) अहेर। शिकार।
मृगयु (पुं.) ब्रह्मा। श्रृगाल।
मृगराज (पुं.) सिंह। चन्द्रमा।
मृगलक्षण (पुं.) चन्द्रमा।
मृगवाहन (पुं.) वायु।
मृगव्यथ (न.) शिकार। अहेर।
मृगशिरस् (न.पुं.) अश्विनी से पाँचवाँ नक्षत्र।
मृगाक्षी (स्त्री.) विशल्या। हिरन के समान नेत्र वाली स्त्री।
मृगाण्डजा (स्त्री.) कस्तूरी।
मृगादन (पुं.) छोटा भेड़िया।
मृगाराति (पुं.) सिंह। भेड़िया। कुत्ता।
मृगाविध (पुं.) व्याघ्र। शिकारी।
मृगित (त्रि.) माँगा गया।
मृगेन्द्र (पुं.) सिंह।
मृगेन्द्रचटक (पुं.) श्येन। बाज पक्षी।
मृज् (क्रि.) साफ करना। सजाना।
मृजा (स्त्री.) साफ करना।
मृड् (क्रि.) क्षमा करना। प्रसन्न होना।
मृड (पुं.) शिव।
मृडा, मृडानी, मृडी (स्त्री.) पार्वती।
मृडीक (पुं.) शिव। हिरन। मछली।
मृण् (क्रि.) मारना।
मृणाल (न.) कमल की डण्डी का सूत।
मृणालिन् (पुं.) कमल।
मृणालिनी (स्त्री.) कमलिनी। कमलों का समूह। वह स्थान जहाँ बहुत से कमल के फूल हों।
मृत (न.) मरण।
मृतक (न.) मरा हुआ पुरुष। मुर्दा।
मृतकल्प (त्रि.) मृतप्राय।
मृतवत्सा (स्त्री.) मरी हुई सन्तान वाली स्त्री।
मृतसञ्जीवनी (स्त्री.) एक बूटी। तांत्रिक विद्या विशेष।
मृतस्नात (त्रि.) मरने पर नहाने वाला।
मृतण्ड (पुं.) सूर्य्य।
मृतालक (न.) एक प्रकार की मिट्टी।
मृति (स्त्री.) मौत।
मृत्तिका (स्त्री.) मिट्टी।
मृत्यु (पुं.) मरण। मौत। कंस। कामदेव।
मृत्युनाशक (पुं.) मौत को नाश करने वाला।
मृत्युञ्जय (पुं.) शिव।
मृत्स्ना (स्त्री.) बहुत साफ मिट्टी। धूल।
मृद् (क्रि.) चूर करना।
मृद, मृदा (स्त्री.) मृत्तिका।
मृदङ्कुर, मृदङ्कुरु (पुं.) हरे रंग का कपोत या कबूतर
मृदङ्ग (पुं.) एक प्रकार की ढोलक।
मृदाकर (पुं.) वज्र। कुलिश।
मृदु (त्रि.) कोमल। निर्बल। मोथरा। धीमा। शनिग्रह।
मृदुत्वच् (पुं.) भोजपत्र।
मृदुल (न.) जल। (त्रि.) कोमल।
मृद्वीका (स्त्री.) दाख। किशमिश।
मृदुन्नक (न.) सोना।
मृध् (क्रि.) गीला करना।
मृध (न.) लड़ाई।
मृश् (क्रि.) छूना।
मृष् (क्रि.) क्षमा करना।
मृषा (अव्य.) मिथ्या।
मृषार्थक (न.) झूठे अर्थ वाला।
मृषालक (पुं.) आम का पेड़।
मृषावाद (पुं.) झूठी बात।
मृषोद्य (न.) मिथ्या कथन।
मृष्ट (न.) शोधित। मिर्च।
मृष्टेरुक (त्रि.) स्वार्थी। उदार।
मृ (क्रि.) वध करना।
मे (क्रि.) बदलना। विनिमय।
मेक (पुं.) बकरा।
मेकल, मेखल (पुं.) पर्वत विशेष। बकरा।

मेकल+अद्रिजा, मेकलकन्यका, मेकलकन्या (स्त्री.) नर्मदा नदी। (मेकलकी जगह "मेखल" भी होता है।)

मेखला (स्त्री.) कमरपेटी। करधनी। प्रथम तीन वर्णों के पहरने का कटिसूत्र। तलवार का परतला। घोड़े का तंग। नर्मदा। होमकुण्ड।

मेखलालः (पुं.) शिव।

मेखलिन् (पुं.) शिव। ब्रह्मचारी।

मेघ (पुं.) बादल। मोथा। राग विशेष। राक्षस विशेष। रोग भेद।

मेघजीवन (पुं.) चातक पक्षी। पपीहा।

मेघज्योतिस् (न.) बिजली।

मेघनाद (पुं.) वरुण। रावण का पुत्र। मेघगर्जन।

मेघयोनि (स्त्री.) धूम।

मेघवर्त्मन् (न.) आकाश।

मेघवह्नि (पुं.) बिजली।

मेघवाहन (पुं.) इन्द्र।

मेघागम (पुं.) वर्षाऋतु।

मेघनन्दिन् (पुं.) मयूर। मोर।

मेचक (न.) काला। मयूर। चन्द्रक। बादल। काला रङ्ग या काले रङ्ग वाला। धूम। थुथनी। रत्न विशेष।

मेचकआपगा (स्त्री.) यमुना नदी।

मेट्, मेड् (क्रि.) पगलाना। उन्मत्त होना।

मेटुला (स्त्री.) आमलकी।

मेठ (पुं.) मेढ़ा। महावत।

मेठि (पुं.) खम्भा। खूँटा।

मेथि, मिढ्, मेढक (पुं.) मेढ़ा। लिङ्ग।

मेथिका, मेथिनी (स्त्री.) तृण विशेष। मेथी।

मेद (क्रि.) मोटा। अलम्बुषा। सर्परूपी दानव विशेष।

मेदस् (न.) चर्बी।

मेदस्कृत् (पुं.) मांस।

मेदिनी (स्त्री.) पृथिवी।

मेदुर (त्रि.) देखो मेदुर।

मेध (पुं.) बलि, यथा-नरमेघ, अश्वमेघ। यज्ञपशु। बाले। मांस का रस।

मेधज (पुं.) विष्णु।

मेधा (स्त्री.) धारणावती बुद्धि वाला। जिसकी धारणा शक्ति बहुत अच्छी हो। तोता। मदिरा विशेष।

मेधातिथि (पुं.) अरुन्धती का पिता। मनुस्मृति का एक टीकाकार।

मेधिर (त्रि.) अच्दी बुद्धि वाला।

मेधिष्ठ (त्रि.) बड़ां बुद्धिमान्।

मेध्य (त्रि.) छाग। खदिर। जौ। केतकी। शङ्खपुष्पी। (स्त्री.) रोचना। शमी।

मेनका (स्त्री.) एक अप्सरा का नाम। जिसका गर्भ से शकुन्तला का जन्म हुआ था। हिमालय की स्त्री।

मेनकात्मजा (स्त्री.) पार्वती।

मेना (स्त्री.) हिमालयपत्नी। नदी विशेष। पितरों के मन से उत्पन्न हुई कन्या।

मेनाद (पुं.) मोर। बिल्ली। बकरा।

मेन्धिका, मेन्धी (स्त्री.) मेंहदी।

मेय (त्रि.) मापने योग्य। जानने योग्य। ज्ञेय।

मेरक (पुं.) विष्णु के एक शत्रु का नाम। छाल से ढका आसन।

मेरु (पुं.) एक शास्त्र-कल्पित पर्वत जिसके चारों ओर समस्त नक्षत्र घूमा करते हैं और जो कई एक द्वीपों का मध्य भाग समझ जाता है। कहा जाता है यह सुवर्ण और रत्नों का बना है। जयमाला के ऊपर का दाना।

मेरुक (पुं.) गन्ध द्रव्य।

मेरुसावर्णि (पुं.) ग्यारहवें मनु का नाम।

मेलक (त्रि.) विवाह। सङ्ग।

मेला (स्त्री.) स्याही। नील का पेड़। सुर्मा। मिलाना।

मेलान्धु (पुं.) दवात।

मेव् (क्रि.) पूजा करना। सेवा करना।

मेष (पुं.) मेढ़ा। भेड़। पहिली राशि। ज्योतिषश्चक्र का बारहवाँ भाग।

मेषा (स्त्री.) छोटी इलायची।

मेषाण्ड (पुं.) इन्द्र।

मेषिका, मेषी (स्त्री.) मेढ़ी।

मेह (पुं.) पेशाव। प्रमेह का रोग। सुजाक रोग। मेढ़ा। बकरा।

मेहघ्नी (स्त्री.) हलदी।

मेहन (न.) मूत्रोत्सर्ग। लिङ्ग।

मेत्र (न.) मित्र का। मित्र का दिया हुआ। मित्रभाव से। वर्णसङ्कर जति विशेष। गुदा। मित्र। मित्र देवता। अनुराधा।

मेत्रावरुण / **मेत्रावरुणि** } (पुं.) वाल्मीकि। अगस्त्य। वशिष्ठ।

मेत्री (स्त्री.) मित्रता। दोस्ती।

मैत्रेय (त्रि.) मित्रा की सन्तति। बुद्धदेव। (पुं.) सङ्कर जाति विशेष।

मैत्रेयिका (स्त्री.) मित्रयुद्ध।

मैत्रय (न.) दोस्ती। मैत्री।

मैथिल (पुं.) मिथिला का एक राजा। मिथिला राज्यवासी।

मैथिली (स्त्री.) सीता।

मैथुन (न.) जोड़ा। विवाह द्वारा मिलन। भोगसम्बन्धी। विवाह। सम्बन्ध। अग्न्याधान।

मैधावकम् (न.) बुद्धि।

मैनाक (पुं.) हिमालय के औरस से मेनका के गर्भ से उत्पन्न पहाड़। केवल इसी के पर रह गये हैं। इसी ने हनुमान् का लङ्का जाते समय आतिथ्य करना चाहा था।

मैनाकस्वसृ (स्त्री.) पार्वती।

मैनाल (पुं.) मछली मारने वाला। धीवर।

मैन्द (पुं.) एक दैत्य जो कृष्ण द्वारा मारा गया था।

मैरेय (पुं.) मदिरा भेद।

मैलिन्द (पुं.) मधुमक्षिका।

मोक (न.) पशु का अलग किया हुआ चर्म।

मोक्ष् (क्रि.) छूटना। खोलना। फेंकना। अलग करना।

मोक्ष (पुं.) मुक्ति।

मोक्षद्वार (पुं.न.) सूर्य।

मोक्षपुरी (स्त्री.) मोक्ष देने वाली पुरी काञ्ची। काशी। मोक्ष देने वाली सात पुरियाँ हैं।

"अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।"

मोघ् (त्रि.) निरर्थक। त्यक्त।

मोघोलि (पुं.) बाड़ा। घेरा।

मोच (पुं.) केले का पेड़। शोभाञ्जन वृक्ष।

मोचक (पुं.) मोक्ष। वैराग्यसम्पन्न। केले का पेड़। सुहांजन। वृक्ष।

मोटक (न.) कुशा के बने और श्राद्ध के काम के पट्टे।

मोट्टायित (न.) अनुपस्थित मित्र से मिलने के लिये स्त्री की अभिलाषा विशेष।

मोण (पुं.) सूखा फल विशेष। साँप के रखने की पिटारी।

मोद (पुं.) हर्ष। प्रसन्नता।

मोदक (पुं.) लड्डू। प्रसन्न करने वाला। कहार।

मोदिनी (स्त्री.) अजमोदा। अजवाइन। मल्लिका। कस्तूरी। मदिरा।

मोरट (पुं.) पेवसी। गन्ने की जड़। अङ्कोल वृक्ष का फूल।

मोष (पुं.) चोर। चोरी। डाँकू। चोरी की वस्तु।

मोषक (पुं.) चोर। डाँकू।

मोशण (न.) लूटना। चुराना। काटना। मारना।

मोह (पुं.) मूर्च्छा। अज्ञान। दुःख। शरीर में आत्माभिमान।

मोहन (पुं.) मोहोत्पादक। कामदेव का एक तीर।

मोहरात्रि (स्त्री.) ब्रह्मा का पचासवाँ साल। जन्माष्टमी की रात्रि।

मोहिनी (स्त्री.) एक अप्सरा का नाम। बड़ी सुन्दरी स्त्री। विष्णु ने जिस स्त्री का रूप भस्मासुर के लिये धारण किया था उसका नाम। चमेली का पुष्प।

मौकलि / **मौकुलि** } (पुं.) काक। कौआ।

मौक्तिक (न.) मोती।

मौक्तिकप्रसवा (स्त्री.) सीप।

मौक्तिकसर (पुं.) मोतियों का हार।

मौक्य (न.) गूँगापन।

मौख्य (न.) प्राधान्य।

मौखरि (पुं.) एक वंश का नाम।
मौखर्य (न.) बातूनीपन। गाली।
मौघ्य (न.) व्यर्थता। निरर्थकता।
मौच (न.) केले की छीमी।
मौञ्जी (स्त्री.) कटिसूत्र।
मौञ्जीबन्धन (पुं.) उपनयन संस्कार जिसमें यज्ञसूत्र के साथ साथ कटिसूत्र भी धारण किया जाता है।
मौड्य (न.) गञ्जापन। सिर के बालों का मुण्डन।
मौढ्य (न.) लड़कपन। मूढ़ता।
मौद्गल (पुं.) काका।
मौद्गल्य (पुं.) मुद्गलमुनि की एक सन्तान। एक मुनि विशेष।
मौद्गीन (न.) मूँग उपजाने योग्य एक क्षेत्र।
मौन (न.) चुपचाप। स्मृति का वचन है कि नीचे लिखे काम चुपचाप करे अर्थात् इन कामों को करते समय बातचीत न करे या बोले नहीं। १. उच्चार। २. मैथुन। ३. प्रश्राव। ४. दन्तधावन। ५. स्नान, भोजन।
मौनिन् (पुं.) मौनी। मुनि।
मौरजिक (त्रि.) ढोल वाला। मृदङ्ग बजाने वाला।
मौर्ख्य (न.) मूर्खता। जड़ता।
मौर्वी (स्त्री.) मूर्वनामूनी बेल से बनी। धनुष का रोदा। अजश्रृङ्गी।
मौल (त्रि.) पुराना। पहले का। सद्वंशोद्भव।
मौलि (पुं.स्त्री.) चोटी। मुकुट। अशोक का पेड़। भूमि।
मौषल (न.) मूसलों वाला। महाभारत का पर्व विशेष। जिसमें मूसल द्वारा एक कुल का नाश वर्णन किया गया है।
मौहूर्त (पुं.) ज्योतिषी।
म्ना (क्रि.) बारम्बार मन ही मन कहना। याद करना।
म्नात (त्रि.) दुहराया हुआ। याद किया हुआ। अध्ययन किया हुआ।
म्रक्ष् (क्रि.) मलना। इकट्ठा करना। मारना। चोटिल करना। मिलाना। अस्पष्ट रूप से बोलना।
म्रक्ष (पुं.) दम्भ। ढोंग।
म्रक्षण (न.) तेल मलना। एकत्र करना।
म्रद् (क्रि.) चूर्ण करना। कुचलना।
म्रदिमन् (पुं.) कोमलता। निर्बलपन।
म्रदिष्ठ (त्रि.) अति कोमल।
म्रुच् (क्रि.) जाना।
म्रुञ्च् (क्रि.) जाना।
म्रेट्, **म्रेड्** (क्रि.) पगलाना।
म्रियमाण (त्रि.) मृतकल्प। मृतसदृश।
म्लक्ष् (क्रि.) काटना या विभाग करना।
म्लानि (स्त्री.) कुम्हलाना। मुरझाना।
म्लिष्ट (न.) अस्पष्ट। जङ्गली। मुरझाया हुआ।
म्लुच्, **म्लुञ्च्** (क्रि.) जाना।
म्लेच्छ्, **म्लेछ्** (क्रि.) अस्पष्ट या बुरी तरी बोलना।
म्लेच्छ (पुं.) अनार्य। नीच और दुष्कर्मरत जाति विशेष। पामर जाति। ताँबा।
म्लेच्छकन्द (पुं.) लहसन। प्याज।
म्लेच्छजाति (स्त्री.) गोमांस खाने वाली जाति।
म्लेच्छमुख (न.) ताँबा।
म्लेट्, **म्लेड्** (क्रि.) पगलाना।
म्लेव (क्रि.) पूजना। सेवा करना।
म्लै (क्रि.) मुरझाना।

य

य (पुं.) जाने वाला। गाड़ी। हवा। सम्मिलन। कीर्ति। जौ। रोक। बिजली। त्याग। गण विशेष। यम का नाम।
यकन्, **यकृत्** (न.) दाहिनी कोख का मांसपिण्ड।
यक्ष् (क्रि.) पूजा करना। सजाना।
यक्ष (पुं.) देवयोनि विशेष जो कुबेर के वशवर्त्ती हैं। इन्द्र के राजभवन का नाम।
यक्षकर्दम (पुं.) लेप जिसमें कपूर, केसर, कस्तूरी, चन्दन, शीतलचीनी, अगुरु मिला हुआ है।
यक्षतरु (पुं.) वट वृक्ष।

यक्षधूप (पुं.) धूप विशेष।
यक्षराज (पुं.) कुबेर।
यक्षरात्रि (त्रि.) कार्तिकी पूर्णिमा की रात।
यक्षामलकम् (न.) पिण्डखजूर का फल।
यक्षिणी (स्त्री.) यक्ष की स्त्री। कुबेरपत्नी।
यक्ष्म, यक्ष्मन् (पुं.) छई रोग।
यक्ष्मघ्नी (स्त्री.) दाख। अङ्गूर।
यज् (क्रि.) यज्ञ करना। यजन करना। पूजन करना। दान देना और सत्कार करना।
यजति (पुं.) एक प्रकार का यज्ञ।
यजन (पुं.) यज्ञ।
यजमान (पुं.) जो यज्ञ करता और यज्ञ कराने वालों को दक्षिण देता।
यजुर्वेद (पुं.) वेद का नाम।
यजुस् (न.) यजुर्वेद।
यज्ञपशु (पुं.) घोड़ा। बकरा।
यज्ञपुरुष (पुं.) विष्णु।
यज्ञभूषण (पुं.) सफेद कुश।
यज्ञयोग्य (पुं.) उदुम्बर का पेड़, जिसकी लकड़ी यज्ञ के काम में आती है।
यज्ञवल्ली (स्त्री.) सोमलता।
यज्ञवराह (पुं.) भगवान् का अवतार विशेष।
यज्ञवाट (पुं.) यज्ञस्थान।
यज्ञसूत्र (न.) यज्ञोपवीत। जनेऊ।
यज्ञाङ्ग (पुं.) उदुम्बर, खदिर, सोम बेल की लकड़ी व पत्ते।
यज्ञान्त (पुं.) यज्ञ का अन्त।
यज्ञिक (पुं.) द्वापर युग।
यज्ञियप्रदेश (पुं.) वह देश जिसमें काले हिरन घूमा करते हैं।
यज्ञेश्वर (पुं.) विष्णु।
यज्ञोपवीत (न.) जनेऊ।
यज्वन् (पुं.) विधिपूर्वक यज्ञ कराने वाला।
यत् (क्रि.) यत्न करना।
यतमः (त्रि.) कौन। कई एकों में कौन सा।
यतरः (त्रि.) कौन या दो में से कौन सा।
यतस् (अव्य.) जिससे। क्योंकि।
यतिन् (पुं.) परिव्राजक। संन्यासी।
यतिनी (स्त्री.) विधवा स्त्री।
यत्न (पुं.) उद्योग।
यत्र (अव्य.) जहाँ।
यथा (अव्य.) जैसे।
यथाकाम (अव्य.) इच्छानुसार।
यथाक्रम (अव्य.) क्रमानुसार।
यथाजात (त्रि.) मूर्ख। नीच।
यथार्थ (अव्य.) ठीक। सत्य।
यथार्ह (अव्य.) जैसे का तैसा।
यथार्हवर्ण (पुं.) दूत।
यथाशक्ति (अव्य.) शक्त्यनुसार।
यथाशास्त्र (अव्य.) शास्त्रानुसार।
यथास्थित (अव्य.) सत्य। ज्यों का त्यों।
यथेप्सित (अव्य.) इच्छानुसार।
यथोचित (अव्य.) उचित।
यद् (सर्वनाम) जो।
यदा (अव्य.) जब।
यदि (अव्य.) अगर। जो।
यदु (पुं.) राजा ययाति के औरत और देवयानी के गर्भजात ज्येष्ठ पुत्र और यादवों का पूर्वपुरुष। मथुरा की समीप का एक देश।
यदुनन्दन, यदुनाथ, यदुश्रेष्ठ (पुं.) श्रीकृष्ण।
यदृच्छा (स्त्री.) दैवात्।
यन्तृ (पुं.) सारथि। गाड़ीवान।
यन्त्र (न.) रोक। देवता का आसन। कल। पात्र विशेष।
यन्त्रगृह (न.) तेल निकालने की कल का घर।
यन्त्रण (न.) नियमन। रोक।
यभ् (क्रि.) मैथुन करना।
यम् (क्रि.) रोकना। हटाना। वश करना। दबाना। नियमन करना।
यम (पुं.) यमज। जुड़े हुए। रोक। दबाव। आत्मनिग्रह। योग के आठ अङ्ग। धर्मराज। शनि। काला। दो की संख्या।
यमकोटि (पुं.स्त्री.) लङ्का से पूर्व देवताओं की निर्माण की हुई एक पुरी।

यमज (त्रि.) एक गर्भ में एक साथ दो बालक।
यमद्रुम (पुं.) यमराज के द्वार पर शाल्मली का वृक्ष है।
यमद्वितीया (स्त्री.) कार्तिकशुक्ला २।
यमदग्नि (पुं.) मुनि विशेष।
यमन (न.) बन्धन।
यमराज (पुं.) धर्मराज।
यमल (न.) जोड़ा। वृन्दावन के समीप का एक वृक्ष।
यमवाहन (पुं.) भैंसा।
यमानी (स्त्री.) अजमोदा। अजवाइन।
यमुना (स्त्री.) यमभगिनी। जमना नदी।
ययाति (पुं.) नहुषपुत्र। एक राजा।
ययि } (पुं.) अश्वमेघ के योग्य घोड़ा। मार्ग।
ययी } शिव। बादल।
ययु (पुं.) घोड़ा। यज्ञीय अश्व।
यव } (पुं.) जौ।
यवक }
यवक्य (न.) जौ बोने योग्य क्षेत्र।
यवन (पुं.) देश विशेष। यूनानी। वेग। शीघ्रगामी घोड़ा। गोधूम।
यवनप्रिय (न.) मिर्च।
यवनानी (स्त्री.) यवन की स्त्री।
यवमध्य (न.) एक प्रकार का चान्द्रायण व्रत।
यवस (न.) घास।
यवागू (स्त्री.) लप्सी। खिचड़ी।
यवास (पुं.) खदिर भेद।
यविष्ठ (त्रि.) बहुत छोटा। छोटा भाई।
यव्य (न.) जौ बोने योग्य खेत।
यशद (न.) धातु विशेष।
यशःपटह (पुं.) एक प्रकार का बाजा।
यशःशेष (त्रि.) मृत।
यशस् (न.) कीर्ति। गौरव।
यशस्या (स्त्री.) जीवन्ती बूटी।
यशोद (पुं.) पारा। यश देने वाला।
यशोदा (स्त्री.) नन्द की पत्नी।
यष्टि (स्त्री.) लकड़ी। छड़ी। ताँत। मुलहठी।
यष्टृ (पुं.) भक्त। यज्ञ या पूजा करने वाला।
यस् (क्रि.) यत्न करना।
यर्हि (अव्य.) जब। जब कभी।
यहु (त्रि.) बड़ा। बालक। पुत्र।
यह्व (त्रि.) बड़ा। बलवान्। अविराम। उद्योगशील।
यह्वी (स्त्री.) नदी। आकाश पृथिवी। दिन रात। प्रातः सायं।
या (क्रि.) जाना।
याग (पुं.) यज्ञ।
यागसन्तान (पुं.) जयन्त का नाम।
याच् (क्रि.) माँगना।
याचक (पुं.) भिखारी। मँगता।
याचन (न.) माँग।
याचनक (त्रि.) मँगता।
याचित (न.) माँगा हुआ। आवश्यक।
याचितक (न.) माँग कर पायी हुई वस्तु।
याच्ञा (स्त्री.) प्रार्थना। माँग।
याज (पुं.) यज्ञ करने वाला। भात। साधारणतः भोजन।
याजक (पुं.) यज्ञ कराने वाला। पुरोहित। राजा का हाथी। मस्त हाथी।
याजुष (पुं.) यजुर्वेदी।
याज्ञवल्क्य (पुं.) ऋषि विशेष। योगिराज।
याज्ञसेनी (स्त्री.) द्रौपदी।
याज्ञिक (पुं.) कुश। खदिर। पलाश। अश्वत्थ। याजक। ऋत्विग्। यजमान।
याज्य (न.) यज्ञस्थान। देवप्रतिमा। दायभाग।
यातना (स्त्री.) पीड़ा।
यातयाम (त्रि.) पुराना। बासा। जूठा।
यातव्य (पुं.) जाने योग्य।
यातायात (न.) जाना आना।
यातु (पुं.) राक्षस। जाने वाला। अस्त्र विशेष।
यातुघ्न (पुं.) गुग्गुल। राक्षस को मारने वाला।
यातुधान (पुं.) राक्षस। भूत।
यातृ (स्त्री.) देवरानी। देवर की बहू।
यात्रा (स्त्री.) जाना। देवता का उत्सव विशेष।
यात्रिक (त्रि.) उत्सव। यात्रा के लिये हितकर। मामूली। यात्रा करने वाला। यात्री।
याथातथ्य (न.) यथार्थ। ठीक ठीक। ज्यों का त्यों।

याथार्थ्य (न.) असली। ठीक।
यादःपति (पुं.) वरुण। समुद्र।
यादव (पुं.) यदुवंशी। कृष्ण का नाम। गोधन।
यादवी (स्त्री.) दुर्गा।
यादस् (न.) जलजीव। जल। नदी। वीर्य। अभिलाष।
यादसांपति / **यादसांनाथ** (पुं.) वरुण। समुद्र।
यादृक्ष / **यादृश** (त्रि.) जैसा।
यादृच्छिक (त्रि.) स्वतन्त्र। स्वेच्छाचारी। अचानक।
यान (न.) गमन। जाना। आक्रमण। रथ। गाड़ी। सवारी।
यानक (न.) सवारी।
यापन (न.) बिताना।
याप्ययान (न.) पालकी। पीनस। तामझाम।
याम (पुं.) समय। प्रहर।
यामघोष (पुं.) कुक्कुट। समयसूचक यंत्र।
यामल (न.) जोड़ा। तन्त्रशास्त्र विशेष।
यामवती (स्त्री.) तीन प्रहर वाली रात। हल्दी।
यामातृ (पुं.) जामातृ। जमाई।
यामि / **यामी** (स्त्री.) वहिन।
यामित्र (न.) लग्न से सातवाँ स्थान।
यामित्रवेध (पुं.) सातवें स्थान में किसी पापग्रह का योग।
यामिनी (स्त्री.) रात।
यामिनीपति (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।
यामी (स्त्री.) दक्षिण दिशा।
याम्य (पुं.) अगस्त्य। चन्दन वृक्ष। दक्षिणी। यमसम्बन्धी। शिव। विष्णु। भरणी नक्षत्र।
याम्यायन (न.) दक्षिणायन सूर्य्य।
याम्योद्भूत (पुं.) ताल का पेड़।
यायजूक (पुं.) बार बार यज्ञ करने वाला।
यायावर (पुं.) अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा। जरत्कारु। राजशेखर के वंश नाम। परिव्राजक का जीवन।
यावत् (त्रि.) जब तक।
यावन् (पुं.) घुड़चढ़ा। सवार। आक्रमणकारी। जाना।
यावनाल (पुं.) जुआर नामक अनाज। यवनाल से निकाली हुई चीनी। एक देश का नाम।
याष्टीक (पुं.) लाठी से लड़ने वाला।
यावस (पुं.) घस का ढेर। चारा।
यास (पुं.) यत्न। उद्योग।
यास्क (पुं.) निरुक्त के रचयिता का नाम।
यु (क्रि.) मिलाना। अलग करना। बाँधना। पूजा करना।
युक्त (त्रि.) मिला हुआ। जुड़ा हुआ। नधा हुआ। साथ। योगी। न्यायपूर्वक प्राप्त द्रव्य।
युक्ति (न.) न्याय। व्यवहार। अनुमान। नाटक का अङ्ग विशेष।
युक्तितः (अव्य.) चतुरतापूर्वक। ठीक रीति से।
युग (न.) जोड़ा। दो। सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि नामक युग विशेष। वृद्धि नाम दवा। माप विशेष। (चार हाथ का) गाड़ी अथवा हल का अवयव विशेष। पाँच वर्ष का काल।
युगपद् (अव्य.) एक साथ ही। एक काल।
युगपार्श्वग (पुं.) हल के समीप बँधा हुआ बैल।
युगल (न.) जोड़ा।
युगान्त (पुं.) युग का अन्त। प्रलय।
युग्म (न.) जोड़ा। दो की संख्या वाला। दो तिथि का योग विशेष। समान। राशियाँ।
युग्य (न.) वाहन। सवारी। घोड़ा।
युच्छ (क्रि.) प्रमाद करना। भूलना। असावधानी करना।
युज् (क्रि.) जुड़ना। समाधि लगाना।
युज (पुं.) समाधि लगाने वाला। मिला हुआ।
युञ्जान (पुं.) गाड़ीवान। मोक्षार्थी योग लग्न ब्राह्मण।
युत् (क्रि.) चमकना।
युत (त्रि.) संयुक्त। मिला हुआ।
युतक (पुं.) युग। जोड़ा। मिला हुआ। मैत्री। स्त्रियों के पहरने का वस्त्र विशेष। मैत्री करना। सूप का किनारा। पैर का अग्रभाग। सन्देह। दहेज। दायजा।
युतवेध (पुं.) विवाह आदि शुभ कार्यों में चन्द्रमा के साथ पापग्रहों का त्याज्य योग।

युध् (क्रि.) लड़ना। युद्ध में जीतना। सामना करना। जय प्राप्त करना।

युद्ध (न.) लड़ाई।

युधान (पुं.) क्षत्रिय। योद्धा।

युधिष्ठिर (पुं.) लड़ाई में पक्का। पाण्डवाग्रगण्य।

युयुधान (पुं.) इन्द्र। क्षत्रिय। योद्धा। सात्यकि का नाम।

युयु (पुं.) घोड़ा।

युवति, **युवती** (स्त्री.) जवान औरत

युवन् (त्रि.) जवान। दृढ़। सर्वोत्तम।

युवनाश्व (पुं.) सूर्य्यवंश में उत्पन्न मान्धाता का पिता। एक राजा।

युवराज (पुं.) राजा का उत्तराधिकारी। राजा के समक्ष राज्यकार्य निरीक्षण करने वाला भविष्य राजा। वर्तमान राजप्रतिनिधि।

युष (क्रि.) सेवा करना।

युष्मद् (सर्वनाम) तुम्हारा।

यूक (पुं.स्त्री.) खटमल। जूँ।

यूति (स्त्री.) मिलाप। मिलाना।

यूथ (न.) समूह।

यूथनाथ (पुं.) वनैले हाथियों का सरदार। किसी भी झुंड का मालिक। यूथपति।

यूप (न.) यज्ञपशु को बाँधने की लकड़ी। यज्ञ का स्तम्भ। मामूली खम्भा।

योक्त्र (न.) रस्सी। जुएँ और हल में बाँधने की रस्सी। जोता।

योग (पुं.) जोड़। मिलान। उपाय। कवच धारण। मन की वृत्तियों का निरोध। युक्ति। छल। गाड़ी। कवच। धन।

योगक्षेम (न.) अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति और प्राप्त वस्तु की रक्षा। अन्न-वस्त्र।

योगदान (न.) छल या उपाधि से देना।

योगनिद्रा (स्त्री.) ऊँघना। दुर्गा। पार्वती।

योगपट्ट (न.) योगियों के योग्य सूत्र।

योगपीठ (न.) योगासन।

योगमाया (स्त्री.) दुर्गा। पार्वती।

योगारूढ (पुं.) योगी विशेष।

योगासन (न.) योगशास्त्रोक्त आसन।

योगिन् (त्रि.) योगी। याज्ञवल्क्य। अर्जुन। विष्णु। शिव। सङ्करजातिविशेष। (स्त्री.) डाइन।

योगीश्वर (पुं.) याज्ञवल्क्य मुनि। (स्त्री.) दुर्गा। योगिराज। श्रीभागवतोक्त नव योगेश्वर जो ऋषभदेव के भरतादि सौ पुत्रों में से नव योगेश्वर हुए। "कविर्हरिरन्तरिक्षः प्रबुद्धः पिप्पलायनः। आविर्होत्रोऽथ द्रुमिलश्चमसः करभाजनः।।" आत्मविद्यानिपुण।

योगेश्वर (पुं.) श्रीकृष्ण। "यत्र योगेश्वरः कृष्णो"।

योग्य (त्रि.) उचित। निपुण। पुष्य नक्षत्र। ऋद्धि नाम्नी औषधि। समर्थ। बड़ा।

योग्यता (स्त्री.) सामर्थ्य। पहुँच। शक्ति।

योजन (न.) संयोग। मेल। चार कोस का एक योजन।

योजनगन्धा (स्त्री.) कस्तूरी। सीता। सत्यवती।

योधसंराव (पुं.) सैनिकों की युद्धार्थ बुलाहट।

योनि (पुं.स्त्री.) गर्भाशय। भग। स्त्री चिह्न। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र। उत्पत्तिस्थान। मिश्रित हो कर रहने वाली इन्द्रिय विशेष। चौरासी लाख योनियाँ। "वृक्षा विंशतिलक्षयोनिकथिता लक्षाश्च दिक्पक्षिणा। लक्षाः खाग्निमिताः पशोर्निगदिता लक्षा नवैवाम्बुजाः। लक्षा रुद्रमितास्तथा कृमिगणा लक्षाब्धयो मानवाः। पूर्वे पुण्यसमाहितं भवति चेद् ब्राह्मण्ययोनीयते।।" अर्थात्-वृक्ष २०, पक्षी १०, पशु ३०, जलचर ९, कीड़े ११, मनुष्य ४ लाख, कुल ८४ लाख हैं।

योनिज (न.) मनुष्यादि चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने वाले।

योनिमुद्रा (स्त्री.) योग की मुद्रा विशेष। सन्ध्या के जपान्त की आठ मुद्राओं में से एक।

योपन (न.) मिटाना। सोखना।

योषणा (स्त्री.) युवती लड़की।

योषा (स्त्री.) स्त्री। नारी।

यौक्तिक (त्रि.) युक्तिसिद्ध। योग्य।

यौगिक (त्रि.) काम का। ठीक। उचित। धातु और प्रत्यय से समझने योग्य। योगसम्बन्धी।

यौट्, **यौड्** (क्रि.) साथ मिलाना।

यौतक (न.) विवाह के समय मिला हुआ द्रव्य। दायजा।
यौतव (न.) माप विशेष।
यौथिक (पुं.) साथी। सङ्गी।
यौधेय (पुं.) योद्धा।
यौन (त्रि.) योनिसम्बन्धी। लम्पट। पापी।
यौवत (न.) युवती स्त्रियों का समूह।
यावनकण्टक (पुं.न.) युवावस्था का घोड़ा। मुँहासा। मुँहरसा।
यौवनदशा (स्त्री.) युवावस्था। जवानी।
यौवनलक्षण (न.) स्तन। उरोज। जवानी के चिह्न।
यौवराज्य (न.) युवराज का पद।
यौवनाश्व (पुं.) युवनाश्व का पुत्र राजा मान्धाता।
यौषिण्य (न.) स्त्रीत्व।
यौष्माक } (त्रि.) आपका।
यौष्माकीन }

र

र (पुं.) अग्नि। गर्मी। प्रेमाभिलाष। गति। गण विशेष।
रंसु (त्रि.) प्रसन्न।
रंह् (क्रि.) तेजी के साथ जाना।
रंहस् (न.) वेग। शीघ्रता।
रक् (क्रि.) चखना। पाना।
रक (पुं.) चकमक। बिल्लौर पत्थर। झड़ी।
रक्त (न.) कुङ्कुम। ताँबा। सिन्दूर। लोहू। अनुराग। लाल रङ्ग। रत्ती।
रक्तकन्द (पुं.) मूँगा।
रक्तचन्दन (न.) लाल चन्दन।
रक्तचूर्ण (न.) सिन्दूर। कुंकू। पिसा हिंगुल।
रक्ततुण्ड (पुं.) तोता।
रक्तदन्तिका (स्त्री.) दुर्गा।
रक्तदृश् (पुं.) कबूतर।
रक्तधातु (पुं.) लोहू। गेरू। ताँबा।
रक्तप (पुं.) राक्षस।
रक्तपित्त (न.) एक प्रकार की बीमारी।
रक्तमोक्षण (न.) लोहू का निकलवाना।
रक्तयष्टि (स्त्री.) मजीठ।
रक्तवर्ग (पुं.) अनार। लाख। हल्दी। सोना।
रक्तवृष्टि (स्त्री.) लोहम की वर्षा।
रक्तसरोरुह (न.) लाल कमल।
रक्तसर्षप (पुं.) राजिका। लाल सरसों। रत्ती।
रक्तसार (न.) लाल चन्दन। अम्लवेत।
रक्तसौगन्धिक (न.) लाल रङ्ग का कमल।
रक्ताक्ष (पुं.) कबूतर। भसा। चकोर। सार। क्रूर।
रक्ताङ्ग (न.) केसर। मङ्गल ग्रह। मूँगा। मजीठ। जिस वस्तु के भीतर लाल रङ्ग हो।
रक्तिका (स्त्री.) घुँघची। रत्ती।
रक्तिमन् (पुं.) ललामी।
रक्तृ (पुं.) रङ्गरेज। रँगइया।
रक्ष् (क्रि.) रक्षा करना। बचाना।
रक्षःसम (न.) राक्षसों का समूह।
रक्षक (त्रि.) रखवाला।
रक्षस् (न.) राक्षस।
रक्षा (स्त्री.) बचाव। लाख। भस्म।
रक्षापत्र (पुं.) भोजपत्र।
रक्षित (स्त्री.) रखवाली किया हुआ।
रक्षिवर्ग (पुं.) रक्षकों का दल।
रक्षोघ्न (न.) राक्षसों को मारने वाला।
रक्षोहन (पुं.) गुग्गुल। सफेद सरसों।
रख् (क्रि.) जाना।
रग् (क्रि.) सन्देह करना।
रघ् (क्रि.) जाना।
रघु (पुं.) सूर्यवंशी राजा दिलीप का पुत्र। यह राजा वंशप्रवर्त्तक है और इसके वंश के रघुवंशी क्षत्रिय अब तक प्रसिद्ध हैं। तेज। हल्का। चञ्चल। उत्क्षिप्त।
रघुनन्दन, **रघुनाथ**, **रघुपति**, **रघुवर**, **रघुश्रेष्ठ**, **रघुसिंह**, **रघूद्वह** (पुं.) रामचन्द्र के लिये ये शब्द विशेष आते हैं। किन्तु रघुकुल के सभी राजाओं को भी इन शब्दों से सम्बोधन होता है।

रघुवंश (पुं.) रघुकुल। कालिदास का बनाया उन्नीस सर्ग का महाकाव्य। रघुराजा का कुल।

रघुवंशतिलक (पुं.) श्रीरामचन्द्र।

रङ्क (त्रि.) कृपण। मन्द। मूर्ख। भिखारी।

रङ्कु (पुं.) हिरन। बारहसिंहा।

रङ्ख् (क्रि.) जाना। डोलना।

रङ्ग (पुं.) वर्ण। अभिनयस्थान। नाट्यस्थान। प्रतिमा बनाने वाला।

रङ्गज (न.) सेन्दूर।

रङ्गजीवक (पुं.) रङ्गइया। रङ्गरेज।

रङ्गद (पुं.) सुहागा।

रङ्गभूमि (स्त्री.) अखाड़ा। नृत्यशाला।

रङ्गमातृ (स्त्री.) लाख। लाल रङ्ग। लाख का कीट।

रङ्गशाला (स्त्री.) नाट्यगृह। नाचघर।

रङ्गाजीव (पुं.) नट। नाटक का पात्र। रङ्ग रेज। चित्रकार।

रङ्गावतारक (पुं.) नृत्य करने वाला।

रङ्घ (क्रि.) शीघ्र जाना।

रङ्घस् (न.) शीघ्र गति। वेग।

रच् (क्रि.) क्रम में लाना। तैयार करना।

रचना (स्त्री.) बनाना। सङ्कलन करना।

रचित (त्रि.) बनाया हुआ। संग्रह किया हुआ।

रजक (पुं.) धोबी। तोता।

रजका (स्त्री.) धोबिन।

रजकी (स्त्री.) धोबिन। रजस्वला स्त्री की तीसरे दिन की संज्ञा विशेष।

रजत (न.) चाँदी का। सफेद। चाँदी। मोती का हार। रक्त। हाथीदाँत। पर्वत।

रजन (न.) किरन। रङ्गना।

रजनी (स्त्री.) रात्रि। हल्दी। लाल रङ्ग। दुर्गा का नाम।

रजनीकर (पुं.) चन्द्रमा।

रजनीचर (पुं.) राक्षस। चोर। चौकीदार।

रजनीजल (न.) बर्फ।

रजनीमुख (न.) प्रदोष। सूर्य्यास्त के बाद एक घण्टे का समय।

रजस्वल (त्रि.) गर्दीला। रजोयुक्त। मस्त। भैंसा।

रजस्वला (स्त्री.) ऋतुमती स्त्री। विवाह योग्य लड़की।

रज्जु (स्त्री.) रस्सी। डोरी। चोटी।

रञ्ज् (क्रि.) प्रेम में पड़ना। चमकना। सन्तुष्ट करना।

रञ्जक (न.) रङ्गना। चित्रण।

रट् (क्रि.) चिल्लाना। चीख मारना।

रटन (न.) रटना।

रटन्ती (स्त्री.) माघकृष्ण चतुर्दशी।

रठ् (क्रि.) बोलना।

रण् (क्रि.) शब्द करना। बजाना। जाना। प्रसन्न करना।

रण (न.) युद्ध। लड़ाई।

रणरणक (पुं.) उद्वेग। घबराहट। बहुत।

रणसङ्कुल (न.) बड़ा भारी युद्ध।

रण्ड (पुं.) वह मनुष्य जो निस्सन्तान मरता है। वृक्ष जिसमें फल न लगे।

रण्डक (पुं.) बेफल का वृक्ष।

रण्डाश्रमिन् (पुं.) स्त्रीहीन पुरुष।

रत (न.) रमण। स्त्री पुरुष का सङ्गम। भोग। गुदा प्रेमासक्त।

रति (स्त्री.) राग। प्रीति। कामदेव की स्त्री।

रतिपति (पुं.) कामदेव।

रत्न (न.) मणि। श्रेष्ठ। हीरा।

रत्नकूट (पुं.) पहाड़।

रत्नगर्भा (पुं.) समुद्र। कुबेर। पृथिवी। अच्छे लड़के वाली स्त्री।

रत्नद्वीप (पुं.न.) द्वीप विशेष।

रत्नपारायण (न.) समस्त रत्नों का पूरा पूरा स्थान।

रत्नमुख्य (न.) हीरा।

रत्नवती (स्त्री.) पृथिवी।

रत्नसानु (पुं.) सुमेरु नामक पहाड़।

रत्नसू (स्त्री.) पृथिवी। रत्नगर्भा।

रत्नाकर (पुं.) समुद्र। रत्नों की खान।

रत्नाभरण (न.) जड़ाऊ गहना।

रत्नावली (स्त्री.) रत्नों की माला। वत्सराज की पत्नी। श्रीहर्ष की बनायी एक नाटिका।

रत्नि (पुं.स्त्री.) कोहनी। माप विशेष।

रथ (पुं.) सवारी। गाड़ी। शरीर। पाँव। बेत।

रथकड्या (स्त्री.) रथों का समूह।

रथकार (पुं.) बढ़ई। सङ्कर जाति विशेष। रथ बनाने वाला।
रथगुप्ति (स्त्री.) रथ का वह काठ या लोहे का भाग जिससे दूसरे रथ की टक्कर बच सके।
रथन्तर (त्रि.) रथ ले जाने वाला।
रथयात्रा (स्त्री.) आषाढ की शुक्ला द्वितीया के दिवस का जगन्नाथ का उत्सव विशेष।
रथाङ्ग (न.) पहिया। चकवा। चक्र।
रथाङ्गपाणि (पुं.) विष्णु।
रथाग्र (पुं.) नरकुल। बेत।
रथारोहिन् (पुं.) रथी। रथ पर बैठ कर लड़ने वाला।
रथिक (पुं.) रथ पर बैठ कर युद्ध करने वाला।
रथोपस्थ (न.) रथ का मध्य भाग।
रथ्य (पुं.) रथ का घोड़ा।
रथ्या (स्त्री.) सड़क।
रद् (क्रि.) चीरना। खोदना। उखाड़ना।
रद (पुं.) दाँत। हाथी का दाँत।
रदच्छद (पुं.) ओठ।
रदन (पुं.) दाँत। विदारणा। फाड़ना।
रदनिन्, **रदिन्** (पुं.) हाथी।
रध् (क्रि.) मारना। पकाना।
रन्तिदेव (पुं.) चन्द्रवंश का एक राजा। कुत्ता। विष्णु।
रन्तु (पुं.) रास्ता नदी।
रन्ध्र (न.) छेद। त्रुटि। दोष। (ज्योतिष में) लग्न से आठवाँ स्थान।
रन्ध्रबभ्रु (पुं.) बिल्ली।
रन्ध्रवंश (पुं.) पोला बाँस।
रप् (क्रि.) स्पष्ट बोलना।
रपस् (न.) दोष। अवगुण। पाप। चोट। हानि।
रभ् (क्रि.) आरम्भ करना। कोरियाना। छाती से लगाना। उत्सुक होना। बे विचारे किसी काम को सहसा करना।
रभस (पुं.) बरजोरी। औत्सुक्य। बड़ी उत्कण्ठा। अनविचारे किसी काम को कर बैठना।
रम् (क्रि.) खेलना। भोग विलास करना।
रम (पुं.) प्रसन्नकर। हर्षप्रद। प्रिय। पति। कामदेव। अशोक वृक्ष।

रमक (पुं.) प्रेमिक।
रमठ (न.) हींग।
रमण (पुं.) प्रेमिक। पति। कामदेव। अरुण। गधा। अण्डकोश। नीम। जघन। मैथुन। नारी।
रमणा (स्त्री.) पत्नी।
रमणी (स्त्री.) सुन्दरी युवती स्त्री।
रमणीय (त्रि.) चित्त प्रसन्न करने वाला।
रमति (पुं.) कामदेव। प्रेमिक। स्वर्ग। समय। काक।
रमल (न.) एक प्रकार का ज्योतिःशास्त्र।
रमा (स्त्री.) लक्ष्मी। सौभाग्य। धन। दीप्ति।
रमाकान्त, **रमानाथ**, **रमापति**, **रमाप्रिय** विष्णु
रमाप्रिय (न.) कमल।
रमावेष्ट (पुं.) तारपीन।
रम्भ् (क्रि.) गौओं का (रम्भना) शब्द करना।
रम्भ (पुं.) गौओं का शब्द। गरजन। आधार। लकड़ी। बाँस। धूलि। दैत्य विशेष।
रम्भा (स्त्री.) केला। गौरी। नलकूबर की स्त्री का नाम। यह अप्सरा स्वर्ग की सब अप्सराओं से सुन्दरता में चढ़ बढ़ कर समझी जाती है। वेश्या। एक प्रकार के चाँवल।
रम्य (त्रि.) प्रसन्नकारक। सुन्दर। प्रिय। जम्बुद्वीप के नौ वर्षों में से एक। चम्पक का पेड़। बक वृक्ष। पटोलमूल।
रम्यपुष्प (पुं.) शाल्मली वृक्ष।
रम्यश्री (पुं.) विष्णु।
रम्या (स्त्री.) रात।
रय् (क्रि.) जाना।
रय (पुं.) नदी की धार। वेग। उत्कण्ठा।
रयि (पुं. न.) जल। सम्पत्ति (वैदिक प्रयोग)।
रयिष्ठ (पुं.) कुबेर। अग्नि। ब्राह्मण।
रल्लक (पुं.) कम्बल। पलक। हिरन।
रव् (क्रि.) जाना।
रव (पुं.) चीख। चिल्लाहट। मिनमिनाना। पक्षियों की बोली। कोलाहल। घण्टा का शब्द। बादल का गरजना।
रवण (पुं.) गर्जन तर्जन। तेज। गरम। चञ्चल। ऊँट। कोयल। पीतल।

रवणक (पुं.) बाँस का बना जल साफ करने का यंत्र।

रवि (पुं.) सूर्य्य। पहाड़। अर्क वृक्ष। बारह की संख्या।

रविकान्त (पुं.) सूर्य्यकान्तमणि।

रविज, **रवितनय**, **रविपुत्र**, **रविसूनु** (पुं.) शनि ग्रह। कर्ण। बालि। वैवस्वत मनु। यम। सुग्रीव।

रविनेत्र (पुं.) विष्णु।

रविप्रिय (न.) लाल कमल का फूल। ताँवा।

रविरत्न (न.) मानक।

रविलोचन (पुं.) विष्णु। शिव।

रविलौह, **रविसंज्ञक** (न.) ताँवा।

रविसंक्रान्ति (स्त्री.) रवि का एक राशि से दूसरी राशि पर जाना।

रवीषु (पुं.) कामदेव। कन्दर्प।

रशना, **रसना** (स्त्री.) रस्सी। लगाम। रास। कमरवन्द। जिह्वा।

रश्मि (पुं.) डोरी। रस्सी। लगाम। रास। अङ्कुश। चावुक। किरन। नापने का फीता। अङ्गुली।

रश्मिकलाप (पुं.) ५४ लर का मोती का हार।

रश्मिमुच (पुं.) सूर्य्य।

रस् (क्रि.) गरजना। कोलाहल करना। गाना। चखना। जानना। प्यार करना।

रस (पुं.) रसा। जल। मदिरा। स्वाद। रस छः प्रकार के वतलाये जाते हैं (यथा-कटु, अम्ल, मधुर, लवण, तिक्त और कषाय)। चटनी। प्रेम। स्नेह। सुन्दरता। भाव। सर्वोत्कृष्ट अंश। वीर्य। पारा। विष। गन्ने का रस। दूध। घी। अमृत। कढ़ी। छः की संख्या। जीभ। सुवर्ण।

रसकर्पूर (न.) पारा आदि विषों के योग से वनाया विष विशेष।

रसघ्न (पुं.) सुहागा।

रसज (न.) रक्त। लोहू। (पुं.) गुड़। मद्यकीट।

रसज्ञा (स्त्री.) जिह्वा।

रसजेजस् (न.) रक्त। लोहू।

रसन (न.) स्वाद। ध्वनि।

रसना (स्त्री.) जिह्वा। रस्सी।

रसराज (पुं.) पारा।

रसवती (स्त्री.) पाकस्थान। रसोईघर।

रसशोधन (न.) सुहागा।

रसा (स्त्री.) पृथिवी। दाख।

रसातल (न.) भूमि के नीचे का सातवाँ परदा।

रसाभास (पुं.) जो यथार्थ न हो पर रस जैसा जान पड़े।

रसायन (न.) माठा। कटि। विष भेद। दवाई।

रसायनफला (स्त्री.) हर्र।

रसाल (न.) आम का वृक्ष। दूर्वा। द्राक्षा। ईख। गेहूँ।

रसाला (स्त्री.) जिह्वा। दही जिसमें शक्कर तथा अन्य मसाले मिले हों। दूर्वा। द्राक्षा।

रसालसा (स्त्री.) नस।

रसास्वादिन् (पुं.) भौंरा।

रसिक (त्रि.) स्वादिष्ठ। सुन्दर। हँसोड़। विषयी। (पुं.) सुन्दरता का भक्त। हाथी। घोड़ा। सारस पक्षी।

रसिका (स्त्री.) गन्ने का रस। जिह्वा। स्त्री के लहँगे का नारा या कमरवन्द।

रसेन्द्र (पुं.) पारा।

रसोत्तम (पुं.) मूँग। दूध।

रस्य (न.) रुधिर। पतला। रसदार।

रस्न (न.) वस्तु। पदार्थ।

रंह् (क्रि.) जाना।

रंहस् (न.) वेग। जोर।

रह् (क्रि.) छोड़ना। त्यागना।

रहण (न.) त्याग। वियोग।

रहस् (न.) एकान्तता। वैराग्य। रहस्य।

रहस्य (त्रि.) छिपाने योग्य। गूढ़। गुप्त।

रहाट (पुं.) सचिव। भूत।

रहित (त्रि.) वर्जित।

रा (क्रि.) देना।

राका (स्त्री.) पूर्णिमा। पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी। हाल की हुई रजस्वला लड़की। खाज। स्वर तथा शूर्पणखा की माता।

राक्षस (पुं.) पिशाच। नन्द के मंत्री का नाम।

राक्षसी (स्त्री.) पिशाचिनी। लङ्का। रात। डाढ़। हाथी का दाँत।

राक्षसेन्द्र (पुं.) रावण।

राक्षा (स्त्री.) लाख।

राख् (क्रि.) सूखाना। सजाना। रोकना। योग्य होना। पर्य्याप्त होना।

राग (पुं.) रङ्गना। लाल रङ्ग। ललामी। प्रेम। अनुराग। उत्कण्ठा। उत्तेजना। आनन्द। क्रोध। सुन्दरता। गाने का राग। शोक। लालच। जातीयता। पारा बनाने की एक प्रक्रिया। राजा। सूर्य। चन्द्रमा।

रागाङ्गी (स्त्री.) मजीठ।

रागिणी (स्त्री.) गीत का अङ्ग। अनुराग करने वाली स्त्री। क्रोधयुक्ता। चाहने वाली।

राघ् (क्रि.) समर्थ होना।

राघ (पुं.) योग्य अथवा सर्वाङ्गीन पूर्ण पुरुष।

राघव (पुं.) रघु की सन्तान, विशेष कर श्रीरामचन्द्र। बड़ी जाति की एक मछली समुद्र।

राङ्कल (पुं.) काँटा।

राङ्कव (न.) हिरन के रोम का बना वस्त्र विशेष।

राज् (क्रि.) चमकना।

राज्, **राजः** } (पुं.) राजा। नरपति। अपनी श्रेणी या जाति में उत्तम।

राजक (न.) राजाओं का समूह। चमकने वाला। (पुं.) छोटा राजा।

राजकल्प (पुं.) नृपतुल्य। राजा के समान।

राजकीय (त्रि.) राजा का।

राजकुमार (पुं.) राजपुत्र। राजा का लड़का।

राजगिरि (पुं.) मगध देश का एक पर्वत।

राजघ् (त्रि.) तेज। राजा को मारने वाला।

राजजम्बु (स्त्री.) पिण्डखजूर।

राजजक्ष्मन्, **राजयक्ष्मन्** } (पुं.) रोग विशेष।

राजतरु (पुं.) कनेर का पेड।

राजताल (पुं.) गुवाक वृक्ष।

राजदन्त (पुं.) ऊपर की पंक्ति के बीच वाले दो दाँत।

राजदेशीय (पुं.) राजा के तुल्य।

राजधर्म्म (पुं.) प्रजापालनादि कर्म्म।

राजधानी (स्त्री.) महानगरी। जहाँ राजा का नित्य निवास हो।

राजन् (पुं.) नृप। राजा। चन्द्रमा। पवित्र। क्षत्रिय। यक्ष। इन्द्र। जब यह शब्द किसी शब्द के पहिले या पीछे आता है, तब यह श्रेष्ठत्व का वाचक होता है। राजमाशः ऋषिराज।

राजनीति (स्त्री.) जिसमें राजा या राज्य सम्बन्धी चाल-चलन आदि का स्पष्ट वर्णन हो। राजाओं और राज-पुरुषों का अनुकरणीय शास्त्र। अथवा ग्रन्थ जैसे "कामन्दक स्मृति" आदि।

राजन्य (पुं.) क्षत्रिय। राजपुत्र। अग्नि। क्षीरिका पेड़।

राजन्यक (न.) क्षत्रियों या राजाओं का समूह।

राजवत् (त्रि.) सुन्दर राजा वाला देश।

राजन्वत् (त्रि.) धार्मिक राजा वाला देश।

राजपथ (पुं.) बड़ा रास्ता।

राजपुत्र (पुं.) राजा का पुत्र। बुध ग्रह। दोगला। रायपूत। क्षत्रिय का पुत्र।

राजभूय (न.) राजा का असाधारण धर्म्म।

राजभोग्य (न.) सुपारी। राजाओं के भोगने योग्य वस्तु।

राजराज (पुं.) सम्राट्। चन्द्रमा।

राजर्षि (पुं.) क्षत्रिय ऋषि।

राजवंश्य (त्रि.) एक जाति विशेष।

राजवर्त्मन् (न.) राजा के करने योग्य काम।

राजवीजिन् (त्रि.) राजा के वंश में उत्पन्न।

राजशाक (पुं.) बथुए का शाक।

राजस् (त्रि.) रजोगुण की प्रेरणा से प्रसिद्धि के लिये किया गया कर्म।

राजसभा (स्त्री.न.) नृप की सभा। राज दरबार।

राजसूय (पुं.) यज्ञ विशेष। जो पृथ्वी के सब राजाओं को जीत लेने का द्योतक है।

राजस्व (न.) राजा का कर।

राजहंस (पुं.) कलहंस। जिनके पैर लाल हों बरन सफेद हो।

राजादन (न.) क्षीरिका। केसु।

राजाम्र (पुं.) आम्र विशेष। बड़ा आम। राय आम।

राजाम्ल (पुं.) खट्टा बेत।

राजार्ह (न.) जम्बू। जावन।

राजि, **राजी** (स्त्री.) कतार। पंक्ति। रेखा। सफेद सरसों।

राजिल (पुं.) जल का साँप।

राजीव (न.) कमल का फूल। हिरन। मच्छ। हाथी। सारस।

राजेन्द्र (पुं.) एक प्रकार का बड़ा राजा। चक्रवर्ती। महाराज।

राज्ञी (स्त्री.) रानी।

राज्य (न.) राजपाट। अमलदारी।

राज्यधुरा (स्त्री.) प्रजापालनादि राज्य का भार।

राज्याङ्ग (न.) राज्य रक्षा के उपाय। ये छः होते हैं, यथा-स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोष, राष्ट्र, दुर्गबल (किले की मजबूती)।

राढ (पुं.) एक देश।

राढा (स्त्री.) एक नगरी का नाम। विषय-वासना।

राणिका (स्त्री.) लगाम।

रातन्ती (स्त्री.) पौषशुक्ला चतुर्दशी का उत्सव विशेष।

राति (त्रि.) उदार। अनुकूल। उद्यत। (स्त्री.) मित्र। भेंट। पुरस्कार।

रात्रि, **रात्री** (स्त्री.) रातः अन्धेरा। हल्दी।

रात्रिकर (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।

रात्रिचर, **रात्रिञ्चर** (पुं.) राक्षस। चोर। चौकीदार। उल्लू चिड़िया।

रात्रिमणि (पुं.) चन्द्रमा। तारा।

रात्रिषासस् (न.) अन्धकार।

रात्रिविगम (पुं.) प्रभात। सबेरा। तड़का।

रात्रिहास (पुं.) सफेद कमल।

रात्रन्ध (त्रि.) रींधा हुआ। सफलमनोरथ। पका हुआ।

राद्धान्त (पुं.) फल। परिणाम। सिद्धान्त।

राध् (क्रि.) मारने की इच्छा करने वाला। पकाना।

राधन (न.) पूरा करना। पाना। प्रसन्न होना। पूजा करना।

राधा (स्त्री.) एक गोपकन्या जो पूर्वजन्म की वृन्दा थी और भगवान् के शाप से दूसरे जन्म में वृषभानु की कन्या हुई थी। जो भगवान् की तीसरी शक्ति लीला देवी का अवतार हैं। जिनको श्रीकृष्ण क्षणमात्र के लिये अपने से जुदा न होने देते थे। गर्ग संहिता में जिनकी कथा है। जो नित्य वैकुण्ठ की नित्या लक्ष्मी और श्रीकृष्णावतार की स्त्री थी। कर्ण की वह माता जिसने उसे पाला था।

राधाकान्त (पुं.) श्रीकृष्ण। राधावल्लभ।

राधातनय (पुं.) कर्ण। जो कुमारी अवस्था में कुन्ती से मन्त्र द्वारा सूर्य के आगमन से उत्पन्न और राधा से रक्षित हुआ था।

राधेय (पुं.) राधा का लड़का। कर्ण।

राभस्य (न.) प्रसन्नता। हर्ष। बरजोर। परब्रह्म।

राम (त्रि.) जिसमें योगिजन रमें वह परब्रह्म। (रमन्ते योगिनो यस्मिन्)। प्रसन्नकर। सुन्दर। काला। सफेद। (पुं.) तीन प्रसिद्ध पुरुषों के नाम जमदग्निपुत्र परशुराम, वसुदेवपुत्र बलराम और दशरथनन्दन श्रीराम।

रामगिरि (पुं.) रामचन्द्र का प्रिय प्रधान पर्वत। चित्रकूट।

रामचन्द्र (पुं.) राम। दशरथनन्दन। जो विष्णु के दश अवतारों में सातवें थे।

रामजननी (स्त्री.) तीनों रामों की मातायें; परशुराम की 'रेणुका' जो जमदग्नि की स्त्री थी, श्रीराम की माता दशरथ की पट्टरानी 'कौसल्या' बलराम की माता वसुदेव की स्त्री 'रोहिणी'।

रामतरुणी (स्त्री.) दो रामों की स्त्रियाँ रामचन्द्र की सीता, बलरामत की रेवती। सेउती का फूल।

रामदूत (पुं.) हनुमान्। रामचन्द्र का दूत।

रामनवमी (पुं.) चैत्रशुक्ला नवमी।

रामभद्र (न.) श्रीराम।

रामवल्लभ (न.) भोजपत्र।

रामसख (पुं.) रामचन्द्र का मित्र सुग्रीव। वह रामभक्त जो सख्य भाव की भक्ति करें।

रामा (स्त्री.) अशोक। गोरोचना। हींग। नारी। नदी। लड़की।

रामायण (न.) वाल्मीकिविरचित ग्रन्थ विशेष जिसमें राम की लीलाओं का वर्णन है। इसी चरित्र के प्रतिपादक अन्यान्य रामायण ग्रन्थ। अध्यात्म, अदभुत, बाल, रामायण आदि।

राव (पुं.) चीख। चिल्लाहट।
रावण (पुं.) देवताआदि को रुलाने वाला, विश्रवा का पुत्र, पुलस्त्य का नाती, कुम्भकर्ण और कुबेर का भाई। राक्षसराज।
रावणगंगा (स्त्री.) लंका की एक नदी जिसको रावण ने बनाया था।
रावणारि (पुं.) श्रीरामचन्द्र।
रावणि (पुं.) रावण के पुत्र मेघनाद आदि। प्रधानतया एक इन्द्रजित ही।
राशि (पुं.) ढेर। समूह।
राशिचक्र (न.) वायु की प्रेरणा से निरन्तर घूमने वाला आकाशस्थित द्वादश राशियों का ज्योतिश्चक्र।
राशिभोग (पुं.) सूर्य्य आदि ग्रहों का निज गति के अनुसार राशियों पर गमन।
राष्ट्र (नं.) देश। राज्य। एक जाति के लोग। जातीय उपद्रव।
राष्ट्रि } **राष्ट्री** } (स्त्री.) शासन करने वाली स्त्री।
राष्ट्रिक (पुं.) किसी राज्य या देश का निवासी या प्रजा।
राष्ट्रिय } **राष्ट्रीय** } (पुं.) किसी राज्य का। राजा। राजा का साला।
रास् (क्रि.) शब्द करना।
रास (पुं.) कोलाहल। शब्द। एक प्रकार का खेल जो श्रीकृष्ण वृन्दावन की गोपिकाओं के साथ किया करते थे। रासक्रीड़ा, जो कामदेव का मद भङ्ग करने और ब्रह्मचर्य का अखण्ड प्रभाव दिखाने के लिये ब्रह्मा की एक रात के बराबर रात कर श्रीकृष्ण ने की थी। सकरी। साँकल।
रासक (नं.) छोटा नाटक।
रासन } **रासनी** } (त्रि.) जिह्वासम्बन्धी। (स्त्री.)
रासभ (पु.) गधा।
रासमण्डल (नं.) रासक्रीड़ा के लिये चक्करदार आवर्त्त। रासक्रीड़ा में खड़े रहने का एक झुकाव।
रासेश्वरी (स्त्री.) राधिका। रासक्रीड़ा की स्वामिनी।
रास्ना (स्त्री.) लता विशेष। कटिसूत्र।
राहित्य (न.) विवर्जित्व। विहीनत्व। शून्यत्व।
राहु (पुं.) विप्रचित्त और सिंहिका का पुत्र। एक दैत्य जो समुद्र मथ कर अमृत निकाला जाने पर विष्णु ने मोहिनी अवतार ले कर देवताओं को अमृत और दैत्यों को सुरा पिलायी थी तब देव पंक्ति में घुस कर अमृत पीने के कारण चक्र से जिसका मस्तक काट कर मस्तक का राहु और धड़ का केतु कर देवताओं में मिला दिया गया। छोड़ना। छोड़ने वाला।
राहुदर्शन (न.) चन्द्र और सूर्य के ग्रहण-समय जिनमें राहु दीखता है।
राहुमूर्द्धभिद् (पुं.) विष्णु।
राहुरत्न (नं.) गोमेद रत्न।
रि (क्रि) जाना। निकालना। देना। अलग करना।
रिक्त (त्रि.) खाली। सूना। निरर्थक।
रिक्ता (त्रि.) कृष्ण और शुल्क पक्षों की ४थी, ९मी और १४शी।
रिक्तभाण्ड (न.) खाली बर्तन।
रिक्तहस्त (न.) खालीहाथ। निर्द्धन।
रिक्थ (न.) मरते समय छोड़ी हुई सम्पत्ति। अप्रतिबन्ध दाय।
रिक्थहारिन् (त्रि.) दायहारी। हिस्सेदार।
रिख् (क्रि.) सरकना। रेंगना।
रिग् (क्रि.) जाना।
रिङ्गण (नं.) सरकना। रेंगना।
रिच् (क्रि.) रीता करना। अलगाना।
रिज् (क्रि.) भूनना। तलना।
रिटि (पुं.) कोयलों की कड़क। काला नोन। एक प्रकार का बाजा। शिव का एक अनुचर।
रिषम (पुं.) प्रेम।
रिपु (पुं.) शत्रु। वैरी। कुण्डली में लग्न से छठवाँ स्थान।
रिपुघातिन् } **रिपुघ्न** } (नं.) वैरी मारने वाला।
रिपुघातिनी (स्त्री.) एक प्रकार की वेल।
रिपुञ्जय (त्रि.) एक राजा। शत्रुविजयी। शूर।

रिप्र (त्रि.) बुरा। दूषित। (न.) पाप। मैल। अपवित्रता।

रिफ् (क्रि.) गाली देना।

रिम्फ (क्रि.) मारना। वध करना।

रिफ्फ (पुं.) लग्न से १२ वाँ स्थान।

रिरंसा (स्त्री.) रमणेच्छा। विहार की लालसा।

रिरी (स्त्री.) पीली पीतल।

रिश् (क्रि.) फाड़ना। खाना। चोटिल करना।

रिरिक्षत् (पुं.) शत्रु।

रिश (पुं.) शत्रु। वैरी।

रिश्य } (पुं.) मृग विशेष।
रिष्य

रिष् (क्रि.) घायल करना। मारना।

रिष (स्त्री.) चोट। हानि।

रिष्ट (नं.) मङ्गल। सम्पत्ति। पाप। हानि। नाश। दुर्भाग्य। चोट। (पुं.) तलवार।

रिष्टि (स्त्री.) तलवार। छेद।

रिष्य (त्रि.) हानिकारक।

री (क्रि.) वहना।

रीठा (स्त्री.) रीठा। करञ्जा।

रीढ़ा (स्त्री.) अवज्ञा।

रीण (त्रि.) वहा हुआ। क्षरित।

रीति (स्त्री.) वहना। धार। नदी। सीमा। प्रथा। चाल। ढङ्ग। पीतल।

रीतिका (स्त्री.) पीतल।

रु (क्रि.) ध्वनि करना। शब्द करना।

रुक्प्रतिक्रिया (स्त्री.) रोग दूर होने का उपाय। दवाई करना। पथ्यकायामादि।

रुक्म (नं.) सोना। धतूरा। लोहा। नाग-केसर।

रुक्मकारक (पुं.) सुनार।

रुक्मरथ (पुं.) द्रोण का नाम।

रुक्मिन् (पुं.) भीष्मक के ज्येष्ठ पुत्र और रुक्मिणी के भाई श्रीकृष्ण के साले का नाम। सुवर्ण का स्वामी।

रुक्मिणी (स्त्री.) भीष्मक की कन्या और श्रीकृष्ण की पटरानी। लक्ष्मी का अवतार यथा- "राघवत्वेऽभवत्सीता रुक्मिणी कृष्णजन्मनि"।

रुक्ष } (त्रि.) रूखा। कठोर। निःस्नेह।
रुक्ष } चमकीला।

रुग्ण (त्रि.) रोगी। टेढ़ा।

रुच् (क्रि.) प्रसन्न होना। चमकना।

रुचक (नं.) अश्वाभरण। माला। सुहागा। नमक। दन्त। कपोत।

रुचा (स्त्री.) प्रकाश । शोभा।

रुचि } (स्त्री.) अनुराग। शोभा। किरण।
रुची } इच्छा। भूख। गोरोचना। (पुं.) प्रजापति विशेष।

रुचिर (त्रि.) मनोहर (नं.) केसर। लौंग।

रुच्य (त्रि.) सुन्दर। पति। कतक वृक्ष।

रुज् (क्रि.) तोड़ना।

रुज् } (स्त्री.) रो। भङ्ग। मेढ़ी। कोढ़।
रुजा }

रुजाकर (नं.) काया। राङ्गा । फल। रोग करने वाला।

रुट् (क्रि.) टक्कर मारना। बचाव करना। चमकना। कष्ट सहना। रोकना। बोलना।

रुठ् (क्रि.) देखो रुट्।

रुणस्करा (स्त्री.) सीधी गौ, जो सहज मे दुह ली जाय।

रुण्ड (पुं.) कबन्ध। मस्तकशून्य शरीर।

रुत (न.) रव। पशु और पक्षी आदि की बोली।

रुदित (नं.) चिल्लाना। रोना।

रुद्ध (त्रि.) रोका गया । बन्द किया हुआ।

रुद्र (पुं.) भयानाक। बड़ा। प्रशंस्य। ग्यारह की संख्या। अग्नि। शिव।

रुद्रज (पुं.) रुद्र से उपजा। पारा। गणेश। कार्तिकेय।

रुद्रजटा (स्त्री.) शंकर के सिर के लम्बे केश 'कपर्दर्द'। लता विशेष।

रुद्रप्रिया (स्त्री.) हरीतकी। दुर्गा। पार्वती!

रुद्रविंशति (स्त्री.) प्रभव आदि साठ वर्षों में से अन्त की वीसी।

रुद्रसौवर्णि (पुं.) चौदह मनुओं में से बारहवाँ मनु।

रुद्राक्रीड़ (नं.) शिव जी का विहारस्थान। श्मशान। मरघट।

रुद्राक्ष (पुं.) एक वृक्ष । जिसकी माला शैव पहनते हैं।

रुद्राणी (स्त्री.) पार्वती। ग्यारह वर्ष की लड़की। रुद्र की वे ग्यारह स्त्रियाँ जो रुद्र ने उत्पन्न होते ही ब्रह्मा के सन्मुख रो दिया और ब्रह्मा ने समझा कर स्थान और स्त्रियाँ दीं, यथ- "धी, वृत्ति, उशना, उमा, नियुत्सर्पि, इला, अम्बिका, इरावती, सुधा, दीक्षा और रुद्राणी"।

रुद्रारि (पुं.) महादेव का शत्रु। कामदेव। त्रिपुरासुर।

रुद्रावास (पुं.) कैलास। काशी। श्मशान।

रुध् (क्रि.) रोकना। पकड़ना। घेरना। छिपाना। पीड़ित करना।

रुधिरम् (नं.) लाल रङ्ग। मङ्गल ग्रह। रक्त।

रुधिरपाथिन् (पुं.) राक्षस विशेष।

रुधिराख्य (पुं.) बहुमूल्य रत्न विशेष।

रुधिरानम् (नं.) मङ्गल की पाँच गतियों में से एक।

रुप् (क्रि.) घबड़ाना। बिगाड़ना। बड़ी पीड़ा सहन करना।

रुमा (स्त्री.) सुग्रीव की स्त्री। लवण राक्षस का स्थान। एक देश।

रुम्र (त्रि) चमकीला।

रुरु (पुं.) मृग विशेष।

रुवु, रुवुक, रुवूक (पुं.) अण्डउआ का पेड़।

रुश् (क्रि.) चिड़ाना। वध करना।

रुष् (क्रि.) क्रुद्ध होना। चिड़ना।

रुषा (स्त्री.) क्रोध।

रुषित, रुष्ट (त्रि.) क्रुद्ध। रूठा हुआ।

रुष्टि (स्त्री.) क्रोध। नाराजगी।

रुह् (क्रि.) उपजना। निकलना।

रुह (त्रि.) उपजा। (स्त्री.) दूर्वा।

रुहन् (पुं.) पौधा। पेड़।

रूक्ष् (क्रि.) रूखा होना। कठोर होना।

रूक्ष (त्रि.) रूखा। जो चिकना न हो, पेड़ (स्त्री.) दन्ती वृक्ष।

रूक्षगन्ध (पुं.) गुग्गुल।

रूढ (त्रि.) उत्पन्न हुआ।

रूढि (स्त्री.) जन्म। प्रसिद्धि।

रूप (क्रि.) आकार बनाना।

रूपम् (न.) आकार। स्वाभाव। सौन्दर्य। पशु। नाम। शब्द। जाति। समानता। बानगी। १ की संख्या। रूपक।

रूपक (न.) अभिनय विशेष। आकार वाला। अर्थ अलंकार विशेष। तीन रत्ती की तौल। चाँदी।

रूपधारिन् (त्रि.) रूप वाला। सुन्दर। दूसरा वेष धारण करने वाला। नट।

रूपवत् (त्रि.) सौन्दर्य युक्त।

रूपाजीव (स्त्री.) वेश्या। रण्डी। बहुरूपिया।

रूप्य (न.) चाँदी। रुपया। (पुं.) सुन्दर। चाँदी का सिक्का।

रूप्याध्यक्ष (पुं.) खजाञ्ची।

रूवुक (पुं.) एरण्ड वृक्ष।

रूष् (क्रि.) खजाना। काँपना।

रूषित (त्रि.) सजा हुआ। मिला हुआ। ढका हुआ। फैला हुआ। रूखा बनाया हुआ। सुवासित।

रे (अव्य.) तिरस्कार-युक्त सम्बोधन में प्रयुक्त शब्द विशेष। इसका प्रयोग अपने से नीच को बुलाने या डाँटने के समय होता है।

रेक् (क्रि.) सन्देह करना।

रेक (पुं.) संदेह। जातिच्युत पुरुष। नीच जाति का पुरुष। रीता। खुलना। कोहरा।

रेकणस् (न.) सोना। (वैदिक प्रयोग में) मरे हुए की सम्पत्ति।

रेखा (स्त्री.) लकीर। पूर्णता। छल।

रेखागणित (न.) एक विद्या जिसमें रेखा और उनसे बने अनेक प्रकार के आकारों का वर्णन है और उनके बनाने की प्रक्रिया सिद्ध की गयी है।

रेचक (न.) स्वांस लेना। दस्तावर। पिचकारी। सोरा।

रेज् (क्रि.) चमकना। हिलाना।

रेज् (पुं.) अग्नि।

रेट् (क्रि.) बोलना। माँगना। प्रार्थना करना।

रेणु (पुं.स्त्री.) पराग। धूलि।

रेणुका (स्त्री.) परशुराम की माता। जमदग्नि की स्त्री। रेणु की काया।

रेणुकासुत (पुं.) परशुराम। रेणुका का पुत्र।

रेणुरूषित (पुं.) धूलिधूसरित। गधा।
रेतस् (न.) वीर्य्य। (वैदिक प्रयोग में) प्रवाह। धार। सन्तति। सन्तान। पारा। पाप।
रेत () रेतनम् (न.) वीर्य्य। धातु।
रेत्य (न.) धातु विशेष।
रेत्र (न.) वीर्य्य। पारा। सोरा। सुवासित चूर्ण।
रेपृ (क्रि.) जाना। ध्वानि करना।
रेपस् (त्रि.) नीचा। दुष्ट। निष्ठुर। जंगली। (न.) धब्बा। दोष। पाप।
रेफ (पुं.) रकार का चिह्न। कुत्सित। दुष्ट। कृपण।
रेवत (पुं.) जम्बीर। नीबू। बलराम के ससुर।
रेवती (स्त्री.) बलराम की स्त्री। अश्विनी से सत्ताइसवाँ नक्षत्र।
रेवतीरमणः (पुं.) बलराम।
रेवा (स्त्री.) रति का नाम। नर्म्मदा नदी।
रेषृ (क्रि.) हिनहिनाना। चीख मारना।
रैष (क्रि.) शब्द करना। भौकना।
रै (पुं.) धन। सम्पत्ति। सोना। शब्द विशेष।
रैवत (पुं.) शिव का नाम। शनि का नाम। स्वर्णालु वृक्ष। द्वारका के समीप का एक पहाड़।
रोक (न.) छिद्र। नौका। चमक। नकद। रुपया देकर क्रय करना। रोकड़ का भुगतान।
रोग (पुं.) बीमारी।
रोगघ्न (न.) दवा। वैद्य। आयुर्वेद शास्त्र। मन्त्र तन्त्रादि।
रोगराज (पुं.) क्षयरोग। राजयक्ष्मा। राजरोग।
रोगलक्षण (न.) बीमारी पहिचानने के चिह्न।
रोगह (न.) दवा। वैद्य। मन्त्रानुष्ठानादि।
रोगहारिन् (पुं.) वैद्य। चिकित्सक। मान्त्रिक।
रोगिन् (त्रि.) बीमार।
रोच (त्रि.) चमकीला। प्रकाश युक्त।
रोचक (त्रि.) मन को भावने वाला। प्रसन्नकर। भूख बढ़ाने और बल लाने वाली दवा। शीशे को या बनावटी झूठे गहनों को बनाने वाला। केला।
रोचनक (पुं.) नीबू। जम्बीर।
रोचना (स्त्री.) गोरोचन। आमलकी। सुन्दरी स्त्री। गन्धद्रव्य विशेष। लाल कमल का फूल। काले रंग का शाल्मली।
रोचमान (पुं.) घोड़े के अयाल। चमकने वाला। रुचि युक्त। सुन्दर।
रोचिष्णु (त्रि.) चमकने वाला।
रोचिस् (न.) प्रभा। लाट।
रोटिका (स्त्री.) रोटी।
रोड् (क्रि.) अनादर करना।
रोड (त्रि.) तृप्त।
रोदनम् (न.) चिल्लाना।
रोदस् (न.) स्वर्ग और पृथिवी।
रोध (पुं.) रोक। ठहराव। छिपाव। परदा। किनारा।
रोधन (त्रि.) रोक। (न.) प्रतिबन्ध।
रोधस् (न.) नदी का तट या बाँध।
रोधसवका, रोधसवती (स्त्री.) तेज़ बहने वाली नदी।
रोध्र (न.) अपराध। लोध का पेड़।
रोप (पुं.) "पेड़" लगाना। बोना। (न.) छेद।
रोपण (न.) बीज बोना। किसी वस्तु का असली रूप छिपा कर उसे अन्यथा बतलाना। पूरना।
रोपित (त्रि.) लगाया गया।
रोमक (पुं.) रूम नामी नगर। (न.) पांशु लवण।
रोमकूप (पुं.) रोमों के छिद्र।
रोमन् (न.) रोयें।
रोमन्थ (पुं.) जुगाली करना।
रोमभूमि (स्त्री.) चमड़ा।
रोमलता (स्त्री.) रोमों की पंक्ति। रोमराजि।
रोमविकारः (पुं.) रोमों का निकलना।
रोमश (त्रि.) मेढ़ा। सुअर।
रोमहर्ष (पुं.) रोमाञ्च।
रोमाञ्चित (त्रि.) जिसके रोंगटे खड़े हो गये हो।
रोमाली (स्त्री.) रोमावली। नाभि के ऊपर रोम की पंक्ति।
रोमावलि } (स्त्री.) देखो रोमाली।
रोमावली } (स्त्री.) देखो रोमाली।
रोमोद्गम (पुं.)रोमों का निकलना।
रोमन्थ (पुं.) रोंथ करना। बार बार दुहराना।
रोरुदा (स्त्री.) अतिशय रोदन।
रोलम्ब (पुं.) भौंरा।
रोष (पुं.) क्रोध। रोष।

रोषण (पुं.) क्रोध वाला। कसौटी। पारा। नुनिहा। ऊसर भूमि।
रोह (पुं.) अंकुर। चढ़ने वाला।
रोहण (पुं.) पहाड़। चढ़ाव। लङ्का के एक पर्वत का नाम। वीर्य।
रोहणद्रुम (पुं.) चन्दन का पेड़।
रोहि (पुं.) बीज। वृक्ष। धार्मिक पुरुष। मृगभेद।
रोहिण (न.) रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न। विष्णु। वट। रोहितक। भूतृण आदि वृक्षों के नाम।
रोहिणका (पुं.) लालमुख वाली स्त्री। गले की सूजन
रोहिणी (स्त्री.) लाल रंग की गौ। दक्ष की कन्या। नक्षत्र विशेष। बलराम की जननी और वसुदेव की भार्या। प्रथम बार हुई ऋतुमती लड़की। बिजली। गले की सूज। मजीठ। हर्र।
रोहिणीपति (पुं.) वासुदेव। चन्द्रमा।
रोहिणीव्रत (न.) जन्माष्टमी। श्रीकृष्णजयन्ती।
रोहित् (पुं.) सूर्य। रोहू मछली। (स्त्री.) लाल घोड़ी। हिरनी।
रोहित (त्रि.) लाल। लाल रंग का। (पुं.) लाल रंग। लोमड़ी। मृग विशेष। लाल घोड़ा। हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम। मछली। (न.) लोहू। केसर। इन्द्रधनुष।
रोहिताश्व (पुं.) अग्नि।
रोहिन् (त्रि.) लम्बा। निकला हुआ। बढ़ा हुआ। (पुं.) रोहितक। वट। अश्वत्थ आदि वृक्ष।
रोहिष (पुं.) एक प्रकार की मछली। एक प्रकार का हिरन।
रौक्म } (त्रि.) सुनहला।
रौक्मी } (स्त्री.)
रौक्ष्य (न.) कठोर। कड़ा। रूखापन। निठुरपन।
रौचनिक } (त्रि.)
रौचनिकी } (स्त्री) कुछ कुछ पीला।
रौच्य (पुं.) बिल्व वृक्ष का डण्डा। बिल्व वृक्ष की लकड़ी का दण्ड रखने वाला। सन्यासी।
रौट्, रौड् (क्रि.) अनादर करना।
रौद्र (न.) आठ रसों में से एक। रुद्र देवता का। गुस्सैल। सूर्य्यताप। भयानक। विपदजनक। (पुं.) रुद्र का पूजने वाला। गर्मी। क्रोध। व्यसन। यम। जाड़ा।
रौद्रकर्मन् (त्रि.) भयानक काम करने वाला। साहसी। अविचारी।
रौद्रदशन (त्रि.) भयंकर रूप वाला। कुरूप।
रौधिर (त्रि.) खूनी। रुधिर से उत्पन्न।
रौप्य (त्रि.) चाँदी। चाँदी का बना। चाँदी जैसा। (न.) चाँदी।
रौम (न.) साँभर नोन।
रौरव (पुं.) नरक विशेष। जंगली। (त्रि.) रुरु के चर्म का बना। भयानक। बेईमान। छली।
रौहिण (त्रि.) रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न। (पुं.) चन्दन का वृक्ष। बड़ का वृक्ष। अग्नि।
रौहिणेय (पुं.) बछड़ा। बलराम। बुध ग्रह। शनि ग्रह। (न.) मरकत मणि।
रौहिष् (पुं.) मृग विशेष। तृण विशेष। लता। दूर्वा घास विशेष। मछली भेद।

ल

ल (पुं.) इन्द्र। छन्दशास्त्र में आठ गणों में से एक गण। व्याकरण में समय विभाग के लिए पाणिनि ने दस लकार माने हैं, जैसे- 'लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ् और लृङ्।
लक् (क्रि.) स्वाद लेना। चखना। पाना।
लक (पुं.) लचकः () वृक्ष विशेष। मदार का पेड़ या उसका फल।
लकट (पुं.) छड़ी। लकड़ी।
लक्तक (पु.) लाख। चिथड़ा। फटा कपड़ा।
लक्तिका (स्त्री.) छिपकली। विस्तुइया।
लक्ष् (क्रि.) देखना। पहिचानना। चिह्न करना।
लक्ष (न.) एक लाख। चिह्न। दिखावट। छल। तीर का चिह्न।
लक्षक (त्रि.) चिह्न। लक्षण से अर्थ को बतलाने वाला।
लक्षण (न.) चिह्न। पहिचान। लक्ष्मण का नाम। परिभाषा।
लक्षित (त्रि.) अनुमान किया गया। जाना हुआ।
लक्ष्मन् (न.) चिह्न या दाग या लाञ्छन जो सदा के लिए हो जाय। सारस पक्षी। प्रधान।

लक्ष्मण (पुं.) दशरथ के पुत्र का नाम। सुमित्रानन्दन। सौमित्रि। (ा) एक औषधि जिसको नव वन्ध्या को चतुर्थ दिन नाक में भरने से गर्भाधान होता है।

लक्ष्मी (स्त्री.) विष्णुपत्नी। हल्दी। शोभा। धन। मोती। वृक्ष विशेष। सुन्दरता। चन्द्र की ग्यारहवीं कला।

लक्ष्मीकान्त (पुं.) विष्णु। राजा।

लक्ष्मीगृह (न.) लाल कमल का फूल।

लक्ष्मीनाथ, **लक्ष्मीपति** } (पु.) विष्णु। राजा।

लक्ष्मीपुत्र (पुं.) घोड़ा। कुश और लव का नाम। कामदेव।

लक्ष्मीपुष्प (पुं.) माणिक।

लक्ष्मीपूजन (न.), **लक्ष्मीपूजा** (स्त्री.) } लक्ष्मी के पूजन का समय अर्थात् कार्तिकी अमावस की रात। दीपमालिका। दीवाली।

लक्ष्मीफल (पुं.) बिल्वफल। बेला। नारियल

लक्ष्मीरमण (पुं.) विष्णु।

लक्ष्मीवत् (पुं.) शोभा वाला। कटहर का पेड़। भाग्यवान्। धनी।

लक्ष्मीवसति (स्त्री.) लाल कमल।

लक्ष्मीवार (पुं.) गुरुवार।

लक्ष्मीवेष्ट (पुं.) तारपीन।

लक्ष्मीसहज , लक्ष्मीसहोदर (पुं.) लक्ष्मी का प्यारा। चन्द्रमा। इन्द्र का घोड़ा। उच्चैः- श्रवस्। पाञ्चजन्य शङ्ख। समुद्रमन्थन के समय निकलने वाले, कौस्तुभ मणि। पारिजात वृक्षं। धन्वन्तरि। ऐरावत हाथी (ा) मदिरा। सुधा (अमृत)। कामधेनु।

लक्ष्य (न.) उद्देश्य। अनुमान योग्य। जानने योग्य। निशाना लगाने योग्य।

लक्ष्यभेद (पुं.) निशाना मारना। उद्देश्य में भेद। मतभेद।

लक्ष्यवेध (पुं.) निशाना मारना। उद्देश्य की सिद्धि।

लक्ष्यवीथि (स्त्री.) ब्रह्मलोक का मार्ग। देखकर चलने के योग्य मार्ग जैसे बदरी नारायण का रास्ता आदि।

लक्ष्यहन् (पुं.) तीर। उद्देश्यभ्रष्ट। बे परवाह।

लख्, लङ्ख् (क्रि.) जाना।

लग् (क्रि.) चिपकना। लगना। मिलना। छूना। रोकना। चखना। पाना।

लगित (त्रि.) लगा हुआ। मिला हुआ। प्राप्त।

लग्न (न.) मेषादि राशियों का उदय। (त्रि.) लज्जित। लगा हुआ। स्तुतिपाठ करने वाला। जामिन।

लग्नक (पुं.) जामिनी। जमानत। प्रतिभू।

लग्निका (स्त्री.) नग्निका का अशुद्ध रूप। अदृष्टरजस्क। स्त्री।

लगड (त्रि.) प्यारा। सुन्दर।

लगुड लगुर लगुल (पुं.) छड़ी। डण्डा। कुबड़ी।

लघ् (क्रि) कुछ न खाना। मर्याद लाँघ कर जाना।

लघट् (पुं.) हवा। पवन।

लघिमन् (पुं.) हल्कापन। ईश्वर का एक प्रकार का ऐश्वर्य। लाघव।

लघिष्ठ (त्रि.) अत्यन्त हल्का।

लघु (त्रि.) हल्का। थोड़ा। छोटा। अकिञ्चन। नीच। निर्बल। अभागा। चञ्चल। तेज। सहज। (छन्द में) लघु। कोमल। अनुकूल। साफ। अवस्था में छोटा। (पुं.) हस्त, पुष्य और अश्विनी नक्षत्रों के नाम।

लघ्वी (स्त्री.) बड़ी कोमल प्रकृति स्त्री। गाड़ी। लघु शब्द का स्त्रीवाचक अर्थ।

लङ्का (स्त्री.) कुबेर की प्रधान राजधानी जिसको रावण ने हठ से छिन लिया था, और जहाँ रावण मारा गया था। रण्डी। वेश्या। डाली। शाखा। अन्न विशेष।

लङ्काधिप, **लङ्काधिपति** } (पुं.) कुबेर, रावण। (पुं.) विभीषण।

लङ्कादाहिन् (पु.) हनुमान्।

लङ्केश (पुं.) रावण और उसका भाई

लङ्केश्वर विभषण।

लङ्कनी (स्त्री.) लगान।

लङ्ग् (क्रि.) जाना। लङ्गड़ाना।

लङ्ग (पुं.) लँगड़ापन। सम्मिलनी। प्रेमिक। प्रेमी।

लङ्गक (पुं.) प्रेमी। जार।

लङ्गल (न.) हल।
लङ्गूल (न.) पूँछ।
लङ्घ्(क्रि.) उछलना। फलाङ्ग मार कर जाना। कूदना। चढ़ना। आर पार होना। अनाहार रहना। सुखा। कम करना। पकड़ना।
लङ्घन (न.) निराहार। उपवास। फाँका। कड़ाका। उछलना। चढ़ना।
लछ् (क्रि.) चिह्न करना।
लज् (क्रि.) शर्मिन्दा होना। कलङ्कित करना। दोषारोपण करना। चमकना। ढकना। छिपाना।
लज्ज् (क्रि.) लज्जित होना।
लज्जका (स्त्री.) बनैले कपास का पेड़।
लज्जरी (स्त्री.) एक प्रकार का सफेद पौधा।
लज्जा (स्त्री.) शर्म। लाज। लाजवन्ती बेल।
लज्जालु (स्त्री.) शर्मीला। लजीला।
लज्जाशील (त्रि.) लजीला। लजाने वाला।
लज्जित (पुं.) ब्रीडित। शरमाया हुआ। लजाया हुआ।
लञ्ज् (क्रि.) दोष लगाना। भूनना। घायल करना। मार डालना। देना। बोलना। दृढ़ होना। रहना। चमकना। प्रकट होना।
लञ्जा (स्त्री.) घास। व्यभिचारिणी। लक्ष्मी। निद्रा।
लञ्जिका (स्त्री.) रणडी। वेश्या।
लट् (क्रि.) लड़कपन करना। तुतलाना। चिल्लाना। रोना।
लट् पाणिनि का व्यवहृत वर्त्तमान लकार के लिये शब्द विशेष।
लट (पुं.) मूर्ख। दोष। चोर। डाकू।
लटपर्ण (पुं.) दालचीनी।
लट्ट (पुं.) बदमाश गुण्डा।
लठ (पुं.) घोड़ा। नाचने वाला बालक। राग विशेष। एक जाति का नाम। पक्षी विशेष। गौरीला। बाजा। खेल। असली स्त्री।
लड् (क्रि.) खेलना। फेंकना। उछालना। जिह्वा को ऐंठना। छेड़ छाड़ करना। थपथपाना।
लडह (त्रि.) सुन्दर।
लड्डु, **लड्डुक** } (पुं.) लड्डू। लडुआ। मिष्ठान्न विशेष।
लण्ड् (क्रि.) ऊपर उछालना। बोलना।
लण्ड (न.) विष्ठा। पाखाना। गू।
लण्ड्र (पुं.) लण्डन नगर।
लताङ्गु (स्त्री.) बेल। शाखा। प्रियङ्गु/माधवी। मुश्क। चाबुक की रस्सी। माला का डोरा। स्त्री। दूर्वा घास।
लतार्क (पुं.) हरा प्याज़।
लताजिह्व, लतारसन (पुं.) सर्प। साँप।
लतातरु (पुं.) साल का पेड़। ताल वृक्ष। नारंगी का पेड़।
लतापनस (पुं.) खरबूजा। तरबूज़।
लतापर्ण (पुं.) विष्णु।
लताभवन (न.) लतामण्डप।
लतामणि (पुं.) मूङ्गा।
लतायष्टि (स्त्री.) मजीठ।
लतावृक्ष (पुं.) नारियल का पेड़।
लतावेष्ट (पुं.) एक प्रकार के मैथुन की विधि।
लतावेष्टन, **लतावेष्टितक** } (न.) एक प्रकार से छाती से लगाना
लतिका (स्त्री.) छोटी बेल।
लत्तिका (स्त्री.) एक प्रकार की छोटी छिपकली।
लप् (क्रि.) बोलना। बातचीत करना। तुतलाना। काना फूँसी करना। कराहना।
लपन (न.) मुख। बातचीत।
लपित (त्रि.) कथित। कहा गया।
लब् (क्रि) पकड़ना। सहारा देना।
लब्ध (त्रि.) प्राप्त। पाया।
लब्धवर्ण (पुं.) पण्डित। चतुर।
लभ् (क्रि.) पाना। रखना। लेना। पकड़ना। मिलना। फिर से पाना। उगाहना। जानना। सीखना।
लमक (पुं.) जार। प्रेमी। विषयी।
लम्पट (पुं.) विषयी। व्यभिचारी। लबार।
लम्ब (पुं.) नाचने वाला। सुन्दर। घूँस। अंकगणित के त्रिभुज आदि क्षेत्र। (त्रि.) लम्बा। लटका हुआ।
लम्बकर्ण (पुं.) बकरा। हाथी। राक्षस। बाज। अङ्कोट वृक्ष। गधा।
लम्बकेश (त्रि.) लम्बे बालों वाला। (पुं.) कुश का आसन।

लम्बबीजा (स्त्री.) मदिरा। लङ्का में उत्पन्न। लम्बे बीज वाली।
लम्बोदर (पुं.) गणेश जी। बड़े पेट वाला। बहुत खाने वाला।
लय (क्रि.) जाना।
लय (पुं.) विनाश। गीत। काल। ईश्वर।
लयपुत्री (स्त्री.) नाटक की एक पात्री। नटी। नाचने वाली स्त्री।
लर्च् (क्रि.) जाना।
लल् (क्रि.) चाहना। खेलना। थपथपाना।
लल (त्रि.) खिलाड़ी। इच्छा करने वाला।
ललजिह्व (पुं.) हिल रही जीभ वाला। कुत्ता। ऊँट। हिंस्रक जन्तु।
ललन्तिका (स्त्री.) लम्बी गले की माला। छिपकली या गिरगिट।
ललना (पुं.) महिला। स्त्री। नारी।
ललनाप्रिय (पुं.) कदम्ब वृक्ष। स्त्रियों का प्यारा।
ललाक (पुं.) लिङ्ग। पुरुष चिह्न।
ललाट (न.) माथा। कपाल।
ललाटन्तप (पुं.) सूर्य्य।
ललाटिका (स्त्री.) माथे का भूषण।
ललाम (त्रि.) सुन्दर। प्यारी। मनोहारिणी। माथे की सुन्दरता बढ़ाने के लिए कृत्रिम चिह्न विशेष। (न.) माथे का आभूषण। सर्वोत्तम कोई वस्तु। चिह्न। ध्वजा। पंक्ति। रेखा। पूँछ। अयाल। गौरव। सौन्दर्य। सींग। (पुं.) घोड़ा।
ललित (न.) सुन्दर। चाहा हुआ।
ललिता (स्त्री.) स्त्री। कस्तूरी। दुर्गा का एक रूप।
ललितापञ्चमी (स्त्री.) आश्विनशुल्का पञ्चमी।
ललितासप्तमी (स्त्री.) भाद्रशुल्का सप्तमी।
लव (पुं.) छेदन। लेश। श्रीरामचन्द्र के एक पुत्र का नाम। परिमाण विशेष। गौ की पूँछ के बाल। हानि। लौंग। सुपारी।
लवङ्ग (नं.) लौंग का पेड़ या फल।
लवङ्गकलिका (स्त्री.) लौंग। लौंग की कली जो आगे चौकोनी रहती है।
लवङ्गक (नं.) लौंग।
लवण (त्रि.) नमकीन। प्यारा। सुन्दर। (पुं.) नमकीन स्वाद। खारी पानी का समुद्र। एक असुर का नाम जिसे शत्रुघ्न ने मारा था। नरक विशेष। (न.) नमक। नोन। समुद्री नमक।
लवणक्षार (पुं.) खार विशेष।
लवली (स्त्री.) एक प्रकार की बेल।
लवाक (पुं.) हँसिया। काटने का औजार।
लवि (त्रि.) तेज धार वाला।
लवित्र (नं.) हँसिया।
लशुन / **लशून** } (पुं. नं.) लहसन।
लष् (क्रि.) इच्छा करना। चाहना।
लष्व (पुं.) नाटक का पात्र। नाचने वाला।
लस् (क्रि.) चमकना। खेलना।
लसिका (स्त्री.) लार। थूक।
ललित (स्त्री.) खेला हुआ। प्रकट हुआ।
लसीका (स्त्री.) लार। गन्ने का रस।
लस्त (त्रि.) चिपटाया हुआ। कोरियाया हुआ। पटु। चतुर।
लस्जू (क्रि.) लजाना।
लस्तक (पुं.) धनुष का वह हिस्सा जो हाथ से थामा जाता है।
लस्तकिन् (पुं.) धनुष
लहरि / **लहरी** } (स्त्री.) लहर। समुद्र की बड़ी लहर।
ला (क्रि.) पकड़ना।
लाकुटिक (त्रि.) लण्ठ या डण्डा बाँधे हुए। (पुं.) चौकीदार।
लाक्षकी (स्त्री.) शीतला।
लाक्षणिक (त्रि.) लक्षण युक्त। चिह्न वाला।
लाक्षण्य (त्रि.) भले बुरे लक्षणों को जानने वाला।
लाक्षा (स्त्री.) लाख।
लाक्षारस (पुं.) लाख का रस। अलक्तरा। लाख का रङ्ग।
लाख् (क्रि.) सुखाना। सजाना। देना। हटाना। पर्य्याप्त होना।
लाघ् (क्रि.) समान या बराबर होना। पूर पाड़ना।
लाघव (नं.) हलकापन। अल्पत्व। अविचारत्व। अपमान। शीघ्रता। वेग। स्वास्थ्य। उद्यतता।

लाङ्गल (नं.) हल। ताड़ वृक्ष। पुष्पविशेष। चन्द्रमा के विशेष दर्शन। शहतीर।

लाङ्गलदण्ड (पुं.) हलके मध्य में लगा हुआ लकड़ी का डण्डा।

लाङ्गलपद्धति (स्त्री.) रेखा। डण्डी। सीता।

लाङ्गलिन् (पुं.) बलराम। नारियल का पेड़। सर्प।

लाङ्गली (स्त्री.) नारियल का पेड़।

लाङ्गूल (नं.) पूँछ।

लाङ्गूलम् (नं.) पूँछ। अनाज की खत्ती।

लाङ्गूलिन् (पुं.) बन्दर। लङ्गूर।

लाज् (क्रि.) झिड़कना। भूनना। तलना।

लाञ्छ् (क्रि.) पहिचान के लिये चिह्नित करना। सजाना।

लाञ्छन (नं.) चिह्न। नाम। नित्य चिह्न जो कई स्त्री पुरुष आदि के देह में होता है।

लाट (पुं.) देश विशेष। पुराने फटे कपड़े। लड़कों जैसी भाषा। विद्वान्। पुरुष।

लाटानुप्रास (पुं.) अलंकार में शब्द सम्बन्धी। अनुप्रास।

लाभ (पुं.) नफा। ब्याज।

लालन (नं.) प्रेम के साथ पालना। लाड़ लड़ाना।

लालसा (स्त्री.) चाहना। गर्भ वाली स्त्री की चाहना। गर्भचिह्न।

लाला (स्त्री.) लार।

लालाटिक (पुं.) अपने मालिक के भाग्य पर जीने वाला। काम न कर सकने वाला। भाग्याधीन।

लालित्य (नं.) सौन्दर्य।

लाव (पुं.) एक प्रकार का पक्षी।

लावण (नं.) नमकीन।

लावणिक (नं.) नमक बेचने वाला। नमक।

लावण्य (नं.) सलोनापन। सौन्दर्य विशेष।

लासिका (स्त्री.) नाचने वाली।

लास्यम् (नं.) बाजा। नाच। गीत।

लिकुच (पुं.) मन्दार का पेड़।

लिक्षा / लिक्षा } (स्त्री.) जुए का अण्डा। माप विशेष। जो अक्सर स्त्रियों के बालों में जूँ की जाति की छोटी छोटी पड़ जाती हैं।

लिख् (क्रि.) लिखना।

लिखन (नं.) लेखन। लिपि। लेख।

लिखित (नं.) लिखा हुआ। एक मुनि का नाम।

लिगु (क्रि.) जाना।

लिङ्ग (पुं.) पुरुषत्व का प्रधान चिह्न। पुरुष, स्त्री और नपुंसक का भेददर्शक चिह्न। समान्य चिह्न। अनुमान सिद्धि का कारण। प्रकट। शब्द में स्थित याथार्थ्य दर्शक धर्म। अर्थप्रकाशन का सामर्थ्य। शिवजी की मूर्त्ति। व्याप्य।

लिङ्गवर्धिनी (स्त्री.) अपामार्ग।

लिङ्गवृत्ति (पुं.) कपटी या दाम्भिक सन्यासी।

लिङ्गिन् (त्रि.) चिह्न वाला।

लिप् (क्रि.) लीपना।

लिपि (स्त्री.) लेख।

लिपी (स्त्री.) लेख।

लिपिकर / लिपिकार } (पुं.) लेखक। लिखने वाला।

लिप्त (त्रि.) लिपटा हुआ। सना हुआ। एक कला। विषमिश्रित (तीर का अग्रभाग)। खाया हुआ। मिला हुआ।

लिप्तक (पुं.) विष में बुझा तीर।

लिप्सा (स्त्री.) चाहा। लाभ की चाहना।

लिम्पाक (पुं.) वृक्ष विशेष। गधा।

लिह् (क्रि.) चाटना। चखना।

ली (क्रि.) जुड़ना। मिलना। टिघलना।

लीढ़ (स्त्री.) चाटा गया। चक्खा गया।

लीन (त्रि.) डूबा हुआ। निमग्न। लगा हुआ।

लीला (स्त्री.) केलि। भोग विलास।

लीलावती (स्त्री.) भास्कराचार्य की बेटी। उसका बनाया अंकगणित का एक ग्रन्थ। न्यायशास्त्र का एक ग्रन्थ, जिसमें प्रसिद्ध पदार्थों का प्रतिपादन किया गया है। पुराण प्रसिद्ध वेश्या विशेष।

लीलोद्यान (नं.) देवताओं का एक वन।

लुक्कायित (त्रि.) गुप्त। छिपा हुआ। लुका हुआ।

लुञ्चित (त्रि.) नोचा हुआ। तोड़ा गया।

लुट् (क्रि.) चमकना। कष्ट सहना। बोलना। भूमि पर लोटना। लूटना।

लुठ् (क्रि.) मारना। मार कर गिरा देना। जमीन पर लोटना। सामना करना। लूट लेना।

लुठन (नं.) लोटना। इधर उधर घूमना।
लुण्टक (त्रि.) डाँकू।
लुण्टाक (त्रि.) डाँकू। बटमार।
लुण्ठक (त्रि.) चोर।
लुञ्च् (क्रि.) तोड़ना। उखाड़ना।
लुप् (क्रि.) घबड़ाना। तोड़ना। लूटना।
लुप्त (नं.) नष्ट। छिप गया। टूट गया।
लुब्ध (पुं.) लम्पट। लोलुप। विषयों में आपादमस्तक डूबा हुआ।
लुभ् (क्रि.) घबरा जाना। चाहना।
लुलाप } (पुं.) भैंसा।
लुलाय }
लुलित (त्रि.) हिलाया गया। चलाया गया।
लुष् (क्रि.) चोरी करना।
लुषभ (पुं.) मस्त हाथी।
लुह् (क्रि.) चाहना।
लू (क्रि.) काटना। अलग करना। तोड़ना। बाँटना। इकट्ठा करना। पकाना।
लूता (स्त्री.) मकड़ी। चींटी।
लूतामर्कटक (पुं.) लङ्गूर। एक प्रकार की चमेली।
लूतिका (स्त्री.) मकड़ी।
लून (त्रि.) काटा हुआ। तोड़ा हुआ। नष्ट किया हुआ। घायल। (न.) पूँछ।
लूम (न.) पूँछ।
लेख (पुं.) लिपि।
लेखक (पुं.) लिखने वाला।
लेखन (नं.) भोजपत्र। अक्षरों का लिखना। लिखने का साधन। (स्त्री.) कलम आदि।
लेखनिक (पुं.) लिखने वाला।
लेखर्षभ (पुं.) देवताओं में श्रेष्ठ। इन्द्र।
लेखहार (पुं.) चिट्ठीरसाँ। चिट्ठी ले जाने वाला।
लेखिनी (स्त्री.) कलम। चमचा।
लेख्य (त्रि.) लिखने योग्य। निज स्वत्वसूचक व्यवहारसम्बन्धी एक पत्र। टीप।
लेप (पुं.) भोजन। लीपना।
लेपक (पुं.) राज। थवई।
लेलिहान (पुं.) साँप। बारम्बार चाटने वाला।
लेश (पुं.) थोड़ा। टुकड़ा।
लेह (पुं.) आहार। चाटना।
लेहिन (पुं.) सुहागा।
लेह्य (त्रि.) अमृत। चाटने योग्य।
लैङ्ग (न.) अष्टादश पुराणों में से एक।
लैङ्गिक (त्रि.) अनुमित। (पुं.) मूर्ति बनाने वाला।
लैणृ (क्रि.) जाना। पास जाना। भेजना। कोरियाना।
लोकृ, (क्रि.) देखना। जाना। अभिज्ञ होना।
लोक (नं.) भुवन। जन। दुनिया।
लोकपाल (पुं.) लोकरक्षक इन्द्रादि राजा।
लोकबान्धव (पुं.) सूर्य्य।
लाकमातृ (स्त्री.) लक्ष्मी।
लोकलोचन (पुं.) सूर्य्य।
लाकबाह्य (त्रि.) लोक से बाहर।
लोकायत (नं.) चार्वाक मत।
लोकायतिक (पुं.) नास्तिक। चार्वाक।
लोकालोक (पुं.) देखा जाता और नहीं देखा जाता। एक पहाड़ जिसकी एक ओर प्रकाश और दूसरी ओर अन्धकार रहता है।
लोकेश (पुं.) ब्रह्मा। राजा। पारा।
लोग (पुं.) मिट्टी का ढेला।
लोचृ (क्रि.) देखना।
लोच (न.) आँसू।
लोचक (पुं.) मूर्ख पुरुष। आँखों की पुतली। काजल। कान में पहनने की एक प्रकार की बाली। काला या नीला लिबास। माथे का आभूषण विशेष जिसे स्त्रियाँ पहनती हैं। मांसपिण्ड। सर्प की कैंचली। झुर्रीदार खाल। तनी हुई भौं। केला।
लोचन (न.) नेत्र। देखना।
लोट् (क्रि.) मूर्ख या पागल होना।
लोट् व्याकरण का समय का अर्थबोधक एक लकार जो आशिष और प्रार्थना में आता है।
लोटन (न.) लोट पोट।
लोटा } (स्त्री.) शाक। पीताभ।
लोटिका }
लोठ (पुं.) भूमि पर लोट पोट करना।
लोडृ (क्रि.) पागल या मूर्ख होना।
लोडन (न.) हिलाना डुलाना। गन्दला करना। आन्दोलन करना।

लोणार (पुं.) एक प्रकार का नमक।
लोत (पुं.) आँसू। चिह्न। (न.) लूट का माल। नमक।
लोत्र (न.) लूट का माल।
लोध } **लोध्र** } (पुं.) वृक्ष विशेष, जिसमें लाल या सफेद फूल लगते हैं। पठानी लोध। इसकी पोटली बाँध कर कपूर और फिटकरी डाल कर ठंढे पानी में भिगो कर आँखों में लगाते हैं। उठी आँख आराम हो जाती है।
लोप (पुं.) छिपाव। लुकाव। दुराव। काटना। घबराहट।
लोपा } **लापामुद्रा** } (स्त्री.) अगस्त्य मुनि की स्त्री।
लोप्त्र (नं.) चोरी का माल।
लोभ (पुं.) लालच।
लोभिन् (पुं.) लालची।
लोभ्य (पुं.) मूँग।
लोम (पुं.) पूँछ। शरीर के रोम।
लोमकर्ण (पुं.) शशक।
लोमकूप (पुं.) रोओं के छेद।
लोमघ्न (नं.) रोग विशेष। नाऊ। दवा जिससे बाल गिर जायँ "चूने की कली और हरताल"।
लोमपाद (पुं.) अङ्ग देश का राजा।
लोमश (त्रि.) रोओं वाला। (पुं.) एक मुनि विशेष यह बड़े आयुष्मान् हैं, ब्रह्मा के मरने पर एक बाल छाती का उखाड़ फेंकते हैं इसी कारण इनका नाम लोमश है।
लोमहर्षण (न.) रोमाञ्च। व्यास के एक शिष्य का नाम। सूतवंशोद्भव इस नाम का एक पौरणिक। सूत का पिता जिसको बलराम ने मार डाला था।
लोल (त्रि.) लालची। चञ्चल। (स्त्री.) जिह्वा। लक्ष्मी।
लोलुप } **लोलुभ** } (त्रि.) बड़ा लालची।
लोष्ट्र (क्रि.) इकट्ठा करना।
लोष्ट (पुं.न.) मिट्टी का ढेला। लोहे का मैल।
लोष्टघ्न (पुं.) मूँगरी या मुग्दर।
लोह (पुं.न.) लोहा।
लोहकार (पुं.) लोहार।
लोहकिट्ट (न.) लोहे का मैल। मण्डूर।
लोहद्राविन् (पुं.) सुहागा।
लोहित (नं.) लोहू। लाल चन्दन। लाल सुहांजन। (पुं.) लाल रङ्ग। (त्रि.) लाल रङ्ग वाला।
लोहिताक्ष (पुं.) लाल आँखों वाला। विष्णु। कोकिल।
लोहिताङ्ग (पुं.) मङ्गल ग्रह। वृक्ष विशेष।
लोहितायस् (पुं.) ताँबा। लाल लोहा विशेष।
लोहिनी (स्त्री.) लाल रङ्ग वाली स्त्री।
लोहोत्तम (न.) सोना।
लौकायतिक (न.) नास्तिक मत का जानने वाला।
लौकिक (त्रि.) लोक प्रसिद्ध। लोक विदित।
लौकिकाग्नि (पुं.) अविधिपूर्वक संस्कारित अग्नि।
लौड् (क्रि.) पागल होना।
लौह (पुं.) लोहा।
लौहकार (पुं.) लुहार।
लौहज (नं.) मण्डूर। लोहे का मैल।
लौहभाण्ड (पुं.) लोहे का खल्ल और लोढ़ा। इमामदस्ता। लोहे का बर्तन।
लौहशंक (पुं.) लोहे की कील।
लौहित (पुं.) शिव का त्रिशूल।
लौहतिक (त्रि.) ललोहा। कुछ कुछ लाल रङ्ग का।
लौहित्य (नं.) लाल रङ्ग। एक नदी।
ल्पी (क्रि.) मिलना।
ल्पी } **ल्यी** } (क्रि.) जाना।

व

व (त्रि.) बलवान्। दृढ़। (पुं.) हवा। बाह। वरुण। समुद्र। आवास। चीता। कपड़ा। मान। राहु। वरुण का आवासस्थान। कमल की जड़। कल्याण। सान्त्वन।
वंश (पुं.) एक प्रकार का बाँस। कुल। जाति। बाँसुरी। समूह। मेरुदण्ड। साल वृक्ष। दस हाथ का माप। गन्ना।
वंशकर्पूररोचना (स्त्री.) वंशलोचन।
वंशज (न.) कुलीन।
वंशधर (त्रि.) कुल चलाने वाला। सन्तान।
वंशशर्करा (स्त्री.) तवाखीर। वंशलोचन।

वंशस्थविल (न.) एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में बारह अक्षर होते हैं।

वंशाग्र (न.) कुल में सब से बड़ा या पहिला। वंश में पूज्य।

वंशीधर (पुं.) श्रीकृष्ण।

वंश्य (त्रि.) कुलीन।

वक् (क्रि.) टेढ़ा होना। तिरछा होना।

वक (बक) (पुं.) बगला। पुष्पदार वृक्ष। कुबेर। एक राक्षस जो भीम द्वारा मारा गया था। दवा निकालने की क्रिया विशेष। इस नाम का एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

वकपञ्चक (बकपञ्चक) (नं.) कार्तिकशुक्ला ११ शी से १५ शी तक की पाँच तिथियाँ।

वकवृत्ति (बकवृत्ति) (पुं.) दाम्भिक वृत्ति।

वकव्रतिन् (बकव्रतिन्) (पुं.) ढोंगी।

वकव्रतिक (बकव्रतिक) दम्भी। ठग।

वकुल (बकुल) (पुं.) एक वृक्ष मौलसिरी

वक्तव्य (न.) कथन। (त्रि.) निन्दित। दीन। दुष्ट।

वक्तृ (त्रि.) उचित। बकवादी।

वक्त्र (न.) मुख। वस्त्र विशेष। छन्द विशेष।

वक्त्रासव (पुं.) अधर रस।

वक्र (न.) नदी का घुमाव। शनैश्चर। मङ्गल। रुद्र। त्रिपुर दैत्य। तिरछा जाना। (त्रि.) तिरछा।

वक्राङ्ग (पुं.) हंस। (त्रि.) कुटिल अङ्ग वाला। (त्रि.) कुटिल। टेढ़ा।

वक्रिम (न.) टेढ़ापन।

वक्रतुण्ड (पुं.) गणेश जी।

वक्रोक्ति (स्त्री.) अलंकार विशेष। आक्षेप। कटाक्ष।

वक्ष् (क्रि.) क्रोध करना।

वक्षस् (न.) छाती।

वक्षस्थल, **वक्षःस्थल** (न.) अच्छी छाती

वक्षी (स्त्री.) अङ्गारा।

वक्षोज (पुं.) स्तन।

वक्षोरुह (पुं.) स्तन।

वख् (क्रि.) जाना।

वगाह (पुं.) स्नान।

वघ् (क्रि.) जाना।

वंक (पुं.) नदी की मोड़।

वंकिल (पुं.) काँटा।

वङ्कि (पुं.) पसली। धत्र।

वंक्षण (न.) घुटना।

वंक्षु (पुं.) गङ्गा की नहर।

वङ्ग् (क्रि.) जाना।

वङ्गा (पुं.) (बहुवचनान्त) बङ्गाल हाता।

वङ्ग (न.) राँगा। (पुं.) रुई। लीची का पेड़।

वङ्गज (न.) पीतल। सिन्दूर।

वङ्गशुल्वज (न.) काँसा।

वङ्गसेन (पुं.) वक वृक्ष।

वङ्गारि (पुं.) हरताल।

वच् (क्रि.) कहना।

वचन (न.) वाक्य। संख्यावाची। सोंठ। उपदेश।

वचनग्राहिन् (त्रि.) वशीभूत।

वचनीय (त्रि.) निन्दा योग्य। लोकापवाद।

वचनस्थित (त्रि.) अपनी बात को पालने वाला। आज्ञाकारी। वश में आया हुआ।

वचस् (न.) वाक्य। वचन।

वचसांपति (पुं.) देवगुरु। बृहस्पति।

वचस्कर (त्रि.) आज्ञाकारी वंश में उत्पन्न।

वचा (स्त्री.) पदार्थ विशेष।

वज् (क्रि.) गति।

वज्र (पुं.न.) इन्द्र का अस्त्र विशेष।

वज्रचर्म्मन् (पुं.) गैंड़ा।

वज्रदन्त (पुं.) शूकर। मूसा।

वज्रधर (पुं.) इन्द्र।

वज्रनिर्घोष (पुं.) गर्जन।

वज्रपाणि (पुं.) इन्द्र।

वज्रपुट (न.) औषध पाचन पात्र। दवा पकाने का बर्तन।

वज्रमय (त्रि.) वज्र स्वरूप।

वज्रिन् (पुं.) इन्द्र।

वञ्चक (पुं.) गीदड़। छली। दगाबाज। धूर्त।

वञ्चन (न.) ठगना। छलना। फँसा लेना।

वञ्जुल (पुं.) अशोक का पेड़। बैत। पक्षी। (त्रि.) टेढ़ा।

वट् (क्रि.) घेरना। हिस्सा करना । कहना। चोरी करना।

वट (पुं.) एक वृक्ष। सन की रस्सी।
वटक (पुं.) बरा। पकोड़ी। मुँगौरा। कचोड़ी।
वटी (स्त्री.) गोली। टिकिया।
वटु (पुं.) बालक। ब्रह्मचारी।
वटुक (पुं.) एक देवता। भैरव।
वठ् (क्रि.) बली होना।
वठर (पुं.) मूर्ख। वर्णसंकर विशेष। शठ।
वड् (क्रि.) बाँटना।
वडमि, वडमी (स्त्री.) छज्जा। घर की चोटी। महल के शिखर का घर।
वड्र (त्रि.) बड़ा। श्रेष्ठ। अच्छा।
वण्टक (पुं.) विभाजक। हिस्सा करने वाला।
वत् (अव्य.) सादृश्य। समानता।
वत (अव्य.) कष्ट। दया। खुशी। विस्मय। आमन्त्रण।
वतंस (पुं.) असल में अवतंस शब्द है। अकार का लोप होने से आभूषण। चोटी। हर प्रकार का गहना। कर्णफूल।
वतण्ड (पुं.) एक मुनि का नाम।
वतोका (स्त्री.) सन्तान रहित स्त्री।
वत्स (न.) वक्षःस्थल। वत्सर। वर्षा (पुं.) बछड़ा। पुत्र। प्रिय। बच्चा।
वत्सक (न.) इन्द्रजौ। (पुं.) बछड़ा।
वत्सतर (पुं.स्त्री.) छोटा बछड़ा। छोटा साण्ड।
वत्सनाभ (पुं.) एक विष। बचनाग। सर्प के काटने पर घी के साथ पिलाने से सर्पविष नष्ट होता है।
वत्सपत्तन (न.) कौशाम्बी नाम नगरी।
वत्सपाल (पुं.) श्रीकृष्ण। ग्वाल। बछड़ों का रक्षक।
वत्सर (पुं.) वर्ष। साल।
वत्सराज (पुं.) चन्द्रवंशी एक राजा। बढ़िया दिखनौटा बछड़ा।
वत्सरान्तक (पुं.) वर्ष समाप्ति का महीना। फाल्गुन मास।
वत्सल (त्रि.) स्नेह युक्त। प्रेमी। दयालु।
वत्सिन् (पुं.) लड़कपन। युवावस्था।
वत्सीय (पुं.) गोपालक। चरवाहा।
वद् (क्रि.) बोलना। कहना।
वदन (न.) चेहरा। मुख। कथन।
वदन्य, वदान्य (पुं.) उदार पुरुष। बहुत देने वाला।
वदाम (बादाम) (पुं.) बादाम।
वदावद (पुं.) बहुत बोलने वाला।
वदि कृष्ण पक्ष। जैसे ज्येष्ठ वदि।
वद्य (त्रि.) कहने योग्य। कृष्ण पक्ष। निन्द्य।
वध् (क्रि.) मार डालना।
वधस्तम्भ (पुं.) फाँसी का खम्भ।
वधक (पुं.) जल्लाद। फाँसी लगाने वाला।
वधित्र (न.) कामदेव।
वधु, वधुका (स्त्री.) लड़के की स्त्री। बहू।
वधू (स्त्री.) दुलहिन। भार्य्या। बहू।
वधूजन (पुं.) स्त्रियाँ।
वधुटी, वधूटी (स्त्री.) कम उम्र की स्त्री। बहू।
वध्य (त्रि.) मारने योग्य।
वध्रिका (पुं.) नपुंसक। हिजड़ा।
वध्रव (पुं.) जूता।
वन् (क्रि.) मान करना। उपकार करना। माँगना। सेवा करना।
वन (न.) जङ्गल। जलस्रोत। निवास। जल। मेघ। प्रकाश। घर। काठ का बर्तन।
वनकदली (स्त्री.) काष्ठकदली।
वनचन्दन (न.) वन का चन्दन।
वनज (न.) पद्म। मोथा।
वनमाला (स्त्री.) पैरों तक लम्बी वनमाला।
वनमालिन् (पुं.) श्रीकृष्ण। वाराहीलता।
वनलक्ष्मी (स्त्री.) केले का वृक्ष।
वनवासिन् (पुं.) वाराहीकन्द। शाल्मलीकन्द।
वनशोभन (न.) पद्म। कमल।
वनस्पति (पुं.) अश्वत्थ आदि वृक्ष।
वनायु (पुं.) अरब देश। वह देश जहाँ अच्छे घोड़े उत्पन्न हों।
वनायुज (पुं.) अच्छा घोड़ा। अरबी घोड़ा।
वनिता (स्त्री.) प्यारी स्त्री।
वनिन् (पुं.) वानप्रस्थ आश्रम वाला। वृक्ष। सोमलता।
वनी (स्त्री.) जङ्गल।

वनीयक (पुं.) भिखारी।

वनेचर (पुं.) वन में घूमने वाला। भील। जङ्गली। वनमानुष। जलमानुष।

वनौकस् (पुं.) बन्दर। रीछ।

वन्च (क्रि.) ठगना।

वन्दन (न.) प्रणाम।

वन्दनीय (त्रि.) नमनीय। नमस्कार करने योग्य। पूज्य। मान्य।

वन्द्र (पुं.) पुजारी।

वन्दारु (त्रि.) नमस्कार करे का स्वभाव वाला। देवता।

वन्दि } (स्त्री.) कैदी। नमस्कार।
वन्दी } (पुं.) भाट।

वन्द्य (त्रि.) वन्दनीय। (स्त्री.) गोरोचना।

वन्य (न.) दारचीनी। वाराहीकन्द। (स्त्री.) जल का समूह।

वप् (क्रि.) बीज बोना।

वपन (न.) बीज की बुआई। मूढ़ मुड़ाना।

वपनी (स्त्री.) नाई का घर।

वपिल (पुं.) पिता।

वपु (पुं.) शरीर।

वपुन (पुं.) देवता।

वपुष } (न.) सुन्दर। शरीर। आश्चर्य्य।
वपुस } जल।

वप्तृ (पुं.) पिता। किसान। बीज बोने वाला।

वप्र (पुं.न.) मिट्टी की दीवाल। नगर की रक्षा के लिये चहारदीवारी। खेत। किनारा। सीसा। प्राचीर। पहाड़ का उतार। खाई (पुं.) पिता। प्रजापति।

वप्रि (पुं.) खेत। समुद्र। दुर्गति।

वप्री (स्त्री.) टीला।

वभ्र (क्रि.) जाना।

वम् (क्रि.) वमन करना। कै करना।

वमन (न.) मर्द्दन। अर्द्दन। छर्द्दन। बहुत निकलना।

वमनीया (स्त्री.) मक्खी, जिसके पेट में जाने से कै हो जाय।

वमि (स्त्री.) कै। अग्नि।

वमित (पुं.) कै की गयी।

वम्भ (पुं.) बाँस।

वम्भारघ (पुं.) पोहों का बोल।

वम्र (पुं.) चींटा। लाल चींटा जो वृक्षों पर पीले रङ्ग का होता है, बीच्छू के समान विषैला होता है।

वम्री (स्त्री.) चींटी।

वय् (क्रि.) जाना।

वय (पुं.) जुलाहा। कोरी। बुनने वाला।

वयन (न.) बुनना। बुनावट।

वयस् (पुं.) उम्र। युवावस्था। पक्षी। काक। शक्ति। बलिदान का पदार्थ।

वयस्थ (पुं.) मित्र। सहयोगी।

वयस्य (पुं.) समान अवस्था वाला।

वयस्या (स्त्री.) सखी। सहेली।

वयाक (पुं.) लता। छोटी शाखा। डाली।

वयुन (न.) ज्ञान। बुद्धि। समझने की शक्ति। देवालय। (पुं.) नियम। आज्ञा। रीति। भाँति। सफाई।

वयोधस् (पुं.) तरुण। युवा।

वयोधा (त्रि.) बली। (स्त्री.) बल। शक्ति।

वयोरङ्ग (न.) सीसा।

वर् (क्रि.) चुनना। माँगना। पाने के लिये खोजना। चाहना।

वर (न.) केसर। इच्छा। माँग। परदा। घेरा। (त्रि.) अभीष्ट। प्यारा। श्रेष्ठ। (पुं.) गुग्गुल। यार। जमाई। दुलहा। वरदान। अनुग्रह। पति।

वरट (न.) कुन्द का फूल। कीड़ा विशेष। हंस। बर्रइया। अन्न विशेष।

वरण (न.) चुनाव। ढकाव। पूजन। वरना। माँगना। किसी पूजा अनुष्ठानादि करने के लिये नियत समय के लिये उसी काम में लगे रहने का अनुरोध करना। अलगाव। रोक। निषेध। (पुं.) नगर का परकोटा। पुल। वरुण वृक्ष। ऊँट। धनुष की सजावट विशेष। इन्द्र।

वरणमाला (स्त्री.) जयमाल। स्वामित्त्वस्वीकार की सूचक माला। वरमाला।

वरणसी } (त्रि.) बड़ा लालची।
वाराणासी }

वरण्ड (पुं.) समूह। मुँहासाँ। बरण्डा। घास का ढेर। मछली पकड़ने की बंसी की डोर। खीसा। जेब।

वरण्डालु (पुं.) एरण्ड वृक्ष।
वरत्रा (स्त्री.) चमड़े का तरमा। हाथी अथवा घोड़ा बाँधने की चमड़े की रस्सी।
वरत्वच् (पुं.) नीम का पेड़।
वरद (त्रि.) अभीष्टदाता। प्रसन्न। (स्त्री.) कन्या। अश्वगन्धा। आदित्यभक्ता। दुर्गा।
वरदाचतुर्थी (स्त्री.) माघशुक्ल चतुर्थी।
वरम् (अव्य.) थोड़ा। प्यारा। बहुत अच्छा। बेहतर।
वररुचि (त्रि.) अच्छी प्रीति वाला। कात्यायन मुनि। विक्रमादित्य की सभा के नव-रत्न कवियों में से एक का नाम।
वरलब्ध (त्रि.) वरदान पाये हुए। (पुं.) चम्पक वृक्ष।
वरवर्णिनी (स्त्री.) सुन्दरी स्त्री। लाख। लक्ष्मी। दुर्गा। सरस्वती। प्रियङ्गु लता। हल्दी।
वराक (पुं.) शिव। (न.) युद्ध। (त्रि) छोटा। शोच्य। बेचारा।
वराङ्ग (न.) श्रेष्ठ। पूज्य अङ्ग। मस्तक। माथा। गुदा। योनि। कुश। (पुं.) हाथी। विष्णु। कामदेव। (स्त्री.) दालचीनी। हल्दी। (न.) अच्छे अङ्गो वाली स्त्री।
वराङ्गिन् (पुं.) अच्छे अङ्गों वाला। अम्लु वेतस।
वराट (पुं.) कौड़ी। रस्सा।
वराटक (पुं.) कौड़ी। रस्सी। डोरी।
वराटकरञ्जस (पुं.) नागकेसर वृक्ष।
वराटिका (स्त्री.) कौड़ी।
वराण (पुं.) इन्द्र।
वरारक (न.) हीरा।
वरारोह (पुं.) हाथी। (स्त्री.) अच्छे नितम्ब वाली।
वाराशि } **वारासि** } (पुं.) मोटा कपड़ा।
वरासन (न.) जवा पुष्प। उत्तम आसन। (पुं.) जार। दरबान। द्वारपाल।
वराह (पुं.) शूकर। एक पर्वत। मोथा। शिशुमार। भगवान् विष्णु का अवतार विशेष। मेढ़ा। बैल। बादल। नक्र। वराह। व्यूह। माप विशेष। वराहमिहिर। अष्टादश पुराणों में से एक।
वराहकर्ण (पुं.) एक प्रकार का तीर।
वराहकल्प (पुं.) वराहावतार का समय।
वराहद्वादशी (स्त्री.) माघशुक्ला द्वादशी।
वराहशृङ्ग (पुं.) शिव।
वराह (पुं.) सूअर।
वरिमन् (पुं.) सर्वोत्तमता। चौड़ाई।
वरिवस् (न.) पूजन। सम्मान । सम्पत्ति। स्थान। आनन्द।
वरिवस्या (स्त्री.) पूजना। शुश्रूषा।
वरिशी (स्त्री.) मछली पकड़ने की बंसी।
वरिष्ठ (त्रि.) सर्वोत्तम। सब से बड़ा। सव से अधिक भारी। (पुं.) तीतर। नारङ्गी का पेड़। (न.) ताँबा। काली मिर्च।
वरी (स्त्री.) शतावरी। सूर्यपत्नी छाया।
वरीयस् (त्रि.) बहुत अच्छा। (पुं.) सत्ताइस योगों में से एक।
वरीवर्द / **वलीवर्द (बलीवर्द)** (पुं.) बैल। साँड।
वरीषु (पुं.) कामदेव।
वरुड़ (पुं.) एक प्रकार की नीच जाति।
वरुण (पुं.) पश्चिम दिशा के पाल। जल का अधिष्ठाता देवता। एक आदित्य। समुद्र। आकाश। सूर्य्य। वरुण वृक्ष।
वरुणपाश (पुं.) वरुण का फन्दा। मछली विशेष।
वरुणलोक (पुं.) जल। पाताल।
वरुणानी (स्त्री.) वरुण की स्त्री।
वरुणावि (स्त्री.) लक्ष्य।
वरुत्र (न.) लवादा। चुगा।
वरूतृ (पुं.) रक्षक। देवता।
वरूथ (पुं.) कवच। रथ की रक्षा के लिये काठ या लोहे का बना बाड़ा। ढाल। समूह। रक्षा। बचाव। वंश। घर। (पुं.) कोयल। समय।
वरूथिनी (स्त्री.) सेना।
वरेण्यम् (न.)। केसर (त्रि.) सर्वोत्तम। प्रार्थनीय।
वर्ग (पुं.) जाति। समूह। भाग। त्याग।
वर्गमूल (न.) घात का साधन, जैसे १६ का ४; ९ का ३।
वर्गोत्तम (पुं.) क्षेत्र आदि। छः वर्गों में अत्तम अर्थात् नवाँ भाग। नवांश (ज्योतिष में)
वर्च् (क्रि.) चमकाना।

वर्चस् (न.) रूप। शुक्र। तेज। विष्ठा।
वर्च्चस्विन् (त्रि.) तेजस्वी।
वर्ज्जन (न.) त्याग। हिंसा।
वर्ण (क्रि.) स्तुति करना। प्रशंसा करना। फैलना। शुल्कादि वर्ण करना। उद्योग करना। चमकाना। बयान करना।
वर्ण (न.) केसर। जाति। रूप। भेद। अकारादि अक्षर। यश। गुण। अङ्गराग। सोना। व्रत विशेष। उपटन। स्तुति। सङ्गीत क्रम विशेष। मूर्ति।
वर्णक (पुं.न.) हरताल। चन्दन। हींग। मण्डन। ग्रन्थ विशेष।
वर्णकूपिका (स्त्री.) दवात।
वर्णतूति, वर्णतूली (स्त्री.) लेखनी। कलम।
वर्णधर्म (पुं.न.) ब्राह्मणादि वर्णों का धर्म।
वर्णसंकर (पुं.) दोगला।
वर्णाङ्का (स्त्री.) लेखनी। कलम।
वर्णात्मन् (पुं.) अक्षरों के स्वरूप वाला।
वर्णिका (स्त्री.) लेखनी। पेन्सिल।
वर्णित (त्रि.) भेष बदले हुए।
वर्णिन् (पुं.) चितेरा। चित्रकार। ब्रह्मचारी।
वर्त्तक (पुं.) बतख पक्षी। घोड़े का सुम।
वर्त्तनम् (न.) आजीविका। (पुं.) काक।
वर्त्तनी (स्त्री.) पथ। वाट। पीसना।
वर्त्तमानः (पुं.) हाल। मौजूद।
वर्ति, वर्त्ती (स्त्री.) लेख। काजल। बत्ती।
वर्तिक (पुं.) बटेर पक्षी। भार। बोझ।
वर्त्तिन् (त्रि.) वर्त्तनशील। रहने वाला।
वर्त्तिष्णु (त्रि.) वर्त्तनशील।
वर्तुल (त्रि.) गोल। (न.) गाजर।
वर्त्मन् (न.) पक्ष। आँख का परदा। रीति। आचार।
वर्द्ध (क्रि.) काटना। पूरा करना।
वर्द्धक (पुं.) काटने वाला। पूरा करने वाला।
वर्द्धकिन् (पुं.) बढ़ई।
वर्द्धन (न.) काटना। पूरा करना। बढ़ाना। (त्रि.) बढ़ा हुआ।
वर्द्धनी (स्त्री.) झाडू।
वर्द्धमान (त्रि.) वृद्धिशील। (पुं.) रेड़ी का पेड़। सराबा। विष्णु। एक देश। एक नगर। धनियों का घर।
वर्द्धिष्णु (त्रि.) बढ़ा हुआ।
वर्म्मन् (न.) कवच। क्षत्रियों की उपाधि।
वर्म्महर (पुं.) तरुण।
वर्म्मित (त्रि.) कवचधारी। साहसी।
वर्वणा (स्त्री.) स्याह मक्खी।
वर्वर (न.) हीन। पीला चन्दन। (त्रि) मूर्ख। नीच। पामर। (पुं.) एक देश। श्यामा तुलसी।
वर्ष (पुं.) बरसात। जम्बुद्वीप का एक भाग। मेघ। साल।
वर्षपर्वत (पुं.) वर्ष देश के पहाड़।
वर्षवर (पुं.) खोजा। नपुंसक। हिजड़ा।
वर्षवृद्धि (पुं.) जन्मतिथि।
वर्षा (स्त्री.) वर्षाऋतु।
वर्षापगम (पुं.) शरत्काल।
वर्षाभू (पुं.) मेंढ़क। वीरबहूटी। (स्त्री.) महीलता। पुनर्नवा। (त्रि.) वर्षा में उत्पन्न होने वाली।
वर्षामद (पुं.) मयूर।
वर्षिष्ठ (त्रि.) अतिशय वृद्ध।
वर्षीयस् (त्रि.) अति वृद्ध।
वर्षुक (त्रि.) बरसने वाला।
वर्षोपल (पुं.) ओला।
वर्ष्मन् (न.) शरीर।
वर्ह् (क्रि.) मारना। चमकना।
वर्ह (बर्ह) (न.) मोर का पर। आग। चमक। यज्ञ।
वर्हिण (बर्हिण) (पुं.) मयूर। मोर।
वर्हिर्मुख (बर्हिर्मुख) (पुं.) अग्नि।
वर्हिषद् (बर्हिषद्) (पुं.) पितृगण भेद।
वर्हिष्केश (बर्हिष्केश) (पुं.) वह्नि। आग।
वर्हिस्, बर्हिस् (पुं.न.) आग। ग्रथिपर्णि। चित्रक। कुश। (त्रि.) चमकीला।
वल् (क्रि.) रोकना। ढाँपना।
वल (न.) सैन्य। सेना के लोग।
वलक्ष (पुं.) धवल वर्ण। सफेद रंग। स्वच्छ।

वलय (पुं.न.) हाथ के कड़े। घेरा। गोल। गले का रोग।
वलयित (त्रि.) घिरा हुआ।
वलाक (पुं.स्त्री). बगला।
वलाहक (पुं.) मेघ। बादल।
वल्क (न.) बक्कल। मछली का काँटा। खण्ड।
वल्कल (न.) छिलका। छाल। दारचीनी।
वल्किल (पुं.) काँटा।
वल्कुट (न.) छाल।
वल्ग् (क्रि.) जाना। कूदना। नाचना। प्रसन्न होना। खाना।
वल्गा (स्त्री.) घोड़े की लगाम। रास।
वल्गु (पुं.) बकरा। (त्रि.) सुन्दर। मधुर। मूल्यवान्। (न.) चन्दन। वन। पैसा।
वल्गुल (पुं.) दौड़ती हुई लोमड़ी।
वल्भ् (क्रि.) भोजन करना।
वल्मिकि (पुं.) दीमकों का बनाया मिट्टी का ढेर।
वल्मी (स्त्री.) चींटी।
वल्मीक (पुं. न.) (दीमकों या चींटियों का घर) छोटी मिट्टी की टिलिया। फीलपाँ का रोग। वाल्मीकि ऋषि, जिन्होंने रामायण की रचना की।
वल्यूल् (क्रि.) काट डालना। साफ करना।
वल्ल (पुं.) दो रत्ती भर। फटकन। एक माशा चाँदी।
वल्लकी (स्त्री.) बीन। सारङ्गी। तम्बूरा।
वल्लभ (पुं.) प्यारा। स्वामी। अच्छा घोड़ा।
वल्लरि **वल्लरी** (स्त्री.) लता। मन्जरी। मेथी।
वल्लव (पुं.) ग्वाला। रसोइया। भीमसेन।
वल्लि **वल्ली** लता। बेल। पृथिवी।
वल्लुर (न.) कुञ्ज। मञ्जरी। क्षेत्र। निर्जन स्थान। गहन।
वल्लूर (त्रि.) सूखा मांस। खेत। सवारी। बाँझर भूमि।
वल्ल्या (स्त्री.) आँवला का पेड़।
वश् (पुं. न.) अधीन होना। प्रभुत्व।
वशंवद (त्रि.) प्रियवाक्यवादी। अधीन।
वशक्रिया (स्त्री.) वश में करना।
वशग (त्रि.) वशीभूत।
वशवर्त्तिन् (त्रि.) अधीन। वशीभूत।
वंशा (स्त्री.) स्त्री। पत्नी। लड़की। ननँद। गौ। बाँझ स्त्री। हथिनी।
वशित्व (न.) स्वाधीनता। ईश्वर का एक ऐश्वर्य।
वशिन् (त्रि.) स्वाधीन। जितेन्द्रिय।
वशिष्ठ (पुं.) **वशिष्ठ** (पुं.) इन्द्रियों का सर्वथा वश में रखने वाला। मुनि विशेष।
वशीकरण (न.) जिसके द्वारा ऐसे को वश में किया जाय, जो कभी वश ही में न हो सके। तान्त्रिक विधान विशेष। पान का बीड़ा। खुशामद। प्रार्थना।
वश्य (न.) वश में आया हुआ। लौंग।
वषट् (अव्य.) देवोद्देश्य से घी आदि का देना वा छोड़ना।
वषट्कार (पुं.) यज्ञ विशेष।
वषट्कृत (त्रि.) होम किया हुआ।
वष्क (क्रि.) जाना।
वष्कय (पुं.) एक वर्ष का बछड़ा।
वस् (क्रि.) ढाँकना। रहना।
वसन (न.) कपड़ा। परदा। बसना। रहना।
वसति (स्त्री.) **वसती** (स्त्री.) वास। रहना। रात। स्थान। घर।
वसन्त (पुं.) ऋतु विशेष जो चैत्र और वैशाख में होती है। एक प्रकार का राग। चेचक की बीमारी।
वसन्ततिलक (न.) (पुं.) छन्द जिसका पाद चौदह अक्षर का होता है।
वसन्तदूत (पुं.) कोकिल। कोइल। आम का पेड़। पाँचवाँ स्वर।
वसन्तसखः (पुं.) कामदेव। वसन्त का मित्र।
वसा (स्त्री.) चर्बी। बेल।
वसु (न.) धन। रत्न। सुवर्ण। जल। वस्तु। नमक विशेष। (त्रि.) सूखा। धनी। अच्छा। देवता विशेष। इन देवताओं की संख्या आठ है-
"आपो धरो ध्रुवः सोमः अहश्चैवानिलोऽनलः।
प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टाविति स्मृताः।।"
आठ की संख्या। कुबेर। शिव। अग्नि का नाम। वृक्ष

विशेष। सरोवर। सूर्य। (स्त्री.) किरन। प्रकाश। चमक। मूल विशेष।

वसुकीट वसुकृमि (पुं.) भिखारी।

वसुदा (स्त्री.) पृथिवी।

वसुदेव (पुं.) यदुवंशोद्भव राजा सूर के पुत्र और श्रीकृष्ण के पिता।

वसुधा (स्त्री.) भूमि।

वसुधारा (स्त्री.) कुबेर की राजधानी। मङ्गल कार्य्यों में मातृकाओं के ऊपर घी की धार।

वसुन्धरा (स्त्री.) पृथिवी।

वसुमती (स्त्री.) पृथिवी।

वसुत्व (पुं.) एक देवता।

वसूरा (स्त्री.) रण्डी। वेश्या।

वस्क् (क्रि.) जाना।

वस्कराटिका (स्त्री.) बिच्छू।

वस्त् (क्रि.) जाना। मार डालना। मांगना। उत्पीड़न करना।

वस्त (न.) आवास स्थान। (पुं.) बकरा।

वस्ति (पुं. स्त्री.) तरेट। मूत्राशय। पिचकारी। कपड़े का पल्ला।

वस्तिमल (न.) मूत्र। पेशाब।

वस्तु (न.) द्रव्य। पदार्थ।

वस्त्य (न.) गृह। घर।

वस्तुतस् (अव्य.) असल में। वास्तव में।

वस्त्रकुट्टिम (न.) तम्बू। डेरा। कनात।

वस्त्रग्रन्थि (पुं.) नीवी। धोती की गांठ।

वस्त्र (न.) वेतन। मजूरी। वस्तु। धन। मौत। छिकला। (पुं.) मूल्य।

वस्नसा (स्त्री.) स्नायु। अतड़ी। नारा।

वह् (क्रि.) पहुँचाना। चमकना। ले जाना।

वह (पुं.) बैल का कंधा। घोड़ा। सवारी। रास्ता। नद। माप विशेष। वायु।

वहल (पुं.) जहाज। (त्रि.) दृढ़।

वहित्र (न.) पानी पर की सवारी। नाव। जहाज।

वहिरङ्ग (**बहिरङ्ग**) (न.) बाहिर का अंग। (त्रि.) बाहिरी।

वहिरिन्द्रिय (**बहिरिन्द्रिय**) (न.) बाहिर का काम करने वाली इन्द्रिय।

वहिर्मुख (**बहिर्मुख**) (त्रि.) विमुख।

वहिस् (**बहिस्**) (अव्य.) बाहर।

वह्नि (पुं.) आग। चित्रक वृक्ष। मिलाना। नीम। मरुत का नाम। सोम।

वह्निकरी (स्त्री.) शरीर की आग को भड़काने वाला। आँवला।

वह्निगर्भ (पुं.) बांस। शमी वृक्ष।

वह्निनी (स्त्री.) जटामाँसी। बूटी विशेष।

वह्निभोग्य (न.) घृत। घी।

वह्निमित्र (पुं.) वायु। हवा।

वह्निरेतस् कार्त्तिकेय।

वह्निवधू (स्त्री.) अग्निदेव की वहू।

वह्निसखः (पुं.) जीरा।

वह्य (न.) छकड़ा। गडा। वाहन मात्र। हर प्रकार की सवारी।

वा (क्रि.) सुखपाना। जाना। हिंसा करना।

वांशिक (पुं.) वचन कहना। (न.) बगुलों का उड़ान।

वाक्पारुष्य (न.) गालीगलौज।

वाक्य (न.) कई शब्दों से मिलकर वाक्य बनता है। उक्ति।

वाक्ष् (क्रि.) चाहना।

वागर (पुं.) ऋषि। विद्वान्। ब्राह्मण। वीरपुरुष। कसौटी। अटकार। निश्चय। संकल्प। समुद्री आग। भेड़िया।

वागा (स्त्री.) लगाम।

वागारु (त्रि.) धोखेबाज़।

वागाशनि (पुं.) बुद्ध देव।

वागुरावृत्ति (पुं.) व्याध। शिकारी।

वागुरिक (पुं.) शिकारी। व्याध।

वाग्डम्बर (पुं.) बहुत सी बातें कहना।

वाग्दण्ड (पुं.) धिक्कार। फटकार।

वाग्दत्ता (स्त्री.) लड़की जिसकी सगाई हो गयी है।

वाग्दुष्ट (त्रि.) बुरे शब्दों को (गालियों को) प्रयोग करने वाला।

वाग्देवता (स्त्री.) सरस्वती।

वाग्मिन् (त्रि.) अच्छा वक्ता।

वाग्मत् (त्रि.) मौनी।
वाङ्मय (त्रि.) वक्तृत्व शक्ति विशिष्ट। वाग्मी।
वाङ्मती (स्त्री.) नदी विशेष।
वाच (पुं.) एक प्रकार की मछली।
वाचंयम (त्रि.) जिसने अपनी जिह्वा को वश में कर रक्खा है। ऋषि।
वाचक (पुं.) पढ़ने वाला। कहने वाला।
वाचक (पुं.) बोलने वाला। व्याख्यान दाता। पाठक।
वाचनिक (त्रि.) ज़बानी।
वाचस्पति (पुं.) बृहस्पति। पुष्य नक्षत्र।
वाचा (स्त्री.) वाणी।
वाचाट (त्रि.) बहुत वक्वादी।
वाचिक (त्रि.) वाणी से किया हुआ।
वाच्य (न.) दूषण। कथन। दोष योग्य।
वाछ् (क्रि.) चाहना।
वाज (न.) बाजू। पर। तीर के पर। लड़ाई। शब्द। यज्ञ। वेग।
वाजपेय (न.) यज्ञ विशेष जिसमें अन्न खाया और घी पान किया जाता है।
वाजसनेयिन् (पुं.) याज्ञवल्क्य का नाम जो शुक्ल यजुर्वेद के प्रादुर्भाव कर्त्ता हैं। शुक्ल यजुर्वेदी। वाजसनेयिनों के अनुयायी।
वाजिन् (त्रि.) तेज़। दृढ़। (पुं.) घोड़ा। तीर। वाजसनेयिन शाखा का अनुयायी। इन्द्र। बृहस्पति तथा अन्य देवता।
वाजिन (न.) बल। वीरता। सामर्थ्य। द्वन्द्व युद्ध। फटे दूध का जल।
वाजिनी (स्त्री.) घोड़ी। उषा। भोजन।
वाजिभक्ष (पुं.) चना।
वाजीकरण (न.) एक प्रकार की औषध जिसके सेवन से मनुष्य अश्व की तरह मैथुन करने में समर्थ होता है। पौष्टिक दवाई। पुष्टाई।
वाच्छा (स्त्री.) अभिलाषा। इच्छा। चाह।
वाट (पुं.) बाड़ा। घेरा। वाटिका। उद्यान। रास्ता। अन्न विशेष।
वाटिका (स्त्री.) निवास का स्थान। बगिया। हिङ्गुपत्री।
वाड् (क्रि.) स्नान करना। डुबकी मारना।
वाडव (पुं.) समुद्र की आग। ब्राह्मण। (न.) घोड़ियों का समूह।
वाढ (न.) अतिशय। बहुतही। (अव्य.) हाँ। प्रतिज्ञा। स्वीकृति।
वाण (बाण) (पुं.) तीर। एक दैत्य। वह्नि। कवि विशेष। मूञ्ज। केवल।
वाणवार (बाणवार) (पुं.) कवच।
वाणहृ (बाणहृ) (पुं.) वाणासुर के मदभञ्जक। श्रीकृष्ण।
वाणि (स्त्री.) बुनना। बुनने का चरखा। वचन। शब्द। सरस्वती।
वाणिज (पुं.) व्यापारी। बनिया।
वाणिजिक (पुं.) व्यापारी। गुण्डा। ठग। समुद्र की आग।
वाणिज्य (न.) व्यापार।
वाणिनी (स्त्री.) बड़ी चतुर या उत्पात करने वाली स्त्री। नाचने वाली स्त्री। नटी। मदमस्त स्त्री।
वाणी (स्त्री.) शब्द। भाषा। प्रशंसा। सरस्वती।
वात (क्रि.) जाना। सेवा करना। सुखी करना।
वात (त्रि.) फूँका हुआ। चाहा हुआ। (पुं.) हवा। पवनदेव। गठिया। जोड़ों की सूजन। विश्वास शून्य प्रेमिक। ढीठ नायिका।
वातकिन (त्रि.) गठिया के रोग वाला।
वातकेतु (पुं.) धूल। गर्दा।
वातध्वज (पुं.) मेघ। धूल।
वातप्रमी (पुं. स्त्री.) तेज़ हिरन।
वातरक्त (न.) गठिया रोग। एक प्रकार का रोग।
वातरायण (पुं.) उन्मत्त। पागल। निकम्मा मनुष्य। काण्ड। आरा। सरल का पेड़।
वातल (त्रि.) तूफ़ानी। वायु उत्पन्न करने वाला। (पुं.) वात। रोग भेद।
वातव्याधि (पुं.) बाई की बीमारी।
वातार (पुं.) बादाम। फलदार पेड़।
वातापि (पुं.) दैत्य विशेष जो अगस्त्य द्वारा मारा गया था।
वातापिसूदन (पुं.) अगस्त्य मुनि।
वातामोद (स्त्री.) कस्तूरी।
वातायन (न.) झरोख। खिड़की। (पुं.) घोड़ा।
वातायु (पुं.) हिरन।
वातारि (पुं.) एरण्ड का पेड़। शतमूली। शेफालिका।

यवानी। भार्ङ्गी। स्नुही। विडङ्ग। शूरण जन्तु का लाख।
वाति (पुं.) वायु। हवा।
वातिक (पुं.) बाई की बीमारी।
वातीय (न.) काँजी।
वातुल (त्रि.) वात उत्पन्न करने वाला। उन्मत्त। (पुं.) अन्धड़। हवा का भँवर।
वातूल (त्रि.) देखो वातुल।
वात्या (स्त्री.) तूफान।
वात्सक (न.) बछड़ों का समूह।
वात्सल्य (न.) स्नेह जो अपने से छोटों जैसे पुत्रादि,- में होता है।
वात्सि; वात्सी (स्त्री.) ब्राह्मण के औरस से उत्पन्न शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न लड़की।
वात्स्य (पुं.) वत्स की संतान।
वात्स्यायन (पुं.) काम सूत्र के रचयिता। न्यायसूत्र के एक टीकाकार।
वाद (पुं.) बातचीत। वर्णन। वाद विवाद। तर्कना। न्याय का पारिभाषिक शब्द विशेष।
वादन (न.) बाजे का शब्द।
वादर (न.) सूती कपड़ा।
वादरायण (पुं.) वेदव्यास।
वादाम (बादाम) (न.) फल विशेष।
वादित्र (न.) मृदङ्ग आदि बाजा।
वादिन् (पु.) बोलने वाला। वक्ता। वादी। विवाद कर्त्ता।
वाद्य (न.) हर प्रकार का बाजा।
वाध् (क्रि.) बिगाड़ना। खिजाना। कष्ट देना। विवश करना।
वाधं (पुं.) टूट। रोक। रुकावट। विघ्न।
वाधुक्य वाधूक्य (न.) विवाह।
वाध्रीणस (पुं.) गेंड़ा।
वान (त्रि.) सूखा। बनैला। (न.) सूखे फल।
वानप्रस्थ (पुं.) तीसरा आश्रम।
वानर (पुं.) बन्दर
वानरेन्द्र (पुं.) सुग्रीव। बाली।
वानस्पत्य (पुं.) आम का पेड़।
वानायु (पुं.) अरब देश।
वानायुज (पुं.) अरबी घोड़े।
वानीर (पुं.) एक प्रकार का बेत।
वानरिक (पुं.) मूञ्ज।
वान्त (त्रि.) उगला हुआ।
वाप (पुं.) बुनाव। मुण्डन। बीज आदि का लगाना।
वापि, वापी (स्त्री.) बाँवली। बड़ा कूप जिसमें जल तक पहुँचने को चक्करदार सीढ़ियाँ हों।
वापीह (पुं.) चातक। पपीहा।
वाप्य (न.) कुष्ठरोग की औषध। (त्रि.) बाँवली का।
वाम (त्रि.) बायां। उल्टा। दुष्ट। प्यारा। मनोहर। छोटा। (पुं.) जीवधारी। शिव। कामदेव। सर्प। छाती। निषिद्ध कर्म यथा मद्यपानादि। (न.) धन। अधिकार।
वामदेव (पुं.) ऋषि विशेष। शिव।
वामन (त्रि.) बौना। छोटा। अल्प। घटाया हुआ। कम किया गया। झुकाया गया। (पुं.) विष्णु का पांचवा अवतार। दक्षिण दिक्कुञ्जर। काशिका वृत्ति के रचयिता का नाम।
वामनी (स्त्री.) बौनी स्त्री। घोड़ी। योनि का रोग विशेष।
वामलूर (पुं.) वल्मीक। वल्मी।
वामलोचना (स्त्री.) सुन्दर नेत्र वाली स्त्री।
वामा (स्त्री.) स्त्री। बड़ी प्यारी स्त्री। गौरी। लक्ष्मी। सरस्वती।
वामाचार (पुं.) उल्टी चाल। तन्त्र का आचार विशेष।
वामी (स्त्री.) घोड़ी गधी। थिनी। गीदड़नी।
वामोरु (स्त्री.) सुन्दर वस्त्र वाली स्त्री।
वायवी (स्त्री.) उत्तर पश्चिम दिशा।
वायव्य (त्रि.) पवन सम्बन्धी।
वायस (पुं.) काक। तारपीन।
वायसाराति (पुं.) उल्लू।
वायु (पुं.) पवन। पवनदेव। प्राणवायु।
वायुपुत्र (पुं.) हनुमान। भीमसेन।
वायुभक्ष (पुं.) सर्प।
वायुवर्त्मन् (न.) आकाश।
वायुवाह (पुं.) धुआं। धूम।
वायुवाहिनी (स्त्री.) शरीर की नाड़ी विशेष।
वायुसखः (पुं.) अग्नि। आग।

वाप्वास्पद (न.) आकाश।
वार् (न.) पानी। जल।
वार (पुं.) ढकना। समूह। झुण्ड। गिरोह। दिवस जैसे रविवार आदि। समय। बारी। अवसर। द्वार। नदी का दूसरा सामने वाला तट। शिव। पूँछ। (न.) जलसंघ। मदिरा रखने का पात्र।
वारक (त्रि.) रोकने वाला। हटाने वाला। घोड़े की चाल विशेष। घोड़े का चिह्न।
वारण (न.) रोक। निषेध। पकड़ (पुं. न.) हाथी। कवच।
वारणवुशा, बारणवुसा (स्त्री.) केले का पेड़।
वारणवल्लभा (स्त्री.) केला। हथनी।
वारमुख्या (स्त्री.) वेश्या।
वारंवार (अव्य) बेर बेर।
वारयितृ (पुं.) पति। मालिक। (त्रि.) हटाने वाला।
वारयोषा (स्त्री.) वेश्या। रण्डी।
वारबाण (पुं. न.) कवच।
वाराङ्गना (स्त्री.) रण्डी।
वाराणसी (स्त्री.) काशी।
वाराह (पुं.) शूकर। वृक्ष विशेष। (त्रि.) शूकर सम्बधी।
वाराहकल्प (पुं.) जिस कल्प के प्रारम्भ में वाराह अवतार पहले हुआ हो। वर्तमान कल्प में श्वेत वाराह अवतार हुआ था इस लिए इसका नाम श्वेत वाराह कल्प है।
वाराहपुराण (न.) अठारह पुराणों में से एक।
वाराही (स्त्री.) सुअरिया। भूमि। पृथिवी। शूकर के रूप में विष्णु की शक्ति। मात्र विशेष।
वाराहीकन्द (पुं.) एक प्रकार का कन्द।
वारि (न.) पानी। रस। गन्ध। पदार्थ।
वारिचर (पुं.) पानी में चलने वाले जीवधारी जन्तु।
वारिज (न.) कमल। लौंग। निमक। गौर सुवर्ण। (पुं.) शंख। घोंघा।
वारित्रा (स्त्री.) छाता। घूघी आदि वह वस्तु जो पानी से भीगने से बचावें।
वारिद (न.) मेघ। वादल। मौथा। (त्रि.) पानी देने वाला।
वारिधि (पुं.) समुद्र।
वारिमसि (पुं.) मेघ। बादल।
वारिराशि (पुं.) समुद्र।
वारिरुह (न.) कमल।
वारिवाह (पुं.) मेघ।
वारिश (पुं.) विष्णु।
वारीश (पुं.) समुद्र। वरुण।
वारु (पुं.) विजय। कुञ्जर।
वारुठ (पुं.) अर्थी। ठठरी। यान जिसपर मुर्दा लादा जाता है।
वारुण (त्रि.) वरुण सम्बन्धी। (पुं.) भारतवर्ष के नौ खण्डों में से एक। (न.) जल।
वारुणि (पुं.) अगस्त्य। भृगु।
वारुणी (स्त्री.) पश्चिम दिशा। मदिरा शतभिषज। दूर्वा घास। वरुण पत्नी।
वारुण्ड (पुं.) सर्पराज (न.) आँख और कान का मैल। नाग से पानी उलीचने का पात्र।
वारुण्डी (स्त्री.) द्वार की सीढ़ी।
वार्णिक (पुं.) लेखक। क्लर्क।
वार्तिका (स्त्री.) बटेर पक्षी।
वार्त्त (त्रि.) तनुदुरुस्त। हल्का। निर्बल। असार। पेशे वाला। (न.) स्वास्थ्य। चातुर्य्य।
वार्त्ताक (पुं.) बैंगन। भंटा।
वार्त्तावह (पुं.) दूत। जासूस।
वार्त्तिक (न.) वृति स्वरूप में रचा गया ग्रन्थ विशेष। गद्य ग्रन्थ।
वार्द्धक्य (न.) बुढ़ापा।
वार्द्धि (पुं.) समुद्र।
वार्द्धुषि (पुं.) सूदखोर। ब्याज खाने वाला।
वार्द्धुषिन् (त्रि.) ब्याज पर जीने वाला।
वार्द्धुष्य (न.) ऋण दान।
वार्ध्रीणस् (पुं.) गैंड़ा। जङ्गली बकरा जिसके लम्बे कान होते हैं।
वार्मणम् (न.) कवच पहिने हुए लोगों का समूह।
वार्मुच (पुं.) मेघ। बादल।
वार्षिक (त्रि) सालाना। बर्साती। (न.) एक औषध विशेष।
वार्षिला (स्त्री.) नरक विशेष।
वार्ष्णेय (पुं.) कृष्ण। नल के सारथि का नाम।

वार्हद्रथ (बार्हद्रथ) **वार्हद्रथि** (बार्हद्रथि) (पुं.) जरासन्ध

वालि (बालि) (पुं.) सुग्रीव का बड़ा भाई।

वालुका (बालुका) (स्त्री.) रेती। चूर्ण। कपूर।

वालुकाका, वालुकाकी (स्त्री.) ककड़ी।

वाल्क (न.) छाल का बना कपड़ा।

वाल्मीकि (पुं.) रामायण बनाने वाले मुनि का नाम। इस नाम एक चाण्डाल। महाभारत में पाण्डवों के अवमेध की साङ्गता द्योतक शंख इसी की पूजा और भोजन होने पर बजा था।

वावदूक (त्रि.) वक्ता। बातूनी।

वावव (पुं.) तुलसी या उसी प्रकार का तीव्र गन्ध वाला वृक्ष।

वावुट (पुं.) नाव। डोंगी।

वावृत् (क्रि.) चुनना। प्यार करना। खोजना। सेवा करना।

वाश् (क्रि.) गुर्राना। गरजना। चीखना। (पशु पक्षियों की वोली) बुलाना।

वाशित (न.) पक्षियों की बोली। बुलाना। पुकारना।

वाशिता (स्त्री.) हथिनी। स्त्री।

वाशिष्ठ वासिष्ठ (न.) वसिष्ठमुनि का उपदेश दिया हुआ योग विद्या का ग्रन्थ। योगवासिष्ठ।

वाश्र (न.) घर। चौराहा। (पुं.) दिन।

वाष्प, वास्प (पुं.) भाप। आँसू। तकिया।

वास् (क्रि) सुगन्धित करना।

वास (पुं.) घर। वस्त्र। रहना। सुगन्ध।

वासक (पुं.) वृक्ष विशेष। अडूसा। दमे की उत्तम औषधि।

वासकसज्जा (स्त्री.) नायिका विशेष।

वासगृह (न.) घर के बीच का कमरा।

वासतेयी (स्त्री.) रात।

वासन (न.) धूप देना। कपड़ा। रहने का स्थान। ज्ञान।

वासना (स्त्री.) प्रत्याशा। भरोसा। खूशबूदार करना।

वासन्त (पुं.) ऊंट। हाथी का बच्चा। कोयल। दक्षिणी वायु जो मलय पर्वत पर होकर चलता है। मूँग।

वासन्ती (स्त्री.) एक प्रकार की चमेली। बड़ी मिर्च। पुष्प विशेष। एक उत्सव जो कामदेव का कहलाता है। लता विशेष।

वासर (पुं. न.) दिन। नाग भेद।

वासवदत्ता (स्त्री.) ग्रन्थ विशेष। एक नायिका का नाम जिसका परिचय भिन्न भिन्न ग्रन्थों में भिन्न भिन्न प्रकार का पाया जाता है।

वासस् (न.) कपड़ा। वस्त्र।

वासागार (न.) रहने योग्य गृह।

वासि, वासी (स्त्री.) एक प्रकार की कुल्हाड़ी। रहने वाला।

वासित (त्रि.) सुरभीकृत। बसाया गया। सुगन्ध युक्त किया गया।

वासु (पुं.) विष्णु।

वासुकि (पुं.) सर्पराज।

वासुदेव (पुं.) श्रीकृष्ण। विष्णु।

वासू (स्त्री.) सोलह वर्ष की लड़की।

वास्तव (न.) असल। सत्य।

वास्तविक (त्रि.) असल में। सत्य सत्य।

वास्तव्य (त्रि.) रहने वाला। रहने योग्य।

वास्तु (पुं.) घर बनाने योग्य भूमि। घर। बथुवा का शाक।

वास्तेय (त्रि.) रहने योग्य।

वास्तोष्पति (पुं.) इन्द्र। घर का मालिक।

वास्त्र (पु.) कपड़े के पर्दे से ढका रथ।

वाह (क्रि.) यत्न करना।

वाह (पु.) कुली। मजूर। ढोने वाले जानवर। घोड़ा बैल भैंसा आदि। गाड़ी। रथ। बाँह। हवा। चार भार का माप विशेष।

वाहन (न.) सवारी।

वाहिनी (स्त्री.) सेना। नदी।

वाहिनीपति (पुं.) सेना का मालिक। समुद्र।

वाहीक (पुं.) जाति विशेष।

वाहु (बाहु) (पुं.) वाह। रेखा विशेष।

वाहुमूल (बाहुमूल) (न.) काँख। बगल।

वाह्यम् (न.) अश्वादि सवारी। बंदर। (त्रि.) बाहिर का।

वाह्लिक, वाह्लीक (पुं.) बलखबुख़ारा देश। इस देश में उत्पन्न हुआ घोड़ा। (न.) केसर। हींग।

वि (अव्य.) नियोग। विशेष। असहन। निग्रह। हेतु। अव्याप्ति। ईषत्। परिभव। शुद्धि। अवलम्बन। ज्ञान। गति। आलस्य। पालन। इसको संज्ञा के पूर्व लगाने से उसके अनेक प्रकार के अर्थ हो जाते हैं।

वि (पुं. स्त्री.) पक्षी। घोड़ा। जानेवाला। सोम।

विंश (त्रि.) बीसवाँ।

विंशक (नं.) बीस।

विंशति (स्त्री.) कोड़ी। बीस।

विशतिक (त्रि.) बीस के योग्य अथवा बीस के मूल्य का।

विंशतितम (त्रि.) बीसवाँ।

विक (न.) दूध, उस गाय का जो हालही में ब्यायी हो।

विकच (पुं.) नागा। बौद्ध सन्यासी। बहुत बाल वाला। ध्वज। केतु। झण्डा। खिला हुआ। (त्रि.) केशशून्य।

विकट (त्रि.) विकृत। विशाल। बिगड़ा हुआ। सुन्दर। नीचे ऊपर। (पुं.) फोड़ा।

विकण्टक (पुं.) वृक्ष विशेष। (त्रि.) शत्रु रहित।

विकत्थन (न.) आत्मश्लाघा। बढ़ कर बोलना।

विकर्तन (पुं.) सूर्य। अर्क वृक्ष। छुरी चलाना।

विकर्मस्थ (पु. त्रि.) निन्द्य आचरण में लिप्त। अनाचारी।

विकल (त्रि.) व्याकुल। घबराया हुआ। बिगड़ा हुआ।

विकलाङ्ग (त्रि.) न्यूनाधिक अङ्ग वाला।

विकल्प (पुं.) सन्देह। पक्षान्तर प्राप्त।

विकश्वर } **विकस्वर** } (त्रि.) प्रकाशशील। चमकने वाला।

विकषा (स्त्री.) मजीठ।

विकशित } **विकसित** } (त्रि.) प्रकाश युक्त। खिला हुआ।

विकार (पुं.) परिवर्तन। बीमारी।

विकाल (पुं.) विरुद्ध समय अर्थात् वह समय जिसमें देव पितृ कोई भी कार्य न किया जाय। सांझ।

विकाश (न.) अकेले। प्रकाश। चमक। आकाश। स्वर्ग।

विकाशिन (त्रि.) खिला हुआ।

विकिर (पुं.) पक्षी। कुश। सफेद सरसों जो विघ्न विनाशनार्थ इधर उधर छितराई जाती है।

विकिरण (न.) फेंकना। मारना। जानना। (पुं.) आक का पेड़। (त्रि.) किरण रहित।

विकीर्ण (त्रि.) विक्षिप्त।

विकुर्वाण (त्रि.) बिगड़ा हुआ।

विकुक्षि (पुं.) सूर्यवंशी एक राजा।

विकृत (त्रि.) वीभत्स। निन्द्य। मलिन। रोगी।

विक्रम (पुं.) बहुत उत्साह करने वाला। त्रिविक्रम। भगवान्। राजा विक्रमादित्य। चरण। बड़ी वीरता। साठ वर्षों में से एक। बिल्कुल अनुक्रम से।

विक्रमादित्य (पुं.) उज्जयिनी का एक राजा विशेष, जिस के नाम का संवत् चल रहा है।

विक्रमिन् (पुं.) विष्णु। सिंह। (त्रि.) वीर।

विक्रय (पुं.) बेचना।

विक्रयिक (पुं.) बेचने वाला।

विक्रयिन् (त्रि.) बेचने वाला।

विक्रान्त (पुं.) शेर। वीर। विक्रम। बहादुरी।

विक्रिया (स्त्री.) विकार। बदलना। वस्तु का अन्यथा परिणाम।

विक्रेय (त्रि.) बेचने योग्य पदार्थ।

विक्लव (त्रि.) घबराहट।

विक्लिन्न (त्रि.) गीला। टूटा हुआ। पुराना।

विक्षेप (पुं.) त्याग। प्रेरणा। फेंकना।

विक्षेपशक्ति (स्त्री.) ब्रह्माण्ड को रचने वाली शक्ति। वेदान्त के अनुसार अविद्या की एक शक्ति।

विख्य (त्रि.) नकटा।

विख्यात (त्रि.) प्रसिद्ध।

विगणन (न.) गणना करना। गिनना।

विगत (त्रि.) बीता हुआ। प्रमाद रहित।

विगतार्त्तवा (स्त्री.) वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बन्द हो गया हो।

विगम (पुं.) नाश। दूर होना।

विगर्हण (न.) निन्दन। आरोप।

विगर्हित (त्रि.) निन्दित।

विगाढ़ (त्रि.) स्नात। नहाया हुआ।

विगान (न.) निन्दा। विशेष गाया हुआ। प्रशंसा करना।

विगीत (त्रि.) निन्दित। गाया हुआ। प्रशंसा किया हुआ।

विगुण (त्रि.) गुणरहित। विशेष गुणवान्।

विगृहीत (त्रि.) पकड़ा हुआ। जुदा किया। व्युत्पत्ति किया हुआ शब्द।

विग्र (त्रि.) नकटा।

विग्रह (पुं.) लड़ाई। विशेष ज्ञान। समास।

विघटिका (स्त्री.) एक पल।

विघटित (त्रि.) वियोजित। विशेष रीत्या बनाया हुआ।

विघट्टित (त्रि.) जुदा किया हुआ।

विघस (पुं.) आहार (न.) मोम।

विघसाशिन् (त्रि.) देव पितृ कार्य से बचा हुआ खाने वाला।

विघात (पुं.) व्याघात। चोट। रुकावट। विघ्न।

विघातिन् (त्रि.) निवारक। हटाने वाला। नाश करने वाला। मारने वाला। हत्यारा।

विघ्न (पुं.) व्याघात। रुकावट। कृष्ण पाक फला नामक एक बूटी।

विघ्ननाशक (पुं.) विघ्नों को मिटाने वाला। गणेश।

विघ्नराज (पुं.) गणेश।

विघ्नित (त्रि.) जिसमें विघ्न हो गया हो।

विच् (क्रि.) अलग करना।

विचक्षण (पुं.) पण्डित। चतुर। (स्त्री.) नाग दन्ती।

विचयन (न.) खोज। चुनाव।

विचर्चिका (स्त्री.) खाज। खुजली।

विचार (पुं.) तत्त्वनिर्णय। विवेक। सोचना।

विचारण (न.) मीमांसा करना। विचार करना।

विचि
विची } (पुं.स्त्री.) तरह। लहर।

विचिकित्सा (स्त्री.) सन्देह। तर्क।

विचित्र (न.) अद्भुत। चब्बेदार। भिन्न भिन्न प्रकार का। सुन्दर।

विचित्रवीर्य्य (पुं.) शान्तनु राजा का बेटा। (त्रि.) अद्भुत पराक्रम वाला।

विचित्राङ्ग (पुं.) चीता। व्याघ्र। (त्रि.) अद्भुत शरीर वाला।

विचेतस् (त्रि.) ज्ञानशून्य। मूर्ख। अज्ञानी। विकल। शोकान्वित। दुष्ट।

विचेष्टित (त्रि.) चेष्टाशून्य।

विच्छ् (क्रि.) चमकना। जाना।

विच्छन्दक (पुं.) ईश्वर गृह। कई खण्ड का बड़ा भवन।

विच्छाय (न.) पक्षियों के समूह की छाया। (त्रि.) छाया रहित।

विच्छित्ति (स्त्री.) अङ्गराज। एक प्रकार का चन्दन। हार विशेष। छेद। टूट। नाश। विच्छेद। स्त्रियों की चेष्टा विशेष।

विच्छिन्न (त्रि.) विभक्त। पाया हुआ। छेदन।

विच्छेद (पुं.) वियोग। विछोह। विभाग। अलगाव।

विज् (क्रि.) पृथक् करना। डरना। काँपना।

विजन (त्रि.) निर्जन। एकान्त। अकेला स्थान।

विजनन (न.) गर्भमोचन। प्रसव। निकलना।

विजय (पुं.) अर्जुन। विमान। यमराज। जीत। अपमान पूर्वक पकड़ना।

विजयकुञ्जर (पुं.) राज वाहन गज। वह प्रधान हाथी जिस पर बैठ कर रण में विजय किया जाय।

विजया (स्त्री.) आश्विन शुक्ला १० मी.। उमा की एक सखी। जयन्ती। शेफालिका। मजीठ। भाँग। द्वादशी विशेष। सप्तमी विशेष।

विजातीय (त्रि.) भिन्न जाति वाला।

विजिगीषा (स्त्री.) जीतने की अभिलाषा। निज उदर पूर्ति की इच्छा से पर निन्दा में प्रवृत्त होना।

विजित (न.) वन। जङ्गल। वृक्ष समूह।

विजृम्भण (न.) विकाश। जमुहाई।

विजृम्भित (त्रि.) विकसित। खिलाहुआ। प्रकाश। चमक।

विज्ञ (पु.) प्रवीण। पण्डित।

विज्ञात (त्रि.) प्रसिद्ध। जाना हुआ।

विज्ञान (न.) विशेष ज्ञान। वेदान्त में कहा हुआ अविद्या की वृत्ति का भेद।

विज्ञानमय कोष (पुं.) ज्ञान की इन्द्रिय और बुद्धि।

विज्ञानिक (त्रि.) विज्ञान जानने वाला।

विट् (क्रि.) चिल्लाना। शब्द करना।

विट (पुं.) गुण्डा। जार। पर्वत विशेष। चूहा। खदिर वृक्ष। नारङ्गी का वृक्ष।

विटंक (न.) कबूतरों की काबुक। कबूतरों के बैठने की छतरी।

विटप (पुं.न.) शाखा। पल्लव। विस्तार। (त्रि.) विटपालक।

विटपिन् (पुं.) वृक्ष। पेड़।

विटि, विटी (स्त्री.) पीत चन्दन।

विट्चर (पुं.) गाँव का पालतू सूअर।

विट्पति (पुं.) जमाई।

विड् (क्रि.) चिल्लाना।

विड (न.) लवण भेद। एक प्रकार का नोन।

विडङ्ग (पुं. न.) कृमिनाशक एक औषधि। बाय विडङ्ग। (त्रि.) अभिज्ञ। जानने वाला।

विडम्बन (नं) तिरस्करण। अनुकरण। (स्त्री.) हँसी।

विड़ाल (विडाल) (पुं.) विल्ला। नेत्रा का गोला। नेत्र की औषधि विशेष।

विड़ीन (न.) पक्षिओं की एक प्रकार की गति।

विडोजस, विडौजस (पुं.) इन्द्र।

विड्वराह (पुं.) ग्राम शूकर।

वितंस (पुं.) पक्षियों को बाँधने का फन्दा आदि।

वितण्डा (स्त्री.) एक प्रकार के वाद-प्रतिवाद का ढङ्ग। शास्त्र की अल्पज्ञता छिपाने के लिए मनगढ़न्त बातों से वाद-विवाद करना। अपना पूर्वपक्ष समर्थन करने के विना ही परपक्ष को हठ से दबाना। झूठा झगड़ा। व्यर्थ का झगड़ा। बकवाद।

वितथ (त्रि.) झूठा। अयथार्थ।

वितद्रु (स्त्री.) पञ्जाब की एक नदी।

वितरण (न.) दान। देना। बाँटना। मुफ्त देना।

वितर्क (पुं.) सन्देह। तर्क। बात की यथार्थता पर ऊहापोह करना।

वितर्दि (स्त्री.) वेदी।

वितल (न.) पाताल विशेष।

वितस्ति (पुं. स्त्री.) बालिश्त। बारह अङ्गुल का माप।

वितान (न. पुं.) चन्दौवा। शामियाना। वृत्ति विशेष। अवसर। यज्ञ। फैलाव।

वित् (क्रि.) त्यागना।

वित्त (न.) धन। (त्रि.) विचारा गया। जाना गया। पाया गया।

वित्ती (स्त्री.) ज्ञान। लाभ। विचार।

वित्तेश (पुं.) कुबेर। धन का स्वामी।

विथ् (क्रि.) मांगना।

विद् (क्रि.) लाभ होना। पाना। विचार करना। होना। जानना।

विदग्ध (त्रि.) नगरवासी। होशियार। पण्डित। चतुर।

विदग्धा (स्त्री.) नायिका विशेष। चतुर और चलती स्त्री।

विद् (पुं.) पण्डित। वेत्ता। बुध ग्रह।

विदथ (पुं.) योगी। कृतकृत्य। सफल मनोरथ।

विदर्भ (पुं. स्त्री.) वह देश जहाँ दर्भ न हों। रुक्मिणी के पिता भीष्मक की राजधानी, जो हाल में अमझरा नाम से प्रसिद्ध है। यह उज्जैन जिले में है रुक्मिणी-हरण के चिह्न भी वहाँ के पर्वत में है। वही प्राचीन समय में कुण्डिनपुर था जो रुक्मैया ने इटारो लौट कर बसाया था। राजधानी धारा और अमझरा :

विदल (न.) दो भाग किया हुआ अनार।

विदा (स्त्री.) बुद्धि।

विदार (पुं.) पानी का प्रवाह। विदारण।

विदारक (न.) पानी ठहरने का गढ़ा। (त्रि.) फाड़ने वाला। (पुं.) पानी के बीच का वृक्ष।

विदारण (न.) फाड़ना। मारना। (पुं.) कनेर का पेड़।

विदाहिन् (न.) जलाने वाली वस्तु।

विदित (त्रि.) जाना हुआ। प्रार्थित।

विदिश् (स्त्री.) कोण।

विदुर (त्रि.) नागर। (पुं) कौरवों के मन्त्री का नाम।

विदूर (न.) बहुत दूर। (पुं.) मूँगा के उत्पन्न होने का स्थान।

विदूरथ (पुं.) सूर्य्यवंशी एक राजा।

विदूराद्रि (पुं.) एक पर्वत।

विदूषक (पुं. त्रि.) श्रृङ्गार रस का सहायक विशेष।

नाटक का मसखरा पात्र। नट। निन्दक। अपनी ही हाँकने वाला।
विदेश (पुं.) देशान्तर। परदेश।
विदेह (पुं. त्रि.) निमिराजा के देह त्याग के उपरान्त के राजा। जनक। कुशध्वज आदि। मैथिल देश। (ा) मिथिलापुरी। जनकपुरी। (त्रि.) मुमुक्षु और शरीर सम्बन्ध से शून्य।
विदेहकैवल्य (न.) मोक्ष विशेष जो दत्तात्रेय के उपदेश से जनक राजा को प्राप्त हुआ था।
विद्ध (त्रि.) छिद्रित। क्षिप्त। बाधित। ताड़ित। वेधा गया।
विद्यमान (पुं.) वर्तमान काल। (त्रि.) मौजूद।
विद्या (स्त्री.) ज्ञान। मन्त्र विशेष।
विद्याचन
विद्याचरण } (त्रि.) विद्या में प्रसिद्ध।
विद्याचुञ्चु (पुं.) विद्या द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त।
विद्यादान (न.) पढ़ाना। पुस्तक का दान।
विद्याधन (न.) विद्या द्वारा उपार्जित धन (शास्त्रार्थ करके या विद्या दिखा कर)।
विद्याधर (पुं.) देवता विशेष।
विद्युत् (स्त्री.) बिजली। संध्या।
विद्युत्प्रिय (न.) काँसा धातु। रेशम। कोयला।
विद्युन्माला (स्त्री.) छन्द जिसका प्रत्येक पद आठ अक्षर वाला होता है। बिजुलियों की कतार।
विद्रव
विद्राव } (पुं.) पलायन। बहाव। युद्ध।
विद्रुत (त्रि.) बहा हुआ। भागा हुआ।
विद्रुम (पुं.) मूँगे का पेड़।
विद्वत्कल्प (त्रि.) थोड़ी सी कसर वाला पण्डित।
विद्वत्तम (पुं.) बहुत विद्वान्।
विद्वद्देशीय (त्रि.) थोड़ी कसर वाला पण्डित।
विद्विस् (पुं.) शत्रु। वैरी।
विद्वेष (पुं.) शत्रुता।
विद्वेषण (न.) तान्त्रिक अभिचार विशेष। शत्रुओं में परस्पर विद्वेष उत्पन्न कराने की प्रक्रिया।
विधवा (स्त्री.) राँड। वह स्त्री जिसका पति मर गया हो।
विधातृ (पुं.) प्रजापति। ब्रह्मा। कामदेव। मदिरा। भृगु मुनि के पुत्र। कार्यकर्ता।
विधान (न.) विधि। प्रकार। कार्य का निर्देश। गजभक्ष्यान्न।
विधानज्ञ (पुं.) पण्डित। विधि जानने वाला। कार्यकुशल। होशियार।
विधायक (त्रि.) विधानकर्त्ता। कार्य का व्यवस्थापक।
विधि (पुं.) ब्रह्मा। भाग्य। क्रम। प्रवर्त्तना रूप नियोग। विष्णु। कर्म्म। गजभक्ष्यान्न वैद्य। नयी आज्ञा देना। व्याकरण का सूत्र विशेष। आईना।
विधिज्ञ (त्रि.) विधि को जानने वाला।
विधित्सा (स्त्री.) करने की चाह।
विधिदेशक (पुं.) गुरु। सदस्य।
विधिवत् (अव्य.) विधि के अुसार। यथाविधि।
विधु (पुं.) चन्द्रमा। विष्णु। ब्रह्मा। शंकर। कपूर। वायु।
विधुत (त्रि.) काँपा हुआ। त्यक्त।
विधुनन (पुं.) हिलाना। कँपाना। फटकारना।
विधुन्तुद (पुं.) राहु। बादल।
विधुर (त्रि.) विश्लिष्ट। विकल। (न.) अलग होना।
विधुवन (न.) कम्पन।
विधूत (त्रि.) कम्पित। त्यक्त।
विधेय (त्रि.) करने योग्य। आज्ञाकारी। समझाया हुआ।
विध्वंस (पुं.) नाश।
विनत (त्रि.) प्रणत। झुका हुआ। टेढ़ा। शिक्षित। गरुड़ की माता। कश्यप की स्त्री।
विनतासूनु (पुं.) अरुण और गरुड़।
विनय (पुं.) शिक्षा। प्रणाम। अनुनय। (त्रि.) निभृत। क्षिप्त। जितेन्द्रिय।
विनयग्राहिन् (त्रि.) अधीन। आज्ञाकारी।
विनयस्थ (त्रि.) कहना मानने वाला।
विनशन (न.) विनाश। कुरुक्षेत्र।
विना (अव्य.) बगैर। वर्जन।
विनाकृत (त्रि.) त्यक्त। रहित।
विनायक (पुं.) गणेश। गरुड़। विघ्न। (त्रि.) गुरु। विनय वाला। नम्र।
विनाश (पुं.) ध्वंस।
विनाशोन्मुख (त्रि.) नष्टप्राय। विनाश के लिये उद्यत।
विनाह
वीनाह } (पुं.) कूप का ढकना।
विनिद्र (त्रि.) जागा हुआ।

विनिमय (पुं.) बदला। बटाना। बन्धक। अमानत। एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना।
विनियोग (पुं.) काम में लगाना।
विनीत (त्रि.) विनय युक्त। दण्ड पाया हुआ। फेंका गया। दूर किया हुआ। (पुं.) सिखाया हुआ। अश्व। वृक्ष विशेष।
विनेतृ (पुं.) शिक्षक। राजा।
विनेय (त्रि.) सिखाने योग्य। पाने योग्य।
विनोक्ति (स्त्री.) अलंकार विशेष।
विनोद (पुं.) खेल। कौतूहल। खण्डन।
विन्दु (बिन्दु) (पुं.) कण। बिन्दी। अनुस्वर। चिह्न। (त्रि.) जानने वाला। जानने योग्य।
विन्दुजाल (बिन्दुजाल) (न.) हाथी की सूँड पर का विन्दु के समान चिह्न।
विन्दुपत्र (बिन्दुपत्र) (पुं.) भोजपत्र।
विन्दुसरस् (बिन्दुसरस्) (न.) एक तालाब जो कर्दम ऋषि की तपस्या से सन्तप्त होकर दयार्द्र हो कर श्री विष्णु ने आँसू बहाये उनका भर गया। "बिन्दु सरोवर" यह गुजरात में सरस्वती नदी किनारे सिन्धुपुर में प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है।
विन्ध्य (न.) व्याध। इलायची। पर्वत विशेष।
विन्ध्यवासिनी (स्त्री.) मार्कण्डेय पुराणानुसार एक देवी। श्रीमद्भागवत के अनुसार यशोदा के गर्भ से उत्पन्न विष्णु की माया। यह स्थान मिरजापुर जिले में इसी नाम से प्रसिद्ध विन्ध्याचल पहाड़ पर है।
विन्ध्याटवी (स्त्री.) विन्ध्याचल का जङ्गल।
वित्र (त्रि.) विचारा हुआ। पाया हुआ। ठहरा हुआ।
विन्यास (पुं.) ठिकाना। रचना। तान्त्रिक क्रिया विशेष। अङ्गन्यास आदि।
विपक्रिम (त्रि.) बहुत पक कर तैयार हुआ।
विपक्ष (त्रि.) शत्रु। वैरी। शत्रु पक्ष को ग्रहण करने वाला।
विपञ्ची (स्त्री.) वीणा।
विपण (पुं.) बिक्री करना।
विपणि (पुं. स्त्री.) दुकान। हाट।
विपत्ति (स्त्री.) आपद।
विपथ (पुं.) निन्दित मार्ग।
विपद्, विपदा (स्त्री.) विपत्ति।
विपन्न (त्रि.) विपद् में फँसा हुआ।
विपरीत (त्रि.) प्रतिकूल।
विपर्य्यय (पुं.) उलटा।
विपर्य्यस्त (त्रि.) व्यतिक्रान्त। उलटा हुआ।
विपर्य्यास (पुं.) विपरीत। उल्टापन।
विपल (पुं.) अति सूक्ष्म समय।
विपश्चित् (पुं.) शिक्षित। दाता। पण्डित। ऋषि। ज्ञानी।
विपाक (पुं.) पकाना। पसीना।
विपाश् विपाशा (स्त्री.) व्यास नदी।
विपिन (न.) वन।
विपुल (त्रि.) विस्तीर्ण। अगाध। बहुत। सुमेर की पश्चिम दिशा का एक पहाड़। मेरु हिमालय। (स्त्री.) आर्य्या छन्द विशेष।
विप्र (पुं.) ब्राह्मण। पीपल का पेड़।
विप्रकार (पुं.) अपकार। बुराई। तिरस्कार।
विप्रकर्ष (पुं.) दूर होना।
विप्रकृत (त्रि.) अपमानित। उत्पीडित।
विप्रकृष्ट (त्रि.) दूर रहने वाला।
विप्रचित्ति (स्त्री.) एक दैत्य। एक राक्षस।
विप्रतिपत्ति (स्त्री.) विरोध। संशय।
विप्रतिपन्न (त्रि.) सन्देह युक्त। कृत विरोध।
विप्रतिसार, विप्रतीसार (पुं.) अनुताप। पछतावा। रोष।
विप्रयुक्त (त्रि.) विरहित। बिछुड़ा हुआ।
विप्रयोग (पुं.) ठगी। विरोध। झगड़ा। वियोग।
विप्रलब्ध (त्रि.) ठगा हुआ। (स्त्री.) एक प्रकार की नायिका।
विप्रलम्भ (पुं.) विसंवाद। झगड़ा। ठगी। विछोह। श्रृंगार की एक अवस्था।
विप्रश्निका (स्त्री.) दैव की जानने वाली स्त्री। ज्योतिषिनी। टोनहाइन।
विप्रसात् (अव्य.) ब्राह्मण को देना।
विप्रस्व (न.) ब्राह्मण का धन।
विप्रिय (पुं.) अपराध। अनप्यारा। वैरी।
विप्रुष (स्त्री.) बिन्दु। बूंद। वेदाध्ययन काल में मुख से निकली पानी की बूंद।

विप्रोषित (त्रि.) निर्वासित। देश से निकाला हुआ। परदेश में गया।
विप्लव (पुं.) घबराहट। उपद्रव। बिगाड़। खलबली। गदर।
विप्लाव (त्रि.) घोड़े की गति विशेष। डूबा। चारों ओर से पानी का उमड़ाव।
विप्लुत (त्रि.) आफत में फँसा हुआ। बिगड़ा हुआ। उपद्रुत।
विफल (त्रि.) निरर्थक। निष्फल।
विफला (स्त्री.) केतकी। केवड़ा।
विवध (पुं.) एकत्र किये हुए चांवल आदि।
विबन्ध (पुं.) रोग विशेष।
विबुध (पुं.) पण्डित। देवता।
विभक्त (त्रि.) बाँटा हुआ।
विभक्ति (स्त्री.) विभाग। व्याकरण में सुप् तिङ् प्रत्यय।
विभव (पुं.) धन। मोक्ष। ऐश्वर्य। एक वर्ष का नाम।
विभा (स्त्री.) किरण। शोभा। प्रकाश।
विभाकर (पुं.) सूर्य्य। अर्कवृक्ष।
विभाग (पुं.) भाग। हिस्सा। बटखरा।
विभाज्य (त्रि.) विभाग योग्य।
विभाण्डक (पुं.) मुनि विशेष। श्रृङ्ग ऋषि के पिता।
विभात (पुं.) परिचित। मित्र। उत्तेजन देने वाला।
विभावना (स्त्री.) एक प्रकार का अलंकार, जिसमें कारण के बिना कार्य्य की उत्पत्ति प्रतीत होती है।
विभावरी (स्त्री.) रात्रि। हल्दी। कुट्टनी।
विभावसु (पुं.) सूर्य्य। आक का वृक्ष। आग। चित्रक वृक्ष।
विभाषा (स्त्री.) निषेध। विकल्प।
विभिन्न (त्रि.) प्रकाशित। चमका हुआ। विदलित। खिला हुआ।
विभीतक (पुं.) शत्रुओं को बहुत डराने वाला। रावण का छोटा भाई। नल तृण।
विभीषिका (स्त्री.) भय प्रदर्शन।
विभु (पुं.) प्रभु। महादेव। बलवान्। ब्रह्म।
विभूति (स्त्री.) भस्म। खाक। अणिमा आदि आठ प्रकार का ऐश्वर्य।
विभूषा (स्त्री.) शोभा। भूषण। सजावट।
विभ्रम (पुं.) स्त्रियों के श्रृङ्गार का अङ्ग विशेष। चेष्टा विशेष। शोभा। सन्देह। भ्रमण। स्त्रियों का विलास।
विभ्राज् (त्रि.) भूषण।
विमत (त्रि.) वैरी। शत्रु।
विमनस्, **विमनस्क** (त्रि.) व्याकुल चित्त।
विमर्द (पुं.) मलना। बटना।
विमर्शन (न.) परामर्श। वितर्क। विचार।
विमर्ष (पुं.) विचार। नाटक का एक अङ्ग।
विमल (त्रि.) स्वच्छ। साफ। निर्मल।
विमातृ (स्त्री.) सौतेली माता।
विमातृज (पुं.) सौतेला भाई।
विमान (पुं. न.) माप विशेष। चक्रवर्ती का एक घर। घोड़ा। देवताओं का यान।
विमार्ग (पुं.) बुरा रास्ता। कुपथ। निन्दिताचार।
विमुद्र (त्रि.) खिला हुआ। विकसित।
विम्ब (बिम्ब) (पुं. न.) दर्पण। परछाहीं। कमण्डल। सूर्य्य आदि का मण्डल। विम्बिका फल। कुँदुरू।
वियत् (न.) आकाश। आसमान।
वियद्गङ्गा (स्त्री.) स्वर्गगङ्गा। आकाशगङ्गा।
वियात (त्रि.) धृष्ट। ढीठ। बेशरम। निर्लज्ज।
वियोग (पुं.) विच्छेद। बिछोह।
वियोगिन् (पुं.) चक्रवाक। चकवा पक्षी।
विरक्त (त्रि.) विरत। हटा हुआ।
विरचित (त्रि.) बनाया गया। निर्मित।
विरजस्तमस् (त्रि.) सत्त्व प्रधान।
विरजस् (स्त्री.) ऋतु रहिता स्त्री।
विरजा (स्त्री.) एक नदी जो श्रीवैकुण्ठ लोक में हैं। दूर्वा। दूब। गोलोक वासिनी राधिका की एक सहेली।
विरञ्च, **विरञ्चि** (पुं.) विधाता। ब्रह्मा।
विरत (त्रि.) विरक्त। हटा हुआ।
विरति (त्रि.) निवृत्ति। हटाव।
विरल (त्रि.) अवकाश। खाली। थोड़ा।
विरह (पुं.) विच्छेद। अभाव। बिछोह। विप्रलम्भ नाम की श्रृङ्गार रस की अवस्था विशेष।

विरहित (त्रि.) त्यक्त।
विराग (पुं.) रागाभाव।
विराज् (पुं.) क्षत्रिय। छन्द विशेष। ब्रह्मा की प्रथम सन्तान। सौन्दर्य। प्रकाश।
विराट (पुं.) एक देश। उस देश का राजा। अज्ञात वास की अवधि पाण्डवों ने द्रौपदी सहित इन्हीं राजा के यहाँ रूप बदल कर बिताई थी।
विराणिन् (पुं.) हाथी।
विराध (पुं.) एक राक्षस।
विराधन (न.) पीड़ा
विराम (पुं.) अवसान। अन्त। चुप होना।
विराव (पुं.) शब्द। शब्द रहित।
विरिञ्चि (पुं.) विष्णु। ब्रह्मा। शिव।
विरूढ (त्रि.) दुष्ट रूप वाला। (न.) पीपलामूल।
विरूपाक्ष (पुं.) महादेव। (त्रि.) डरावने नेत्रों वाला।
विरेक (पुं.) अतिरेक। जुलाब।
विरेचनम् (न.) मल आदि का निकालना। (त्रि.) फाड़ने वाला। जुलाब।
विरोक (पुं. न.) छेद। सूर्य्य की किरण।
विरोचन (पुं.) सूर्य। आक का पेड़। राजा बलि के पिता का नाम। प्रह्लाद का पुत्र। एक दैत्य। चन्द्रमा। रुचिकर।
विरोध (पुं.) वैर।
विरोधिन् (पुं.) रिपु। शत्रु। प्रभवादि साठ संवत्सरों में एक।
विरोधोक्ति (स्त्री.) अलंङ्कार विशेष। विरुद्ध वचन। उलटा बोलना।
विल् (क्रि.) ढांकना। छिपाना।
विलम् (न.) छेद। गुफा।
विलक्ष (त्रि.) हैरान। चिह्न रहित। लज्जित।
विलक्षण (त्रि.) विशेष लक्षण वाला। विभिन्न। अद्भुत। (न.) कमर। मेष आदि उदित राशियाँ।
विलम्ब (पुं.) देर। अबेर। प्रतीक्षा के योग्य समय।
विलम्बित (त्रि.) लटकता हुआ। धीमा।
विलय (पुं.) प्रलय। नाश।
विलशय, विलेशय (पुं.) सांप। चूहा। छिपकली। बिसतुइया।
विलाप (पुं.) रोकर बोलना।
विलास (पुं.) हर्ष। चमक। आनन्द में अङ्गों का विशेष रूप से हिलाना। स्त्रियों की श्रृंङ्गार सम्बन्धी चेष्टा विशेष।
विलासिन् (स्त्री.) नारी। स्त्री।
विलासिनी (स्त्री.) वेश्या। (पुं.) सांप। कृष्ण। आग। कामदेव। महादेव। चन्द्रमा।
विलीन (त्रि.) नष्ट-प्राप्त। छिपा हुआ। गुप्त।
विलेपन (न.) पीसा व घिसा हुआ चन्दन। उबटन। फोड़े आदि की दवाई।
विलोचन (न.) नेत्र। आँख।
विलोडित (न.) बिलोया गया।
विलोम (त्रि.) विपरीत। उल्टा।
विलोमजिह्व (पुं.) हाथी।
विलोल (त्रि.) चञ्चल। लालची।
विल्व (बिल्व) (पुं.) नारियल का पेड़। बिल्व वृक्ष। (न.) परिमाण। नाप।
विवध, वीवध (पुं.) कन्धे पर रख कर बोझ उठाने की एक लकड़ी। सड़क। घड़ा। अनाज एकत्र करना।
विवर (न.) छिद्र। दोष।
विवरण (न.) व्याख्यान। रिपोर्ट। किसी का लिखा हुआ हाल। स्पष्टीकरण। खुलासा।
विवरनालिका (स्त्री.) वेणु। बांस। पोंगी।
विवर्ण (त्रि.) अधम। नीच।
विवर्त्त (पुं.) नाच। मोड़।
विवश (त्रि.) पराधीन। परवश। व्याकुल।
विवस्वत् (पुं.) सूर्य। आक का पेड़। अरुण।
विवाद (पुं.) झगड़ा। कलह।
विवाह (पुं.) ब्याह। शादी।
विवाहित (त्रि.) ब्याहा हुआ।
विवाह्य (त्रि.) विवाह योग्य। विशेष कर उठाने योग्य।
विविक्त (त्रि.) निर्जन। पवित्र। असंयुक्त। विवेकी।
विविध (त्रि.) कई प्रकार।
विवीत (त्रि.) बहुत घासवाला देश।
विवृत (स्त्री.) विस्तार। व्याख्यान।
विवेक (पुं.) विचार। भेद ज्ञान।
विवोढ (पुं.) जामाता। दामाद।

विव्वोक (पुं.) स्त्रियों के हाव भाव कटाक्ष। कोमलता।
विश् (क्रि.) प्रवेश करना।
विश (पुं.) मनुष्य। बनिया।
विशङ्कट (त्रि.) विशाल। लम्बा।
विशद (पुं.) सफेद रङ्ग।
विशय (पुं.) संशय। शक। मीमांसा।
विशर (पुं.) वध। मारना।
विशल्या (स्त्री.) गुसा। अजवाइन। (त्रि.) जिसका तीर दूर हुआ हो।
विशसन (न.) मारण। मारना। (पुं.) तलवार।
विशस्त (त्रि.) बीतगया। नष्ट।
विशाख (पुं.) कार्त्तिकेय। तारा विशेष। धनुषधारियों का आसन विशेष।
विशारण (न.) मारण।
विशारद (पुं.) पण्डित। बकुल वृक्ष। चतुर। (त्रि.) अच्छा। चतुर।
विशाल (त्रि.) विस्तीर्ण। (पुं.) हिरन। राजा।
विशालता (स्त्री.) बड़प्पन। विस्तार। फैलाव।
विशाला (स्त्री.) इन्द्रवारुणी। महेन्द्रवारुणी। उज्जैन। नदी विशेष।
विशालाक्ष (पुं.) महादेव। गरुड़। विष्णु। (त्रि.) बड़ी आँखों वाला।
विशालाक्षी (स्त्री.) पार्वती। नागदन्ती।
विशिख (पुं.) तीर। शरवृक्ष। (त्रि.) शिखाहीन।
विशिखा (स्त्री.) गली। कुल्हाड़ी। सुई या आलपीन। बड़े तीक्ष्ण। तीर। मार्ग। नाइन।
विशिष्ट (त्रि.) मिला हुआ। विलक्षण। विशेषण वाला।
विशिष्टाद्वैत (न.) एक सिद्धान्त जो अनादि काल से प्रवृत्त है। बीच में अनेक बाधायें होकर इस के कृश होने पर श्री रामानुजाचार्य द्वारा ब्रह्मसूत्रादि भाष्य द्वारा निर्णीत। इस में कार्यरूपा माया और वैसे ही जीव को कारण रूप ब्रह्म से अभिन्न और इसी कारण तीनों तत्त्व नित्य माने जाते हैं। वेदान्त-सिद्धात।
विशीर्ण (त्रि.) शुष्क। सूख गया। बूढ़ा हो गया।
विशुद्ध (त्रि.) निर्मल, साफ।
विशुद्धि (स्त्री.) शोधन। साफ करना। दोष-शून्यता।
विशृंखल (त्रि.) परिपाटी से रहित।
विशेष (त्रि.) विलक्षण। बहुत। अधिक। (पुं.) विवेक। अन्तर। चिह्न विशेष। विशेष सम्पत्ति। विशेषत्व। विलक्षणत्व। रुग्णावस्था में विशेष शोच्य अथवा सुधार की दशा। अङ्ग। जाति। प्रकार। रीति। सर्वोत्तमता। व्यक्तित्व। माथे का तिलक। टीका। अलङ्कार विशेष। वैशेषिक दर्शन के सात पदार्थों में से एक।
विशेषक (पुं.) माथे पर लगाया गया तिलक। (त्रि.) अधिक करने वाला। तीन। (न.) तीन श्लोकों का एक वाक्य।
विशेषगुण (पुं.) वैशेषिक दर्शन में वर्णित गुण विशेष।
विशेषण (न.) जिसके द्वारा विशेष्य निरूपण किया जाय। गुण रूप आदि का बताने वाला शब्द।
विशेषविधि } (पुं.) नियम विशेष।
विशेषशास्त्र } (न.) ग्रन्थ विशेष।
विशेषित (त्रि.) निजी गुण रूपादि दिखाया गया। विशेषण युक्त किया हुआ। फाड़ा गया। फर्क किया गया।
विशेषोक्ति (स्त्री.) विशेष वचन। अर्थ सम्बन्धी अलङ्कार विशेष। बढ़कर कहना।
विशोक (पुं.) अशोक का पेड़। (त्रि.) शोक से रहित।
विशोधनी (स्त्री.) बज्रदन्ती। (त्रि.) शोधन करने वाली।
विश्रणन }
विश्राणन } (न.) दान। देना। वितरण करना। बाँटना। प्रतिपादन करना।
विश्रब्ध (त्रि.) विश्वस्त। शान्त। अनुद्धत। गाढ।
विश्रम }
विश्राम } (पुं.) विराम। आराम। किसी वर्त्तमान क्रिया का अवसान।
विश्रम्भ (पुं.) विश्वास। प्रत्यय। खेल सम्बन्धी विवाद। वध।
विश्राव (पुं.) प्रसिद्धि। ख्याति।
विश्रुत (पुं.) विख्यात। प्रसिद्ध।
विश्रश्लिष्ट (त्रि.) वियुक्त। बिछुड़ा हुआ। ढीला।
विश्व (न.) जगत्। संसार। (पुं.) जीवात्मा। (त्रि.) समस्त।
विश्वकर्मन् (पुं.) सूर्य। देवशिल्पी। मुनि विशेष। परमात्मा।
विश्वकृत् (पुं.) विश्वकर्मा। परमेश्वर।

विश्वकेतु (पुं.) अनिरुद्ध।

विश्वक्सेन / **विष्वक्सेन** (पुं.) विष्णु। श्रीबैकुण्ठ में नित्यसूरि श्रीविष्णु के सेनापति।

विश्वच (अव्य.) सर्वत्र। सब ओर। / **विष्वच** (त्रि.) विश्वगामी।

विश्वधारिणी (स्त्री.) पृथिवी। संसार को धारण करने वाली।

विश्वप्सन (पुं.) अग्नि। चन्द्रमा। देवता। विश्वकर्मा।

विश्वम्भर (पुं.) जगत्पालक। इन्द्र। विष्णु।

विश्वरेतस् (पुं.) ब्रह्मा। भगवान्। विष्णु।

विश्ववेदस् (पुं.) इन्द्रादि देवगण।

विश्वसृज् (पुं.) ब्रह्मा। परमात्मा।

विश्वस्त (त्रि.) विश्वासपात्र।

विश्वस्ता (स्त्री.) विधवा स्त्री। विश्वासपात्र स्त्री।

विश्वाची (स्त्री.) एक अप्सरा।

विश्वात्मन् (पुं.) विष्णु। नारायण।

विश्वानर (पुं.) सावित्री की उपाधि।

विश्वामित्र (पुं.) गाधिपुत्र। ऋषि विशेष। एक राजा।

विश्वाराज् (पुं.) विश्वों का अधिपति। परमेश्वर।

विश्वावसु (पुं.) एक गन्धर्व।

विश्वास (पुं.) प्रत्यय। भरोसा। श्रद्धा।

विश्वेदेव (पुं.) श्राद्ध में पूजे जाने वाले दस देवता। आग।

विश्वेश (पुं.) जगत्पति। विष्णु और शिव।

विष् (क्रि.) फैलाना। खाना। जाना। घेरना। पृथक् करना। उड़ेलना। छिड़कना।

विष् (स्त्री.) विष्ठा। फैलाव। लड़की।

विष (न.) कमल की केसर। मृणाल। वत्सनाभ विष। जल।

विषकण्ठ (पुं.) शिव।

विषघ्न (पुं.) शिरीष वृक्ष। घी। बहेड़ा। (त्रि.) विष को दूर करने वाला। बच औषधि।

विषज्वर (पुं.) महिष। भैंसा। ज्वर विशेष।

विषण्ड (न.) मृणाल।

विषदन्तक (पुं.) सर्प।

विषधर (पुं.) साँप।

विषम (त्रि.) अयुग्म। ऊंचा नीचा। दारुण। (न.) संकट। एक प्रकार का पद्य।

विषमच्छद (त्रि.) सप्तच्छद।

विषमज्वर (पुं.) ज्वर विशेष। मलेरिया बुखार। वह ज्वर जिसका समय नियत न हो।

विषमनयन (पुं.) महादेव।

विषमस्थ (त्रि.) सङ्कटापन्न। ऊंची नीची भूमि में ठहरने वाला।

विषमशिष्ट (न.) अनुचित शासन।

विषमायुध (पुं.) कामदेव।

विषय (पुं.) इन्द्रियों के कर्म, देखना सुनना आदि। निबन्ध। वस्तु। पदार्थ। स्थान। जगह।

विषयिन् (न.) ज्ञान। ज्ञानेन्द्रिय। (पुं.) राजा। कामदेव। (त्रि.) विषयी। विषयों में फँसा हुआ।

विषलता (स्त्री.) इन्द्रवारुणी बेल।

विषविद्या (स्त्री.) विष दूर करने की विद्या।

विषवैद्य (पुं.) विष दूर करने की विद्या जानने वाला।

विषाण (न.) सींग। हाथी और सूअर का दांत। क्षीरकाकोली। कोढ़ की दवा।

विषाद (पुं.) अवसाद। दुःख।

विषान्तक (पुं.) शिव। (त्रि.) विष दूर करने वाला।

विषान्तक (पुं.) विषशत्रु। धतूरा।

विषास्य (पुं.) सांप। जिसके मुँह में विष हो। दुष्ट।

विषु (अव्य.) बराबरी। नाना रूप वाला।

विषुव (न.) समय विशेष। जब रात दिन समान होते हैं।

विष्क् (क्रि.) वध करना।

विष्कम्भ (पुं.) सूर्य चन्द्रमा के एकत्र होने का योग विशेष। विस्तार। रोक। नाटक का एक अङ्क। योगियों का एक बन्ध। द्वार का बेड़ा। खम्भा। वृक्ष विशेष।

विष्टप (न.) भुवन। लोक।

विष्टब्ध (त्रि.) प्रतिरुद्ध। रुका हुआ।

विष्टम्भिन् (त्रि.) रोकने वाला।

विष्टर (पुं.) कुशासन। वृक्ष भेद।

विष्टरश्रवस् (पुं.) विष्णु।

विष्टि (स्त्री.) मजूरी। किराया। भाड़ा। बेगार। नरकवास।

विष्टा / **विष्ठा** (स्त्री.) पुरी। मल।

विष्णु (पुं.) व्यापक। नारायण। वह्नि। शुद्ध। साफ।

वासुदेव। एक स्मृतिकार का नाम। श्रवण नक्षत्र।

विष्णुगुप्त (पुं.) चाणक्य पण्डित।

विष्णुतैल (न.) तैल विशेष।

विष्णुपद (न.) आकाश।

विष्णुपदी (स्त्री.) गंगा। सूर्य का वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ राशि पर गमन।

विष्णुपुराण (न.) अष्टादश पुराणों में से एक।

विष्णुमाया (स्त्री.) अविद्या शक्ति। दुर्गा।

विष्णुरथ (पुं.) गरुड़।

विष्णुरात (पुं.) परीक्षित् नाम का राजा।

विष्फार (पुं.) धनुष का टङ्कार।

विष्य (त्रि.) विषवध्य।

विष्वाण (न.) भोजन। आहार।

विस (न.) मृणाल।

विस् (क्रि.) छोड़ना।

विसंवाद (पुं.) ठगना। उल्टा सीधा कथन।

विसकुसुम (न.) पद्म।

विसङ्कट (पुं.) सिंह। इङ्गुदी का पेड़।

विसनाभि (स्त्री.) पद्मिनी और पद्मों का समूह।

विसर (पुं.) समूह। विस्तार।

विसर्ग (पुं.) दान। त्याग। मोक्ष। प्रलय।

विसर्ज्जन (न.) त्याग। प्रेरणा।

विसर्पण (न.) प्रसार। फैलाव।

विसिनी (स्त्री.) पद्मलता।

विसूचिका (स्त्री.) इस नाम का एक रोग। हैज़ा।

विसृत (त्रि.) फैला हुआ।

विसृत्वर (त्रि.) विसरण शील।

विसृमर (त्रि.) फैलने वाला।

विसृष्ट (त्रि.) प्रेरित। क्षिप्त।

विस्त (पुं. न.) सोने की मोहर। अस्सी रत्ती की तौल।

विस्तार (पुं.) विटप। शाखाओं का फैलाव।

विस्तीर्ण (त्रि.) विशाल। फैला हुआ।

विस्फुलिङ्ग (पुं.) एक प्रकार का विष। आग की चिनगारी।

विस्फोट (पु.) फोड़ा विशेष।

विस्मय (पुं.) आश्चर्य।

विस्मापात (पु.) इन्द्रजाल का खेल। कामदेव (न.) गन्धर्वों का नगर।

विस्मित (त्रि.) आश्चर्यान्वित।

विस्मृत (त्रि.) भूल गया।

विस्मृति (स्त्री.) भूलना।

विस्र (न.) कच्ची सन्धि।

विस्रगन्धि (पुं.) हरताल।

विस्रम्भ (पुं.) विश्वास। प्रत्यय।

विस्रम्भिन् (त्रि.) विश्वासी।

विस्रसा (स्त्री.) क्षीणता। बुढ़ाई।

विहग (पुं.) अकाश में उड़ने वाला। पक्षी।

विहङ्गम (पुं.) आकाशगामी। पक्षी।

विहङ्गराज (पुं.) पक्षियों का राजा। गरुड़।

विहनन (न.) रुकावट। हिंसा।

विहर (पुं.) वियोग। विछोह।

विहसित (न.) मध्यम हास्य।

विहस्त (त्रि.) विकल। पण्डित। चतुर।

विहापित (न.) छुड़ाया गया। दान।

विहायस (पुं. न.) आकाश। पक्षी।

विहार (पुं.) भ्रमण। लीला। बौद्धों का मन्दिर।

विहित (त्रि.) अनुसार। कृत। बोधित।

विहीन (त्रि.) त्यक्त। रहित।

विह्वल (त्रि.) विलीन। घबराया हुआ।

वी (क्रि.) चाहना। उत्पन्न करना। फैलना। फेंकना। खाना।

वीकाश, **विकाश** } देखो विकाश।

वीक्षण (न.) नेत्र। आंख। देखना।

वीचि, **वीची** } (पुं.स्त्री.) तरङ्ग। लहर। अवकाश। थोड़ा। फिरना। हर्ष।

वीचिमालिन् (पुं.) समुद्र।

वीज् (क्रि.) पङ्खा करना।

वीज (**बीज**) (न.) कारण। शुक्र। अंकुर। अव्यक्त गणित। मन्त्र विशेष। धान्य आदि का फल आदि।

वीजकोष (**बीजकोष**) (पुं.) वरारक। कौड़ी। पद्मबीज का आश्रय।

वीजगर्भ (बीजगर्भ) (पुं.) पटोल।
वीजन (न.) पंखा। चामर। चमर। वस्त्र। (पुं.) चक्रवाक।
वीजसञ्चय (बीजसञ्चय) (पुं.) बहुत से बिया।
वीजसू (बीजसू) (पुं.) पृथिवी।
वीजिन् (बीजिन्) (पुं.) उत्पादक। (त्रि.) बीज वाला।
वीज्य (त्रि.) कुलीन।
वीटि (स्त्री.) पान की बीड़ी।
वीटी
वीणा (स्त्री.) बीन।
वीतशोक (पुं.) जिसका सोच दूर हो गया हो। योगी। उदासीन। अशोक का पेड़। (त्रि.) शोक रहित।
वीति (स्त्री.) गति। दीप्ति। खाना और भोगना। (पुं.) घोड़ा।
वीतिहोत्र (पुं.) वह्नि। आग। सूर्य्य।
वीथि (स्त्री.) पंक्ति। श्रेणी। गली।
विथी नाटक का देखने योग्य एक अंग।
वीध्र (त्रि.) निर्मल। साफ़। (पुं.) आकाश। वायु।
वीनाह (पुं.) ढकना। पाट।
वीप्सा (स्त्री.) व्याप्ति। फैलाव। बड़ी इच्छा।
वीर (न.) कमल मूल। काञ्जी। उशीर। मिरच। (त्रि.) बहादुर। शूर। (न.) कुलाचार।
वीरण (न.) उशीर अर्थात् खस। चन्दन।
वीरपत्नी (स्त्री.) शूर वीर की भार्या।
वीरपत्रा (स्त्री.) विजया। भांग।
वीरपान (न.) मदिरा पान।
वीरपाण
वीरभद्र (पुं.) अश्वमेघ का घोड़ा। (न.) वीरण।
वीरसू (स्त्री.) वीर की माँ।
वीरसेन (पुं.) राजा नल का पिता।
वीरहन् (पुं.) अग्नि होत्र छोड़ने वाला ब्राह्मण। नष्टाग्नि विप्र।
वीरा (स्त्री.) आमलकी। क्षीरकाकोली। पति पुत्र सहिता स्त्री। रम्भा। महाशतावरी। घृतकुमारी। अतिविषा। दाख।
वीराशंसन (न.) युद्ध स्थल।
वीरासन (न.) आसन विशेष।
वीरुध् (स्त्री.) फैली हुई बेल।
वीरुधा
वीरेश्वर (त्रि.) काशी में इस नाम का एक शिव लिङ्ग। महावीर। अतिबली।
वीर्य्य (न.) पाराक्रम। बल। प्रभाव। तेज। दीप्ति।
वीर्य्यवत् (त्रि.) वीर्य्य वाला। बलवान्।
वीवध (पुं.) चांवल आदि का गल्ला संग्रह। मार्ग। भार।
वीवधिक (पुं.) बोझा ढोने वाला।
वीहार (पुं.) विहार। क्रीड़ा। विलास।
वृ (क्रि.) ढाकना। सेवा करना। मांगना। स्वीकार करना।
वृंहित (न.) हाथी का चिङ्घार।
वृक् (क्रि.) पकड़ना।
वृक (पुं.) भेड़िया। काक। वक्वृक्ष। उदराग्नि।
वृकदंश (पुं.) कुत्ता।
वृकधूर्त (पुं.) गीदड़। श्रृगाल।
वृकोदर (पुं.) भीसेन। इनके पेट में वृक अग्नि है।
वृकृण (त्रि.) छिन्न। काटा हुआ।
वृक्ष (पुं.) कुटज वृक्ष।
वृक्षचर (पु.) वानर। बन्दर।
वृक्षच्छाया (न.) बहुत से वृक्षों की छाया।
वृक्षनाथ (पुं.) वट वृक्ष।
वृक्षभवन (न.) पेड़ की खोहड़।
वृक्षवाटिका (स्त्री.) घर के समीप का उपवन। नज़र बाग।
वृज् (क्रि.) त्यागना। छोड़ना।
वृजन (न.) आकाश। पाप। (पुं.) केश। (त्रि.) टेढ़ा। तिर्च्छा।
वृजिन (न.) पाप। (पुं.) देश। (त्रि.) टेढ़ा।
वृण् (क्रि.) भक्षण करना। खाना।
वृत् (क्रि.) होना।
वृत (त्रि.) प्रार्थित। स्वीकृत।
वृति (स्त्री.) मांगना। वेष्टन। लपेट। घेरा।
वृत्त (न.) गुरु का नाम। दया। शौच। सत्य। इन्द्रिय निग्रह। हितकर कार्य्यों में रति-इस प्रकार के आचरण। पद्य विशेष। आजीविका। बीत गया। गोल। (त्रि.) पढ़ा हुआ। भरा हुआ। उत्पन्न हुआ। (पु.) कूर्म्म।

वृत्तगन्धि (न.) पद्य विशेष।
वृत्तफल (न.) मिर्च, अनार, बेर, आमला, आदि गोल फल।
वृत्तस्थ (त्रि.) अच्छे आचरण वाला। सदाचारी।
वृत्तान्त (पुं.) संवाद। हाल। समाचार।
वृत्ति (स्त्री.) स्थिति। आजीविका। परिवर्तन विशेष। वर्ताव। जीविका।
वृत्र (पुं.) अन्धकार। वैरी। विश्वकर्म्मा का पुत्र। दैत्य विशेष। मेघ। पर्वत विशेष। मन्त्र। शब्द।
वृत्रहन् (पु.) इन्द्र।
वृथा (अव्य.) निरर्थक।
वृथादान (न.) विधि पूर्वक न दिया हुआ दान।
वृथामांस (न.) देवोद्देश्य से न मारे गये पशु का मांस।
वृद्ध (न.) गन्ध द्रव्य विशेष। (पुं.) वृक्ष विशेष। (त्रि.) बूढ़ा। बढ़ती वाला। पण्डित।
वृद्धप्रपितामह (पुं.) दादे का बाप।
वृद्धश्रवस् (पुं.) इन्द्र।
वृद्धा (स्त्री.) बूढ़ी।
वृद्धि (स्त्री.) अभ्युदय। बढ़ती।
वृद्धजीविका (स्त्री.) सूद खोरी।
वृद्धिश्राद्ध (न.) मंगल श्राद्ध। नान्दी मुख श्राद्ध। आभ्युदयिक श्राद्ध।
वृद्धाजीद (त्रि.) व्याज की आय पर जीने वाला।
वृध् (क्रि.) चमकना। बढ़ना।
वृन्त (न.) फल और पत्तों का बन्धन।
वृन्ताक (पुं. स्त्री.) भंटा। बैंगन।
वृन्द (न.) समूह। दस अरब की संख्या।
वृन्दा (स्त्री.) तुलसी। राधिका।
वृन्दारक (पुं.) देवता। (त्रि.) मुख्य। सुन्दर। मनोहर।
वृन्दावन (पुं.) मथुरा के पास कृष्ण का क्रीड़ा स्थल-वैष्णवों का तीर्थ विशेष।
वृन्दिष्ठ (त्रि.) विशेष मुख्य।
वृश्चिक (त्रि.) बिच्छू। मेष से आठवीं राशि। औषधि।
वृष् (क्रि.) सींचना। उत्पाद शक्ति का होना।
वृष (पुं.) बैल। मेष से दूसरी राशि। पुरुष विशेष। इन्द्र। धर्म। सींग वाला। चूहा। शत्रु। कामदेव। बलवान्। ऋषभ नाम दवा। मोर पुच्छ।
वृषण (पुं.) अण्ड कोष। पेलहर।
वृषदंशक (पुं.) चूहे खाने वाला। बिल्ला। बिडाल।
वृषध्वज (पुं.) शिव।
वृषन् (पुं.) इन्द्र। कर्ण। बैल। घोड़ा।
वृषपर्वन् (पुं.) शिव। दैत्य विशेष।
वृषभ (पुं.) बैल। कान का छेद। औषधिवि शेष। श्रीवेङ्कट पर्वत जो दक्षिण में प्रधान तीर्थ है।
वृषभगति (पुं.) शिव।
वृषभानु (पुं.) एक गोप का नाम जो राधिका जी के पिता थे।
वृषल (पुं.) शूद्र। गाजर। घोड़ा। अधर्मी। राजा चन्द्र गुप्त।
वृषली (स्त्री.) शूद्र की स्त्री। कन्या जो विवाहिता होने के पूर्व ही ऋतुमती हो गयी।
वृषलोचन (पुं.) मूँसा। बैल की आँखें। (त्रि.) बैल की आँखों वाला।
वृषवाहन (पुं.) शिव।
वृषस्यन्ती (स्त्री.) कामुकी। कामातुरा स्त्री।
वृषाकपायी (स्त्री.) स्वाहा। शची। गौरी। लक्ष्मी। जीवन्ती।
वृषाकपि (पुं.) महादेव। विष्णु। अग्नि। इन्द्र।
वृषाकर (पुं.) बलवर्द्धक। उर्द।
वृषाङ्क (पुं.) शिव।
वृषि / **वृषी** } (स्त्री.) व्रती के लिए कुशासन।
वृषोत्सर्ग (पुं.) साण्ड बनाना। मरे हुए के नाम पर बछड़े को दाग कर छोड़ना।
वृष्टि (स्त्री.) वर्षा।
वृष्टिभू (पुं.) मेंड़क। (त्रि.) वर्षा में हुआ।
वृष्णि (पुं.) यादवों का वंश। श्रीकृष्ण। बादल।
वृष्णिगर्भ (पुं.) श्रीकृष्ण।
वृह् (बृह) (क्रि.) चमकना। शब्द करना। बढ़ाना।
वृहत् (बृहत्) (त्रि.) बड़ा।
वृहती (बृहती) (स्त्री.) नारद की वीणा। ३६ की संख्या। लवादा। चादर। वाणी। कण्डियारी। एक छन्द जिसका पाद नौ अक्षरों का होता है।
वृहद्भानु (बृहद्भानु) (पुं.) सूर्य। चित्रक का पेड़।
वृहतीपति (बृहतीपति) (पुं.) बृहस्पति।

वृहस्पति (वृहस्पति) (पुं.) वाणी का स्वामी। देवगुरु।

वृ (क्रि.) स्वीकार करना। वरण करना।

वेंकट (पुं.) पर्वत।

वेंकटेश (पुं.) विष्णु का रूप विशेष। श्रीनिवास।

वेग (पुं.) प्रवाह। गति। तेज।

वेगिन् (पुं.) बाज पक्षी। (त्रि.) वेग वाला।

वेचा (स्त्री.) भाड़ा। किराया।

वेणृ, वेनृ (स्त्री.) बाजे पर नाचना। जाना। जानना। विचारना। लेना। देखना। प्रशंसा करना।

वेण (पुं.) वर्णसङ्कर। पृथु राजा का पिता।

वेणि, वेणी (स्त्री.) स्त्रियों के सिर के केशों की ग्रन्थि। चोटी। जल की धार। दो या अधिक नदियों का संगम यमुना। गंगा और सरस्वती का संगम स्थल।

वेणीर (पुं.) नीम का पेड़।

वेणु (पुं.) बाँस। बँसी।

वेणुज (पुं.) चावल विशेष। जिसका आकार जौ जैसा होता है।

वेणुध्म (पुं.) बँसी बजाने वाला।

वेणुवाद (त्रि.) वेणुवादक। बँसी बजाने वाला।

वेतन (न.) किये हुए काम की नियत मजदूरी। तनख्वाह।

वेतनादान (न.) व्यवहार विशेष। तनख्वाह लेना। नियत द्रव्य लेना।

वेतस् (पुं.) बैंत। एक वृक्ष।

वेताल (पुं.) मल्ल। भूताधिष्ठित शव। शिव जी का एक गण। द्वारपाल।

वेतृ (त्रि.) जानने वाला। उठाने वाला। पाने वाला।

वेत्र (पुं.) बैंत।

वेत्रधर (पुं.) द्वारपाल। छड़ीदार।

वेत्रवती, वेत्रावती (स्त्री.) नदी विशेष।

वेत्रासन (न.) मूढ़ा। कुर्सी। चटाई।

वेद (न.) विष्णु। ज्ञान। संहिता विशेष।

वेदगर्भ (पुं.) हिरण्य गर्भ।

वेदन (न.) ज्ञान। सुख दुःखादि का अनुभव। विवाह। धन। सम्पत्ति। दान। शूद्रा स्त्री के साथ उच्चवर्ण का विवाह।

वेदपारग (पुं.) समस्त वेदों को जानने वाला।

वेदमातृ (स्त्री.) गायत्री महामन्त्र।

वेदविद् (पुं.) विष्णु। (त्रि.) वेद को जानने वाला।

वेदव्यास (पुं.) पराशर पुत्र। सत्यवती गर्भ सम्भूत मुनि विशेष। शुक देव के पिता।

वेदस् (पुं.) जाने वाला।

वेदाङ्ग (न.) वेदों के छः अंग। जैसे शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष।

वेदादि (पुं.) प्रणव। ओंकार।

वेदान्त (पुं.) तत्त्वज्ञान का प्रधान शास्त्र।

वेदाधिप (पुं.) वेद के स्वामी। यथा ऋग्वेद के बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मंगल, अथर्व के बुध। विष्णु।

वेदान्तिन् (त्रि.) वेदान्त दर्शन का जानने वाला।

वेदाभ्यास (पुं.) वेद का पढ़ना।

वेदि (स्त्री.) साफ की गई भूमि। (पुं.) पण्डित।

वेदिजा (स्त्री.) द्रौपदी।

वेदितृ (त्रि.) ज्ञाता। जानने वाला।

वेदिन् (पुं.) पण्डित। हिरण्यगर्भ (त्रि.) जानने वाला।

वेध (पुं.) बींधना। बेधना।

वेधक (न.) कपूर। धनियां। (त्रि.) बेधने वाला।

वेधस् (पुं.) हिरण्य गर्भ। विष्णु। सूर्य्य। पण्डित। ब्रह्मा। बनाने वाला।

वेधित (पुं.) बेधा गया। छिद्रित।

वेधिनी (स्त्री.) जोंक।

वेपृ (क्रि.) काँपना।

वेपथु (पुं.) काँपना।

वेपन (न.) हिलना।

वेम (पुं.) बुन्ने का डण्डा।

वेलृ (क्रि.) चलना। हिलना।

वेल (न.) उपवन। काल।

वेला (स्त्री.) समुद्र का तट।

वेल्ल (क्रि.) हिलाना।

वेल्लज (पुं.) मिरच।

वेल्लन (न.) घोड़े आदि का जमीन पर लोट लगाना। रोटी आदि बेलने का काठ का टुकड़ा।

वेवी (क्रि.) चाहना। फेंकना। फैलना। खाना।
वेश (पुं.) सजावट का कार्य। वेश्यागृह। प्रवेश।
वेशधारिन् (पुं.) कपटी। दम्भी।
वेशन्त (पुं.) छोटा ताल। अग्नि।
वेश्मन् (न.) गृह। घर।
वेश्मभू (स्त्री.) घर बनाने योग्य स्थान।
वेश्य (न.) कान का पलड़ा। पगड़ी। पेठा। प्राचीर। (पुं.) घेरा।
वेश्या (स्त्री.) रण्डी।
वेष्टित (त्रि.) प्राचीर से घिरा हुआ। रुका हुआ।
वेस् (क्रि.) जाना।
वेसन (न.) चने का आटा।
वेहार (पुं.) देश विदेश।
वै (अव्य) अनुनय। पाद को पूर्ण करता है। निश्चय। सम्बोधन।
वैकक्ष (न.) हार विशेष।
वैकंकत (पुं.) वृक्ष विशेष।
वैकल्पिक (त्रि.) दो में से एक।
वैकल्य (न.) घबराहट।
वैकुण्ठ (पुं.) विष्णु। गरूड़। इन्द्र।
वैकृत (न.) विकार। परिवर्तन।
वैखरी (स्त्री.) कण्ठ्य आदि अक्षरों का बना शब्द विशेष।
वैखानस (पुं.) वानप्रस्थ।
वैगुण्य (न.) बिगाड़ना। अन्याय। अपूर्णता।
वैचित्र्य (न.) विलक्षणता।
वैजयन्त (पुं.) इन्द्र प्रासाद। दैत्य विशेष। पताका।
वैजिक (न.) सुहांजन का तेल। कारण। (त्रि.) बीज सम्बधी।
वैज्ञानिक (पुं.) निपुण। विशेष ज्ञानी। विज्ञान वेत्ता।
वैडालव्रत (न.) दम्भ युक्त व्रत। कपटाचार।
वैणव (न.) बाँस का फल। (त्रि.) बाँस सम्बन्धी।
वैणविक (त्रि.) वंशी बजाने वाला।
वैणिक (त्रि.) बीन बजाने वाला।
वैण्य, वैन्य (पुं.) राजा पृथु।
वैतंसिक (त्रि.) व्याधा। शिकारी।
वैतनिक (त्रि.) वेतन लेकर काम करने वाला।
वैतरिणी, वैतरिणि (स्त्री.) यमराज के नगर के समीप की एक नदी।
वैतानिक (पुं.) वेद विधि के अनुसार अग्नि स्थापन।
वैतालिक (त्रि.) भाट। बन्दी।
वैतालीय (पुं.) छन्द विशेष।
वैदग्ध (न. स्त्री.) चातुर्य।
वैदर्भ (पुं.) विदर्भ देश का राजा भीष्मक, जिसकी कन्या रुक्मिणी थी और पुरंजनी आदि।
वैदर्भी (स्त्री.) रचना विशेष। रुक्मिणी। दमयन्ती। पुरंजनी।
वैदिक (पुं.) वेदज्ञ ब्राह्मण।
वैदुष्य (न.) पाण्डित्य।
वैदूर्य्य (न.) मणि विशेष।
वैदेह (पुं.) बनियां। शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न जाति विशेष। राजा जनक।
वैदेही (स्त्री.) सीता। राम पत्नी। हल्दी। मद्य। बनीनी।
वैद्य (पुं.) चिकित्सक।
वैद्यक (न.) चिकित्सा ग्रन्थ या शास्त्र।
वैध (त्रि.) विधान किया हुआ।
वैधात्र (पुं.) सनत्कुमार आदि मुनि विशेष।
वैधृति (पुं.) धैर्य रहित। योग विशेष।
वैधेय (त्रि.) मूर्ख।
वैधर्म्य (न.) विरुद्ध धर्म। विरुद्ध लक्षण।
वैधव्य (न.) रण्डापा।
वैनतेय (पु.) गरुड़। अरुण।
वैनयिक (त्रि.) शास्त्र ज्ञान से नम्रीभूत।
वैनाशिक (पुं.) बौद्धों का शास्त्र। (त्रि.) बौद्धों के शास्त्र को जानने वाला।
वैपरीत्य (न.) उलटापन।
वैभव (न.) विभूति। ऐश्वर्य्य।
वैभ्राज (न.) देवताओं का उपवन।
वैमुख्य (न.) विमुखता।
वैमात्र (पुं.) सौतेली मां की सन्तान।
वैयाकरण (त्रि.) व्याकरण जानने वाला।
वैयाघ्र (पुं.) भेड़िये की खाल से ढकी गाड़ी।
वैयाघ्रपद्य (पुं.) गोत्र के चलाने वाले एक मुनि।
वैयात्य (न.) निर्लज्जता।

वैयासिक (पुं.) शुकदेव।
वैर (न.) विरोध।
वैरकर (त्रि.) विरोधी।
वैरक्तत्व (न.) विराग।
वैरनिर्यातन (न.) प्रतिकार।
वैराग्य (न.) त्याग।
वैरिन् (त्रि.) दुश्मन। वैरी।
वैरूप्य (न.) विरूपता। कुरूप।
वैलक्षण्य (न.) विलक्षणता।
वैलक्ष्य (न.) लज्जा।
वैवधिक (त्रि.) दूकानदार। हल्कारा।
वैवर्ण्य (न.) मैलापन। रंग का बदलाव।
वैवस्वत (पुं.) यमराज। रुद्र विशेष।
वैवाहिक (त्रि.) विवाह के योग्य। ससुर। (त्रि.) विवाह वाला।
वैशम्पायन (पुं.) व्यास के एक शिष्य।
वैशस (न.) मारना। (त्रि.) मारने वाला।
वैशाख (पुं.) वर्ष का दूसरा मास। मथानी। धनुर्धरों का एक प्रकार का पैतरा।
वैशिष्ट्य (न.) विशेष और विशेषण का सम्बन्ध। भेद। अन्तर।
वैशेषिक (न.) कणाद मुनि प्रणीत एक शास्त्र।
वैशेष्य (न.) भेद। विशेषत्व।
वैश्य (पुं.) तीसरा वर्ण। बनियां।
वैश्यवृत्ति (स्त्री.) खेती। व्यापार। गोरक्षा।
वैश्रवण (पुं.) विश्रवा का बेटा। कुबेर। रावण।
वैश्वदेव (पुं.) बलि विशेष।
वैश्वानर (पुं.) अग्नि विशेष जो मनुष्यों के पेट में रहता है। चित्रक वृक्ष। सामवेद की एक शाखा।
वैषम्य (न.) वैलक्षण्य। असमानता।
वैषयिक (त्रि.) शब्द आदि से उत्पन्न। सुख विशेष।
वैष्णव (त्रि.) विष्णु भक्त। जिसने विधिपूर्वक विष्णु की दीक्षा ली हो।
वैसारिण (पुं.) मच्छ।
वैहासिक (पुं.) विदूषक। मसखरा।
वोढु (पुं.) एक मुनि।
वोढृ (त्रि.) वाहक। उठाने वाला। (पुं.) वर। त्रि.। बोझा ढोने वाला। मूर्ख।
व्यंसक (पुं.) धूर्त। ठग। नटखट।
व्यंसित (पुं.) वञ्चित। ठगा हुआ।
व्यक्त (त्रि.) स्फुट। प्रकाशित। देखने योग्य। प्राज्ञ। स्थूल। (पुं.) मोटा।
व्यक्ति (स्त्री.) प्रकाश। जन। पृथक्-पृथक्।
व्यग्र (त्रि.) व्याकुल। बहुत फंसा हुआ।
व्यंग (त्रि.) विकलांग। अंग से हीन। लंगड़ा। कुहासा। गाल पर काले-काले तिल या धब्बे।
व्यंग्य (न.) व्यंजना वृत्ति से जानने योग्य अर्थ।
व्यंजन (न.) पंखा।
व्यंजक (पुं.) व्यञ्जना द्वारा बतलाने वाला शब्द। (त्रि.) प्रकाश करने वाला।
व्यञ्जन (न.) भोजनोपकरण।
व्यञ्जित (त्रि.) प्रकाशित।
व्यतिकर (पुं.) सम्बन्ध। व्यसन। दुःख।
व्यतिक्रम (पुं.) विपर्य्यय। उल्टा।
व्यतिरिक्त (त्रि.) भिन्न। पृथक्। जुदा। और।
व्यतिरेक (पुं.) विशेष। अतिक्रम। अभाव। विना। अर्थालंकार विशेष।
व्यतिषक्त (त्रि.) गुथा हुआ। मिला हुआ।
व्यतिषङ्ग (पुं.) परस्पर मेल।
व्यतिहार / **व्यतीहार** } (पुं.) परस्पर एक प्रकार की क्रिया। परिवर्तन
व्यतीत (त्रि.) अतीत। बीता हुआ। निकला हुआ।
व्यतीपात (त्रि.) महोत्पात भेद। एक प्रकार का बड़ा उपद्रव। ज्योतिष का एक योग विशेष।
व्यत्यय (पुं.) व्यतिक्रम। उलटा। उल्लंघन।
व्यत्यास (पुं.) विपर्यय। उल्टा।
व्यथ् (क्रि.) चलना। दुःखानुभव करना।
व्यथा (स्त्री.) पीड़ा रव।
व्यध् (क्रि.) चोट लगना।
व्यध (पुं.) चोट लगाना। फाड़ना।
व्यध्व (पुं.) दूषित मार्ग। कुपथ।
व्यपदेश (पुं.) कहना। संज्ञा। कापट्य। बहाना।
व्यपरोपण (न.) छेदना। काटना।
व्यपरोपित (त्रि.) छिन्न। कटा हुआ।
व्यपाकृति (स्त्री.) निराकरण। अस्वीकृत करना। छिपाना। न मानना।
व्यपाश्रय (पुं.) आसरा।

व्यपेक्षा (स्त्री.) अपेक्षा। विशेष चाह।बड़ी गरज।
व्यभिचार (पुं.) निन्दिताचार। दुराचार। न्याय में हेतु-दोष।
व्यभिचारिन् (पुं.) जार पुरुष। स्थानभ्रष्ट। दुराचारी। अलंकार में "निर्वेद" आदि रस का अंग विशेष।
व्यभिचारिणी (स्त्री.) कुलटा स्त्री।
व्यय (पुं.) विगम। जाना। खर्च। जन्मकुण्डली में लग्न से १२वां स्थान।
व्यर्थ (त्रि.) निष्प्रयोजन। विफल। निरर्थक।
व्यलीक (न.) अप्रिय। अनृत। झूठ।
व्यवकलन (न.) वियोजन। विगमन। निकालना। घटाना।
व्यकवकलित (त्रि.) घटाया गया। वियोजित।
व्यवच्छिन्न (त्रि.) छिन्न। कटा हुआ। विशेषण युक्त।
व्यवच्छेद (पुं.) अलगाव। विशेषत्व। मोचन।
व्यवधा (स्त्री.) व्यवधान। अन्तर । बीच।
व्यवधायक (त्रि.) कर्ता। अन्तर डालने वाला। ढांकने वाला।
व्यवसाय (पुं.) उद्यम। अनुष्ठान। अवधारण।
व्यवस्था (स्त्री.) शास्त्र मर्य्यादा। तजवीज। युक्ति।
व्यवस्थित (त्रि.) शास्त्र द्वारा विधान। किया हुआ पदार्थ। ठीक। सही।
व्यवस्थितविभाषा (स्त्री.) विकल्प (व्याकरण में)।
व्यवहर्तृ (त्रि.) व्यवहार करने वाला।
व्यवहार (पुं.) पैसे का देना और लेना आदि निस्सन्देह बर्ताव। आचार, नियमादि अठारह सम्बन्धों के अनुकूल चलना। अनेक संशय रहित मैत्री युक्त बर्ताव। (वि-अव-हार) जैसे- "विनानार्थेऽव सन्देहे हरणं हार उच्यते। नानासन्देहहरणाद्व्यवहार इति स्मृतः।।"
व्यवहारपद (न.) झगड़े का स्थान। अभियोग के योग्य। साहूकार की दूकान।
व्यवहारमातृका (स्त्री.) व्यवहार की माता। न्यायालय। कचहरी। पञ्चायत। सभा आदि जहाँ विद्वान, वकील आदि मुखिया बैठकर न्याय दें।
व्यवहारिक (त्रि.) व्यवहार सम्बन्धी। लेन-देन आदि परस्पर सम्बन्ध सूचक चलन या वस्तु। जैसे-घड़ा, कपड़ा इत्यादि। (पुं.) इंगुद वृक्ष।
व्यवहार्य (त्रि.) व्यवहार के योग्य। अपने ढंग का। मिलता-जुलता। काम में लाने के योग्य।
व्यवहित (त्रि.) दूर अन्तर वाला। आड़ में रखी चीज। ढकी हुई।
व्यवाय (पुं.) ग्राम्य धर्म। मैथुन। छिपावा। सफ़ाई। (न.) तेज।
व्यसन (न.) विपत्ति। गिरना। काम और क्रोध से उपजा दोष। मैथुन और मद्यपान दोष। दैवोपद्रवादि। वह दोष जिसके बिना रहा न जाय जैसे-व्यभिचार, भाँग, गांजा आदि, जूआँ आदि। आश्रय, भगवद्भक्ति आदि।
व्यसु (त्रि.) मृत। मरा हुआ।
व्यस्त (त्रि.) व्याकुल। विभक्त। विपरीत। उल्टा।
व्याकरण (न.) वह शास्त्र जिसे शब्दों का विवरण भली-भाँति ज्ञात हो जाय। शब्द शास्त्र।
व्याकुल (त्रि.) घबड़ाया हुआ। विकल।
व्याकृति (स्त्री.) भद्दा रूप। प्रकाशन। व्याकरण। अधिक वर्णन करना।
व्याकृत (त्रि.) विभक्त। व्याख्या किया हुआ। भद्दी शकल किया गया।
व्याकोश
व्याकोष } (त्रि.) फैला हुआ। खिला हुआ। प्रमुख।
व्याक्षिप् (क्रि.) उछालना। फैलाना। खोलना।
व्याक्षोभ (पुं.) हलचल। घबराहट।
व्याख्या (स्त्री.) विस्तार से किसी विषय को सरल शब्दों में कहना। वर्णन। कथन।
व्याख्यात (त्रि.) वर्णित। कहा हुआ। व्याख्यान किया हुआ।
व्याख्यान (न.) वर्णन। वक्तता। किसी विषय को भली भाँति खुलासा कर के पांच लक्षण युक्त कहना। जैसे- "पदच्छेदः पदार्थोक्तिर्विग्रहो वाक्ययोजना। आक्षेपस्य समाधानं व्याख्यानं पंचलक्षणम्।।"
व्याघट्टन (न.) मथना। परस्पर रगड़ना।
व्याघात (पुं.) चोट। विघ्न। रुकावट। अर्थ सम्बन्धी एक अलंकार।
व्याघ्र (पुं.) बाघ। लाल एरण्ड। करञ्ज का वृक्ष।
व्याघ्रास्य (पुं.) बिडाल। बिल्ला।

व्याज (पुं.) बहाना। कपट।
व्याजनिन्दा (स्त्री.) कपट निन्दा। अर्थालंकार विशेष।
व्याजस्तुति (स्त्री.) अर्थालंकार विशेष। कपट युक्त प्रशंसा।
व्याजोक्ति (स्त्री.) अर्थालंकार विशेष। कपट युक्त कहना।
व्याड़ (पुं.) मांस खाने वाले जीव जैसे बाघ बिल्ली आदि। सर्प। इन्द्र। (त्रि.) ठग। गुण्डा।
व्याड़ि (पुं.) एक ग्रन्थकार। जिसने व्याकरण और कोष के एक एक ग्रन्थ रचे।
व्याध (पुं.) शिकारी। बहेलिया।
व्याधभीत (पुं.) जो पारधी को देख कर डरे। हिरण। पशु आदि।
व्याधि (पुं.) रोग। बीमारी। कोढ़ का रोग। उपद्रव।
व्याधित (त्रि.) बीमार। उपद्रव युक्त।
व्याधुत / **व्याधूत** (त्रि.) काँपा हुआ। हिला हुआ।
व्यान (पुं.) प्राणवायु विशेष।
व्यापक (त्रि.) फैला हुआ।
व्यापन्न (त्रि.) मरा हुआ। विपत्ति में फंसा हुआ।
व्यापाद (पुं.) हिंसा। वध। द्रोहचिंतन।
व्यापादन (न.) मारना। दूसरे का बुरा सोचना।
व्यापार (पुं.) काम। लाभ होने योग्य काम। परिश्रम। चेष्टा। उद्योग।
व्यापारिन् (त्रि.) व्यापारी। उद्यमी।
व्यापिन् (त्रि.) फैला हुआ। (पुं.) विष्णु।
व्यापृत (त्रि.) व्यापार वाला।
व्याप्त (त्रि.) पूर्ण। पूरा। भरा हुआ।
व्याप्ति (स्त्री.) पूर्ति-व्यापकता।
व्याप्य (त्रि.) व्याप्त होने के लायक, जैसे-शमी की लकड़ी में आग इत्यादि।
व्याम (पुं.) दोनों भुजाओं के बीच का माप विशेष।
व्यायत (त्रि.) लम्बा। चौड़ा। दूर। बहुत। (न.) लम्बाई। चौड़ाई।
व्यायाम (पुं.) श्रम। मेहनत। कसरत।
व्यायोग (पुं.) एक प्रकार का काव्य।
व्याल (त्रि.) दुष्ट। बुरा। निष्ठुर। (पुं.) दुष्ट या खूनी हाथी। सर्प। बाघ। चीता। राजा। छलिया। ठग। विष्णु का नाम।
व्यालक (पुं.) बिगड़ैल हाथी।
व्यालग्राह (पुं.) सपेरा। साँप पकड़ने वाला।
व्यालरूप (पुं.) शिव।
व्यालम्ब (पुं.) एरण्ड वृक्ष विशेष।
व्यालोल (त्रि.) हिलने वाला। काँपने वाला। खुला हुआ। स्पष्ट।
व्यावकलन (न.) घटान। बाकी।
व्यावहासी (स्त्री.) परस्पर हँसना।
व्यावृत्त (त्रि.) वृत्त। घेरा। गोल। निवृत्त। हट गया। रूक गया।
व्यावृत्ति (स्त्री.) निवारण। हटाव। लौटना।
व्यास (पुं.) भागों में विभक्त। चौड़ाई, औड़ाई। वृत्त का व्यास। संग्रहकर्त्ता या विभाग कर्त्ता विशेष। सत्यवती सुत। द्वैपायन व्यास।
व्यासक्त (त्रि.) तत्पर। आसक्त।
व्यासंग (पुं.) आसक्ति।
व्यासिद्ध (त्रि.) निषिद्ध। रोका गया।
व्याहत (त्रि.) घबराया हुआ। रुका हुआ।
व्याहार (पुं.) वाक्य। उक्ति।
व्युत्क्रम (पुं.) क्रम विपर्यास। उलट पुलट।
व्युत्थान (न.) वैर बाँधना। स्वातन्त्र्य करण। प्रतिरोधन। नृत्य विशेष।
व्युत्पत्ति (स्त्री.) उत्पत्ति। शब्दों के अर्थ जानने की शक्ति। पद पदार्थ की ज्ञान शक्ति।
व्युत्पन्न (त्रि.) पण्डित। विद्वान्। बुद्धिमान्।
व्युदस्त (त्रि.) फेंका हुआ। तिरस्कार किया हुआ।
व्युदास (पुं.) निरादर करना।
व्युष् (क्रि.) त्यागना। छोड़ना।
व्युष्ट (त्रि.) दग्ध। जला हुआ।
व्यूढ (त्रि.) विशेष रीति से खड़ी की गयी सेना। चौड़ा। फैला हुआ। पहिना हुआ। विवाहित।
व्यूत (त्रि.) सीया हुआ। बुना हुआ।
व्यूह (पुं.) समूह। निर्माण। सम्यक् तर्क। शरीर। सेना।
व्यो (अव्य.) लोहा। बीज।
व्योकार (पुं.) लुहार।
व्योमकेश (पुं.) शिव। महादेव।
व्योमचारिन् (पुं.) पक्षी। देवता। ग्रह। नक्षत्र।
व्योमधूम (पुं.) मेघ। बादल।

व्योमन् (न.) आकाश। पानी।
व्योमयान (न.) उड़न खटोला। बैलून। आकाशगामी विमान।
व्योष (न.) तीन कड़वी वस्तु-यथा, सोठ, काली मिर्च और पीपल। त्रिकटु।
व्रज् (क्रि.) जाना। चलना।
व्रज (पुं.) समूह। झुण्ड। ग्वालों के ठहरने का स्थान। गोशाला। सड़क। बादल। पुराणेतिहास-प्रसिद्ध चौरासी कोस का मथुरा मण्डल।
व्रजनाथ (पुं.) श्रीकृष्ण।
व्रजमोहन (पुं.) श्रीकृष्ण।
व्रजवल्लभ (पुं.) श्रीकृष्ण।
व्रजाङ्गना (स्त्री.) व्रज वासिनी स्त्री। गोपी।
व्रज्या (स्त्री.) पर्य्यटन करना। घूमना। युद्ध की इच्छा से यात्रा।
व्रण् (क्रि.) घाव लगना। चोट खाना।
व्रण (पुं. न.) घाव। जखम। क्षत।
व्रणित (त्रि.) घायल। चोटिल।
व्रत (पुं. न.) पुण्य के साधन उपवासादि नियम विशेष। प्रतिज्ञा।
व्रतति }
व्रतती } (स्त्री.) लता। बेल। बढ़ाव।
व्रतिन् (पुं.) यजमान। व्रत धारण करने वाला। नियमी।
व्रश्च् (क्रि.) काटना। घायल करना।
व्रश्चन् (पुं.) आरी। सुनारों की छैनी या टाँकी। (न.) कटाव। चिराव। घाव।
व्राज (पुं.) गमन। समूह।
व्राजि (स्त्री.) तूफानी हवा।
व्रात (पुं.) समूह। झुण्ड। शारीरिक श्रम। बराती।
व्रातीन (त्रि.) मजदूर। रोजन्दारी पर काम करने वाला।
व्रात्य (पुं.) संस्कार च्युत द्विज। नीच मनुष्य। वर्णसङ्कर विशेष। भ्रष्ट। "सावित्री पतिता व्रात्याः।।"-मनुः।
व्रात्यस्तोम (पुं.) व्रात्य के करने योग्य व्रत। वेद में एक तन्त्र जो व्रात्यों ही के लिये है।
व्री (क्रि.) चुनना। जाना। ढकना। चुना जाना।
व्रीड } (पुं.) लज्जा।
व्रीडा } (स्त्री.)
व्रीडन (न.) लजाना।
व्रीडित (त्रि.) लज्जित।
व्रीस् (क्रि.) घायल करना। वध करना।
व्रीहि (पुं.) चावल।
व्रीहिकाञ्चन (न.) एक प्रकार की दाल।
व्रुड् (क्रि.) ढकना। एकत्र करना। ढेर लगाना। डूबना।
व्रैहेय (त्रि.) चावल। धान उपजने योग्य खेत।
व्ली (क्रि.) जाना। पकड़ना। सहारना। सहारा देना। चुनना।
व्लेक्ष् (क्रि.) देखना।

श

श (पुं.) काटने वाला। नाश करने वाला। अस्त्र। शिव। (न.) प्रसन्नता।
शंयु (त्रि.) प्रसन्न। समृद्धिशील।
शंव (पुं.) हल चलाना। इन्द्र का वज्र। खल्ल के दस्ते का लोहे वाला अग्र भाग।
शंवर (न.) जल। पानी।
शंस् (क्रि.) प्रंशसा करना। दुहराना। पाठ करना। चोटिल करना।
शंस (पुं.) प्रशंसा। पाठ। आह्वान। तन्त्र। जादू। भलाई की इच्छा। आशीर्वाद। शाप। विपत्ति।
शंसित (त्रि.) प्रशंसित। निश्चित। पक्का। मारा गया। कहा गया।
शंस्य (त्रि.) मारने योग्य। प्रशंसा के योग्य।
शक् (क्रि.) डरना। योग्य होना।
शक (पुं.) एक देश। एक जाति। एक राजा जिसने अपना शक चलाया। उसका चलाया वर्ष। युधिष्ठिर, विक्रमादित्य और शालिवाहन इन तीनों राजाओं ने अपने अपने शक चलाये थे।
शकट (पुं. न.) छकड़ा। एक दैत्य, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
शकटहन् (पुं.) श्रीकृष्ण।
शकल (पुं. न.) खण्ड। हिस्सा। अश। टुकड़ा। छाला। काँटा (मछली का)।
शका (पुं.) बहुवचन। देश विशेष। जाति विशेष।

शकार (पुं.) राजा की बिन व्याही स्त्री का भाई अनूढ़ माता। मद माता। अभिमानी।
शकारि (पुं.) शक का शत्रु। विक्रमादित्य राजा जिसने शक बन्द अपना संवत् चलाया था।
शकुन (न.) सगुन। पक्षी विशेष। मङ्गलाचार। गीध। शुभ सूचक चिह्न।
शकुनज्ञ (त्रि.) ज्योतिषी।
शकुन्त (पुं.) पक्षी। एक प्रकार का कीड़ा।
शकुन्तला (स्त्री.) दुष्यन्त की स्त्री।
शक्कर, शक्करि } (त्रि.) बैल। चौदह अक्षर का पाद वाला एक छन्द।
शक्करी (स्त्री.) एक नटी। नीच जाती की स्त्री। अङ्गुली।
शक्त (त्रि.) शक्ति वाला। कठोर। धनी। अभिधा। चतुर।
शक्ति (स्त्री.) सामर्थ्य। देवी। धर्म्म विशेष। बर्च्छी।
शक्तिग्रह (पुं.) अर्थ को बताने वाली वृत्ति का समझना। वृत्ति। अस्त्र। स्वामिकार्त्तिक। शिव।
शक्तिधर (पुं.) कार्त्तिकेय। (त्रि.) शक्ति रखने वाला।
शक्तिहेतिक (पुं.) बर्च्छी से लड़ने वाला।
शक्तु, सक्तु } (पुं.) सतुआ।
शक्नु (त्रि.) प्रियभाषी।
शक्य (त्रि.) शक्ति वाला।
शक्र (पुं.) इन्द्र। कुटज वृक्ष। अर्जुन वृक्ष। ज्येष्ठा नक्षत्र। उल्लू। चौदह की संख्या। शिव।
शक (पुं.) बीर बहूटी।
शक्रज (पुं.) इन्द्र का पुत्र। जयन्त। अर्जुन।
शक्रजित् (पुं.) मेघनाद। इन्द्रजित्।
शक्रधनुस् (न.) राम धनुष्। इन्द्र धनुष्।
शक्रसुत (पुं.) इन्द्र पुत्र। बालि नामी वानरों का राजा।
शक्राणी (स्त्री.) इन्द्र की पत्नी-पुलोमजा। शची।
शङ्कर (पुं.) कल्याण कर्त्ता। महादेव।
शटा (स्त्री.) सन्देह। त्रास। वितर्क। संशय।
शङ्कित (त्रि.) डरा हुआ। सन्दिग्ध।
शङ्कु (पुं.) सूखा वृक्ष। मच्छी भेद। शल्य नामक अस्त्र। कील। दस करोड़ की संख्या। महादेव। १२ अङ्गुल लम्बा एक यन्त्र विशेष, जिससे सूर्य की छाया नापी जाती है।
शङ्कुकर्ण (पुं.) गधा।
शङ्ख (पुं. न.) समुद्र से उत्पन्न शङ्ख। ललाट की हड्डी। निधि। हाथी के दांत का मध्य भाग। एक मुनि।
शङ्खध्म (पुं.) शङ्ख बजाने वाला।
शङ्खभृत (पुं.) विष्णु। नारायण।
शङ्खिनी (स्त्री.) चोरपुष्पी। यवतिक्ता। एक प्रकार की स्त्री।
शच् (क्रि.) जाना। बोलना।
शचि, शची } (स्त्री.) इन्द्र पत्नी।
शचीपति (पुं.) इन्द्र।
शट् (क्रि.) रोगी होना। अलग करना। जाना। थकना।
शट (पुं.) खट्टा।
शटा (स्त्री.) शेर की गर्दन के बाल।
शठ् (क्रि.) ठगना। धोखा देना। वध करना। चोटिल करना। समाप्त करना। अधूरा छोड़ देना। जाना। सुस्त पड़े रहना। बुराई करना। प्रशंसा करना।
शठ (न.) लोहा। केसर। (पुं.) ठग। बदमाश। उठाई गीरा। मूर्ख। कूढ़मग्ज। बिचवानिया। मध्यस्थ। पञ्च। धतूरा। ढीला या सुस्त मनुष्य। (त्रि.) ओटपायी। नटखट। उपद्रवी। बेईमान। धोखा देने वाला।
शठता (स्त्री.) शाठ्य। ठगी।
शण् (क्रि.) देना।
शण (पुं.) सन। भाँग। सन का पाधा।
शण्ड (न.) नपुंसक बैल।
शत (न.) एक सौ।
शतकुम्भ (पुं.) एक पर्वत जिसमें से सोना निकलता है।
शतकोटि (पुं.) जिसमें सौ करोड़ नौ के हों। वज्र। हीरा। (स्त्री.) सौ करोड़ की गिनती।
शतक्रतु (पुं.) इन्द्र। देवों का राजा।
शतघ्नी (स्त्री.) एक प्रकार का हथियार। तोप। बिच्छू। गले की बीमारी।
शततम (त्रि.) सौवाँ।
शतद्रुधा (पुं.) सतलज नदी।
शतधा (स्त्री.) दूब। दूर्वा। सौगुना।

शतधामन् (पुं.) विष्णु।
शतधार (पुं.) वज्र। हीरा।
शतधृति (पुं.) इन्द्र। ब्रह्मा। स्वर्ग।
शतपत्र (न.) कमल। बहुत पत्तों वाला।
शतपथ (पुं.) यजुर्वेदान्तर्गत ब्राह्मण ग्रन्थ विशेष।
शतपथिक (त्रि.) शतपथ जानने वाला। कई मतों पर चलने वाला।
शतपद (न.) कान खजूरा। गोजर।
शतभिषज् (स्त्री.) चौबीसवाँ नक्षत्र। शततारका।
शतमख (पुं.) इन्द्र।
शतरुद्रीय (न.) यजुर्वेद का रुद्राध्याय।
शतरूपा (स्त्री.) स्वायम्भुव मनु की स्त्री।
शतसाहस्र (त्रि.) लाख की गिनती वाला।
शतह्रदा (स्त्री.) बिजली।
शतानन्द (पुं.) अहल्या के गर्भ से उत्पन्न एक मुनि। जनक राजा के पुरोहित।
शतानीक (पुं.) व्यास शिष्य विशेष। (त्रि.) सैकड़ों सैनिक वाला।
शतार (न.) वज्र। सैकड़ों आरा वाला।
शतायुस् (त्रि.) एक सौ वर्ष की उमर वाला।
शातिक (त्रि.) सौ के मूल्य की वस्तु।
शत्य (त्रि.) सौ की गिन्ती वाले द्रव्य से मोल लिया गया।
शत्रु (पुं.) रिपु। वैरी। लग्न से छठवाँ स्थान।
शत्रुघ्न (पुं.) दशरथ पुत्र।
शद् (क्रि.) गिरना। नाश करना। काटना।
शनि (पुं.) सूर्य का बेटा। छाया के गर्भ से उत्पन्न एक ग्रह।
शनिवार (पुं.) सातवाँ वार।
शनैश्चर (पुं.) शनिग्रह।
शनैस् (अव्य.) मन्द-मन्द। धीरे।
शंस् (क्रि.) मारना। स्तुति करना।
शप् (क्रि.) चिल्लाना। कसम खाना। शाप देना।
शपथ (पुं.) कसम। किरिया।
शपन (न.) शपथ। सौं। कसम।
शप्त (त्रि.) शापित। कोसा हुआ।
शफ (न.) खुर। सुम। वृक्ष की जड़।
शफर (पुं. स्त्री.) मछली विशेष।

शब्द् (क्रि.) शब्द करना।
शब्द (पुं.) आवाज।
शब्दग्रह (पुं.) कान। शब्द का ज्ञान।
शब्दब्रह्मन् (न.) वेद। शब्द स्वरूप ब्रह्म।
शब्दभेदिन् (पुं.) शब्द भेदी तीर। अर्जुन। गुदा। लिङ्ग।
शब्दशक्ति (स्त्री.) अर्थ बतलाने वाली शब्द की शक्ति।
शब्दानुशासन (न.) व्याकरण।
शब्दालङ्कार (पुं.) अनुप्रासादि अलंकार।
शब्दित (स्त्री.) बुलाया हुआ।
शम् (क्रि.) शान्त करना।
शम (पुं.) शान्ति।
शमथ (पुं.) शान्ति।
शमनस्वसृ (स्त्री.) यमराज की बहिन। यमुना।
शमल (न.) विष्ठा। मल।
शमि, **शमी** } एक वृक्ष का नाम। छेंकुर का पेड़।
शमिन् (त्रि.) शान्त। धीर। साबिर।
शमीक (पुं.) एक मुनि का नाम।
शमीगर्भ (पुं.) आग। ब्राह्मण।
शम्पा (स्त्री.) बिजुली।
शम्ब् (क्रि.) जाना।
शम्ब (पुं.) वज्र। भाग्यवाला। मूसल की नोक का लोहा।
शम्बर (न.) जल। धन। व्रत। चित्र। मृग। एक दैत्य। एक मच्छ। एक पर्वत। लड़ाई। चित्रक वृक्ष। लोध। अर्जुन वृक्ष। (त्रि.) बहुत अच्छा।
शम्बरारि (पुं.) शम्बर दैत्य को मारने वाला। कामदेव।
शम्बल (पुं. न.) कूल। किनारा। मार्ग व्यय। मत्सर।
शम्भल (पुं.) मुरादाबाद जिले के अन्तर्गत एक गाँव जहाँ कल्कि अवतार होगा।
शम्भु (पुं.) महादेव।
शम्भुतनय (पुं.) गणेश। स्वामि कार्त्तिक।
शम्बु, **शम्बू** } (पुं. स्त्री.) सीप। रामायण का प्रसिद्ध शूद्र तपस्वी। शङ्ख। दैत्य विशेष।
शम्या (स्त्री.) कील (जुएँ की)।

शय (पुं.) हाथ। साँप। नींद। सेज। पण।
शयनीय (न.) शय्या। सेज।
शयनैकादशी (स्त्री.) आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी।
शयालु (त्रि.) निद्राशील। सोने वाला। अजगर। (पुं.) कुत्ता।
शयित (त्रि.) निद्रित। सो गया।
शयु (पुं.) अजगर साँप।
शय्या (स्त्री.) खाट। पलङ्ग।
शर (न.) जल। तीर। दही और दूध का सार।
शरजन्मन् (पुं.) कार्त्तिकेय।
शरट (पुं.) कृकलास। कुसुम्भ शाक।
शरण (न.) गृह। घर। रक्षक। बचाना। वध। घातक।
शरणागत (त्रि.) शरणापन्न।
शरणि } **शरणी** } (स्त्री.) पथ। रास्ता। सड़क।
शरण्य (त्रि.) शरण आये हुए की रक्षा करने वाला।
शरद् (स्त्री.) ऋतु विशेष। आश्विन और कार्त्तिक।
शरधि (पुं.) तर्कस। बाण रखने का कोष।
शरभ (पुं.) हाथी का बच्चा। आठ पैर का जन्तु विशेष जो सिंह से भी अधिक भयानक और बलवान् बतलाया जाता है। ऊँट। टिड्डी।
शरभू (पुं.) कार्त्तिकेय।
शरयु } **सरयू** } (स्त्री.) एक नदी जिसकी विशेष प्रसिद्धि अयोध्या में हैं।
शरल (त्रि.) टेढ़ा। धोखा देने वाला।
शरलक (न.) जल। पानी।
शरव्य (न.) लक्ष्य। निशाना।
शराभ्यास (पुं.) तीर चलाने का अभ्यास।
शरारु (त्रि.) हिंसा।
शरारोप (पुं.) धनुष। कमान।
शराव (पुं. न.) मिट्टी का दीपक। रकाबी। सरवा। कठोरता। करई।
शरावती (स्त्री.) एक नदी।
शराश्रय (पुं.) तूण। तर्कस।
शरीर (न.) देह।
शरीरक (पुं.) जीवात्मा।
शरीरज (पुं.) रोग। बीमारी। (त्रि.) शरीर से उपजने वाला। पसीना। बाल।
शरीरावरण (न.) चमड़ा। कवच। कुर्ता, अँग-रखा आदि।
शरीरिन् (पुं.) जीव।
शरु (पुं.) तीर। अस्त्र। वज्र। क्रोध। व्यसन। तीर चलाने का अभ्यास।
शरेष्ट (पुं.) आम।
शर्करा (स्त्री.) खाँड़। छोटी कङ्करी। ओले का टुकड़ा। पथरी नामक एक रोग।
शर्ध (पुं.) अपान वायु मोचन। समूह। बल। पराक्रम।
शर्व् (क्रि.) जाना। चोटिल करना। मार डालना।
शर्मद (त्रि.) सुख देने वाला। (पुं.) विष्णु।
शर्मन् (न.) सुख। (त्रि.) सुख वाला। (पुं.) ब्राह्मण की उपाधि।
शर्मिष्ठा (स्त्री.) वृषपर्वा की कन्या जो राजा ययाति को ब्याही गयी थी।
शर्य्य (त्रि.) चोटिल। (पुं.) शत्रु।
शर्या (स्त्री.) रात। अङ्गुली। तीर।
शर्य्याति (पुं.) वैवस्वत मनु का एक पुत्र।
शर्व (पुं.) महादेव।
शर्वर (पुं.) कामदेव। (न.) अन्धेरा।
शर्व्वरी (स्त्री.) रात्रि। स्त्री। हल्दी।
शर्व्वाणी (स्त्री.) शिवपत्नी। पार्वती या दुर्गा।
शल् (क्रि.) जाना।
शलभ (पुं.) पतङ्गा। एक कीड़ा।
शलाका (स्त्री.) शल्य। तीर। सिलाई। मैना। मूर्ति लिखने की कूँची। हड्डी।
शलाटु (त्रि.) कच्चा फल। एक प्रकार की जड़। (पुं.) बेल।
शल्क (न.) टुकड़ा। वृक्ष का वल्कल। मच्छी का काँटा।
शाल्मलि } **शाल्मलि** } (पुं.) छेंकुर का पेड़।
शल्य (न.) बाण। तीर। तोमर। विष। कील।
शल्ल् (क्रि.) जाना।
शल्व (पुं.) देश विशेष।
शद् (क्रि.) बिगाड़ना। जाना।
शव (पुं. न.) मृत शरीर। मुर्दा (न.) जल।
शवकाम्य (पुं.) कुत्ता।

शवयान (न.) ठठरी। शिविका। मुर्दे को उठाने का तख्ता।

शबर (न.) म्लेच्छ जाति विशेष। (पुं.) पानी और शिव।

शवरथ (पुं.) मुर्दा ढोने वाली गाड़ी।

शवल (पुं.) रङ्ग वरङ्गी।

शश् (क्रि.) उछल कर जाना।

शश (पुं.) खरगोश।

शशधर (पुं.) चन्द्रमा।

शशबिन्दु (पुं.) राजा विशेष विष्णु।

शशाद (पुं.) बाज पक्षी। सूर्यवंशी एक राजा।

शशिकला (स्त्री.) चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग।

शशिकान्त (न.) कुमुद। (पुं.) चन्द्र कान्तमणि।

शशिन् (पुं.) चन्द्रमा।

शशिप्रभ (न.) कुमुद का फूल। चाँदनी।

शशिभूषण (पुं.) महादेव।

शशिलेखा (स्त्री.) चन्द्रकला। गिलोय।

शशिशेखर (पुं.) महादेव।

शशोर्ण (न.) खरगोश का रोम।

शश्वत् (अव्य.) निरन्तर। सदा। लगातार।

शष् (क्रि.) वध करना।

शष्कुल (पुं.) एक प्रकार का पुआ। कान का छेद। एक मच्छ।

शष्प (न.) छोटी छोटी घास। नयी घास।

शय् (क्रि.) वध करना।

शसृ (क्रि.) आशीर्वाद देना। सोना। स्वप्न देखना।

शसन (न.) यज्ञार्थ पशु हनन।

शस्त (न.) कल्याण। (त्रि.) कल्याण वाला। प्रशंसित। स्तुत। बहुत अच्छा।

शस्त्र (न.) तलवार आदि हथियार।

शस्त्रजीविन् (पुं.) शस्त्र बाँधकर जीनेवाला।

शस्त्रपाणि (पुं.) हाथ में शस्त्र पकड़ने वाला। आततायी।

शस्त्राभ्यास (पुं.) शस्त्र चलाने की शिक्षा।

शस्त्रिन् (त्रि.) शस्त्रधारी। हथियारबन्ध।

शस्त्री (स्त्री.) छुरी।

शस्य (न.) फल। धान।

शस्यमञ्जरी (स्त्री.) नये धान की मञ्जरी।

शाक (पुं. न.) पत्ते, फूल आदि। (पुं.) एक प्रकार का वृक्ष। शिरीष वृक्ष। शक चलाने वाले राजे। (न.) हर्र।

शाकटायन (पुं.) व्याकरण रचने वाले मुनि विशेष।

शाकटिक (पुं.) छकड़े पर जाने वाला।

शाकतरु (पुं.) सागोन का पेड़।

शाकम्भरी (स्त्री.) दुर्गा। सागों से पालनेवाली।

शाकराज (पुं.) बथुआ का शाक।

शाकिनी (स्त्री.) शाक उत्पन्न करने वाली पृथिवी। देवी की एक सहचरी।

शाकुन (पुं.) सगुन जानने का साधन। एक ग्रन्थ विशेष। काकचरित।

शाकुनिक (पुं.) राजा भरत।

शाक्त (त्रि.) तान्त्रिक जो देवी की उपासना करते हैं।

शाक्तीक (पुं.) बर्छी से लड़ने वाला।

शाक्य (पुं.) बुद्धदेव।

शाक्यसिंह (पुं.) बुद्ध विशेष।

शाख (क्रि.) फैलना।

शाख (पुं.) कार्त्तिकेय।

शाखा (स्त्री.) डाली। बाहू। दल। भाग। सर्ग। सम्प्रदाय। राहु। बेल। वेद का एक भाग।

शाखानगर (न.) गाँव का कुछ विभाग जो उससे अलग बसा हो। शहर का मुहल्ला।

शखामृग (पुं.) बन्दर।

शाखारण्ड (पुं.) अपनी शाखा को छोड़ कर काम करने वाला।

शाखिन् (पुं.) पेड़। वेद का एक भाग। एक राजा। म्लेच्छ विशेष।

शाखोट, **शाखोटक** } (स्त्री.) वृक्ष विशेष।

शाङ्कर (पुं.) नादिया। साँड़।

शाङ्करि (पुं.) कार्त्तिकेय। गणेश। अग्नि।

शाङ्ख (न.) शङ्ख का शब्द।

शाङ्खिक, (पुं.) शङ्ख बनाने वाला। सङ्कर जाति विशेष। शङ्ख बजाने वाला।

शाचि (त्रि.) प्रसिद्ध। बली।

शाट } (पुं.) कपड़ा। पोशाक।
शाटक }

शाटी (स्त्री.) कुर्ती।

शाट्यायन (न.) एक प्रकार की होम विधि विशेष। जो मुख्य होम में किसी प्रकार की भूल या विघ्न होने से किया जाता है।

शाठ्य (न.) शठता। ढीठपन। मूर्खता।

शाण (न.) सनिया कपड़ा। कसौटी। सान। सिल्ली। आरा। चार माशे का माप।

शाणित (त्रि.) तेज किया हुआ।

शाण्डिल्य (पुं.) एक मुनि। धर्मशास्त्र बनाने वाले एक मुनि विशेष। बिल्व वृक्ष। अग्निभेद।

शाण्डिलयगोत्र (पुं.) शाण्डिल के गोत्र वाले।

शात (त्रि.) पैना। रगड़ा हुआ। पतला। दुबला। निर्बल। सुन्दर। कटा हुआ। प्रसन्न। उन्नतशील। (न.) प्रसन्नता।

शातोदरी (स्त्री.) पतली कमर वाली स्त्री।

शातकुम्भ (न.) सोना। धतूला। (पुं.) करवीर।

शातन (न.) पैना। काटछाँट। विनाशन।

शातपत्रक } (पुं.) चाँदनी।
शातपत्रकी } (स्त्री.)

शातमान (त्रि.) एक सौ के मूल्य की।

शात्रव (पुं.) शत्रु। (न.) वैरियों का समूह। शत्रुता। चोर।

शाद (पुं.) छोटी घास। कीचड़।

शादहरित (पुं.) रमना। हरी हरी घास से भरा पूरा मैदान।

शाद्वल (पुं.) बहुत घासवाला स्थान।

शानृ (क्रि.) पैना करना। तेज करना।

शान (पुं.) कसौटी। सान धरने का पत्थर या सिल्ली।

शानपाद (पुं.) चन्दन रगड़ने का हुर्सा-या चकला। पारियात्र पर्वत।

शान्तनव (पुं.) भीष्मपितामह।

शान्तनु (पुं.) एक राजा जो भीष्म का पिता था।

शान्ति (स्त्री.) काम क्रोध आदि का जीतना। विषयों से विराग।

शान्तिनिक (त्रि.) उपद्रवों को दूर करने वाली होम आदि प्रक्रिया।

शाप (पुं.) कोसना। गाली। कड़ी बात। शपथ।

शापास्त्र (पुं.) मुनि। ऋषि। सन्त।

शाब्दबोध (पुं.) ज्ञान विशेष।

शाब्दिक (पुं.) व्याकरण शास्त्र का ज्ञाता।

शामित्र (न.) पशु के बाँधने का स्थान।

शाम्बरी (स्त्री.) माया। इन्द्रजाल।

शाम्भव (पुं.) गुग्गल। काफूर। एक विष। शिवपुत्र। (न.) देवदारु। (त्रि.) शिवोपासक।

शायक } (स्त्री.) बाण। तीर।
सायक }

शार (न.) चितकबरा। रङ्ग विरङ्ग।

शारङ्ग (पुं.) पपीहा। हिरन। हाथी। भौंरा। मोर।

शारद (न.) चिरा कमल। काही। बकुल। (पुं.) हरी मूँग (त्रि.) शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाला।

शारदिक (न.) शरत् काल का श्राद्ध (पुं.) इस ऋतु में उत्पन्न होने वाला।

शारदीया (स्त्री.) शरत् काल में करने योग्य दुर्गा की पूजा।

शारि } (स्त्री.) पासा। शतरञ्ज के मोहरे। मैना
शारी } पक्षी। छल। हाथी का पलाना।

शारिफल (पुं. न.) शतरञ्ज खेलने का खानों वाला कपड़ा या तख्ता।

शारीर (त्रि.) शरीर के साथ मिला हुआ सुख दुःख। (पुं.) बैल मल।

शारीरिक (त्रि.) शरीर से उपजा। शरीर सम्बन्धी।

शारुक (त्रि.) जल्लाद। हिंसक।

शार्कर (त्रि.) ईंट रोड़ों वाला स्थान।

शार्ङ्ग (पुं.) सींग का बना हुआ धनुष। सामान्य धनुष। विष्णु का धनुष। सोंठ।

शार्ङ्गिन् (पुं.) विष्णु। शार्ङ्ग धनुर्धारी।

शार्दूल (पुं.) बाघ। भेड़िया। एक राक्षस। शरभ। जब यह किसी शब्द के पीछे लगाया जाता है तब इसका अर्थ श्रेष्ठ होता है। यथा नरशार्दूल अर्थात् श्रेष्ठ नर।

शार्दूलविक्रीड़ित (न.) छन्द विशेष।

शार्वर (न.) रात का। बहुत अन्धेरा।

शालृ (क्रि.) कहना। चापलूसी करना। प्रशंसा करना। चमकना। मुक्त होना। शेखी मारना।

शाल (पुं.) एक वृक्ष का नाम जो बहुत लम्बा होता है। घेरा। बाड़ा। मछली। शालिवाहन राजा।

शालग्राम (पुं.) विष्णु चिह्न बताने वाला वह पत्थर जो गंडकी नदी में हो, वहाँ से लाया गया हो, किसी ने बनाया न हो, स्वाभाविक मूर्त्ति। धर्मशास्त्रों में प्रधान उपास्य शालग्राम शिला। विष्णुस्मृति और कई पुराणो में इनकी महिमा प्रसिद्ध है। शालग्राम पहाड़ से उत्पन्न मूर्ति। महाविष्णु।

शालनिर्य्यास (पुं.) साल वृक्ष का गोंद।

शालभञ्जिका (स्त्री.) काठ की पुतली। वेश्या।

शाला (स्त्री.) गृह। घर का स्थान। पेड़ की डाली। घुड़साल।

शालामृग (पुं.) गीदड़। श्रृंगाल।

शालावृक (पुं.) कुत्ता। गीदड़। पिल्ला। हिरन। बन्दर।

शालि (पुं.) धान।

शाहिलवाहन (पुं.) एक राजा विशेष, जिसने अपना शाका चलाया।

शाली (स्त्री.) काला जीरा।

शालीन (त्रि.) ढीठ। निर्लज्ज।

शालु (न.) कसैला पदार्थ। (पुं.) मेंड़क।

शालूर (पुं.) मेंडक।

शालोत्तरीय (पुं.) पाणिनि मुनि।

शाल्मल (पुं.) द्वीप विशेष।

शाल्व (पुं.) एक देश।

शाव (पुं.) शिशु।

शावर (पुं.) पाप। अपराध। लोध का पेड़। शवर कृत मीमांसा भाष्य।

शाबरी (स्त्री.) भिल्लनी। विद्या विशेष।

शाश्वत (त्रि.) सतत्। नित्य। सदैव।

शास् (क्रि.) प्रशंसा करना। सिखाना। शासन करना। आज्ञा देना। कहना। परामर्श देना। दण्ड देना। पालना। वश में करना। इच्छा करना।

शासन (न.) उपदेश करना। सजा देना। हुक्म देना।

शासनहर (पुं.) दूत।

शासितृ (त्रि.) शासनकर्त्ता। हुक्काम।

शास्त्र (न.) मनुष्यों के कर्तव्य और अकर्तव्यों का निश्चय-प्रदर्शक ग्रन्थ। जैसे- "तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य- व्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्तुमिहार्हसि ।। १ ।।" गीता।

शास्त्रदर्शिन् (त्रि.) शास्त्र दिखाने वाला। विद्वान्। प्राज्ञ।

शास्त्रीय (त्रि.) छहों शास्त्रों में कथित धर्म।

शास्य (त्रि.) उपदेश देने योग्य। शिक्षा देने के योग्य। शिक्षा देने के योग्य।

शि (क्रि.) काटना।

शिंशपा (स्त्री.) वृक्ष विशेष। सरसई।

शिकय, **सिक्य** (न.) छींका।

शिक्यित (त्रि.) छींके पर रखा हुआ।

शिक्ष् (क्रि.) अभ्यास करना। पढ़ाना।

शिक्षा (स्त्री.) पथ। रास्ता। उपदेश। सीख। अभ्यास। अक्षरों के उच्चारण को बतलाने वाला वेद का अङ्ग विशेष। विद्या।

शिक्षागुरु (पुं.) विद्या सिखाने वाला।

शिक्षित (त्रि.) अभ्यासी। शिक्षा प्राप्त।

शिखण्ड, **शिखाण्ड** (स्त्री.) मोर पिच्छ। चूड़ा। चोटी।

शिखण्डक (पुं.) काकपक्ष।

शिखण्डिक (पुं.) मुर्गा।

शिखण्डिन् (पुं.) कल्गी वाला। तीर। मयूर। मोर। द्रुपद राजा का १ पुत्र। विष्णु।

शिखर (न.) पहाड़ की चोटी। अन्त। सिरा।

शिखा (स्त्री.) शिर के बालों की चोटी।

शिखाकन्द (न.) गाजर।

शिखिध्वज (पुं.) मोर। आग। चित्रक पेड़। केतुग्रह। कुक्कुट। घोड़ा। ब्राह्मण। तीर। पहाड़। तीन की संख्या। दीपक। बैल।

शिखिप्रिय (पुं.) छोटा बेर। जङ्गली बेर।

शिखिमोदा (स्त्री.) अजमोदा। अजवाइन।

शिखिवाहन (पुं.) कार्त्तिकेय।

शिग्रु (पुं.) सहजना का पेड़। हर प्रकार का शाक।

शिघ् (क्रि.) सूँघना।

शिंघाण (न.) काच का बर्तन। लोहे का मैल। नाक का मैल। श्लेष्म।

शिज् (क्रि.) शब्द का स्पष्ट सुनाई न पड़ना।
शिञ्जा (स्त्री.) गहनों का शब्द। कमान का चिल्ला।
शिञ्जिनी (स्त्री.) कमान का चिल्ला।
शित (त्रि.) दुर्बल। पैना किया हुआ।
शितद्रु (पुं.) सतलज नदी।
शितशूक (पुं.) यव। जौं।
शिति (पुं.) भोजपत्र का पेड़। (त्रि.) काले रङ्ग या चित्ते रङ्ग का।
शितिकण्ठ (पुं.) महादेव। नीलकण्ठ।
शिथिल (त्रि.) ढीला। कमजोर। मद। मूर्ख। धीमा। सुस्त।
शिनि (पुं.) सात्यकी का मामा। यदुवंशीय एक क्षत्रिय।
शिप्र (पुं.) तालाब। नदी।
शिफाकन्द (पुं.) कमल के फूल की जड़।
शिरःफल (पुं.) नारियल।
शिरःशूल (न.) सिर की पीड़ा।
शिरज (पुं.) केश। बाल।
शिरस् (न.) मत्था। सिर। आगे। सिरा।
शिरसिरुह (पुं.) बाल। केश।
शिरस्क (न.) टोपी। पगड़ी। मुरेठा।
शिरस्त्र (न.) पगड़ी। मुरेठा।
शिरस्य (पुं.) सिर पर उत्पन्न। बाल।
शिरा (स्त्री.) नाड़ी वाला।
शिरीष (पुं.) सिरस का पेड़।
शिरोगृह (न.) अटारी। अटा।
शिरोधरा (स्त्री.) ग्रीवा। गर्दन।
शिरोधि (स्त्री.) ग्रीवा। गर्दन।
शिरोमणि (पुं.) चूड़ामणि।
शिरोरुह (पुं.) केश। बाल।
शिरोवेष्ट (पुं.) पगड़ी। मुरेठा।
शिल् (क्रि.) एक-एक दाना बीनना।
शिल (न.) खेत में बेकार पड़े अन्न के दानों को बीनना। पत्थर।
शिलाकुट्टक (पुं.) छेनी। पत्थर काटने का औजार।
शिलाजतु (न.) उपधातु विशेष। शिला-जीत।
शिलाभेद (पुं.) सङ्गतराश की छैनी।
शिलासार (न.) लोहा।
शिलि (पुं.) भोजपत्र का पेंड़। दहरी की लकड़ी।
शिलिन्द (पुं.) एक प्रकार की मछली।
शिली (स्त्री.) दहरी के नीचे की लकड़ी। एक प्रकार का कीट। खम्भे का ऊपरी भाग। तीर। मादा मेंडक।
शिलीन्ध्र (न.) केले का फूल। एक प्रकार की मछली। वृक्ष विशेष। ओला।
शिलीमुख (पुं.) मधुमक्षिका। तीर। युद्ध। मूर्ख।
शिलोच्चय (पुं.) पर्वत।
शिलोञ्छ (पुं.) खेत में पड़े हुए अनाज के दानों को बीनना।
शिल्प (न.) कारीगरी। श्रुवा। आकार। सृष्टि।
शिल्पकारिन् (त्रि.) कारीगर।
शिल्पशाला (स्त्री.) कारीगरी का घर।
शिल्पशास्त्र (न.) शिल्प सिखाने वाला शास्त्र या विद्या।
शिल्पिन् (त्रि.) कारीगर।
शिव (न.) मंगल। जल। सेंधानोंन। सुहागा। (पुं.) महादेव। मोक्ष। गुग्गल। वेद। पुण्डरीक का पेड़। काला धतूरा। पारा। देवता। लिङ्ग। एक शुभ योग। वेद।
शिवक (पुं.) एक कील।
शिवचतुर्दशी (स्त्री.) फाल्गुन कृष्ण १४ शी।
शिवदूती (स्त्री.) दुर्गा की मूर्ति विशेष।
शिवद्रुम (पुं.) शिवजी का प्यारा वृक्ष।
शिवधातु (पुं.) पारा।
शिवपुरी (स्त्री.) शिवजी की नगरी। उज्जैन और काशी प्रसिद्ध हैं।
शिवरात्रि (स्त्री.) शिवजी की उपासना के लिये रात्रि विशेष। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।
शिवलिङ्ग (न.) शिव का आकार।
शिवलोक (पुं.) कैलास।
शिववाहन (न.) वृषभ। बैल।
शिवबीज (न.) पारा।
शिवशेखर (पुं.) चन्द्रमा। धतूरा फल।
शिवसुन्दरी (स्त्री.) पार्वती। गीदड़ी। सौभाग्यवती स्त्री। शमी वृक्ष। आमला। दूर्वा। हल्दी।
शिवानी (स्त्री.) पार्वती। जयन्ती वृक्ष। दुर्गा।

शिवालय (न.) श्मशान या शिवजी का मन्दिर।
शिवालु (पुं.) गीदड़।
शिवि (पुं.) हिंस्र पशु। भोजपत्र का पेड़। उशीनर राजा का पुत्र।
शिविका (स्त्री.) डोली। पालकी।
शिविर (न.) छावनी।
शिशिर (न.) माघ और फागुन के मास की ऋतु।
शिशुः (पुं.) बालक। बच्चा। आठ और १६ वर्ष के भीतर की उम्र का बालक। शिष्य। चेला।
शिशुत्व (न.) बचपन।
शिशुपाल (पुं.) चेदि देश का एक राजा।
शिशुमार (पुं.) जल का जीव विशेष। बालग्रह, जिससे बच्चे मर जाते हैं।
शिश्न (न.) लिङ्ग।
शिश्विदान (त्रि.) सच्चरित्र। पवित्र। बदचलन। पापी।
शिष् (स्त्री.) चोटिल करना। वध करना। बचाना। पहचानना।
शिष्ट (त्रि.) शान्त। वेद के वचनों पर विश्वास करने वाला। बचा हुआ। शिक्षित। चतुर। बुद्धिमान। प्रतिष्ठित। मुख्य। नम्र। सर्वोत्तम। सज्जन।
शिष्टाचार (पुं.) सज्जनों का आचार।
शिष्टि (स्त्री.) श्राईन। आज्ञा। सजा। दण्ड।
शिष्य (त्रि.) छात्र। विद्यार्थी।
शी (क्रि.) लेटना। सोना। आराम। करना।
शी (स्त्री.) आराम। निद्रा। शान्ति।
शीक् (क्रि.) छिड़कना। भिगोना। धीरे-धीरे चलना। क्रोध करना। आर्द्र करना। सन्तोष करना। बोलना। चमकना।
शीकर (पुं.) सीधा बहना। पानी के कण। हवा।
शीघ्र (त्रि.) जल्दी।
शीघ्रचेतन (पुं.) जल्दी जागने वाला। कुत्ता।
शीत (न.) ठण्डा। पानी। बर्फ। (त्रि.) ठण्डा। सुस्त।
शीतक (पुं.) शीतकाल। सर्दी। सुस्त मनुष्य। विच्छू। निश्चिन्त मनुष्य।
शीतकर (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।
शीतकाल (पुं.) जाड़े की ऋतु।
शीतकृच्छ्र (पुं.) एक प्रकार का व्रत। इस व्रत में तीन-तीन दिनों तक क्रमशः दही, घी और दूध पी कर रहना पड़ता है।
शीतगु (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।
शितभानु (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।
शीतभीरु (स्त्री.) मालती। (त्रि.) सर्दी से डरा हुआ।
शीतरश्मि (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।
शीतल (त्रि.) ठण्डा। (पुं.) चन्द्रमा। कपूर। तारपीन। चम्पक वृक्ष। व्रत विशेष। (नं.) ठण्डक। सर्दी। सफेद चन्दन। मोती। तूतिया। कमल। वीरण।
शीतलक (न.) सफेद कमल।
शीतला (स्त्री.) एक देवी। वसन्त रोग। चेचक की बीमारी।
शीता, सीता } (स्त्री.) हल का फाल। सीता। दूर्वा।
शीतांशु (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।
शीतार्त्त (त्रि.) शीतपीड़ित।
शीतालु (त्रि.) शीतबाधायुक्त।
शीत्कार (पुं.) स्त्रियों की सी सी आवाज। सिसकारी।
शीत्य, सीत्य } (त्रि.) हल चलाया हुआ।
शीधु (पुं. न.) मद्य विशेष।
शीन (त्रि.) गाढ़ा। घना। जमा हुआ। मूर्ख। अजगर।
शीभ् (क्रि.) शेखी मारना। कहना।
शीभ्य (पुं.) साँड़। शिव।
शीर (पुं.) अजगर।
शीर्ण (त्रि.) कृश। पतला। मुर्झाया हुआ। सड़ा हुआ। भूना हुआ। सूखा। फटा हुआ। छोटा।
शीर्दि (त्रि.) हानिकारी।
शीर्ष (न.) सिर। माथा।
शीर्षक (न.) शिरस्त्राण। टोपी। पगड़ी। सिर। सिर की हड्डी। फैसला। (पुं.) राहु। किसी विषय

या लेख का नाम, जिससे उसका स्वरूप ज्ञात हो जाय।
शीर्षच्छेद्य (त्रि.) मारने योग्य।
शीर्षण्य (पुं.) टोपी। पगड़ी। (त्रि.) बालों से उत्पन्न।
शील् (क्रि.) विचारना। सोचना। मनन करना। सेवा करना। पूजा करना। अभ्यास करना। पहनना। समाधि लगाना।
शील (न.) स्वभाव। अच्छा आचरण। (पुं.) साँप।
शीलन (न.) अभ्यास। बार-बार करना।
शीलित (त्रि.) अभ्यस्त।
शुक् (क्रि.) जाना।
शुक (न.) एक पेड़। कपड़ा। व्यास के पुत्र। तोता। (पुं.) शोनक वृक्ष।
शुकदेव (पुं.) एक महायोगी मुनि, जिन्होंने राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत को सप्ताह में सुनाया। व्यासपुत्र।
शुकनास (पुं.) स्योनाक वृक्ष। कादम्बरी में तारापीड़ राजा का १ मंत्री।
शुक्त (न.) मांस। काञ्जी। पिघला हुआ। मीठा पदार्थ जो समय पा कर खट्टा हो गया हो। (त्रि.) निर्दर्य। दुर्ज्जन। खट्टा। (स्त्री.) सीपी।
शुक्तिज (न.) मोती।
शुक्तिमत् (पुं.) पहाड़।
शुक्तिमती (स्त्री.) एक नदी।
शुक्र (न.) वीर्य्य। बिन्दु। नेत्र रोग विशेष। एक ग्रह। दैत्यगुरु। अग्नि। चित्रक वृक्ष। जेठ का मास। चौबीसवाँ योग।
शुक्रभुज् (स्त्री.) मयूरनी।
शुक्रला (स्त्री.) उच्चटा वृक्ष।
शुक्रशिष्य (पुं.) असुर। दैत्य।
शुक्रिय (त्रि.) यजुर्वेद का ३६ वाँ शान्ति अध्याय। (न.)।
शुक्ल (न.) चाँदी। मक्खन। एक प्रकार का रोग। (पुं.) चिट्टा रङ्ग। (त्रि.) चिट्टा रङ्ग वाला। साफ।
शुक्लकर्मन् (त्रि.) अच्छा काम करने वाला। पवित्र। साफ। (त्रि) शुभचरित्र।
शुक्लपक्ष (पुं.) उजियाला पाख। सफेद पंख।
शुक्लवायस (पुं.) बगला। श्वेत काक।
शुक्लापाङ्ग (पुं.) मयूर।
शुक्लिमन् (पुं.) सफेदी।
शुक्लोपला, (स्त्री.) सफेद मिसरी। सफेद पत्थर।
शुङ्ग (पुं.) वट वृक्ष।
शुच् (स्त्री.) शोक। चिन्ता।
शुच् (क्रि.) अफसोस करना।
शुचि (पुं.) आग। चित्रक वृक्ष। जेठ का महीना। नेक चाल। ग्रीष्म ऋतु। अच्छा सचिव। सफेद रङ्ग।
शुचिद्रुम (पुं.) अश्वत्थ वृक्ष।
शुण्ड (पुं.) सूँड़ (हाथी की)। शराब खाना। (स्त्री.) वेश्या। कुटनी।
शुण्डार (पुं.) कलाल। हाथी।
शुद्ध (न.) सैन्धव लवण।
शुद्धवल्ली (स्त्री.) गिलोय।
शुद्धान्त (पुं.) राजा का रनवास। अन्तः पुर।
शुद्धापह्नुति (स्त्री.) अर्थसम्बन्धी अलंकार विशेष।
शुद्धि (स्त्री.) सफाई। दुर्गा। देवी।
शुद्धोदनि (पुं.) बुद्ध का पिता।
शुध् (क्रि.) साफ होना। घटाना।
शुन् (क्रि.) जाना।
शुन (पुं.) कुत्ता।
शुनःशेप (पुं.) विश्वामित्र का धर्मपुत्र। अजीगर्त के औरस से उत्पन्न।
शुनक (पुं.) मुनि विशेष। कुत्ता। पिल्ला।
शुनाशीर / **शुनासीर** } (पुं.) इन्द्र। उल्लू।
शुनी (स्त्री.) कुतिया।
शुन्ध् (क्रि.) साफ करना।
शुम्भ् (क्रि.) चमकना। चमकाना।
शुभ (न.) मङ्गल। भलाई (त्रि.)। भलाई वाला।
शुभंयु (त्रि.) शुभान्वित। भलाई वाला।
शुभग्रह (पुं.) साधुग्रह। अच्छा ग्रह।
शुभङ्कर (त्रि.) मङ्गलकारक।
शुभद (पुं.) पीपल का पेड़ (त्रि.) मङ्गलकारी।
शुभ्र (न.) अबरक। रूपा। चन्दन। सैंधा नोंन।

शुभ्रदन्ती (स्त्री.) पुष्पदन्त दिग्गज की हथिनी।
शुम्भ (पुं.) एक दानव विशेष।
शुम्भमर्दिनी (स्त्री.) शुम्भ दैत्य का मारने वाली देवी। दुर्गा।
शुर् (क्रि.) मार डालना।
शुल्क् (क्रि.) कहना। देना। वह द्रव्य, जो इनाम के तौर पर चिड़िया, पशु आदि को फँसाव से छुड़ाने को दिया जाय। भेंट। उपहार।
शुल्क (पुं. न.) मोल। फ़ीस। कर (टैक्स) घाट आदि की उतराई में दिया जाने वाला द्रव्य। अनियमित द्रव्य। एक प्रकार का स्त्रीधन। लड़की का मूल्य। दहेज। यौतुक। देखो शुल्क क्रिया।
शुल्कस्थान (न.) चुङ्गीवसूल करने का स्थान। उपहार बँटने की जगह। वह कचहरी, जहाँ लगान या फ़ीस आदि दिया जाय।
शुल्ल (न.) ताम्र। तावा। रस्सी।
शुल्व (न.) आचार। यज्ञ का कार्य। रस्सी तामा।
शुश्रूषण (न.) सेवा करना। सन्तोषप्रद सेवा। बरदाश। परिचर्या।
शुष् (क्रि.) सूखना।
शुष (पुं.) गर्त। गढ़ा। बिल।
शुषिर (न.) छिद्र। बंसी आदि बाजा। (त्रि.) सच्छिद्र (पुं.) मूसा। आग।
शुष्क (त्रि.) धूप आदि से सूख गया। सूखा।
शुष्कल (पुं.) सूखा हुआ मांस।
शुष्क (न.) उद्देश्यशून्य कलह। व्यर्थ की शत्रुता या वैमनस्य।
शुष्कव्रण (पुं.) सूखा घाव।
शुष्मन् (न.) तेज। शौर्य्य। (पुं.) अग्नि। चित्रक वृक्ष।
शूक (पुं. न.) यव। शिखा। नोक। काँटा। दया। ममता। एक प्रकार विषैला कीड़ा।
शूकर (पुं.) सुअर।
शूकरइष्ट (पुं.) एक प्रकार की घास, जिसे सूअर चाव से खाते हैं। मुस्ता। मोथा। नागरमोथा हरा।
शूकल (पुं.) चञ्चल। घोड़ा।
शूद्र (पुं.) चतुर्थ वर्ण।
शूद्रकर्म्मन् (न.) शूद्र का काम अर्थात् द्विजातियों की सेवा।
शूद्रावेदिन् (पुं.) शूद्रा के साथ विवाह करने वाला।
शूना (स्त्री.) कसाईखाना।
शून्य (त्रि.) आकाश। खाली। बिन्दु। अभाव। कम तुच्छ। रहित।
शून्यवादिन् (पुं.) बौद्ध विशेष। अनीश्वरवादी। नास्तिक।
शूर् (क्रि.) रोकना। वध करना। वीर बनना। बल दिखलाना।
शूर (पुं.) वीर। वसुदेव नामी यादव। सूर्य्य। सिंह। सूअर। एक मछली।
शूरसेन (पुं.) एक देश। यदुवंशी एक राजा।
शूर्प (क्रि.) मापना।
शूर्प (पुं.) सूप। अनाज फटकने का बाँस का बना हुआ सूप।
शूर्पकर्ण (पुं.) सूप जैसे कान वाला। गज। हाथी।
शूर्पणखा (स्त्री.) रावण की बहिन। राक्षसी।
शूर्म्म (पुं.) लोहे की मूर्ति।
शूल् (क्रि.) रोगी होना। चिल्लाना। पीड़ित होना।
शूल (पुं. न.) रोग विशेष। लोहे का तेज फाला। त्रिशूल। चिह्न। एक मुनि। नवाँ योग।
शूलघातन (न.) मण्डूर।
शूलद्विष् (पुं.) हींग।
शूलधन्वन् (पुं.) शिव।
शूलधर (पुं.) शिव।
शूलधारिन् (पुं.) शिव।
शूलपाणि (पुं.) शिव।
शूलाकृत् (त्रि.) कबाब।
शूलिक (त्रि.) लोहे की सीक पर चढ़ा कर पकाया हुआ मांस।
शूलिन् (पुं.) शूल रोग वाला। शिव।
शूल्य (त्रि.) कबाब।
शृगाल, **सृगाल** } (पुं.) सियार। गीदड़। एक दैत्य। वासुदेव। (त्रि.) निर्दय। नीच।
शृगालिका (स्त्री.) गीदड़ी।
शृङ्खल (पुं.) लोहे की जञ्जीर। बेड़ी।

शृङ्ग (न.) चोटी। प्राधान्य। बड़ाई। काम का उद्रेक। पशु आदि का सींग। बाजा विशेष।

शृङ्गमूल (पुं.) सिंघाड़ा।

शृङ्गवत् (पुं.) भारवर्ष के ९ सीमा के एक पर्वत का नाम। सींग के समान। सींग वाला।

शृङ्गवेर (न.) अदरक। सोंठ। रामचन्द्र के मित्र गुह का नगर।

शृङ्गाट (पुं.) चतुष्पथ। चौराहा। शब्दालंकार।

शृङ्गार (पुं.) रस विशेष। प्यार। सजावट। चिह्न। लौंग। अदरक। सिन्दूर। गहना।

शृङ्गारिन् (पुं.) सुपारी। हाथी। प्रेमी। ताम्बूल। श्रृंगार करने वाला।

शृङ्गिक (न.) एक प्रकार का विष। सींगिया।

शृङ्गिका (स्त्री.) भोजपत्र का वृक्ष।

शृङ्गिण (पुं.) मेढ़ा।

शृङ्गिणी (स्त्री.) गौ। अरबी चमेली।

शृङ्गिन् (त्रि.) सींग वाला। चोटी वाला। (पुं.) पहाड़। हाथी। मेढ़ा। वृक्ष। शिव। शिव के गण का नाम।

"श्रृङ्गी भृङ्गीरिटिस्तुण्डी"

शृङ्गी (न.) आभूषण का सोना। औषधि की जड़ी। विष विशेष।

शृङ्गीकनक (न.) आभूषण में लगाने योग्य सोना।

शृणि (स्त्री.) अङ्कुश।

शृत (त्रि.) पका हुआ।

शृधू (क्रि.) अपान वायु छोड़ना। गीला करना। आर्द्र करना। पकड़ना। काटना।

शृधु (पुं.) बुद्धि। भग। गुदा।

शृ (क्रि.) टुकड़े टुकड़े कर डालना। चीर फाड़ डालना। नष्ट करना।

शेखर (पुं.) शिखा। चोटी। मुकुट।

शेफ (पुं.न.) लिङ्ग।

शेफालिका (स्त्री.) फूलदार वृक्ष। सुहांजना।

शेमुषी (स्त्री.) बुद्धि।

शेव (पुं.) लिङ्ग।

शेवधि (पु.) किसी मोह की चरम सीमा। पद्म आदि नौ प्रकार की निधि। खजाना। बेहद।

शेवाल (न.) सिवार। एक प्रकार की घास जो मन्द प्रवाह वाली नदियों में उगती और चीनी साफ करने के काम आती है।

शेष (पुं.) स्वामी। नारायण। प्रलय हो जाने पर भी बच रहने वाला। अनन्त। सर्पराज। बाकी।

शेषा (स्त्री.) देवता पर चढ़ी माला आदि निर्माल्य वस्तु। बाकी बची हुई।

शैक्ष (पुं.) शिक्षा नामक व्याकरण ग्रन्थ को पढ़ने या जानने वाला।

शैखरिक (पुं.) अपामार्ग।

शैत्य (न.) शीतलता। सर्दी। ठण्डक।

शैथिल्य (न.) ढीलापन।

शैनेय (पुं.) सात्यकि नाम यादव।

शैल (पुं.) पहाड़। (न.) पहाड़ों में उत्पन्न गन्ध द्रव्य।

शैलज (न.) एक प्रकार का गन्ध द्रव्य। शिलाजित्।

शैलजा (स्त्री.) गज पिप्पली। दुर्गा।

शैलधर (पुं.) श्रीकृष्ण।

शैलभित्ति (पु.) पत्थर तोड़ने का औजार छैनी।

शैलराज (पुं.) हिमालय।

शैलशिविर (न.) समुद्र।

शैलसुता (स्त्री.) पार्वती।

शैलाग्र (न.) पहाड़ की चोटी।

शैलाट (पुं.) शेर। भील। किरात।

शैलालिन (पुं.) शैलूष। नट।

शैली (स्त्री.) नियम। रीति।

शैलूष (पुं.) नट। बिल्व वृक्ष। धूर्त। ताल देने वाला।

शैव (त्रि.) शिवभक्त। (न.) पुराण विशेष। मङ्गल कार्य।

शैवलिनी (स्त्री.) नदी।

शैवाल (न.) पानी में उपजने वाली घास। सिवार। घोड़ा।

शैव्य (पुं.) शिवगोत्रोद्भव राजा विशेष।

शैशव (न.) बचपन। शिशुपाल। बालपन।

शैशिर (पु.) काली चिड़िया।

शो (क्रि.) तेज़ करना।

शोक (पुं.) वियोग जनित कष्ट। दुःखी।

शो (पुं.) कदम्ब का पेड़।

शोचिष्केश (पुं.) आग। चित्रक पेड़।

शोचिस् (न.) प्रभा। चमक।
शोच्य (त्रि.) क्षुद्र। दया योग्य।
शोण् (क्रि.) जाना।
शोण (न.) सिन्दूर। रुधिर। लाल गन्ना। मङ्गल ग्रह। (पुं.) आग।
शोणित (न.) लोहू।
शोणितपुर (न.) बाणासुर की राजधानी।
शोणोपल (पुं.) माणिक्य। लाल।
शोथ (पुं.) सूजन।
शोथघ्नी (स्त्री.) शालपर्णी। पुनर्नवा।
शोधन (न.) शौच। सफ़ाई। विष्ठा। ऋण चुकाना। धोना। सँवारना।
शोधित (त्रि.) मार्जित। ढूँढा। धोया। सँवारा।
शोफ (पुं.) सूजन।
शोभन (न.) कमल का फूल। (पुं.) पांचवां योग। (त्रि.) शोभावाला।
शोभञ्जन (पुं.) सुहांजने का पेड़।
शोष (पुं.) सुखाना। मिर्गी का रोग।
शोषण (न.) चूस कर रस पीना। सुखाना। कामदेव। एक तीर।
शौक (न.) तोतों का गिरोह।
शौकर (न.) एक तीर्थ।
शौक्तिकेय (न.) मोती।
शौक्ल्य (पुं.) श्वेतता। सफेदी।
शौच (न.) सफ़ाई। पवित्रता।
शौटीर (त्रि.) त्यागी। दानी। वीर। अहङ्कारी।
शौड् (क्रि.) अभिमान करना।
शौण्ड (त्रि.) मत्त। दक्ष।
शौण्डिक (पुं.) कलार।
शौण्डीर (पुं.) कलार। (त्रि.) अहङ्कारी।
शौद्र (पुं.) शूद्रा से उत्पन्न बेटा।
शौद्धोदनि (पुं.) बौद्ध मुनि विशेष।
शौनक (पुं.) एक मुनि।
शौकि (पुं.) कसाई। बहेलिया। शिकारी।
शौभिक (त्रि.) मदारी। चेटकी।
शौरि (पुं.) वसुदेव या सूर्य्य का पुत्र। विष्णु। शनैश्चर।
शौर्य्य (न.) वीर्य्य। शक्ति।
शौल्किक (पुं.) तहसीलदार। शुल्क उगाहने वाला। ठेकेदार।
शौवस्तिक (त्रि.) कल के दिन का।
शौष्कल (पुं.) सूखे मांस को बेचने वाला।
श्चुत् (क्रि.) बहना।
श्च्योत् (क्रि.) बहना।
श्च्योत (पुं.) चारों ओर सींचना।
श्मशान (न.) मरघट।
श्मशानवासिन् (पुं.) महादेव। वटुक भैरव। चाण्डाल आदि। भूत, प्रेत आदि।
श्मश्रु (न.) मूँछ। दाढ़ी।
श्मश्रुमुखी (स्त्री.) पुरुष के लक्षण वाली युवती।
श्मश्रुल (पुं.) दाढ़ी वाला।
श्मश्रुवर्द्धक (पु.) नाई।
श्यान (त्रि.) गाढ़ा। सूखा।
श्याम (पुं.) वृद्ध दारक वृक्ष। अक्षयवट। नीला। काला।
श्यामकण्ठ (पुं.) मोर। शिव। नीलकण्ठ। पक्षी विशेष।
श्यामल (पुं.) काले रङ्ग वाला।
श्यामलता (स्त्री.) कालापन। हरा रङ्ग।।
श्यामसुन्दर (पुं.) श्रीकृष्ण।
श्यामा (स्त्री.) एक औषधि। वह स्त्री जिसके बाल बच्चा अभी उत्पन्न न हुआ हो और उमर सोलह वर्ष की हो। यमुना। रात्रि। गिलोय। गुग्गुल। नील। हल्दी। पीपल। तुलसी। छाया। शिशपा वृक्ष। गौ। एक पक्षी। स्त्री विशेष।
श्यामाक (पुं.) धान भेद।
श्यामाङ्ग (पुं.) बुध ग्रह। (त्रि.) काले शरीर वाला।
श्याल (पुं.) साला।
श्याव (पं.) काला पीला रङ्ग।
श्यावदत् (त्रि.) काले दांतों वाला।
श्यावदन्त (पुं.) स्वभाव ही से जिसके दांतो का रङ्ग काला है।
श्येत (पुं.) सफेद।
श्येन (पुं.) बाज पक्षी। उल्लू।
श्यै (क्रि.) जाना।
श्यैनम्पात (स्त्री.) शिकार। अहेर। श्रण।

श्रण (क्रि.) देना।
श्रत् (अव्य.) गुरु और वेदात पर विश्वास।
श्रथ् (क्रि.) चोटिल करना। वध करना। बांधना। छुड़ाना। प्रसन्न होना। निर्बल होना।
श्रथन (न.) यत्न करना। प्रसन्न होना।
श्रद्धा (स्त्री.) आदर। गुरु और वेदान्त के वचनों पर विश्वास। स्पृहा। शुद्धि। विश्वास।
श्रद्धालु (स्त्री.) गर्भवती स्त्री जिसको किसी वस्तु की इच्छा हो। (त्रि.) श्रद्धा वाला। विश्वासी।
श्रन्थ् (क्रि.) गूथना। छुड़ाना। वध करना।
श्रपित (त्रि.) पका हुआ।
श्रम (क्रि.) तपस्या करना।
श्रम (पुं.) शास्त्राभ्यास। आयास। तपस्या। खेद। परिश्रम।
श्रमण (पुं.) भिक्षुक विशेष।
श्रमिन् (त्रि.) मेहनती।
श्रम्भ् (क्रि.) भूलना।
श्रय (पुं.) आश्रय। सहारा।
श्रव (पुं.) कान। ख्याति।
श्रवण (न.) कान। सुनना। बाईसवां नक्षत्र।
श्रवणद्वादशी (स्त्री.) भाद्र शुक्ला एकादशी। वह द्वादशी जिसके साथ श्रवण नक्षत्र हो, प्रायः भाद्रपद में अवश्य होती हैं इसका नाम हरिवासर है। इसमें भोजन करने से बारह महीनों की एकादशी के व्रत का फल नष्ट हो जाता है।
श्रविष्ठा (स्त्री.) अति प्रसिद्ध। धनिष्ठा तारा।
श्रवस् (न.) कान। कीर्ति। यश।
श्रा (क्रि.) पकाना।
श्राण (त्रि.) पका हुआ।
श्राद्ध (न.) पितरों की तृप्ति के लिए किया जाने वाला पिण्डदान आदि कर्म।
श्राद्धदेव (पुं.) इस नामका एक मनु। यमराज। श्राद्ध के प्रधान देवता धूर्लोचन, विश्वेदेवा आदि। एक मुनि।
श्रद्धदेवता (स्त्री.) श्राद्ध कर्म में निमन्त्रण देकर पितर बनाये हुए ब्राह्मण। विश्वेदेवा और धूर्लोचन आदि। श्रीविष्णु। पितर।
श्राद्धिक (त्रि.) श्राद्ध में देने योग्य पदार्थ का खाने वाला। श्राद्धभोजी ब्राह्मण।
श्रान्त (त्रि.) श्रम वाला। शान्त। जितेन्द्रिय। थका हुआ।
श्रावण (पुं.) सावन मास। कान से सुनी निश्चित बात।
श्रावन्ती (स्त्री.) धर्मपत्तन नाम की नगरी।
श्रि (क्रि.) सेवा करना।
श्रित् (त्रि.) सेवित। आश्रित।
श्री (क्रि.) पकाना।
श्री (स्त्री.) शोभः। लक्ष्मी। लौंग। वाणी। सम्पत्ति। बुद्धि। सिद्धि।
श्रीकण्ठ (पुं.) शिव। मोर। कुरुजाङ्गल देश।
श्रीकर (न.) लाल कमल का फूल। विष्णु। दाय विभाग सम्बन्धी ग्रन्थ का एक रचयिता पण्डित। (त्रि.) सजाने वाला।
श्रीकान्त (पुं.) विष्णु।
श्रीखण्ड (न.) चन्दन।
श्रीगर्भ (पुं.) विष्णु। खड्ग। तिजोरी।
श्रीघनः (पुं.) बहुत बुद्धि वाला। (न.) दही।
श्रीचक्रम् (न.) त्रिपुर-सुन्दरी की पूजा का अङ्गविशेष।
श्रीज (पुं.) कामदेव। सारा संसार, क्योंकि वह जगत् की माता है।
श्रीद (पुं.) कुबेर। (त्रि.) धन देने वाला।
श्रीधर (पुं.) विष्णु। श्रीमद्भागवत के बावन टीकाकारों में से प्रसिद्ध एक टीकाकार 'श्रीधर स्वामी'।
श्रीनिकेतन (पुं.) विष्णु। विवाह मण्डप। शोभा भवन। महिफिल। सभा।
श्रीपथ (पुं.) राजपथ। कल्याणप्रद रास्ता।
श्रीपर्ण (न.) कमल का फूल।
श्रीपुत्र (पुं.) कामदेव। उच्चैःश्रवा घोड़ा।
श्रीपुष्प (न.) लवङ्ग।
श्रीफल (पुं.) बिल्व का वृक्ष। नारियल।
श्रीभागवत (न.) अष्टादश पुराणों के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध महापुराण।
श्रीमत् (पुं.) शोभा वाला। तिलक वृक्ष। पीपल का पेड़। विष्णु। शिव। प्रतिष्ठित। ऐश्वर्यवान्।

श्रीमती (स्त्री.) सुशोभित। द्रव्यवती। राधिका। प्रतिष्ठिता।

श्रीमूर्ती, (स्त्री.) देवप्रतिमा। प्रतिष्ठा करने योग्य मूर्ति या व्यक्ति विशेष।

श्रीरङ्गपत्तन (न.) दक्षिण का एक तीर्थ विशेष, प्रसिद्ध 'श्रीरङ्गपट्टन'।

श्रीराम (पुं.) मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र। दशरथनन्दन। सीताराम।

श्रील (त्रि.) शोभा वाला। धनवान्। श्रीविष्णु।

श्रीलता (स्त्री.) महाज्योतिष्मती लता।

श्रीवत्स (पुं.) श्रीविष्णु का एक प्रधान चिह्न जो सदा वक्षःस्थल में लक्ष्मीनिवास का सूचक है। जैनियों का झण्डा। राजा का निज गृह।

श्रीवराह (पुं.) विष्णु के दशावतारों में से एक।

श्रीवास (पुं.) सरल वृक्ष का रस। राल। विष्णु।

श्रीविद्या (स्त्री.) त्रिपुरसुन्दरी।

श्रीश (पुं.) विष्णु। लक्ष्मीनाथ।

श्रु (क्रि.) सुनना।

श्रुत (न.) सुना जाता है। । शास्त्र। (त्रि) समझा हुआ।

श्रुतकीर्ति (स्त्री.) शत्रुघ्न की स्त्री। (पुं.) जिसका विख्यात यश हो। यशस्वी।

श्रुतदेवी (स्त्री.) सरस्वती।

श्रुतबोध (पुं.) छन्द शास्त्र का ग्रन्थ विशेष।

श्रुतश्रवस् (पुं.) शिशुपाल का पिता।

श्रुति (स्त्री.) कान। वेद। सुनी बात। कहानी।

श्रुतिकटु (पु.) कानों में कडुआ लगने वाला वचन। ओरहना। गाली गलौज। काव्य का एक दोष।

श्रुतिजीविका (स्त्री.) स्मृति। धर्म्मशास्त्र।

श्रुतिधर (त्रि.) जो सुनने ही से सब समझ लेता है। जो वेद को मानता है। जिसे वेद कण्टस्थ हैं। वेदज्ञ। वेदधारी।

श्रुतिमूल (न.) वेद। वेदविहित धर्म। कर्णमूल रोग।

श्रुतिवर्जित (त्रि.) बहरा। डोरा। वेद का पाठ न करने वाला। वेद का अनधिकारी।

श्रुतिवेध (पुं.) कनछेदन संस्कार।

श्रुत्यनुप्रास (पुं.) शब्दालंकार।

श्रुत्युक्त (त्रि.) वेदविहित धर्म।

श्रुवा, सुवा (पुं.) यज्ञीय पात्र विशेष। ब्रह्मा का हाथ।

श्रेढ़ी (स्त्री.) गणित शास्त्र का प्रकार विशेष।

श्रेणि, श्रेणी (स्त्री.) छिद्ररहित पंक्ति।

श्रेयस् (न.) बहुत सराहने योग्य। धर्म। मोक्ष शुभ। (त्रि.) बहुत अच्छा।

श्रेष्ठ (पुं.) बहुत अच्छा। कुबेर। राजा। ब्राह्मण। विष्णु। (न.) गौ का दूध।(त्रि.) सर्वोत्तम।

श्रेष्ठिन् (पुं.) सेठ। साहूकार।

श्रै (क्रि.) पसीजना।

श्रैष्ठ्य (न.) उत्तमता। भलाई।

श्रोण् (क्रि.) एकत्र करना।

श्रोण (त्रि.) लङ्गड़ा। (पुं.) रोग विशेष।

श्रोणा (स्त्री.) श्रवण नक्षत्र।

श्रोणि, श्रोणी (स्त्री.) कटि। पथ। मार्ग

श्रोणिफलक (न.) अच्छी कमर।

श्रोतव्य (त्रि.) सुनने योग्य।

श्रोतस् (न.) कान। नदी का वेग। इन्द्रियां।

श्रोत्र (न.) कान।

श्रोत्रिय (पुं.) वेद पढ़ने वाला ब्राह्मण।

श्रौत (त्रि.) वेदविहित। (पुं.) गार्हपत्य, आहवनीय तथा दक्षिण अग्नि।

श्रौत्र (न.) श्रोत्रिय का काम।

श्रौषट् (अव्य.) देवता को हवि देने का मन्त्र।

श्लक्ष्ण (त्रि.) अल्प। थोड़ा। मनोहर। ढीला। चिकना। लोहा।

श्लथ् (क्रि.) कमजोर होना।

श्लथ (त्रि.) शिथिल। ढीला।

श्लाघ् (क्रि.) अपने गुणों को प्रकट करना।

श्लाघा (स्त्री.) प्रशंसा। बड़ाई।

श्लाघ्य (त्रि.) प्रशंस्य। बड़ाई के योग्य।

श्लिष् (क्रि.) मिलना।

श्लिष्ट (त्रि.) आलिङ्गित। श्लेषरूप शब्दालङ्कार युक्त शब्द।

श्लील (त्रि.) शोभा वाला। अच्छा। प्रशंसनीय।

श्लेष (पुं.) आलिङ्गन। शब्दालङ्कार।

श्लेष्मण (पुं.) कफ वाला।
श्लेष्मन् (पुं.) बलगम। कफ।
श्लेष्मल (त्रि.) कफ वाला।
श्लेष्मान्तक (पुं.) लसोड़े का पेड़। बहेरा फल।
श्लोक् (क्रि.) प्रशंसा करना। बनाना। बढ़ाना। एकत्र होना।
श्लोक (पुं.) कवि की रची चार पादों वाली पद्यमयी रचना। यश। कीर्ति। बड़ाई।
श्वःश्रेयस (न.) भलाई। सुख। परमात्मा। शिव। शुभ। भद्र।
श्वदंष्ट्रक (पुं.) गोखरू। गोक्षुर।
श्वधूर्त (पुं.)शृगाल। गीदड़।
श्वन् (पुं) कुत्ता।
श्वपच (पुं.) चाण्डाल।
श्वपाक (पुं.)चाण्डाल।
श्वफल (पुं.) अनार। नारङ्गी। बीजपुर।
श्वफल्क (पुं.) अक्रूर के पिता का नाम।
श्वभीरु (पुं.) शृगाल।
श्वभ्र (क्रि.) जाना।
श्वभ्र (न.) छिद्र। छेद। टोपी।
श्वयथु (पुं.) सोज। सोजश।
श्ववृत्ति (पुं.) नौकरी। दासत्व वृत्ति। श्वानवृत्ति।
श्वशुर (पुं.) ससुर।
श्वशुर्य्य (पुं.) ससुर का सन्तान। देवर।
श्वश्रू (स्त्री.) सास।
श्वस् (अव्य.) आने वाला दिन। कल।
श्वस् (क्रि.) जीना। सोना।
श्वसन (पुं.) हवा।
श्वसित (न.) सांस।
श्वस्तन (त्रि.)- आनेवाले (कल्ल) तक रहने वाला पदार्थ।
श्वस्त्य (त्रि.) देखो श्वस्तन।
श्वागणिक (पुं.) कुत्तों द्वारा आखेट करने वाला।
श्वादन्त (त्रि.) कुत्ते के दांत वाला।
श्वान (पुं.) कुक्कुर। कुत्ता।
श्वापद (पुं.) व्याघ्र। भेड़िया।
श्वास (पुं.) हवा। दमा का रोग।
श्वि (क्रि.) जाना। बढ़ना।
श्वित् (क्रि.) सफेद करना।
श्वित्र (न.) सफेद। श्वेत।
श्वित्रिन (त्रि.) सफेद कोढ़ का रोगी ।
श्वित (पुं.) एक द्वीप। एक पहाड़। शुक्र ग्रह। शंख। सफेद बादल। जीरा। (न.) रौप्य।
श्वेतद्वीप (पुं.) विष्णु के रहने का द्वीप।
श्वेतधामन् (पुं.) चन्द्र। कपूर। समुद्र की आग।
श्वेतपत्र (पुं.) हंस।
श्वेतपद्म (न.) सफेद कमल का फूल।
श्वेतपिङ्गल (पुं.) सिंह। शेर।
श्वेतरक्त (पुं.) गुलाबी।
श्वेतवाजिन् (पुं.) चन्द्र। अर्जुन।
श्वेतावासस् (पुं.) श्वेतवस्त्रधारी विरक्त वैष्णव। शुक्लाम्बर विष्णु। एक प्रकार के संन्यासी।
श्वेतवाह (पुं.) इन्द्र। अर्जुन। चन्द्र।
श्वेतवाहन (पुं.) चन्द्र। इन्द्र। अर्जुन।
श्वेतसर्षप (पुं.) सफेद सरसों।
श्वेतहय (पुं.) उच्चैःश्रवा घोड़ा।
श्वेता (स्त्री.) कौड़ी। वंशरोचना। शर्करा।
श्वेतोही (स्त्री.) शची।
श्वैत्य (न.) शुक्लवर्ण। सफेद रङ्ग।
श्वैत्र / **श्वैत्र्य** } (न.) सफेद कोढ़।

ष

ष (त्रि.) सर्वोत्तम। बुद्धिमान्। (पुं.) हानि। नाश। अन्त। शेष। मोक्ष। अज्ञान। स्वर्ग। निद्रा। विद्वान् जन। चुंची की बोंडी। केश। गर्भविमोचन।
षगु (क्रि.) छिपाना।
षचू (क्रि.) सींचना। मिलना।
षट्कर्मन् (न.) छः प्रकार के तन्त्रोक्त काम। यथा-स्तम्भन, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण और मारण। अथवा-पढ़ना और पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना, दान लेना और देना, ये छः कर्म ब्राह्मणों के हैं। (पुं.) ब्राह्मण।
षट्कोण (न.) छः कोन वाला। लग्न से छठवां स्थान। सुदर्शन चक्र।

षट्चक्र (न.) छः चक्र। योगाभ्यास में प्राणायाम के वायु को रोकने के छः स्थान। उनका प्रधान स्थान। उन चक्रों को बताने वाला ग्रन्थ।

षट्चत्वारिंशत् (स्त्री.) छियालीस। ४६।

षट्चरण (पुं.) भौरा। छः पाँव वाला। षटपदी स्तोत्र।

षट् (क्रि.) रहना। बल करना।

षट्तिलिन (पुं.) तिलों का मर्दन आदि छः कर्म।

षट्त्रिंशत् (स्त्री.) छत्तीस। ३६।

षट्पञ्चाशत् (स्त्री.) छप्पन। ५६।

षट्पदी (स्त्री.) भौंरी। छः चरण का एक छन्द। जूं।

षट्प्रज्ञ (पुं.) धर्मादि को भली-भांति समझने वाला। छः शास्त्र जानने वाला।

षडङ्ग (न.) वेद के छः अङ्ग। यथा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष। पद, धन, जटा, क्रम, निरुक्त और निघण्टु छः अंगों वाला वेद।

षडभिज्ञ (पुं.) बौद्ध विशेष।

षडशीति (स्त्री.) छियासी। ८६। सूर्य का संक्रमण विशेष।

षडशीतिमुख (न.) षडशीति नामक संक्रान्ति का मुख।

षडानन (पुं.) कार्त्तिकेय। स्वामिकार्त्तिक।

षड्रूर्मि (पुं.) परमेश्वर।

षड्गव (त्रि.) छः बैलों वाला छकड़ा या हल।

षड्गुण (पुं.) राजाओं के छः सन्धि आदि गुण।

षड्ग्रन्थि (न.) पीपलामूल।

षड्ज (पुं.) सात में से एक स्वर।

षड्दीर्घ (पुं.) छः दीर्घ जैसे- आ, ई, ऊ, ऐ, औ, अः।

षड्धा (अव्य) छः प्रकार।

षड्रस (पुं.) छः रस। (मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय)।

षड्वर्ग (पुं.) षट्रिपु। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य।

षण (क्रि.) देना।

षण्ड, **शण्ड** (पुं.) बैल। हिजड़ा। ढेर।

षण्मुख (पुं.) स्वामिकार्त्तिक। षडानन।

षद् (क्रि.) विषाद करना। वध करना। जाना।

षञ्ज् (क्रि.) मिलना।

षष् (त्रि.) छः। ६।

षष्टि (स्त्री.) साठ।

षष्टितम (त्रि.) साठवीं।

षष्टिसंवत्सर (पुं.) प्रभव आदि ज्योतिष के प्रसिद्ध साठवर्ष।

षष्ठ (त्रि.) छठा।

षष्ठक (त्रि.) छठवाँ हिस्सा।

षष्ठांश (पुं.) छठवां हिस्सा जो कररूप में किसान राजा को देते हैं।

षष्ठान्न (त्रि.) दिन के छठवें भाग में भोजन करने वाला।

षष्ठी (स्त्री.) मातृका। छठी देवी।

षस् (क्रि.) सोना।

षस्ज् (क्रि.) फैलना। सरकना।

षह् (क्रि.) सहारा। क्षमा करना।

षाड्गुण्य (न.) राजनीति के सन्धि आदि छः अंग।

षाण्मातुर (पुं.) कार्त्तिकेय। जिनकी छः माता हैं।

षाण्मासिक (न.) छमाही श्राद्ध। छः महीने में परिवर्तन होने वाला अयन।

षाध् (क्रि.) पाना।

षान्त्व (क्रि.) आश्वासन देना।

षि (क्रि.) बांधना।

षिट् (क्रि.) अनादर करना।

षिड्ग (पुं.) धूर्त। लम्पट।

षिध् (क्रि.) जाना।

षिव् (क्रि.) सीना।

षु (क्रि.) सोमरस का निकालना और मथना। नहाना।

षू (क्रि.) उत्पन्न होना। पैदा होना। फेंकना।

षूद् (क्रि.) हटाना।

षेव (क्रि.) सेवा करना।

षो (क्रि.) नाश होना।
षोडत (पुं.) छः दाँत की उम्र का बैल।
षोडशन् (त्रि.) सोलह की संख्या।
षोडश (त्रि.) सोलहवाँ। चन्द्रकला।
षोडशक (न.) प्रेत के उद्धारार्थ या निमित्त दी गयीं सोलह वस्तुएँ-पृथिवी, आसन, जल, वस्त्र, दीपक, अत्र, पान, छाता, गन्ध, माला, फल, शय्या, पादुका, गौ, सोना, चांदी।
षोडशमातृका (स्त्री.) सोलह माताएँ यथाः- गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, माता, लोकमाता, शान्ति, पुष्टि, धृति, तुष्टि।
षोडशाङ्ग (पुं.) गुग्गुल आदि सोलह वस्तुओं की बनाई हुई धूप। वह पूजा जिसमें सोलह उपचार हों।
षोडशांघ्रि (पुं.) केकड़ा।
षोडशार (नं) सोलह पत्रों का कमल। एक यन्त्र।
षोडशिन् (पुं.) चन्द्रमा। सोमरस डालने का पात्र।
षोडशोपचार (नं) पूजन की सोलह वस्तु। यथा-आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयक, मधुपर्क, आचमन, स्नान, वस्त्र, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, बन्दन।
षोढा (अव्य) छः प्रकार।
षोढान्यास (पुं.) छः प्रकार के न्यास विशेष (तंत्रोक्त अङ्गन्यास और करन्यास)।
ष्टु (क्रि.) बड़ाई अथवा प्रशंसा करना।
ष्टचै (क्रि.) घेरा दे लेना।
ष्ठगु (क्रि.) छिपाना।
ष्ठा (क्रि.) ठहरना।
ष्ठिवु (क्रि.) थूकना।
ष्ठ्यूत (त्रि.) थूका गया। वमन किया गया।
ष्णा (क्रि.) स्नान करना। साफ करना।
ष्णिह् (क्रि.) प्यार करना।
ष्मि (क्रि.) मुस्कुराना।
ष्वद् (क्रि.) प्यार करना। चाटना।
ष्वञ्ज् (क्रि.) गले लगाना।
ष्वप् (क्रि.) सोना।
ष्विद् (क्रि.) स्नान करना।

स

स (पुं.) सर्प। पवन। पक्षी। षडज। शिव। विष्णु। जब यह किसी शब्द के पहले लगाया जाता है, तब उस शब्द का अर्थ सम, तुल्य, सह, सदृश का अर्थ बतलाता है। यथा-सपुत्र, सभार्य, सतृष्ण, सघन, सरोष, सकोप आदि।
संक्षेप (पुं.) थोड़े में।
संक्षोभ (पुं.) क्षोभ। घबराहट।
संग्राहिन् (पुं.) कुटज नाम का पेड़। एकत्र करने वाला।
संघ (पुं.) बहुत से जीव। पक्का मेल।
संघर्ष (पुं.) परस्पर की रगड़। टक्कर। लड़ाई।
संज्ञ (न.) गन्ध द्रव्य विशेष। चेतना, बुद्धि, आख्या, हाथ आदि से अपने भाव को प्रकट करना।
संज्ञा (स्त्री.) गायत्री। सूर्यपत्नी।
संज्ञापन (न.) मारण। जतलाना।
संज्ञासुत (पुं.) शनैश्चर।
संज्ञु (त्रि.) घुटने टेके हुए।
संज्वर (पुं.) आग से उत्पन्न हुई गर्मी।
संमर्द (पुं.) आपस की रगड़।
संयत (त्रि.) बँधा हुआ। शास्त्र के नियम से बँधा हुआ। प्रिय। इष्ट। माना हुआ।
संयन्तृ (त्रि.) नियन्ता। नियम पर चलाने वाला।
संयम (पुं.) इन्द्रियनिग्रह। व्रत के पहिले दिन किये जाने वाले कर्म।
संयमन (स्त्री.) यम की नगरी।
संयमिन् (पुं.) मुनि विशेष। (त्रि.) इन्द्रियों को रोकनेवाला।
संयाव (पुं.) हलवा। मोहनभोग।
संयुज् (त्रि.) संयुक्त। जुड़ा हुआ।
संयुग (न.) युद्ध। लड़ाई। जङ्ग।
संयुत (त्रि.) संयुक्त। मिला हुआ।
संयोग (पुं.) मेल।
संयोजित (त्रि.) मिलाया हुआ। मिला हुआ।
संरम्भ (पुं.) कोप। निन्दा। उत्साह। वेग।
संराधन (न.) अच्छे प्रकार सोचना।

संराव (पुं.) शब्द। आवाज।
संरूढ (त्रि.) प्रौढ। अङ्कुरित। जमा हुआ।
संरोध (पुं.) रोकना। फेंकना।
संलग्न (त्रि.) लगा हुआ। सटा हुआ।
संलप (पुं.) एकान्त में बातचीत।
संवत्सर (पुं.) वत्सर। बरिस। साल।
संवत् (अव्य.) विक्रमादित्य के राज्य से चला शाका।
संवर्त (पुं.) प्रलयकाल। धर्मशास्त्र-प्रणेता मुनि विशेष। मेघ। मेघराज। प्रलय के समय बरसने वाला मेघ। वैसी ही आग। वैसा ही वायु।
संवर्तक (न.) बलदेव का हल। (पुं.) बडवानल।
संवर्तिका (स्त्री.) दीप की लाट। नया पत्ता।
संवर्द्धक (त्रि.) बढ़ाने वाला।
संवलित (त्रि.) मिला हुआ।
संवसथ (पुं.) ग्राम। कुटिया।
संवह (पुं.) सप्तवायु में से एक।
संवार (पुं.) उच्चारण सम्बन्धी बाह्य प्रयत्न। छिपाना।
संवास (पुं.) घर। निवासस्थान।
संवाह (पुं.) अङ्गों को दाबने वाला। चापी करने वाला।
संविग्न (त्रि.) उद्विग्न। घबड़ाया हुआ।
संवित्ति (स्त्री.) समझ। प्रतिपत्ति। बुद्धि। स्वीकृति।
संविद् (स्त्री.) ज्ञान। प्रतिपत्ति। समाधि। नाम। आचार। सङ्केत। लड़ाई। प्रसन्नता। प्रतिज्ञा।
संविदा (स्त्री.) सिद्धि। भाँग। उत्तम श्रवण। श्रेष्ठ ज्ञान।
संविद्व्यतिक्रम (पुं.) प्रतिज्ञा भङ्ग के कारण उत्पन्न विवाद।
संविदित (त्रि.) अङ्गीकृत। अच्छी तरह समझा।
संविधान (न.) उपाय। रचना। कार्य।
संवीक्षण (न.) खोजना। भली भांति देखना।
संवीत (त्रि.) ढका हुआ। रुका हुआ। मिला हुआ।
संवृत (त्रि.) ढका हुआ। छिपा हुआ।
संवेग (पुं.) पूरा वेग। भरपूर।
संवेद (पुं.) उत्तम ज्ञान।
संवेश (पुं.) नींद।
संवेशन (न.) रतिक्रिया। भोग।
संव्यान (न.) चादर या ऊपर से ओढ़ने का वस्त्र। डुपट्टा। अँगोछा।
संशप्तक (पुं.) संग्राम में प्रतिज्ञापूर्वक जाने और वहां से न लौटने वाला सैनिक वीर पुरुष।
संशय (पुं.) सन्देह।
संशयस्थ (त्रि.) संशययुक्त।
संशयात्मन् (पुं.) सन्देह करने वाला। शक्की।
संशयालु (त्रि.) शक्की। जिसे सदा सन्देह बना रहे।
संशयितृ (त्रि.) सन्देह करने वाला।
संशरण (न.) जिस में अधिक नाश हो। आक्रमण। युद्धारम्भ।
संशित (त्रि.) निर्णय किया हुआ।
संशितव्रत (त्रि.) अपने व्रत या नियम को भली भांति पूरा करने वाला।
संशुद्धि (स्त्री.) भली प्रकार की हुई सफाई।
संश्यान (त्रि.) शीत आदि से सिकुड़ा हुआ।
संश्रय (पुं.) आसरा। निवासस्थान।
संश्रव (पुं.) अङ्गीकार।
संश्रुत (त्रि.) अङ्गीकृत।
संश्लिष्ट (त्रि.) मिला हुआ।
संश्लेष (पुं.) मेल।
संसक्त (त्रि.) मिला हुआ। अति निकट।
संसद् (स्त्री.) सभा। कमेटी।
संसरण (न.) बहाव। गमन। चाल। आक्रमण। युद्धारम्भ।
संसर्ग (पुं.) मेल। सम्बन्ध।
संसर्गाभाव (पुं.) अनमेल। मेल का न होना।
संसार (पुं.) विश्व। दुनिया।
संसारमार्ग (पुं.) योनिद्वार। दुनियाँ की राह। जगत्।
संसारिन् (त्रि.) जीवात्मा।
संसिद्ध (त्रि.) भली-भांति बना हुआ।
संसृति (स्त्री.) सङ्गत। मेल।
संसृष्ट (पुं.) मिला हुआ। साझीदारों का साझा। सफा किया हुआ।
संसृष्टिन् (पुं.) साझीदार। फिर से मिले भाई बन्द।

संसर्प (क्रि.) डोलना। चलना। सरपटकर चलना।
संसेक (पुं.) छिड़काव। सींचना।
संस्कृ (क्रि.) सजाना। चिकनाना। सफाई करना।
संस्कर्तृ (पुं.) रसोई दास। फर्राश। दीक्षा देने वाला। निषेक से अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कार करने वाला। शुद्धि करने वाला।
संस्कार (पुं.) धर्म, रसोई, पात्रशुद्धि, अन्नशुद्धि आदि किसी तरह की शुद्धि, जैसे मलादि शुद्धि, धातु आदि शुद्धि। श्रुति-स्मृति आदि का अनुभवजन्य आत्मा का गुण। शास्त्र से उत्पन्न ज्ञान। योग्यता। व्याकरण आदि से शुद्ध शब्द। देववाणी। व्याकरण द्वारा शब्दों की साधनिका। यज्ञादि कर्मों में भूमि आदि की शुद्धि के लिये किये जाने वाले कर्म । निषेक, गर्भाधानादि सोलह संस्कार। वैष्णवी दीक्षा सम्बन्धी पञ्च संस्कार इत्यादि।
संस्कृत (त्रि.) साफ किया हुआ। शोधित। सिद्ध किया। सजाया।
संस्तर (पुं.) पत्ते फूल आदि से बनी या कुश कांस आदि की आसनी। शय्या। सेज। बिस्तरा।
संस्तव (पुं.) भली भांति प्रशंसा करना।
संस्त्याय (पुं.) ढेर। पड़ोस। स्वदेशी भाई। जासूस। भेदिया।
संस्थान (न.) ढेर। संग्रह। पद। रूप। बनावट। चौराहा। मृत्यु।
संस्थापन (न.) एकत्रीकरण। घुमाव।
संस्थापित (त्रि.) एकत्र किया हुआ। नियत किया गया।
संस्थित (त्रि.) मृत। ठहराया हुआ।
संस्पृश् (क्रि.) छूना। पानी छिड़कना। मिलाना।
संस्पृष्ट (त्रि.) छुआ हुआ। मिला हआ।
संस्फल (पुं.) मेढ़ा। बादल।
संस्फुट (त्रि.) खिला हुआ। कुसुमित।
संस्फेट, **संस्फोटि** } (पुं.) युद्ध। लड़ाई।
संस्मृ (क्रि.) स्मरण करना।
संस्मृति (स्त्री.) स्मरण। याददाश्त।
संस्रव, **संस्राव** } (पुं.) टपका। बहाव। धार।
संहन् (क्रि.) दो को एक करना। ढेर लगाना मार डालना। चोट लगाना।
संहत (त्रि.) चोटिल। बन्द। दृढ़तापूर्वक जुड़ा हुआ। एकत्र हुआ।
संहति (स्त्री.) समूह। भली प्रकार चोट लगाना।
संहनन (न.) दृढ़ता। शरीर। वध। अङ्गों की रगड़न। बल।
संहर्ष (पुं.) आनन्द। वायु।
संहार (पुं.) प्रलय। नाश।
संहिता (स्त्री.) पुराण। इतिहास। वेद का वह भाग जिसमें कर्मकाण्ड का प्रतिपादन किया गया है।
संहूति (स्त्री.) अनेकों द्वारा आहूत।
संह्लादिन् (त्रि.) शब्द करने वाला।
सकर्ण (त्रि.) सुनने वाला।
सकर्मक (त्रि.) कर्म वाली क्रियाओं को बतलाने वाला व्याकरण का धातु।
सकल (त्रि.) सम्पूर्ण। समूचा।
सकारण (त्रि.) कार्यसहित। कार्य।
सकाश (पुं.) समीप। पास।
सकुल्य (त्रि.) जात भाई। सगोत्र।
सकृत् (अव्य.) एक बार।
सकृत्प्रज (पुं.) काक।
सकृत्फला, **सकृत्फली** } (स्त्री.) जिसमें एकही बार फल हो। केले का पेड़। जो एकही बार जने। सिंहिनी।
सक्त (त्रि.) लगा हुआ। आसक्त।
सक्तु (पुं.) सत्तू। सतुआ।
सक्थिम् (न.) ऊरु। गाड़ी का अङ्ग।
सखिः (स्त्री.) समान प्रेम करने वाला।
सखी (स्त्री.) सहेली।
सख्य (न.) मैत्री।
सगर (न.) सूर्यवंशीय एक राजा। (त्रि.) विष वाला।
सगर्भ (पुं.) सहोदर भाई।
सगोत्र (न.) एक गोत्र वाला।

सग्धि (स्त्री.) सह भोजन।
सङ्कट (त्रि.) पीड़ा। विपत्ति। छोटा स्थान।
सङ्कर (पुं.) दोगला।
सङ्कर्षण (पुं.) बलदेव। भारी खिंचाव।
सङ्कलन (न.) सम्पादन। संग्रह।
सङ्कल्प (पुं.) दृढ़ विचार। निश्चय।
सङ्कल्पजन्मन् (पुं.) कामदेव।
सङ्कल्पयोनि (पुं.) कामदेव।
सङ्कसुक (त्रि.) मन्द। मूर्ख। दुर्जन।
सङ्काश (त्रि.) सदृश। समान।
सङ्कीर्ण (त्रि.) सिकुड़ा हुआ। (पुं.) दोगला।
सङ्कुचित (त्रि.) सिकुड़ा हुआ।
संङ्केत (पुं.) सूचना। इशारा। प्रेमी से मिलने का गुप्त स्थान।
सङ्केतित (त्रि.) सङ्केत किया हुआ।
सङ्कोच (पुं.) संक्षेप। सिकुड़ना। मछली। (न.) केसर।
संक्रन्दन (पुं.) इन्द्र।
संक्रमण (न.) संक्रान्ति। जाना। बीच में आना। लांघ जाना। सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि पर जाता है तब उसे संक्रमण कहते हैं।
संक्रान्ति (स्त्री.) मेल। एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन।
संख्य (न.) युद्ध। लड़ाई। विचार। बुद्धि।
संख्यात (त्रि.) गिना हुआ। प्रसिद्ध।
संख्यावत् (पुं.) पण्डित। (त्रि.) गिनती करने वाला।
संख्येय (त्रि.) गिनने योग्य।
सङ्ग (पुं.) संबन्ध। (त्रि.) मिला हुआ।
सङ्गत्त (न.) मैत्री।
सङ्गति (स्त्री.) सगम। मेल। सभा। परिचय। अचानक घटना। ज्ञान। विशेष ज्ञान के लिये पूंछना।
सङ्गम (पुं.) मेल। मैथुन। नद अथवा नदियों के परस्पर मिलने का स्थान।
सङ्गर (पुं.) आपत्ति। युद्ध। प्रतिज्ञा। विष। शमी वृक्ष।
सङ्गव (पुं.) प्रातःकाल के बाद का तीन मुहूर्त समय।
सङ्गिन् (त्रि.) साथ। भोगी।
सङ्गीत (न.) नाच। गान। बजाना। गीत।
सङ्गीर्ण (त्रि.) माना हुआ।
संग्रह (पुं.) सञ्चय। संक्षेप। बहुत अर्थ वाले विषय को थोड़े में लिखना।
संग्रहणी (स्त्री.) रोग विशेष।
संग्राम (पुं.) लड़ाई।
संग्रामपटह (पुं.) रणवाद्य। मारू बाजा।
संग्राहिन् (पुं.) कुटज वृक्ष। (त्र.) जोड़ने वाला।
सङ्घ (पुं.) एक जाति वालों का मेल। समूह।
सङ्घट्ट (पुं.) आपस की रगड़। भीड़। गठन। चक्र। पहिया।
सङ्घर्ष, (पुं.) पीसना। आपस में टकराना। स्पर्द्धा।
सङ्घशस्, (अव्य.) बहुत का एकत्र होना।
सङ्घात (पुं.) समूह। एक नरक।
सचि, **सची** (स्त्री.) इन्द्राणी।
सचिव (पुं.) मंत्री। आमात्य। दीवान।
सचेतन (त्रि.) सतर्क। विशिष्ट ज्ञान युक्त।
सचेष्ट (पुं.) आम्र। (त्रि.) चेष्टान्वित।
सच्चिदानन्द (पुं.) ब्रह्म। परमात्मा।
सच्छूद्र (पुं.) ग्वाला। अहीर। नाई।
सजाति (पुं.) एक जाति वाला।
सजातीय (त्रि.) अपनी जाति का।
सजुस्, **सजूस्** (अव्य.) साथ के अर्थ में।
सज्ज (त्रि.) उद्युक्त। तैयार। सजा हुआ। सत् से हुआ।
सज्जन (त्रि.) रक्षार्थ सेना का स्थान। जोड़ना। भद्र लोग। राजा की सवारी के लिये हाथी का सजाना।
सज्जित (त्रि.) सजा हुआ। कृतवेश।
सञ्चय (पुं.) समूह। संग्रह।
सञ्चयिन् (पुं.) जमा करने वाला। संग्रह-कारक।
सञ्चार (पुं.) गमन। मार्ग। कठिन यात्रा। कठिनाई। उत्तेजना। सर्पमणि। सूर्य का दूसरी राशि में प्रवेश।
सञ्चारक (पुं.) नेता। अगुआ। षड्यंत्र- कारी। वक्ता।
सञ्चारिका (स्त्री.) कुटनी। जोड़ा। गन्ध।

सञ्चारिन् (पुं.) हवा। व्योमचारिन्।
सञ्चल् (क्रि.) हिलना। काँपना। जाना।
सञ्चाली (स्त्री.) गुञ्ज की झाड़ी।
सञ्चाय्य (पुं.) एक प्रकार का यज्ञ।
सञ्चि (क्रि.) एकत्र करना। सुव्यवस्था करना।
सञ्चय (पुं.) ढेर।
सञ्चित (त्रि.) एकत्रित। घना-गाढ़ा।
सञ्चूर्ण् (क्रि.) पीसना।
सञ्छद् (क्रि.) छिपाना। ढ़कना। लपेटना।
सञ्छिद् (क्रि.) काटना। विभक्त करना। घुसेड़ना।
सञ्ज (क्रि.) चिपकना।
सञ्जन् (क्रि.) उत्पन्न होना।
सञ्जय (पुं.) धृतराष्ट्र के सारथि का नाम। इसने कौरव और पाण्डवों में शान्तिस्थापन की बहुत चेष्टा की थी, किन्तु यह विफल हुआ।
सञ्जल्प (क्रि.) बातचीत करना। (पुं.) बातचीत। गडबड़। कोलाहल।
सञ्जवन (न.) एक दूसरे से लगे चार गृह।
सञ्जा (स्त्री.) बकरी।
सञ्जीव् (क्रि.) साथ साथ रहना। फिर से जीवित होना।
सञ्जीवन (न.) फिर से जीवित करने वाला। २१ नरकों में से एक। चार गृहों का समूह। जीना।
सञ्जीवनऔषधि (स्त्री.) एक औषध जिससे मरा हुआ जी उटे।
संज्ञा (क्रि.) जानना। समझना। मेल से रहना। ताकना। (स्त्री.) चेत।
संज्ञापन (न.) मारण।
सञ्चर (पुं.) बड़ी गर्मी। ज्वर।
सट् (क्रि.) टुकड़ा करना। सजाना।
सटीक (त्रि.) टीका या व्याख्यासहित'
सट्ट (क्रि.) चोटिल करना।
सट्टक (न.) प्राकृत का छोटा रूपक। जैसे "कर्पूरमञ्जरी"।
सट्वा (स्त्री.) पक्षी। वाद्य यंत्र विशेष।
सठ् (क्रि.) सजाना। पूरा करना।
सठि (स्त्री.) नक्षत्र विशेष।
सण्ड (पुं.) बैल। नपुंसक। हिजड़ा।
सण्डिश (पुं.) सड़सी। चिमटा।
सण्डीन (न.) पक्षियों के उड़ानों में से एक प्रकार का उड़ान।
सत् (त्रि.) असली। अच्छा। सच्चा। प्रतिष्ठित। बुद्धिमान्। दृढ़। (पुं.) ऋषि। महात्मा। (न.) स्थिति।
सतत (न.) निरन्तर। लगातार।
सतत्त्व (न.) स्वभाव।
सतानन्द (पुं.) गौतमपुत्र।
सतीर्थ्य, **सतीर्थ** } (पुं.) गुरुभाई।
सतील (पुं.) बाँस। वायु। मटर। मसूर।
सतीलक (पुं.) मटर।
सतेर (पुं.) भूंसी। चोकर।
सत्कर्तृ (पुं.) विष्णु।
सत्कर्मन् (न.) वेदविहित यज्ञादि कर्म।
सत्कार (पुं.) आदर।
सत्कृत (त्रि.) सम्मानित।
सत्क्रिया (स्त्री.) सत्कार। आदर।
सत्तम (त्रि.) बहुत अच्छा।
सत्ता (स्त्री.) प्रधानता। मुख्यता। अस्तित्व। विद्यमानता।
सत्र (न.) घर। ढकना। धन। वन। तालाब। छल। कपट। आश्रम। दान। धर्मार्थ दान।
सत्रशाला (स्त्री.) धर्मशाला। यज्ञशाला।
सत्राजित् (पुं.) श्रीकृष्णजी का ससुर।
सत्रिन् (पुं.) गृहस्थ। यज्ञकर्ता।
सत्त्व (न.) प्रकृति का अवयव। एक पदार्थ। (पुं. न.) जन्तु। जीव। जब यह केवल "सत्त्व" होता है तब इसका अर्थ होता है-स्वभाव, प्राण, उद्यम, रण, आत्मा, चित्र, आयु, धन।
सत्पथ (पुं.) शोभन मार्ग। भगवद्भजन। सन्मार्ग। वेदविहित आचार। अच्छा रास्ता।
सत्प्रतिग्रह (पुं.) अच्छे पुरुषों का प्रदत्त दान। अनिन्दित दान लेना।
सत्प्रतिपक्ष (पुं.) हेतु सम्बन्धी दोष भेद।
सत्फल (पुं.) अनार का पेड़। (त्रि.) अच्छे फल वाला। अच्छा फल।
सत्य (त्रि.) सच्चा। असली। यथार्थ। (पुं.) ब्रह्म के रहने का लोक। पीपल का पेड़। राम। विष्णु। नान्दीमुख श्राद्ध का अधिष्ठाता देवता।

सत्यङ्कार (पुं.) बयाना। किसी वस्तु को मोल लेने की पक्काइत।
सत्यपुर (न.) वैकुण्ठ।
सत्यफल (पुं.) बिल्वफल।
सत्यभामा (स्त्री.) राजा सत्राजित् की कन्या और श्रीकृष्ण की स्त्री।
सत्यम् (अव्य.) स्वीकार। हां। "सचहै"।
सत्ययुग (न.) सत्यप्रधान युग। प्रथम युग। कृतयुग।
सत्ययौवन (पुं.) विद्याधर।
सत्यलोक (पुं.) सात लोकों में से एक।
सत्यवचस् (पुं.) मुनि। (त्रि.) सच बोलने वाला।
सत्यवत् (पुं.) विद्याधर।
सत्यवती (स्त्री.) व्यास की माता।
सत्यवतीसुत (पुं.) वेदव्यास।
सत्यवाच् (पुं.) ऋषि। काक।
सत्यवादिन् (त्रि.) सत्यवादी।
सत्यव्रत (पुं.) सत्यतत्पर। त्रिशंकुराजा।
सत्यसङ्गर (पुं.) कुबेर। (त्रि.) सत्यप्रतिज्ञ।
सत्यसन्ध (त्रि.) सत्यप्रतिज्ञ। रामचन्द्र।
सत्यानृत (न.) व्यापार।
सत्यापन (न.) बयाना देना।
सत्योद्य (त्रि.) सत्यवादी। (नं.) सच्चा वचन।
सत्वर (न.) शीघ्र। जल्दी।
सदन (न.) गृह। घर।
सदय (त्रि.) दयालु।
सदस् (स्त्री.) सभा। बैठक। वासस्थान।
सदस्य (पुं.) सभासद।
सदा (अव्य.) सदैव। निरन्तर। नित्य।
सदागति (पुं.) पवन। सूर्य्य। सदा रहने वाला आनन्द। मोक्ष।
सदाचार (पुं.) साधु आचरण।
सदातन (पुं.) विष्णु। (त्रि.) नित्य।
सदादान (त्रि.) सदा दान करने वाला। (पुं.) ऐरावत हाथी।
सदानन्द (पुं.) शिव। (त्रि.) निरन्तर आनन्द वाला।
सदानर्त्त (पुं.) सदा नाचने वाला।
सदानीरा (स्त्री.) करतोया नदी।
सदाशिव (पुं.) महादेव।
सदुत्तर (नं.) प्रतिज्ञापत्र के अनुसार उत्तर।
सदृक्ष (त्रि.) तुल्यरूप। बराबर।
सदेश (पुं.) देश के साथ। निकट। (त्रि.) देश वाला।
सद्धेतु (पुं.) अच्छा हेतु।
सद्भाव (पुं.) साधुभाव। अच्छा भाव।
सद्भूत (त्रि.) यथार्थ। ठीक।
सद्मन् (न.) घर। जल।
सद्यःकृत (त्रि.) झटपट किया हुआ।
सद्यःप्राणकर (त्रि.) झटपट प्राण करने वाला।
"सद्योमांसं नवं चान्नं बाला स्त्री क्षीरभोजनम्।
घृतमुष्णोदकस्नानं सद्यः प्राणकराणि षट्।।"
सद्यःशौच (न.) तत्काल होनेवाली शुद्धि।
सद्योजात (पुं.) तुरन्त पैदा हुआ। बछड़ा। शिवजी की एक मूर्ति। वैद्यक में एक रस।
सद्वृत्त (न.) अच्छे स्वभाव वाला। अच्छा समाचार।
सद्वृत्ति (स्त्री.) उत्तम चरित्र। उत्तम व्याख्यान वाला ग्रन्थ। अच्छी जीविका। (त्रि.) अच्छी जीविका वाला। अच्छी चालचलन वाला।
सधर्म्मन् (त्रि.) सदृश। बराबर।
सधर्म्मचारिणी (स्त्री.) भार्य्या।
सधर्म्मिन् (त्रि.) पत्नी।
सधवा (स्त्री.) सौभाग्यवती स्त्री।
सध्रयच (त्रि.) सहचर। साथ विचरने वाला।
सनक (पुं.) एक मुनि।
सनंत् (पुं.) एक मुनि। (त्रि.) आनन्द वाला।
सनत्कुमार (पुं.) ब्रह्मपुत्र। एक मुनि।
सनसूत्र (न.) मछली पकड़ने का सूत का बना जाल।
सना (अव्य.) सदैव।
सनातन (त्रि.) सदा होने वाला। (पुं.) शिव। ब्रह्मा। स्वर्गीय मनुष्य। विष्णु।
सनाभी (पुं.) जाति भाई। (त्रि.) बीच वाला। स्नेहयुक्त। कुटुम्बी।
सनामक (पुं.) शोभाञ्जन का पेड़।
सनिष्ठीव, सनिष्ठेव (नं.) थूक के साथ।
सनीड (त्रि.) समीप रहनेवाला। घोंसले वाला। बिल वाला।

सन्तत (पुं.) सतत। लगातार। (त्रि.) फैला हुआ।
सन्तति (स्त्री.) गोत्र। नाम। पुत्र। कन्या। फैलाव। पंक्ति। अविच्छिन्न धारा।
सन्तप्त (त्रि.) थका हुआ। तपा हुआ।
सन्तमस (नं.) अँधेरा। मोह।
सन्तान (पुं.) वंश। अपत्य। कुटुम्ब। विस्तार। कल्पवृक्ष।
सन्तानिका (स्त्री.) मलाई। खोया। फेन। छुरी का फल।
सन्ताप (पुं.) वह्नि से उत्पन्न ऊष्मा।
सन्तापन (पुं.) कामदेव के पांच शरों में से एक। (त्रि.) सन्ताप करने वाला।
सन्तोष (पुं.) धैर्य्य। हौंसला। स्वास्थ्य।
सन्दंश (पुं.) सडाँसी।
सन्दंशपतित (पुं.) मीमांसा का एक न्याय विशेष।
सन्दर्भ (पुं.) रचना। प्रबन्ध। सारवचन। श्रेष्ठता।
सन्दानम् (न.) बंधन। अच्छे प्रकार तोड़ना। अच्छे प्रकार दान करना। (पुं.) हाथी के घुटनों के नीचे का भाग।
सन्दानिनी (स्त्री.) गोगृह। गोशाला।
सन्दाव (पुं.) भागना।
सन्दाह (पुं.) पूरी जलन।
सन्दिग्ध (त्रि.) सन्देहयुक्त।
सन्दित (त्रि.) बद्ध।
सन्दिष्ट (न.) सन्देसा।
सन्दिहान (त्रि.) सन्देह वाला।
सन्दी (स्त्री.) खाट। चपराई।
सन्देशहर (पुं.) सन्देशहारक।
सन्देह (पुं.) संशय।
सन्दोह (पुं.) समूह। भली प्रकार दुहना।
सन्द्राव (पुं.) भागना।
सन्धा (स्त्री.) स्थिति। प्रतिज्ञा। मेल। मदिरा निकालना। खोज।
सन्धान (न.) अनुसन्धान। मेल। गौ बांधने की शाला।
सन्धि (पुं.) संभाग। जोड़। ऐंडा। सुरङ्ग। नाटक का एक अङ्ग। व्याकरण में दो वर्णों के एकत्र होने से उत्पन्न वर्णविकार।
सन्धिचौर (पुं.) सेन्ध फोड़ कर चोरी करने वाला चोर।
सन्धित (त्रि.) मिला हुआ।
सन्धिनी (स्त्री.) बैल के संयोग से गर्भधारिणी गौ।
सन्धिपूजा (स्त्री.) आश्विन की शुक्ला अष्टमी और नवमी की सन्धि की पूजा।
सन्धिबन्ध (पुं.) भूमिचम्पक। इसको खाने से टूटी हुई हड्डी का जोड़ भी मिल जाता है।
सन्धिविग्रहादिकारिन् (पुं.) मंत्री, जिसे राजा की ओर से मेल अथवा युद्ध करने को अधिकार प्राप्त हो चुका है।
सन्धिवेला (स्त्री.) सन्ध्या का समय। साम-सबेरा।
सन्धिहारक (पुं.) सुरङ्ग से दूसरे के धन को ले जाने वाला।
सन्धुक्षित (त्रि.) भड़काया गया। प्रकाशित।
सन्धेय (त्रि.) मिलाने योग्य।
सन्ध्या (स्त्री.) दिन और रात के मिलने का समय। सन्धिकाल। सन्ध्याकाल का कर्म देवता। एक नदी। ब्रह्मा। एक स्त्री।
सन्ध्यानटिन् (पुं.) शिव। शङ्कर।
सन्ध्याभ्र (न.) सुवर्ण। गेरू। साँझ का बादल।
सन्ध्याराग (न.) सिन्दूर। सेंदुर।
सन्ध्याराम (पुं.) ब्रह्मा।
सन्न (पुं.) पियाल का पेड़। (त्रि.) अवसन्न। बौना।
सन्नत (त्रि.) झुका हुआ।
सन्नद्ध (त्रि.) कवचधारी। तैयार। उत्पन्न हुआ।
सन्नय (पुं.) समूह। बहुतसा।
सन्नहन (न.) उद्योग। हिम्मत। पूरा बन्धन।
सन्नाहम (पुं.) कवच।
सन्निकर्ष (पुं.) सामीप्य। विषय और इन्द्रिय का व्यापार। उपाय विशेष।
सन्निकर्षण (न.) सन्निधान।
सन्निधि (पुं.) सामीप्य।
सन्निपतित (त्रि.) मर गया। मिला हुआ। उपस्थित।
सन्निपात (पुं.) नीचे गिरंना। इकट्ठा होना। उतरना। भिड़ना। समूह। ज्वर विशेष। नाश। उपस्थिति। ताल विशेष।
सन्निबंधन (न.) कई स्थलों में विखरे हुए वाक्यों

का एकत्र करना तथा तदुपयोगी ग्रन्थ। (त्रि.) अच्छी आजीविका वाला।

सन्निभ (त्रि.) सदृश। समान।

सन्निवेश (पुं.) नगर के बाहिर का भाग। अखाड़ा। सम्यक् स्थिति।

सन्निहित (त्रि.) निकटस्थ। समीप ठहरा हुआ।

संन्यस्त (त्रि.) डाला गया। अच्छे प्रकार त्यागा गया। जुड़ा हुआ। अर्पित। छोड़ा गया।

संन्यास (पुं.) त्याग। चौथा आश्रम।

संन्यासिन् (पुं.) सन्यासी। चौथे आश्रम वाला।

सपक्ष (त्रि.) अपने पक्ष वाले।

सपत्राकरण (न.) तीर के घाव की पीड़ा। (त्रि.) पीड़ित किया गया।

सपत्न (पुं.) शत्रु। वैरी।

सपत्नी, (स्त्री.) सौत।

सपदि (अव्य.) तत्क्षण। उसी समय।

सपर (क्रि.) पूजा करना।

सपर्य्या (स्त्री.) पूजा। आदर।

सपाद (स्त्री.) चतुर्थांश सहित। सवा।

सपिण्ड (त्रि.) जाति वाला। पिण्ड सम्बन्धी।

सपिण्डीकरण (न.) मिलाया गया। श्राद्ध का कर्मविशेष। मरे हुए का पिण्ड पूर्वपिण्डों में मिलाना।

सपिण्डीकृत (त्रि.) वह मरा हुआ पुरुष जिसके लिये सपिण्डी कर्म किया गया हो।

सपीति (स्त्री.) जात वालों के साथ बैठ कर जल आदि पीना।

सप्तक (न.) ७ क संख्या।

सप्तकी (स्त्री.) मेखला। कन्धनी।

सप्तचत्वारिंशत् (स्त्री.) सतौने का पेड़।

सप्तजिह्व (पुं.) सात जीभ वाला। अग्नि। आग।

सप्तज्वाल (पुं.) आग।

सप्ततन्तु (पुं.) याग।

सप्तति (स्त्री.) सत्तर की गिनती। ७०।

सप्ततितम (त्रि.) ७० वाँ।

सप्तदश (त्रि.) १७ वीं संख्या।

सप्तद्वीपा (स्त्री.) पृथिवी।

सप्तधा (अव्य.) सात प्रकार।

सप्तधातु (पुं.) रस, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, अस्त्र।

सप्तन (पुं.) सात।

सप्तपदी (स्त्री.) भाँवेंर। विवाह के समय की स्त्री क साथ यज्ञस्तम्भ की सात परिक्रमा। स्त्रीत्व का प्रधान कर्म।

सप्तपर्ण (पुं.) सतौने का वृक्ष।

सप्तपातालम् (न.) अतल आदि पृथिवी के नीचे के लोक।

सप्तप्रकृति (स्त्री.) सांख्य की महत्तत्त्व आदि सात प्रकृतियां। सात स्वभाव।

सप्तम (त्रि.) सातवां।

सप्तर्षि (पुं.) मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, अङ्गिरा, वशिष्ठ, सात ऋषि।

सप्तर्षिमण्डल (त्रि.) आकाशस्थ नक्षत्रमण्डल। सात नक्षत्रों का समूह।

सप्तशती (स्त्री.) सात सौ। मार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत सात सौ श्लोकों का देवी के माहात्म्य को बताने वाला स्तोत्र दुर्गा ग्रन्थ।

सप्तशलाक (पुं.) ज्योतिष में विवाह विचारने का एक चक्र जिसमें सात लकीर खड़ी और सात आड़ी होती हैं।

सप्तशिरा (स्त्री.) पान की बेल। शरीरस्थ सात नाड़ियाँ।

सप्तसप्ति (पुं.) वह मनुष्य जिसके सात घोड़े हों। सूर्य्य। आक का वृक्ष।

सप्तसागर (पुं.) सात समुद्र।

सप्तांशु (पुं.) आग। सात ज्वाला वाली।

सप्ताश्ववाहन (पुं.) सूर्य्य। आक का पेड़। सात घोड़ों पर सवारी करने वाला।

सप्ति (पुं.) अश्व। घोड़ा।

सफर (पुं.) मछली।

सफल (त्रि.) फल वाला।

सबल (त्रि.) समार्थ्य वाला। सेना सहित।

सब्रह्मचारिन् (पुं.) गुरु भाई।

सभर्तृका (स्त्री.) सुहागिन स्त्री।

सभा (स्त्री.) किसी बात को निश्चित करने के लिये जमाव करने बैठने का स्थान, जिसमें वृद्ध हों।

परिषद्, मजलिस आदि। "न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः"
सभाज् (क्रि.) सेवा करना। देखना।
सभाजन (न.) आने जाने के समय का कुशल प्रश्न। भाव। आदर। पूजा। सत्कार। प्रतिष्ठा करना।
सभासद् (पुं.) सभा में बैठने के अधिकारी। सभ्य। मैम्बर।
सभास्तार (पुं.) सभ्य। मैम्बर। सभासद।
सभिक (पुं.) ज्वारिया।
सभ्य (पुं.) ज्वारी। (त्रि.) विश्वासी।
सनृ (अव्य.) भलीभाँति। बहुत।
सम (त्रि.) समान। तुल्य। सारा। भला। (न.) जोड़। दूसरी। चौथी और छठवीं राशियाँ। ताल।
समक्ष (अव्य.) आंख के सामने।
समग्र (त्रि.) सकल। सारा।
समङ्गा (स्त्री.) मजीठ।
समचित्त (त्रि.) तत्त्वज्ञानी।
समज (न.) वन। समूह। मूर्खों का गिरोह।
समज्ञा (स्त्री.) कीर्ति। यश। बड़ाई।
समन्या (स्त्री.) सभा। कीर्ति। गोष्ठी।
समञ्जस् (त्रि.) उचित। युक्त।
समदर्शिन् (त्रि.) सर्वत्र समान भाव से देखने वाला।
समदृष्टि (स्त्री.) समान दृष्टि।
समधिक (त्रि.) अत्यन्ताधिक।
समन्त (पुं.) सीमा।
समन्ततस् (अव्य.) चारों ओर से।
समन्तपञ्चक (न.) तीर्थविशेष।
समन्तभद्र (पुं.) बुद्धावतार। बुद्धदेव।
समन्तभुज् (पुं.) आग।
समन्तात् (अव्य.) चारों ओर।
समन्वित (त्रि.) युक्त। सहित।
समपद (न.) अवस्थान विशेष।
समभिव्याहार (पुं.) साहित्य। साथ। अच्छे प्रकार कहना।
समभिव्याहृत (त्रि.) मिला हुआ। सहित।
समभिहार (पुं.) बारबार।
समम् (अव्य.) एकही बार।
समय (पुं.) काल। शपथ। आचार। सिद्धान्त। संकेत। स्वीकृति।
समया (अव्य.) नैकट्य। सामीप्य। पास। बीच।
समयाध्युषित (पुं.) सूर्य्य और तारों से रहित समय।
समर (पुं.) युद्ध। लड़ाई।
समरर्द्धन (न.) अच्छे प्रकार आदर करना।
समर्ण (त्रि.) भले प्रकार पीड़ित किया गया।
समर्थ (त्रि.) शक्तिसम्पन्न। हितकर।
समर्थन (न.) पुष्टीकरण। सिद्ध करना। प्रमाण देना।
समर्द्धक (त्रि.) देवता।
समर्य्याद (त्रि.) मर्यादा सहित। अच्छे आचरण वाला।
समल (त्रि.) बहुत मैला। काला। (न.) विष्ठा।
समवतार (पुं.) पानी में नीचे जाने की सीढ़ियाँ।
समवर्तिन् (पुं.) यमराज। पुलिस आदि राज्यकर्मचारी जो फरियादी और अपराधी को समान बरतें।
समवकार (पुं.) नाटक विशेष।
समवाय (पुं.) समूह। मेल। न्याय दर्शन में सम्बन्ध विशेष।
समवेत (त्रि.) एकत्रित। मिला हुआ।
समष्टि (स्त्री.) सम्यग् व्याप्ति। सम्पूर्णता।
समसन (न.) समास। संक्षेप। मिलन।
समस्त (त्रि.) सकल। संक्षिप्त।
समस्थली (स्त्री.) दुआब। गङ्गा और यमुना के बीच की भूमि।
समस्या (स्त्री.) जो पूरी नहीं है अर्थात् किसी पद्य का एक चरण बतलाकर पूरा पद्य तैयार करना। एक सङ्केत जिस के आधार से शेष बात कही जाय।
समा (स्त्री.) वत्सर।
समांसमीना (स्त्री.) प्रतिवर्ष ब्याने वाली गौ।
समाकर्षिन् (पुं.) बहुत दूर जाने वाला गन्ध। (त्रि.) अच्छी प्रकार खींचने वाला।
समाकुल (त्रि.) भरापूरा। बहुत उत्तेजित। घबड़ाया हुआ।
समाकृष् (क्रि.) निकाल लेना। खींच लेना।

समाख्या (स्त्री.) कीर्ति। यश। प्रसिद्धि। नाम।

समाख्यात (त्रि.) गिना हुआ। भली प्रकार वर्णित। प्रसिद्ध।

समागम् (क्रि.) एकत्र होना। मेल मिलाप करना। मैथुन करना। समीप आना। लौटना। पाना।

समागत (त्रि.) आया हुआ। मिला हुआ।

समागता (स्त्री.) एक प्रकार की पहेली।

समाघात (पुं.) घात। युद्ध।

समाचयन (न.) जोड़ना। बटोरना।

समाचर् (क्रि.) करना। हटाना।

समाचार (पुं.) गमन। अग्रगमन। अभ्यास। आचरण। चालचलन। संवाद। सूचना।

समाज (पुं.) सभा। सोसाइटी। क्लब। समूह। दल। हाथी।

समाजिक / **सामाजिक** } (त्रि.) किसी समाज का सदस्य या सभ्य।

समाज्ञा (क्रि.) भली भांति समझना। (स्त्री.) कीर्ति। प्रसिद्धि।

समादा (क्रि.) पाना। लेना। स्वीकार करना। पकड़ना। देना। ले लेना। आरम्भ करना। विचार करना।

समादान (न.) भरपाना। जैनियों की नित्य क्रिया विशेष।

समादिश् (क्रि.) बतलाना।

समादेश (पुं.) आज्ञा।

समाधा (क्रि.) एक साथ रखना। मिलाना। जोड़ना। रखना। अभिषेक करना। चित्त को सावधान करना। चित्त को एकाग्र करना। सन्तुष्ट करना। मरम्मत करना। अलग करना।

समाधि / **समाधान** } (न.) मेल। जोड़। गम्भीर। विचार। ध्यान। किसी की शङ्का की निवृत्ति। मन की ससप्ति।

समाधि (पुं.) ध्येय के साथ मन को ले जाकर एक कर देना। काव्य का एक गुण। मढ़ी। ईश्वर में एकाकार होना।

समाध्मात (त्रि.) फूंक कर फुलाया हुआ।

समान (त्रि.) तुल्य। बराबर।

समानोदक (पुं.) तर्पणादि में समान जल का अधिकारी। चौदहवीं पीढ़ी तक समानोदक भाव पूरा हो जाता है।

समानोदर्य्य (पुं.) भाई। एक गर्भ से उत्पन्न सन्तान। सगा भाई।

समाप (पुं.) देवता के पूजन का स्थान।

समापन (न.) समाप्ति। प्राप्ति। वध। सर्ग। गम्भीर विचार।

समापन्न (त्रि.) समाप्त। प्राप्त। हुआ। आया। पीड़ित। मारा हुआ।

समाप्त (त्रि.) परिपूर्ण । सम्यक् प्राप्त।

समाप्ताल (पुं.) प्रभु। स्वामी। भर्त्ता।

समाभाषण (न.) बातचीत।

समाम्नान (न.) दुहराव। वर्णन। उल्लेख।

समाम्नाय (पुं.) परम्परागत। पाठ। उद्धरणी। शिव।

समाय (पुं.) आगमन। भेंट।

समायत (त्रि.) खींचा हुआ। बढ़ाया हुआ।

समायुज् (क्रि.) जोड़ना। मिलाना।

समायुत (त्रि.) मिला हुआ।

समायुक्त (त्रि.) जुड़ा हुआ। मिला हुआ। तैयार किया हुआ।

समायोग (पुं.) मेल। सम्बन्ध।

समारभ् (क्रि.) आरम्भ करना।

समारुह् (क्रि.) चढ़ना। सवार होना।

समालम्बिनी (स्त्री.) एक प्रकार की घास।

समावर्त्तन (न.) वेद पढ़ने के अनन्तर गुरु-गृहवास से गृहस्थी में लौटने का संस्कार विशेष। लौटना। एकत्र होना। सफल होना। किसी काम के अन्त पर पहुंचना।

समाविष्ट (त्रि.) मिला हुआ। लगा हुआ।

समावेश (पुं.) किसी कार्य में लगना। घुसना। किसी पर भूत प्रेतादि दुष्ट आत्माओं का आवेश।

समास (पुं.) संक्षेप। समर्थन। समाहार। दो पदों को मिला कर एक करने वाला संस्कार विशेष।

समासक्त (त्रि.) मिला हुआ। फंसा हुआ।

समासङ्ग (पुं.) संयोग। मेल।

समासादित (त्रि.) पाया हुआ।

समासार्था (स्त्री.) समस्या।

समाहित (त्रि.) प्राप्त। समीप ठहरा हुआ।
समाहृत (त्रि.) संगृहीत। एकत्र किया गया। अच्छी तरह लाया गया। संग्रह।
समाहृति (स्त्री.) संग्रह। संक्षेप।
समाव्हय (पुं.) बाजी लगाकर युद्ध लड़ना। जुआ खेलना। युद्ध। बुलावा।
समित् (स्त्री.) युद्ध। लड़ाई।
समिता (स्त्री.) गेहूं का आटा। (त्रि.) मिला हुआ।
समिध् (स्त्री.) यज्ञ काष्ठ या मामूली लकड़ी।
समिध (पुं.) काठ। आग।
समिन्धन (न.) काष्ठ। अच्छी चमक।
समीक (न.) युद्ध। लड़ाई।
समीकरण (न.) असम को सम करना। बीजगणित में अनजानी संख्या को जानने की प्रक्रिया विशेष।
समीक्ष (न.) पर्य्यालोचन। बुद्धि। सांख्य शास्त्र। यत्न।
समीक्ष्यकारिन् (त्रि.) भली-भांति सोच-विचार कर काम करने वाला।
समीचीन (त्रि.) साधु। सत्य। ठीक।
समीप (त्रि.) निकट। पास।
समीर (पुं.) वायु।
समीरण (पुं.) वायु। पथिक। राही।
समीरिता (स्त्री.) कथिता। उच्चरिता। प्रेरणा की हुई।
समीहित (त्रि.) अभीष्ट। चाहा गया।
समुचित (त्रि.) उपयुक्त।
समुच्चित (त्रि.) एकत्र किया हुआ।
समुच्चर, **समुच्चार** (पुं.) अच्छे प्रकार उच्चारण करना।
समुच्छेद (पुं.) विनाश। काटना।
समुच्छ्रय, **समुच्छ्राय** (पुं.) अत्युन्नति। विरोध। ऊँचाई।
समुच्छ्रित (त्रि.) अत्युन्नत।
समुच्छ्वलित (पुं.) चारों ओर फैला हुआ। चारों ओर बिखरा हुआ।
समुच्छ्वसित (त्रि.) उसांस लेता हुआ।
समुज्झित (त्रि.) त्यक्त। छोड़ा हुआ।
समुत्क्रम (पुं.) भले प्रकार ऊपर जाना।
समुत्क्रोश (पुं.) कूंज नामी पक्षी।
समुत्थ (त्रि.) उठा हुआ। सम्यग् उत्पन्न।
समुत्थान (नं.) समुद्योग। उत्तोलन। उठान।
समुत्पन्न (त्रि.) उपजा। उत्पन्न हुआ।
समुत्पाट (त्रि.) उन्मूलीकरण।
समुत्पिञ्ज (त्रि.) अत्याकुल। अत्यन्त घबड़ाया हुआ।
समुत्सर्ग (पुं.) त्याग देना। पेशाब करना। शौच जाना।
समुत्सुक (त्रि.) अत्यन्त उत्कण्ठित।
समुत्सृष्ट (त्रि.) बिलकुल छोड़ा गया।
समुत्सेध (पुं.) बहुत बढ़ना।
समुदय (पुं.) समूह। युद्ध। बढ़ाव। दिन। लग्न।
समुदीरण (न.) भली-भाँति कहना।
समुद्ग (पुं.) पेटी। सन्दूक।
समुद्गम (पुं.) उत्पत्ति। ऊपर जाना।
समुद्गीत (त्रि.) ज़ोर से या चिल्लाकर गाया गया।
समुद्गीर्ण (त्रि.) उगला हुआ। उठाया हुआ। कहा हुआ।
समुद्दिष्ट (त्रि.) भली-भाँति बतलाया हुआ।
समुद्धत (त्रि.) अभिमानी। घमण्डी।
समुद्धरण (न.) उखाड़। वमन।
समुद्भव (पुं.) जन्म। उत्पत्ति।
समुद्भूत (त्रि.) समुत्पन्न। उत्पन्न हुआ।
समुद्यत (त्रि.) पूरे उद्यम वाला।
समुद्यम (पुं.) पूरा प्रयत्न।
समुद्र (पुं.) जलनिधि।
समुद्रकफ (पुं.) समुद्रफेन।
समुद्रगा (स्त्री.) नदी।
समुद्रचुलुक (पुं.) जिन्होंने समुद्र को चुल्लू में भर कर पिया। अगस्त्य मुनि।
समुद्रमेखला (स्त्री.) जिसके आस पास समुद्र भरा हो। पृथिवी।
समुद्रयान (न.) जहाज।
समुद्रीय, **समुद्रिय** (त्रि.) समुद्र में उत्पन्न होने वाली वस्तु।
समुद्वह (त्रि.) श्रेष्ठ। सब से अच्छा।

समुन्दन (न.) भीगना।
समुन्न (त्रि.) गीला। भीगा।
समुन्नत (त्रि.) सम्यक् प्रकार से उन्नत।
समुन्नति (स्त्री.) अच्छी उन्नति।
समुन्नद्ध (त्रि.) गर्वित। अभिमानी। उत्पन्न हुआ।
समुन्नय (पुं.) ऊपर का फिकाव। प्रकाशकरण।
समुपचित (त्रि.) बढ़ाया हुआ।
समुपेयिवस् (त्रि.) पास गया हुआ। पहुँचा हुआ।
समुपोढ़ (त्रि.) मिल गया। उत्पन्न हुआ।
समुल्लेख (पुं.) पाँव से पृथिवी का खनन।
समूढ (त्रि.) एकत्र किया हुआ। झुका हुआ। टेढ़ा। वश में किया हुआ। विवाहित। शोधित। मूर्ख के साथ।
समूल (त्रि.) जड़सहित।
समूह (पुं.) समुदय। सब का सब। बहुत।
समूहनी (स्त्री.) झाडू। बुहारी।
समूह्य (पुं.) यज्ञ की आग।
समृद्ध (त्रि.) बहुत बूढ़ा।
समेत (त्रि.) समागत। आया हुआ। मिला हुआ।
समेधित (त्रि.) संवर्द्धित।
समोदक (न.) लड्डुओं सहित।
सम्पत्ति (स्त्री.) बड़ा ऐश्वर्य्य।
सम्पद (स्त्री.) विभव। दौलत।
सम्पन्न (त्रि.) साधित। प्रमाणित। सम्पदा वाला।
सम्पराय (पुं.) लड़ाई। आपदा।
सम्परायिक (न.) युद्ध। लड़ाई।
सम्पर्क (पुं.) सम्बन्ध। मेल।
सम्पर्किन् (त्रि.) मेल वाला।
सम्पा (स्त्री.) बिजुली।
सम्पाक (पुं.) वृक्ष विशेष, जिसके सेवन से खाया हुआ भली-भाँति पच जाता है।
सम्पात (पुं.) पक्षी विशेष की चाल। अच्छी प्रकार गिरना।
सम्पाति (पुं.) पक्षी भेद। जटायु गीध का बड़ा भाई, जिसने समुद्रतट पर हताश पड़ी राम की वानरसेना को उत्साहित कर रामपत्नी सीता का पता बतलाया था।

सम्पुट (पुं.) मिला हुआ।
सम्पुटक (पुं.) सन्दूक। मञ्जूषा। पेटी। जुड़ा हुआ।
सम्पूर्ण (त्रि.) समग्र। सारा।
सम्पृक्त (त्रि.) मिश्रित। मिला हुआ।
सम्प्रति (अव्य.) अब।
सम्प्रतिपत्ति (स्त्री.) उत्तर विशेष।
सम्प्रदातृ (त्रि.) देने वाला।
सम्प्रदान (न.) भले प्रकार देना।
सम्प्रधारणा (स्त्री.) निश्चय (योग्यायोग्य विचार पूर्वक)।
सम्प्रयोग (पुं.) मेल। सम्बन्ध।
सम्प्रसाद (पुं.) अच्छी प्रसन्नता।
सम्प्रसाधन (न.) कड़ा, चूड़ी आदि भूषण। सजावट।
सम्प्रसारण (न.) अच्छा फैलाव।
सम्प्रहार (पुं.) युद्ध। लड़ाई।
सम्प्राप्ति (स्त्री.) भली-भाँति पाना। आयुर्वेद शास्त्रानुसार रोग की अवस्था विशेष।
सम्प्रैष (पुं.) नियोग। आज्ञा।
सम्प्रोक्षण (न.) छिड़काव।
सम्फुल्ल (त्रि.) विकसित। खिला हुआ।
सम्बद्ध (पुं.) अच्छा बंधा हुआ।
सम्बन्ध (पुं.) संसर्ग। मेल। न्याय। (त्रि.) समृद्ध। समर्थ। हितकर।
सम्बर (न.) जल। बौद्धों का एक व्रत। पुल। एक दैत्य। मृगभेद। मछली। पर्वत।
सम्बाध (न.) नरक मार्ग। (पुं.) परस्पर की रगड़।
सम्बोधन (न.) आठवीं विभक्ति।
सम्भली (स्त्री.) कुट्टिनी। व्यभिचारिणी।
सम्भव (पुं.) उत्पत्ति। बड़ा सन्देह।
सम्भावना (न.) अर्थसम्बन्धी एक अलङ्कार।
सम्भावित (त्रि.) प्रतिष्ठापात्र सज्जन, जिसके होने की सम्भावना हो। होनहार।
सम्भाषण (न.) बातचीत। शास्त्रार्थ।
सम्भिन्न (त्रि.) टूटा हुआ। विकसित।
सम्भूति (स्त्री.) विभव। ऐश्वर्य्य। उत्पत्ति। मूल। मेल।

सम्भूयसमुत्थान (न.) मिलकर व्यापार (करना)। एक प्रकार का विवाद।
सम्भृति (स्त्री.) सम्यक् पोषण।
सम्भोग (पुं.) अच्छा भोग। श्रृंङ्गार रस की एक अवस्था।
सम्भ्रम (पुं.) हड़बड़ी। आदर। अतिभ्रम।
सम्मति (स्त्री.) अनुमति। चाह।
सम्मद (पुं.) हर्ष।
सम्मर्द (पुं.) युद्ध। आपस की रगड़।
सम्मान (पुं.) आदर।
सम्मार्ज्जन (न.) संशोधन।
ससम्मार्ज्जनी (स्त्री.) झाडू। बुहारी।
सम्मित (त्रि.) बराबर माप वाला।
सम्मुख (त्रि.) सामने का।
सम्मुखीन (त्रि.) सामने आया हुआ।
सम्मूर्च्छन (न.) उँचाई। फैलाव। अचेतनता।
सम्मृष्ट (त्रि.) पोंछा हुआ। साफ किया हुआ।
सम्मोद (पुं.) हर्ष। प्रीति।
सम्यच् (त्रि.) मिला हुआ। मनोज्ञ। मनोहर। सच बोलने वाला।
सम्राज् (पुं.) शहंशाह। समस्त पृथिवी का अधीश्वर। राजराजेश्वर।
सर (न.) चाल। सरोवर। जल। नोंन। माठा। मक्खन। तीर। झरना। गमन। मदिरा विशेष।
सरघा (स्त्री.) मधुमक्षिका। मदिरा को नाश करने वाली वस्तु।
सरज (न.) मक्खन।
सरजस् (स्त्री.) ऋतुमती स्त्री। (त्रि.) रजोगुणी।
सरट (पुं.) कृकलास। केंकड़ा।
सरण (न.) गमन। लोहे का मैल।
सरणि, **सरणी** } (स्त्री.) पंक्ति। राह। मार्ग।
सरमा (स्त्री.) कुतिया। दक्ष की कन्या का नाम। विभीषण की स्त्री का नाम।
सरयु (पुं.) अयोध्या के पास बहने वाली एक नदी।
सरल (पुं.) पीली लकड़ी। उदार। सीधा। त्रिपुटा।
सर (न.) सरोवर। रस वाला। गीला।

सरसिज (नं.) पद्मकमल।
सरसीरुह (न.) पद्म। कमल का फूल।
सरस्वत् (पुं.) सरोवर। सागर। (स्त्री.) नदी। वाणी। देवी। सोमलता।
सराव (पुं.) पियाला। सरइया। (त्रि.) शब्द वाला।
सरित् (स्त्री.) नदी। सूत्र।
सरित्पति (पुं.) समुद्र।
सरित्वत् (पुं.) समुद्र।
सरित्सुत (पुं.) भीष्म।
सरिताम्पति (पुं.) समुद्र।
सरिद्वरा (स्त्री.) गङ्गा।
सरीसृप (पुं.) सर्प। बिच्छू। वृश्चिक आदि राशि।
सरु (पुं.) खड्ग की मुठिया।
सरूप (त्रि.) सदृश। बराबर।
सरोज (न.) पद्म। कमल।
सरोजिनी (स्त्री.) कमलों की बेल। कमल फूलों वाली बावली।
सरोरुह्, **सरोरुह** } कमल का फूल।
सरोवर (पुं.) तड़ाग। छोटा तालाब।
सर्ग (पुं.) स्वभाव। रचना। छुटकारा। काव्य का एक परिच्छेद। निश्चय। मोह। उत्साह। अनुमति।
सर्गबन्ध (पुं.) महाकाव्य।
सर्ज्ज् (क्रि.) कमाना। जमा करना।
सर्ज्ज (पुं.) शालवृक्ष। राल।
सर्ज्जन (न.) सृष्टि।
सर्ज्जि (स्त्री.) एक नदी।
सर्प (पुं.) नागकेसर। सांप। गमन।
सर्पतृण (पुं.) मयूर। मोर।
सर्पराज (पुं.) वासुकि। शेष।
सर्पाशन (पुं.) मयूर। गरुड़।
सर्पिणी (स्त्री.) सांपिन।
सर्पेष्ट (न.) चन्दन का वृक्ष।
सर्व (क्रि.) जाना। फैलाना।
सर्व (पुं.) विष्णु। शिव। (त्रि.) सकल। सब।
सर्वसहा (स्त्री.) पृथिवी।
सर्वकर्तृ (पुं.) ब्रह्मा। परमेश्वर।
सर्वकर्मीण (त्रि.) सब काम करने वाला।

सर्वक्षार (पुं.) साबुन।
सर्वग (न.) जल। पानी। (पुं.) वायु। शिव। विष्णु। आत्मा। (त्रि.) सर्वत्र जाने वाला।
सर्वङ्कष (पुं.) पाप।
सर्वजनीन (त्रि.) सर्वत्र विख्यात।
सर्वज्ञ (पुं.) शिवजी। बुद्धदेव। परमेश्वर।
सर्वज्ञा (स्त्री.) देवी। दुर्गा। ईश्वरी।
सर्वतस् (अव्य.) चारों ओर।
सर्वतोभद्र (पुं. न.) युद्ध के लिये गृह विशेष। देवमण्डल। ज्योतिष का शुभाशुभ- सूचक चक्र विशेष। नीम का पेड़।
सर्वतोमुख (न. पुं.) जल। आकाश। शिव। ब्रह्मा। विष्णु। ब्राह्मण। अग्नि।
सर्वत्र (अव्य.) सब जगह। सब समय।
सर्वत्रगामिन् (पुं.) वायु।
सर्वथा (अव्य.) सब प्रकार।
सर्वदमन (पुं.) दुष्यन्तपुत्र। भरतराजा।
सर्वदर्शिन् (अव्य.) बुद्ध। परमेश्वर।
सर्वदा (अव्य.) सदैव। सदा।
सर्वधुरीण (त्रि.) सारा बोझ उठाने वाला। बैल।
सर्वनाम (पुं.) व्याकरण की संज्ञा विशेष।
सर्वभक्ष (त्रि.) सब कुछ खाने वाला। अग्नि। (स्त्री.) बकरी।
सर्वमङ्गला (स्त्री.) दुर्गा।
सर्वमय (त्रि.) सबके स्वरूप वाला। (पुं.) परमेश्वर।
सर्वरसोत्तम (पुं.) लवण। नोंन।
सर्वरात्र (पुं.) सारी रात।
सर्वरी (स्त्री.) रात। निशा।
सर्वलिङ्गिन् (पुं.) पाषण्डी। वेद विरुद्ध आचरण वाले बौद्ध।
सर्वविद् (पुं.) परमेश्वर। (त्रि.) सब जानने वाला।
सर्ववेद (पुं.) सब वेदों को पढ़ने वाला। (त्रि.) सर्वज्ञ।
सर्ववेदस् (पुं.) विश्वजित् नामक यज्ञ को करने वाला।
सर्ववेशिन् (पुं.) नट। बहरूपिया।
सर्वसन्नहनम् (न.) सम्पूर्ण सेना को सजा कर, युद्ध यात्रा।
सर्वसह (पुं.) गुग्गुल। (त्रि.) सब कुछ सहने वाला।
सर्वसिद्धि (पुं.) श्रीफल। बिल्व का वृक्ष।
सर्वस्व (न.) सारा धन।
सर्वहित (न.) मिरिच। (त्रि.) सबके लिये हितकर।
सर्वाङ्गीण (त्रि.) सब अङ्गों में फैल जाने वाला।
सर्वान्नीन (त्रि.) सर्वान्नभक्षक।
सर्वार्थसिद्ध (पुं.) बुद्धदेव।
सर्वाह (पुं.) सारा दिन।
सर्षप (पुं.) सरसों।
सव (पुं.) यज्ञ। सन्तान। सूर्य। अर्क वृक्ष।
सवन (न.) यज्ञ का अङ्गरूप स्नान। सोम निकालने का व्यापार। सोम का पानी। यज्ञ। प्रसव।
सवयस् (त्रि.) एक उम्र वाला। सखा।
सवर्ण (पुं.) एक जाति का। स्थान और प्रयत्न से समान अक्षर।
सवासस् (त्रि.) वेगवान्। कपड़े के सहित।
सविकल्पक (न.) वेदान्त का एक प्रकार का ध्यान।
सविकाश (त्रि.) प्रफुल्लित। विकसित।
सवितृ (पुं.) सविता देवता। सूर्य। सर्वनियन्ता परमात्मा।
सविध (त्रि.) निकट। पास।
सविस्मय (त्रि.) आश्चर्यसहित।
सवेश (त्रि.) निकट। नजदीक। भेस सहित।
सव्य (त्रि.) वाम। विरुद्ध। (पुं.) विष्णु।
सव्यसाचिन् (पुं.) बांये हाथ से सजने वाला। फुर्तीला। अर्जुन।
सव्येष्ठ (पुं.) सारथि।
ससत्त्वा (स्त्री.) गर्भवती स्त्री। जीवसहित।
ससन (न.) यज्ञ के लिये पशु का मारना।
सस्य (न.) खेत का धान। फल।
सह (अव्य.) साथ। सारा। बराबर। एक बारही। सामर्थ्य।
सहकार (पुं.) आम। साथ करना।
सहकारिन् (त्रि.) साथी। हेतुविशेष।
सहगमन (न.) साथ जाना। साथ मरना।
सहचर (त्रि.) साथी। सखा। रोकने वाला। सहायक। अनुचर।
सहज (पुं.) सहोदर। स्वभाव। (न.) ज्योतिष के मतानुसार जन्मलग्न से तीसरा स्थान।

सहजमित्र (न.) भाञ्जा। स्वाभाविक मित्र।
सहजारि (पुं.) भतीजा। सौतेला भाई।
सहदेव (पुं.) पाण्डवों में पाँचवां। माद्रीपुत्र। (स्त्री.) सर्प की आंख।
सहधर्म्मिणी (स्त्री.) पत्नी।
सहन (न.) सहना। क्षमा। शीत, उष्ण, आदि को सहना। (त्रि.) सहारने वाला।
सहपान (न.) एक साथ किसी वस्तु का पान। प्रायः मद्यमान.।
सहभोजन (न.) एक स्थान पर और एक साथ खान, पान।
सहमरण (न.) सहगमन। एक साथ मरना। सती होना।
सहस् (न.) बल। (पुं.) मार्गशीर्ष का मास।
सहसा (अव्य.) हठात्। अकस्मात्। अचानक। जबरदस्ती। एकायक। बिना सोचे विचारे।
सहस्य (पुं.) पौष का मास।
सहस्र (न.) हजार। बहुसंख्यक।
सहस्रकर / **सहस्रकिरण** } (पुं.) सूर्य।
सहस्रनयन (पुं.) हजार नेत्र वाला। इन्द्र।
सहस्रपत्र (न.) पद्म। कमल का फूल।
सहस्रपाद (पुं.) विष्णु। कनखजूरा।
सहस्रभुज (पुं.) विष्णु। कार्तवीर्य्यार्जुन। बाणासुर।
सहस्रशिखर (पुं.) विन्ध्यपर्वत।
सहस्रांशु (पुं.) सूर्य्य। आक का पेड़।
सहस्राक्ष (पुं.) इन्द्र। विष्णु।
सहस्रार (न.) सुदर्शन चक्र। सिरमें सुषुम्ना नाड़ी के बीच हजार पत्र वाला कमलपुष्प।
सहस्रिन् (पुं.) एक हजार सैनिकों की सेना। एक सहस्र सैनिकों का सेनापति।
सहस्वत् (त्रि.) बलवान्। दृढ़।
सहा (स्त्री.) पृथिवी। पुष्प विशेष।
सहाय (पुं.) मित्र। सहायक। अनुयायी।
सहायता (स्त्री.) मदद। सहायकों का समूह।
सहार (पुं.) आम का पेड़। सार्वदेशिक प्रलय।
सहासन (न.) एक आसन।
सहित (त्रि.) मिला हुआ। हितकारी।
सहितृ (त्रि.) सहारने वाला।
सहिष्णु (त्रि.) सहनशील।
सहिष्णुता (स्त्री.) क्षमा।
सहृदय (त्रि.) बहुत चतुर।
सहल्लेख (पुं.) बिगड़ा हुआ अन्न।
सहेल (पुं.) खिलाड़ी।
सहोक्ति (स्त्री.) अर्थसम्बन्धी अलङ्कार।
सहोटज (पुं. न.) पत्रों की कुटिया।
सहोढ़ (पुं.) चोर जो चुराई हुई वस्तु के साथ पकड़ा गया हो।
सहोदर (पुं.) सगा भाई।
सहोर (त्रि.) अच्छा। उत्तम। (पुं.) सन्त। ऋषि।
सह्य (न.) साहाय्य। (त्रि.) सहारने योग्य। (पुं.) एक पहाड़।
सा (स्त्री.) लक्ष्मी। पार्वती।
सांख्य (न.) कपिल का रचा हुआ दर्शन शास्त्र।
सांघातिक (त्रि.) एकत्र करने वाला।
सांयात्रिक (पुं.) व्यापारी। जहाज या नाव का व्यापारी।
सांयुगीन (त्रि.) रणकुशल।
सांवत्सरक (पुं.) गणक। ज्योतिषी।
सांवादिक (पुं.) नैयायिक। विवाद करने वाला।
सांवृत्तिक (त्रि.) मायावी। विचक्षण।
सांशयिक (त्रि.) सन्देहयुक्त। शक्की।
सांसारिक (त्रि.) दुनियावी।
सांसिद्धिक (त्रि.) स्वाभाविक।
सांस्थानिक (पुं.) स्वदेशवासी।
सांहनिक (त्रि.) शारीरिक।
साक (पुं. न.) शाकपात। बूटी।
साकम् (अव्य.) साथ।
साकल्य (न.) सम्पूर्ण। सारा। होम के लिये तिल आदि द्रव्य।
साकांक्ष (त्रि.) साभिलाष।
साकार (त्रि.) मूर्ति वाला। आकृति वाला।
साकूत (त्रि.) अर्थ वाला।
साकेत (नं.) अयोध्या।
साक्षात् (अव्य.) प्रत्यक्ष। आँखों के सामने।
साक्षात्कार (पुं.) प्रत्यक्ष। सामने।

साक्षिन् (त्रि.) सामने देखने वाला। गवाहीदार।
साक्ष्य (नं.) गवाही। साखी।
सागर (पुं.) समुद्र। ४ या ७ की संख्या। मृग।
सागरगामिनी (स्त्री.) नदी।
सागरमेखला (स्त्री.) पृथिवी।
सागरालय (पुं.) समुद्र जिसका घर है अर्थात् वरुणदेव। मोती। शंख।
साग्निक (पुं.) अग्निहोत्री।
साङ्कर्य्य (नं.) मिश्रित। गड़बड़ी।
साङ्ग (त्रि.) अङ्गसहित। पूरा पूरा।
साचि (अव्य.) तिरछौंहाँ। ढ़िठाई से।
सात्यकि (पुं.) श्रीकृष्ण का सारथि।
सात्वत् (पुं.) यादवों का अधिकार युक्त एक देश।
सात्वत (पुं.) विष्णु। बलराम। समाजबहिष्कृत वैश्य का पुत्र। वैष्णव। एक राजा।
सात्विक (पुं.) सतोगुणी। विष्णु।
सादिन् (पुं.) घुड़सवार। हाथी पर या गाड़ी पर सवार। सारथि।
सादृश्य (न.) समानता।
साधक (पुं.) साधन करने वाला। शिष्य। ऐन्द्रजालिक।
साधका (स्त्री.) दुर्गा।
साधन्त (पुं.) भिखारी।
साधर्म्य (न.) सादृश्य। समानता। एक धर्म वाला।
साधारण (त्रि.) सामान्य।
साधारणधर्म्म (पुं.) सामान्य धर्म। यथाः-
अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
दम्भःक्षमार्जवं दानं धर्मं साधारणं विदुः।।
साधारणस्त्री (स्त्री.) रण्डी। वेश्या।
साधारणी (स्त्री.) बाँस की शाखा। कुञ्जी। चाबी।
साधित (त्रि.) दिलाया गया। प्रमाणित किया हुआ। पूरा किया हुआ।
साधिदैव (त्रि.) अधिदेवतासहित। परमेश्वर।
साधिष्ठ (त्रि.) बहुत पक्का। साधु। बहुत अच्छा।
साधिष्ठान (त्रि.) निकट। षट्चक्रों में से वह चक्रविशेष जो सुषुम्ना नाड़ी के भीतर है।
साधीयस् (त्रि.) न्याय्य। बहुत अच्छा।
साधु (त्रि.) उत्तम कुल में उत्पन्न हुआ। सुन्दर। मनोहर। (पुं.) मुनि। जिनदेव। वह जन जो न तो सम्मानित होने पर प्रसन्न हो, न अपमानित होने पर क्रुद्ध हो और क्रुद्ध होने पर भी जो कठोर वचन न कहे। व्यापारी।
साध्य (पुं.) बारह गणदेवता। विष्कम्भ आदि योगों में से इक्कीसवाँ योग। (त्रि.) प्रमाणित करने योग्य। संस्कार योग्य। मंत्र।
साध्यतावच्छेदक (पुं.) जिस रूप से जिसकी साध्यता निश्चित हो।
साध्यसिद्धि (स्त्री.) सिद्ध होने योग्य पदार्थ की सिद्धि। निष्पत्ति। व्यवहार।
साध्वस (न.) भय। घबड़ाहट।
साध्वी (स्त्री.) पतिव्रता स्त्री। एक प्रकार की जड़ का नाम। भली स्त्री।
सानन्द (त्रि.) प्रसन्न।
सानसि (पुं.) सुवर्ण।
सानिका, सानेयिका, सानेयी } (स्त्री.) नफीरी। वंशी भेद।
सानु (पुं. न.) पर्वतशिखर। पर्वत की चोटी का समतल भाग। अंकुर। वन। मार्ग। अन्धड़। पण्डित जन। सूर्य। आगे।
सानुज (त्रि.) छोटे भाई सहित। (पुं.) तुम्बुर वृक्ष।
सानुमत् (पुं.) पहाड़।
सानुमती (स्त्री.) एक अप्सरा का नाम।
सान्तपन (न.) एक प्रकार का विशेष व्रत। शान्ति करना। समझाना-बुझाना।
सान्तर (न.) बिरला। व्यवधानसहित। अन्तरसहित।
सान्तानिक (त्रि.) फैला हुआ। बढ़ा हुआ। सन्तानसम्बन्धी। (पुं.) वह ब्राह्मण जो सन्तानार्थ विवाह करना चाहता है।
सान्त्वन (न.) क्रोधी पुरुष को मीठी और ठण्डी बातें कह कर अपने अनुकूल कर लेना। ठण्डा करना। कर्ण और मन को प्रसन्न करने वाला वचन।
सान्दीपनि (पुं.) सान्दीपन मुनि की सन्तान। एक विद्वान् ब्राह्मण अवन्तिका (उज्जैन) निवासी। श्रीकृष्ण-बलराम के विद्यागुरु जिनको गुरुदक्षिणा

में श्रीकृष्ण जी ने मरा हुआ पुत्र ला कर संजीवित दिया था।

सान्द्र (त्रि.) निविड़। गाढ़ा। कोमल। चिकना। मनोहर (न.) वन।

सान्धिविग्रहिक (पुं.) दीवान। किसी रियासत का मन्त्री जिसको परराष्ट्रीय कार्य करने पड़ते हों।

सान्ध्य (त्रि.) सन्ध्याकाल सम्बन्धी।

सान्ध्यसम्मिलन (न.) सायंकाल के समय मित्रों की गोष्ठी (Evening Party)।

सान्निध्य (न.) पास। समीप।

सन्निपातिक (त्रि.) सन्निपात से उत्पन्न रोग।

सान्वय (त्रि.) पुश्तैनी। बाप दादों का।

सापत्न्य (पुं.) सौत का बेटा। शत्रु।

सापिण्ड्य (न.) कुटुम्बी। जिनका पिण्ड तक का सम्बन्ध है।

साप्तपदीन् (न.) जो सात पदों के उच्चारण से, सात पाँव चलने से (सप्तपदी, विवाह) के करने से हुआ दृढ़ सम्बन्ध है। मैत्री। सौहार्द। प्रेम।

साप्तपौरुष (त्रि.) सात पीढ़ी तक का।

साफल्य (न.) सफलता। सिद्धि। लाभ। उत्तीर्णता।

साम् (क्रि.) शान्त करना। ठण्डा करना।

सामक् (न.) ऋण का मूल धन (ब्याज को छोड़ कर)।

सामग् (पुं.) सामवेद के गाने वाले।

सामग्री (स्त्री. न.) सामान। चीज। वस्तु।

सामञ्जस्य (न.) औचित्य। ठीकठाक।

सामन् (न.) राजाओं का एक उपाय विशेष जिससे वे अपने शत्रु को अपने वश में करते हैं। (स्त्री.) पशु बाँधने की रस्सी।

सामन्त (पुं.) करद राजा। पड़ोसी राजा। (त्रि.) पड़ोसी। पास का।

सामयिक (त्रि.) प्रथानुसार। समयोचित।

सामयोनि (पुं.) ब्रह्मा। चतुर्मुख।

सामर्थ्य (न.) बल। पराक्रम। शक्ति। योग्यता। धन।

सामाजिक (पुं.) सभासम्बन्धी। (पुं.) सभ्य। मैम्बर। सभा से सम्बन्ध रखने वाला मनुष्य।

सामान्य (त्रि.) साधारण। मामूली।

सामान्यलक्षण (न.) एक से धर्म्म को बतलाने वाला चिह्न। (स्त्री.) इसी प्रकार की एक चिह्नदर्शक वाक्यावली।

सामान्यवनिता (स्त्री.) साधारण स्त्री। मामूली औरत।

सामान्या (स्त्री.) रण्डी। वेश्या। मामूली।

सामान्यतः (अव्य.) साधारणतः। मामूली तौर पर।

सामासिक (त्रि.) संक्षिप्त। बोधगम्य। अनेक शब्दों का एक शब्द।

सामि (अव्य.) आधा। अङ्गरेजी का Semi (सेमी) इसी का अपभ्रंश है।

सामिधेनी (स्त्री.) वैदिक ऋचा जो यज्ञाग्नि को प्रज्वलित करते समय पढ़ी जाती है।

समीची (स्त्री.) प्रशंसा। स्तुति।

सामीप्य (न.) निकट। पास।

सामुद्र (पुं.) समुद्रयात्री। (न.) समुद्री नोन। शरीर पर चिह्न।

सामुद्रक (न.) समुद्री नमक।

सामुद्रिक (त्रि.) समुद्री। (पुं.) जो हाथ की रेखा तथा शरीर के अन्य चिह्नों को देख कर मनुष्यों के अच्छे बुरे फलों को बतलावे।

साम्परायिक (न.) परलोक के लिये हितकारी।

साम्प्रतम् (अव्य.) अब। योग्य। ठीक ठीक। उचित।

साम्य (न.) बराबरी। समान धर्म।

साम्राज्य (न.) बादशाहत। दस लाख योजन भूमि पर शासन करने वाला।

सायंसन्ध्या (स्त्री.) दिन के अन्त की सन्ध्या। सायं सन्ध्या के समय उपासना विशेष।

सायक (पुं.) बाण। तीर। खड्ग।

सायन्तन (त्रि.) दिनान्त में हुआ।

सायम् (अव्य.) साँझ।

सायह्न (पुं.) सन्ध्या। साँझ।

सायुज्य (न.) साथ जुड़ना।

सार (न.) जल। धन। मक्खन। लोहा। वन। बल। स्थिर अंश। वायु। (त्रि.) अच्छा।

सारगन्ध (पुं.) चन्दन।
सारघ (पुं.) मधु। क्षौद्र।
सारङ्ग (पुं.) चातक। पपीहा। हिरन। हाथी। भौंरा। छत्र। राजहंस। वाद्ययंत्र भेद। कपड़ा। अनेक रङ्ग। मोर। कामदेव। कमान। बाल। भूषण। कमल का फूल। शङ्ख। चदन। कपूर। फूल। कोइल। बादल। शेर। रात। भूमि। दीप्ति। चमक।
सारङ्गिक (पुं.) बहेलिया। शिकारी। व्याध।
सारज (न.) मक्खन।
सारणि, सारणी (स्त्री.) छोटी नदी। संक्षिप्त रीति से ग्रहों की चाल को जताने वाला ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।
सारथि (पुं.) गाड़ीवान्। नियन्ता।
सारदा (स्त्री.) सरस्वती।
सारमेय (पुं.) कश्यपपत्नी सरमा का पुत्र। कुत्ता।
सारव (त्रि.) सरयू नदी में उत्पन्न। कोलाहल पूर्ण।
सारस (न.) कमल का फूल। कटिभूषण। चन्द्रमा। हंस। एक पक्षी विशेष।
सारस्वत (त्रि.) सरस्वती का। सारस्वत देश का। (पुं.) सरस्वती नदी के तट वाला देश। ब्राह्मणों में से एक विशेष ब्राह्मण। सरस्वती के पूजन का विधान विशेष। व्याकरण का छोटा ग्रन्थ जिसे अनुभूति स्वरूपाचार्य ने सरस्वती के ७०० सूत्रों की माला के आधार से बनाया था।
सारस्वतकल्प (पुं.) तंत्र की विधि के अनुसार सरस्वती के पूजन का विधान विशेष।
सारि / **सारी** (स्त्री.) पाँसा फेंकने वाला। शतरञ्ज का खेल खेलने वाला।
सारिका (स्त्री.) मैना चिड़िया।
सार्थ (पुं.) समूह। जीवों का समूह। धनी। बनियों का गिरोह। तीर्थयात्रियों की मण्डली।
सार्थवह (पुं.) व्यापारी। साहूकार। बनिया।
सार्द्र (त्रि.) गीला। भगा हुआ।
सार्द्ध (अव्य.) साथ। सङ्ग।
सार्प (न.) अश्लेषा नक्षत्र।
सार्पिषक (त्रि.) घी में पकाया हुआ अन्न।
सार्वजनीन (त्रि.) सब लोगों में जाना हुआ। सर्व साधारण का।
सार्वत्रिक (त्रि.) सब समयों में हुआ। सब जगह हुआ।
सार्वधातुक (न.) विधि लिङ् आदि चारों के प्रत्यय।
सार्वभौतिक (त्रि.) सर्वभूतव्यापी।
सार्वभौम (पुं.) चक्रवर्त्ती राजा। उत्तर दिशा का दिक्कुञ्जर।
सार्वलौकिक (त्रि.) सार्वजनिक।
सार्षप (त्रि.) सरसों का तेल या खर।
साल (पुं.) इस नाम का पेड़। प्राकार। शहरपनाह।
सालनिर्यास (पुं.) धूना। राल।
सालभञ्जिका (स्त्री.) पुतली। गुड़िया। वेश्या।
सालूर (पुं.) मेंडक।
सालोक्य (न.) मुक्ति भेद।
साल्व (पुं.) देश विशेष का राजा।
सावधान (त्रि.) सचेत। सर्तक। खबरदार।
सायन (न.) यज्ञान्त। पूरा ३० दिनों का मास। वरुण।
सावर / **शावर** (पु.) अपवाद। कलङ्क। पाप।
सावर्ण (पुं.) आठवें मनु का नाम।
सावित्र (पुं.) विप्र। सूर्य। शिव की पदवी। कर्ण का नाम। (न.) यज्ञीय सूत्र।
सावित्री (स्त्री.) प्रकाश रश्मि। ऋग्वेद के एक प्रसिद्ध मंत्र का नाम। इसका यह नाम इसलिये पड़ा है कि यह सूर्य्य को सम्बोधन की गयी है। इसका दूसरा नाम गायत्री भी है। ब्रह्मा की पत्नी का नाम। पार्वती। कश्यप का नाम। साल्वराज सत्यवान् की स्त्री का नाम, जिसने मरे हुए पति को यमराज से वर में माँग कर जिन्दा कर लिया था।
सावित्रीव्रत (न.) व्रत विशेष, जिसे हिन्दुओं की स्त्रियाँ मानती हैं और ज्येष्ठ शुल्का १४ शी से १५ शी तक उपवास करती हैं। वटसावित्री का व्रत। जिस व्रत के प्रभाव से सावित्री अपने पति को स्वर्ग से वापस लाई थी। देश-भेद

से ज्येष्ठ की अमावस्या तथा पूर्णिमा को भी होता है।

सास्ना (स्त्री.) गौ के गले की खाल। कम्बल।

सास्र (त्रि.) आँसुओं से भरी आँखें।

साहचर्य्य (न.) साथ। एकही के आश्रय होना।

साहस (न.) बलपूर्वक चोरी, व्यभिचार आदि दुष्ट कर्म। (त्रि.) विना विचारे किया गया काम। (पुं.) दण्ड विशेष। अग्नि।

साहसिक (त्रि.) निष्ठुर। परुषवादी। मिथ्या बोले वाला। एकायक बिना विचार काम करने वाला।

साहस्र (न.) हज़ार की संख्या। (त्रि.) हज़ार की संख्या वाला।

साहाय्य (न.) सहायता।

साहित्य (पुं.) साथी। एक प्रकार का काव्य या शास्त्र।

साह्वय (पुं.) बाजी बद कर पशुओं की लड़ाई।

सिंह (पुं.) शेर। हिंसा शब्द का वर्ण विपर्य्यय। लाल सुहाँजना। मेष से पाँचवीं राशि। जब सिंह 'किसी' शब्द के पीछे लगता है, तब यह श्रेष्ठ अर्थ को वतलाता है। जैसे पुरुषसिंह। भयङ्कर और हिंसक पशु।

सिंहध्वनि (पुं.) शेर का दहाड़ना।

सिंहल (पुं.) एक टापू का नाम। राँगा। पीतल।

सिंहवाहिनी (स्त्री.) दुर्गा। देवी।

सिंहविक्रान्त (स्त्री.) घोड़ा अथवा सिंह के समान बल वाला।

सिंहसंहनन (न.) अच्छे अङ्ग वाला। सिंह के समान मज़बूत अङ्ग वाला।

सिंहासन (न.) राजा की बैठक। तख्त। सिंह के चिह्न वाला आसन।

सिंहिका (स्त्री.) एक राक्षसी। राहु की माता। कश्यप की स्त्री।

सिंहिकासुत (पुं.) राहु।

सिंही (स्त्री.) कण्टकारिता। राहु की माँ। शेरनी।

सिच् (क्रि.) सींचना।

सिकता (स्त्री.) रेत। बालुका। रेगिस्तान।

सिकतिल (त्रि.) रेतीली भूमि।

सिक्थ (न. पुं.) मोम। बाल। नील का पौधा। भात का कण।

सिङ्घान
सिघान } (न.) नाक का मैल। रहँट।

सिचय (पुं.) वस्त्र।

सित (न.) रूपा। चन्दन। शुक्र ग्रह। (पुं.) सफ़ेद रङ्ग।

सितकर (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।

सितपक्ष (पुं.) हंस। शुल्कपक्ष।

सिता (स्त्री.) शर्करा। चीनी। मिश्री। गङ्गा। सफेद मिट्टी (चाक)।

सितापाङ्ग (पुं.) मोर।

सितवासस् (पुं.) काले कपड़े वाला। बलभद्र।

सितेतर (पुं.) काला रङ्ग।

सितोपल (पुं.) स्फटिक। बिल्लौर। (न.) खड़िया। (स्त्री.) चीनी। मिश्री।

सिद्ध (न.) सेंधानोन। (त्रि.) पूरा हुआ। सदा। निश्चित। (पुं.) व्यास आदि मुनि। देवयोनि विशेष। बाईसवाँ ज्योतिष का योग। गुड़। काला धतूरा। मंत्र विशेष।

सिद्धदेव (पुं.) महादेव।

सिद्धधातु (पुं.) पारा।

सिद्धपीठ (पुं. न.) सिद्धों का स्थान।

सिद्धपुर (न.) अहमदाबाद और आबू के बीच में एक स्थान, जिसे मातृगया भी कहते हैं।

सिद्धविद्या (स्त्री.) काली आदि दस महाविद्या।

सिद्धसाधन (न.) न्यायदर्शन का दोष विशेष।

सिद्धा (स्त्री.) ज्योतिष की एक योगिनी दशा का नाम।

सिद्धान्त (पुं.) मत। वाक्य समूह विशेष।

सिद्धार्थक (पुं.) श्वेत सर्षप। वटी वृक्ष। प्रसिद्ध अर्थ।

सिद्धि (स्त्री.) मोक्ष। सम्पदा। अणिमा आदि आठ प्रकार का ऐश्वर्य। प्रभाव आदि तीन शक्तियाँ।

सिद्धिद (पुं.) वटुकभैरव (त्रि.) सिद्धि का देने वाला।

सिद्धियोग (पुं.) सिद्धिकारक योग।

सिध्मल (त्रि.) कोढ़ी।
सिनीवाली (स्त्री.) चतुर्दशी वाली अमावास्या।
सिन्दुवार, **सिन्धुवार** (पुं.) निसिन्दा नामक वृक्ष। यह गन्ध वाला वृक्ष है और इस में सफेद रङ्ग के फूल लगते हैं।
सिन्दूर (न.) सेन्दुर। (पुं.) वृक्ष विशेष।
सिन्धु (पुं.) समुद्र। एक नद। वृक्ष। एक राग। एक देश। हाथी का मदजल। सिन्धु देश तथा उसका रहने वाला।
सिन्धुर (पुं.) मस्त हाथी।
सिन्धुसङ्गम (पुं.) दो नदियों का मेल। नदी का समुद्र में मिलना।
सिप्र (पुं.) सरोवर। चन्द्रमा। पसीना। (स्त्री.।) उज्जैन में प्रसिद्ध एक नदी। तीर्थ विशेष।
सिम (पुं.) सब।
सीक् (क्रि.) सींचना।
सीकर (पुं.) पानी की बूँद।
सीता (स्त्री.) हल का फल। जनकराजदुलारी। जानकी। दशरथ सुत रामचन्द्रजी की स्त्री और लव, कुश की माता। जगन्माता।
सीतापति (पुं.) श्रीरामचन्द्र। हल।
सीत्कार (पुं.) सिसकारी। अनुराग से उत्पन्न शब्द।
सीधु (पुं.) मद्य। शराब।
सीधुरस (पुं.) आम का पेड़।
सीमन्त (पुं.) सीवनी। माँग। गर्भ संस्कार विशेष।
सीमन्तिनी (स्त्री.) सीमन्त वाली स्त्री। नारी।
सीमन्तोन्नयन (न.) गर्भ संस्कार वाला कर्म विशेष।
सीमन् (स्त्री.) मर्यादा। हद। अण्डकोष।
सीमा (स्त्री.) मर्यादा। गाँव का डाँड़। हद।
सीमाविवाद (पुं.) सीमा के विषय में झगड़ा। हद का झगड़ा। मर्यादा या मान का झगड़ा।
सीर (पुं.) सूर्य्य। हल। आक वृक्ष। बलराम।
सीरध्वज (पुं.) राजा जनक का नाम।
सीरपाणि (पुं.) बलदेव। बलराम।
सीरिन् (पुं.) बलराम। बलभद्र।
सीवन, **सेवन** (न.) सीना।
सु (अव्य.) पूजा। अच्छा। अतिशय।
सुकरा (स्त्री.) सुशीला गौ। (त्रि.) जो सहज में हो।
सुकल (पुं.) वह पुरुष जो धन के सद् व्यवहार और उदारता के लिये है।
सुकर्म्मन् (पुं.) अच्छे काम करने वाला पुरुष। विष्कम्भ आदि में सातवाँ योग। (न.) अच्छा काम।
सुकाण्ड (पुं.) कारवेल वृक्ष। अच्छी शाखा वाला वृक्ष।
सुकामा (स्त्री.) लता विशेष। (त्रि.) अच्छी कामना वाला।
सुकुमारा (स्त्री.) नवमालिका। कदली। मालती। (त्रि.) अतिसुकुमार।
सुकृत् (त्रि.) पुण्य करने वाला। धार्म्मिक। (पुं.) पुण्य। धर्म। शुभ। (न.) अच्छा काम।
सुकृति (स्त्री.) पुण्य। मङ्गल। अच्छा काम।
सुकृतिन् (त्रि.) पुण्य वाला। भलाई वाला। अच्छे कामों से युक्त।
सुख (न.) हर्ष। (त्रि.) सुखी।
सुखजात (त्रि.) आनन्दित। प्राप्तसुख।
सुखभाज् (त्रि.) सुखवाला।
सुखरात्रिका (स्त्री.) दिवाली की रात।
सुखाधार (पुं.) स्वर्ग।
सुखावह (त्रि.) सुखजनक।
सुखोत्सव (पुं.) सुख देने वाला उत्सव। पति।
सुगत (पुं.) बुद्धदेव।
सुगन्ध (न.) गन्धक व्यापारी। सुवास।
सुगन्धि (पुं.) चाही हुई सुगन्ध।
सुगृहीतनामन् (पुं.) पवित्र यश वाला मनुष्य। नामी मनुष्य।
सुग्रन्थि (पुं.) चोरक नामी वृक्ष।
सुग्रीव (पुं.) अच्छे कण्ठ वाला। श्रीकृष्ण का घोड़ा। सूर्य्यपुत्र। श्रीरामचद्रजी का मित्र। वानरराज।
सुचक्षुस् (पुं.) उदुम्बर। (न.) अच्छे नेत्र। (त्रि.) अच्छे नेत्र वाला।

सुचरित्रा (स्त्री.) अच्छे चालचलन वाली। पतिव्रता स्त्री।
सुचिरम् (अव्य.) बहुत काल तक। बड़ी देर तक।
सुचिरायस् (पुं.) देवता।
सुचेलक (पुं.) सूक्ष्म वस्त्र। (त्रि.) महीन वस्त्र पहने हुए। अच्छा कपड़ा।
सुजल (न.) कमल का फूल। सुन्दर जल। वह देश जिसका जल अच्छा हो।
सुत (पुं.) पुत्र।
सुता (स्त्री.) कन्या।
सुतक, **सूतक** (न.) जनन मरण अशौच।
सुतनु, **सुतनू** (स्त्री.) अच्छे शरीर वाली नारी। स्त्री।
सुतपस् (पुं.) सूर्य्य। मुनि। (न.) अच्छी तपस्या।
सुतराम् (अव्य.) बेहतर। बहुत उत्तमता से। सबसे बढ़ कर। बहुत। बहुत सा।
सुतल (पुं. न.) अच्छे तल वाला। पृथिवी के नीचे के लोकों में से एक।
सुतिक्त (पुं.) पर्पट। नीम। (त्रि.) बहुत तीखा।
सुतीक्ष्ण (त्रि.) बहुत तेज़। (पुं.) सिग्रु का वृक्ष। एक मुनि का नाम, जिसके आश्रम में रामचन्द्र ने विश्राम किया था।
सुतुङ्ग (त्रि.) बहुत ऊंचा। (पुं.) नारियल का पेड़।
सुत्रामन्, **सूत्रामन्** (पुं.) इन्द्र। देवताओं का राजा।
सुत्वन् (पुं.) सोमरसपायी। सोमरस निकालने वाला।
सुदण्ड (पुं.) बेत।
सुदत् (त्रि.) अच्छे दाँतों वाला। सुदन्त।
सुदर्शन (त्रि.) रूपवान्। अच्छे रूप का। जो सहज में देखा जा सके। (पुं.) विष्णु के चक्र का नाम। शिव का नाम। मेरु पर्वत। एक गीध।
सुदर्शनी, **सुदर्शनं** अमरावती पुरी।
सुदामन् (त्रि.) उदार। (पुं.) बादल। पर्वत। समुद्र। इन्द्र के हाथी का नाम। एक धनहीन ब्राह्मण का नाम जो श्रीकृष्ण का सहपाठी था और भूजे हुये चावलों की भेंट ले, अपनी स्त्री के अनुरोध करने पर द्वारिका में जा श्रीकृष्ण से मिला था, श्रीकृष्ण ने प्रसन्न होकर उसको त्रैलोक्य की सम्पत्ति दे कृतार्थ कर दिया।
सुदि उजियाला पाख।
सुदिन (न.) अच्छा दिन।
सुदिनाहम् (न.) बहुत अच्छा दिन।
सुदूर (त्रि.) बहुत दूर।
सुद्युम्न (पुं.) अच्छे धन वाला।
सुधन्वन् (त्रि.) सुदर धनुष धारण करने वाला। (पुं.) एक राजा। अनन्त नाग। विश्वकर्मा।
सुधर्म्मन् (स्त्री.) देवताओं की सभा (पुं.) कुटुम्ब वाला।
सुधा (स्त्री.) अमृत। कली चूना। गङ्गा। बिजली। रस। जल। आँवला। हरीतकी। मधु।
सुधांशु (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।
सुधाजीविन् (पुं.) राज। कारीगर।
सुधानिधि (पुं.) अमृत का भाण्डार। चन्द्रमा! कपूर।
सुधाहर (पुं.) गरुड़। साँप। अमृतका चोर।
सुधी (पुं.) पण्डित। अच्छी बुद्धि वाला।
सुधोद्भव (पुं.) धन्वन्तरि वैद्य।
सुनन्द (न.) बलराम का मूषल। श्रीकृष्ण का सखा। एक प्रकार का राजा का घर। (त्रि.) आनन्ददायी।
सुनयन (पुं.) मृग। (त्रि.) अच्छी आँख वाला।
सुनासीर, **सुनाशीर** (पुं.) इन्द्र।
सुनिष्टप्त (त्रि.) बहुत तपा हुआ।
सुनीति (स्त्री.) ध्रुव की माता। सुन्दर नीति।
सुनील (न.) नीलम मणि। अनार। (पुं.) सुन्दर नीला रङ्ग।
सुनीला (स्त्री.) अतसी। अपराजिता।
सुन्द (पुं.) एक दैत्य। एक वानर।
सुन्दर (त्रि.) मनोहर। कामदेव।
सुन्दरी (स्त्री.) त्रिपुरसुन्दरी देवी। रूपवती स्त्री।

सुपक्व (पुं.) अच्छा आम। (त्रि.) भली भाँति पका हुआ।
सुपथ (पुं.) अच्छा मार्ग। सदाचार। (त्रि.) सुन्दर पथ वाला।
सुपर्ण (पुं.) गरुड़। नागकेसर। (त्रि.) अच्छे पत्ते वाला।
सुपर्णकेतु (पुं.) विष्णु। गरुडध्वज।
सुपर्वन् (पुं.) देवता। बाण। बाँस। धुआँ। (न.) सुन्दर पर्व।
सुपीत (न.) गाजर (पुं.) सुन्दर पीला रंग। (त्रि.) सुन्दर पीले रङ्ग वाला।
सुपुष्प (न.) लौंग का फूल। रुई। स्त्रियों का रज। अच्छा फूल।
सुप् (स्त्री.) व्याकरण के सु और जस् आदि प्रत्यय।
सुप्त (त्रि.) सोया हुआ।
सुप्ति (स्त्री.) नींद। स्वप्न। सोना।
सुप्रतिभा (स्त्री.) अच्छी बुद्धि। सुरा। (त्रि.) अच्छी बुद्धि वाला।
सुप्रभा (स्त्री.) अग्निजिह्वाग्र वृक्ष। (त्रि.) अच्छी चमक वाला (स्त्री.) अच्छी चमक।
सुप्रभात (न.) सबेरे का समय। अच्छा सबेरा।
सुप्रयुक्तशर (पुं.) बाण चलाने में चतुर जन।
सुप्रलाप (पुं.) सुवचन। अच्छा बोल।
सुप्रसरा (स्त्री.) फैली हुई बेल। (त्रि.) फैली हुई।
सुप्रसाद (पुं.) शिवजी। अच्छी प्रसन्नता।
सुफल (पुं.) अनार। बेर। मूँग। कनेर। कैथा। (त्रि.) अच्छे फल वाला।
सुभग (पुं.) चम्पक। अशोक। सुहागा। (त्रि.) सुन्दर। अच्छे ऐश्वर्य्य वाला।
सुभगासुत (पुं.) पति की दुलारी स्त्री का पुत्र।
सुभङ्ग (पुं.) नारियल का पेड़।
सुभट (पुं.) अच्छा योद्धा।
सुभद्र (पुं.) विष्णु। अतिमाङ्गलिक।
सुभद्रा (स्त्री.) श्रीकृष्ण की बहिन (अर्जुन को ब्याही थी)। श्यामा लता।
सुभद्रेश (पुं.) अर्जुन। सुभद्रा का पति।
सुभिक्ष (त्रि.) सुकाल।
सुभूति (पुं.) पण्डित। (स्त्री.) सुन्दर ऐश्वर्य। (पुं.) बेल का पेड़।
सुभृश (न.) बहुत ही दृढ़।
सुभ्रु / **सुभ्रू** } (स्त्री.) नारी। (त्रि.) अच्छे भौं वाली।
सुमदन (पुं.) आम।
सुमधुर (त्रि.) बहुत मीठा।
सुमनस् (न.) पुष्प। फूल। अच्छा मन। (त्रि.) अच्छे चित्त वाला।
सुमित्रा (स्त्री.) लक्ष्मण की माता।
सुमुख (पुं.) गणेश। पण्डित। (त्रि.) अच्छे मुख वाला।
सुमेखल (पुं.) मूँज का पेड़। (त्रि.) सुन्दर कटिसूत्र वाला।
सुमेधस् (स्त्री.) ज्योतिष्मती लता। (त्रि.) अच्छी बुद्धि वाला।
सुमेरु (पुं.) जपमाला के आरम्भ की मोटी गुरिया।
सुह्म (पुं.) देश विशेष। (पुं.) उस देश के वासी।
सुयामुन (न.) विष्णु। वत्सराज। एक राजप्रासाद। पर्वत। बादल।
सुयोधन (पुं.) धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन।
सुर (पुं.) देवता। सूर्य्य। पण्डित।
सुरगुरु (पुं.) बृहस्पति।
सुरङ्ग (न.) हींग। सुरङ्ग। गद्य विशेष।
सुरज्येष्ठ (पुं.) ब्रह्मा।
सुरत (न.) एक प्रकार का खेल, जो स्त्री पुरुष के सङ्गम से होता है।
सुरथ (पुं.) चन्द्रवंशी एक राजा।
सुरदारु (न.) देवदारु वृक्ष।
सुरदीर्घिका (स्त्री.) गङ्गा। सुरवापी।
सुरद्विष् (पुं.) असुर दैत्य। (त्रि.) देवेष्टा।
सुरधनुस् (न.) इन्द्रधनुष।
सुरपति (पुं.) इन्द्र।
सुरपथ (पुं.) आकाश।
सुरपादप (पुं.) कल्पवृक्ष।
सुरपुरी (स्त्री.) अमरावती।
सुरभि (न.) सोना। चम्पा। जायफल। वसन्त ऋतु। सुगन्ध। चैत का मास। (पुं.) पण्डित।

(स्त्री.) रुद्र की जटा। देवीभेद। गौ। सुरा। तुलसी। पृथिवी। (त्रि.) धीर। अच्छे गन्ध वाला। मनोहर। प्रसिद्ध।
सुरर्षि (पुं.) नारदादि देवर्षि।
सुरलोक (पुं.) स्वर्ग। देवों का निवासस्थल।
सुरवर्त्मन् (न.) आकाश।
सुरवल्ली (स्त्री.) तुलसी।
सुरवैरिन् (स्त्री.) असुर। (त्रि.) देवों का शत्रु।
सुरसुन्दरी (स्त्री.) देवताओं की प्रिय सुन्दरी। मेनका आदि अप्सरा। एक योगिनी।
सुरा (स्त्री.) मद्य। शराब।
सुराजन् (पुं.) अच्छा राजा।
सुराजीविन् (पुं.) कलाल या कलार।
सुराप (त्रि.) मदिरा पीने वाला।
सुरापगा (स्त्री.) गङ्गा।
सुरापान (न.) मदिरा पान।
सुरार्ह (न.) हरिचन्दन।
सुराष्ट्र (पुं.) एक देश। अच्छा राज्य।
सुरूप (न.) सुन्दर रूप। राई। (पुं.) पण्डित।
सुरेज्य (पुं.) बृहस्पति।
सुरेज्या (स्त्री.) तुलसी।
सुरेन्द्र (पुं.) इन्द्र। देवराज।
सुरेश्वर (पुं.) महादेव। इन्द्र। देवनायक।
सुरोत्तम (पुं.) सूर्य्य। देवताओं में श्रेष्ठ विष्णु।
सुरोद (पुं.) सुरासमुद्र।
सुलभ (त्रि.) सहज।
सुलोचन (पुं.) हिरन। (त्रि.) अच्छी आँखों वाला।
सुलोमशा (स्त्री.) अच्छे रोएँ वाली।
सुवचस् (त्रि.) वाग्मी। अच्छे बोल बोलने वाला।
सुवर्ण (न.) सोना। (त्रि.) सुन्दर रङ्ग अथवा सुन्दर अक्षर वाला। अच्छा अक्षर।
सुवर्णकार (त्रि.) सुनार। रङ्गेरा। लेखक।
सुवयस् (स्त्री.) प्रौढ़ा (जोवन में भरी)।
सुवास (पुं.) अच्छी गन्ध।
सुवासिनी (स्त्री.) चिरकाल तक पिता के घर में रहने वाली स्त्री।
सुविद् (पुं.) पण्डित। अच्छा ज्ञाता।
सुविदत् (पुं.) राजा।
सुविनीता (स्त्री.) सुशीला गौ। (त्रि.) विनम्र।
सुबीज (पुं.) खसखस। एक वृक्ष।
सुवीर्य्य (न.) बेर। बदरीफल।
सुवृत्त (पुं.) अच्छा वृत्तान्त।
सुवेल (पुं.) लङ्का के एक पर्वत का नाम। (त्रि.) अच्छे नियम वाला। शान्त। प्रणत।
सुवेश (पुं.) सफेद गन्ना। (त्रि.) सुन्दर वेश वाला।
सुव्रती (स्त्री.) अच्छे नियम वाली स्त्री। सुशीला गौ।
सुशर्म्मन् (पुं.) एक राजा। (त्रि.) सुन्दर सुख वाला।
सुशिख (पुं.) आग। चित्रक वृक्ष। (त्रि.) अच्छी शिखा वाला। (स्त्री.) मोर की चोटी या कलगी।
सुशीत (न.) पीला चन्दन (त्रि.) बहुत शीतल।
सुशील (त्रि.) विष्णु के पास विचरने वाला। अच्छे स्वभाव वाला। अच्छे चरित्र वाला।
सुश्रीक (स्त्री.) वृक्ष विशेष, जिसे हाथी बड़े चाव से खाते हैं। (त्रि.) अच्छी शोभा वाला।
सुश्रुत (पुं.) विश्वामित्र का पुत्र। एक मुनि जिसके नाम का एक चिकित्साग्रन्थ प्रसिद्ध है। ग्रन्थ विशेष। (त्रि.) कर्णमधुर।
सुश्लिष्ट (त्रि.) भली भाँति मिला हुआ।
सुषम (पुं.) शोभन। सम। (स्त्री.) बड़ी शोभा।
सुषिर (न.) छेद। सूराख।
सुषीम (पुं.) जिसकी अच्छी सीमा है। शीतल स्पर्श। (त्रि.) मनोज्ञ। मनोहर।
सुषुप्त (न.) ज्ञानशून्य दशा। (त्रि.) ज्ञानशून्य अवस्था वाला।
सुषुम्णा (स्त्री.) सूक्ष्मनाड़ी विशेष।
सुषेण (पुं.) बेत। लंङ्का के एक वैद्य का नाम। राम की वानरी सेना का एक वानर सेनापति।
सुष्ठु (अव्य.) अत्यन्त। प्रशस्त। सत्य।
सुसंस्कृत (त्रि.) अच्छी प्रकार बनाया हुआ।
सुसम्पद (स्त्री.) अच्छी सम्पदा। सौभाग्य। (त्रि.) अच्छी सम्पदा वाला।
सुस्थ (त्रि.) नीरोग। सुख।
सुस्नात (त्रि.) अच्छे प्रकार मङ्गल द्रव्यों से स्नान किये हुए।

सुहृद् (पुं.) अच्छे हृदय वाला। हितकारी मित्र।
सुहृदय (त्रि.) अच्छे हृदय वाला।
सुहृद्वल (त्रि.) मित्रबल।
सू (स्त्री.) प्रसव। क्षेप। भेजना।
सूकर (पुं.) सूअर। कुम्हार। पशु विशेष।
सूक्त (न.) अच्छी वाणी। मंत्रसमूह।
सूक्ष्म (न.) छल। आत्मा सम्बन्धी पदार्थ। एक प्रकार का अलङ्कार। इमली का पेड़। (त्रि.) अति छोटा। महीन।
सूक्ष्मदर्शिन् (त्रि.) अति पैनी बुद्धि वाला। कुशाग्रबुद्धि।
सूक्ष्मभूत (न.) पृथिवी आदि पंच भूतों के अंश विशेष।
सूक्ष्मैला (स्त्री.) छोटी या सफेद इलायची।
सूच् (क्रि.) चुगली खाना।
सूचक (त्रि.) चुगलखोर। सूचना देने वाला। (पुं.) काक। कुत्ता। बिडाल। पिशाच। वृढ़ा। नाटक में मुख्य नट।
सूचन (न.) मारना। जतलाना।
सूचि } **सूची** } (स्त्री.) शिखा। सुई।
सूचिक (त्रि.) दरजी। (स्त्री.) हाथी की सूँड़।
सूचित (त्रि.) कहा हुआ। मारा हुआ। जतलाया हुआ।
सूचीमुख (न.) हीरा।
सूत (पुं.) सूर्य्य। वर्णसङ्कर जो ब्राह्मणी के गर्भ और क्षत्रिय के औरस से उत्पन्न हुआ हो। विश्वकर्मा। गाड़ीवान। वन्दी। लोमहर्षण नामक पुराणवक्ता। (न.) पारा। (त्रि.) भेजा हुआ। उत्पन्न हुआ।
सूततनय (पुं.) कर्ण राजा।
सूति (स्त्री.) उत्पत्ति। सोमरस निकालने का स्थान।
सूतिका (स्त्री.) नवप्रसूता स्त्री।
सूतिकागार (न.) प्रसूतागार।
सूत्थान (त्रि.) अच्छे उद्योग वाला। चतुर। काम करने में कुशल।
सूत्या (स्त्री.) यज्ञ के अङ्ग का स्नान विशेष। सोमरस का पीना।
सूत्याशौच (न.) सूतक। जननाशौच।
सूत्र् (क्रि.) गाँठना। लपेटना।
सूत्र (न.) सूत। धागा। व्यवस्था। नियम। प्रस्ताव। प्रसङ्ग। शास्त्र के तत्त्व को सूक्ष्मरीत्या दिखाने का नियम।
सूत्रकण्ठ (पुं.) ब्राह्मण। कबूतर।
सूत्रधार (पुं.) मुख्य नट। इन्द्र। शिल्पि-विशेष। एक प्रकार का कारीगर। बढ़ई।
सूत्रभिद् (पुं.) दरजी।
सूत्रयंत्र (न.) चरखा।
सूद (पुं.) रसोइया। व्यञ्जन विशेष। शाक। तर्कारी। अपराध। पाप।
सूदन (न.) मारना। स्वीकार।
सूदशाला (स्त्री.) पाकशाला। रसोईघर।
सून (न.) पुष्प।
सूना (स्त्री.) वधस्थान। लड़की। हाथी की सूँड़। मांस का वेचना।
सूनु (पुं.) पुत्र। छोटा भाई।
सूनृत (न.) सच्चा। वचन। मंगल। (त्रि.) सच्च। शुभ।
सूप (पुं.) दाल। रसोई।
सूपकार (पुं.) पाचक। रसोइया।
सूपाङ्ग (न.) हींग आदि मसाला।
सूर (त्रि.) सूर्य्य। अर्क का वृक्ष। पण्डित।
सूरत (त्रि.) दयालु। कृपालु।
सूरसुत (पुं.) अरुण।
सूरि (पुं.) सूर्य्य। आक का पेड़। एक यादव। एक पण्डित।
सूरिन् (पुं.) पण्डित। चतुर जन।
सूर्पणखा (स्त्री.) रावण की वहिन।
सूर्य्य (पुं.) दिवाकर। सूरत। आक का पेड़। एक दैत्य।
सूर्य्यकान्त (पुं.) स्फटिक मणि। आतशी शीशा।
सूर्य्यग्रहण (न.) सूर्य्य का ग्रहण। पर्व विशेष।
सूर्य्यज (पुं.) शनिग्रह। यमराज। वैवस्वत मनु। सुग्रीव।
सूर्य्यजा (स्त्री.) यमुना नदी।
सूर्य्या (स्त्री.) सूर्य्य की (अमानुषी) स्त्री। कुन्ती (मानुषी।)

सूर्य्यालोक (पुं.) सूर्य्य का प्रकाश। धूप। तेज।
सूर्य्याश्मन् (पुं.) सूर्य्यकान्तमणि।
सूर्य्योढ़ (पुं.) सूर्य्यास्त के समय आया हुआ अतिथि।
सृक्क
सृक्कन } (न.) होठों के पास का भाग।
सृगाल (पुं.) शत्रु। अङ्कुश।
सृति (स्त्री.) जाना। पथ। रास्ता।
सृत्वर (त्रि.) जानेवाला।
सृप् (क्रि॰) जाना।
सृमर (पुं.) मृग विशेष (त्रि.) जाने वाला।
सृष्ट (त्रि.) निर्मित। रचा हुआ। जुड़ा हुआ। निश्चय किया हुआ। छोड़ा हुआ। सजा हुआ।
सृष्टि (स्त्री.) रचना। स्वभाव।
सेक (पुं.) सींचना।
सेकपात्र (न.) डोल। मसक। हजारा।
सेक्तृ (पुं.) पति। (त्रि.) सींचने वाला।
सेचन (न.) सींचना। बाल्टी।
सेटु (पुं.) तरबूज।
सेतु (पुं.) पुल। वरुण वृक्ष। प्रणव रूप मंत्र।
सेतुबन्ध (पुं.) लङ्का जाने के लिये श्रीराम का वनवाया हुआ पुल।
सेत्र (न.) वेड़ी। हथकड़ी।
सेना (स्त्री.) सैन्य।
सेनाङ्ग (न.) हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल आदि सेना की सामग्री।
सेनाचर (पुं.) सेनागामी। फौज में फिरने वाला।
सेनानी (पुं.) कार्तिकेय। देवताओं का सेनापति।
सेनापति (पुं.) कार्तिकेय। फौज का स्वामी। देवताओं का सेनापति कार्तिकेय। केपटिन्।
सेनामुख (न.) सेना के आगे का हिस्सा।
सेनारक्ष (पुं.) पहरुआ। फौज का रक्षक।
सेफ (पुं.) लिङ्ग।
सेवक (पुं.) नौकर। टहलुआ। सीने वाला।
सेवधि (पुं.) जिसकी सेवा करनी पड़ती है। शङ्ख आदि निधि। धनागार। अन्तिम। सीमा। आखिर।
सेवन (न.) सीना। आसरा लेना। भोगना। बाँधना। पूजना। सुई।
सेवा (स्त्री.) भजन। आराधन। भोजन। नौकरी। परिचर्या।
सेवित (त्रि.) पूजा गया। सेवा किया गया। सेया गया (पेड़ आदि)।
सेव्य (न.) पीपल। (त्रि.) सेवा योग्य। लक्ष्मीपति।
सैंहिक (पुं.) राहु।
सैकत (न.) किसी भी नदी का बहुत रेतीला तट। (त्रि.) रेतीला।
सैद्धान्तिक (न.) सिद्धान्त जानने वाला।
सैनापत्य (न.) सेनापति या कप्तान का काम।
सैनिक (त्रि.) फौजी। (पुं.) सिपाही।
सैन्धव (नं.) सेंधा नोन। घोड़ा। (त्रि.) सिन्धु देश में उत्पन्न।
सैन्धवघन (पुं.) चिदानन्दस्वरूप। परमेश्वर।
सैन्य (पुं.) सेना के हाथी घोड़े आदि (नं.) सेना का समूह।
सैरन्ध्री (स्त्री.) दूसरे के घर में रह कर भी स्वतंत्र हो कर शिल्प का काम करने वाली स्त्री। राजा विराट के यहाँ द्रौपदी ने सैरन्ध्री का ही काम किया था। दासी।
सैरिभ (पुं.) भैंसा। स्वर्ग।
सैवाल (न.) देखो शैवाल।
सोढ़ (त्रि.) सहने वाला। क्षमाशील।
सोढ (त्रि.) सहनकर्त्ता।
सोत्कण्ठ (त्रि.) उत्सुक।
सोच्छ्वास (त्रि.) प्रसन्न।
सोत्प्रास (त्रि.) अत्यधिक। अतिशयोक्त। आक्षेपयुक्त। (पुं.) अट्टहास।
सोदय (त्रि.) प्रकट हुआ। बढ़ा हुआ। लाभ वाला।
सोदर (पुं.) सगा। एक पेट का।
सोदर्य्य (पुं.) सगा भाई।
सोन्माद (त्रि.) पागल। उन्मत्त।
सोपप्लव (पुं.) राहु व चन्द्रमा की छाया से दबाया हुआ। शत्रुओं से।
सोपाधिक (न.) विशेष। उपाधि के साथ। किसी विशेष गुण को धारण किये हुए। आवश्यक।
सोपान (न.) सीढ़ी। नसैनी।
सोम (पुं.) चन्द्रमा। अमृत। सोमवल्ली। किरण।

कपूर। जल। वायु। कुबेर। शिव। यम। सुग्रीव। मुख्य।

सोमगर्भ (पुं.) विष्णु। नारायण।

सोमज (न.) दुग्ध। (पुं.) बुध।

सोमतीर्थ (न.) प्रभासक्षेत्र।

सोमप (पुं.) यज्ञ में सोमरस को पीने वाला।

सोमपीतिन् } (पुं.) सोमपी। सोमरस को पीने
सोमपीथिन् } वाला।

सोमबन्धु (पुं.) सूर्य्य। बुध। (न.) कुमुद का फूल।

सोमभू (पुं.) बुधग्रह। चन्द्रवंशीय क्षत्रिय।

सोमयाग (पुं.) याग विशेष।

सोमयाजिन् (पुं.) सोमयागकर्त्ता।

सोमलता (स्त्री.) लता विशेष।

सोमवंश (पुं.) चन्द्रमा का वंश।

सोमवार (पुं.) चन्द्रवार।

सोमविक्रयिन् (पुं.) सोमलता या उसके रस को बेचने वाला।

सोमसिद्धान्त (पुं.) ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।

सोमसुत (पुं.) बुध।

सोमसुता (स्त्री.) नर्मदा नदी। चन्द्रमा की कन्या।

सोमसूत्र (न.) नाली। मोरी।

सोल्लुण्ठ (त्रि.) आक्षेप करना। कटाक्ष करना।

सौकर्य्य (न.) आसान। सहज।

सौखसुप्तिक (त्रि.) बन्दी। बैताल। भाट।

सौख्य (न.) सुख। आराम।

सौगत (पुं.) सुगत बुद्धि विशेष।

सौगन्धिक (न.) कह्लार। एक प्रकार का पद्मपुष्प।

सौचिक (पुं.) दरजी।

सौजन्य (न.) भलमनसई। सज्जनता।

सौत्रामणि (स्त्री.) यज्ञ विशेष जिसमें ब्राह्मणों के सुरा पीने का भी विधान है। यथा- "सौत्रामण्यां सुरां पिबेदिति।"

सौदामिनी (स्त्री.) बिजली।

सौदायिक (न.) स्त्रीधन भेद।

सौदास (पुं.) चन्द्रवंशी कल्माषपाद राजा।

सौध (पुं. न.) राजप्रासाद विशेष। (त्रि.) अमृतसम्बन्धी।

सौनिक (पुं.) कसाई। बूचड़।

सौन्दर्य (न.) सुन्दरता।

सौपर्ण (न.) पन्ना।

सौपर्णेय (पुं.) विनता की सन्तान। गरुड़।

सौप्तिक (त्रि.) रात में हुआ। महाभारत ग्रन्थ का पर्व विशेष।

सौम (न.) कामचारी नगर।

सौभद्र (पुं.) अभिमन्यु। सुभद्रा का पुत्र।

सौभरि (पुं.) एक मुनि।

सौभागिनेय (पुं.) पति की प्यारी स्त्री का पुत्र।

सौभाग्य (न.) सेंदुर। सुहागा। (पुं.) (ज्योतिष का) चौथा योग। (न.) अच्छे भाग्य।

सौभिक (पुं.) ऐन्द्रजालिक। मदारी।

सौमनस्य (न.) अच्छा मन। श्राद्ध का पिण्ड देने के अनन्तर, ब्राह्मण के हाथ मे पुष्प देने का मंत्र विशेष।

सौमित्र (त्रि.) लक्ष्मण।

सौम्य (त्रि.) सुन्दर। मनोहर। (पुं.) बुध। शुभग्रह। वृषादि सम राशि। सोमपायी ब्राह्मण।

सौम्यग्रह (पुं.) ज्योतिष में चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र-शुभग्रह हैं।

सौर (पुं.) सूर्य्यपुत्र। शनैश्चर। यमराज। (त्रि.) सूर्य्यसम्बन्धी।

सौरभ (न.) केसर।

सौरभेय (पुं.) गौ (त्रि.) गौ सम्बन्धी।

सौराष्ट्र (पुं.) अच्छे राज वाला। एक देश विशेष। (न.) एक विष। (त्रि.) अच्छे देश में उत्पन्न।

सौल्विक (त्रि.) कसेरा।

सौवस्तिक (पुं.) पुरोहित।

सौविदल्ल (पुं.) अन्तःपुर का रख वाला।

सौष्ठव (न.) सुन्दरता।

सौहार्द (न.) स्नेह। प्यार । मैत्री।

स्कद् (क्रि.) उछल कर जाना।

स्कन्द (पुं.) कार्तिकेय।

स्कन्द (न.) बहना। सूखना। जाना।

स्कन्ध (पुं.) कन्धा। वृक्ष का तना। रचना। लड़ाई। समूह। शरीर। एक छन्द। सौगत सिद्धों में विज्ञानादि पाँच। रास्ता। ग्रन्थ का भाग।

स्कन्धावार (पुं.) छावनी। शिबिर।

स्कन्न (त्रि.) च्युत। गलित। क्षरित। बहा हुआ। सूखा हुआ। चला गया (न.) बहाव।

स्कम्भ् (क्रि.) चोट करना।
स्खद् (क्रि.) फाड़ना चलना।
स्खल् (क्रि.) चलना।
स्खलन (न.) चलना। गिरना।
स्खलित (न.) गिरना। (त्रि.) गिरा हुआ।
स्तन् (क्रि.) बादल का शब्द करना।
स्तन (पुं.) स्त्रियों का अङ्ग विशेष। चूची। छाती।
स्तनन (न.) शब्द। बादल की गर्जन।
स्तनन्धय (पुं.) माँ का दूध पीने वाला। बच्चा।
स्तनप (पुं.) स्तन से दूध पीने वाला अर्थात् बहुत छोटा बच्चा।
स्तनभर (पुं.) मोटे स्तनों का भार।
स्तनयित्नु (पुं.) मेघ। बादल। मोथा। बिजली। मौत। रोग।
स्तनान्तर (न.) स्तनों का मध्य। हृदय। छाती।
स्तनाभोग (पुं.) स्तनों की पूर्णता।
स्तनित (न.) क्रीड़ा आदि का शब्द। (त्रि.) शब्द वाला।
स्तम्भ् (क्रि.) रोकना।
स्तन्य (न.) दूध।
स्तब्धरोमन् (पुं.) शूकर। सुअर।
स्तभ् (क्रि.) रोकना।
स्तम्ब (पुं.) झाड़ी। तृण। खम्भा।
स्तम्बेरम (पुं.) गज। हाथी।
स्तम्भ (पुं.) खम्भा।
स्तम्भन (न.) रोक देना। तन्त्र का प्रयोग विशेष।
स्तव (पुं.) प्रशंसा। स्तुति।
स्तवक (पुं.) गुच्छा।
स्तावक (त्रि.) स्तुतिकारक। बड़ाई करने वाला।
स्तिमित (न.) गीलापन। निश्चल। ठहरना। (त्रि.) गीला।
स्तुत (पुं.) स्तुति किया हुआ।
स्तुतिपाठक (पुं.) राजा आदि की बड़ाई करने वाला।
स्तुम्भ् (क्रि.) रोकना।
स्तूप (पुं.) मट्टी का ढेर। बल। निष्प्रयोजनता। निकम्मापन।
स्तृ (क्रि.) फैलना। प्रसन्न होना।
स्तॄ (क्रि.) ढाँपना।
स्तेन् (क्रि.) चोरी करना।
स्तेन (पुं.) चोरी। (त्रि.) चोर।
स्तेम (पुं.) गीलापान। चिकनाहट।
स्तेय (नं.) चोरी।
स्तेयिन् (त्रि.) चोर। चोरी करने वाला।
स्तोक (पुं.) पपीहा। जलबिन्दु। (त्रि.) थोड़ा।
स्तोत्र (न.) बड़ाई। गुणानुवाद।
स्तोभ (पुं.) स्तम्भन।
स्तोम् (क्रि.) अपने गुणों को प्रकाश करना।
स्तोम (पुं.) समूह। यज्ञ। बड़ाई। माथा। धन। गाढ़ा। खेती। (त्रि.) टेढ़ा।
स्त्यान (न.) चिकनापन। गाढ़ापन। मिलावट। आलस्य। गूञ्ज।
स्त्यै (क्रि.) इकट्ठा करना। शब्द करना।
स्त्री (स्त्री.) नारी। औरत।
स्त्रीचिह्न (न.) योनि। भग।
स्त्रीचोर (पुं.) कामी। लम्पट।
स्त्रीजित् (पुं.) स्त्रीवश्य।
स्त्रीधन (न.) औरत की सम्पत्ति।
स्त्रीधर्म्म (पुं.) रजस्वला होना। मासिक धर्म्म।
स्त्रीधर्मिणी (स्त्री.) ऋतुमती स्त्री।
स्त्रीपुंस (पुं.) स्त्री और पुरुष।
स्त्रीलिङ्ग (पुं.) स्त्रीवाची।
स्त्रीवश (पुं.) स्त्री के वशीभूत होने वाला।
स्त्रीविधेय (पुं.) स्त्री के वश में रहने वाला।
स्त्रीसंग्रहण (न.) स्त्री का पकड़ना। एक प्रकार का विवाद।
स्त्रीसम (न.) नपुंसक स्त्रियों का समाज।
स्त्रीसेवा (स्त्री.) भोग द्वारा नारी की सेवा।
स्त्रैण (त्रि.) स्त्री की आज्ञानुसार काम करने वाला। (नं.) स्त्री का स्वभाव। स्त्रियों का समूह।
स्थ (त्रि.) ठहरने वाला। यह प्रायः किसी न किसी शब्द के पीछे लगता है, यथा पर्वतस्थ, गृहस्थ आदि।
स्थग् (क्रि.) ढाँपना।
स्थगन (न.) ढक्कन।
स्थगित (त्रि.) रुका हुआ। आवृत। तिरोहित।
स्थगी (स्त्री.) पान का डिब्बा।
स्थण्डिल (न.) चबूतरा। आँगन। यज्ञ स्थान। होम का मण्डल विशेष। वेदी।

स्थण्डिलशायिन् } (पुं.) व्रत धारण कर चबूतरे पर
स्थण्डिलेशय } सोने वाला।
स्थपति (पुं.) रनवास में रहने वाला बूढ़ा ब्राह्मण। शिल्पी विशेष। राज थवई। अधीश। "बृहस्पतिसव" नामक यज्ञ करने वाला। (त्रि.) बहुत अच्छा।
स्थपुर (त्रि.) टेढ़ी और ऊँची जगह।
स्थल् (क्रि.) ठहरना।
स्थल (न. स्त्री.) भूमि का भाग । थल। बनावटी भूभाग।
स्थलेशय (पुं.) वराह। रुरु। एक प्रकार का हिरन।
स्थविर (न.) गन्ध द्रव्य विशेष। (पुं.) ब्रह्मा। (त्रि.) अचल। स्थिर। बूढ़ा।
स्थविष्ठ (त्रि.) अतिवृद्ध।
स्थाणु (पुं.) शिव। शाखा डाली आदि से रहित वृक्ष। (त्रि.) बूढ़ा।
स्थान (न.) समानता। अवकाश। रहन। ग्रन्थसन्धि। भोजन। पास। जगह।
स्थानिक (त्रि.) थानापति। स्थान का मालिक या स्वामी।
स्थानिन् (त्रि.) स्थान की रक्षा करने वाला।
स्थानीय (न.) नगर। रहने योग्य स्थान। (पुं.) स्थान वाला।
स्थाने (अव्य.) योग्यता। औचित्य। ठीक। सत्य।
स्थापन (न.) लगाव। रुपाव। चढ़ाव।
स्थापित (त्रि.) निश्चित। पक्का। न्यस्त।
स्थायिन् (त्रि.) स्थितिशील।
स्थायुक (त्रि.) स्थितिशील। (पुं.) एक ग्राम का स्वामी।
स्थाल (न.) थाल। बड़ी थाली।
स्थालीपुलाक (पुं.) एक प्रकार का न्याय। (भरी हुई बटलोई में से एक चावल को निकाल कर उस बटलोई भर चावलों की परीक्षा कर लेना अर्थात् वे सिजे कि नहीं यह जान लेना "स्थालीपुलाक" न्याय कहलाता है)।
स्थावर (त्रि.) अचल। स्थिर। (पुं.) वृक्ष। पर्वत। पृथिवी। (न.) धनुष का रोदा।
स्थाविर (न.) बुढ़ापा।
स्थासक (पुं.) अलङ्कार। जलबिन्दु।
स्थास्नु (त्रि.) स्थितिशील।
स्थित (त्रि.) ठहरा हुआ। निश्चल। प्रतिज्ञावाला।
स्थिति (स्त्री.) मर्य्यादा। स्थान।
स्थिर (पुं.) भूमिशाल्मली वृक्ष। पहाड़। देवता। वृक्ष। स्वामिकार्तिक। शनि। मोक्ष। ज्योतिष में वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुम्भ राशियाँ। (त्रि.) कठिन। निश्चल।
स्थिरतर (त्रि.) अत्यन्तस्थिर (पुं.) ईश्वर।
स्थिरमति (स्त्री.) स्थिरचित्त।
स्थिरयौवन (न.) विद्याधर आदि।
स्थिरायुस् (पुं.) शाल्मली वृक्ष।
स्थूल् (क्रि.) बढ़ना।
स्थूल (त्रि.) मोटा।
स्थेय (पुं.) पक्ष। जूरी। पुरोहित।
स्थेयस् (त्रि.) बहुत पक्का।
स्थैर्य्य (न.) स्थिरता।
स्थौल्य (न.) मोटापन।
स्नपन (न.) स्नान।
स्नव (पुं.) बहना। चूना।
स्नातक (पुं.) गुरु के पास विद्या पढ़ कर, घर लौट कर आने वाला ब्रह्मचारी।
स्नातकव्रत (न.) व्रतविशेष। "अलाभे चैव कन्यायाः स्नातकव्रतमाचरेत्"।
स्नान (न.) शोधन। सफाई।
स्नानीय (त्रि.) स्नान के लिये हितकारी यथा-तेल, उबटन।
स्नायु (स्त्री.) एक नाड़ी। रग।
स्निग्ध (त्रि.) चिकना। (पुं.) मित्र। सरलवृक्ष (स्त्री.) चर्बी। मेदा।
स्निग्धता (स्त्री.) चिकनाई। प्रियता।
स्नुत (पुं.) बहा हुआ। जल आदि।
स्नुषा (स्त्री.) बहू। पुत्र की स्त्री।
स्नेह (पुं.) प्रेम। तेल।
स्नेहन् (न.) तेल की मालिश।
स्नेहभू (स्त्री.) कफ। स्नेहपात्र।
स्नेहिन् (पुं.) बन्धु। (त्रि.) स्नेह वाला।
स्पद् (क्रि.) थोड़ा काँपना।
स्पन्द (पुं.) थोड़ा सा हिलना। आँख का फड़कना।

स्पर्द्ध (क्रि.) बहुत प्रसन्न होना। दूसरे को दबाने की इच्छा करना।
स्पर्श् (क्रि.) पकड़ना। छूना। चुराना।
स्पर्श (पुं.) पकड़ना। रोग। युद्ध। गुप्तचर। उपपातक। (पुं.) वायु। "क" से लेकर "त" तक के वर्ण।
स्पश (पुं.) चर। दूत। युद्ध।
स्पष्ट (त्रि.) व्यक्त। प्रकट। स्फुट। साफ।
स्पृष्ट (त्रि.) छुआ हुआ। (न.) छूना।
स्पृष्टास्पृष्टि (न.) छुआ छूत।
स्पृह् (क्रि.) चाहना। इच्छा करना।
स्पृहणीय (त्रि.) वाञ्छनीय। चाहने योग्य।
स्पृहयालु (त्रि.) चाहने वाला।
स्पृहा (स्त्री.) इच्छा। चाह।
स्पृह्य (त्रि.) वाञ्छनीय।
स्फट् (क्रि.) फटना।
स्फटिक / **स्फटीक** } (पुं.) सूर्यकान्तमणि। बिल्लौर पत्थर।
स्फटिकाचल (पुं.) कैलास पर्वत। बिल्लौर पत्थर का पहाड़।
स्फाय् (क्रि.) बढ़ना।
स्फाति (स्त्री.) बढ़ना।
स्फार (पुं.) सोने का बुलबुला। (त्रि.) चौड़ा। चमकीला। बहुत।
स्फारण (न.) खिलाव।
स्फिच् (स्त्री.) कटिदेश। नितम्ब। चूतड़।
स्फिर (त्रि.) बहुत। बढ़ा हुआ।
स्फुट् (क्रि.) खिलना।
स्फुट (त्रि.) खिला हुआ। टूट गया। सफेद।
स्फुटा (स्त्री.) साँप का फन।
स्फुटन (न.) फटाव। विदलीभाव।
स्फुर् (क्रि.) फुरना।
स्फुरण (न.) थोड़ा थोड़ा हिलना।
स्फुर्ज् (क्रि.) बादल की गड़गड़ाहट जैसा शब्द करना।
स्फुल (न.) तम्बू।
स्फुलिङ्ग (पुं. स्त्री.) आग की चिनगारी।
स्फूर्जथु (पुं.) वज्र के गिरने का शब्द।
स्फूर्ति (स्त्री.) फुरना। फुर्ती। खिलना। प्रतिभा।
स्फूर्तिमत् (पुं.) पाशुपत नामी शिवभक्त। (त्रि.) फुर्तीला। खिला हुआ। प्रतिभाशाली।
स्फेयस् (त्रि.) अतिप्रचुर। बहुत ही।
स्फोट (पुं.) फोड़ा।
स्फोटक (पुं.) फोड़ा। फोड़ने वाला।
स्फोटन (न.) विदारण। विकाशन। (स्त्री.) मणि में छेद करने का औजार।
स्फोटायन (पुं.) व्याकरणवेत्ता एक मुनि विशेष।
स्फ्य (न.) खड्ग के आकार का यज्ञीय काष्ठ।
स्म (अव्य.) बीत गया। पाद को पूरा करना।
स्मय (पुं.) अहङ्कार। अभिमान। आश्चर्य।
स्मर (पुं.) कामदेव। (क्रि.) याद करना।
स्मरगृह (न.) स्मरमन्दिर। योनि।
स्मरण (न.) स्मृति। याददाश्त।
स्मरदशा (स्त्री.) कामियों की दस दशा विशेष।
स्मरहर (पुं.) महादेव।
स्मराङ्कुश (पुं.) नख। नाखून।
स्मरासव (पुं.) मद्य विशेष।
स्मार्त (त्रि.) शैव, वैष्णव आदि से भिन्न पाँचों देवताओं के उपासक सम्प्रदाय विशेष के मानने वाले। स्मृति शास्त्र पढ़ने वाला। स्मृति में कहा हुआ सिद्धान्त।
स्मि (क्रि.) हैरान होना।
स्मित (न.) मुस्कराना। थोड़ा सा हँसना।
स्मृ (क्रि.) याद करना।
स्मृत (त्रि.) याद किया हुआ।
स्मृति (त्रि.) स्मरणशक्ति। याददाश्त। मनु आदि महर्षि प्रोक्त धर्मोपदेशक शास्त्र।
स्मृतिहेतु (पुं.) संस्कार। वासना रूप गुण विशेष।
स्मेर (त्रि.) खिला हुआ।
स्यद (पुं.) वेग। जोर।
स्यन्द् (क्रि.) बहना।
स्यन्द (पुं.) बहाव। चूना।
स्यन्दन (न.) बहना। जल। रथ। (पुं.) तिनिस का पेड़।
स्यन्दनारोह (पुं.) रथ पर चढ़ कर लड़ाई लड़ने वाला।
स्यन्दिन् (त्रि.) प्रस्रवी। बहने वाला।

स्यत्र (त्रि.) बहा हुआ।
स्यम् (क्रि.) शब्द करना।
स्यमन्तक (पुं.) एक विशेषमणि जो सत्राजित् को तप करने पर सूर्य से मिली थी और जिसकी चोरी श्रीकृष्ण को लगी थी, फिर अन्त में श्रीकृष्ण के पास भी थी, उसमें कई भर सोना नित्य उत्पन्न होता था और उसमें बड़ा गुण यह था कि जहाँ वह रहती वहाँ अकाल नहीं पड़ता था।
स्यूत (त्रि.) सिंया गया। (पुं.) कपड़ा।
स्यूति (स्त्री.) सींवन। सिलाई।
स्रंसन (न.) नीचे गिरना।
स्रंसिन् (त्रि.) नीचे गिरने वाला।
स्रग्वत् (त्रि.) माला वाला। माला धारण किये हुए। (अ.) माला के समान।
स्रज् (स्त्री.) माला।
स्रंस् (क्रि.) गिरना।
स्रम्भ (क्रि.) विश्वास करना।
स्रव, **स्राव** (पुं.) बहना। झरना।
स्रवण (न.) मूत्र। जल। पसीना।
स्रवन्त (स्त्री.) नदी। एक औषध। (त्रि.) बहने वाला।
स्रष्टृ (पुं.) ब्रह्मा। शिव। (त्रि.) सृष्टिकर्त्ता।
स्रस्त (पुं.) च्युत। पतित। गिरा हुआ।
स्तस्तर (पुं.) आसन।
स्राक् (क्रि.) झट। त्वरित।
स्रु (क्रि.) जाना।
स्रुघ्न (पुं.) एक देश।
स्रुच् (स्त्री.) स्रुवा।
स्रुत (त्रि.) बहा हुआ। गया। (स्त्री.) हींग के वृक्ष की पत्ती।
स्रुव (पुं.) खैर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञीय पात्र विशेष जिससे घी होमा जाता है।
स्रोत (न.) सोता। प्रवाह।
स्रोतस् (न.) वेग से पानी का निकास। वीर्य्य। रेतस्।
स्रोतस्वत् (त्रि.) झरना। (स्त्री.) नदी।
स्रोतस्विनी (स्त्री.) नदी। (त्रि.) प्रवाह वाली।
स्रोतोञ्जन (न.) सौवीर देश का काजल। सुरमा।
स्रोतोवहा (स्त्री.) नदी।
स्व (न.) धन। (पुं.) आत्मा। ज्ञाति। (त्रि.) अपना।
स्वकर्मन् (न.) अपना काम।
स्वकीय (त्रि.) अपना।
स्वगत (त्रि.) मनोगत। मन की बात।
स्वच्छ (त्रि.) बहुत निर्मल। (पुं.) मोती। स्फटिक।
स्वच्छन्द (त्रि.) स्वाधीन। स्वतंत्र।
स्वच्छमणि (पुं.) बिल्लौर।
स्वज (न.) रुधिर। लोहू। (पुं.) पुत्र। (त्रि.) अपने से उत्पन्न हुआ।
स्वजन (पुं.) ज्ञाति। जात। अपने लोग।
स्वतन्त्र (त्रि.) स्वाधीन।
स्वतस् (अव्य.) आपही।
स्वतो (न.) किसी पदार्थ पर अपना अधिकार।
स्वधर्म (पुं.) वेदादि शास्त्र विहित अपना कर्म। अधःपात से बचाने वाला कार्य।
स्वधा (अव्य.) पितरों के उद्देश्य से हवि का देना।
स्वधाप्रिय (पुं.) काला तिल।
स्वधाभुज् (पुं.) पितृगण। देवता।
स्वधिति, **स्वधिती** (स्त्री.) कुठार।
स्वन् (क्रि.) शब्द करना।
स्वन (पुं.) शब्द।
स्वनित (त्रि.) शब्दित।
स्वपन (न.) शयन। सोना। नींद।
स्वप्न (पुं.) नींद। सपना।
स्वभाव (पुं.) निज शील।
स्वभावोक्ति (स्त्री.) अपने स्वभाव का कथन।
स्वभू (पुं.) ब्रह्मा। विष्णु। शिव जी। कामदेव।
स्वयंवर (पुं.) विवाह की एक पद्धति विशेष, जिसमें कन्या अपनी इच्छा के अनुसार वर को पसन्द कर स्वीकार करती है।
स्वयंकृत (पुं.) बनावटी।
स्वयंदत्त (पुं.) वह लड़का जिसने अपने को अपने आप ही दिया हो।
स्वयम् (अव्य.) आप ही आप।
स्वर (अव्य.) परलोक। अच्छा। देवताओं के रहने

का स्थान। (पुं.) अक्षर के उच्चारण का यत्न विशेष। गाने की आवाज।

स्वरभङ्ग (पुं.) एक प्रकार का रोग। गले की आवाज बैठ जाना।

स्वरस (पुं.) अपना अभिप्राय। वाक्य की रचना विशेष। किसी गीली वस्तु को कूट कर निचोड़ा गया रस।

स्वराज् (पुं.) ईश्वर। वेद का छन्द विशेष।

स्वरापगा (स्त्री.) गङ्गा।

स्वरित (त्रि.) स्वर वाला।

स्वरु (पुं.) वज्र। यज्ञीय स्तम्भ का टुकड़ा। तीर। सूर्य्य की किरण। बिच्छू भेद।

स्वरुचि (त्रि.) स्वातन्त्र्य। स्वतन्त्रता।

स्वरूप (न.) अपना पदार्थ। (पुं.) जानने वाला। पण्डित। (त्रि.) मनोहर।

स्वरूपसम्बन्ध (पुं.) अपने रूप का सम्बन्ध।

स्वरोदय (पुं.) एक विद्या जिससे नाक की श्वास द्वारा भावी शुभाशुभ का ज्ञान हो जाता है।

स्वर्ग (पुं.) बड़े सुख का स्थान। देवताओं का लोक।

स्वर्गनाथ (पुं.) इन्द्र।

स्वर्गवधू (स्त्री.) स्वर्गलोक की स्त्रियाँ इन्द्राणी आदि।

स्वर्गाचल (स्त्री.) सुमेरू पर्वत।

स्वर्गिन् (पुं.) देवता (त्रि.) स्वर्गवासी।

स्वर्गौकस् (पुं.) देवता।

स्वर्ण (न.) कांचन। सोना। धतूरा। नागकेसर।

स्वर्णकाय (पुं.) गरुड़।

स्वर्णकार (पुं.) सुनार।

स्वर्णदी (स्त्री.) गङ्गा।

स्वर्भानु (पुं.) राहु।

स्वर्लोक (पुं.) स्वर्ग।

स्वर्वापी (स्त्री.) गङ्गा।

स्वर्वेश्या(स्त्री.) मेनका आदि अप्सरायें।

स्वल्प (त्रि.) बहुत थोड़ा। क्षुद्र।

स्ववासिनी (स्त्री.) पिता के घर में चिर काल तक रहने वाली स्त्री।

स्वसृ (स्त्री.) बहिन।

स्वस्ति (अव्य.) क्षेम। कल्याण। आशीर्वाद।

स्वस्तिक (पुं. न.) कल्याणप्रद। घर विशेष। आसन भेद। द्रव्य विशेष। छः पद का चिह्न विशेष।

स्वस्तिवाचम् (न.) ब्राह्मण द्वारा मङ्गलपाठ।

स्वस्तिवाचनिक (त्रि.) मङ्गलपाठ का साधन। आशीर्वादग्रहण की सामग्री।

स्वस्त्ययन (न.) शुभ के लिये वेदविहित ग्रह भाग आदि।

स्वस्थ (त्रि.) स्वर्ग में रहने वाला। सुख से रहने वाला।

स्वस्रीय (पुं.) भाञ्जा।

स्वागत (न.) कुशल।

स्वाति } (पुं.स्त्री.) सूर्य्य की एक स्त्री। अश्विनी
स्वाती } से पन्द्रहवाँ नक्षत्र।

स्वाद् (क्रि.) प्रसन्न होना। स्वाद लेना। चाटना।

स्वाद (पुं.) रस का अनुभव। प्रसन्न होना। चाटना।

स्वादु (पुं.) मिठाई। गुड़। (त्रि.) चाहा हुआ। मीठा। मनोहर।

स्वाधीन (त्रि.) स्वतन्त्र।

स्वाधीनपतिका (स्त्री.) नायिका विशेष।

स्वान्त (न.) मन। साहाय्य।

स्वाप (पुं.) सोना। निद्रा। अज्ञान।

स्वापतेय (न.) धन। दौलत।

स्वाभाविक (त्रि.) स्वभाव सिद्ध।

स्वामिन् (त्रि.) अधिपति। ईश्वर। (पुं.) महादेव। राजा। कार्तिकेय। पति। वात्स्यायन मुनि। गरुड़। परमहंस। मालिक। स्त्री का पति।

स्वायम्भुव (पुं.) स्वयम्भू का पुत्र। चौदह में इस नाम का पहिला मनु। (त्रि.) स्वयम्भू सम्बन्धी।

स्वार्थिक (त्रि.) व्याकरण का प्रत्यय विशेष।

स्वाराज् (पुं.) इन्द्र।

स्वाराज्य (न.) इन्द्रत्व।

स्वार्थ (पुं.) अपना अभिप्राय।

स्वारोचिष् (पुं.) दूसरा मनु।

स्वास्थ्यम् (न.) आरोग्य। आराम। सुख।

स्वाहा (स्त्री.) अग्नि की स्त्री। दुर्गा। हवन में आहुतिसूचक वचन।

स्वाहाप्रिय (पुं.) अग्नि।

स्वाहाभुज् (पुं.) देव। देवता।

स्विद् (अव्य.) प्रश्न। पादपूरण।
स्वित्र (त्रि.) पीसने वाला।
स्वीकार (पुं.) मानना।
स्वीय (त्रि.) अपना। (स्त्री.) एक प्रकार की नायिका।
स्वृ (क्रि.) शब्द करना।
स्वेच्छा (स्त्री.) अपनी अभिलाषा।
स्वेच्छामृत्यु (पुं.) जिसका मरना अपनी इच्छा के अनुसार हो, जैसे-"भीष्मपितामह" इन्होंने उत्तरायण आने पर अपनी इच्छानुसार देह-त्याग किया था।
स्वेद (पुं.) पीसना। गर्मी।
स्वेदनी (स्त्री.) तवा। कढ़ाई। भट्ठी।
स्वैर (न.) अपनी इच्छा। (त्रि.) अपनी इच्छा वाला।
स्वैरिन् (त्रि.) स्वेच्छाचारी। स्वतन्त्र। (स्त्री.) व्यभिचारिणी स्त्री।
स्वोपार्जित (त्रि.) अपना कमाया हुआ।
स्वोवंशीय (न.) सम्पदा।

ह

ह (पुं.) शिव। जल। आकाश। रक्त। शून्य। ध्यान। शुभत्व। स्वर्ग। सुख। डर। ज्ञान। चन्द्रमा। विष्णु। युद्ध। अश्व। अभिमान। वैद्य। कारण। अभिप्रेत। (नं.) परमात्मन्। प्रसन्नता। अस्त्र विशेष। रत्न की चमक। वंशी का नाद। (अव्य.) स्पष्ट। प्रसिद्ध।
हंस (पुं.) मानसरोवरवासी पक्षी विशेष। परब्रह्म। जीवात्मन्। सूर्य्य। शिव। विष्णु। कामदेव। सन्यासी विशेष। पवित्र मनुष्य। पर्वत। स्पर्द्धा। भैंसा।
हंसक (पुं.) पाँव का कड़ा या पायजेब। नूपुर।
हंसगामिनी (स्त्री.) ब्रह्माणी। एक शक्ति।
हंसनादिनी (स्त्री.) पतली कमर वाली स्त्री विशेष।
हंसमाला (स्त्री.) हंसों की कतार।
हंसरथ (पुं.) ब्रह्मा।
हंसारूढ़ (पुं.) ब्रह्मा। (स्त्री.) ब्रह्माणी।
हंसी (स्त्री.) मादा हंस। बाइस अक्षरों के पाद वाला छन्द विशेष।
हे हो (अव्य.) सम्बोधन। प्रश्न।
हञ्जे, हाञ्जा (अव्य.) नाटक में चेटि का सम्बोधन।
हट् (क्रि.) चमकना।
हट्ट (पुं.) बाजार। मण्डी। गञ्ज।
हट्टचौरक (पुं.) खुले मैदान चोरी करने वाला।
हठ (पुं.) दुराग्रह।
हठयोग (पुं.) योग का भेद।
हड्ड (न.) हड्डी। अस्थि। एक जाति।
हण्डा (स्त्री.) मिट्टी का बड़ा पात्र। नाटक में नीच का सम्बोधन।
हत (त्रि.) मारा गया। आशा से मरा हुआ। नष्ट। बिगड़ा।
हतक (त्रि.) गया गुजरा।
हताश (त्रि.) आशारहित। दयारहित। चुगलखोर।
हति (स्त्री.) मारना। गुणना।
हत्या (स्त्री.) मारना। वध।
हद् (क्रि.) मल त्यागना।
हन् (क्रि.) मार डालना। जाना।
हनुमत्, हनूमत् (पुं.) ठोडी वाला। अञ्जनीसुत। महावीर। हनुमान्।
हन्त (अव्य.) हर्ष। दया। विषाद। पीड़ा। किसी वाक्य का आरम्भ। खेद।
हन्तकार (पुं.) अतिथि को देने योग्य अन्न। श्राद्ध के दिन पाँच प्रकार का निकाला हुआ अन्न। हन्त शब्द का प्रयोग।
हन्तृ (त्रि.) मारने वाला।
हन्न (त्रि.) जिसने मल त्याग दिया हो।
हम्भा, हम्मा (त्रि.) गौओं की ध्वनि।
हय् (क्रि.) जाना।
हय (पुं.) घोड़ा।
हयग्रीव (पुं.) विष्णु का अवतार विशेष। एक दैत्य।
हर (पुं.) रुद्र। अग्नि। गधा। बाँटने वाला। हरण। विभाजन।
हरण (न.) दूसरे स्थान पर ले जाना। बँटवारा। यौतुकादि में देने योग्य धन।
हरगौरी (स्त्री.) शिव-पार्वती।

हरतेजस् (न.) महादेव का तेज। पारा।
हरशेखरा (स्त्री.) गङ्गा।
हरि (पुं.) विष्णु। सिंह। सर्प। वानर। भेक। चन्द्र। सूर्य्य। वायु। घोड़ा। यमराज। महादेव। ब्रह्मा। ब्रह्मा। किरण। नौ वर्षों में से एक। मोर। कोइल। हंस। तोता। भर्तृहरि नामक वाक्यप्रदीप नामक ग्रन्थ का बनाने वाला एक पण्डित। इन्द्र। पीला। हरा रङ्ग।
हरिकेश (पुं.) एक यक्ष।
हरिचन्दन (न.) चन्दन विशेष। इन्द्र और विष्णु को प्रिय हरे रङ्ग का चन्द "यह खास मलयाचल में होता और बहुत ही सुगन्धित होता है"। केसर।
हरिण (पुं.) हिरन। शिव। विष्णु। हंस। सफेद रङ्ग।
हरिणहृदय (त्रि.) भीरु। ड़रपोंक।
हरिणाक्षी (स्त्री.) हिरन के समान नेत्रों वाली स्त्री। गन्धवाला द्रव्य।
हरिणाङ्क (पुं.) चन्द्रमा। जिसकी गोद में हरिण हो। मृगलाञ्छन।
हरित (पुं.) सूर्य्य का घोड़ा। मूँग। शेर। सूर्य्य। विष्णु।
हरिताल (न.) एक उपधातु का नाम। प्राचीन काल में अशुद्ध की शुद्धि करने के लिये यही लगा दी जाती थी।
हरितालिका (स्त्री.) भाद्र मास की शुल्का तृतीया। पार्वती का किया हुआ व्रत विशेष।
हरिद्वार (न.) इस नाम का एक तीर्थ गङ्गा जी का आर्यावर्त में आने का मुहाबा। गङ्गाद्वार।
हरिनामन् (न.) हरि का नाम। (पुं.) मूँग।
हरिनेत्र (न.) विष्णु की आँख। सफेद कमल। (पुं.) उल्लू।
हरिन्मणि (पुं.) पन्ना।
हरिभक्त (त्रि.) विष्णु का भक्त।
हरिभुज् (पुं.) सर्प।
हरिवंश (पुं.) एक पुराण-इसके विधिपूर्वक सुनने से पुत्रहीन को पुत्र होता है।
हरिवर्ष (न.) जम्बुद्वीप के नौ वर्षों में से एक।
हरिवासर (न.) एकादशी का दिन। आषाढ़ भाद्रपद और कार्तिक में क्रमशः अनुराधा, श्रवण और रेवती नक्षत्रों के प्रथम द्वितीय और चतुर्थ चरणों से युक्त द्वा दशी। इन द्वादशियों में भूल से पारण करने वाले का बारह महीने का फल नष्ट हो जाता है।
हरिवाहन (न.) गरुड़। इन्द्र का वाहन। ऐरावत।
हरिबीज (न.) हड़ताल।
हरिशयन (न.) आषाढ़ शुल्का एकादशी से कार्तिक शुल्का १२शी तक। चार मास का समय। आषाढ़ी। एकादशी का व्रत।
हरश्चिन्द्र (पुं.) सूर्य्यवंशीय। अयोध्या के एक राजा का नाम, जिसने सत्य पालन के लिये अनेक प्रकार के कष्ट सहे थे।
हरिसङ्कीर्तन (न.) हरि का नाम लेना।
हरिहय (पुं.) इन्द्र।
हरिहर (पुं.) मूर्ति विशेष जिसका आधा अङ्ग शिव का और आधा विष्णु का है।
हरिहरक्षेत्र (न.) पटना के उत्तर का (गङ्गा और गण्डकी के सङ्गम वाला) एक तीर्थ विशेष।
हरीतकी (स्त्री.) हर्र या हर्र का पेड़।
हर्तृ (त्रि.) चोर। (पुं.) सूर्य्य।
हर्म्य (न.) महल। राजप्रसाद।
हर्य्यक्ष (पुं.) पीली आँख वाला। शेर। कुबेर।
हर्य्यश्व (पुं.) इन्द्र। प्राचीनबर्हि राजा के अयोनिज दश पुत्र।
हर्ष (पुं.) सुख।
हर्षण (पुं.) विष्कम्भ आदि में चौदहवाँ योग। (त्रि.) हर्षप्रद। (न.) सुखी करने वाला।
हर्षमाण (पुं.) श्राद्ध का देवता विशेष। (त्रि.) प्रसन्नचित्त।
हर्षिणी (स्त्री.) भाँग। (त्रि.) प्रसन्न करने वाली।
हर्षित (त्रि.) प्रसन्न हुआ।
हल् (क्रि.) खींचना।
हल (न.) लाङ्गल। हल।
हलधर (पुं.) बलराम। किसान।
हलभूति (स्त्री.) खेती बारी। किसानी।
हला (स्त्री.) सखी। पृथिवी। जल।
हलायुध (पुं.) बलराम। किसान।

हलाहल (पुं.) उग्र विष जो देव-दैत्यों के समुद्र मथने से पहले पहल निकला था और शिव जी ने पिया था, पीते समय अंगुलियों की सन्धि से चुई बूँदें एक, दो, आधी खा लेने वाले जीव साँप, बीछू, बर्र आदि हो गये। संखिया। बचनाग (सींगिया)।

हलिन् (पुं.) बलराम। किसान।

हल्य (त्रि.) जोता हुआ खेत। हलसम्बन्धी।

हव (पुं.) यज्ञ। आज्ञा। होम। बुलउआ।

हवन (न.) होम।

हवनी (स्त्री.) यज्ञकुण्ड।

हवनीय (त्रि.) होम का पदार्थ।

हविष्यान्न (न.) पवित्र अन्न जो अग्नि में हवन किया जा सकता है और व्रत आदि में खाने योग्य हो। द्रव्य विशेष।

हविस् (न.) होम योग्य प्रत्येक पदार्थ।

हव्य (न.) देवताओं के निमित्त। होम करने योग्य द्रव्य।

हव्यवाह (पुं.) अग्नि। जो हवन की चीजें जिनके नाम दी जायँ उन्हें पहुँचा दे।

हस् (क्रि.) हँसना।

हस
हास } (पुं.) हँसना।

हसन (न.) हास्य। हँसना।

हसन्ती (स्त्री.) अ ीठी। (क्रि.) हँसने वाली।

हसित (न.) हँसना। (त्रि.) हँसा हुआ। खिला हुआ।

हस्त (पुं. स्त्री.) हाथ। हाथी की सूँड़। अश्विनी से तेरहवाँ तारा।

हस्तामलक (न.) सहज ही में देखने योग्य पदार्थ। जैसे हाथ में रक्खा हुआ आँवला सब पूरा-पूरा सहज में दीखता है। वेदान्त का ग्रन्थ विशेष। करामलक।

हस्तिक (न.) हाथियों का समूह।

हस्तिदन्त (पुं.) हाथी का दाँत। घर की दीवाल में गाड़ी गयी कील।

हस्तिन् (पुं.) गज। हाथी। चन्द्रवंशी एक राजा।

हस्तिनापुर (न.) नगर। दिल्ली। पाण्डवों की राजधानी।

हस्तिनी (स्त्री.) हथिनी। स्त्री विशेष।

हस्तिपः (पुं.) महावत। हाथीवान्।

हस्तिमद (पुं.) हाथी का मद। एक प्रकार का गन्ध वाला द्रव्य।

हस्त्यारोह (पुं.) महावत। हाथीवान्।

हा (क्रि.) छोड़ना। त्यागना। जाना।

हा (अव्य.) विषाद। शोक। पीड़ा। निन्दा।

हाटक (न.) एक देश। उस देश में उत्पन्न सोना। धतूरा। (त्रि.) सुवर्ण का बना हुआ।

हानि (स्त्री.) क्षति। नुकसान।

हायन (पुं.) धान। वर्ष। (स्त्री.) आग की लाट।

हार (पुं.) मोतियों की माला। बाँटने वाला। विभाजक।

हारक (पुं.) चोर। धूर्त्त। खच्चर। भाजक अङ्क। (त्रि.) चुराने वाला।

हारावली (स्त्री.) मोतियों की माला।

हारिद्र (त्रि.) हल्दी से रङ्गा हुआ। (पुं.) कदम्ब का पेड़।

हारिन् (त्रि.) चुराने वाला। हार वाला। मनोहारी।

हारीत (पुं.) एक मुनि। धर्म्मशास्त्र बनाने वाला। एक पक्षी। धूर्त्त।

हार्द (न.) स्नेह। प्रेम। (त्रि.) हृदय में उत्पन्न या मन में जाना हुआ।

हार्य्य (पुं.) बहेड़ा। (त्रि.) ले जाने योग्य।

हाल (पुं.) बलराम। हल।

हाला (स्त्री.) मद। तालरस की मदिरा।

हालाहल (पुं.न.) उग्र विष विशेष। कीड़ा विशेष (स्त्री.)। मदिरा। (देखो हलाहल)।

हालिक (त्रि.) किसान। हलका।

हाव (पुं.) आह्वान। स्त्रियों की शृङ्गार भाव से उत्पन्न चेष्टा।

हास्तिक (न.) हाथी का समूह।

हास्तिन (न.) हस्तिनापुर। दिल्ली।

हास्य (न.) हँसना। अलङ्कार का रस विशेष।

हाहाकार (पुं.) शोक का शब्द (हाय हाय)।

हि (क्रि.) बढ़ना। जाना।

हि (अव्य.) हेतु। कारण। निश्चय। विशेष। प्रश्न। क्योंकि। शोक। श्लोक का पूरक।

हिंसक (पुं.) भेड़िया आदि हिंसक पशु। शत्रु। (त्रि.) हिंसा करने वाले।

हिंसा (स्त्री.) वध। किसी को प्राणों से मारना या चोरी करना सताना आदि।

हिंस्र (त्रि.) मारने वाला। डरावना।

हिक्क (क्रि.) शब्द करना। कूकना। प्राण लेना। मार डालना।

हिक्का (स्त्री.) हिचकी। एक रोग हीक (बराड़ी)।

हिङ्गु (न.) हींग।

हिड् (क्रि.) जाना। घूमना।

हिडिम्ब (पुं.) एक राक्षस, जिसे भीम ने मारा था।

हिडिम्बा (स्त्री.) ह्रिडिम्ब राक्षस की बहिन, जिसने भीम के साथ विवाह किया और उसके पेट से घटोत्कच की उत्पत्ति हुई थी, इस घटोत्कच ने महाभारत के युद्ध में बड़ी वीरता दिखलायी थी।

हित (त्रि.) बीत गया। हितकारी। भलाई।

हितकारिन् (त्रि.) शुभकारक। भलाई करने वाला। हितकारक।

हितैषिन् (त्रि.) हित चाहने वाला।

हितोपदेश (पुं.) भलाई का उपदेश। पं. विष्णुशर्म्मा का रचा हुआ शिक्षाप्रद मनोरंजक एक ग्रंथ।

हिन्दोल (पुं.) झूलन। एक राग विशेष।

हिम (न.) बर्फ। शीतल स्पर्श। (स्त्री.) छोटी इलायची। नागरमोथा। (पुं.) अगहन, पूस का महीना (या हेमन्त)। चन्दन का पेड़। चन्द्रमा। कपूर। (त्रि.) ठण्डा।

हिमकर (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।

हिमगिरि (पुं.) हिमालय पर्वत।

हिमप्रस्थ (पुं.) हिमालय पर्वत।

हिमवत् (पुं.) हिमालय पर्वत।

हिमसंहति (स्त्री.) बर्फ का ढेर।

हिमांशु (पुं.) चन्द्रमा। कपूर।

हिमागम (पुं.) अगहन और पूस दो मास की ऋतु। हेमन्त ऋतु।

हिमाद्रिजा (स्त्री.) पार्वती। गङ्गा।

हिमाद्रितनया (स्त्री.) दुर्गा। पार्वती।

हिमानी (स्त्री.) बर्फ का ढेर।

हिमाराति (पुं.) सूर्य्य। आग। अर्कवृक्ष।

हिमालय (पुं.) भारत की उत्तरी सीमा पर स्थित एक विशाल भूधर का नाम।

हिमाब्ज (न.) ओला। कमल का फूल।

हिरण्मय (त्रि.) सोने का बना हुआ। (न.) नौ वर्षों में से एक। (पुं.) सूर्य्य में रहने वाला परब्रह्म।

हिरण्य (न.) सोना। धतूरा। धन।

हिरण्यकशिपु (पुं.) एक दैत्य, जो कश्यप मुनि का पुत्र और प्रह्लाद का पिता था और जिसे मारने के लिए भगवान् ने श्रीनृसिंह अवतार धारण किया था।

हिरण्यकशिपुहन् (पुं.) हिरण्यकशिपु के मारने वाले, श्रीनरसिंह।

हिरण्यगर्भ (पुं.) ब्रह्मा। शालग्राम शिला विशेष। परमात्मा। एक मात्रा जो त्रिदोष और कफ के कण्ठरोधन करने पर दी जाती है।

हिरण्यवाह / **हिण्यवाहु** } (पुं.) महादेव। शोणनामी एक नद।

हिरण्यरेतस् (पुं.) आग। चित्रक वृक्ष।

हिरण्याक्ष (पुं.) कश्यप का दिति स्त्री से उत्पन्न पुत्र एक बली दैत्य, जिसे मारने को भगवान् ने वाराह अवतार धारण किया था।

हिरुक् (अव्य.) रोकना।

हिल्लोल् (क्रि.) झुलाना।

हिल्लोल (पुं.) तरङ्ग। लहर।

हिव् (क्रि.) प्रसन्न करना।

हिवक (न.) (ज्योतिष में) लग्न से चौथा स्थान।

हिस् (क्रि.) मार डालना। वध करना।

ही (अव्य.) विस्मय। दुःख। विषाद। शोक।

हीन (त्रि.) रहित। अधम। निन्दा के योग्य। नीच।

हीनवादिन् (पुं.) यथार्थ विषय को छोड़ कर विषयान्तरों में बोलने वाला। वादी विशेष।

हीनाङ्ग (त्रि.) न्यून अङ्ग वाला, जैसे-लङ्गड़ा, अन्धा, लुञ्जा।

हरि (न. पुं.) वज्र। हीरा। शिव। साँप। हार। सिंह।

हु (क्रि.) होम करना।

हुड् (क्रि.) इकट्ठा करना।

हुड (पुं.) मेघ। बादल। चोर की रोक को पृथिवी में गड़ी कील विशेष।

हुत (त्रि.) होमा हुआ।

हुतभुज् (पुं.) अग्नि।

हुतवह / **हुताश** (पुं.) आग। चित्रक वृक्ष।

हुति (स्त्री.) होम।

हुम् (अव्य.) स्मरण। प्रश्न। हुक्म। रोक।

हुहु / **हुहू** (पुं.) एक गन्धर्व।

हुङ्कार, (पुं.) अवज्ञा को बताने वाला। एक प्रकार का शब्द। हूँ शब्द।

हूत (त्रि.) बुलाया हुआ।

हूति (स्त्री.) न्योता। बुलावा।

हून / **हूण** (पुं.) म्लेच्छों की जाति।

हूर्च्छन (न.) कुटिलता। विर्धापन।

हृ (क्रि.) ले जाना। चोरी करना। जोरावरी ले जाना।

हृच्छय (पुं.) कामदेव (त्रि.) हृदयशायी। हृदय में सोने वाला।

हृच्छूल (न.) पेट का रोग विशेष।

हृणी (क्रि.) निन्दा करना।

हृणीया (स्त्री.) निन्दा।

हृत्कम्प (पुं.) हृदय का काँपना।

हृत (त्रि.) चुराया गया। स्नानान्तरित।

हृत् (त्रि.) चुराने वाला। (न.) हृदय। मन।

हृदय (न.) मन। वक्षःस्थल।

हृदयग्रन्थि (पुं.) हृदय की गाँठ। ऐंठ बानी। सन्देह। मन का मैल। अविद्या और अज्ञान की गाँठ।

हृदयङ्गम (न.) युक्तियुक्त वाक्य। रोचक वाक्य। (त्रि.) मनोहर। प्रिय वाक्य।

हृदयस्थान (न.) वक्षःस्थल।

हृदयिक (न.) अच्छे चित्त वाला।

हृदयेश (पुं.) मालिक।

हृदावर्त्त (पुं.) घोड़े की छाती पर रोमों का भौंरा।

हृदिका (स्त्री.) कृपाचार्य की माँ।

हृदिस्पृश (त्रि.) हृद्य। मनोहर। दुःखदायी।

हृद्य (न.) दारचीनी। (त्रि.) मनोहर।

हृद्रोग (पुं.) हृदय की एक प्रकार की बीमारी।

हृद्वण्टक (पुं.) जठर। पेट।

हृल्लास (पुं.) हिचकी का रोग।

हृल्लेख (पुं.) ज्ञान। तर्क। तांत्रिक मंत्र विशेष। औत्सुक्य।

हृष् (क्रि.) प्रसन्न होना।

हृषित (त्रि.) प्रसन्न। विस्मित।

हृषीक (न.) चक्षुरादि इन्द्रिय। ज्ञान का साधन।

हृषीकेश (पुं.) विष्णु।

हृष्ट (त्रि.) हैरान। प्रसन्न।

हृष्टमानस (त्रि.) प्रसन्न चित्त वाला।

हृष्टरोमन् (त्रि.) जिसके रोएँ खड़े हो गये हैं। प्रसन्नचित्त।

हृष्टि (स्त्री.) आनन्द। हर्ष।

हे (अव्य.) सम्बोधन।

हेड् (क्रि.) अनादर करना।

हेति (स्त्री.) अस्त्र। वाण। आग की लाट। सूर्य्य की किरन। हर प्रकार का तेज। फल।

हेतु (पुं.) कारण। फल।

हेतुता (स्त्री.) कारणपन।

हेतुमत् (त्रि.) हेतु वाला। कारण भरा।

हेत्वाभास (पुं.) जो कारण जैसा जान पड़े। दुष्टहेतु।

हेम (न.) सोना। धतूरा। १ माशे की तौल। (पुं.) काले रङ्ग का घोड़ा। वुध।

हेमकार (पुं.) सुनार।

हेमकूट (पुं.) किम्पुरुषवर्ष का एक पहाड़।

हेमन् (न.) सोना। धतूरा। नागकेसर। बर्फ।

हेमन्त (पुं. न.) शीतऋतु।

हेममालिन् (पुं.) सूर्य्य।

हेमाङ्ग (पुं.) गरुड़। सिंह। सुमेरु पर्वत। ब्रह्म। चम्पा का पेड़। विष्णु। (त्रि.) सोने का रङ्ग जैसा।

हेमाद्रि (पुं.) सोने का पर्वत। सुमेरु पर्वत। दक्षिण के किसी राजा का एक भूतपूर्व मंत्री जिसके रचे (कई खण्ड में) दानखण्ड, श्राद्धखण्ड आदि ग्रन्थ बड़े प्रामाणिक माने जाते हैं।

हेय (त्रि.) त्याज्य। छोड़ने योग्य।
हेरम्ब (पुं.) गणेश।
हेरम्बजननी (स्त्री.) दुर्गा। पार्वती।
हेलन (न.) अवज्ञा। निरादर। अपमान।
हेला (स्त्री.) अपमान करना। श्रृङ्गार भाव से उत्पन्न स्त्रियों की चेष्टा विशेष।
हेष् (क्रि.) घोड़ा का शब्द। हिनहिन।
हेषा (स्त्री.) हिनकार।
हेहै (अव्य.) सम्बोधन। बुलाना।
हैतुक (त्रि.) युक्तियुक्त वचन कहने वाला।
हैम (त्रि.) सोने का विकार। सोने का बना हुआ।
हैमन (पुं.) हेमन्त काल। (त्रि.) हेमन्त ऋतु में उत्पन्न।
हैमवत (न.) हिमालय का। भारतवर्ष। एक प्रकार का विष।
हैमवती (स्त्री.) पार्वती। हर्र।
हैयङ्गवीन (न.) नवनीत। ताज़ा घी।
हैहय (पुं.) एक देश और वहाँ का राजा। एक वंश जिसमें सहस्रार्जुन हुआ था।
होड (पुं.) नौका विशेष।
होतृ (पुं.) ऋग्वेदज्ञ। (त्रि.) होम करने वाला।
हौत्र (न.) होम की सामग्री। (स्त्री.) प्रशंसा।
होत्रिन् (पुं.) होम करने वाला।
होत्रीय (न.) हविर्गृह। (त्रि.) होम सम्बन्धी।
होम (पुं.) देवयज्ञ।
होमकुण्ड (न.) होम के लिए कुण्ड।
होमधान्य (न.) तिल और जौ।
होमिन् (पुं.) होम करने वाला।
होम्य (त्रि.) होम के उपयोगी घी।
होरा (स्त्री.) ज्योतिष की लग्न विशेष। राशि का आधा भाग। रेखा। लग्नसूचक शास्त्र।
होलका (स्त्री.) तृण आदि से अधपके शमी के धान।
होलाका (स्त्री.) होली का उत्सव।
हु (क्रि.) चोरी करना।
ह्मल् (क्रि.) चलना।
ह्यस् (अव्य.) पिछला दिन।
ह्यस्तन (त्रि.) बीते दिन का हुआ।
ह्रद (पुं.) गहरा तालाब। झील।
ह्रदिनी (स्त्री.) नदी।
ह्रसिष्ठ (त्रि.) बहुत छोटा।
ह्रसिमन् (पुं.) छुटाई।
ह्रसीयस् (त्रि.) बहुत छोटा।
ह्रस्व (न.) एक प्रकार का नाप (त्रि.) छोटा। बौना। (पुं.) एक मात्रा के समय में उच्चारण करने योग्य लघु वर्ण। वामन। (न.) औषध विशेष।
ह्रस्वगर्भ (पुं.) कुश। दर्भ।
ह्रास (पुं.) शब्द। कोलाहल। अवनति। छुटाई। रोक। गलाड। छोटी संख्या। अभाव।
ह्राद् (क्रि.) शब्द करना। गरजना।
ह्राद (पुं.) शब्द। हिरण्यकशिपु का एक पुत्र।
ह्रादिनी (स्त्री.) बिजली। वज्र। नदी।
ह्रिणी (क्रि.) शरमाना। लज्जित होना।
ह्रिणाया (स्त्री.) धिक्कार। तिरस्कार। लज्जा। दया।
ह्री (क्रि.) लजाना।
ह्री (स्त्री.) लज्जा।
ह्रीजित् (त्रि.) लज्जाशील। शर्मीला।
ह्रीण, ह्रीत (त्रि.) लज्जित।
ह्रीवेर (न.) एक प्रकार का गन्धद्रव्य।
हुड्, हूड् (क्रि.) जाना। होड़ बदना।
ह्रेप् (क्रि.) जाना।
ह्रेष् (क्रि.) हिनहिनाना।
ह्रेषा (स्त्री.) घोड़े की हिनहिन बोली।
ह्रौड् (क्रि.) जाना।
ह्रग् (क्रि.) छिपाना।
ह्रत्ति (स्त्री.) प्रसन्नता।
ह्रप् (क्रि.) बोलना। शब्द करना।
ह्रस् (क्रि.) शब्द करना।
ह्लाद् (क्रि.) प्रसन्न होना।
ह्लाद (पुं.) आनन्द। प्रसन्नता।
ह्लादिनी (स्त्री.) बिजली। वज्र। ईश्वर की शक्ति विशेष।
ह्ल् (क्रि.) चलना। हिलना।
ह्वान (न.) बुलावा। न्योता। पुकार। बुलाहट। शब्द।
ह्वे (क्रि.) माँगना। स्पर्द्धा करना। शब्द करना। नाम लेना। होड़ बदना।

परिशिष्ट १

संस्कृत छन्दःशास्त्र

परिचय- संस्कृत छन्दःशास्त्र का सबसे पहला और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पिंगल ऋषिप्रणीत छन्दःशास्त्र है। यह आठ अध्यायों का एक सूत्रग्रंथ है। अग्निपुराण में भी पिंगलपद्धति पर आधारित छन्दःशास्त्र का पूर्ण विवरण है और अनेक ग्रन्थ इसी विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा रचे गये हैं-उदा० श्रुतबोध, वाणीभूषण, वृत्तदर्पण, वृत्तरत्नाकर, वृत्तकौमुदी और छन्दोमंजरी आदि। आगे के पृष्ठों में मुख्यतः छन्दोमंजरी और वृत्तरत्नाकर के आधार पर ही कुछ लिखा गया है। इस परिशिष्ट में वैदिक तथा प्राकृत छन्दों को नहीं रक्खा गया है।

संस्कृत की रचना या तो गद्य में होती है या पद्य में। काव्यरचना प्रायः श्लोकों में होती है। श्लोक या पद्य में चार चरण होते हैं जिन्हें या तो अक्षरों की संख्या से विनियमित किया जाता है अथवा मात्राओं की गिनती से।

पद्य या तो वृत्त होता है अथवा जाति। वृत्त एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में अक्षरों की गिनती और स्थिति के अनुसार निर्धारित किया जाता है। जाति एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में मात्राओं की गिनती के अनुसार निश्चित किया जाता है।

वृत्त तीन प्रकार के होते हैं- (१) **समवृत्त**- जिसमें श्लोक के चारों चरण समान हों। (२) **अर्धसमवृत्त**- जिसमें प्रथम, तृतीय और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण समान हों। (३) और **विषमवृत्त**- जिसके चारो चरण असमान हों।

अक्षर (वर्ण) एक ऐसा शब्द है जो एक साँस में बोला जाय, अर्थात् एक स्वर, इसके साथ चाहे एक व्यंजन हो, चाहे एक से अधिक और चाहे केवल स्वर ही हो।

अक्षर (वर्ण) लघु भी होता है, गुरु भी; जैसा कि उसका स्वर हो-ह्रस्व या दीर्घ। अ इ उ ऋ और लृ ह्रस्व हैं, आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ और औ दीर्घ हैं। परन्तु छन्दःशास्त्र में ह्रस्व स्वर दीर्घ माना जाता है जबकि उसके आगे अनुस्वार या विसर्ग हो, अथवा कोई संयुक्त व्यंजन हो, जैसे कि 'गन्ध' का 'अ' या 'ग'। (प्र, ह्र और ब्र क्र इसके अपवाद हैं। इनके पूर्व का स्वर यद्यपि एक प्रकार की काव्यात्मक छूट के कारण ह्रस्व रह सकता है, उदा० कु० ७।११, या शि० १०।६०; तथापि यहाँ पर समालोचकों ने छन्द को छन्दःशास्त्र के सामान्य नियमों के अनुरूप बनाने के लिए संशोधन भी प्रस्तुत किये हैं)। इसी प्रकार पाद का अन्तिम अक्षर भी छन्द की अपेक्षा के अनुरूप लघु या गुरु माना जा सकता है, वह स्वयं चाहे कुछ ही हो।

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा।।

मात्राओं की संख्या से निर्धारित होने वाले वृत्तों में ह्रस्व स्वर की एक मात्रा होती है, और दीर्घस्वर की दो मात्राएँ।

अक्षरों की संख्या से विनियमित वृत्तों की मापतोल के लिए, छन्दःशास्त्र के लेखकों ने आठ 'गणों' (अक्षरपाद) की एक युक्ति निकाली है। प्रत्येक गण में तीन अक्षर होते हैं, वे तीनों लघु या गुरु होने के कारण एक दूसरे से भिन्न होते हैं। वे गण नीचे लिखे श्लोक में बतलाये गये हैं।

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो,
भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः,
सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः।।
आदिमध्यावसानेषु यरता यान्ति लाघवम्।
भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्।।

प्रतीकाक्षरों में अभिव्यक्त (गुरु ऽ, लघु ।) भिन्न-भिन्न गण निम्न प्रकार से दर्शाये जा सकते हैं :-

ऽ ऽ ऽ मगण
। ऽ ऽ यगण
ऽ । ऽ रगण
। । ऽ सगण
ऽ ऽ । तगण
। ऽ । जगण
ऽ । । भगण
। । । नगण

इसी प्रकार 'ल' लघु तथा 'ग' गुरु को प्रकट करता है।

विशेष- प्रत्येक चरण के अक्षरों (वर्णों) की गिनती के अनुसार संस्कृत के छन्दःशास्त्रियों ने वृत्तों का वर्गीकरण किया है। इस प्रकार वे 'समवृत्तों' को छब्बीस श्रेणियों में रखते हैं जैसे कि समवृत्तों के प्रत्येक चरण में अक्षरों की संख्या एक से लेकर छब्बीस तक पृथक्-पृथक् हो सकती है। इनमें से प्रत्येक श्रेणी में लघु और गुरु की पृथक्-पृथक् भिन्न-भिन्न स्थिति होने के कारण असंख्य वृत्तों की संभावना हो जाती है। उदाहरणतः छः अक्षरों के प्रत्येक चरण वाली श्रेणी में, (अक्षर चाहे लघु हों या गुरु) संभावित संख्या २ × २ × २ × २ × २ × २ या $२^{६}$=६४ होती है, परन्तु प्रयोग में छः वृत्त भी नहीं आते। यही बात छब्बीस अक्षर वाली श्रेणी की है। वहाँ भी वृत्तों की संभावित संख्या $२^{२६}$ या ८७१०८८६४ होती है। परन्तु यदि हम अर्धसमवृत्त या विषमवृत्तों की बात देखें तो वहाँ तो संभावित वृत्तों की विविधता अनन्त है। पिंगल, लीलावती और वृत्तरत्नाकर के अंतिम अध्याय में संभावित विविधताओं की संख्या, उनका स्थान, या उनकी नियमित गणना में किसी एक छंद विशेष की निश्चित जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्देश दिये गए हैं। संभावित वृत्तों के इस विशाल समुदाय की तुलना में कवियों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले वृत्तों की विविधता नगण्य है। परन्तु यह नगण्य संख्या भी इतनी अधिक है कि इस परिशिष्ट में नहीं रक्खी जा सकती। अतः हम यहाँ निम्न क्रम में केवल उन्हीं वृत्तों का वर्णन करेंगे जो बहुत प्रयुक्त किये जाते हैं अथवा जिनका उल्लेख करना आवश्यक है।

अनुभाग (क) समवृत्त
अनुभाग (ख) अर्धसमवृत्त
अनुभाग (ग) विषमवृत्त
अनुभाग (घ) जाति आदि

नोट- निम्नांकित परिभाषाओं में गणों का प्रतिनिधित्व करने वाले भ म स और ल ग आदि वर्णों के स्वर का बहुधा वृत्त की अपेक्षा के कारण लोप कर दिया जाता है- उदा० 'म्रभ्न' प्रकट करता है म र भ न को, इसी प्रकार 'म्तो' दर्शाता है म त को। पहली पंक्ति में हमने वृत्त की परिभाषा दी है, दूसरी पंक्ति में गणक्रम और यति-विराम अर्थात् श्लोक या चरण का सस्वर पाठ करने में जहाँ रुकना होता है और जो कि परिभाषा में करणकारक द्वारा संकेतित किया गया है (प्रकोष्ठ में अंग्रेजी अंकों द्वारा) प्रकट की जाती है, फिर तीसरी पंक्ति में उदाहरण (इनमें से अधिकांश माघ, भारवि, कालिदास और दंडी की रचनाओं से लिए गए हैं)।

चार वर्णों के चरण वाले वृत्त

(प्रतिष्ठा)

कन्या

परि० ग्मौ चेत्कन्या।
गण० ग, म
उदा० भास्वत्कन्या सैका धन्या।
यस्याः कूले कृष्णोऽखेलत्।।

पाँच वर्णों के चरण वाले वृत्त

(सुप्रतिष्ठा)

पंक्ति

परि० भूमौ गिति पंक्तिः
गण० भ, ग, ग
उदा० कृष्ण सनाथा तर्णकपंक्तिः।
यामुनकच्छे चारु चचार।।

छः वर्णों के चरण वाले वृत्त

गायत्री

(१) तनुमध्यमा

परि० त्यौ चेत्तनुमध्यमा।
गण० त, य।
उदा० मूर्तिर्मुरशत्रोरत्यद्भुतरूपा।
आस्तां मम चित्ते नित्यं **तनुमध्या**।।

(२) **विद्युल्लेखा** ('वाणी' भी कहते हैं)

परि० विद्युल्लेखा मो मः।

गण० म, म (३, ३)।

उदा० श्रीदीप्ती ह्रीकीर्ती धीनीती गीः प्रीती।
एधेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे।।
काव्य० ३।८६।

(३) शशिवदना

परि० शशिवदना न्यौ।

गण० न, य।

उदा० **शशिवदनानां** व्रजतरुणीनाम्।
अधरसुधोर्मि मधुरिपुरैच्छत्।

(४) सोमराजी

परि० द्विया सोमराजी।

गण० य, य (२. ४.)।

उदा० **हरे सोमराजी**- समा ते यशः श्रीः।
जगन्मण्डलस्य छिनत्त्यन्धकारम्।।

सात वर्णों के चरण वाले वृत्त

(उष्णिक्)

(१) कुमारललिता

परि० कुमारललिता ज्सूगाः।

गण० ज, स, ग (३. ४.)।

उदा० मुरारितनुवल्ली **कुमारललिता** सा।
व्रजैणनयनानां ततान मुदमुच्चैः।।

(२) मदलेखा

परि० मसौ स्यान्मदलेखा।

गण० म, स, ग (३. ४.)।

उदा० रङ्गे बाहुविरुग्णाद् दन्तीन्द्रान्म**दलेखा**।
लग्नाभून्मुरशत्रौ कस्तूरीरसचर्चा।

(३) मधुमती

परि० ननगि मधुमति।

गण० न, न, ग (५. २.)।

उदा० रविदुहितृतटे नवकुसुमततिः।
व्यधित **मधुमती** मधुमथनमुदम्।।

आठ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अनुष्टुभ्)

(१) अनुष्टुभ्

(इसे 'श्लोक' भी कहते हैं)

इस छन्द के अनेक भेद हैं। परन्तु जिसका सबसे अधिक प्रयोग होता है उसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं, मात्रायें सबकी भिन्न- भिन्न। इस प्रकार प्रत्येक चरण का पाँचवाँ वर्ण लघु, छटा दीर्घ, तथा सातवाँ वर्ण (प्रथम, तृतीय चरण का) दीर्घ, एवं (द्वितीय तथा चतुर्थचरण का) ह्रस्व होता है।

श्लोक षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।

उदा० वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।
।रघु०१।१।।

(२) गजगति

परि० नभलगा गजगतिः।

गण० न, भ, ल, ग (४. ४.)।

उदा० रविसुतापरिसरे विहरतो दृशि हरेः।
व्रजवधूगजगतिर्मुदमलं व्यतनुत।।

(३) प्रमाणिका

परि० प्रमाणिका जरौ लगौ।

गण० ज, र, ल, ग (४. ४.)।

उदा० पुनातु भक्तिरच्युता सदा च्युताङ्घ्रिपद्मयोः।
श्रुतिस्मृति**प्रमाणिका** भवाम्बुराशितारिका।।

(४) माणवक

परि० भात्तलगा माणवकम्।

गण० भ, त, ल, ग, (४. ४.)।

उदा० चंचलचूडं चपलैर्वत्सकुलैः केलिपरम्।
ध्याय सखे स्मेरमुखं नन्दसुतं **माणवकम्**।।

(५) विद्युन्माला

परि० मो मो गो गो विद्युन्माला।

गण० म, म, ग, ग, (४. ४.)।

उदा० वासोवल्ली **विद्युन्माला** वर्हश्रेणी शक्रश्चापः।
यस्मिन्नास्तां तापोच्छित्यै गोमध्यस्थः कृष्णाम्भोदः।।

(६) समानिका

परि० ग्लौ रजौ समानिका तु।

गण० ग, ल, र, ज, (४. ४.)।

उदा० यस्य कृष्णपादपद्ममस्ति हृत्-तडागसद्म।
धीः **समानिका** परेण नोचितात्र मत्सरेण।।

नौ वर्णों के चरण वाले वृत्त
(बृहती)
(१) भुजगशिशुभृता

परि० भुजगशिशुभृता नौ मः।

गण० न, न, म, (७. २.)

उदा० ह्रदतटनिकटक्षौणी भुजगशिशुभृता याऽऽसीत्।
मुररिपुदलिते नागे व्रजजनसुखदा साऽभूत्।।

(२) भुजङ्गसङ्गता

परि० संजरैर्भुजङ्गसङ्गता।

गण० स, ज, र, (३. ६.)।

उदा० तरला तरङ्गरिङ्गितैर्यमुना भुजङ्गसङ्गता।
कथमेति वत्सचारकश्चपलः सदैव तां हरिः।।

(३) मणिमध्य

परि० स्यान्मणिमध्यं चेद्भामसाः।

गण० भ, म, स, (५. ४.)।

उदा० कालियभोगाभोगगतस्तन्मणिमध्यस्फीतरुचा।
चित्रपदाभो नन्दसुतश्चारु ननर्त स्मेरमुखः।।

दस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(पङ्क्ति)
(१) त्वरितगति

परि० त्वरितगतिश्च नजनगैः।

गण० न, ज, न, ग, (५. ५.)।

उदा० त्वरितगतिर्व्रजयुवतिस्तरणिसुता विपिनगता।
मुररिपुणा रतिगुरुणा परिरमिता प्रमदमिता।।

(२) मत्ता

परि० ज्ञेया मत्ता मभसगसृष्टा।

गण० म, भ, स, ग, (४. ६.)।

उदा० पीत्वा मत्ता मधु मधुपाली।
कालिन्दीये तटवनकुञ्जे।
उद्दीव्यन्तीर्व्रजजनरामाः
कामासिक्ता मधुजिति चक्रे।।

(३) रुक्मवती (चम्पकमाला)

परि० रुक्मवती सा यत्र भमस्गाः।

गण० भ, म, स, ग, (५. ५.)।

उदा० कायमनोवाक्यैः परिशुद्धैः
यस्य सदा कंसद्विषि भक्तिः।
राज्यपदे हर्म्यालिरुदारा
रुक्मवती विघ्नः खलु तस्य।।

ग्यारह वर्णों के चरण वाले वृत्त
(त्रिष्टुभ्)
(१) इन्द्रवज्रा

परि० स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।

गण० त, त, ज, ग, ग, (५. ६.)

उदा० गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा
रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ।
यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थम्
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः।।

(२) उपेन्द्रवज्रा

परि० उपेन्द्रवज्रा प्रथमे लघौ सा।

गण० ज, त, ज, ग, ग, (५. ६.)

उदा० उपेन्द्रवज्रादिमणिच्छटाभि-
र्विभूषणानां छुरितं वपुस्ते।
स्मरामि गोपीभिरुपास्यमानम्
सुरद्रुमूले मणिमण्डपस्थम्।।

(३) उपजाति

परि० अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु
वदन्ति जातिष्विदमेव नाम।।

गण० जब इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा को एक ही श्लोक में मिला देते हैं तो उसे उपजाति वृत्त कहते हैं। इसके चौदह भेद होते हैं।

उदा० अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः। कु० १।१।

दे० रघु० २, ५, ६, ७, १३, १४, १६, १८,; कु० ३, कु० १७ आदि। जब अन्य वृत्त भी एक ही श्लोक में मिला दिये जाते हैं तो भी उपजाति वृत्त ही होता है। उदा० माघ कवि के निम्नश्लोक में वंशस्थ और इन्द्रवंशा मिला दिए गए हैं।

इत्थं रथाश्वेभनिषादिनां प्रगे
गणो नृपाणामथ तोरणाद्बहिः।
प्रस्थानकालक्षमवेषकल्पना-
कृतक्षणक्षेपमुदैक्षताच्युतम् ।। शि० १२।१।

(४) दोधक

परि० दोधकमिच्छति भत्रितयाद्गौ।
गण० भ, भ, भ, ग, ग, (६. ५.)
उदा० या न ययौ प्रियमन्यवधूभ्यः
सा रतरागमना न्यतमानम्।
तेन सहेह बिभर्ति रहः स्त्री
सार तरागमनायतमानम्। शि० ४।४५।

(५) भ्रमरविलसितम्

परि० म्भौ न्लौ गःस्याद् भ्रमरविलसितम्।
गण० म, भ, न, ल, ग, (४. ७.)।
उदा० प्रीत्यै यूनां व्यवहिततपनाः
प्रौढध्वान्तं दिनमिह जलदाः।
दोषामन्यं विदधति सुरत-
क्रीडायासश्रमशमपटवः। शि० ४।६२।

(६) रथोद्धता

परि० रान्नरैर्नरलगै रथोद्धता।
गण० र, न, र, ल, ग, (३. ८. या ४. ७.)।
उदा० कौशिकेन स किल क्षितीश्वरो
राममध्वरविघातशान्तये।
काकपक्षधरमेत्य याचित-
स्तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते
।। रघु० ११।१
दे० कु० ८ भी।

(७) वातोर्मी

परि० वातोर्मीयं गदिता म्भौ तगौ गः।
गण० म, भ, त, ग, ग, (४. ७.)।
उदा० ध्याता मूर्त्तिः क्षणमप्यच्युतस्य
श्रेणी नाम्नां गदिता हेलयाऽपि।
संसारेऽस्मिन् दुरितं हन्ति पुंसाम्।
वातोर्मी पीतमिवाम्भोधिमध्ये।।

(८) शालिनी

परि० मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः।
गण० म, त, त, ग, ग, (४. ७.)
उदा० अंहो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते
धर्मं दत्ते काममर्थं च सूते।
मुक्तिं दत्ते सर्वदोपास्यमाना
पुंसां श्रद्धा शालिनी विष्णुभक्तिः।।

(९) स्वागता

परि० स्वागता रनभगैर्गुरुणा च।
गण० र, न, भ, ग, ग, (३. ८.)।
उदा० यावदागमयतेऽथ नरेन्द्रान्
स स्वयंवरमहाय महीन्द्रः।
तावदेव ऋषिरिन्द्रदिदृक्षुः
नारदस्त्रिदशधाम जगाम।।
नै० ५।१।।
दे० कि० ६, शि० १०.

बारह वर्णों के चरण वाले वृत्त
(जगती)

(१) इन्द्रवंशा

परि० तच्चेन्द्रवंशा प्रथमाक्षरे गुरौ।।
गण० इन्द्रवंशा बिल्कुल वंशस्थविल या वंशस्थ (दे० नी० १३ वाँ) के समान है, सिवाय इसके कि इसका प्रथमाक्षर गुरु होता है। त, त, ज, र।
उदा० दैत्येन्द्रवंशाग्निरुदीर्णदीधितिः
पीताम्बरोऽसौ जगतां तमोपहः।
यस्मिन् ममज्जुः शलभा इव स्वयम्
ते कंसचाणूरमुखा मखद्विषः।।

(२) चन्द्रवर्त्म

परि० चन्द्रवर्त्म निगदन्ति रनभसैः।
गण० र, न, भ, स, (४. ८.)।
उदा० चन्द्रवर्त्म पिहितं घनतिमिरै
राजवर्त्म रहितं जनगमनैः।
इष्टवर्त्म तदलंकुरु सरसे
कुञ्जवर्त्मनि हरिस्तव कुतुकी।।

(३) जलधरमाला

परि० अब्ध्यंगैः स्याज्जलधरमालाम्भौ स्मौ।
गण० म, भ, स, म, (४. ८.)।
उदा० या भक्तानां कलिदुरितोत्तप्तानां
तापच्छेदे जलधरमाला नव्या।

भव्याकारा दिनकरपुत्रीकूले
केलीलोला हरितनुरव्यात् सा वः।।
दे० कि० ५।२३।।

(४) जलोद्धतगति

परि० रसैर्जसजसा जलोद्धतगतिः।
गण० ज, स, ज, स, (६. ६.)।
उदा० समीरशिशिरः शिरस्सु वसताम्
सतां जवनिका निकामसुखिनाम्।
बिभर्ति जनयन्नयं मुदमपा-
मपायधवला बलाहकततीः।शि० ४।५४।।

(५) तामरस

परि० इह वद तामरसं नजजा यः।
गण० न, ज, ज, य, (५. ७.)।
उदा० स्फुटसुषमामकरन्दमनोज्ञम्
व्रजललनानयनालिनिपीतम्।
तव मुखतामरसं मुरशत्रो
हृदयतडाग विकाशि ममास्तु।।

(६) तोटक

परि० वद तोटकमब्धिसकाररयुतम्।
गण० स, स, स, स, (४. ४. ४.)।
उदा० स तथेति विनेतुरुदारमतेः
प्रतिगृह्य वचो विससर्ज मुनिम्।
तदलब्धपदं हृदि शोकधने
प्रतियातमिवान्तिकमस्य गुरोः।रघु० ८।९१।।
दे०शि० ६।७१।।

(७) द्रुतविलम्बित

परि० द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।
गण० न, भ, भ, र (४. ८. या ४. ४. ४.)।
उदा० मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना
मम च मुक्तमिदं तमसा मनः।
मनसिजेन सखे प्रहरिष्यता
धनुषि चूतशरश्च निवेशितः।श० ६।
दे० रघु०६, शि० ६ भी।

(८) प्रभा

परि० स्वरशरविरतिर्ननौ रौ प्रभा।
गण० न, न, र, र, (७. ५.)।
उदा० अतिसुरभिरभाजि पुष्पश्रिया-
मतनुतरतयेव संतानकः।
तरुणपरभृतः स्वनं रागिणा-
मतनुतरतये वसन्तानकः।।शि० ६।६७।
कि० ५।२१ भी।

(९) प्रमिताक्षरा

परि० प्रमिताक्षरा सजससः कथिता।
गण० स, ज, स, स, (५. ७.)
उदा० विहगाः कदम्बसुरभाविह गाः
कलयन्त्यनुक्षणमनेकलयम्।
भ्रमयन्नुपैति मुहुरभ्रमयम्,
पवनश्च धूतनवनीपवनः।शि० ४।३६।
कि० ९, शि० ९।

(१०) भुजंगप्रयात

परि० भुजंगप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः।
गण० य, य, य, य, (६. ६.)।
उदा० धनैर्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति
धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति।
धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके
धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वम्।।

(११) मणिमाला

परि० त्यौ त्यौ मणिमाला छिन्ना गुहवक्त्रैः।
गण० त, य, त, य, (६. ६.)।
उदा० प्रह्वामरमौलौ रत्नोपलक्लृप्ते
जातप्रतिबिम्बा शोणा **मणिमाला**।
गोविन्दपदाब्जे राजी नखराणा-
मास्तां मम चित्ते ध्वान्तं शमयन्ती।।

(१२) मालती ('यमुना' भी कहते हैं)

परि० भवति नजावथ मालती जरौ।
उदा० न, ज, ज, र, (५. ७.)।
उदा० इह कलयाच्युत केलिकानने
मधुररससौरभसारलोलुपः।
कुसुमकृतस्मितचारु विभ्रमा-
मलिरपि चुम्बति मालतीं मुहुः।।

(१३) वंशस्थविल (वंशस्थ या वंशस्तनित)

परि० वदन्ति वंशस्थविलं जतौ जरौ।
गण० ज, त, ज, र, (५. ७.)।
उदा० तथा समक्षं दहता मनोभवम्
पिनाकिना भग्नमनोरथा सती।

निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती।
प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।।
कु० ५।१।
दे० रघु० ३ भी।

(१४) वैश्वदेवी

परि० बाणाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौ यौ।
गण० म, म, य, य, (५. ७.)।
उदा० अर्चामन्येषां त्वं विहायामराणा-
मद्वैतेनैकं विष्णुमभ्यर्च्य भक्त्या।
तत्राशेषात्मन्यचित्ते भाविनी ते
भ्रातः संपन्नाराधना वैश्वदेवी।।

(१५) स्रग्विणी

परि० कीर्तितैषा चतूरेफिका स्रग्विणी।
गण० र, र, र, र, (६. ६.)।
उदा० इन्द्रनीलोत्पलेनेव या निर्मिता
शातकुम्भद्रवालङ्कृता शोभते।
नव्यमेघच्छविः पीतवासा हरे-
र्मूर्तिरास्तां जयायोरसि स्रग्विणी।।

तेरह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिजगती)

(१) कलहंस (सिंहनाद या कुटजा)

परि० सजसाः सगौ च कथितः कलहंसः।
गण० स, ज, स, स, ग, (७. ६.)।
उदा० यमुना विहारकुतुके कलहंसो
व्रजकामिनीकमलिनीकृतकेलि।
जनचित्तहारिकलकण्ठनिनादः
प्रमदं तनोतु तव नन्दतनूजः।।
दे० शि० ६।७३।

(२) क्षमा (चन्द्रिका और उत्पलिनी)

परि० तुरगरसयतिर्नौ ततौ गः क्षमा।
गण० न, न, त, त, ग, (७. ६.)
उदा० इह दुरधिगमैः किंचिदेवागमैः
सततमसुतरं वर्णयन्त्यन्तरम्।
अमुमतिविपिनं वेद दिग्व्यापिनम्
पुरुषमिव परं पद्मयोनिः परम्।।कि० ५।१८।

(३) प्रहर्षिणी

परि० त्र्यशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम्।
गण० म, न. ज, र, ग, (३. १०.)।

उदा० ते रेखाध्वजकुलिशातपत्रचिह्नं
सम्राजश्चरणयुगं प्रसादलभ्यम्।
प्रस्थानप्रणतिभिरङ्गुलीषु चक्रु
र्मौलिस्रक्च्युतमकरन्दरेणुगौरम्।।
रघु० ४।८८, दे० कि० ७, शि० ८।

(४) मंजुभाषिणी (सुनन्दिनी, और प्रबोधिता)

परि० सजसा जगौ च यदि मंजुभाषिणी।
गण० स, ज, स, ज, ग, (६. ७.)
उदा० यमुनामतीतमथ शुश्रुवानमुम्
तपसस्तनूज इति नाधुनोच्यते।
स यदाऽचलत्रिजपुरादहर्निशम्
नृपतेस्तदादि समचारि वार्तया।शिव १३।१।

(५) मत्तमयूरी

परि० वेदैरन्ध्रैर्म्तौ यसगा मत्तमयूरम्।
गण० म, त, य, स, ग, (४. ६.)।
उदा० दृष्ट्वा दृश्यान्याचरणीयानि विधाय
प्रेक्षकारी याति पदं मुक्तमपायैः।
सम्यग्दृष्टिस्तस्य परं पश्यति यस्त्वाम्
यश्चोपास्ते साधु विधेयं स विधत्ते।।कि०१८।
२८, शि० ४।४४, ६।७६, रघु० ६।७५।

(६) रुचिरा (प्रभावती)

परि० जभौ सजौ गिति रुचिरा चतुर्ग्रहैः।
गण० ज, भ, स, ज, ग, (४. ६.)
उदा० कदा मुखं वरतनु कारणादृते
तवागतं क्षणमपि कोपपात्रताम्।
अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला
विभावरी कथय कथं भविष्यति।।
मालवि० ४।१३।
दे० भट्टि० ११।१, शि० १७।

चौदह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(शक्वरी)

(१) अपराजिता

परि० ननरसलघुगैः स्वरैरपराजिता।
गण० न, न, र, स, ल, ग, (७. ७.)।
उदा० यदनवधि भुजप्रतापकृतास्पदा
यदुनिचयचमूः परैरपराजिता।
व्यजयत समरेसमस्तरिपुव्रजम्
स जयति जगतां गतिर्गरुडध्वजः।।

(२) असंबाधा

परि० म्तौ न्सौ गावक्षग्रहविरतिरसंबाधा।
गण० म, त, न, स, ग, ग, (५. ९.)।
उदा० वीर्याग्नौ येन ज्वलति रणवशात् क्षिप्रे
दैत्येन्द्रे जाता धरणिरियम**संबाधा**।
धर्मस्थित्यर्थं प्रकटिततनुसम्बन्धः
साधूनां बाधां प्रशमयतु स कंसारिः।।

(३) पथ्या (मंजरी)

परि० सजसा यलौ च सह गेन पथ्या मता।
गण० स, ज, स, य, ल, ग, (५. ९.)।
उदा० स्थगयन्त्यमूः शमितचातकार्तस्वरा
जलदास्तडित्तुलितकान्तकार्तस्वराः।
जगतीरिह स्फुरितचारु चामीकराः
सवितुः क्वचित् कपिशयन्ति चामीकराः।
शि० ४।२४।

(४) प्रमदा (कुररीरुता)

परि० नजभजला गुरुश्च भवति प्रमदा।
गण० न, ज, भ, ज, ल, ग (६. ८.)।
उदा० अनतिचिरोज्झितस्य जलदेन चिर-
स्थितबहुबुद्बुदस्य पयसोऽनुकृतिम्।
विरलविकीर्णवज्रशकला सकला-
मिह विदधाति धौतकलधौतमही।।
शि० ४।४१।

(५) प्रहरणकलिका

परि० ननभनलगिति प्रहरणकलिका।
गण० न, न, भ, न, ल, ग (७. ७.)
उदा० व्यथयति कुसुम**प्रहरणकलिका**
प्रमदवनभवा तव धनुषि तता।
विरहविपदि मे शरणमिह ततो
मधुमथनगुणस्मरणविरतम्।।

(६) मध्यक्षामा (हंसश्येनी या कुटिल)

परि० मध्यक्षामायुगदशविरमा म्भौ न्यौ गौ।
गण० म, भ, न, य, ग, ग (४. १०.)।
उदा० नीतोच्छ्रायं मुहुरशिशिररश्मेरुस्रै-
रानीलाभैर्विरचितपरभागा रत्नैः।
ज्योत्स्नाशङ्कामिह वितरति **हंसश्येनी**
मध्येऽप्यह्नः स्फटिकरजतभित्तिच्छाया।।
कि० ५।३१।

(७) वसन्ततिलका

(वसन्ततिलक, उद्धर्षिणी या सिंहोन्नता)

परि० उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।
गण० त, भ, ज, ज, ग, ग (८. ६.)।
उदा० यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना-
माविष्कृतारुणपुरःसर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।।शि०४।१।

(८) वासन्ती

परि० मात्तो नो मो गौ यदि गदिता वासन्तीयम्।
गण० म, त, न, म, ग, ग (४. ६. ४.)।
उदा० भ्राम्यद्भृङ्गी निर्भरमधुरालापोद्गीतैः
श्रीखण्डाद्रेरद्भुतपवनैर्मन्दान्दोला।
लीलालोला पल्लवविलसद्धस्तोल्लासैः
कंसाराती नृत्यति सदृशी वासन्तीयम्।।

पन्द्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिशक्वरी)

(१) तूणक

परि० तूणकं समानिका पदद्वयं विनान्तिमम्।
गण० र, ज, र, ज, र (४.४.४.३ या ७.८)
उदा० सा सुवर्णकेतकं विकाशि भृङ्गपूरितम्
पञ्चवाणबाणजालपूर्णहेतितूणकम्।
राधिका वितर्क्य माधवाद्य मासि माधवे
मोहमेति निर्भरं त्वया विना कलानिधे।।

(२) मालिनी

परि० ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
गण० न, न, म, य, य (८. ७.)
उदा० शशिनमुपगतेयं कौमुदी मेघमुक्तम्
जलनिधिमनुरूपं जह्नुकन्यावतीर्णा।
इति समगुणयोगप्रीतयस्तत्र पौराः
श्रवणकटुनृपाणामेकवाक्यं विवव्रुः।।
रघु० ६।८५।

(३) लीलाखेल

परि० एकन्यूनौ विद्युन्मालापादौ चेल्लीलाखेलः।
गण० म, म, म, म, म
उदा० मा कान्ते पक्षस्यान्ते पर्याकाशे देशे स्वाप्सीः
कान्तं वक्त्रं वृत्तं पूर्णं चन्द्रं मत्वा रात्रौ चेत्।

क्षुत्क्षामः प्राटश्चेतश्चेतो राहुः क्रूरः प्राद्यात्
तस्माद्ध्वान्ते हर्म्यस्यान्ते शय्यैकांते कर्तव्या ।।
सरस्वती०

(४) शशिकला

परि० गुरुनिधनमनुलघुरिह शशिकला ।
गण० न, न, न, न, स (अन्तिम को छोड़ कर सब लघु)
उदा० मलयजतिलकसमुदित**शशिकला**
व्रजयुवतिलसदलिक गगनगता ।
सरसिजनयनहृदयसलिल**निधिं**
व्यतनुत विततरभसपरितलम् ।।

सोलह वर्णों के चरण वाले वृत्त
(अष्टि)

(१) चित्र

परि० चित्रसंज्ञमीरितं रजौ रजौ रगौ च वृत्तम् ।
गण० र, ज, र, ज, र, ग (८. ८. या ४. ४. ४. ४)
उदा० विद्रुमारुणाधरौष्ठशोभिवेणुवाद्यहृष्ट-
वल्लवीजनाङ्गसंगजातमुग्धकण्टकाङ्ग ।
त्वां सदैव वासुदेव पुण्यलभ्यपाद देव
वन्यपुष्प**चित्र**केशं संस्मरामि गोपवेश ।।

(२) पञ्चचामर

परि० प्रमाणिका पदद्वयं वदन्ति पंचचामरम् ।
(जरौ जरौ ततो जगौ च पंचचामरं वदेत्)
गण० ज, र, ज, र, ज, ग (८. ८. या ४. ४. ४. ४)
उदा० सुरद्रुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिर्मिते
लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम् ।
सुरांगनाभवल्लवीकर**प्रपंचचामर**-
स्फुरत्समीरवीजितं सदाच्युतं भजामि तम् ।।

(३) वाणिनी

परि० नजभजरैर्यदा भवति वाणिनी गयुक्तैः ।
गण० न, ज, भ, ज, र, ग ।
उदा० स्फुरतु ममानने ऽद्य ननु वाणि नीतिरम्यम्
तव चरणप्रसादपरिपाकतः कवित्वम् ।
भवजलराशिपारकरणक्षमं मुकुन्दम्
सततमहं स्तवैः स्वरचितैः स्तवानि नित्यम् ।।

सत्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त
(अत्यष्टि)

(१) चित्रलेखा (अतिशायिनी)

परि० ससजा भजगा गु दिक्स्वरैर्भवति चित्रलेखा ।
गण० स, स, ज, भ, ज, ग, ग (१०. ७)
उदा० इति धौतपुरंध्रिमत्सरान् सरसि मज्जनेन
श्रियमाप्तवतो ऽ**तिशायिनी**मपमलांगभासः ।
अवलोक्य तदैव यादवानपरवारिराशेः
शिशिरेतररोचिषाप्यपां ततिषु मंक्तुमीषे ।।
शि० ८।७१।

(२) नर्दटक (कोकिलक)

परि० यदि भवतो नजौ भजजला गुरु नर्दटकम् ।
गण० न, ज, भ, ज, ज, ल, ग (८. ६.)
उदा० तरुणतमालनीलबहुलोन्नमदम्बुधराः
शिशिरसमीरणावधूतनूतनवारिकणाः ।
कथमवलोकयेयमधुना हरिहेतिमती-
र्मदकलनीलकंठकलहैर्मुखराः ककुभः ।।
मा० ६।१८; दे० ५।३१।

(३) पृथ्वी

परि० जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः ।
गण० ज, स, ज, स, य, ल, ग (८. ६.)
उदा० इतः स्वपिति केशवः कुलमितस्तदीयद्विषा-
मितश्च शरणार्थिनः शिखरिणां गणाः शेरते ।
इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकै-
रहो विततमूर्जितं भरसहं च सिन्धोर्वपुः ।।
भर्तृ० २।७६।

(४) मन्दाक्रान्ता

परि० मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।
गण० म, भ, न, त, त, ग, ग (४. ६. ७)
उदा० गोपी भर्तुर्विरहविधुरा काचिदिन्दीवराक्षी
उन्मत्तेव स्खलितकबरी निःश्वसन्ती विशालम् ।
अत्रैवास्ते मुररिपुरिति भ्रान्तिदूतीसहाया
त्यक्त्वा गेहं झटिति यमुनामञ्जुकुञ्जं जगाम ।।
पंदाक० १।

(समस्त मेघदूत इसी वृत्त में लिखा गया है)

(५) वंशपत्रपतित

परि० दिङ्मुनिवंशपत्रपतितं भरनभनलगैः।
गण० भ, र, न, भ, न, ल, ग (१०. ७)।
उदा० दर्पणनिर्मलासु पतिते घनतिमिरमुषि
ज्योतिषि रौप्यभित्तिषु पुरः प्रतिफलति मुहुः।
व्रीडमसंमुखोऽपि रमणैरपहृतवसनाः
काञ्चनकन्दरासु तरुणीरिह नयति रविः।।
शि० ४।६७।

(६) शिखरिणी

परि० रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी।
गण० य, म, न, स, भ, ल, ग (६. ११.)।
उदा० दिगन्ते श्रूयन्ते मदमलिनगण्डाः करटिनः
करिण्यः कारुण्यास्पदमसमशीलाः खलु मृगाः।
इदानीं लोकेऽस्मिन्ननुपमशिखानां पुनरयम्
नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन् मृगपतिः।।
भामि० १।२।

(७) हरिणी

परि० नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता।
गण० न, स, म, र, स, ल, ग (६. ४. ७.)।
उदा० सुतनु हृदयात्प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु ते
किमपि मनसः संमोहो मे तदा बलवानभूत्।
प्रबलतमसामेवंप्रायाः शुभेषु हि वृत्तयः
स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया।।
श० ७।२४।

अठारह वर्णों के चरण वाले वृत्त
(धृति)

(१) कुसुमितलतावेल्लिता

परि० स्याद्भूतर्त्वश्वैः कुसुमितलता
वेल्लिता म्तौ नयौ यौ।
गण० म, त, न, य, य, य (५. ६. ७.)।
उदा० क्रीडत्कालिन्दीललितलहरीवारिभिर्दाक्षिणात्यैः
वातैः खेलद्भिः कुसुमितलतावेल्लिता मन्दमन्दम्।
भृङ्गालीगीतैः किसलयकरोल्लासितैर्लास्यलक्ष्मीम्
तन्वाना चेतो रभसतरलं चक्रपाणेश्चकार।।
।

(२) चित्रलेखा

परि० मन्दाक्रान्ता नयरलघुयुता कीर्तिता चित्रलेखा।
गण० म, भ, न, य, य, य (४. ७. ७.)।
उदा० शङ्केऽमुष्मिन् जगति मृगदृशां साररूपं यदासी-
दाकृष्येदं ब्रजयुवति सभा वेधसांसा व्यधायि।
नैतादृक्चेत् कथमुदधिसुतामन्तरेणाच्युतस्य
प्रीतं तस्या नयनयुगमभूच्चित्रालेखाद्भुतायाम्।

(३) नन्दन

परि० नजभजरैस्तु रेफसहितैः शिवैर्हयैर्नन्दनम्।
गण० न, ज, भ, ज, र, र (११. ७.)।
उदा० तरणिसुतातरङ्गपवनैः सलीलमान्दोलितम्
मधुरिपुपादपंकजरजः सुपूतपृथ्वीतलम्।
मुरहरचित्रचेष्टितकलाकलापसंस्मारकम्,
क्षितितलनन्दनं ब्रज सखे सुखाय वृन्दावनम्।।

(४) नाराच

परि० इह ननरचतुष्कसृष्टं तु नाराचमाचक्षते।
गण० न, न, र, र, र, र (८. ५. ५.)।
उदा० रघुपतिरपि जातवेदो विशुद्धां प्रगृह्य प्रियाम्
प्रियसुहृदि विभीषणे संगमय्य श्रियं वैरिणः।
रविसुतसहितेन तेनानुयातः ससौमित्रिणा
भुजविजितविमानरत्नाधिरूढः प्रतस्थे पुरीम्।।
रघु० १२।१०४।

(५) शार्दूलललित

परि० मः सो जः सतसा दिनेश-
ऋतुभिः शार्दूलललितम्।
गण० म, स, ज, स, त, स, (१२.६)
उदा० कृत्वाकंसमृगे पराक्रमविधिं शार्दूलललितम्
यश्चक्रे क्षितिभारकारिषु दरं चैद्यप्रभृतिषु।
संतोषं परमं तु देवनिवहे त्रैलोक्यशरणम्,
श्रेयो नः स तनोत्वपारमहिमा लक्ष्मीप्रियतमः।।

उन्नीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(अतिधृति)

(१) मेघविस्फूर्जिता

परि० रसर्त्वश्वैर्य्मौन्सौ ररगुरुयुतौ
मेघविस्फूर्जितास्यात्।

गण० य, म, न, स, र, र, ग (६.६.७)

उदा० कदम्बामोदाढ्या विपिनपवनः केकिनः कान्तकेका
विनिद्राः कन्दल्यो दिशि दिशि मुदा दर्दुरा दृप्तनादाः।
निशा नृत्यद्विद्युद्विलसितलसन्मेघ विस्फूर्जिता चेत्
प्रियःस्वाधीनोऽसौ दनुजदलनो राज्यमस्मात् किमन्यत्।।

(२) शार्दूलविक्रीडित

परि० सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।
गण० म, स, ज, स, त, त, ग (१२.७)
उदा० वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते।
स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायास्तु वः।।
वि० १।१।

(३) सुमधुरा

परि०
म्रौ भ्नौ मो नो गुरुश्चेद् हयऋतुरसैरुक्ता सुमधुरा।।
गण० म, र, भ, न, म, न, ग (७.६.६)
वेदार्थान् प्राकृतस्त्वं वदसि न च ते जिह्वा निपतिता
मध्याह्ने वीक्षसेऽर्कं न तव सहसा दृष्टिर्विचलिता।
दीप्ताग्नौ पाणिमन्तः क्षिपसि स च ते दग्धो भवति नो
चारित्र्याच्चारुदत्तं चलयसि न ते देहं हरति भूः।।
मृच्छ० ६।२१।

(४) सुरसा

परि०
म्रौ भ्नौयो नोगुरुश्चेत् स्वरमुनिकरणैराह सुरसाम्।
गण० म, र, भ, न, य, न, ग (७.७.५)
उदा० कामक्रीडासतृष्णो मधुसमयसमारम्भरभसात्
कालिन्दीकूलकुंजे विहरणकुतुकाकृष्टहृदयः।
गोविन्दो वल्लवीनामधररससुधां प्राप्य सुरसाम्
शङ्के पीयूषपानैः प्रचुरकृतसुखं व्यस्मरदसौ।।

बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(कृति)

(१) गीतिका

परि०
सजजा भरौ सलगा यदा कथिता तदा खलुगीतिका।
गण० स, ज, ज, भ, र, स, ल, ग (५.७.८)
उदा० करतालचञ्चलकङ्कणस्वनमिश्रणेन मनोरमा
रमणीयवेणुनिनादरङ्गिमसंगमेन सुखावहा।
बहलानुरागनिवासरासससमुद्भवा भवरागिणम्
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचारुचामरगीतिका।।

(२) सुवदना

परि० ज्ञेया सप्ताश्वषड्भिर्मरभनययुता भ्लौ गः सुवदना।
गण० म, र, भ, न, य, भ, ल, ग (७.७.६)
उदा०
उत्तुङ्गास्तुङ्गकूलं स्रुतमदसलिलाः प्रस्यन्दिसलिलम्
श्यामा श्यामोपकण्ठद्रुममतिमुखराः कल्लोलमुखरम्।
स्रोतः खातावसीदत्तटमरुदशनैरुत्सादिततटाः
शोणं सिन्दूरशोणा मम गजपतयः पास्यन्ति शतशः।।
मुद्रा० ४।१६।

इक्कीस वर्णों के चरण वाले वृत्त

(प्रकृति)

(१) पञ्चकावली (सरसी, धृतश्री)

परि०
नजभनजा जरौ नरपते कथिता भुवि पञ्चकावली।
गण० न, ज, भ, ज, ज, ज, र (७.७.७)
उदा० तुरगशताकुलस्य परितः परमेकतुरङ्गजन्मनः
प्रमथितभूभृतः प्रतिपथं मथितस्य भृशं महीभृता।
परिचलतो बलानुजबलस्य पुरः सततं धृतश्रिय-
श्चिरगलितश्रियो जलनिधेश्च तदाऽभवदन्तरं
महत्।। शि० ३।८२।।

(२) स्रग्धरा

परि० भ्रम्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

गण० म, र, भ, न, य, य, य (७.७.७)

उदा० या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री

ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।

यामाहुः सर्वभूतप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

श० १।१।

बाईस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(आकृति)
हंसी

परि० मौ गौ नाश्चत्वारो गो गो वसुभुवनयतिरिति भवति हंसी।

गण० म, म, त, न, न, न, त, ग
या (म, म, त, न, न, न, स, ग) (८.१४)

उदा०

सार्धं कान्तेनैकान्तेऽसौ विकचकमलमधुसुरभि पिबन्ती।
कामक्रीडाकूतस्फीतप्रमदसरसतरमलघुरसन्ती।

कालिन्दीये पद्मारण्ये पवनपतनपरितरलपरागे
कंसाराते पश्य स्वेच्छं सरभसगतिरिह विलसति हंसी।।

तेइस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(विकृति)
अद्रितनया

परि० नजभजभाजभौ लघुगुरू बुधैस्तु गदितेयमद्रितनया।

गण० न, ज, भ, ज, भ, ज, भ, ल, ग (११.१२)

उदा० खातरशौर्यपावकशिखापतङ्गनिभमग्न-
दृप्तदनुजो जलधिसुताविलासवसतिः सतां गतिरशेषमान्यमहिमा।
भुवनहितावतारचतुरश्चराचरधरोऽवतीर्ण
इहि क्षितिवलयेऽस्ति कंसशमनस्तवेति तमवोचदद्रितनया।।

चौबीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(संकृति)
तन्वी

परि० भूतमुनीनैर्यतिरिह भतनाः स्भौ भनयाश्च यदि भवति तन्वी।

गण० भ, त, न, स, भ, भ, न, य (५.७.१२)

उदा० माधव मुग्धैर्मधुकरविरुतैः
कोकिलकूजितमलयसमीरैः
कम्पमुपेता मलयजसलिलैः
प्लावनतोऽप्यविगततनुदाहा।
पद्मपलाशैर्विरचितशयना
देहजसंज्वरभरपरिदूनै-
र्निश्वसती सा मुहुरतिपरुषं
ध्यानलये तव निवसति तन्वी।।

पच्चीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(अतिकृत)
क्रौञ्चपदा

परि० क्रौञ्चपदा भ्मौ स्भौ नननना न्गाविषुशरवसुमुनिविरतिरिह भवेत्।

गण० भ, म, स, भ, न, न, न, न, ग (५.५.८.७)

उदा० क्रौञ्चपदालीचित्रिततीरा
मदकलखगकुलकलकल रुचिरा
फुल्लसरोजश्रेणिविलासा
मधुमुदितमधुपरवरभसकरी।
फेनविलासप्रोज्ज्वलहासा
ललितलहरिभरपुलकितसुतनुः
पश्च हरेऽसौ कस्य न चेतो
हरति तरलगतिरहिमकिरणजा।।

छब्बीस वर्णों के चरण वाले वृत्त
(उत्कृति)
भुजंगविजृंभित

परि० वस्वीशाश्वैश्छेदोपेतं ममतननयुगरसल-गैर्भुजङ्गविजृम्भितम्।

गण० म, म, त, न, न, न, र, स, ल, ग (८,११ ७)

उदा० हेलोदञ्चन्न्यञ्चत्पादप्रकटविकट-
नटनभरो रणत्करतालक-
श्चारुप्रेङ्खच्चूडाबर्हः श्रुतितरलनव-
किसलयस्तरङ्गितहारधृक्।
त्रस्यन्नागस्त्रीभिर्भक्त्या मुकु-
लितकरकमलयुगं कृतस्तुतिरच्युतः
पायाद्वश्छिन्दन् कालिन्दीह्रदकृत-
निजवसतिवृहद्भुजङ्गविजृम्भितम्।।

दंडक

जिन वृत्तों के प्रत्येक चरण में सत्ताईस या इससे अधिक वर्ण होते हैं उनका एक सामान्य नाम दंडक है। इस वृत्त की जाति के चरण में वर्णों की संख्या अधिक से अधिक ९९९ बताई जाती है। प्रत्येक चरण में सबसे पहले दो नगण या छः लघु अक्षर होते हैं, शेष या तो रगण होते हैं या यगण या सभी चरण सगण होते हैं। दण्डक की जिन श्रेणियों का बहुधा उल्लेख मिलता है वे हैं- चण्डवृष्टिप्रयात, प्रचितक, मत्तमातंग-लीलाकर सिंहविक्रान्त, कुसुमस्तवक, अनङ्गशेखर, और संग्राम आदि। अन्तिम प्रकार के दण्डक का उदाहरण मा० ५।२३ है।

अनुभाग (ख)

अर्धसमवृत्त

(१) अपरवक्त्र ('वैतालीय' भी कभी कभी)

परि० अयुजि ननरला गुरुः समे
तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ।

गण० न, न, र, ल, ग, (विषम चरण)
न, ज, ज, र, (सम चरण)

उदा० स्फुटसुमधुरवेणुगीतिभि-
स्तमपरवक्त्रमवेत्य माधवम्।
मृगयुवतिगणैः समं स्थिता
व्रजवनिता धृतचित्तविभ्रमाः।।

(२) उपचित्र

परि० विषमे यदि सौ सलगा दले
भौ युजिभाद् गुरुकावुपचित्रम्।

गण० स, स, स, ल, ग, (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग, (सम चरण)

उदा० मुरवैरिवपुस्तनुतां मुदं
हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम्।
गगनं चपलामिलितं यथा
शारदनीरधरैरुपचित्रम्।।

(३) पुष्पिताग्रा (औपच्छन्दसिक)

परि० अयुजि नयुगरेफतो यकारो
युजि तु नजौ जरगाश्च **पुष्पिताग्रा**।

गण० न, न, र, य, (विषम चरण)
न, ज, ज, र, ग, (सम चरण)

उदा० अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं
व्यसनकृशा परिपालयांबभूव।
शशिन इव दिवातनस्य लेखा
किरणपरिक्षयधूसरा प्रदोषम्।।कु० ४।४६।

(४) वियोगिनी (वैतालीय या सुन्दरी)

परि० विषमे ससजा गुरुः समे
सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी।

गण० स, स, ज, ग, (विषम चरण)
स, भ, र, ल, ग, (सम चरण)

उदा० सहसा विदधीत न क्रिया-
मविवेकः परमापदां पदम्।
वृणते हि विमृश्यकारिणम्
गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः।। कि० २।३०।

(५) वेगवती

परि० सयुगात् सगुरू विषमे चेद्
भाविह **वेगवती** युजि भाद्गौ।

गण० स, स, स, ग, (विषम चरण)
भ, भ, भ, ग, ग, (सम चरण)

उदा० स्मरवेगवती व्रजरामा
केशववंशरवैरतिमुग्धा।
रभासन्न गुरून् गणयन्ती
केलिनिकुञ्जगृहाय जगाम।।

(६) हरिणप्लुता

परि० सयुगात्सलघू विषमे गुरु-
र्युजि नभौ भरकौ **हरिणप्लुता**।

गण० स, स, स, ल, ग, (विषम चरण)
न, भ, भ, र, (सम चरण)

उदा० स्फुटफेनचया हरिणप्लुता
बलिमनोज्ञतटा तरणेः सुता।
सकलहंसकुलारव शालिनी
विहरतो हरति स्म हरेर्मनः।।

विशे० अपरवक्त्र या औपच्छन्दसिक और वैतालीय या वियोगिनी प्रायः जाति समझे जाते हैं (दे० अनुभाग घ)। परन्तु कभी-कभी गणयोजना में उनकी परिभाषा दी जाती है, इसी लिए वे यहाँ वृत्तों के अन्तर्गत दे दिये गये हैं।

अनुभाग (ग)

विषमवृत्त (असमवृत्त)

इस श्रेणी के अन्तर्गत उद्गता अत्यंत सामान्य वृत्त कहलाता है।

परि० प्रथमे सजौ यदि सलौ च
नसजगुरुकाण्यनन्तरम्।
यद्यथ भनजलगाः स्युरथो
सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता।।

गण० सं, ज, स, ल, (प्रथम चरण)
न, स, ज, ग, (द्वितीय चरण)
भ, न, ज, ल, ग, (तृतीय चरण)
स, ज, स, ज, ग, (चतुर्थ चरण)

उदा० अथ वासवस्य वचनेन
रुचिरवदनस्त्रिलोचनम्।
क्लान्तिरहितमभिराधयितुम्
विधिवत्तपांसि विदधे धनंजयः।।
कि० १२।१।
दे० शि० १५ भी।

उद्गता का एक और भेद बताया जाता है जिसके तृतीय चरण में भ, न, ज, ल, ग, के स्थान में भ, न, भ, ग होते हैं। वृत्तों के अन्य भेद जिनमें प्रत्येक चरणों के वर्णो की संख्या भिन्न-भिन्न होती है, 'गाथा' के सामान्यशीर्षक के अन्तर्गत बतलाये हैं। चार से भिन्न चरणों की संख्या वाले वृत्तों के लिए भी यही नाम व्यवहृत होता है। जहाँ तक 'उपजाति' का संबंध है ये किसी भी नियमित वृत्त के दो या दो से अधिक चरणों को मिला कर अर्धसमवृत्त या विषमवृत्त बना लिए जाते हैं।

जाति

(यह छन्द मात्राओं की संख्या से विनियमित किये जाते हैं)।

(अ) इस प्रकार के वृत्तों की अत्यन्त सामान्य प्रकार 'आर्या' है। इसके नौ अवान्तर भेद बताये जाते हैं:-

पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपला च।
गीत्युपगीत्युद्गीतय आर्यागीतिर्नवैव वार्यायाः।।

इन नौ भेदों में से अन्तिम चार प्रकार ही प्रायः प्रयुक्त होते हैं, इसीलिए इनका उल्लेख किया जाता है।

(१) आर्या

परि० यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या।।
श्रु० ४।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें होती हैं (ह्रस्व स्वर की एक मात्रा तथा दीर्घ की दो मात्रायें गिनी जाती हैं)। दूसरे चरण में अठारह तथा चौथे चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० प्रतिपक्षेणापिपतिं सेवन्ते भर्तुवत्सलाः साध्व्यः।
अन्यसरितां शतानि समुद्रगाः प्रापयन्त्यब्धिम्।।
मालवि० ५।१९।

गोवर्धन की समस्त 'आर्यासप्तशती' इसी छन्द में लिखी गई है।

(२) गीति

परि० आर्यापूर्वार्धसमं द्वितीयमपि भवति यत्र हंसगते।
छन्दोविदस्तदानीं गीतिंताममृतवाणि भाषन्ते।।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्रायें, और दूसरे तथा चौथे चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० पाटीरतवपटीयान्कः परिपाटीमिमा मुरीकर्तुम्।
यत्पिंषतामपि नृणां पिष्टोऽपि तनोषि परिमलैः पुष्टिम्।।
भामि० १।१२।

(३) उपगीति

परि० आर्योत्तरार्धतुल्यं प्रथमार्धमपि प्रयुक्तं चेत्।

कामिनि **तामुपगीतिं** प्रतिभाषन्ते महाकवयः।।

श्रु० ६।

इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नवगोपसुन्दरीणां रासोल्लासे मुरारातिम्।
अस्मारयदुपगीतिः स्वर्गकुरङ्गीदृशां गीतेः।।

(४) उद्गीति

परि० आर्यासकलद्वितये विपरीते पुनरिहोद्गीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ होती हैं, द्वितीय चरण में पन्द्रह तथा चतुर्थ चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं।

उदा० नारायणस्य सन्ततमुद्गीतिः संस्मृतिर्भक्त्या।
अर्चायामासक्तिर्दुस्तरसंसारसागरे तरणिः।।

(५) आर्यागीति

परि० आर्या प्राग्दलमन्तेऽधिकगुरु तादृक् परार्धमार्यागीतिः।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में बीस मात्राएँ होती हैं।

उदा०

सवधूकाः सुखिनोऽस्मिन्नवरतममन्दरागतामरसदृशः।
नासेवन्ते रसवन्नवरतममन्दरागतामरसदृशः।।

शि० ४।५१।

नोट- यह पाँचों भेद कभी कभी गणयोजना में भी परिभाषित किये जाते हैं।

(आ) वैतालीय

परि०

षड्विषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्नोनिरन्तराः।
न समाऽत्रा पराश्रिता कला वैतालीयेऽन्ते रलौ गुरुः।।

यह चार चरण का श्लोक है। इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में चौदह लघु मात्राओं का समय लगता है और द्वितीय तथा तृतीय चरण में सोलह मात्राओं का। पुनः प्रथम तथा तृतीय चरण में छः मात्राएँ होनी चाहिए। द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में आठ मात्राएँ और उसके पश्चात् रगण (ऽ।ऽ) तथा लघु गुरु (।ऽ) होने चाहिए। आगे नियम इस बात की अपेक्षा करते हैं कि सम चरणों में सभी मात्राएँ ह्रस्व या दीर्घ नहीं होनी चाहिएँ, इसके अतिरिक्त प्रत्येक सम चरण की (अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ तथा छठा चरण) मात्राएँ अगले चरणों (अर्थात् तृतीय, पंचम और सप्तम) से संयुक्त नहीं होनी चाहिए।

उदा० कुशलं खलु तुभ्यमेव तद्
वचनं कृष्ण यदभ्यधामहम्।
उपदेशपराः परेष्वपि
स्वविनाशाभिमुखेषु साधवः।।शि० १६।४१।

(इ) औपच्छन्दसिक

परि० पर्यन्ते यौ तथैव शेषमौपच्छन्दसिकं सुधीभिरुक्तम्।

यह वैतालीय के समान ही है। इसमें प्रत्येक चरण के अन्त में रगण और ल, ग के स्थान में रगण और यगण होने चाहिएँ। दूसरे शब्दों में यह वैतालीय ही है, इसमें केवल प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु जोड़ा हुआ है।

उदा०

वपुषा परमेण भूधराणामथ संभाव्यपराक्रमं विभेदे।
मृगमाशु विलोकयांचकार स्थिरदंष्ट्रोग्रमुखं महेन्द्रसूनुः।।

कि० १३।१।

इसी प्रकार इसी सर्ग के अगले बावन श्लोकों में। दे० शि० २० भी।

यह बात ध्यान में रखने की है कि वियोगिनी या सुंदरी तथा अपरवक्त्र, वैतालीय की ही विशेषताएँ हैं, और पुष्पिताग्रा तथा मालभारिणी, औपच्छन्दसिक की। छन्दःशास्त्री वृत्तों की इन दोनों श्रेणियों का प्रतिपादन गणयोजना तथा मात्रा योजना दोनों स्थानों पर करते हैं। इसीलिए यह यहाँ भी दर्शाये गये हैं और अनुभाग (ग) में भी।

(ई) मात्रासमक

मात्रासमक वृत्त में चार चरण होते हैं, और प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ। इसके अत्यन्त सामान्य प्रकार में नवाँ वर्ण लघु और अन्तिम वर्ण दीर्घ होता है। इसकी परिभाषा की है:-मात्रासमकं नवमो ल्गान्त्यः।

परन्तु मात्राओं के ह्रस्व या दीर्घ होने के कारण

इस वृत्त के अनेक भेद हो जाते हैं। उदाहरण के रूप में यदि नवाँ तथा बारहवाँ वर्ण लघु है, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ है, शेष वर्ण ऐच्छिक हैं, तो वह वृत्त वानवासिका कहलाता है। यदि पाँचवाँ, आठवाँ तथा नवाँ ह्रस्व हैं, और पद्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं तो वह वृत्तचित्र कहलाता है। यदि पाचवाँ और आठवाँ वर्ण ह्रस्व हैं, नवाँ, दसवाँ, पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ है तो वह उपचित्रा कहलाता है। यदि पाचवाँ, आठवाँ और बारहवाँ ह्रस्व हैं, पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं, तथा शेष अनिश्चित हैं, तो वह **विश्लोक** कहलाता है। कभी कभी एक ही श्लोक में इन वृत्तों के दो या दो से अधिक भेद मिला दिये जाते हैं, उस अवस्था में हम उसे **पादाकुलक वृत्त** कहते हैं, उसमें कोई विशेष प्रतिबंध भी नहीं रहता है, केवल प्रत्येक चरण में सोलह मात्राओं का होना आवश्यक है।

उदा० मूढ जहीहि धनागमतृष्णां
कुरु तनुबुद्धे मनसि वितृष्णाम् ।।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं
वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ।।
मोह०१

• • •

परिशिष्ट २

संस्कृत के प्रसिद्ध लेखकों का काल आदि

आर्यभट्ट- एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्, जन्मकाल ४७६ ई०।

उद्भट- अलंकारशास्त्र का एक प्राचीन लेखक। यह काश्मीर के राजा जयापीड की राज्यसभा का मुख्य पंडित था। इसका काल ७७९ से ८१३ ई० तक है।

कय्यट- पतंजलिकृत महाभाष्य पर भाष्यप्रदीप नामक टीका का रचयिता। डाक्टर बुह्लर के मतानुसार यह तेरहवीं शताब्दी से पूर्व नहीं हुआ था।

कल्हण- राजतरंगिणी नामक राजाओं के इतिहास की प्रसिद्ध पुस्तक का रचयिता। यह काश्मीर के राजा जय सिंह का, जिसने ११२९ से ११५० ई० तक राज्य किया, समकालीन था।

कालिदास- अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र, रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत और ऋतुसंहार का रचयिता। इसके अतिरिक्त 'नलोदय' तथा अन्य कई छोटे-छोटे काव्यों के रचयिता। कालिदास का सबसे पहला अधिकृत उल्लेख हमें ६३४ ई० (तदनुसार ५५६ शाके) के शिलालेख में मिलता है। इसमें कालिदास और भारवि दोनों को प्रसिद्ध कवि बतलाया गया है। श्लोक यह है:-

येनायोजि न वेश्म,
स्थिरमर्थविधौ विवेकना जिनवेश्म।
स विजयतां रविकीर्तिः
कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः।।

हर्षचरित के आरंभ में बाण ने कालिदास का उल्लेख किया है। इससे प्रतीत होता है कि कालिदास बाण से पहले अर्थात् सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध से पहले हुआ था। परन्तु सातवीं शताब्दी से कितना पूर्व-इस बात का अभी तक पता नहीं लग सका। मेघदूत के चौदहवें श्लोक की व्याख्या करते हुए मल्लिनाथ ने निचुल और दिङ्नाग को कालिदास का समकालीन बताया है। यदि मल्लिनाथ के इस सुझाव को जिसकी सत्यता में पूरा-पूरा सन्देह है, सही मान लिया जाय तो हमारा कवि कालिदास अवश्य ही छठी शताब्दी के मध्य में रहा होगा। यही काल दिङ्नाग का माना जाता है।

एक बात और है, यदि इसका ठीक निर्णय हो जाय तो कवि के जन्मकाल का ही ज्ञान हो जाय। यह बात है कालिदास द्वारा अपने अभिभावक के रूप में विक्रम का उल्लेख। यह कौन सा विक्रम है, इस बात का अभी पूरी तरह निर्णय नहीं हो पाया है। प्रचलित परंपरा के अनुसार वह विक्रम संवत् का जो ईसा से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ, प्रवर्तक था। यदि इस विचार को सही समझा जाय तो कालिदास निश्चय ही ईसा से पूर्व पहली शताब्दी में हुआ होगा। परन्तु कुछ विद्वान् अभी इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि जिसे हम विक्रम संवत् (ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) कहते हैं वह कोरूर के महायुद्ध के काल के आधार पर बना है। इस युद्ध में विक्रम ने ५४४ ई० में म्लेच्छों को पराजित किया था। और उस समय ६०० वर्ष पीछे ले जाकर (अर्थात् ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) इसका नामकरण किया। यदि यह मत यथार्थ मान लिया जाय- विद्वान् लोग अभी इस बात पर एकमत दिखाई नहीं देते-तो कालिदास छठी शताब्दी में हुए हैं। अभी इस प्रश्न का पूरा समाधान नहीं हो सका है।

क्षेमेन्द्र- काश्मीर का एक प्रसिद्ध कवि, समयमातृका तथा कई अन्य पुस्तकों का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ।

जगद्धर-एक प्रसिद्ध टीकाकार। इसने मालतीमाधव और वेणीसंहार पर टीकाएँ लिखीं। यह चौदहवीं शताब्दी के वाद हुआ।

जगन्नाथ पंडित- एक प्रसिद्ध आधुनिक लेखक। उसका प्रसिद्ध ग्रन्थ रसगंगाधर है जिसमें 'काव्य' विषय का विवेचन है। उसकी अन्य कृतियाँ हैं-भामिनीविलास, पाँच लहरियाँ (गंगा, पीयूष, सुधा, अमृत और करुणा) तथा कुछ अन्य छोटी रचनाएँ। ऐसा माना जाता है कि यह दिल्ली के सम्राट् शाहजहाँ के काल में हुआ। इसने जहांगीर के राज्य के अन्तिम दिन तथा १६५८ ई० में दारा का अस्थायी राज्य-सिंहासनारोहण देखा होगा। अतः इसका जन्म-और कुछ नहीं तो कार्य काल तो अवश्य-१६२० तथा १६६० ई० के बीच में रहा होगा।

जयदेव- गीतगोविन्द नामक ललित गीतिकाव्य का प्रणेता। यह बंगाल के वीरभूमि जिले के किंदुविल्व नामक गाँव का निवासी था। कहा जाता है कि यह राजा लक्ष्मणसेन के काल में हुआ जिसकी एकात्मता डॉक्टर बुह्लर ने बंगाल के वैद्य राजा से की है। इसका शिलालेख विक्रम संवत् ११७३ अर्थात् १११६ ई० का मिलता है। अतः कवि बारहवीं शताब्दी में हुआ होगा।

दंडिन्- यह दशकुमारचरित और काव्यादर्श का रचयिता है छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। माधवाचार्य के मतानुसार यह बाण का समकालीन था।

पतंजलि- महाभाष्य का प्रसिद्ध लेखक। कहते हैं कि यह ईसा से लगभग १५० वर्ष पूर्व हुआ।

नारायण- (भट्टनारायण)- वेणीसंहार का रचयिता। यह नवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ होगा, क्योंकि इसकी रचना का उल्लेख आनन्दवर्धन ने अपने ध्वन्यालोक में बहुत बार किया है। यह कवि अवन्तिवर्मा के राज्यकाल ८५५-८८४ ई० (राजतरंगिणी ५।३४) में हुआ।

बाण- हर्षचरित, कादंबरी और चंडिकाशतक का विख्यात प्रणेता। पार्वतीपरिणय और रत्नावली भी इसी की रचना मानी जाती हैं। इसका काल निर्विवाद रूप से इसके अभिभावक कान्यकुब्ज के राजा श्री हर्षवर्धन द्वारा निश्चित किया गया है। जिस समय ह्यून त्सांग ने समस्त भारत में भ्रमण किया उस समय हर्षवर्धन ने ६२६ से ६४५ ई० तक राज्य किया। इसलिए बाण या तो छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में। बाण का काल कई और लेखकों के काल का-न्यूनातिन्यून उनका जिनका कि बाण ने हर्षचरित की प्रस्तावना में उल्लेख किया है- परिचायक है।

बिल्हण-महाकाव्य विक्रमांकदेवचरित तथा चौरपंचाशिका का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भट्टि- यह श्रीस्वामी का पुत्र था। राजा श्रीधरसेन या उसके पुत्र नरेन्द्र के राज्यकाल में श्रीस्वामी वल्लभी में रहा। लैसन के मतानुसार श्रीधर का राज्यकाल ५३० से ५४५ ई० तक था।

भर्तृहरि-शतकत्रय और वाक्यपदीय का रचयिता। तेलंग महाशय के मतानुसार यह ईस्वी सन् की प्रथम शताब्दी के अन्तिम काल में अथवा दूसरी शताब्दी के आरम्भ में हुआ। परंपरा के अनुसार भर्तृहरि विक्रमराजा का भाई था और यदि हम इस विक्रम को वहीं मानें जिसने ५४४ ई० में म्लेच्छों को पराजित किया था, तो हमें समझ लेना चाहिए कि भर्तृहरि छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भवभूति-महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित का रचयिता। यह विदर्भ का मूल निवासी था और कान्यकुब्ज के राजा यशोवर्मा के दरबार में रहता था। काश्मीर के राजा ललितादित्य (६६३ से ७२६ ई०) ने इसे परास्त किया था। अतः भवभूति सातवीं शताब्दी के अन्त में हुआ। बाण ने इसके नाम का उल्लेख नहीं किया, अतः यह काल सुसंगत है। कालिदास और भवभूति की समकालीनता के उपाख्यान निरे उपाख्यान होने के कारण स्वीकार्य नहीं है।

भारवि- किरातार्जुनीय काव्य का रचयिता। ६३४ ई० के एक शिलालेख में इसका उल्लेख कालिदास के साथ किया गया है। देखो कालिदास।

भास- वाण और कालिदास ने इसे अपना पूर्ववर्ती वताया है अतः यह सातवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ।

मम्मट- काव्यप्रकाश का रचयिता। यह १२६४ ई० से पूर्व ही हुआ है क्योंकि १२६४ ई० में तो जयन्त ने काव्यप्रकाश पर 'जयन्ती' नामक टीका लिखी है।

मयूर- यह बाण का श्वसुर था। इसने अपने कुष्ठ से मुक्ति पाने के लिए सूर्यशतक की रचना की। यह वाण का समकालीन था।

मुरारि- अनर्घराघव नाटक का रचयिता। रत्नाकर कवि ने (जो नवीं शताब्दी में हुआ) अपने हरविजय ३८।६७ में इसका उल्लेख किया है। अतः इसे नवीं शताब्दी से पूर्व का ही समझना चाहिए।

रत्नाकर- हरविजय नामक महाकाव्य का रचयिता। अवन्तिवर्मा (८५५-८८४ ई० तक) इस कवि के आश्रयदाता थे।

राजशेखर- वालरामायण, वालभारत और विद्धशालभंजिका का रचयिता। यह भवभूति के पश्चात् दसवीं शताब्दी के अन्त से पूर्व हुआ, अर्थात् यह सातवीं शताब्दी के अन्त और दसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ।

वराहमिहिर- एक प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्, वृहत्संहितानामक पुस्तक का रचयिता।

विक्रम- देखो कालिदास।

विशाखदत्त- मुद्राराक्षस का रचयिता। इस नाटक की रचना का काल तेलंग महाशय के अनुसार सातवीं या आठवीं माना जाता है।

शंकर- वेदान्त दर्शन का प्रसिद्ध आचार्य, तथा शारीरिक भाष्य का प्रणेता। इसके अतिरिक्त वेदान्त विषय पर इसकी अनेक रचनाएँ हैं। कहते हैं कि यह ७८८ ई० में उत्पन्न हुआ और ३२ वर्ष की थोड़ी आयु में ही ८२० ई० में परलोकवासी हुआ। परन्तु कुछ विद्वान् लोगों (तैलंग महाशय तथा डॉक्टर भंडारकर आदि) ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि यह छठी या सातवीं शताब्दी में हुआ होगा। मुद्राराक्षस की प्रस्तावना देखिये।

श्रीहर्ष- यह नैषधचरित का प्रसिद्ध रचयिता है। इसके अतिरिक्त इसकी अन्य आठ दस रचनाएँ भी मिलती हैं। इसे प्रायः बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ मानते हैं। विल्सन कहता है कि १२१३ ई० में अपने पिता कलश के पश्चात् श्रीहर्ष राजगद्दी पर बैठा। अतः रत्नावली नाटिका जो इस राजा द्वारा लिखित मानी जाती है अवश्य अपने राज्य काल के अन्त में १११३ से ११२५ के मध्य लिखी गई होगी। परन्तु 'रत्नावली' को इसके पूर्व का ही मानना पड़ेगा क्योंकि दशरूप में इसके अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं और दशरूप दशवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में रचा गया।

सुबन्धु- वासवदत्ता का रचयिता। इसका उल्लेख बाण ने किया है। अतः यह सातवीं शताब्दी के बाद का नहीं। इसने धर्मकीर्ति द्वारा लिखित बौद्धसंगति नामक एक रचना का उल्लेख किया है। यह पुस्तक छठी शताब्दी में लिखी गई थी।

हर्ष- बाण का अभिभावक। ऐसा समझा जाता है कि रत्नावली नाटक बाण ने लिखा और अपने अभिभावक के नाम से प्रकाशित कराया।

• • •

परिशिष्ट ३

प्राचीन भारतवर्ष के महत्त्वपूर्ण भौगोलिक नाम

अंग- गंगा के दक्षिणी तट पर स्थित एक महत्त्वपूर्ण राज्य। इसकी राजधानी चंपा थी, जो अंगपुरी भी कहलाता था। यह नगर शिलाद्वीप के पश्चिम में लगभग २४ मील की दूरी पर विद्यमान था। इसीलिए यह या तो वर्तमान भागलपुर था, अथवा उसके कहीं अत्यंत निकट स्थित था।

अंध्र- एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह वर्तमान तेलंगण ही माना जाता है। गोदावरी का मुहाना अंध्रों के अधिकार में था। परन्तु इसकी सीमाएँ संभवतः पश्चिम में घाट, उत्तर में गोदावरी, तथा दक्षिण में कृष्णा नदी थी। कलिंग देश इसकी एक सीमा था (देखो दश० ७ वाँ उल्लास)। इसकी राजधानी अंध्रनगर संभवतः प्राचीन वेंगी या वेगी थी।

अवंति- नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित एक देश। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी जिसे अवंतिपुरी या अवंति और विशाला (मेघ० ३०) भी कहते थे। यह शिप्रा नदी के तट पर स्थित थी। मालवा देश का पश्चिमी भाग है। महाभारत काल में यह देश दक्षिण में नर्मदातट तक तथा पश्चिम में मही के तटों तक फैला हुआ था। अवंति के उत्तर में एक दूसरा राज्य था जिसकी राजधानी चर्मण्वती नदी के तट पर स्थित दसपुर थी, यह ही वर्तमान धौलपुर प्रतीत होता है। यह रन्तिदेव की राजधानी थी।

अम्मक- त्रावणकोर का पुराना नाम।

आनर्त- देखो सौराष्ट्र।

इन्द्रप्रस्थ- (हरिप्रस्थ या शक्रप्रस्थ भी कहलाता है) इसी नगर की वर्तमान दिल्ली से एकरूपता मानी जाती है। यह नगर यमुना के बाईं ओर बसा हुआ था, जब कि वर्तमान दिल्ली दाईं ओर स्थित है।

उत्कल या ओड्र- एक देश का नाम। वर्तमान उड़ीसा जो ताम्रलिप्त के दक्षिण में स्थित है और कपिशा नदी तक फैला हुआ है- तु० रघु ४।३८। इस-प्रांत के मुख्य नगर कटक और पुरी हैं जहाँ कि जगन्नाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है।

कनखल- हरद्वार के निकट एक ग्राम का नाम है। यह शैवालिक पहाड़ी के दक्षिणी भाग पर गंगा के किनारे बसा हुआ है। वहाँ के आसपास का पहाड़ भी कनखल कहलाता है।

कपिशा दे०- 'सुह्म' के अन्तर्गत।

कलिंग- एक देश का नाम जो उड़ीसा के दक्षिण में स्थित है और गोदावरी के मुहाने तक फैला हुआ है। ब्रिटिशकाल की उत्तरी सरकार से इसकी एकरूपता स्थापित की जाती है। इसकी राजधानी कलिंग नगर प्राचीन काल में समुद्रतट से (तु० दश० ७ वाँ उल्लास) कुछ दूरी पर संभवतः राजमहेन्द्री में थी। दे० 'अंध्र' भी।

कांची- दे० 'द्रविड' के अन्तर्गत।

कामरूप- एक महत्त्वपूर्ण राज्य जो करतोया या सदानीरा के तट से लेकर आसाम की सीमा तक फैला हुआ है। यह उत्तर में हिमालय पर्वत तक तथा पूर्व में चीन की सीमा तक फैला हुआ होगा, क्योंकि यहाँ के राजा ने किरात और चीन की सेना के साथ दुर्योधन की सहायता की थी। इस राज्य की प्राचीन राजधानी लौहित्य या ब्रह्मपुत्र नदी के दूसरी ओर प्राग्ज्योतिष थी। तु० रघु० ४।८१।

कांबोज- एक देश और उसके अधिवासियों का

नाम। यह हिन्दुकुश पहाड़ के उस प्रदेश पर रहते होंगे जहाँ यह बलख से गिलगित को पृथक् करता है, तथा तिब्बत और लद्दाख तक फैला हुआ है। यह प्रदेश घोड़ों के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ पर बकरी आदि जानवरों की ऊन से शाल भी बनाये जाते थे। इसके अतिरिक्त यहाँ अखरोट के वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। तु० रघु० ४।६१।

कुंतल- चोल देश के उत्तर में स्थित एक देश। ऐसा प्रतीत होता है कि कुरुगदे के दक्षिण में कल्याण या कोलियन दुर्ग इस प्रदेश की राजधानी थी। यह देश हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिमी भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

कुरुक्षेत्र- दिल्ली के निकट एक विस्तृत प्रदेश। यहीं कौरव और पांडवों के मध्य महासंग्राम हुआ था। यह थानेश्वर के दक्षिण में इसी नाम के पवित्र सरोवर के निकट एक प्रदेश है जो सरस्वती के दक्षिणी से लेकर दृषद्वती के उत्तर तक फैला हुआ है। कभी कभी इस स्थान को 'समंतपंचक' नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ है परशुराम द्वारा वध किये गए क्षत्रियों के रक्त के 'पाँच पोखर'।

कुलूत- एक देश का नाम- वर्तमान कुल्लू प्रदेश। यह प्रदेश जलंधर दोआब से उत्तरपूर्व की ओर शतद्रु (सतलुज) नदी के दाईं ओर स्थित है।

कुशावंती या कुशस्थली- यह दक्षिणकोशल प्रदेश की राजधानी है और बिंध्यपर्वत की संकीर्ण घाटी में स्थित है। यह नर्मदा के उत्तर में परन्तु विंध्यपर्वत के दक्षिण में होगा। संभवतः यह वही स्थान है जिसे बुंदेलखंड में हम रामनगर कहते हैं। राजशेखर इस कुशस्थली के स्वामी को मध्यदेशनरेन्द्र अर्थात् मध्यभूमि या बुंदेलखंड का राजा कहते हैं।

केकय- सिंधुदेश की सीमा बनाने वाला केकय एक देश का नाम है।

केरल- कावेरी के उत्तरी समुद्र तथा पश्चिमी घाट की मध्यवर्ती भूमि की लंबी पट्टी। इस प्रदेश की मुख्य नदियाँ हैं नेत्रवती, सरावती तथा कालीनदी। यह काली नदी ही मुरला नदी समझी जाती है। इसका उल्लेख रघु० ४।५५ तथा उत्तर० ३ में किया गया है, यही केरलप्रदेश की मुख्य नदी है। केरल प्रदेश वर्तमान कानड़ा प्रदेश है जिसके साथ संभवतः मलाबार भी जुड़ा हुआ है और कावेरी से परे तक फैला हुआ है।

कोशल- एक प्रदेश का नाम जो रामायण के अनुसार सरयू नदी के तटों के साथ-साथ बसा हुआ है। इसके दो भाग हैं- उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल। उत्तर कोशल का नाम 'गन्द' है और यह अयोध्या के उत्तरी प्रदेश को प्रकट करता है जिसमें गन्द तथा बहरायच सम्मिलित हैं। अज, तथा दशरथ आदि राजाओं ने इसी प्रान्त पर राज्य किया। राम की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र कुश ने तो बिंध्यपर्वत की संकीर्ण घाटी में स्थित दक्षिणी कोशल की कुशावती राजधानी में राज्य किया, और लव ने उत्तरी कोशल में स्थित श्रावस्ती में रहकर राज्य किया।

कौशांबी- वत्स देश की राजधानी का नाम है। यह नगर इलाहाबाद से लगभग तीस मील दूरी पर वर्तमान कोसम के निकट स्थित था।

कौशिकी- एक नदी (कुसी) का नाम जो उत्तरी भागलपुर तथा पश्चिमी पूर्णिया से होती हुई दरभंगा के पूर्व में बहती है। इस नदी के तटों के निकट ऋष्यशृंग ऋषि का आश्रम था।

गौड या पुंड्र- उत्तरी बंगाल। (पुंड्र मूलरूप से 'पूरी' के वेतस प्रदेश को कहते हैं)।

चेदि- एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। चेदियों को दाहल और त्रैपुर भी कहते हैं। यह लोग नर्मदा के उत्तरी तट पर बसे हुए थे, यह वही लोग थे जिन्हें हम दशार्ण कहते हैं। एक समय इनकी राजधानी त्रिपुरी थी। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि यह लोग

मध्यभारत के वर्तमान बुन्देलखण्ड में रहते थे, कुछ लोग यह समझते हैं कि इनका देश वर्तमान चन्दसिल था। जबलपुर से नीचे भेरा घर के आसपास विंध्य और रिक्ष पर्वतों के मध्य में नर्मदा के किनारे पर स्थित माहिष्मती नगरी में हैहय या कलचुरी लोग राज्य करते थे।

चोल- एक देश का नाम जो कावेरी के तट पर बसा हुआ है यह मैसूर प्रदेश का दक्षिणी भाग है। यह प्रदेश कावेरी के परे है। पुलकेशिन् द्वितीय ने इस नदी को पार करके इस देश पर आक्रमण किया था। यही देश बाद में कर्णाटक कहलाने लगा।

जनस्थान- (मानव वसति) यह दण्डक के महावन का एक भाग है और प्रस्रवण नामक पर्वत के निकट स्थित है। प्रसिद्ध पंचवटी (स्थानीय परम्परा के अनुसार इसी नाम का एक स्थान जो वर्तमान नासिक से लगभग दो मील दूर है) का स्थान इसी प्रदेश में विद्यमान है।

जालन्धर- वर्तमान जालन्धर दोआब। शतद्रु और विपाशा (सतलुज और व्यास) से सिंचित प्रदेश।

ताम्रपर्णी- मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम। यह वही नदी प्रतीत होती है जिसे आजकल तांब्रवारी कहते हैं, जो पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान से निकलकर तिन्नेवली जिले में से होती हुई मनार की खाड़ी में गिर जाती है, तु० रघु० ४।४९-५०, और बा० रा० १०।५६।

ताम्रलिप्त- दे० 'सुह्म' के अन्तर्गत।

त्रिगर्त- प्राचीन काल का एक अत्यन्त जलहीन मरु प्रदेश। यह सतलुज का पूर्ववर्ती मरुस्थल था। सरस्वती और सतलुज का मध्यवर्ती भाग भी इसमें सम्मिलित था। उत्तर में लुधियाना और पटियाला है तथा मरुस्थल का कुछ भाग दक्षिण में है।

त्रिपुर-री- चेदि देश की राजधानी 'चन्द्रदुहिता अर्थात् नर्मदा की तरंगों से शब्दायमान' अतएव इस नदी के किनारे स्थित। जबलपुर से ६ मील की दूरी पर स्थित वर्तमान तिबुर को ही त्रिपुर माना जाता है।

दशपुर- दे० 'अवन्ति' के अन्तर्गत।

दशार्ण- एक देश का नाम जिसमें से दशार्ण (दसन) नाम की नदी बहती है। यह मालवा का पूर्वी भाग था। इसकी राजधानी विदिशा नगरी थी जिसे वर्तमान भिलसा माना जाता है। यह वेत्रवती या बेतवा नदी के तट पर स्थित है, तु० मेघ० २४।२५, और कादंबरी। कालिदास ने भी विदिशा नाम की एक नदी का उल्लेख किया है जो संभवतः वही है जिसे हम आजकल ब्यास कहते हैं तथा जो बेतवा में मिल जाती है।

द्रविड- कृष्णा और पोलर नदियों के मध्यवर्ती जंगली भाग के दक्षिण में स्थित कोरोमंडल का समस्त समुद्रीतट इसमें सम्मिलित है। परन्तु यदि सीमित रूप से देखें तो यह प्रदेश कावेरी से परे नहीं फैला है। इसकी राजधानी कांची थी जिसे आजकल कांजीवरम् कहते हैं और जो मद्रास के ४२ मील दक्षिण-पश्चिम में वेगवती नदी के किनारे स्थित है।

द्वारका- दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

निषधा- एक देश का नाम जहाँ नल का राज्य था। इस की राजधानी अलका थी जो अलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तरी भारत का वर्तमान कुमायूं प्रदेश इसका एक भाग था। यह एक वर्षपर्वत का नाम भी है।

पंचवटी- दे० 'जनस्थान' के अन्तर्गत।

पंचाल- एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। राजशेखर के अनुसार (बा० रा० १०।८६) यह प्रदेश गंगा यमुना का मध्यवर्ती भाग था, इसीलिए यह गंगा दोआब कहलाता था। द्रुपद के काल में यह प्रदेश चर्मण्वती (चंबल) के तट से लेकर उत्तर में गंगाद्वार तक फैला हुआ था। भागीरथी का उत्तरीभाग उत्तरपंचाल कहलाता था। और इसकी राजधानी

अहिच्छत्र थी। इस प्रदेश का दक्षिणीभाग 'दक्षिणपंचाल' कहलाता था जो द्रुपद की मृत्यु के पश्चात् हस्तिनापुर की राजधानी में विलीन हो गया।

पद्मपुर- भवभूति कवि की जन्मभूमि। यह नगर नागपुर जिले में चन्द्रपुर (वर्तमान चाँदा) के निकट कहीं पर बसा हुआ था।

पद्मावती- मालवाप्रदेश में सिन्धु नदी के तट पर स्थित वर्तमान नरवाड़ से इसकी एकरूपता मानी जाती है। इसके आस-पास और दूसरी नदियाँ पारा या पार्वती, लूण और मधुवर हैं जिनका भवभूति ने पारा लावणी और मधुमती के नाम से उल्लेख किया है यह नगर के आसपास बहने वाली नदियाँ हैं। भवभूति के मालतीमाधव का वर्णित दृश्य यह नगर है।

पंपा- एक प्रसिद्ध सरोवर का नाम जो आजकल पेत्रसिर कहलाता है। इसके निकट ही ऋष्यमूक पर्वत विद्यमान है। इस नाम की नदी सरोवर से निकली है; विशेषकर इसका उत्तरीभाग चन्द्रदुर्ग के मध्यवर्ती शिलासरोवर से निकला है। यही संभवतः मूल पंपा था और चन्द्रदुर्ग ही ऋष्यमूक पर्वत। बाद में यह नाम इस सरोवर से नदी में परिवर्तित हो गया जो इससे निकली।

पाटलिपुत्र- गंगा और शोण नदी के संगम पर स्थित उत्तरी बिहार या मगध में एक महत्त्वपूर्ण नगर। यह 'कुसुमपुर' या 'पुष्पपुर' भी कहलाता था। संस्कृत के लौकिक साहित्य में इस नाम का उल्लेख मिलता है। कहते हैं कि लगभग अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यह नगर एक नदी की बाढ़ की चपेट में आकर नष्ट हो गया।

पांड्य- भारत के बिल्कुल दक्षिण में स्थित एक देश को चोलदेश के दक्षिण-पश्चिम में विद्यमान है। मलयपर्वत और ताम्रपर्णी नदी का स्थान निर्विवाद रूप से निश्चत हो चुका है, तु० बा० रा० २।३१। इस प्रदेश की वर्तमान तिन्नेवली से एकरूपता स्थापित की जा सकती है। रामेश्वर का पावनद्वीप इसी राज्य के अन्तर्गत है। कालिदास ने पांड्यदेश की राजधानी का नाम 'नाग-नगर' बताया है। जो संभवतः मद्रास से १६० मील दक्षिण में वर्तमान 'नागपत्तन' ही है, तु० रघु० ६।५९-६४।

पारसीक- पर्शिया देश के रहने वाले लोग। संभवतः यह शब्द उन जातियों के लिए भी व्यवहार में आता था जो भारत की उत्तरपश्चिमी सीमा में सीमावर्ती जिलों में रहते हैं। इनके देश से 'वनायुदेश्य' नाम से घोड़ों के आने का उल्लेख मिलता है।

पारियात्र- भारत की एक मुख्य पर्वतशृंखला। संभवतः यह वही है जिसे हम शिवालिक पहाड़ कहते हैं और जो हिमालय के समानान्तर उत्तर पूर्व में गंगा के दोआब की रक्षा करता है।

प्रतिष्ठान- पुरूरवस् की राजधानी। पुरूरवा एक प्राचीनकाल का चन्द्रवंशी राजा था। यह स्थान प्रयाग या इलाहाबाद के सामने स्थित था। हरिवंश पुराण में बताया गया है कि यह स्थान प्रयाग के जिले में गंगा नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ था। कालिदास ने इसे गंगा यमुना के संगम पर स्थित बतलाया है। तु० विक्रम० २।

मगध- दक्षिणी बिहार या मगध का देश। इसकी पुरानी राजधानी गिरिव्रज (या राजगृह) थी। इसमें पाँच पर्वत-विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, शोणगिरि और वैभार (व्याहार) गिरि सम्मिलित थे। इसकी दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र थी। परवर्ती साहित्य में मगध का नाम कीकट भी आया है।

मत्स्य या विराट- धौलपुर के पश्चिम में स्थित देश। कहा जाता है कि पांडव लोग दशार्ण के उत्तर में शौरसेन तथा रोहितक के भूभाग से होते हुए यमुना के तट इस प्रदेश में आये थे। विराट देश की राजधानी संभवतः वैराट ही थी जो आजकल जयपुर से ४० मील उत्तर में बैरात के नाम से विख्यात है।

मलय- भारत की सात मुख्य पर्वत शृंखलाओं में से एक। इसकी एकरूपता संभवतः मैसूर के दक्षिण में फैले हुए घाट के दक्षिणी भाग से की जाती है जो ट्रावनकोर की पूर्वी सीमा बनाता है। भवभूति के कथनानुसार यह प्रदेश कावेरी से घिरा हुआ है (महावीर० ५।३ तथा लघु० ४।४६)। कहते हैं कि यहाँ इलायची, काली मिर्चें, चंदन और सुपारी के वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। रघु० ४।५१ में कालिदास ने बतलाया है कि मलय और दर्दुर यह दो पर्वत दक्षिणी प्रदेश के दो वक्षःस्थल हैं। अतः दर्दुर घाट का वह भाग है जो मैसूर की दक्षिणपूर्वी सीमा बनाता है।

महेन्द्र- भारत की सात मुख्य पर्वतशृंखलाओं में से एक। वर्तमान महेन्द्रमाले से इसकी एकरूपता स्थापित की जाती है जो कि महानदी की घाटी से गंगा को विभक्त करता है। संभवतः इसमें महानदी और गोदावरी का मध्यवर्ती समस्त पूर्वी घाट सम्मिलित था।

महोदय- (कान्यकुब्ज या गाधिनगर) यह वही प्रदेश है जो गंगा के किनारे वर्तमान कन्नौज नाम से विख्यात है। सातवीं शताब्दी में यह नगर भारत का अत्यंत प्रसिद्ध स्थान था। तु० बा० रा० १०।८८-८६।

मानस- एक सरोवर का नाम है जो हाटक में स्थित था, जिसे आज कल लद्दाख कहते हैं। हाटक के उत्तर में उत्तरी कुरुओं का देश है जिसका नाम हरिवर्ष है। पूर्वकाल में यह सरोवर किन्नरों के आवास के रूप में विख्यात था। कवियों की उक्ति के अनुसार वर्षा ऋतु के आरम्भ में हंस प्रतिवर्ष यहीं आकर शरण लेते थे।

माहिष्मती- दे० 'चेदि' के अन्तर्गत।

मिथिला- दे० 'विदेह' के अन्तर्गत।

मुरल- दे० 'केरल' के अन्तर्गत।

मेकल- अमरकण्टक नाम का पर्वत जहाँ से नर्मदा नदी निकलती है।

लाट- एक देश का नाम जो नर्मदा के पश्चिम में फैला हुआ था। इसमें सम्भवतः ब्रोच, बड़ौदा और अहमदाबाद सम्मिलित थे। कुछ के मतानुसार खैर भी इसी में सम्मिलित था।

बंग- (समतट) पूर्वी बंगाल का एक नाम (उत्तरी बंगाल या गौड देश से बिल्कुल भिन्न है) इसमें बंगाल का समुद्रतट भी सम्मिलित है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी समय तिप्पड़ा और गैरो पहाड़ भी इसमें सम्मिलित थे।

वलभी- दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

वाहीक, वाहीक- पंजाब में रहने वाली जातियों का सामान्य नाम। इनका देश वर्तमान बलख है। कहते हैं कि वे पंजाब के उस भाग में रहते थे जिसे सिन्धु नदी तथा पंजाब की अन्य पाँच नदियाँ सींचती हैं, परन्तु भारत की पुण्य भूमि से यह बाहर था। यह देश घोड़ो और हींग के कारण प्रसिद्ध है।

विदर्भ- वर्तमान वरार देश। प्राचीन काल में कुंतल के उत्तर में स्थित यह एक बड़ा राज्य था जो कृष्णा के तट से लेकर लगभग नर्मदा के तट तक फैला हुआ था। विशालकाय होने को कारण इसका नाम महाराष्ट्र भी था, तु० बा० रा० १०।७४। कुण्डिनपुर जिसे विदर्भ भी कहते हैं इस देश की प्राचीन राजधानी थी। इसी को संभवतः आजकल बीदर कहते हैं। विदर्भ देश को वरदा नदी ने दो भागों में विभक्त कर दिया है, उत्तरी भाग की राजधानी अमरावती है, तथा दक्षिणी भाग की प्रतिष्ठान।

विदिशा- दे० 'दशार्ण' के अन्तर्गत।

विदेह- मगध के पूर्वोत्तर में विद्यमान एक देश। इसकी राजधानी मिथिला थी जो अब मधुवनी के उत्तर में नैपाल में जनकपुर नाम से विख्यात है। प्राचीनकाल में विदेह के अन्तर्गत, नैपाल के एक भाग के अतिरिक्त वह सब स्थान जो अब सीतामढ़ी सीताकुंड अथवा तिरहुत के पुराने जिले का उत्तरी भाग और चम्पारन का उत्तर पश्चिमी भाग कहलाता है, इसमें सम्मिलित थे।

विराट- दे० 'मत्स्य'।

वृन्दावन- 'राधा का वन' आज कल मथुरा से कुछ मील उत्तर में एक नगर के रूप में बसा हुआ स्थान। यह यमुना के बायें किनारे स्थित है।

शक- एक जनजाति का नाम जो भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमांत पर बसी हुयी थी। संस्कृत के श्रेष्ठ साहित्य में इसका उल्लेख मिलता है। सिथियंस से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

शुक्तिमत्- भारत की सात प्रमुख पर्वतशृंखलाओं में से एक। इसकी सही स्थिति का अभी कुछ निर्णय नहीं हो पाया है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नैपाल के दक्षिण में यह हिमालय पर्वत की एक शाखा है।

श्रावस्ती- उत्तरी कोशल में स्थित एक नगर का नाम जहाँ, कहते हैं कि लव राज्य किया करता था (रघु० १५।९७ में इसीको 'शरावती' का नाम दिया है)। अयोध्या के उत्तर में वर्तमान साहेत माहेत से इसकी एकरूपता मानी जाती है। यह नगर धर्मपत्तन या धर्मपुरी भी कहलाता है।

सह्य- भारत की सात प्रमुख पर्वत शृंखलाओं में से एक। आज कल इसी का नाम सह्याद्रि है। पश्चिमी घाट जो मलय के उत्तर में नीलगिरि के संगम तक फैला है, ही सह्याद्रि है।

सिंधु- दे० 'पद्मावती' के अन्तर्गत।

सिंधुदेशः- वर्तमान सिंध प्रदेश जो सिंधु नदी का ऊपरी भाग है।

सुह्म- एक देश का नाम जो वंग के पश्चिम में स्थित है। इसकी राजधानी ताम्रलिप्त (जिसे तामलिप्त, दामलिप्त, ताम्रलिप्ति तथा तमालिनी भी कहते हैं) की एकरूपता वर्तमान तमलूक से की जाती है। तमलूक कोसी नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इस कोसी का नाम ही कालिदास ने 'कपिशा' लिखा है। प्राचीन काल में यह नगर समुद्र के अधिक निकट बसा हुआ था। यहाँ पर ही अधिकांश समुद्री व्यापार किया जाता था। सुह्म लोगों को ही कभी कभी राढ के नाम से पुकारते थे, (अर्थात् पश्चिमी बंगाल के लोग)।

सौराष्ट्र- (आनर्त) काठियावाड़ का वर्तमान प्रायद्वीप। द्वारका आनर्तनगरी या अब्धिनगरी कहलाती थी। पुरानी द्वारका वर्तमान द्वारका से दक्षिण पूर्व में ९५ मील स्थित मधुपुर नामक नगर के निकट बसी हुई थी। यह स्थान रैवतक पर्वत के निकट था। ऐसा ज्ञात होता है कि यही वह स्थान है जिसे जूनागढ का निकटवर्ती गिरिनार पर्वत कहते हैं। इस देश की दूसरी राजधानी वलभी प्रतीत होती है। इस नगर के खंडहर भावनगर से उत्तर पश्चिम में १० मील की दूरी पर बिल्वी नामक स्थान पर पाये गये हैं। प्रभास नामक प्रसिद्ध सरोवर इसी देश में समुद्रतट पर स्थित था।

स्रुघ्न- पाटलिपुत्र से थोड़ी दूरी पर यह एक नगर तथा जिला था। यमुना के पुराने तल के तट पर स्थित वर्तमान 'सुंग' से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

हस्तिनापुर- 'हस्तिन्' नाम का भरतवंश में एक प्रतापी राजा था। उसने ही इस प्रसिद्ध नगर को बसाया था। वर्तमान दिल्ली के उत्तरपूर्व में ५६ मील की दूरी पर यह नगर गंगा की एक पुरानी नहर के किनारे बसा हुआ है।

हेमकूट- 'स्वर्णशिखर' पर्वत। यह पर्वत उस पर्वत शृंखला में से एक है जो इस महाद्वीप को सात वर्षों (वर्ष पर्वत) में बाँटती है। बहुधा ऐसा माना जाता है कि यह पर्वत हिमालय के उत्तर में-या हिमालय और मेरु के बीच में स्थित है तथा किन्नरों के प्रदेश (किंपुरुषवर्ष) की सीमा बनाता है। तु० का० १३६। कालिदास इसके विषय में कहता है-"यह पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों में डूबा है और सुनहरी पानी का स्रोत है" दे० श० ७।

• • •

परिशिष्ट ४

संख्या		पूरणी संख्या पुँ० तथा नपुं०	पूरणी संख्या स्त्री०
१	एकः	प्रथमः-मम्	प्रथमा
२	द्विः	द्वितीयः-यम्	द्वितीया
३	त्रिः	तृतीयः-यम्	तृतीया
४	चतुर्	चतुर्थ*तुरीय, तुर्य	चतुर्थी, तुरीया, तुर्या
५	पञ्चन्	पंचम*	पंचमी
६	षष्	षष्ठ	षष्ठी
७	सप्तन्	सप्तम	सप्तमी
८	अष्टन्	अष्टम	अष्टमी
९	नवन्	नवम	नवमी
१०	दशन्	दशम	दशमी
११	एकादशन्	एकादश	एकादशी
१२	द्वादशन्	द्वादश	द्वादशी
१३	त्रयोदशन्	त्रयोदश	त्रयोदशी
१४	चतुर्दशन्	चतुर्दश	चतुर्दशी
१५	पंचदशन्	पंचदश	पंचदशी
१६	षोडशन्	षोडश	षोडशी
१७	सप्तदशन्	सप्तदश	सप्तदशी
१८	अष्टादशन्	अष्टादश	अष्टादशी
१९	नवदशन्	नवदश	नवदशी
	अथवा		
	एकोनविंशति (स्त्री०)	एकोनविंश	एकोनविंशी
	अथवा	एकोनविंशतितम	एकोनविंशतितमी
	ऊनविंशति	ऊनविंश, ऊनविंशतितम	ऊनविंशी
	अथवा		ऊनविंशतितमी
	एकान्नविंशति	एकान्नविंश, एकान्नविंशतितम	एकान्नविंशी
			एकान्नविंशतितमी

* पूरण के अर्थ में षट्, कतिपय तथा चतुर् शब्दों में डट् प्रत्यय जुड़ने पर उन्हें थुक् आगम होता है (षट्कतिकतिपयचतुरां थुक्)। चतुर् शब्द में पूरण अर्थ में छ और यत् प्रत्यय भी लगते हैं आद्य अक्षर 'च' का लोप हो जाता है (चतुरश्छयतावाद्यक्षरलोपश्च)। इस प्रकार तुरीय और तुर्य रूप बनते हैं।

* नान्तसंख्यावाची शब्दों में पूरण के अर्थ में डट् प्रत्यय जुड़ने पर उसे मट् आगम होता है (नान्तादसंख्यादेर्मट्)

२०	विंशति	विंश* विंशतितम	विंशी, विंशतितमी
२१	एकविंशति	एकविंश, एकविंशतितम	एकविंशी एकविंशतितमी
२२	द्वाविंशति	द्वाविंश, द्वाविंशतितम	द्वाविंशी द्वाविंशतितमी
२३	त्रयोविंशति	त्रयोविंश, त्रयोविंशतिमम	त्रयोविंशी त्रयोविंशतितमी
२४	चतुर्विंशति	चतुर्विंश, चतुर्विंशतितम	चतुर्विंशी चतुर्विंशतिमी
२५	पंचविंशति	पंचविंश, पंचविंशतितम	पंचविंशी पंचविंशतितमी
२६	षड्विंशति	षड्विंश, षड्विंशतितम	षड्विंशी षड्विंशतितमी
२७	सप्तविंशति	सप्तविंश, सप्तविंशतितम	सप्तविंशी सप्तविंशतितमी
२८	अष्टाविंशति	अष्टाविंश	अष्टाविंशी अष्टाविंशतितमी
२६	नवविंशति	नवविंश	नवविंशी
	अथवा	नवविंशतितम	नवविंशतितमी
	एकोनत्रिंशत्	एकानत्रिंश, एकोनत्रिंशत्तम	एकोनत्रिंशी
	अथवा		एकोनत्रिंशत्तमी
	ऊनत्रिंशत्	ऊनत्रिंश, ऊनत्रिंशत्तम	ऊनत्रिंशी
	अथवा		ऊनत्रिंशत्तमी
	एकात्रत्रिंशत्	एकात्रत्रिंश, एकात्रत्रिंशत्तम	एकात्रत्रिंशी एकात्रत्रिंशत्तमी
३०	त्रिंशत्	त्रिंश, त्रिंशत्तम	त्रिंशी, त्रिंशत्तमी
३१	एकत्रिंशत्	एकत्रिंश एकत्रिंशत्तम	एकत्रिंशी एकत्रिंशत्तमी
३२	द्वात्रिंशत्	द्वात्रिंश द्वात्रिंशत्तम	द्वात्रिंशी द्वात्रिंशत्तमी
३३	त्रयस्त्रिंशत्	त्रयस्त्रिंश त्रयस्त्रिंशत्तम	त्रयस्त्रिंशी त्रयस्त्रिंशत्तमी
३४	चतुस्त्रिंशत्	चतुस्त्रिंश चतुस्त्रिंशत्तम	चतुस्त्रिंशी चतुस्त्रिंशत्तमी

* विंशति इत्यादि शब्दों में पूरणतम के अर्थ में विकल्प से ट् प्रत्यय लगता है (विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम्) और डट् भी लगता है। इस प्रकार इनके दो-दो रूप होंगे विंशः, विंशतितमः, त्रिंशत्तमः इत्यादि।

३५ पंचत्रिंशत्	पंचत्रिंश	पंचत्रिंशी
	पंचत्रिंशत्तम	पंचत्रिंशत्तमी
३६ षट्त्रिंशत्	षट्त्रिंश	षट्त्रिंशी
	षट्त्रिंशत्तम	षट्त्रिंशत्तमी
३७ सप्तत्रिंशत्	सप्तत्रिंश	सप्तत्रिंशी
	सप्तत्रिंशत्तम	सप्तत्रिंशत्तमी
३८ अष्टात्रिंशत्	अष्टात्रिंश	अष्टात्रिंशी
	अष्टात्रिंशत्तम	अष्टात्रिंशत्तमी
३९ नवत्रिंशत्	नवत्रिंश	नवत्रिंशी
अथवा	नवत्रिंशत्तम	नवत्रिंशत्तमी
एकोनचत्वारिंशत्	एकोनचत्वारिंश	एकोनचत्वारिंशी
अथवा	एकोनचत्वारिंशत्तम	एकोनचत्वारिंशत्तमी
ऊनचत्वारिंशत्	ऊनचत्वारिंश	ऊनचत्वारिंशी
अथवा	ऊनचत्वारिंशत्तम	ऊनचत्वारिंशत्तमी
एकान्नचत्वारिंशत्	एकान्नत्वारिंश	एकान्नचत्वारिंशी
	एकान्नचत्वारिंशत्तम	एकान्नचत्वारिंशत्तमी
४० चत्वारिंशत्	चत्वारिंश	चत्वारिंशी
	चत्वारिंशत्तम	चत्वारिंशत्तमी
४१ एकचत्वारिंशत्	एकचत्वारिंश	एकचत्वारिंशी
	एकचत्वारिंशत्तम	एकचत्वारिंशत्तमी
४२ द्वाचत्वारिंशत्	द्वाचत्वारिंश	द्वाचत्वारिंशी
अथवा	द्वाचत्वारिंशत्तम	द्वाचत्वारिंशत्तमी
द्विचत्वारिंशत्	द्विचत्वारिंश	द्विचत्वारिंशी
	द्विचत्वारिंशत्तम	द्विचत्वारिंशत्तमी
४३ त्रयश्चत्वारिंशत्	त्रयश्चत्वारिंश	त्रयश्चत्वारिंशी
अथवा	त्रयश्चत्वारिंशत्तम	त्रयश्चत्वारिंशत्तमी
त्रिचत्वारिंशत्	त्रिचत्वारिंश	त्रिचत्वारिंशी
	त्रिचत्वारिंशत्तम	त्रिचत्वारिंशत्तमी
४४ चतुश्चत्वारिंशत्	चतुश्चत्वारिंश	चतुश्चत्वारिंशी
	चतुश्चत्वारिंशत्तम	चतुश्चत्वारिंशी
४५ पञ्चचत्वारिंशत्	पञ्चचत्वारिंश	पञ्चचत्वारिंशत्तमी
	पञ्चचत्वारिंशत्तम	पञ्चचत्वारिंशत्तमी
४६ षट्चत्वारिंशत्	षट्चत्वारिंश	षट्चत्वारिंशी
	षट्चत्वारिंशत्तम	षट्चत्वारिंशत्तमी
४७ सप्तचत्वारिंशत्	सप्तचत्वारिंश	सप्तचत्वारिंशी
	सप्तचत्वारिंशत्तम	सप्तचत्वारिंशत्तमी
४८ अष्टाचत्वारिंशत्	अष्टाचत्वारिंश	अष्टाचत्वारिंशी
अथवा	अष्टाचत्वारिंशत्तम	अष्टाचत्वारिंशत्तमी

	अष्टचत्वारिंशत्	अष्टचत्वारिंश	अष्टचत्वारिंशी
		अष्टचत्वारिंशत्तम	अष्टचत्वारिंशत्तमी
४९	नवचत्वारिंशत्	नवचत्वारिंश	नवचत्वारिंशी
	अथवा	नवचत्वारिंशत्तम	नवचत्वारिंशत्तमी
	एकोनपञ्चाशत्	एकोनपञ्चाश	एकोनपञ्चाशी
	अथवा	एकोनपञ्चाशत्तम	एकोनपञ्चाशत्तमी
	ऊनपंचाशत्	ऊनपंचाश	ऊनपंचाशी
	अथवा	ऊनपंचाशत्तम	ऊनपंचाशत्तमी
	एकान्नपञ्चाशत्	एकान्नपञ्चाश	एकान्नपञ्चाशी
		एकान्नपञ्चाशत्तम	एकान्नपञ्चाशत्तमी
५०	पञ्चाशत्	पञ्चाश	पञ्चाशी
		पञ्चाशत्तम	पञ्चाशत्तमी
५१	एकपञ्चाशत्	एकपञ्चाश	एकपञ्चाशी
		एकपञ्चाशत्तम	एकपञ्चाशत्तमी
५२	द्वापञ्चाशत्	द्वापञ्चाश	द्वापञ्चाशी
	अथवा	द्वापञ्चाशत्तम	द्वापञ्चाशत्तमी
	द्विपञ्चाशत्	द्विपञ्चाश	द्विपञ्चाशी
		द्विपञ्चाशत्तम	द्विपञ्चाशत्तमी
५३	त्रयःपञ्चाशत्	त्रयःपञ्चाश	त्रयःपञ्चाशी
	अथवा	त्रयःपञ्चाशत्तम	त्रयःपञ्चशत्तमी
	त्रिपञ्चाशत्	त्रिपञ्चाश	त्रिपञ्चाशी
		त्रिपञ्चाशत्तम	त्रिपञ्चाशत्तमी
५४	चतुःपञ्चाशत्	चतुःपञ्चाश	चतुःपञ्चाशी
		चतुःपञ्चाशत्तम	चतुःपञ्चाशत्तमी
५५	पञ्चपञ्चाशत्	पञ्चपञ्चाश	पञ्चपञ्चाशी
		पञ्चपञ्चाशत्तम	पञ्चपञ्चाशत्तमी
५६	षट्पञ्चाशत्	षट्पञ्चाश	षट्पञ्चाशी
		षट्पञ्चाशत्तम	षट्पञ्चाशत्तमी
५७	सप्तपञ्चाशत्	सप्तपञ्चाश	सप्तपञ्चाशी
		सप्तपञ्चाशत्तम	सप्तपञ्चाशत्तमी
५८	अष्टापञ्चाशत्	अष्टापञ्चाश	अष्टापञ्चाशी
	अथवा	अष्टापञ्चाशत्तम	अष्टापञ्चाशत्तमी
	अष्टपञ्चाशत्	अष्टपञ्चाश	अष्टपञ्चाशी
		अष्टपञ्चाशत्तम	अष्टपञ्चाशत्तमी
५९	नवपञ्चाशत्	नवपञ्चाश	नवपञ्चाशी
	अथवा	नवपञ्चाशत्तम	नवपञ्चाशत्तमी
	एकोनषष्टि	एकोनषष्ट	एकोनषष्टी
	अथवा	एकोनषष्टितम	एकोनषष्टितमी
	ऊनषष्टि	ऊनषष्ट	ऊनषष्टी

	अथवा	ऊनषष्टितम	ऊनषष्टितमी
	एकोन्नषष्टि	एकान्नषष्ट	एकान्नषष्टी
		एकान्नषष्टितम	एकान्नषष्टितमी
६०	षष्टि	षष्टितम	षष्टितमी
६१	एकषष्टि	एकषष्ट	एकषष्टी
		एकषष्टितम	एकषष्टितमी
६२	द्वाषष्टि	द्वाषष्ट	द्वाषष्टी
	अथवा	द्वाषष्टितम	द्वाषष्टितमी
	द्विषष्टि	द्विषष्ट	द्विषष्टी
		द्विषष्टितम	द्विषष्टितमी
६३	त्रयष्षष्टि	त्रयष्षष्ट	त्रयष्षष्टी
	अथवा	त्रय:षष्टितम	त्रय:षष्टितमी
	त्रिषष्टि	त्रिषष्ट	त्रिषष्टी
		त्रिषष्टितम	त्रिषष्टितमी
६४	चतुष्षष्टि	चतुष्षष्ट	चतुष्षष्टी
		चतुष्षष्टितम	चतुष्षष्टितमी
६५	पञ्चषष्टि	पञ्चषष्ट	पञ्चषष्टी
		पञ्चषष्टितम	पञ्चषष्टितमी
६६	षट्षष्टि	षट्षष्ट	षट्षष्टी
		षट्षष्टितम	षट्षष्टितमी
६७	सप्तषष्टि	सप्तषष्ट	सप्तषष्टी
		सप्तषष्टितम	सप्तषष्टितमी
६८	अष्टाषष्टि	अष्टाषष्ट	अष्टाषष्टी
	अथवा	अष्टाषष्टितम	अष्टाषष्टितमी
	अष्टषष्टि	अष्टषष्ट	अष्टषष्टी
		अष्टपष्टितम	अष्टषष्टितमी
६९	नवषष्टि	नवषष्ट	नवषष्टी
	अथवा	नवषष्टितम	नवषष्टितमी
	एकोनसप्तति	एकोनसप्तत	एकोनसप्तती
	अथवा	एकोनसप्ततितम	एकोनसप्ततितमी
	ऊनसप्तति	ऊनसप्तत	ऊनसप्तती
	अथवा	ऊनसप्ततितम	ऊनसप्ततितमी
	एकोन्नसप्तति	एकान्नसप्तत	एकान्नसप्तती
		एकान्नसप्ततितम	एकान्नसप्ततितमी
७०	सप्तति	सप्तत	सप्तती
		सप्ततितम	सप्ततितमी
७१	एकसप्तति	एकसप्तत	एकसप्तती
		एकसप्ततितम	एकसप्ततितमी
७२	द्वासप्तति	द्वासप्तत	द्विसप्तती

	अथवा	द्वासप्ततितम	द्वासप्ततितमी
	द्विसप्तति	द्विसप्तत	द्वासप्तती
		द्विसप्ततितम	द्विसप्ततितमी
७३	त्रयस्सप्तति	त्रयस्सप्तत	त्रयस्सप्तती
	अथवा	त्रयस्सप्ततितम	त्रयस्सप्ततितमी
	त्रिसप्तति	त्रिसप्तत	त्रिसप्तती
		त्रिसप्ततितम	त्रिसप्ततितमी
७४	चतुस्सप्तति	चतुस्सप्तत	चतुस्सप्तती
		चतुस्सप्ततितम	चतुस्सप्ततितमी
७५	पञ्चसप्तति	पञ्चसप्तत	पञ्चसप्तती
		पञ्चसप्ततितम	पञ्चसप्ततितमी
७६	षट्सप्तति	षट्सप्तत	षट्सप्तती
		षट्सप्ततितम	षट्सप्ततितमी
७७	सप्तसप्तति	सप्तसप्तत	सप्तसप्तती
		सप्तसप्ततितम	सप्तसप्ततितमी
७८	अष्टासप्तति	अष्टासप्तत	अष्टासप्तती
	अथवा	अष्टासप्ततितम	अष्टासप्ततितमी
	अष्टसप्तति	अष्टसप्तत	अष्टसप्तती
		अष्टसप्ततितम	अष्टसप्ततितमी
७९	नवसप्तति	नवसप्तत	नवसप्तती
	अथवा	नवसप्ततितम	नवसप्ततितमी
	एकोनाशिति	एकोनाशीत	एकोनाशीती
		एकोनाशीतितम	एकोनाशीतितमी
	ऊनाशीति	ऊनाशीत	ऊनाशीती
	अथवा	ऊनाशीतितम	ऊनाशीतितमी
	एकान्नाशीति	एकान्नाशीत	एकान्नाशीती
		एकान्नाशीतितम	एकान्नाशीतितमी
८०	अशीति	अशीतितम	अशीतितमी
८१	एकाशीति	एकाशीत	एकाशीती
		एकाशीतितम	एकाशीतितमी
८२	द्व्यशीति	द्व्यशीत	द्व्यशीति
		द्व्यशीतितम	द्व्यशीतितमी
८३	त्र्यशीति	त्र्यशीत	त्र्यशीती
		त्र्यशीतितम	त्र्ययशीतितमी
८४	चतुरशीति	चतुरशीत	चतुरशीती
		चतुरशीतितम	चतुरशीतितमी
८५	पंचाशीति	पंचाशीत	पंचाशीती
		पंचाशीतितम	पंचाशीतितमी
८६	षडशीति	षडशीत	षडशीती
		षडशीतितम	षडशीतितमी

८७	सप्ताशीति	सप्ताशीत	सप्ताशीती
		सप्ताशीतितम	सप्ताशीतितमी
८८	अष्टाशीति	अष्टाशीत	अष्टाशीती
		अष्टाशीतितम	अष्टाशीतितमी
८९	नवाशीति	नवाशीत	नवाशीती
	अथवा	नवाशीतितम	नवाशीतितमी
	एकोननवति	एकोननवत	एकोननवती
	अथवा	एकोननवतितम	एकोननवतितमी
	ऊननवति	ऊननवत	ऊननवती
	अथवा	ऊननवतितम	ऊननवतितमी
	एकान्ननवति	एकान्ननवत	एकान्ननवती
		एकान्ननवतितम	एकान्ननवतितमी
९०	नवति	नवतितम	नवतितमी
९१	एकनवति	एकनवत	एकनवती
		एकनवतितम	एकनवतितमी
९२	द्वानवती	द्वानवत	द्वानवती
	अथवा	द्वानवतितम	द्वानवतितमी
	द्विनवति	द्विनवत	द्विनवती
		द्विनवतितम	द्विनवतितमी
९३	त्रयोनवति	त्रयोनवत	त्रयोनवती
	अथवा	त्रयोनवतितम	त्रयोनवतितमी
	त्रिनवति	त्रिनवत	त्रिनवती
		त्रिनवतितम	त्रिनवतितमी
९४	चतुर्नवति	चतुर्नवत	चतुर्नवती
		चतुर्नवतितम	चतुर्नवतितमी
९५	पनञ्चवति	पञ्चनवत	पञ्चनवती
		पञ्चनवतितम	पञ्चनवतितमी
९६	षण्णवति	षण्णवत	षण्णवती
		षण्णवतितम	षण्णवतितमी
९७	सप्तनवति	सप्तनवत	सप्तनवती
		सप्तनवतितम	सप्तनवतितमी
९८	अष्टानवति	अष्टानवत	अष्टानवती
	अथवा	अष्टानवतितम	अष्टानवतितमी
	अष्टनवति	अष्टनवत	अष्टनवती
		अष्टनवतितम	अष्टनवतितमी
९९	नवनवति	नवनवत	नवनवती
	अथवा	नवनवतितम	नवनवतितमी
	एकोनशत (नपुं०)	एकोनशततम	एकोनशततमी

१००	शतं	शततम	शततमी
२००	द्विशत	द्विशततम	द्विशततमी
३००	त्रिशत	त्रिशततम	त्रिशततमी
४००	चतुश्शत	चतुश्शततम	चमुश्शततमी
५००	पञ्चशत	पञ्चशततम	पञ्चशततमी
१०००	सहस्र	सहस्रतम	सहस्रतमी

१०,००० अयुत (नपुं०)

१,००,००० लक्ष (नपुं०) अथवा लक्षा (स्त्री०)

	दस लाख-प्रयुत (नपुं०)	दस अरब-खर्ब (पुं०, नपुं०)
	करोड़-कोटि (स्त्री०)	खरब-निखर्व (पुं०, नपुं०)
	दस करोड़-अर्बुद (नपुं०)	दस खरब-महापद्म (नपुं०)
	अरब-अब्ज (नपुं०)	नील-शङ्कु (पुं०)
	दस नील-जलधि (पुं०)	दस पद्म-मध्य (नपुं०)
	पद्म-अन्त्य (नपुं०)	शङ्ख-परार्ध (नपुं०)
४०१	एकाधिकचतुः शतम्	एकोत्तरचतुःशतम्।
	एकाधिकं चतुः शतम्	एकोत्तरं चतुःशतम्।
५०२	द्व्यधिकपञ्चशतम्	द्व्युत्तरपञ्चशतम्।
	द्व्यधिकं पञ्चशतम्	द्व्युत्तरं पञ्चशतम्।
६०३	त्र्यधिकषट्शतम्	त्र्युत्तरषट्शतम्।
	त्र्यधिकं षट्शतम्	त्र्युत्तरं षट्शतम्।
७०४	चतुरधिकसप्तशतम्	चतुरुत्तरसप्तशतम्।
	चतुरधिकं सप्तसतम्	चतुरुत्तरं सप्तशतम्।
८०५	पञ्चाधिकाष्टशतम्	पञ्चोतराष्टशतम्।
	पञ्चाधिकमष्टशतम्	पञ्चोत्तरमष्टशतम्।
७९५	पञ्चनवत्यधिकसप्तशतम्	पञ्चनवत्युत्तरसप्तशतम्।
	पञ्चनवत्यधिकं सप्तशतम्	पञ्चनवत्युत्तरं सप्तशतम्।

१,२३४ चतुर्विंशत्यधिकत्रयोदशशतम् चतुर्विंशत्यधिकत्रिशताधिकसहस्रम्।

७९,६३५ पञ्चत्रिंशदधिकषट्शताधिकनवसहस्राधिकसप्तायुतम्।

१,१५ ३३२ द्वात्रिंशदधिकत्रिशतोत्तरपञ्चदशसहस्राणि एकं लक्षञ्च।

• • •

[illegible]

[illegible]

[illegible]

• • •

भारतीय विद्या संस्थान

सी–27/59, जगतगंज,

वाराणसी–221 002